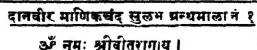
वीर	सेवा म	न्द <b>र</b>
	दिल्ली	
	*	
	922	, C
क्रम सस्या	922 2179	21)00
काल न०		
वण्ड —	-	

.

ſ

ď





(中国教権・関

अ नमः श्रावातरागाय ।

## दानवीर माणिकचन्द्र

वम्बई निवासी स्व॰दानवीरजैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जौहरी जे. पी. का विस्तृत जीवनचरित्रं)

लेखकः--

श्रीमान् जैनधर्मभूषण-ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी संपादक ''नैनमित्र''-सूरत ।

प्रकाशकः—

मृत्रचंद किसनदास का गड़िया-ह्यरत।

वीर सं. २४४५. ] विक्र. सं. १९७५. [ई० १९१९. प्रथमारृत्ति ] —> [प्रति२०००

'जैनविजय ' प्रिन्टिंग प्रेस-सूरत ।

मृत्य सिर्फ ह. १-८-०.

#### Printed by

Ishwadal Kisandas Kapadia at 'Jain Vijaya Printing Press near Khapatia chakla, Laximmatayan's Wadi—SURAT.

Published by
Moolch and Kis and Kapadia.
from Khapatia Chakla, Chandawadi-SURAT.

#### मस्तावना ।

#### 一\*\*(※)\*\*--

बम्बई निवासी स्वर्गीय दानवीर नैनकुलभृषण सेठ माणिकचंद हीराचंदजी जीहरी जे॰ पी॰ को कीन नहीं जानता ? आपकी जन्मभृमि सूरत है और हम भी आपकी जाति (बीसा हमड़) और एक गोत्री होनेसे तथा हमारे उत्पर आपका प्रेम एक पुत्रसे भी अधिक होनेके कारण आपसे हमारा विशेष परिचय था और सेटनीने जीवित अवस्थामें हमसे कई वार कहा था कि "भाई मूलचंद, तुम हमारा जीवनचरित्र हमारे जीते हुए ही प्रकट करों"। परंतु खेद है कि हम आपकी आज्ञाका पालन नहीं कर सके थे; क्योंकि इस कार्यके लिये विशेष सामित्री एकत्रित करनेकी आवश्यकता थी तो भी एकवार असणके समय रेल ट्रेन में बैठे २ आपके वंशका परिचय और बम्बईमें जाकर व्यापार शुरू किया वहां तककी सब घटनाएं आपसे नोट कर ली थीं और विशेषके लिये फिर मौका न मिलनेसे यह काम रह गया था। इतनेमें अकस्मातः आपका स्वर्गवास वीर सं०२४४० विक्रम संवत १९७० आषाह वदी ९ (गुनराती) को हो जानेसे हमें और सारी जैन समाजको जो दु:ख हुआ उसका कोई पारावार न था परंतु क्या किया जाय, होनहार बलवान है वह कभी भी मिट नहीं सकती।

आपके स्वर्गवास होते ही हमने 'दिगंबर नैन ' द्वारा आपका एक स्मारक फंड स्थापित किया था जिसका खास उद्देश्य आपका विस्तृत जीवनचरित्र प्रकट करना था। इस फंडमें हमें निम्नलिखित सहायता प्राप्त हुई थी:—

#### स्मारकफंडकी संक्षिप्त सूची।

भेठ मूलचंद किसनदास कापहिया स्रत 49) " दिगम्बरजैन " कार्यालय 41) २५) सेठ शिवलालं श्रवेरचंद व्यारा ५)- सेठ देवचंद गुलावचद ,, ' 90) शा० नानचंद हाचद 981)= FETH करमसद (आणंद) के भाइया द्वारा **E**) वडु (पादरा) **२**१॥) 37 8) बलासण (आणंद) €) डक्का (बडोदा) केठ डाह्याभाई रीखबदास सूरत २५) २०) दोशी गेबीलाल कस्त्रचंद मार्फत दि॰ जैन पंच झाबुआ २५) शा० डाह्यामाई शिवलाल करमसदवाले गिरीडिह ७) वसोके भाइयो द्वारा १५१) दि० जैन पंच काणीसा (संभात) ९) सायमा (लभात)के भाइया द्वारा समस्त दि० जैन पन्त महुवा (सूरत) २५) 🤋 ६॥) बोरसदके भाइयों द्वारा १५) वांच (अमदाबाद) ,, सेट लालचंद कहानदास बड़ीदा 29) ,, गिरघरलाल नारणदास बड़ौदा 31) १८॥) फुटकर बडोदाके पंचोंके मार्फत सेट छालचंद कहानदाः **बेट छगनलाल बेलाभाई तासवाला स्**रत ₹५)

प्रेमजी सवजी वस्तारीया दूंगरपुर

4)

(۶	मालावाड़ा (पेटलाद)के भाइयों द्वारा
۷)	सराफ गेबीलाल दुंदरजी दाहोद
२३)	दाहोदके भाइयों द्वारा फुटकर मार्फत जेचंद नायजी
4)	कुशडगढ़के पंची द्वारा
<b>ų</b> )	सेंठ वजेचंद हरीचंद रानकुवा (सूरत)
46)	राणापुरके दि० जैन पंच मार्फत अवेरचंद मोजराज
(۲)	शा॰ प्रेमचंद दीपचंद तारापुर
ų)	शा० तिलोकचंद रतनजी दाहोद
۷)	रुदेलके भाइयों द्वारा
•	वसवरीया (वंगाल) के भाइयों दारा मार्फत
•	शा० तलकचंद ईश्वरदास
80)	शा. जेसंगभाई गुलाबचंद प्रभासपाटण
91=)	मखीआव (आणंद)के भाईयों द्वाग
६15)	समस्त दि० जैन पंच द्रुग
५)	मेठ अमृतलाल गुलावचंद बम्बई
५१)	से <i>ऽ</i> गुलाबचंद <b>ही</b> रा <b>लाल धूलिया</b>
५)	बोधगांबके भाइया दारा
६)	घायज (बड़ीदा)क पंची द्वारा
94)	शा० मोतीचंद नेमचंद बुहारी (पूरत)
99)	,, नानचंद करत्रचद ,,
9)	,, खीमचंद भगवानदास ,,
99)	,, प्राणजीवनदास माणिकचंद ,,
٤)	,, बहेचरदास मकनदास ,,
9.39	,, ताराचंद मोतीचंद ,,
8	"मगनलाल तथा मणीलाङकी कंपनी
3-5:)	मणीलाल ताराचंदकी कंपनी

4)	,, अंबेलाल आतमारामकी कंपनी
(21)	
	शा० छोटालाल घेलाभाई गांधी
14)	टेंभुणी (सोलापुर)के भाइयों द्वारा
२०॥)	रणासणके भाइयां द्वारा मार्फत
	सेट पूनमचंद सांकलचद
96)	थांदला ( रतलाम ) के भाइयों द्वारा
٤)	नाथूराम दीपचन्द्र परवार नरसिंहपुर
92II)	रतलामकी बोर्डिंग द्वारा फुटकर
५)	शा॰ त्रीकमदास खुशालदास बाकरोल
E11)	देखवाड़के भाइयों द्वारा
<b>1</b> 411)	वेडच ,, ,,
(۲	पेटलाद ,, ,,
₹८)	दि॰ जैन पंच मार्फत सेट इरजीवन लालचंद बहौदा
305)	सेठ रोडमल मेघराजजी सुसारी
99)	जवरचंद कंवरलाल जैन म्हसर
30)	<b>शा० दलपतभाई केवलभाई वलगाड</b>
4)	मुनीम घरमचंदजी इरजीवनदास पालीताना
₹0)	शा॰ परभुदास लखमीदास झहर
90)	,, केवलदास हरजीवनदास ,,
<b>YE</b> )	सहरके भाइवादारा फुटकर
۹)	खेरगाम (स्रत) के भाईयोद्धारा
30)	श्राविकाश्रम (बम्बई) की श्राविकाओंटाम
10)	अ10 शिवलाल सुन्दरलाल बैनाडा झालगणाऱ्य
91)	जाबुद्धक भाइयो द्वारा
1011)	सेठ भगवानदास झवेरदास सोजित्राकी मर्कत आए

२५)	হা৷০	<b>परभूदास</b>	इेमचंद		सुरत
۹५)	,,	त्रिभोवन	रास ब्रीज	ल(छ	57
٧)	23	छगनलाल	उत्तमचं	द सरैया	,,
4)	,,	<b>परभुदास</b>	पानाचद	सरैया	91
٧,)	71	मंछाराम	जगजीवन	<b>रदास</b>	";
८२॥-)	फु <b>ट</b>	हर			

9399-4-0

इसके बाद सेठनीकी विधवा नवीबाईसे पत्र व्यवहार करने पर आपके द्वारा रु० ९००)की रकम इस फंडमें मिली थी जिससे यह फंड १८९१।~)का हो गया।

तद्नंतर नीवनचरित्रके लिये सामियी एकतित करनेका काम हमने लिया और सेठजीसे गाढ़ परिचयवाले और जैनसमानकी उन्नतिके लिये रात्रि दिन लवलीन श्रीमान् जैनधर्ममूषण ब्रह्मचारी शीनलप्रसादजीने यह चरित्र लिख देनेका काम सहष स्वीकार कर लिया। बादमें इसकी आवश्यक सामग्री एकत्र करनेके लिये 'दिगम्बरजैन,' 'जैनिमत्र' आदि पत्रोंमें विज्ञापन छपाया गया और हमने इतस्ततः बहुत पत्र व्यवहार किया; किन्तु खेद हैं कि हमको आने दो आने समाचार ही सेठजीके बारेमें अगट हुए जिसमें आमोदके सेठ हरजीवन रामचंद शाहने सेठजीके कई कार्योंके उल्लेखरूप एक बड़ा लेख मेजा था जिसके लिये हम आपके आभारी हैं। इस प्रकार जब पूर्ण सामग्री न मिल सकी तब हमने जातीय साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक सभी पत्रोंकी फाइलें एकत्रित की जिसमें 'जैनगजट'की पुरानी फाइलें

भेजनेके लिये भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभा कार्यालयके, सबसे पुराना मासिक 'जैन बोधक' (मराठी) की प्रारंभसे फाइलें भेजनेके लिये सेट रावजी मखाराम दोशी सोलाएरके, 'जिनविजय' (मराठो) मासिककी फाइलें भेजनेके लिये श्रीयुत भरमप्पा पदमप्पा पाटील (होमूर)के और 'जैनिमिज्ञ' तथा 'जैनगजट'की कुछ फाइलें भेजनेके लिये बम्बई दि॰ जैन प्रांतिक सभा कार्यालयके हम आभारी हैं; क्योंकि इन फाइलोंसे ही इस चरित्रके लिये हमें बहुतसी सामग्री मिल सकी है।

अब सेठजीके बंदाका विशेष परिचय जाननेकी आवश्यकता थी निसको आपके रुघु भ्राता सेठ नचलचंदर्जी (नो कि इस जीवनचरित्रको प्रकट हुआ देग्व नहीं सके और<sup>°</sup>गत वर्षमें म्बर्गवामी हुए हैं ) और आपकी पत्नी श्रीमती परसनवाईको पूछ कर नोट किया था और आपके पिताकी जनमभूमि भीडिर ( मेवाड़ उदयपुर ) का कुछ परिचय पाप्त किया और स्वर्गीय सेठजीकी जन्ममृमि स्ट्रत शहरका-जो कि " सोनानी मृरत " ( सोनेकी मूर्ति ) कही जाती है और अति प्राचीन बहर है, जहां कई भट्टारक हो गये हैं, कई ग्रन्थ तैयार हुए थे, और कई मंदिरोंका निर्माण हुआ था-और उसके आसपाम यानी गुनरात देशका प्राचीन इतिहास इस चरित्रमें प्रकट करनेका इसुरा और ब्रह्मचारीजीका विचार हुआ था; क्योंकि जिससे स्वर्गीय सेठनीकी जन्मभूमिका महत्व प्रकट हो जाय और साथ २ अपने धर्मकी पूर्व महत्ताका परिचय मिल जाय इसलिये इघर उधर ध्मकर कई पुस्तकें एकत्रित कीं और कई मतिमाओं के लेख उन्कत

किये और हस्तिलिखित कई प्रन्थोंसे भी सुरत और आसपासके मन्दिर, प्रतिमाओं और प्रन्थादिका पता लगाया। सुरत, रांदेर आदिके मंदिरोंकी प्रतिमाओं के लेखादि संग्रह करनेमें यहां के हमारे उत्साही मित्र भाई छगनलाल उत्तमचंद सरेयाने बहुत सहायता की थी जिसके लिये भाई सरेयाके हम आभारी हैं। इसके सिवाय सेठजीकी फमंसे स्वगंवासके बाद आये हुए तार पत्रादि प्राप्त किये और पत्रोंके शोकजनक लेख और कविताएं प्राप्त कीं। इस तरह इस चृहत चरित्रकी मामग्री इकट्टी करनेमें बहुत समय लग गया। फिर मान्यवर ब्रह्मचारीने जब तीसरे वर्ष बड़ोदेमें चौमासा किया था तब इम बरित्रकी लिपबद्ध कर लिया। बाद छपानेका काम प्रारंभ हुआ जिममें कई कारणोंसे विलंब हुआ और फिर इसमें सेठजीकी कई अवस्थाओंके चित्र, आपकी स्थापित संस्थाओंके चित्र ऐसे कई चित्र प्रकट करनेका इरादा था जिसको प्राप्त करने और तयार करनेमें भी विलंब हुआ।

पाठकगण ! आपने बहुतसे जीवनचरित्र पढ़ें होंगे परंतु इस बहुत चरित्रमें आपको कुछ विशेषता अवश्य ही दृष्टिगोचर होगी; क्योंकि स्वर्गीय सेटजीका वंशपरिचय और अपनी समाजोन्नतिकी कार्य प्रणालीका वर्णन पढ़नेसे पाठकोंको बहुत ही लाभ होगा और सूरत जिलेके जैनोंकी पूर्व कीर्ति—कीमुदीका वर्णन तथा किलालेख, भद्दारकोंकी पहावली तथा जातियोंकी उत्पत्तिका वर्णन पढ़नेसे यह जीवनचरित्र एक संग्रह करने योग्य जैनशास्त्र ही माल्यम होगा। जब एक ऐशाधाराम करनेवाला बहुत बड़ा धनिक अपने पैसेका उपयोग धार्मिक और सामाजिक कार्योमें

नहीं करता है तब स्वर्गीय सेठनीने सामान्य धनिक होकर भी सामाजिक और धार्मिक उन्नतिके लिये रात्रि दिन इतना परिश्रम और द्रव्य व्यय किया था कि आज सेठनीकी जोड़का एक भी पुरुष नज़र नहीं आता।

इस चिरत्रमें करीब २५-२६००) रु०की रकम खर्च हुई है और २००० प्रतियां प्रकट की गईं हैं जो सिर्फ १) रु० लेकर ही प्रथम 'दिगम्बर जैन 'के ग्राहकोंको ही दी जांयगी और कुछ प्रतिया समालोचना दिमें तथा अपनी संस्थाओंको भेटमें बटेंगी और रोष करीब २०० ही विक्रीके लिये रह जांयगी जो देखते २ बिक जांयगी ऐसी आशा है।

स्वर्गीय सेठनीको पुस्तकें प्रकाशित करनेका शौक था और इसकी आवश्यकता है ही इमलिये यह चरित्र विक नानेपर जो रक्तम बचेगी उसको स्थायी रखके उसकी उपनमेंसे "दानवीर माणिकचंद सुलभ ग्रन्थमाला" प्रकट करनेका हमारा विचार है जिसके ग्रंथ विलक्कुल लागतके मूल्य पर ही प्रकट किये जांयगे और हिन्दी तथा गुनराती दोनों भाषाओं के ग्रंथ इसमें प्रकट होंगे।

इस चरित्रमें क्या क्या विषय है वह तो इसकी विषयसूची पढ़नेसे मान्द्रम होगा इसिलये यहां विशेष न लिखकर पाठकोंसे हम सिफारिश करते हैं कि आप इस बृहत् चरित्रको आदिसे अंत तक शनें: २ अवश्य पढ़ें और बादमें अपने मित्रोंको भी पढ़नेको देवें । हमारे अनेन भाई भी इस चरित्रको पढ़कर बहुत लाभ उठा मकेंगे।

चार वर्षसे इस चरित्रको पड़नेके लिये सारा जैन समाज लालायित हो रहा था और बहुत समयसे अनेक आर्डर भी आ गये थे परन्तु तैयार होनेमें कई कारणोंसे विलंब हो गया इसलिये पाठकोंसे हम क्षमाप्रार्थी हैं तथा इसमें जो कुछ तुटि माल्स पड़ें उसकी सूचना हमको अवस्य देवें क्योंकि यदि इस जीवनचरित्रकी विशेष मांग होगी तो इसकी दूसरी आवृत्ति निकालनेका भी हमारा पूर्ण विचार है। इति शुभम्।

वीर सं० २४४५ गौष वदी ३ गुरूवार गा० २६-१२-१८ सूरत.

जैन जातिसेवक— मृलचन्द किसनदास कापड़िया



# 

					20
٦,	जीवनचरित्रकी आवञ्यकता	•••	***	•••	9
	अध्याय	दृसरा ।			
	गुजरात देशके सूरत	न शहरका	दिग्दर्श	न-	
٩.	गुजगतका महत्व	***	***	•••	73
₹.	स्रत नगर कैसे वसा ?	***	•••		9 Ę
₹.	स्रतमें अंत्रजोंकी सत्ताका जमन	τ	•••		88
٧.	सुरत और रांदेरमें जैनियोका	वर्णन	***	2000	२७
	रदिरमें जैनियोका महत्व और			•••	36
٤.	नकल शिलालेख, स्रातके बड़ा	चउटाकी	प्रतिमा	• • •	३०
		***	***	***	35
۷,	मृरतकी गद्दीके भट्टारक	***	n - m	•••	3 0
٩,,	स्रत जिलेके मंदिर, प्रतिमा और	<b>िशिलालेख</b>	1	• • •	35
	काष्ट्रासंगके भट्टारकोकी नामाविस	5	• • •	***	४७
	सिहपुरा हाबिका वर्णन	***	***	£ +0	فإلإ
١٦.	वर्त्तमानमं स्रतकी नियति	***	•••	•••	40
	अध्याय न	प्रेसरा	1		
	उच कुल	ध्यं जन्म			
	हमड़ जातिका वर्णन		•••	***	६२
	हुमड जातिके १८ गोत्र…	***	•••		4
₹.	परतापगढ़के ह्रमड़	4.4	•-•	•••	ĘC
४,	सोलापुरमें हमड़ों का प्रभाव	***	•••	•••	90
٠٤٩.	बागड़ देशमें हमह				10.5

#### (१३)

₹.	वर्तमानमें हमड़ोंकी बस्ती	•••	•••	७५
٠.	सेठ माँशिकचंदजीका वंश परिचय	•••	•••	٧٤
۷,	सेठ माणिकचंदजीके पिता शाह हीराचंदक	ी संतान	***	94
٩.	सूरतके चंद्रप्रभुके मंदिरका जीर्णोद्धार	•••	•••	36
70.	बड़े श्राता सेठ मोतीचंदका जन्म	•••	•••	909
99.	सेठ पानाचंदका जन्म	•••	***	902
92.	सेठजीकी भगिनी हेमकुमरी और उनके पुर	ৰ বুপীকা	<b>उका</b>	
	परिचय	***		9-3
<b>9</b> {.	दानकी वासनामें सेठ माणिकचदजीका अ	वत।र		908
٩४.	सेट माणिकचंदजीका जनम	***	•••	908
q٧.	सेठ चुत्रीलाल झवेगचंद हा जनम		•••	900
۹٤.	सेठ नवलचंदजीका जन्म	•••	• • •	906
	अध्याय चौथा। सेट माणिकचंदजीकी द			
٩.	१८५७ के गदरका समय	•		990
٥,	माता विजलीबाईका स्वर्भवास		•••	993
- **	न्राता मोतीचंद पानाचडका बम्बई जाना			998
٧.	सेठ माणिकचंद और नवलचंदका बम्बई	जाना		999
ч,	संठ हीराचंदजीकी पुत्र-संवा	•••	444	998
Ę,	भगिनी हेमकुमरीका उपकार	***	***	920
<b>.</b>	सेट माणिकचंदजीका व्याणारमें लगना	***	444	930
۷.	सुरतसे बम्बई तक प्रथम रेल्वे	•••	•••	122
٩,	भाणिकचंदजीकी बालपनमें धर्मचर्चा	***	***	923
90,	धम्बईके वीसा हमड़ोंमें प्रथम जीहरी	* * *	•••	१२५
99.	बम्बईमें 'माणिकचंद पानाचंद' पमिका प्र	ारंभ		१२५
૧૨.	सेठजीकी व्यापारमें कुश्चलता, सत्यता और न	या <b>यप</b> राणत	π	920
	सेठ हीराचंदजीको प्रीट विवाहका पक्षणत		***	920

#### (88)

## अध्याय पांचवां ।

युवाषस्या अ।		વાત્રમ		
<ol> <li>मोतीचंदकी ब्रह्मचर्यमें हुइता</li> </ol>		•••	***	93
२. सेठ मोतीचंदका विवाह	•••	•••	•••	93
३. सेठ पानाचदका विवाह	• • •		• • •	93
४. पुण्योदयसे व्यापारमें नृद्धि	***	•••	•••	98
५. माणिकचंदका परोपकारी स्वभा	व	•••		983
६. सेठ माणिकचंदका विवाह	***	•••		983
७. सेठ हीराचदजीकी केशरियाजीक	त यात्रा	•••	•••	986
८. नक्ल नोटिस जीवहिमा बंद,	नी केशि	ोया जी		940
🗫 सेठ <b>नव</b> लचंदजीका विवाह .	• • •	•••	***	949
" • सेट <b>हीराचदजीको</b> कुटुम्ब-सतीष		•••		943
		.14	***	948
१२. पूर्व पुण्यका उदय	••	•••	•••	948
अध्याय इ	उठा ।			
संतिन-छ	भ			
१, व्यापार-वृद्धिका कारण	• ,		444	940
२. विलायतसे ह्यापार		• • •		946
३. सेट माणिकवंदजीको प्रथम पुत्री	का छाभ		***	144
४. त्यागी महाचंदजीका परिचय		• • •	***	168
५. अंकलेश्वरकी पूजामें माणिकचर्जी		• • •	***	964
६ सजोतके शीतलनाथजी				143
७. धरमचंदजीका परिचय			***	१६६ १६६
८. प्रेमचंद मोतीचंदका जन्म		•••	***	•
<ol> <li>सेठ मोतीचंदका परलोक</li> </ol>			***	907
10. विधवा रूपाबाईके धार्मिक विचार		***	•••	૧૭૪
११. व्यापारमें अटह कार	•	• 4	***	300

٩٤.	चुन्नीलाल झवेरचंदका संबंध		960
93.	सेट माणिकचंदकी द्वितीय पुत्री मगनमतीका जन्म	***	969
9४.	सेंट हीराचंदजीका स्वर्गवास	***	१८३
	अध्याय सातवां ।		
	लक्ष्मीका उपयोग		
۹.	सेठ हीराचंद नेमचंद सौलापुरका सेठ माणिक चंदसे पा	रिचय	9 < %
	स्रतके चंद्रप्रभुके मंदिरका पुनः जीणोंद्रार	•••	153
₹.	सुरतमें क्षुत्रक धर्मदासजी		993
٧,	सेट माणिकचइजीकी गोमहस्वामीकी यात्रा सं ० १	203	994
4,	हिन्दीको भारतकी राष्ट्रीय भाषा होनेका दावा	***	99.6
Ę,	गोम्मटस्थामीका वर्णन	***	996
19.	सेट माणिकचंदजीकी दया और गोमहस्वामीमें		
	सीढ़ियोंका प्रबन्ध	144	२०२
۷.	मूलविद्रीकी यात्रा	•••	२०३
۹.	धवलादि प्रंथोंके उदारका विचार	•••	200
10.	कुरीतिनिवारण चर्चा	***	२१४
99.	'जैनवोधक'का उदय	***	294
۹۹.	सेट माणिकचंदजीके जाति उद्यागर्थ महत्वपूर्ण पत्र	की	1
	নন্ধন্ত	***	२१७
٩٦.	सोरापुरभें संस्कृत पाठशाला	•••	२२०
98.	प्रन्थप्रकाशन कार्यमें ब्रह्मसूरी शास्त्रीका पत्र	***	358
94.	भट्टारक विशालकीर्तिका परिचय	*	२२३
۹٤.	सेठजीकी यात्रा श्री सेत्रुंजय आदि	•••	<b>२२</b> ३
90.	धरमचंदजी पालीतानाके मुनीम	•••	२२५
10.	पालीतानाके छिये सेठ नवलचंदका प्रयत्न	•••	२२७
15.	पास्रीताना तीर्थका हिसाब		२२९

#### (१६)

२०. जुबिलीपर बम्बईमें गीवघ वंद	•••	२३ ०
२१. पारितयोंने मांसाहारकी बंदी	•••	२३०
२२. जमीनका व्यापार	•••	२३३
२३. सुरतमें चन्दाबाड़ी धर्मशालाका निर्मापण	•••	२३६
२४. पालीतानाका दौरा और महायता		२३७
२५. बम्बईमें रताकर पेलेसका निर्मापण	•••	२३८
२६. सेठजीका परोपकार व कार्यकुशलता	• • •	२४०
२७. सोळापुरमें चतुर्विष दानशाला	***	5,44
अध्याय आठवां ।		
संयोग और वियोग।		
१. सेटजीकी पुत्रियोकी लग्न	·	2 8.8°
२. श्रीयुत पंडित गोपाळदासजी	***	380
३. बम्बई दि० जैन सभाकी स्थापना		২১৩
४. रत्नाकर पेलेसमें श्री चंद्रप्रभु चैत्यालयकी स्थापना	***	28€
५. सेंट प्रेमचंद्को व्यापारकी शिक्षा	•••	રૂપ્ર
६. जैनियोंमें विलायत जानेकी चर्चा	• • •	243
७. दि० जैनियोंकी सभामें विलायत जानेका विचार	***	३५४
८. पं० गोपालहासजीका समुद्रयात्रामें विचार	•••	२५६
९. ब्रह्मसूरी शास्त्रीका समुद्र यात्रामें विचार		२५७
१०. वीरचंइ राघवजींका चिकागो गमन	***	२५८
१५. चौगलेकृत तापापहार स्तोत्र	•••	२६०
१२. सेठजीका मथुरा महासभामें प्रथम गमन	***	२६४
13. खड़े होकर उपदेश देनेमें ठाठा रूपचंदजीकी राय	•••	२६५
<ul><li>छापके वारमे वार्तालाप</li></ul>	***	२६६
१५. नकल पत्र वीरचंद राघवजी		२६८
६. सेट हरजीवन रायचंद	•••	२७४
७. पालीताणा मंदिरकी प्रतिष्ठा	•••	२७९

#### (e;)

१८. श्रीमती रूपावाईके १२३४ उपवासकी विगत	***	261
१९. सेठ माणि हचंदका परिप्रह्ममाण वता	***	ર(ર
२०. धवळ जयधवलके उद्यारार्थ चंदा	•••	२८६
२१. बम्बई दि॰ जैन परीक्षालय	***	355
२२. जैनधर्म पुस्तकप्रचल	***	२९३
२३. जर्मनीके अफसरका ब्रह्मसूरी कास्त्रीसे संबंध	***	354
२४. सेठ नवलचंद नीकी शिखरजो यात्रा और सीढ़ीक	प्रबंध	૨૬५
२५. सेठ माणिकचंद स्वयं अध्यापक	***	3.5
२६. मूलचंद किसनदास कापड़ियाका प्रथम परिचय	***	३०२
२७. मगनवाईजीका वेथव्य	***	303
२८. विधवा मगनबाईको पिता द्वाग विज्ञास्यास	***	ર્વ•૬
अध्याय नवां। समाजकी सबी सेवा।		
१. सं॰ १९५६ के दुष्कालमें मदद		70.
<ol> <li>बम्बईमें जैनबोहिंगका विचार</li> </ol>	• • •	390
३. , दि॰ जैन प्रां॰ सभाका स्थापन	***	वृ <b>ष</b>
४. मेठ माणिकचंदजी और प्रेमचंद व्याख्याता	• • •	393
. (4-6-22	***	396
	***	395
६. सेठ ही० गु० जैन बोर्डिंग बम्बईका स्थान	***	344
७. सेट माणिकचंदजीका शास्त्रप्रेम	***	३२७
८. सुग्तमें जैन पाठशाला	440	३२८
९. मंदिर जीणींद्वार	***	३२९
१०. थ्री॰ रुलिताबाईका पश्चिय	***	21
११. संटजीका जातियोंके इतिहासके लिये ईनाम	***	<b>३३</b> ०
१२. दि० जैन ढाइरेक्टरीका विचार	***	333
१३. पत्नी चतुरबाईका परलोकः 🚥 🚥	449	<b>३३६</b>
१४. गुजरातके ४२ ग्रामोका विरोध मिटाना	***	334

१५. आकलूनकी प्रतिष्ठा	•••	334
१६. द॰ म॰ जैब समामें सेठजीकी मानएत्र	•••	₹¥ <b>†</b>
१७. सेंडजीका द्वितीय विवाह	•••	383
१८. बम्बईमें रथोत्सव और संस्कृत जैन विद्यालयकी स्थ	गपना	388
<ol> <li>सेठ माणिकचंदजीका व्यापारसे पृथक् होना</li> </ol>	•••	३४५
९०. ४० ९००००) के दानका संकल्प	•••	188
२१. मगनबाईकी निर्लोभता		386
२२. सेडजी और पानाचंदजीकी शिखरजी यात्रा और	•••	
पार्श्वनाथ टौकका उपसर्ग निवारण	•••	380
२३. सोकापुरमें सेठजीको मानपत्र	•••	२४०
२४. ईडरके संस्कृत प्राकृत प्रन्थोंकी प्रशस्तिका कार्य	***	349
१५. भारत दि॰ जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका स्थापन	***	३५२
२६. सेठ प्रेमचदशीका स्वर्गवास और स्वहस्तलिखित द	ान <b>पत्र</b>	३५५
२७. बोलापुरकी बिम्बप्रतिश और प्रांतिक सभा ै	***	346
२८. वैद्यक शिक्षाकी उत्तेजना	***	349
९९. सेठ पानाचंदजीका स्वर्गवास और दान	•••	349
३०. गुजरात दि० जैन बोर्डिंग अहमदाबादकी स्थापना	•••	368
<b>३१.</b> स्तवनिधिमें द० मब्जैन सभा और मानपत्र	•••	३६७
३२. बन्याविऋयमें जातिमोजनका त्याग		309
३३. लोक बहादर रावजी कम्तूरचंदजी सोलापुर	•••	, ,
३४. शिक्षण फडके लिये सेठजीका अमण	***	३७३
३५. कोल्हापुर बोर्डिंगकी इसारतका मुहर्त	•••	३७४
३६. अहमदाबाद बोर्डिंगमें ५०००) का दान	•••	३७६
३७. बोरसदमें भ्रमण और मानपत्र		300
३८. सेठ हरीचंदनावाका परलोक और २५०००) का दान		3<3
अध्याय दसवां।		7-4
महती जातिसेवा-मथम भाग।		
9. अम्बाराम महासभा और के <del>टन</del>		
and the state of t	***	354

₹.	धर्मादाका द्रव्य	•••	***	•••	35#
₹.	मगनवाईकी तीर्थवात्रा	***	***	•••	359
У,	बाबू शीतलपसादजीका परिचय			•••	353
	उजैनकी बिम्बप्रतिष्ठामें सेठजी		***	•••	355
	सेठजीका दयादान		***	•••	¥0₹.
	2 0 0 0 0	•••		•••	ADÉ
	सेठजी द्वारा स्था॰ वा॰ पाठशास		ENIMEST		XeV.
	सेट ठाकोरदास भगवानदास औ				
			•		X02
	दीवान कोल्हापुरकी जैन समाज			***	283
۹٩.	'हीराबाग' धर्मशालामें सवाला	लका दान	•••	***	४१२
૧૧.	सहारनपुर्धे महासभा और सेट	जी सभाप	ते	***	899
93.	बाबू शीतलप्रसादका सेठजीक	े परिचय	***	•••	४२२
٩٧.	स्तवनिधि क्षेत्रका हाल	6 b m	•••	•••	ASK
	सेठजीको जे० पी० की पदवी			•••	४३५
	कुंडलपुरकी यात्रा और जबलपु			***	884
		•••	***	***	84.
	जवलपुर बोर्डिगका मुहुन			100	४५३
	शिखरजीकी वीसपंधी कोठीका			***	840
	सेठजीको सरतमें मानवत्र		***	•••	*68
	स्या॰ वा॰ पाठशाला काझीके वि				•
710			-	417.4	
	और रा॰ व॰ नेमीचंदके पा		***	•••	866
२ <b>२</b> .	ही गवागमें तीर्थक्षेत्र कमेटी का	दफ्तर प्र	<b>ारं म</b>	***	४७२
₹₹.	सेठजीका सरळ स्वभाव	• • •	•••	•••	४७५
₹४.	फन्टन सर्कारसे सेठ जोकी सित्र	ाता और क	न्याविकय	निषेष	४७६
٦٩.	भातकुलीमें सभा और सेठजी	सभापति		***	899
	मुक्तागिरीकी यात्रा		***		860
	उपदेशकीय परीक्षा			•••	ASA
	कलकत्तेमं महासमा और सेठा		, ***	***	864

#### (२०)

<b>२९. स्यनबाईको सुवर्ण प</b> रक	•••	•••	•••	*
३०. पं॰ शिवकुमार शास्त्री		• • •	•••	४९
अध्यायः	ग्यारह	खां।		
		-		
महती जातिसेव	1–1हत	ाय मात्र		
ा. सेठ माणिय चंदजीकी दिनचय	î			ं ४९३
२. गजपंथापर प्रो० सना और			***	४९६
<ol> <li>आगग बोर्डिंगक लिये मेठजीव</li> </ol>			* * *	४९९
४. शिखाजी पर बगले बनते हा		***	• • •	408
🤏 सेठजीका दौरा और उदयपुरम	पाठश	ਗ		५०५
६. फलटनमें चित्रप्रतिष्ठा और स	गनपत्र			490
🛰. स्रतमे पुलकी बन्धाशासकी				498
८. सेटभी हाम नियमजीकी रक्षा	र्थ ग्युति	संबुहत् च	FT #	ष्ट्र
😘 शिखरजीको रक्षार्थ संदजीका		. 4 4		५२१
९०. शिखरजी रक्षाम सेठ चुन्नोलालः		गम	•••	५२३
<b>११.</b> शिखरजीमें लाई फ्रेजर और ह				لاع ي
१२. 'दिगंबर जैन' पत्रके लिये सेटः	नीका प्रय	हिन	***	630
13. तारंगाकी यात्रा और दि० खे <b>०</b>	की फर	मंदने स	<b>उद्योग</b>	<b>પ</b> રૂર
१४. आबृजीके दि० जैन मंदिरके उ	द्धारका	प्रदन्त		488
१५. सोलापुरमें बोर्डिंगका विचार	• • •	• • •	• • •	686
१६. पावागड़में प्रा० समा और सेट	जोको स	गनपत्र	• • •	نوبوه
<ul><li>भगनवाई द्वारा खीशिक्षाका उट</li></ul>	ोग	***	*	فإفهاده
<ul> <li>सोलापुरमे बोर्डिंगका मुहूर्त</li> </ul>	•••	***		بربرد
९. कुंडलपुंगमें महासमा और सेठती	• •	***	# * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	५६०
९० सेठजीको शिखरजीकी चिता			•••	५६२
. १. पावागइमें तांबेकी खान न खोदन	की आः	ता		य १९६७
.२. बाबू देवकुमार आराका स्वर्गवार	म और	हान	***	-
.के माता स्पाबाईको साम <del>ण्य</del>	•••		* * *	षद्छ <b>५</b> ६७
-	~ ~ =			W = 6

## (२१)

	इलाइबाइमें जैन बोर्डिंगका उद्योग	
દ્ધા	दहींगावमे मेठजी और वालविवाह निषेधका प्रस्ताव	. ५७४
ગદ્	बम्बर्डमे दतियानरेशको मानपत्र	- ५७६
२७,	म्तवनिधिमें सेठजीका उपदेश और जैनधमें पर एक अजै	ন
	चकोलकी राय	. 4.00
26,	तारगामें प्रा सना, अहमदाबाद शाविकाश्रमका विचार	. 620
50.	कोल्टापुर 'चनुरबाई सभागृद्'	. ૫૯૨
30.	धर्मादेके प्रस्तावकी असली कार्रवाई	. ५८२
39.	हुवली बोर्डिंगके लिये नेटबीका उद्योग और स्थापना	. 458
37.	परीख सत्त्रभाईके युगरी कृदर	. 400
३३.	महाराज बड़ीदा और सेठजी	. 400
₹४.	यम्बर्मे त्यामी एवालाहका वेशलीच और भीषधाळय	. 40%
314,	सर्वारी वील्मरमे जन प्रतिनिधिके विशे लेट गीके	
	पञ्च द्यवहारकी नकल	. 497
¥4.	भाविकाशमकी स्थापना	. ५९७
ş <b>9</b> .	सेठजीका काठियावाडम भ्रमण	. ५९८
₹€.	दाहोदमे सेठजी और मानपत्र	. ६०३
38.	कोल्हापुरमे द॰ म॰ जैन सभा और सेटजीका दान	. ६११
Χo.	सोलापुरमे त्यामी पतालालजीका केशलीच और	•
	शीतलप्रसादजीका बद्धचारी होना	. ६१५
89.	त्र॰ शोतलप्रसादजी रचित वारह भावना	. ६१९
	अध्याय वारहवां।	
		1
	महती जातिसेवा- <u>तृती</u> य भाग ।	
٩.	सेंटजीका पंजाबसे दौरा और लाहीरसे वोर्डिंगका प्रवं	घ ६२८
₹.	सेठजीको पुत्र (जीवनचंद्रका) लाम	६३२
₹.	सेठजी द्वारा मांसाहार रोकनेका प्रयत्न	६
٧.	शिखरजीने महासभा और सेठजीको 'जैनकुछभूषण' का	पद ६३४

#### ( २२ )

५. भारत १६० जन महिला परिषद्का स्थापना	***	€ ₹
६. वीसपंथी कोठीके मदिर जीर्णोद्धारार्थ सेठजीका	श्रम	६३
७. लखनउमें सेटजी और मानपत्र	***	६४
८. लाहीर बोर्डिंगक्री स्थापना	•••	६४३
🔩 सेठनीका विद्याप्रम और देग्छिर जुगमंदरलाल	***	€8¢
🤏 . गोमहस्यामी मन्तकाभिषेक, महासभा और सेठजी	सभापति	६५१
११. शोकसागरेम नेटजी	•••	€ U, Q
९२. जयपुरमे सेठनी और मानपत्र	***	६६१
🥦 ३. महाराज सीकरको वस्वईमे मानपत्र	***	६६६
🥦 ४. इलाह्यार बोर्डिंगके लिये सेठजीका दौरा	•••	६६७
१५ सांगठीमें द० म० जैन सभा और सेठजीका बोर्डिंगके	लिये उद्यो	ग ६७१
१६. श्राविकाश्रमका वर्म्बईम परिवर्तन	•••	इ७इ
९७. ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुरकी स्थापना	6.	£ (40.
१८. वेलगाम और सांगर्शमं बोहिंग स्थापन और सेठजी	का प्रयत्न	560
९८. सेटजीका प्रतापगढ़ गमन और गिरनारजी क्षेत्रका	सुधार	563
२० रतलाम बोर्डिंगकी स्थापना		૬૮૬
२१. सेटजीकी प्रधांदेश यात्रा	444	<b>&amp; 9 6</b>
२२. खामगाममे प्रा० सभा और मेटजी	4.4.4	90 E
२३. सेठजीकी विलायत जानेकी इच्छा		७०७
८४. विलायतमें जन चोडिंग खोलनेका सेटजीका विचार		(900
इटाहाबाद बोडिंगकी स्थापना	• • • •	७०८
२६. मगनवाईका पत्ताब श्रमण	***	80 ×
९७. शिखरजी तरापधी कोटी और चंपापरीजीका उत्पर	•••	<b>ড</b> ৭ ৭
(८. मदारागर तेथक्षत्रका उद्धार	•••	<b>9</b> 92
९. सोलापुरमें चतुरबाई श्राविकाविद्यालयकी स्थापना		
o. वर्धामें दि० जैन बोर्डिंग	***	७१२
१. काशमीरका प्रवास	•••	138
र. सेटजीका विद्यार्थिओसे प्रेम और कोल्हापुर गमन	***	७२५
कार नार वारहापुर ग्रामन		७२८

### (२३)

33	<ol> <li>अहमदावादमें औषघालयकी स्</li> </ol>	थापना	•••	***	64
₹ 8	८. छंदनमें महाबीर बदरहुडकी र	थापना	•••	•••	७३३
३५	८. श्री० सगनवाईको 'जैनमहिल	ारत्न 'का	पद	•••	436
३६	. हमन जैकोबीकी सम्मति जैन	बौद्धसे	प्राचीन	•••	७३९
30	. मोलापुरमें बोर्डिंगके मकानका	खुलना	•••	•••	७४३
30	. धर्मात्मा रूपाबाईका परलोक	***	***	•••	RXX
₹ €.	. श्राविकाश्रमकी श्रःविका श्री•	जीवको	वाईका म	रण	
	और दान	•••	***	***	ও४९
٧°,	. जबलपुर बोर्डिंगमें सिघई नारा	यणदासक	ा दान	•••	७५२
<b>४</b> ٩.	. सेठजीका स्वर्गवास	***	***	***	<b>७५३</b>
४३.	. हाई लाखका अंतिम दान	***	***	•••	७५६
	अध्याय	तेरहव	TI		
		•			
	दानवीरका	स्वगवा	स ।		
٩.	टाई लाखके दानकी विगत		***	•••	4.3 €
₹,	दानाविल	•••	***	444	७६६
3.	माणिकचंदती स्मारक पड		***		990
۲,	शोक सभाओका कोष्टक	***	•••	4 (1.6	७७२
44,0	सहातुभूतिम्बक पत्रोकी मुची	***	***	***	७७५
€,.	मुख्य २ शोकजनक पत्रोकी न	1कल	***	•••	966
v.	सहातुभूतिस्चक तागेकी सूची	•••	•••	***	805
	मुख्य २ तारोकी नकल		•••	***	604
٩,	शोकजनक कविताय	•••	•••	***	<99
io,	पत्रोके शोकजनक लेख	• • •	***	•••	: ८३४
۱۱.	प्रनथकर्त्ताका प्रयोजन	•••	***		666

# <sup>(२४)</sup> शुद्धिपत्र।

<b>छ</b> ञ	लाइन	अगुद	गुन्ह
4	२०	थीरता	थिग्ता
9	٤	हठ	हर
१३	2.2	शीव	सिद्ध
<b>१</b> ६	? <	ण्डो <u>र</u> ो	प्लेटो
21	73	कार्णो	कर्णो
छ ७	<	अय्यु	लवु
48	<b>१</b> 0	तंबतके अंक तीनटी	संवतके अंक तीन ही
६७	२०	पुरुषार्थ	पुरुषार्थी
६३	৬	विनकमेन	विनयसे <b>न</b>
**	१५	उम्मेगं	उम्मगी ्
₹8	85	ग्राम ने काट	ग्राममें काष्टा
६९	e 9	यथन	कथन
७३	19	कंगृनेदार	कंग्रेदार
१०५	२२	बढ़ाता	बढ़ता
<b>१</b> ३८	? <	उ <i>ल्क</i> 2	<b>उ</b> त्कट
१९७	<	रमणीकता	रमणीकताका
१९६	74	पुरावार्थी	पुरुषार्थी
१९७	64	एक	एक में
३२०	18	संबन्धियोंमें	सम्बन्धियोंमेंसे
३२६	<b>\$8</b>	नरता	जाता

g.	ल. अशुद्ध	W.T.
३३०	१९ अपने	शुद्ध आपने
३४०	<b>१</b> २ जो	ज़ीर
3 3 3	२ दुदु	•
"	१७ सुवर्णम	<u>ड</u> ड सुवर्णमय
३४९	१ पंनीकी	भानस फानस
३५१	४ सिसाई	मानस सिनारे
३६५	११ व	वे
३७०	४ योगान	योगाने ं
,,	१४ व्याप्त	व्या <u>वृ</u> त
३९३	१८ देशका	<sup>०वा</sup> वृत देशकी
३९४	१० शोक	द सन्तः सौक
४२१	२१ २०००	•
865	१७ भाई	₹ c c o s
8 ५ ६	१९ अप्रेलको	मारी
		अप्रैलको सैटनी
₹०८	२३ १९८०	छिन्दवाड़ा आए बढ़ां
२३२	. ७ स्तनपर	8680
२३४	े २ कम	खनका
<b>२</b> ३६	३ जमीन	कम
₹8७	११ वृद्धि	जीमन
₹8<	१३ महलमें कशसे	बुद्धि
<b>३</b> ५५	१ पं०	महलके फर्शमें
	1 40	Ýo ,

ੲ.	ला.	अशुन्द	शुद्ध
77	<b>?</b> ?	आद्नी	आदमी
396	<	साश्रार्थ	सर्व शास्त्रार्थ
२६४	<i>\oldoy</i>	1090	१९५७
२७३	१६	8	8
२७७	२०	मभामोत	समासांत
२९५	९	प्रद्वीण्	पुढ़वीए
२९७	२०	अर्ल	अग़
४७४	१६	वतन	वेत <b>न</b>
868	٩	लंद	लौट
850	१३	লাভা	<b>राट</b> '
४२९	1,8	माणिकचंद्रजी	माणिकचंदनीको
800	<b>e</b>	कि	की
६२१	<b>o</b>	हें	है
12	२४	ही जान	विज्ञान
७०६	१६	की	बोर्डिङ्गकी
५२३	१३	मांगलीकी	सांगलीका
038	8	फंट	फन



स्वर्गीय श्रीमान दानवीर जैनकुलभूषण मंठ माणिकचन्द हीराचन्द्र जीहरी जे॰ घी॰ वस्वई। जन्म सं १८०८ स्वर्गवास मं १८७०

#### ॥ भीवीतरागाय नमः ॥

## दानवीर माणिकचन्द्र।

स्व० दा० जैनकुलमुषण सेठ माणिकचन्द्र हीराचन्द्र जींद्ररी जे०पी०वम्बईका संक्षिप्त जीवन चरित्र।

## अध्याय पहिला।

### जीवन चरित्रकी आवश्यकता।

स संसारमें कोई भी प्राणधारी एक पर्यायमें बहुत कालतक नहीं रहता । यह बात प्रत्यक्ष है कि लाखों कोशिशों के किये जानेपर भी एक जीता जागता मानव, एक जगतके जीवों का मित्र, एक अपनी शक्तियों को परमात्म-भक्तिमें व परोपकार-वृक्तिमें लीन करनेवाला, यहां तक कि स्वयं सर्वज्ञ अवस्थाको प्राप्त होनेवाला इस प्रद्रलके स्कंथों से रचे हुए शरीरमें अपनी आयुसे अधिक रह नहीं सक्ता । मरण किसीको नहीं छोड़ता । किन्तु मरण उन्हीं का मरणरूप है जो फिर अन्य शरीर-को धारण करते हैं । जिन्हों ने अपने आत्माके जपरसे कारण शरीर अर्थात कार्माण देहको या आठों कर्मोको जला डाला है और उसे शुद्ध निर्विकार ज्ञानानंदमय बना डाला है जनका यह शरीर-वियोग मरण नहीं किन्तु मोक्ष है । वे स्वाधीन, अध्यावाध, आनंदमय होकर निरंतर खात्मानुभूति तियाके विलासमें मग्न रह परमामृतका स्वाद हेते हुए परम मुखी रहते हैं। ऐसे महास्माओं को बीर, महावीर, परमविजयी, सिद्ध, परमऐश्वर्यवारी, परमप्रमु कहते हैं। आत्मा अपूर्व शक्तियोंका भंडार है। इसका लक्षण उपयोग है। ज्ञान कियाका स्वामी आस्मा ही है, अन्य कोई भी अनास्मा नहीं। ज्ञान एक गुण है। गुण और गुणका आश्रयी द्रव्य इस जगतमें कभी मिरते नहीं, चाहे जितनी उनकी अवस्थायें पल्टती चली जावें। नि:सन्देह एक अवस्था जरूर मिटनेवाली और अन्य अवस्था होनेवाली है, पर जिसकी दशा पल्टती वह अपनी सत्ताको इस जगतमें सदा बनाये रखता है। हमको प्रत्यक्ष अनुभव है कि किसीका निश्चयसे नाश नहीं होता । एक उनड़े हुए वृक्षकी शाखार्थे काटे जानेपर छकड़ी होकर कोयला, राख होती और फिर पानी हवाके इवर उधर बहती हुई फिरती हैं। वह मसाला, वह द्रव्य, चीज़ जो शाखाओं में थी वह इस संसारसे छुप्त व हुई किन्तु एक दूसरी ही हारुतमें बदल गई, तो भी जो गुण उस शास्त्राके द्रव्यमें थे वे सब उसके उसीमें हैं।

ज्ञान आत्माका मुख्य गुण, हरएक के अनुभवमें है। हरएक जानता है कि मैं जानता हूं, मैं देखता हूं, मैं मुनता हूं, मैं काम करता हूं, मैं दुःखी हूं, मैं मुखी हूं। इस ज्ञान गुण और इसके खामी आत्माका कभी नाश नहीं। ये दोनों अजर अमर अविनाशी अमिट हैं। इससे आत्मा अपने सर्व गुणोंके साथमें इस म्यातमें सश ही एक न एक पर्यायमें बना रहता है। जब तक शुद्ध नहीं, मुक्त नहीं, निरंजन नहीं तब तक इसको अपने कमें के अनुसार

कोई न कोई देहमें अवस्थ रहना पड़ता है। कर्म सहित जीवोंका मरण एक नये जन्मके लिये होता है। जो कुछ भी हो यह निश्चय है कि इस शरीरका सम्बन्ध किसीका भी अमर नहीं रह सक्ता। ऐसी दशामें प्रवीण मनुष्य मानव शरीरमें रहते हुए इसका ऐसा उपयोग करते हैं जिससे न कि यह जन्म हो सुन्दर, सुखदायी और हितकारी होता है, किन्तु पर जन्ममें भी शुभ शरीर व शुभ सम्बन्ध पानेका हह पुण्य उनके साथ हो जाता है।

सर्व प्राणधारियों में मानव सर्वसे श्रेष्ठ है। इसको मनकी शिक्तिका अपूर्व लाभ है। मनकेद्वारा यह बड़े २ आध्यर्थयुक्त तरकीबोंको सोच सकता है। आज कल जो हवाई जहाज़, बेतारका तार आदि नाना यंत्र निकल पड़े हैं ये सब मनका ही चमत्कार है। मनके द्वारा यह जगत क्या है! इसमें कौन २ पदार्थ हैं! उनमें मुझे हितकारी क्या व अहितकारी क्या! यह सब ज्ञान होता है। सुक्ष्मसे मुक्ष्म तत्त्व जो एक शुद्ध आत्माका अनुभव है उस तककी पहुंच इस मानवको हो जाती है और यह उस तत्त्वका सेवी होता हुआ जो आनन्द लाभ करता है वह बचन अगोचर है, केवल अनुभव-गम्य है। यही अनुभव आत्माको मैलको घीर २ घोता है, यहां तक कि यही आत्माको शुद्ध कर देता है।

मानवींके लिये धर्म, अर्थ, काम और मोश चार प्रकार्थ हैं। मोश धर्मका अंतिम फल है। अर्थ और कामका भी अंतरंग हेतु प्रण्यरूप धर्म है। धर्मसाधन बिना तीनोंका लाभ नहीं, इससे धर्मका सेवन सबसे ज़रूरी है।

धर्म वास्तवमें आत्माके उस परिणामको कहते हैं जो शुद्ध

आत्मा या परमात्माकी ओर तन्मय होता हुआ बीतरागमय हो। यही परिणाम कर्मीसे मुक्ति देनेवाला है। इसके अलाममें उस परि-णामको मी धर्म कहते हैं जो आत्माको पार्पोसे बचाकर पुण्य कार्योमिं लगाता है पर बीतरागरूप होनेकी चाहसे मिला होता है। जिसका परि-णाम क्रोध, मान, माया, लोभ कवार्योकी मंदतामें होता है। वह शुभ परिणाम है और जो इन कवार्योकी अतिशय मंदतामें होता है उसे शुद्ध या बीतराग परिणाम कहते हैं। जो इन दोनोंसे रहित तीन कवार्य गुक्त होकर पांचों इन्द्रियोंक मोगोंमें अनुरागी व पर अहितमें निडर व परकी बुराई व कष्ट देनेमें उत्सुक होता है उसे अशुभ परिणाम कहते हैं। यह अधर्म है क्योंकि पापका कारण है।

नो मानव श्रीऋषभदेत, अजितनाथ, चंद्रप्रभु, शीतलनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ व महावीर सरीखे उत्कृष्ट क्षत्रियों के समान आत्माको शुद्ध करना चाहते हैं वे केवल वीतराग भावके ही सिक हो योगाम्यासमें लीन हो साधुपनेके जीवनमें रह मुख्यतासे अपना नर जन्म सफल कर मोक्ष पुरुषार्थ साधते हैं। परंतु जो इतनी कषायोंकी हीनता करनेमें असमर्थ हैं वे त्ररहीमें रह धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ साधते हैं। यद्यपि अर्थ याने लक्ष्मीका लाभ, काम याने न्यायपूर्वक इन्द्रियोंके भोग, शुभ परिणामसे किये हुए पुण्य कर्मको अपना अंतरंग कारण रखते हैं पर इनके लिये न्यायपूर्वक बाहरमें उद्यम या पुरुषार्थ किया जाता है तब ये सिद्ध होते हैं। जैसे दो पहियोंके बिना गाड़ी नहीं चलती ऐसे ही अंतरंग और बहिरंग दोनों कारणोंके बिना अर्थ और काम नहीं होते। जो आलसी बाहरी उपायोंमें पुस्त होते हैं वे अंतरंग

कारण होनेपर भी न तो द्रव्य पैदा कर सक्ते और न न्याय सहित भोग ही पा सक्ते हैं।

इस जगतमें वे ही मानव अपने जीवनके सुय-राकी सुगंधको चारों ओर फैला जाते हैं जो अपने जीवनकी घड़ियोंको—उनक पल व विपलोंको, आवली व समयोंको सम्हाल २ कर काममें लेते—अर्थात जो अपने आत्माको परमात्म शक्तिका भंडार निश्चय करते हुए उस शक्तिके खिलाने व उसीकी प्रफ्तिका मंडार निश्चय करते हुए उस शक्तिके खिलाने व उसीकी प्रफ्रिलामें परम सुख-अनुभवके श्रद्धानको रखते हुए गृही जीवनमें शारीरके इन्द्रिय सम्बन्धी विषयोंकी तुच्छ परवाह रखते हुए अर्थ व कामकी सिद्धि करते हुए परके उपकारमें अपनी शक्ति-योंका उपयोग करना अपना कर्तव्य समझते हैं और रात्रि दिन सर्व जीवमात्रका कैसे हित हो इस चिन्तामें, इस उद्योगमें, इस धुनमें मस्त रहने हैं। ऐसे परोपकारियोंसे अधिक जीवोंका हित होता और उन जीवोंको अपनी उन्नतिका मार्ग सुझता है।

जो मानव इस पृथ्वीपर जन्म छे केवल अपनी इन्द्रियोंकी गुलामीमें ही अपने इस जीवनको बिता कर मृत्युकी श्राय्यामें सो जाते हैं वे यहां भी अपने जीवनसे बहुतोंकी हानि करते हैं और परलोकमें भी उनकी आत्माको योग्य पर्यायका लाम नहीं होता। उनका जीवन पाश्चिक जीवनसे भी गया-बीता है।

मानवमें मानसिक, वाचिक और कायिक ये तीन शक्तियां चड़ी बलवती हैं। जो इनको छोहेकी तरह बेकाम डाल रखते हैं उनकी शक्तियोंमें छोहेकी तरह कंग रूग माता है और है वेचारे

उनसे कुछ भी लाभ नहीं उठा सक्ते। करोड़ों मनुप्य इस संसारमें ऐसे हैं जिनकी शक्तियां शिक्षा, योग्य उदाहरण व योग्य सहारेके विना यों ही पड़ी रहती हैं। जिनकी शक्तियोंको शिक्षादेवीकी उपासना नहीं मिलती है वे यों ही रह जाते हैं, कोरे पशुसम जीवन काटते हैं। भारतमें करोड़ों मनुष्य इसी रंगके हैं। शिक्षा शक्तियोंको खिलाती है, उन्हें मजबूत करती है, उनसे उपयोग लेना बताती है। मानवको जब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थीकी सिद्धि करनी है तब उमको शिना भी ऐसी ही मिलनी चाहिये जो चारों साधर्नोमें सहायक हो। यदि वह शिक्षा इनमेंसे किसी एकको भी हानि करनेवाली होगी तो वह शक्तियोंको उन्मार्गमें उपयुक्त करनेकी तरफ प्रेरणा करेगी। और इसका फल प्राय: ऐसा भी हो जायगा कि वह शिक्षाके होनेपर शिक्षाविहीन रहने-की अपेक्षा अपनी अधिक हानि कर बैठेगा। इस कारण इन उत्पर कहे हुए चारों वोर्गिको माधनेमें सहायक जो शिक्षा है वही सुशिक्षा है। यही सुशिक्षा मानवकी शक्तियोंको ऐसी चमत्कृत बनायेगी कि जिनसे वह जगतके उपकार करनेके सिवाय अपना भी उपकार कर हेवेगा। केवल पुस्तकोंके पढ़ने वा रटनेको शिक्षा नहीं कहते-जिस रीतिसे मनुष्यको अपनी मानसिक, वाचनिक और कायिक शक्तियोंको उपयोगी मार्गमें हे जाकर उनसे यथोचित स्वपर उपकारक कार्य हेनेकी योग्यता आजाय वहीरीति सुशिक्षा है।

जगतमें तीन तरहके मनुष्य होते हैं-उत्तम, मध्यम और जयन्य।

उसम मनुष्य वे ही हैं जो प्रत्येक कार्य्यको विचारपूर्वक

शुरू करते, उसके शीघ करनेके लिये अनेक साधनोंको मिलाते, कार्य्यमें उद्यम करते हुए जो अनेक आपत्ति, उपसर्ग और कष्ट आजाते उनको समभावसे सहते, ज्यों ज्यों कष्ट पड़ते त्यों त्यों और अधिक उस संकल्प किये हुए कार्य्यके साधनमें लीन होते और अंततः उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। यदि कदाचित आंग्रु कर्म शीघ ही क्षय हो जावे और इस शरीरसे उनकी आत्माका वियोग हो जावे तो भी वे कुछ खेदित नहीं होते किन्तु अपने दढ़ संकल्प और उद्योगके कारण अपने पीछे ऐसा दृष्टान्त छोड़ जाते हैं जिससे उसी कामके पूरा करनेमें कोई न कोई उद्योगी निकल आते हैं। और उनका उदाहरण सदाके लिये इस जगतमें अंकित हो जाता है।

मध्यम मनुष्य वे हैं जो काम तो विचारसे ही शुरू करते हैं और उसके साधन भी मिछाते हैं, पर यदि कष्ट, परीषह और उपसर्ग आनकर खड़े हो जाते हैं तो कायर होकर उस कार्यको छोड़ बैठते हैं। यद्यपि इनमें कार्यको अंतिम हह तक पहुंचानेका साहस नहीं होता तो भी उत्तम कार्योंके करनेमें उत्साह दिखछाते हैं व कुछ प्रयत्न भी करते रहते हैं इससे उनका उपयोग हितरूप भावोंमें ही वर्तन किया करता है।

जचन्य पुरुष वे हैं जो पहले तो किसी उपयोगी कामका विचार ही नहीं बांधते हैं और यदि किसीके कुछ विचार भी होता है तो उनको कायरता, डर व आलस्य इतना सताता है जिससे वे अपने विचारका कुछ भी उपयोग नहीं कर सक्ते। ऐसे मनुष्य बुरे कामों में तो नहीं तथार हो नाते हैं और उनको निस तिस

बस्ह करते भी हैं पर उनमें भी इनकी शक्ति दृढ़रूप नहीं रहती। उन्मत पुरुषकी तरह एकको छोड़ दूसरेमें, दूसरेको छोड़ तीसरेमें घूमा करते हैं। ऐसे पुरुष प्रायः इस जगतमें भारका हैं। उत्तम पुरुष अपने कार्योंकी सिद्धि इन नीचे लिखे गुणोंके ही कारणसे कर सक्ते हैं:—

- (१) समयकी उपयोगिता—जो लोग अपने समयकी क़द्र नहीं जानते हैं ने अपने जीवनके मूल्यको नहीं पहचानते हैं। समयोंसे ही यह जीवन बना है। रत्नोंसे अधिक मूल्य हरएक समयका है। एक सेकन्ड या पलमें बेगिनती समय बीत जाते हैं। अपने समयोंकी कदर करना ही जीवनको उपयोगी बनानेका एक मुख्य सायन है।
- (२) नियमित कामकी विभाग दाकि—मनुष्यमें शरीरके बलको व स्वास्थ्यको रक्षा करते हुए अपने कामोंको पूरा कर डालनेका अवसर उसी समय आता है जब वे भगवद्धिक, शरीर किया, भोजन, शयन आदि नित्यके कामोंको नियमके अनुसार प्रतिदिन करते हैं। जो विना किसी नियमके चाहे-जब खाते, सोते, काम करते हैं उनके बहुतसे काम रह जाते हैं तथा कोई भी काम निराकुलतासे नहीं होता तथा प्रायः अनियमित काम करनेवालोंका शरीर अस्वस्थ रहता है। जो सुर्व्योदयसे पहले उठकर काममें स्माते और राजिको ही थीरताके साथ छह सात आठ घंटे आराम करते हैं वे प्रायः नियमसे अपना काम कर सक्ते हैं।
- (१) दीर्घद्दिता—मानवके कार्मोकी सफलताके लिये उसमें दीर्बद्धिताकी बहुत बड़ी ज़रूरत है ताकि वह अपने उस

कार्य्यके फलको पहलेसे ही विचार हे और गंभीरतासे सोच है। को गंभीर विचार नहीं कर सक्ते वे प्रायः अपने कार्यमें विफल हो जाते हैं।

- (४) इंन्द्रिय-पराजय-पांचों इन्द्रियोंकी चाहनायें मनु-प्यको जब अपना दास बना लेती हैं तब वह उपयोगी कामोंसे हठ करके उनकी पृति करनेमें लग जाता है जिससे उसका जीवन इन्द्रियोंके दासत्वमें पड़कर बेकार हो जाता है। जो उपयोगी काम करना चाहते हैं वे हमेशः अपनी इन्द्रियोंपर काबू रम्वते हैं। वे सही-सलामत रहें ऐसी भावनासे उन्हें भोजन-पानादि देते हैं और उनसे खूब काम लेते हैं। मुंहका चटोरापन, मेले तमाशेकी दौड़-धूम, नाच-रंगकी चटक-मटक, अतर-फुलेलकी महक आदिसे उनका दिल गन्दा नहीं होता है।
- (५) सहनद्गीलता—नगतमें रहते हुए और किसी भी कामकी सिद्धि करते हुए अपने सिवाय और बहुनसे लोगोंसे काम पड़ता है। उनके साथ व्यवहारमें कभी २ कठोर शब्द व अनुवित वर्ती-वका भी सामना हो जाता है। उस वक्त अपने भावों को सम्हालने और कोध न करनेकी बहुत: बड़ी ज़रूरत है। जिनमें किसी बातको सहनेकी शिक्त नहीं होती वे हेल-मेलसे नहीं रह सक्ते और न दूसरोंसे कोई लाभ ले सक्ते हैं। सहनशीलताके गुणसे आदमी जगत् भरको अपने वशमें कर सक्ता है। यह भी कार्यसिद्धिका एक अमूल्य गुणहै।
- (६) घेर्य्य यह गुण थी बहुत ज़करी है। घेर्यके बिना कोई काम पार नहीं उतर सक्ता। किसी कामकी क्रिट्सिका यस्न करते हुए बहुतसे विञ्ल व संकट व चिन्तामें उपस्थित होती हैं उस

समय घेर्य ही एक ऐसा गुण है जो वारवार कोशिश किये जानेकी उत्तेजना देता है। और जो इस गुणको अपने गलेका हार बनाते और कभी आकुलित नहीं होते वे अपने काममें अवश्य सफल होते हैं।

- (७) नम्रता—-नम्रताकी भी मानवको बहुत बड़ी ज़रूरत है। जो मानव अपने पास धन, बल, तप, विद्या आदि बलोंको बढ़ते हुए देख करके भी अहंकार नहीं करते किन्तु सदा नम्न रहते हैं, वे ही बड़े पुरुष हैं। वे बिना कारण जगतको अपना बन्धु बना लेते हैं। वास्तवमें नम्नताकी छायाके नीचे सब कोई आना चाहते हैं। उसकी सुगंधको सर्व कोई सूंत्रते हैं। जो किसी भी बातमें बल्जान् होकर मान नहीं करते हुए नम्न रहते हैं वे ही दूसरोंसे गुण ले सक्ते व दे सक्ते हैं, स्वयं उपकार पा सक्ते व छोटेसे छोटेका भी उपकार कर सक्ते हैं।
- (८) सत्यता—सत्य बोलना और सत्य व्यवहार मानवकी शोभा व उन्नतिका भंडार है। जो मनमें सोचकर कहते और उसी तरह वर्तन करते हैं वे ही सत्यवादी हैं। जो असत्यको सर्व पापोंका सरदार समझते और उससे डरते हैं, जो वादा करते हैं उसको पूरा करते हैं, जो श्रीदशरथ व श्रीरामचंद्रकी भांति हद प्रतिज्ञाको निवाहनेवाले हैं वे ही कुछ काम कर जाते हैं। मनुष्यकी वाणी सचके बिना महा अनर्थकी करनेवाली होती है। सत्यतासे किसीको दुःख नहीं होता। केवल सत्यतासे ही मनुष्य लौकिक व पार-छौकिक सर्व तरहकी उन्नति कर सकते हैं।

(९) ब्रह्मचर्य-मानवकी शक्तिको हु और मनको पिन्नित्र रखनेके लिये मानव जातिके लिये यह एक अति आवश्यक गुण है। जो विवाहित नहीं हैं वे अपने वीय्यकी रक्षा पूर्णपने करके श्री महावीरस्वामीके समान परम वीर बननेका यत्न करते हैं। पर जो विवाहित हैं वे केवल संतानकी इच्छासे गृहसंसारमें वर्तते हैं तो भी इच्छाको आधीन रखते हैं। जो इस गुणकी कदर नहीं करते वे वीर्यको बरवादकर निकम्मे हो जाते हैं और पिवत्रता उनके मनसे विदाहो जाती है। जिससे उत्तम विचार व उत्तम कार्य्य नहीं होने पाते। उत्तम मनुष्य इन उत्तर लिखत नौ या अधिक गुणोंकी बदौलत ही इस नरभवकी घड़ियोंको ऐसे २ कार्मोमें लगाते हैं जिससे वे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों प्रक्षाधींकी सिद्धिमें कुछ उन्नति पा जाते हैं और जगतका उपकार कर जाते हैं।

आज हम अपने पाठकोंको एक उत्तम मनुष्यके जीवनका परिचय कराना चाहते हैं जिसमें ये उत्पर लिखित गुण कूट कूट कर भरे हुए थे व जिसने अपने पौरुषके बलसे गृहस्थ धर्मकी जो उन्नित की व अपनी उन्नितसे जो दूसरोंका हित किया वह वचनसे अगोचर है। जिनका उस मानवसे रात्रि दिनका सम्बन्ध रहा है व अच्छी तरह जानते हैं कि उस मानवमें कैसी २ खूबीके गुण थे। आज वह मानव इस मानव पय्यीयमेंसे चला गया है—उसकी आत्मा इस शरीरसे विदा होकर अन्य किसी देहमें चली गई है। यद्यपि अब उसके मन वचन कायके चरित्र दृष्टिमें नहीं आते तो भी उस मानवने अपने जीवनमें जो कुछ किया है वह कृत्य उसके सर्व जैसेके तैसे मौजूद हैं—वे मरे नहीं हैं।

• हमारा (लेखक) उस उत्तम मानवसे बहुत बर्पोतक सम्बन्ध रहा है—इमने उसके सद विचारों और भावनाओंको रात्रिदिन अनुभव किया है अतएव यह हमारा फर्ज आन पड़ा है कि हम उनका एक दिग्दर्शनमात्र वर्णन जगतके मानवोंके हितार्थ करें जिससे अनेक मानव उस उत्तम मानवका दृष्टान्त लेअपने जीवनको उपयोगी बनावें।

यद्यपि वे गृहस्थ थे, त्यागी नहीं थे, तो भी हृद्यके त्यागी वे बैरागी थे और बड़े पुरुष थे और इसीलिये उनके जीवनका वर्णन हमारे द्वारा हो जाना हमें भी उनके उत्तम मानवीय गुणों में प्रेरित करनेवाला है। अतएव उस उत्तम मानवके उपदेशहारा इस समय परोपकारतामें रात्रिदिन लवलीन सेठ मूलचंद्र किसनदास कापड़िया सम्पादक—"दिगम्बर जैन," सुरतकी प्रेरणाके अनुसार दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिक-चंद्र हीराचंद्र जे० पी० सभापति—"भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा"का कुछ चरित्र आगे लिखा जाता है।



# अध्यायं दूसरा।

# गुजरात देशके सूरत शहरका दिग्दर्शन।

वास्तवमें वह देश अवश्य सीभाग्यशाली होता है जहां महान् व उत्तम पुरुष जन्म लेते हैं। उत्तम पुर बींका गुजरातका महस्य। शरीर जिस प्रदेशके अन्न, जल व कागुसे वृद्धि पाता है, लोटेसे बड़ा होता है, वह प्रदेश वास्तवमें पुण्यशाली है। किसी स्थानको भाग्यवान् कहनेसे उन मानवोंके भाग्यवान् होनेका ही उपचार होता है। गुजरात देश ऐसा ही एक देश है नहां जैनधर्मकी मान्यताके अनुसार श्रीरामचन्द्र-जीके सुपुत्र लच और अंकुशने मुनि हो विहार किया, धर्मी-पदेश दे अनेकोंको स्वसंवेदन ज्ञानसे उत्पन्न आत्मानंदका पान कराया और अंतमें प्रसिद्ध चांपानेर नगरके निकटस्थ पाचागढ़ पर्वतके शिखरपर ध्यान धर कर्म इंधनको जला और केवलज्ञान ज्यो-तिको प्रगट कर अर्हत हो अनेकोंको शुद्ध धर्म मार्गपर चला तथा शेष कर्मीसे आत्माको छुड़ा पवित्र हो परमात्मपदका लाभ किया।

श्रीगिरनार, दाञ्चंज्ञय, तारंगा, इन सिद्धक्षेत्रमय पर्वतोंसे शीघ्र गतिको प्राप्त होनेवाले श्रीनेमिनाथ, युधिष्ठिर, भीम-सेन, अर्जुन, आदि अनेकों अगणित महात्माओंने इस गुर्जर देशको अपने विहारसे पवित्र कर इन पर्वतोंके शिखरोंसे मुक्तधामका परम अमिराम आनन्दका आखाद किया । मौर्य्य चंद्रगुप्तको सन् ई०के ३२० वर्ष पूर्वके अनुमान परम निर्मन्य दिगम्बरी दीक्षा देनेवाले श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवली १२००० साधुसंत्र और मुनि प्रभाचंद्र (चंद्रगुप्तका द्वितीय नाम)को साथ लिये हुए मगध देशसे दक्षिणको जाते हुए इसी गुजरात देशमें होकर श्रीगिरनार पर्वत तक गये थे और वहां अपनी आगु निकट जान अपने आचार्य्य पदका तिलक श्रीविद्याख्वाचार्यको प्रदान किया था और फिर वहांसे मैसूरके श्रवणबेलगोला स्थानमें पहुंच कटवप्र पर्वतपर समाधि मरण ले स्वगंधाम प्राप्त किया।

श्रीघरसेनाचार्यने प्रथम शताब्दीके अनुमान जिन पुष्पदंत और भूतबि अतितीन बुद्धि मुनियोंको श्रीगिरनार पर्वतपर जैन सिद्धान्त पढ़ाया था। उन्होंने गिरनारसे ९ दिन चलकर कुरीश्वर ग्राममें आकर चतुर्मास किया था और श्रुतस्कंघकी महिमा विस्तारी थी। और फिर दक्षिण देशको विहार किया था। (श्रुतस्कंघ)

यह कुरीखर गुनरात देशमें होना चाहिये। संभव है इसीका नाम बिगड़कर अंकलेश्वर हो गया हो। यह बड़ौदेके और सुरतके मध्यमें अब भी प्राचीन जिन बिम्बोंको शोभायमान किये हुए विराजित है।

श्री जिनसेनाचार्यमे अपने गुरु श्रीवीरसेनाचार्यकी करी हुई श्रीजयधवलकी टीकाको ६०००० क्लोकोंमें गुर्जर देश प्रतिपालक श्रीअमो घवर्षके राज्यमें वाट्यामके भीतर शक संवत् ७५९ फाल्मुण सुदी १० को प्रात:काल श्रीअष्टाह्निका महोत्सवके समय पूर्ण किया था। (जयधवल प्रशस्ति)

यह गुनरात देश श्रीशुभनंद्र, सकलकीर्ति, ज्ञानमूषण आदि

बड़े २ विद्वानोंसे सुशोभित रह चुका है जिन्होंने अनेक शास्त्रोंकी टीका व रचना की है।

इस धर्म-जन-भरपूर गुजरात देशमें ताप्ती नदी बड़े वेगसे सतपुरा पर्वतकी इंजरडी पहाड़ीकी तलहटीसे निकलकर खानदेश-में बहती हुई अनुमान ९०० मीलकी लंबाईको लिये हुए रांदेर और सूरत दो बड़े प्रसिद्ध नगरोंके मध्यमें आध मीलके अनुमान पाटके साथ खंभातकी ओर चली जाती है।

नर्मगच्य गुजराती गद्यात्मक प्रंथके कर्ता कवि नर्मदाशंकर लाभशंकर लिखते हैं कि श्रीमहावीर संबत् २७१ व सन् ईसवीके २५५ वर्ष पूर्व इस तासी नदीके उस ओर रांदेर नामका एक बड़ा प्रसिद्ध नगर था। जिसपर संपत्ति नामका जैनी राजा राज्य करता था\* वह रांदेर शहर अब भी मौजूद है पर अब वह एक छोटासा कसबा है। वर्तमानमें तासीके इस ओर रांदेरके टीक सामने अतिविख्यात और ऐतिहासिक सूरत नगर मौजूद है। यद्यपि नर्मगद्यके कर्ताने यह खुलासा नहीं किया कि जब एक ओर तासीके आजसे २२०० वर्ष पहले एक बड़ा राज्यनगर था तब उसीके ठीक सामने जहां आज सूरत पाया जाता है वहां उस समय किसी बस्तीकी सूरत थी कि नहीं?

विचारनेसे यह अवश्य निश्चित होता है कि ताप्तीके इस पार भी कुछ वस्ती अवश्य वसती होगी। संभव है कि उस समय इसका नाम सुरत न हो।

<sup>\*</sup> इस कथनका नर्मगणके अनुसार ही यहां उल्लेख किया जाता है।

बहुतसे जन इस नगरको सूर्यपुरके नामसे पुकारते हैं तथा नर्मगद्य कर्ताने भी लिखा है कि सूरतसे ८ गांव दूर कामलेज ग्रामके निवासी एक राजाके बड़े २ प्रसिद्ध कुए थे। उनमें एक सूरजवाड़ी नामका

कुआ था। उसी वाड़ीके नामसे यह सुरजपुर या सुर्जपुर कहलाता था जो फिर बिगडके सुरत हो गया। ५वीं गुजराती साहित्य परिषद् सन् १९१५की बैठककी स्वागत कारिणी कमिटीके प्रमुख रा० मधुवच-राम बलवचरामने अपने व्याख्यानमें यहांतक अनुमान लगाकर प्रगट किया है कि सन् ईसवीके वीसहजार २०००० वर्ष पहले भी यह स्थान आबाद था। आपने अमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर डेंटन-कृत "The Soul of things" नामकी पुस्तकके आधारसे लिखा है कि यूनानका विद्वान् प्लेटो अपने किसी पूर्व जनममें इसी (स्रग्त) स्थानके किसी बड़े मंदिरका मुख्य अधिकारी या भक्त था। रासमालाके प्रथम भागके आधारसे आप लिखते हैं कि यह स्थान तत्र सूर्येपुर कहलाता था जिस समय सन ९००में अबहिड्वालकी सेना भरुच और सूर्यपुरके आगेसे होकर निकळी थी। सन् १९०८के इम्पीरियल गैजेटियरसे मालूम हुआ कि सन् १५०में होनेवाले यूनानके विद्वान् प्लोटाने पुलिपदा नामके व्यापारिक स्थानका वर्णन किया है जिसका नाम शायद फुलपाद होना चाहिये और यह स्थान इसी सुरत् नगरका एक पवित्र भाग है।

जो कुछ हो इसमें सन्देह नहीं कि सुरत और रांदेर दोनों ही अतिप्राचीन नगर ताप्तीके इघर उघर एक शोभनीक स्त्रीके काणोंमें पढ़े हुए सूर्य और चंद्रकी कांतिवत् चमकते हुए मनोहर कुंडलोंकी मंति दीर्घ कालसे शोभा पा रहे थे।

## 



**◇>>>>> ⟨{{{{{C}}}}}** 

अरब व फारसके ज्यापारी भी आया जाया करते थे। ईसवी सन् ७९० में मुसल्मान अब्दुलआबाद सेफा नामके खलीफा अपने बहुतसे साथियोंको केकर रांदेरमें आकर रहने लगे और धीरे २ मुमल्मानी धर्मका प्रचार करने लगे।

ये लोग धीरे २ व्यापारादिसे अपनी सत्ताको मजबूत करने लगे। इनका दल अञ्चासी खलीका या नवायता (नया आया हुआ) नामसे यहां प्रसिद्ध हुआ । उस वक्त रांदेरकी जैन और हिन्दू बस्ती सुख शांतिमें छीन थी। पर कालांतरमें जैन और हिन्दओंका जोर घटता गया और मुसल्मानोंका जोर बढ़ता गया। यहां तक कि ५०० वर्षके अनुमानमें वे ऐसे दृढ़ हो गये कि उन्होंने राज्य सत्ता इनसे छीन ही। सन् १२०८का गैजेटियर बताता है कि बादशाह कुतबुद्दीनके समय १३ वीं सदीमें मुसल्मानोंने अनहिलवाडके राज-पूत राजा भीमदेवको हराकर रांदेर और सुरत लिया। वह हिन्दू राजा सरतसे १३ मील पूर्व कानरेजके किलेसे भागा और आधीन हो गया। सन् १३४७में मुहम्मट् तुप्रत्रकके समयमें बलवा होनेपर सुरत जिल्ला लुटा गया। पर सन् १३७३में फीरोज़शाह तुपलकने सुरतकी रक्षार्थ भीछोंसे बचानेके लिये एक किला बनवाया। मुसल्मानोंने यहांके बहु-तसे मंदिरोंको तुड़वाकर मसजिदं बनवाई। तथा जैन मंदिरों व मूर्तियोंके पत्थरोंको भी तोड़कर कई मसजिदें बनवाई गई। एक मसजिद ऐसी ही बनी मौजूद भी है जिसपर हिजरी ६४९ व सन् १२२९ है।

सन् १९०८का गैजेटियर बताता है कि रांदेरकी जमा मसजिद, मियां स्वस्ता व मुन्शीकी मसजिदें, जैन मंदिरोंको तोड़कर बनाई गई हैं। नंभगद्यके कत्तींने सुरत नगरके नाम होनेके विषयमें कुछ और भी दंतकथार्थे लिखी हैं। उनका भी सारांश पाठकोंके ज्ञान हेतु कह देना अनुचित न होगा।

तासी नदीके तटपर सुरत नगरकी ओर बहुतसे जहाज़ ठहरा करते थे। जहाज़का काम करनेवाले माछी लोग वहांपर रहते थे। इससे उस तटके बहुतसे प्रदेशका नाम माछीवाड़ा प्रसिद्ध था। उसी महिलेमें कुछ नागर बाह्मण भी रहते थे। उनमें एक ज़मीदार-की विश्वा स्त्री अपने प्रत्र गोपीके साथ रहा करती थी। उसकी स्थिति बहुत भरीब हो गई थी। रांदेरके एक मुसल्मान नवायताके यहां नृत्यकला करनेवाली एक सुरज नामकी कंचनी इस माछीवा-ड़ेमें आकर ठहरी। इसके पाम धन भी बहुत था। उस समय गोपी-की गरीब मा उस कंचनीका यथायोग्य काम करके उसकी अधिक स्नेहपात्रा हो गई तथा उसके बालक गोपीको वह मुरब बहुत प्यार करने लगी।

जब वह नृत्यकारिणी उस मुसल्मान नवायताके साथ हज करनेके लिये करीब १५०० सन् ई० के जहाज़पर बैठ मक्का जाने लगी तब उसने गोपीकी माको विश्वासपात्रा जान अपना लाखोंका जवाहरात उसको अमानत सौंप दिया। इसमें सन्देह नहीं कि ईमानदारी, सचाई और सरलता ऐसे गुण हैं जो सबको वश कर सक्ते हैं। जब वह सूर्ज कंचनी लौट कर आई, गोपीकी माने विना किसी कपटके जो कुल जवाहरात उसने सौंपा था उस

सबको वैसाका वैसा ही उस कंचनीके सामने जाके घर दिया। सरज इसकी सरलता व सत्यताको देख अचेभेमें आ गई। और इतनी प्रसन्न हुई कि वह सब माल उसको दे दिया और दिनपर दिन इससे व उसके पुत्र गोपीसे उनकी सच्ची खिद्मतके कारण बहुत ही राजी रहने लगी। सुरजकी उमर छोटी नहीं थी। आयु कर्म शेव होनेसे जब वह मरने लगी तब अपनी सब नायदाद गोपी-की मा और गोपीको दे दी और कहा-तुम इसका अच्छा व्यवहार करना और मेरा नाम मशहूर करना। मैं तो जाती हूं, पर मेरानाम रहना चाहिये। वास्तवमें जिसके दिलमें सम्यक्तव नहीं होता, जो आत्माको अनर अमर अविनाशी आनन्दरूप नहीं अनुभव करता, उसके दिलको सन्तोष केवल कषायोंको पोवनेसे ही होता है। सारी दौलतका वियोग होते हुए उस सुरनके दिलमें मान कवायने जोर किया और इसीसे पीछे मेरा नाम रहे इस स्वार्थने कंठगतप्राण होनेपर मी उस कंचनीकी आस्माको नहीं छोड़ा। खैर, गोपी और उसकी माने बहुतसे मकानात बनवाये तथा गोपीपुरा बसाया और गुजरातके बादशाह शाह मुहम्मद बेगड़ाके पुत्र खळीलखां अलकाव मुज़फ्फरशाहसे मिलकर नायवका खितान हासिल किया । गोपी बड़ा छद्योगी था। इसके प्रयत्नसे यहां व्यापार और भी बढ़ने लगा। सन् १५१६ में इसने एक तालाब बनवाया जो अब खेतर-वाड़ी (खेतरपाल) के पास गोपोतालावके नामसे मौजूद है।

इस वक्त यूरुपसे प्रतेगाल लोग, जिनको यहां फिरगी कहते थे, आने लगे थे। सन् १४९८में बारकोडिगामा पहिले पहिल भारतमें आया। इस समय इस तासी नदीके तटपर उनके जहाज़पर जहाज़ आने लगे। ये लोग हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके नहाज़ोंसे माल लूटके लगे व शहरमें भी चूमकर प्रनाको कष्ट देने लगे। प्रनाकी प्रकार सुन गुनरातके बादशाह मुज़फ्फरशाहने सन् १५१५में यहां किला बंध-वाया और इनकी रोक व जांचका प्रकच्च किया। दिनपर दिन गोपीपुराके आसपास रौनक बढ़ते देख गोपीने उस सुरन्न कंचनीके मरते समयके बचनको याद किया और उसका नाम कायम रखनेके लिये यही। विचार किया कि इस वस्तीका नाम उसीके नामसे प्रसिद्ध हो।

बादशाह मुज़फ्फरशाहसे गोपीने सब हाल कहा और सूरज नामः रखनेके लिये निवेदन किया। बादशाहने सिर्फ इस खयालसे कि वेश्याके नामसे नगरका नाम प्रसिद्ध करना टीक न होगा, यह स्वीकार किया कि आखरी अक्षर जको बदलकर त कर दिया जाय। गोपीने स्वीकार किया और सन् १९२१ में इसका नाम स्वरूत प्रसिद्ध कर दिया। ज्यों २ व्यापार चमकता गया गुजरातके बादशाहका अमल बढ़ता गया। इस समय सूरत नगर एक बड़ा व्यापारी बन्दर था। सन् १५१४ में पूर्तगाला यात्री बाबसी आयाथा। उसने लिखा है, सूरत बड़ा ही कीमती बन्दर था जहां मलाबार आदिसे जहाज़ आते था। (Barbase describes Surat as a very important seaport frequented by many ships from malabar and all other ports vide Imp. G. 1908)। सन् १५४६ में अहमदाबादके बादशाहने एक किछा बनवाया।

सन् १५६१ में जब तीसरे मुज़फ्फरशाह गुजरातकी गद्दीपर बैठे तब सुरत मिरज़ाके हाथमें था। यह बादशाह अकबरसे विरुद्ध हो गया, तब देहलीका बादशाह अकबर स्वयं बड़ी मारी फौज छेकर आया और ता० १९ जनवरी सन् १५७३ में सुरतके गोवीप्रशामें अपना अड्डा जमा और ६ मार्च १५७३ के दिन किलेपर
अपना झंडा गाड़ा और खलीज़खांको अपना कारबारी नियतकर
देहली चला गया। देहली पहुंचकर राजा टोडरमलको बंदोबस्तके
लिये भेजा। उक्त राजाने बहुत अच्छा प्रकथ किया। कोई किसीकी
जमीन न दबावे, कोई कम बढ़ तौलकर दे ले नहीं, बाज़ारका माव
ठीक रहे, ऐसे कई उपयोगी महकमें नियत किये। इस वक्त सुरतमें
च्यापार खूब बढ़ रहाथा। जो रांदेरमें या वह सुरतमें चमक उठा था।
पूरुपसे भी व्यापारी बहुत आने लगे थे। अकबर, शाहजहां व
जहांगीर बादशाहके वक्तमें यह Mercantile city: of India
भारतका व्यापारी नगर कहलाताथा। अकबरकी मालगुज़ारीमें इसको
First class port पहले नंबरका बंदर लिखा है (Imp. G. 1908)

जिस वक्त बादशाह जहांगीर देहलीमें राज्य कर रहे, थे उसी वक्त इक्कलैंडमें पहले जेम्स ( James

अंग्रेजोंका आगमन । the I) का राज्य था और भारतसे ज्यापार करनेके लिये इंस्ट इंडिया कम्यनी

बन चुकी थी । कसान हेकटर विलियम हो किन्स एक व्यापारी महाज़को लेकर इस कम्पनीकी तरफसे हिन्दुम्तानमें आये और ता० २० अगस्त १६०८ को पहिले पहिल सुरतमें आ लंगर डाला। और बादशाह नेम्सका पत्र के अंग्रेन लोग देहली द्वीरमें पहुंचे। परंतु उस समय फिरंगियों अर्थात् पूर्तगालोंका अधिक मोर था। वे दूसरे किसी-के भी नहाज़को लूट लेते थे। वे अंग्रेनोंको नहीं चाहते थे। इन पत्रोंके द्वारा अंग्रेजोंने बादशाहसे व्यापारकी आज्ञा मांगी थी क अपनी रक्षा चाही थी। पर ४ वर्ष तक उद्योग करना पड़ा तब कसान बेस्टेने ता० ११ जनवरी १६१२ को बादशाहसे यह सनद लिखवा ली कि अंग्रेज लोग व्यापारके लिये अपनी कोटी कर सकते हैं। तथा वे सुरत, खंभात, अहमदाबाद और घोघामें व्यापार कर सकते हैं। इनसे ३॥) सैकड़ा महसूल लिया जाय तथा इनका एक एलची मुगल द्वीरमें रहे।

सन् १६१४में सर टामसरे प्रथम एलची मुगल द्बरिमें नियत हुआ । इसने बादशाह जहांगीरसे और भी हक प्राप्त किये। अंग्रेम व्यापार करने लगे। उस वक्त यहांसे कपड़ा खरीदकर विलायत बहुत जाता था। अंग्रेम लोग कपड़ा बनानेवालोंको पेशगी रुपया दे माल बनवाते थे और विलायत भेजते थे।

सूरत नगर १९७३से १७९९ तक मुगल बादशाहोंके कबजेमें रहा । इस वक्त यह बहुत तरक्कीपर
स्रतमें व्यापारकी था। यहांसे कपड़ा, रुई, किनखाब, मसरू,
विद व यूरुपको किनारी, कसब, कारचीब, शाल, मसाला,
कपड़ा आदि हीरा, मोती, मीनाकारी, अफीम, अनाज,
जाना। मिठाई, आदि परदेशको जाते थे और
इंगलैंडसे सीसा, लोहा, लोहाका तय्यार
माल, चीनसे बिलौरी सामान या रेडाम, समालासे मगाना कर्

माल, चीनसे बिलौरी सामान या रेशम, सुमात्रासे मसाला, ईरानसे मोती, गलीचा, मेवा, अरबसे अतर वगैरह, मलावारसे देशी ऊनका कपड़ा, बंगालसे रेशम और शकर, मालवासे अफीम इत्यादि सामान बाहरसे सूरतमें आकर विकता था । रहेका कपड़ा खूब बुना जाता था। एक गरीन आदमी १ रुईकी आंटी (९ टांक तौलमें) बुन लेता था तो उसको 🕪) मिल जाते थे। सुरतके बंदरमें १०००-१२०० टनके लादनेवाले जहाज़ हमेश: तय्यार रहते थे । इस कदर व्यापार था कि सूरतके बाज़ारमें २० लाख रुपयेका रोज़ सौदा होता था 🖡 यहांपर इतना कह देना अनुचित न होगा कि यह भारत दो-ढाईसौ वर्षमें कुछका कुछ हो गया। उस वक्त जब परदेशके व्यापारी यहांसे कपड़ा ले जाते थे तन आज यहां ही कपड़ा आता है। यहांका बुना तो शायद ही कहीं जाता हो । उस वक्त सारा भारत अपने कारीगरोंके बनाये हुए कपड़ोंसे ही अपनेको ढकता था। और यह भी नहीं था कि मोटा माल ही बनता हो किन्तु महीनसे महीन और बढ़ियासे बढ़िया कपड़ा भी यहां बनता था। इसके सिनाय यूरुप आदि देशके ज्यापारी यहांसे लाखों रूपयोंका कपडा प्रतिमास अपने देशको भिनवाते थे, उनको भी पूरा करता था। आन यह अपनी कारीगरीको खो बैठा है। इसका कारण केवल आलस्य है। आलस्यसे आज यह जुरा जुरासी चीज़के लिये परदेशका मुंहताज़ हो गया है। जब कि उद्यमके बलसे एक छोटासा जापान प्रदेश अपने लिये सब चीज़ें आप बनाता है। इतना ही नहीं, पर अपना बना करोड़ोंका माल बाहर बिकीके लिये भेजता है । जैसे आजकल बस्बई व्यापारमें प्रसिद्ध है ऐसे ही मुगलोंके जमानेमें सूरत प्रसिद्ध था।

इस वक्त कम्पनीके सिवाय प्राइवेट अंग्रेन भी बहुत आये और न्यापार करने लगे। औरंगजेब बादशाहके वक्तमें ता० ५ जनवरी १६९ को मराठोंका सरदार शिवानी सुरुतको छूटने आया। उस वक्त ईस्टइंडिया कम्पनीकी कोटीमें ८७ लाखका माल था। कोटीपर सर जार्ज ओक्सेन्डनने बड़ी चतुराईसे काम किया। अपना माल बचानेके सिवाय साह्कारोंकी भी रक्षा की तो भी शिवाजी ३० करोड़का माल स्टूट ले गये। साह्कारोंने अंग्रेजोंकी तारीफ बादशाह देहलीको लिख मेजी। इससे प्रसन्न हो बादशाहने ३॥ ६०के बटले सिफ १) सैकड़ा जकात कर दी। १६७०में फिर शिवाजीने ३ दिन सूरत लूटा। इस बक्तसे मि० कुक ऐसे अंग्रेजोंने भी लूट-पाट शुरू कर दी। १६८० में एक मक्के जाते हुए जहाज़को लूटनेसे बादशाहने जकात फिर १॥) ६० कर दी। इघर कम्पनीने टकसालमें रुपया बनानेका हुकुम बादशाहसे ले लिया। इस वक्त फेंच लोग भी सूरतमें खूब व्यापार कर रहेथे।

१६८७में कम्पनीकी सत्ता बम्बईमें होजानेसे व्यापरका जमान स्रतसे उठ कर बम्बई होने लगा। इस अंग्रेजोंकी सत्ताका वक्त एक अंग्रेन सर जान बाइल्डेने जमना। कम्पनीके नामसे स्रतमें खूब व्यापार किया। पर किसीको कुळ न दिया। बादशाहके हुकमसे हैरिस और म्लेडस्टोन कैन किये गये। पर यह बाइल्डे भागकर बम्बई गया। ४० जहाज मुगलोंके और पकड़े तब लोगोंका विश्वास जाता रहा। बादशाहने अंग्रेन व फ्रेंच आदि परदेशियोंको बहुत धमकाया; पर फल कुळ न हुआ। उधर देहलीमें भी मुगल सल्तनत मौज व शौकमें पड़ने लगी। इधर स्रतमें भी सत्ता दीली पड़ गई।

सन् १७३४ में मराठोंने कुछ गांव दाव लिये तथा पेशवा

और गायकवाड़ने दबाव डालकर अपना कर सूरतपर लगा दिया। १७३४से १७५९ तक बड़ी भारी गड़बड़ रही। परस्पर फूटकी आग भभक उठी । इस गड़बड़में अंग्रेनोंने अपना दाव जमा लिया । सुरतके नवाब मियां अचनने मराठौंसे परेशान हो अंग्रेगोंसे संधिकी कि अंग्रेज लोग किलेदार रहें, सेनाकी अफसरी करें तथा नवाब दो ·लाख रुपया प्रतिवर्ष देवे । इस बक्त किलेपर अंग्रेजोंका झंडा गड़ गया तथा नाममात्र मुगलोंका भी गड़ा रहा। इस सुरतपर अग्रेनोंके आधीन नवाब अच्चनके वंशवाले राज्य करते रहे। नवात्र अञ्चन उर्फ मुईनुद्दीनने १७६२ तक राज्य किया । फिर नवाब हफी जुद्दिन १७६२ से १७९० तक राज्य करते रहे। १७९० में निजासुद्दीन नवाब हुए। ये १७९९ तक रहे। इनके समयमें सूरतपर बढ़ी विपत्तियें आई। ये नवाब भी जुल्मी थे। १७९१में इतना भारी दुर्भिक्ष पड़ा था जिससे १ रुपयेमें ८ सेर अनाज मिलता था। यद्य-पि इस समय यह भाव प्राय: रहा करता है तो भी उस समय अना-जका भाव बहुत मन्दा रहा करता था । इस अपेक्षा वह भाव दुर्मिक्ष रूपमें ही था। तथा १७९७ में ताप्ती नदीकी बाद आई जिससे भी सुरतकी बरबादी हुई। बहुतसे व्यापारी इधर उधर चल दिये। सन् १ ७९९में नंसीरुद्दीन गद्दीपर बैठे। उस वक्त नवाबसे अंग्रेजोंने ३॥) लाख रुपया मांगा । नवाब दे नहीं सका तब क्यू हैके पूर्वर डंकनके हुकमसे सुरतकी सीनेटने सुरतपर क्रियना पूरी ता० १५ मई सन् १८०० मी जामा तिया और -नवाबकी सिर्फ १ लाख रुपया पेन्टान 🖏 🤻 । यह नियम है कि जब देशका शापक सम्बर्धीक

होकर प्रनाक हितकी चिन्ताको छोड़ देता है और इतना ही नहीं प्रमापर जुल्म करके उससे अपना स्वार्थ साधना चाहता है तब अवस्य उसका प्रण्य क्षीण होता है। और राज्यशासनका प्रतापी छत्र उसके हाथसे नाता रहता है। अकबर बादशाहसे छे औरंगजेबके राज्यके पहिले तक मुगल बादशाहोंने प्रनाके हितका खयाल किया तब नीचेके नवाबोंने भी अपने प्रकथमें ढील नहीं की। पर जब मुगल बादशाह ऐशो—आराममें लीन हुए, तब इधर उधरके नवाब भी प्रमाशासनमें मुस्त पड़ गये। इसीका यह फल हुआ कि सुरतसे नवाबोंकी सत्ता १८००में बिलकुल उठ गई। पेन्शनवालोंमें नसीरुहीन सन् १८२१ तक और अफनुलुहीन सन् १८२४ तक कायम रहे।

सूरतपर अंग्रेजी कम्पनीका राज्य हो जानेसे मराठाओंसे सुलह हो गई। काम बदस्तूर चलने लगा। पर इस समय विलायतमें कलोंकेद्वारा कपड़ा बुने जानेसे यहां कपड़ा बुननेका काम कमती होने लगा। बहुतसे लोग बम्बई जाकर रहने लगे।

जो उन्नित मुगलोंके समय थी वह सब अवनितमें परिणत हो गई। बास्तवमें किसी भी वस्तुकी थिरता इस असार संसारमें नहीं है। सब बस्तुयें अपनी दशाओंको पलटनेकी अपेशासे शणभंगुर हैं। कम्पनीके राज्यमें मुख्य २ बार्ते इस तरहपर हुई कि—

सन् १८०४ में फिर एक बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा जो कि साठोकालके नामसे प्रसिद्ध दुआ। सन् स्ट्रतकी अवनित । १८१८ में सबसे पहले सूरतमें बसनेवाले युरुपियन पोर्चुगीज़ फिरंगी लोग बिलकुल यहांसे बढ़ दिये। सन् १८२२ में तासी नदीकी बाढ़ आजानेसे बहुतसे मनुष्य हूने व लरानी हुई। सन् १८२४ में एक अंग्रेजी पुस्तकालय विलंदाके बंदरमें खोला गया जो इस वक्त ऐड्रुस लाइब्रेरीके साथ मिला दिया गया है। सन् १८३७ ता० २४ अप्रैलको (संक्त १८९३ चैत्र वदी ४) ४ बने पिछले पहर माछलीपीठमें एक पार-सीके यहां आग लगी। यह आग दो दिन तक जली। इसने सुरत शहरका नाश कर दिया। कहते हैं इस अग्निसे ६००० मकान जले, ५०० मनुष्य व अनेक पशु मरे, ७० हजार लोग मुफलिस हो गये।

सन् १८४२में सबसे पहिले अंग्रेजी स्कूल स्थापित हुआ। सन् १८४२में निमकपर महसूल नियत किया गया। प्रजाने कबूल न किया, हुल इ हुआ, तब सरकारने कुछ महसूल कम कर दिया। १ मई सन् १८५६को अमरोलीमें रेलवे बननेका काम चला। तथा १ नवम्बर १८६४ के दिन स्रतसे बम्बई तक रेलगाड़ी चलने लगी। यह स्रत १८वीं सदी अर्थात् सन् १७९७में बहुत आबाद था। ८ लाल मनुष्योंकी वस्ती थी। परंतु सन् १८५१ में घटकर ९ लाल रह गई। अवनति होते २ सन् १९०१में स्रत नगरमें केवल १ लालकी वस्ती रह गई, अर्थात ८५५७० हिन्दू, २२८२१ सुसल्मान और ४६७१ जैन। कुल स्रत जिल्लेकी वस्ती, जिसमें ८ नगर व ७७० गाम हैं, सन् १९०१में ६३७०१७ थी। इनमें २ सेकड़ा जैनकी वस्ती थी।

## सूरत व रांदेरमें जैनियोंका वर्णन।

जैसा उपर कहा गया है कि नन रांदेरमें संपत्ति राजा जैनी व ये व जहां बड़े २ मंदिर ये कि जिनको तोड़कर मसजिदें बनवाई गई हैं तब वहां या कुछ सूरत जिलेमें जैनियोंका कितना बल होगा, सो पाठकगण खयंही विचार कर सक्ते हैं।

खेद है कि जैनियोंके प्राचीन इतिहासका कुछ पता नहीं चलता है। वर्तमानमें रांदेर कसबेमें

रांदेरमें जैनियोंका महत्त्व अब भी जो हाल मिलता है इससे वहांके पूर्वज जैनियोंका महत्त्व भली

भांति प्रगट होता है। इस समय वहां श्वेताम्बर जैनियोंकी संख्या ५०० व उनके ६ मंदिर हैं, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले २००० की संख्या थी। दिगम्बरियोंकी वस्तीमें अब वहां क्षेवल २ वर हैं जो दसा इमड़ जातिके हैं। उनके नाम चुन्नीलाल लालचंद और दीपचंद हीराचंद हैं, जब कि १०० व १५० वर्ष पहले वहां दिगम्बर जैनियोंकी बहुत वस्ती थी। उनके रहनेके तीन महल्ले अबतक प्रसिद्ध हैं—निशाल फलिया, सोनी फलिया और इमड़ फिल्या। इसीमें अब दो वर हैं। दिगम्बरी जैन मंदिरोंमें अब केवल एक मंदिर अवशेष है जो बहुत पुराना बना मालूम होता है तथा इसमें बहुतसी प्रतिमायें हैं जो दूसरे मंदिरोंके टूटनेपर लाई गई हों, ऐसा भी संभव है। इस मंदिरके नीचे एक भोंरा है अर्थात गभारा व तहलाना है। इसमें भी प्रतिमायें सुशोभित हैं। वहां एक धातुकी प्रतिमाका लेल इस भांति हैं:—

" सं० १३८७ मात्र सुदी ५ रवि० श्रेष्ठि भीमा भाषी रूप-लता तयोः सुत बाललान श्रीरत्नत्रय बिम्बं राउल श्रीअमयनंदि-शिष्य आचार्य माधनंदी उपदेशेन श्रीमूळसंघे प्रतिष्ठितं "

तथा एक शांतिनायस्वामीकी मूर्तिपर सं० १६४८ है।

उपरकी वेदीमें जो प्रतिविम्न हैं उनमें संबत १५१८, १५१९, १५३७, १६४८, १६६५ व १६८२ है। जिनपर प्रायः ऐसे लेख हैं कि—

विद्यानंदि, मिलिभूषण, लक्ष्मीचंद्र वीरचंद्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचंद्र वादिचंद्र, या महीचंद्रना उपदेशथी दुमड ज्ञाति आदि..... एक विम्वपर है—

" १५३७ वैसाख सुदी १२ देवेन्द्रकीर्ति- पदे विद्यानंदि हूमक्ज्ञातीय श्रेष्ठी चांपा.....

तथा एकपर है-

" १५१८ माघ सु. ५ बुधवार देवेन्द्रकीर्ति शिष्म विद्यानंदि उपदेशयी हूमइवंसे समघर मार्या जीवी ना पुत्री नव करण सिंह....."

यहां एक प्राचीन पोथी याने गुटका है जिसमें 'महीचंद्र, प्रभा-चंद्र, महीचंद्रके शिष्य ब्रह्मचारी जयसागर' वर्णित है।

इन लेखोंसे प्रगट है कि हुमड़ ज्ञातिक दिगम्बरी रांदेरमें बहुत माननीय व धनादय हुए हैं। यहां तक कि अभी तक यह प्रसिद्ध है कि जहांगीर बादगाहके समयमें एक धनादय दिगम्बर जैनीकी बुगल रांदेर नगरमें बना करती थी। तथा उपरके लेखोंसे यह भी पता चलता है कि सम्बत १३८७में आचार्य मावनंदि हुए। माघनंदि शब्दके पूर्व भट्टारक शब्द न होनेसे ये निर्प्रन्थ दिगम्बर सुनि प्रतीत होते हैं। संबत १५१८ से भट्टारकोंके नाम हैं जिनमें विद्यानन्दि प्रथम है। सूरत नगरके कतारगांवमें विद्यानंदि नामका एक जैनियोंका माननीय स्थान है जहांपर भट्टारकोंकी बहुतसी समाधियें हैं। बहुत संभव है कि भट्टारक विद्यानंदिकी पहिली समाधि

यहां बननेसे यह स्थान विद्यानंदिके नामसे प्रसिद्ध हुआ हो। कहते हैं कि यहां मूलनेदीको रायकवाल जातिके शिवामोरारने बनवाई थी। यह जाति भी इस ओर बहुत प्रसिद्ध हो गई है। इस जातिके घर सूरतके सळाबतपुरा, खरादीसेरी व बम्बईपुरा मुह-होंमें १०० वर्ष पहिले ४० ये तथा सूरतसे १५ मील बारडोलीमें २०० वर्ष पहिले ५० घर थे । अब सुरतमें इसका नाम व निज्ञान भी नहीं है परंतु अब भी इस जातिके ५ घर व्यारामें मुखिया सेट शिवलाल झवेरचंद तथा ८ घर महुआमें मुखिया सेठ इच्छाराम झनेरचंद तथा कुछ घर वांच आदिमें भी है। जिस तरह आज कल छोटी २ जातियोंमें जैनियोंका विभाग होनेसे व जातिमें बाल विवाह, बृद्धविवाह, व्यर्थव्यय आदि कुरीतियोंके होनेसे प्रत्येक जातिके स्त्री पुरुषोंकी संख्या बड़े वेगसे घट रही है-विधवा व विधुरोंकी संख्या अधिक होनेसे दिनपर दिन संतानक्रम बन्द हो रहा है, ऐसा ही सौ दो सौ वर्ष पहिले भी था। इसीसे इस जातिका अब कोई मनुष्य सूरतमें नहीं दिखलाई पड़ता । सूरत नगरमें इस जातिका कैसा गौरव था इसको प्रगट करनेवाला एक शिलालेख नीचे दिया जाता है। यह लेख उन २४ बड़ी भन्य प्रतिविस्वोंस एक प्रतिबिम्बपर है जो बड़ा चौटा जिसको अब नानावट कहतं हैं, के मंदिरजीमें विराजमान थी और अब वेसब चंदावाड़ीके पासवाले बड़े ( पुराने ) मंदिरजीमें स्थापित हैं।

#### नकल विलिखेख।

"श्रीजिनो जयति। स्वस्ति श्री १८०५ वर्षे शाके १६७५ प्रवर्तेमाने वैसास मासे ग्रुक्रपक्षे चन्द्रवासरे गुर्जरदेशे सूरतवन्देर

शुग्वादिचैत्यालये श्रीमूलसंघे नन्दीसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कास्मणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपग्रनन्दीदेवास्तत्यहे भट्टारक श्रीदेवे-न्द्रकी।र्तिदेवास्तत्पट्टे महारक श्रीविद्यानन्दीदेवास्तत्पट्टे महारक श्रामछी-भूषणदेवास्तत्यद्वे म० श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्यद्वे महारक श्रीवीरचन्द्रदेवा-स्तत्यहे महारक श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्यहे महारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्यहे भद्रारक श्रीवादीचन्द्रदेवास्तत्यद्रे भद्रारक श्रीमहीचन्द्रस्तत्यद्रे भद्रारक श्री-मेरचन्द्रदेवास्तत्येह महारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्येह महारक श्रीविद्यान न्दीगुरूपेदशात् सूरतवास्तव्य रायकवालजातीय धर्मधुरंधर सम्यक्-सप्तक्षेत्रविलस्तवित् सा कुँवरजीसुत गुर्वाज्ञाप्रीतपालक सीजीसुत लक्ष्मीदासस्तत्पुत्रधर्मदासभायी रतनवाई तयो:सत्पुत्र धर्म-पुजाबिगबप्रतिष्ठासंघवच्छलकरणसम्थ जैनप्रसिद्धमार्गे धरन्धर विलसत्वित् श्रायकाचारचतुर गुर्वाज्ञात्रतिपालक जगजीवनदास भार्या नवीबह ताभ्यां विभवपीतष्ठा करीता सेठ श्रीलालभाईस्तेषां पुण्यपिन प्राणिगणप्रतिपालक करणामृति सेठ जगन्नाथवाई सान्निध्य विराजमाने श्रीआदिनाथजी मूलनायक वी प्रतिष्ठित नित्यं प्रणमित । श्रीरस्त । लेखकवाचकयोः भद्रं भूयात् ।"

इस लेखसे भट्टारकोंकी वंशावलीका कुछ पता चलता है। रांदेरके जिन मंदिरकी एक प्रतिमापर जैसा ऊपर छिला है संबद १५१८में देवेन्द्रकीर्ति, शिष्य विद्यानंदि हैं। इससे प्रगट है कि ये विद्यानंदि वे ही विद्यानिद हैं जो बड़ाचौटेके प्रतिबिम्बपर लिखित हैं। संबत् १५१८ से लेकर १८०५ तक नीचेप्रमाण कमसे भट्टारक हुए व उनसे पहिले विद्यानंदिके गुरु देवेन्द्रकीर्ति व इनके गुरु भट्टारक श्री पदानंदि थे। उत्परके लेखसे यह भी झलकता है कि इस सुरत निलेमें सबसे पहिले भट्टारक ये ही पद्मनंदि हुए, क्योंकि इनके पहिलेके

किसी महारकका नाम छेलमें नहीं है, केवल श्रीकुन्दकुन्दाचार्यजी महाराज हैं, जो परम ऋषि दिगम्बरी आत्मज्ञानी व अनुषम बिद्वान् और योगीश्वर थे।

सुरतकी गद्दीका संबंध ईडरकी गद्दीसे है, ऐसा सुनते हैं। इस ईडरकी गद्दीके भट्टारकोंकी नामावली इस प्रकार है:—

१ श्रीभद्रबाहु १८ श्री वसुनन्दी ३५ श्री नागचन्द्र २ ,, गुप्तिगुप्त १९ ,, बीरनन्दी ३६ ,, नयचन्द्र ३ ,, माघनन्दी २० ,, माघनन्दी ३७ ,, हरिचन्द्र ४ ,, जिनचन्द्र २१ ,, माणिक्यनंदी २८ ,, महीचन्द्र ५ श्री पद्मतन्दी २२ ,, मेघचन्द्र ३२ ,, माघचन्द्र ६ ,, उमास्वामी २३ ,, शांतिकीर्ति ४० ,, लक्ष्मीचन्द्र ७ ,, होहाचार्य २४ ,, मेघकीर्ति ४१ ,, गुणकीर्ति ८ ,, यशःकीर्ति २९ ,, पद्मकीर्ति ४२ ,, विमलकीर्ति २६ ,, विनयकीर्ति ४२ ,, लोकचन्द्र ९ ,, द्वनन्दी १० ,, गुणतन्दी २७ ,, भूषणकीर्ति ४४ ,, शुभचन्द्र -११ ,, वजनन्दी २८ ,, शीलचन्द ४५ ,, शुभकीर्ति १२ ,, कुमारनन्दी २९ ,, नन्दीकीर्ति ४६ ,, भावचन्द्र १२ ,, लोकचन्द्र २० ,, देशभूषण ४७ ,, महीचन्द्र १४ ,, प्रभाचन्द्र २१ ,, अनन्तकीर्ति ४८ ,, माघचन्द्र १५ ,, नेमिचन्द्र ३२ ,, धर्मचन्द्र ४९ ,, ब्रह्मचन्द्र १६ ,, अमयनन्दी ३३ ,, विद्यानन्दी ५० ,, शिवनन्दी १७ , सिंहनन्दी ३४ ,, रामचन्द्र ५१ ,, वीरचन्द्र

उत्तरकी पहावलोमें नं० ८३ श्रीविजयकीर्तिदेव सं० १५६८ में मौजूद थे तथा नं० ८० श्रीसकलकीर्ति शिष्यपरम्परामें थे। इसका प्रामाणिक लेख बड़ौदा नदी पोलके चैत्यालयमें विराजित श्री-

थे आजकल मौजूद हैं, परन्तु सर्व सम्मितिसे गद्दीपर नहीं बैठे
 इसिलिये बहुतसे लोग इनको नहीं मानते हैं।

पद्मनंदिपंचिवंदातिका संस्कृत ग्रंथके अंतिम पत्र ९९ की लिपि-प्रशस्तिमें है। यह ग्रंथ बहुत शुद्ध है अन्वयके नं शब्दोंपर दिये हैं व कठिन शब्दोंके अर्थ भी लिख दिये हैं। परन्तु शुरूके ३० पत्रे नहीं मिलते हैं। सेट लालचंद कहानदास द्वारा देखनेको मिल सक्ते हैं। ग्रंथ दर्शनीय है। वह प्रामाणिक लेख यह है:—

" मं० १५६८ वर्षे फागुण माते शुक्लपक्षे १० दिन गुरौ
श्रीगिरिपुरे श्रांआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे मरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये म० श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्यहे म० श्रीसुवनकीर्तिदेवास्तत्यहे म० श्रीझानभूषणदेवास्तत्यहे म० श्रीविजयकीर्तिदेवा स्तत् मिगिनि आर्थिका श्रीदेवश्री तस्ये पद्मनंदिपंचिवशंतिका श्रीसंघेन लिखाप्य दत्ता।

इम लेखसे यह भी पता लगता है कि श्रीविजयकीर्ति भट्टारक-की बहन देवश्री आर्थिका थीं व संस्कृत पदानंदिको समझ मक्ती थीं। उन्होंको यह श्रंथ संघने भेटमें दिया था।

यहांपर पाठकोंका यह अवश्य श्रम होगा कि जो नाम इस ईडरके भट्टारकोंकी नामावलीमें हैं वे सर्व दिगम्बर नग्न मुनि थे या आजकलके ऐसे बस्चारी भट्टारक थे ? जिसके समाधानमें पाठकोंको कताया जाता है कि सन् १२९९ ई० के पहिले सर्व ही मुनि या भट्टारक नग्न होते थे। इस सन्में आल्पाशाह अलाउद्दीन बादशाह देहलीक थे। इनको किसी धर्ममें आस्था नहीं थी। इनकी सभामें राघो और चेनन दो बाह्मण भी थे जो कि नास्तिक मतके पक्षपाती नंत्रवादी तथा विद्वान थे। ये बादशाहके मनको और भी धर्मशुन्य करते रहते थे। एक दिन उन्होंने बादशाहको बहकाया कि सर्व धर्मीकी परीक्षा होनी चाहिये, जो सत्य उहरे उसके सिवाय सर्वको मुसल्मान बना लिया जावे। बादशाहने देहलीमें आज्ञा दी कि सर्व अपने२ धर्मकी परीक्षा दें और अपने गुरुको छेकर आर्वे, नहीं तो हमारा धर्म स्वीकार करना पड़ेगा। नैनियोंको भी यह आज्ञा हुई । उस ओर तब कोई दिगम्बर मुनि नहीं थे । उनको ढूंटनेके लिये जैनियोंने बादशाहसे उह मासका समय मांगा। बादशाहने स्वीकार किया। जैनी लोग दक्षिणकी ओर आये और उन्हें तीन माम बाद गिरनारपर श्रीमाहवसेन (महासेन) स्वामीका दर्शन हुआ। उनसे सर्व हाल कहा। जैनी लोग वहीं ठहरे रहे, फ्रेस्वामी-का विहार नहीं हुआ। इतनेमें जब छह मासमें एक दिन ही शेष रहा तत्र श्रावक लोग घत्रड़ाये । स्वामीने कहा तुम चिन्ता न करो । तपोबलसे दूसरे दिन प्रातःकाल स्वामी देहलीकी मसानभृमिमें पहुंच गये और सर्व जैनी अपने २ घरोंमें सोते २ उठे। उसी रात्रिको एक सेठके पुत्रको सर्पने उंस लिया । उसको सृतक समझ लोग वहीं जलानेको आर्ये जहां मुनि महाराज विराजमान थे। मुनिने पुत्रको देखकर कहा हि यह मरा नहीं है सर्व छोग उहर गये। मुनिने पुत्रको सचेत कर दिया। वह अच्छी तरह खेलने लगा। इस बानकी बड़ी प्रसिद्धि हुई। बादशाह राघो और चेतनके साथ मुनि महाराजसे मिले। इन ब्राह्मणोंने मुनिको देखते ही कहा कि आपने अपने कमंडलुमें मछलियां क्यों रख छोड़ी हैं? मुनिने कहा कि पूजनके लिये पुष्प हैं, महलियां नहीं। कमंडलु देखा गया तो पुष्प ही निकले । फिर दोनों ब्राह्मणोंने मुनिराजसे षट् भत-पर खूब बादानुबाद किया । मुनि महाराजकी विजय हुई । जैन

धमकी बड़ी प्रभावना हुई। बादशाहने स्वयं प्रशंसा की। मुनि
महाराज उसी ओर ठहरे। बादशाहने जैनियोंसे कहा कि आफ्के
गुरु सदा देहलीमें रहें ऐसा किहये तथा हमारी बेगमें भी दर्शन
किया करें इससे उनको वल्ल रखना चाहिये। जैनी लोग इस बातपर विचार करने लगे। इतनेहीमें अर्थात् सन् १३१९में
फिरोजशाह नुघलक देहलीके बादशाह हुए। दि० जैनियोंके अति आग्रह व बादशाहकी इच्छासे श्रीमहासेनके शिष्य मुनिने
वल्ल रखना स्वीकार किया। बादशाहने ३२ पदकी उपाधियां दीं
व कुछ सनदें दीं जो देहली, कोल्हापुर, नागौर आदिके भट्टारकोंके
पास मौजूद हैं (देखो, जैनसिद्धान्तमास्कर किरण ४, सफा
११४, छपा १९१४)। उस समयसे जो वस्त्र रखने लगे उनकी
भट्टारकोंकी गही प्रसिद्ध हुई। और देहलीके भट्टारकने अपनी
शाखाएं भारतके अनेक स्थानोंपर कायम कीं।

यद्यपि कालदोषसे भट्टारकोंका पद वस्त्रसहित स्थापित हो गया तथापि नम्न मृनियोंका कभी अभाव नहीं हुआ था। नम्न मृनि भी होते रहे हैं। सं० १९३४ में श्रीसोमसेन मृनि ५० वर्षके वृद्ध बड़ौदा नगरमें पधारे थे। सोजित्रामें चार्तुमास किया था। जैनवद्दीमें बराबर मृनि होते आये हैं। अब भी वहां श्रीअनन्तकी-र्तिजी महाराज मौजूद हैं। झालरापाटनमें थोड़े ही दिन पहिले श्रीसिद्धसेन मृनि हुए हैं। हालमें वहां मुनि चन्द्रसागरजी विराजमान हैं।

यद्यपि शास्त्राज्ञासे विरुद्ध मद्दारकोंने वस्त्र रक्ता, पर मुसल्या-नोंके नमानेमें उन्होंने भारतमें दिगम्बर जैन समाज, धर्म और उनके मंदिर व शास्त्रोंकी बहुत रक्षा की है। कई तीर्थोंका उद्धार किया है। विद्यानलसे अनेक चमत्कार दिखाये हैं व प्रंथ-रचना भी की है। यद्यपि आन कलके कुछ भट्टारक चारित्रहीन दिखलाई पड़ते हैं तथापि पहिले ये लोग सिवाय वस्त्र रखनेके और सर्व चारित्र-बाह्य किया योग्य करते थे व धर्मकी रक्षार्थ ही जीवनका उपयोग करते थे।

### सूरतकी गदीके भट्टारक।

१ श्रीपद्मनन्दि

२ ,, देवेन्द्रकीर्ति

३ ,, विद्यानिद (सं० १५१८)

४ ,, मिल्लभूषण (चंदावाड़ीके बड़े मंदिरकी प्रतिमार्भोपरसे सं० १५४४)

५ ,, हक्ष्मीचंद्र

६ ,, वीरचंद्र

७ ,, ज्ञानभूषण

८ ,, प्रभाचंद्र

९ ,, वादिचंद्र (चंदाबाड़ीके बड़े मंदिरकी प्रतिमाओंपरसे (सं॰ १६४१)

१० ,, महीचंद्र—( इन्होंने संस्कृतमें पंचमेरुपूजा आदि प्रस्तर्के रची हैं।)

११ ,, मेरुचंद्र (इन्होंने संस्कृतमें नन्दीश्वरपूजाविधान रचा है। सं० १७२२)

१२ ,, जिनचंद्र

१३ ,, विद्यानन्दि (सं० १८०५)

३०० वर्षीमें १० भट्टारकोंका कमवार होना सर्वथा संभव है। विद्यानन्दिके पीछके भट्टारकोंके नाम ये हैं:—

> १४ श्री देवेन्द्रकीर्ति (इन्होंने पादरा तथा आमोदके मंदिर बंधवाये हैं। इनके पास १६ शिष्य रहते थे।

> १५ ,, विद्याभूषण (इन्होंने महुवा, स्र्त, अंकलेक्वर, सजोत, सोजित्राके मन्दिर बंधवाये । इनके एक शिष्य पण्डित भाणा था कि जिन्होंने ज्याराका मन्दिर बंधवाके सं ० १८७१ में प्रतिष्ठा की तथा सोजित्रामें एक मंदिरका मंहप बंधवाया । इनके शिष्य पण्डित पीताम्बर थे, जिन्होंके लिखे हुए कई ग्रन्थ पादराके मन्दिरमें मौजूद हैं।)

१६ ,, धर्मचंद्र।

१७ ,, चंद्रकीर्ति (ये बंबईवाले सेठ सौभागशाह मेघराजके भाई थे। संवत् १९२८ में नरोड़ामें देवलोक गये। वहां एक प्रतिष्ठा भी कराई थी। इनके शिष्य पण्डित शिवलालनी महुवामें रहते थे और पालीताणा क्षेत्रपर देखरेख रखते थे। इन्होंने शिखरजीकी यात्रा करते हुए सं०१९२९ में शिखरजीकी एक पूजा रची है।)

१८,, गुणचंद्र (बागड़ देशमें कई कुरीतियां बंद कराई। जैसे-कन्यादानमें गर्दभका दान। अहमदाबादमें रायकवालजातिने वैष्णवकी कंडी बांघ ली थी सो तुड़वाके उनके लिये मंदिर बंधवाया। ये अभी हालमें विद्यमान है। )

१९ ,, पुरेन्द्रकीर्ति (ये भी हालमें विद्यमान हैं।)

सुरतिजलेमें दिगम्बर नैनियोंकी वस्ती १०० व १५० वर्ष पहिले निम्न स्थानोंपर थी। वहांपर मंदिरजी भी थे।

१-बलसाड-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है।

२-मंदरोही-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है। परन्तु यहांके लिखे हुए कई ग्रंथ मिलते हैं।

३-रांदेर-यहां अब दो घर व एक जूना जिन मंदिर है। ४-हांसोट-यहां अब कोई नहीं है न मंदिर है परन्तु यहांके लिखे ग्रंथ मिलते हैं।

५-महुआ-यहां अब भी १० वर हैं, श्री विन्नहर पर्श्वनायका अतिराय गुक्त प्राचीन जिनमंदिर है व संस्कृतका अच्छा शास्त्रभंडार है ।

६ नोद्दा नयहां अब कोई नहीं है न मंदिर है, परंतु बड़ौदा नवी पोलके दि॰ जैन नैत्यालयमें विराजित श्रीसकलकीर्तिकृत संस्कृत श्रीपालनरित्रसे पता लगता है कि कोदादामें श्रीशीतलनाथस्वामीका मंदिर सं०१६३७ में मौजूद था। प्रंथलिपिकी प्रशस्ति जो अंतिम पत्र ६७ पर दी हुई है इस भांति है:—

" संवत १६३७ वर्षे वैशास विद ११ सोमे अदेहशीकोदादा शुमस्थाने श्रीशीतलनायचैत्यालेय श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये म० श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे म० श्रीदेवेन्द्रकी-र्तिदेवाः तत्पट्टे म० श्रीविद्यानंदिदेवाःतत्पट्टे म० श्रीमिक्षभूषणतत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मीचंद्रपट्टे म० श्रीवीरचंदपट्टे म० श्रीशानभूषणपट्टे म० श्रीप्रमा-चंद्रः तत्पट्टे म० श्रीवादिचंद्रः तेषां मध्ये उपाध्यायधर्मकीर्ति स्वकर्मक्ष-यार्थे लेखि।"

इस लेखमें जिनने महारकोंके नाम हैं उनका नाम व प्राम

सर्वे जगर लिखित सुरत गद्दीके भट्टारकोंसे बिलकुल मिलते हैं। सुरत चंदाबाद्गीके मंदिरमें वादिचंद्र भट्टारक प्रतिष्ठित प्रतिमा मौजूद है।

७-नौसारी-यहां अब कोई नहीं है न जैन मंदिर है परन्तु संवत १९१३ तक यहांपर मंदिरजी था।

८—स्त्रत—यहां पहले ५ जातियों के जैनी थे अब बीसा हुंबड़ के २० घर, दसा हुंबड़ के ७५ घर व नरिसंहपुराके २० घर हैं। तो भी पंच पांच गोटकी कहलाती है। रायक्रवाल व मेवाड़ा नहीं है। यद्यपि मेवाड़ा लोग प्रण्टपने वैप्णव हो गये हैं । सुरत शहरमें १०० वर्ष पहले दिगम्बर जैनियों की संख्या ७०० के अनुमान थी। पहले इनके खास रहने के मुहले सगरामपुरा, काजीका मैदान और नानावट भी थे। यहां अब कोई घर नहीं है। अब हरिपुरा, नवापुरा, खपाटियाचकला आदिमें रहनेवाले अब केवल २५० हैं। क्वेताम्बर जैनी पहले १२००० थे अब २००० के अनुमान है। वर्तमानमें क्वे० जैनियों के ५० मंदिर व ७५ घर चैत्यालय और दि० जैनियों के ६ मंदिर व ९ वर चैत्यालय हैं।

इन छह मंदिरों में सर्वसे पुराना मंदिर खबाटिया चकलेमें चंदा-बाड़ी पर्मशालाके पास छोटा जिन मंदिर है जिसमें एक भौरा है। इस भौरेमें ३ बड़ी अवगाहनाकी भन्य प्रतिमाएं विराजमान थीं सो अब उत्पर बेदी बनाकर स्वर्गवासी सेठ चुक्तीलाल अवरचंद नौंहरी, सहायक महामंत्री—" भारतवर्षीय दि॰ जैनतीर्थक्षेत्र कमेटी " द्वारा स्थापित की गई हैं। इनमेंसे दोपर लेख हैं जो ऐसी भाषामें हैं कि पढ़ा नहीं जाता। श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिबिग्नपर संबत १२३० वैशाख सं० १४९४ श्रीअभवचंद्र

सं० १४९९ नंदीधरकी मूर्ति, महारकका नाम नहीं है।

सं० १५०७ श्रीमहारक विद्यानंदि।

सं० १५१३ श्रीमहारक विद्यानंदि।

,, १५२३ ,, ,, मुबनकीर्ति।

,, १५४४ ,, ,, महिभूषण।

,, १५४८ ,, ,, जिनचंद्र

,, १६४२ ,, ,, वादिचंद्र।

,, १६४१ ,, ,, गुणकीर्ति।

,, १६४७ ,, ,, ,,

,, १६५१ ,, ,, वादिभूषण।

,, १६६६ ,, ,, वादिचंद्र।

,, १६७९ ,, ,, महीचंद्र।

,, १९८४ ,, ,, महीचंद्र।

,, १६८४ ,, ,, कुमुद्यंद्र।

,, १७१३ ,, ,, महीचंद्र।

,, १७२२ ,, ,, मेरुचंद्र।

मन्दिरके नीचेके भागमें विराजमान चन्द्रप्रभुकी

वित्यापरका छेख ।

" Vo॥ संवत् १६७९ वर्षे शाके १५५३ भीमूलसम नन्दीसंघे सर-स्वर्तावके बळात्कारगणे कुन्दकुन्दान्वये महारक भीपक्षनन्दिदेवाः स्त० भ• देवेन्द्रकीर्तिदेवास्त० भ०॥ श्रीविद्यानिद्देवास्त० भ० श्रीमाडीभूषणास्त० भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रस्त० भ० श्रीवी-रचन्द्रास्त० भ० श्रीज्ञानभूषणास्त० भ० श्रीप्रभाचन्द्रास्त० भ० श्रीवा दीचन्द्रदेवास्त० भ० श्रीमद्दीचन्द्रे।पदेशात् हुंबहुजातीयः वीर्जेलवास्तल्यः मातर गोत्रे सं० श्रीवर्द्धमानभार्यो संवनादे तयोः पुत्रः स० कुंअरजीत । इसकोटमदे तयोः पुत्रः स० श्रीधर्मदासभार्यो सं पनादे पुत्री वेभवाई चन्द्रप्रभं प्रणमित । "

#### चंद्रमभुकी बाई ओरकी वड़ी मीतमाका लेख ।

"संबत् १६७९ वर्षे वैद्याख वदी ५ गुरौ श्रीमूलसंघे मारती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वय महारक श्रीपद्मनंदीदेवास्तत्पेह भ० श्रीदेवेन्द्र-कीर्तिदेवास्तत्पेह भ० श्रीविद्यानंदीदेवास्तत्पेह भ० श्रीमिह्मभूषणदेवास्तत्पेह भ० श्रीलक्ष्मीचंद्रदेवास्तत्पेह भ० श्रीवीरचंद्रदेवास्तत्पेह भ० श्रीज्ञानभूषणदेवास्तत्पेह भ० श्रीज्ञानभूष्येष्ठ भव श्रीज्ञानभूष्येष्ठ भावस्तत्पेह भ० श्रीज्ञानभूष्येष्ठ भव श्रीज्ञानम् स्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानम् स्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानम् स्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानम् स्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानस्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानस्तरेष्ठ भव श्रीज्ञानस्तर्येष्ठ भव श्रीज्ञानस्तरेष्ठ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञानस्तरेष्ठ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञ भव श्रीज्ञान

चन्द्रप्रभकी दाई ओर भी एक आदिनाथ स्वामीकी उतनी ही विशाल प्रतिमा है, लेकिन उसपर कोई लेख नहीं है। यहांके इड पुरुषोंके कथनके आधारपर तलाश करनेसे ज्ञात हुआ कि य तीनो प्रतिमाएं पहिले नानावट बले चौटेकेके भौरेमें थीं। वहांपर अब तिर्फ घेलामाई मंछालाल दसा हुंबडका एक घर है। उनके आधिन वह भौरा अभी है और वहां तीन प्रतिमाओंके आहन भी मौजूद हैं।

यह बड़ा मंदिर संबत १८९३ में भस्म हो गया था। उस क्क अग्निकांडसे आधा शहर जल गया था पर प्रतिमाएं सुरक्षित रही थीं। सं० १८९५से १८९८ तकमें फिर तय्यार होकर इसकी प्रतिष्ठा वैसाख छुदी १२ संबत १८९९ को माणा पंडितके द्वारा की गई थी जो यहीं रहते थे और यंत्र मंत्रमें बहुत प्रवीण थे। उस समयकी प्रतिष्ठित पद्मावतीकी मूर्तिपर नीचे प्रकार छेख है।

#### पद्मावतीकी पाषाणकी प्रतिमा।

"सं० १८९९ वैश्वास सुद १२ गुरुवार श्रीमुलसंघे सर-स्वतीगछ बलातकारगण कुंदकुंदाचार्य भट्टारक श्रीविद्यानांदे-तत्पट्टे भ श्रीदेवेन्द्रकीतिस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीविद्याभूषणजीस्तत्पट्टे भ०श्री धर्मचंद्रस्तत्गुरु भ्राता पंडित भाणचंद उपदेशाद सा० वेणिलाल केसुरदास तत्सुता वाई इछाकोर नीत्यं मणमति।"

### पद्मावती (वाषाणकी खड्गासन)

''सं० १५४४ वर्ष वैशास शुदी ३ सोमे॥ श्री मुलसंवे॥ सरस्वतीगछे ॥ बलात्कारगणे ॥ महारक श्रीविद्यानंदीदेवाः तत्यद्दे भहारक श्रीमिलीभूषण ॥ श्रीस्तंभस्तीर्थे ॥ हुंबड ज्ञातेय । श्रेष्ठी चांपा भार्या रूपिणि तत्पुत्री श्रीआर्जिका आर्जिका रत्न सिरीक्षिल्का जिनमती श्रीविद्यानंदी दीक्षिता आर्जिका कल्याण सिरीतत्वली अग्रोतका ज्ञातोसाह देवा भार्या नारिंगदे ॥ पुत्री जिनमती नस्स ही कारापिता मणमति श्रेयार्थम । "

# पंचमेरकी धातुकी बड़ी प्रतिमा।

''सं० १५१३ वर्षे वैशाल सुदी १० हुषे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगछे। म० श्री प्रभाचन्द्रदेवाःतत्पट्टे भा श्रीपद्मनंदीतत्सिष्य श्रीदेवेंद्रकीर्तिदीक्षिताचार्य श्री...विद्यानं- दि गुरूपदेशात गाधारवास्तव्य हुंबड इतिथ समस्त श्री संघेन कारापित मेरुशिखरा कल्याण मृयात्"

मेरके नीचे चारों कानोंपर चारों दिशाओंमें चार मुनियोंकी मूर्तियां हैं जो जाप करते हुए दाहिना हाथ छातीपर और नांया हाथपर रख हुए हैं।

# चारों मुनिओंके नाम।

- १ मुनिश्री कल्याणनंदी मूर्तिः
- २ भ० श्रीपद्मनंदी देवस्य मृतिंरियम्
- ३ मंडलाचार्य श्रीदेवेंद्रकीर्तिः ..... मूर्तिः
- ४ .....नंदी मृतिः

## पंचपरमेष्टीकी धातुकी प्रातिमा।

" सं० १५१३ वर्ष वैद्याख सुदी १० बुधे श्रीमूळसंघे आचार्य श्रीविद्यानंदीगुरूपदेशात हुवड ज्ञातीय दो० डुंगर भा० सोनी देवलदेसुतदोशी शंखा भार्या वासुदिवी०का भार्या मटकका तेनेदं श्री जिन विम्बं कारिता।"

मूलनायक श्रीआदिनाथस्वामीकी प्रतिमा मूलसंघे सं० १३७६ की है । विशेष लेख पढ़ा नहीं जाता ।

#### सम्यक्ज्ञानका यंत्र।

''सं० १६८५ वर्षे गाम सुदी ५ श्रीमूळसंघे कुंदकुं-दाचार्यान्त्रये श्रीवादीचन्द्रस्तत्पट्टे श्रीमहीचंद्रोपदेशाल् सिंध-पुरावंशे संघवी बळ्ळभजी सं० हीरजी झानं प्रणमति।"

#### चौवीसी।

" सं० १५४४ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे म० श्रीभुवनकीतिंस्त्तपट्टे भ० श्रीझानभूषणगुरूपदेशात हुंबडशाइ-रामाभायी कर्मी सु० कर्णाभायी हासी सुत मना एते नित्यं प्रणम्य श्रीमहावीर जिनम् ।"

# पार्श्वनाथकी धातुकी छोटी प्रतिमा।

''सं० १४९९ वर्षे वैशा॰ वादे ५ गुरुवारे श्रीकाष्ठा-संघगण हुंबडवांशायं जगपालभाः सांति त्रि । स्रुत नरपालेन श्रीपार्स्वनाथिंवं करारि....।''

#### सम्यक्ज्ञानका यंत्र।

"सं० १३७८ भाद्र० सुदी १२ साधु चादावोदा मणमित नित्यम् ।"

तीसरा दि० जैन मंदिर गोपीपुरामें हैं। यहांपर भी बहुत प्रतिबिम्ब हैं अधिकतर काष्ट्रासंघकी गदीके भट्टारकोंके द्वारा प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिरमें संस्कृत ग्रंथोंका प्राचीन शास्त्र भंडार है, परंतु बहुत ही अध्यवस्थित स्थितिमें पड़ा है। बम्बईके सेठ डाह्या-भाई प्रमचंदका प्रबंध है। खेद है कि वे इनकी सम्हाल नहीं कराते। इस मंडारमें संस्कृत—प्राकृतके अपूर्व २ हजार डेड़ हजार ग्रंथ हैं।

यहांपर एक पद्मावती देवीका प्रतिबिम्ब है उसपर संबत् १६९४ जेठ सुदी १० है। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक काष्ठासंघी छक्ष्मीसेन हैं। इसकी प्रतिष्ठा गुर्जरदेश सुरत बंदर नरसिंहपुरा ज्ञातीय पंचळाळगोत्रे शाह रामजी भार्या फवाई तयोः सुत कल्याणजीः भार्या गौरीने की। एक पंत्रमेरु है उसके १ लेखसे इस तरफ होनेवाले काष्ठा-संघी भट्टारकोंके क्रमका पता चलता है ।

नकल लेख पंचमेर दि० जैन मंदिर गोपीपुरा सूरत।

"संवत १७४७ शांक १६२२ प्रमोदनाम संवत्सरे ज्येष्ट मासे कृष्णपक्षे सातम बुधवासरे नंदीतटगच्छे भट्टारक विधाणे भट्टारकश्रीराममेनान्वये तत्पटे भट्टारकश्रीविशा-छकीर्त्ति तत्पटे भट्टारकश्रीविश्वसेन तत्पटे भट्टारकश्री विद्याभूषण तत्पटे भट्टारक श्रीभूषण तत्पटे भट्टारकश्री चंद्रक्षीति तत्पटे भ०श्री राजकीर्ति तत्पटे भट्टारक पं०छक्ष्मीसेन-जी तत्पटे भ०श्री देवेन्द्रभूषण तत्पटे भट्टारक श्रीसुरेन्द्र-कीर्ति मतिष्ठितं।"

यहां श्रातुका एक रत्नत्रयका प्रतिबिम्ब है जिसमें तीन कायो-त्सर्ग प्रतिमाएं एक साथ अंकित होती हैं उसको इधर रत्नत्रय बिम्ब कहते हैं। इसका छेख यह है:---

"सं० १७६२ माघ वदी ७ शुक्र श्रीस्रत बंदरे श्री चंद्रनाथ चैरवालये काष्टामंघे निर्मात नरसिंहपुरा ज्ञातीय कुकालोलानी संघवी नाना मुत द्यीरजी तस्य भा० त्रिनी-वाई तयो पुत्रा सुन्दरदामजी द्वीरजी तथा त्रीकमजी द्वीरजी तथा देमजी द्वीरजी तथा वहन मेघबाई तथा जंगबाई प्रतिष्ठितं"

काष्टासंबके जो नाम उपरके शिलालेखमें आये हैं वे सर्व नाम उस संस्कृत गुर्वावली पाउमें है जो ६४ कोलोंकी है तथा जो करमसदके उस संस्कृत गुरकेमें है जो सुरेन्द्रकीर्ति भट्टार- कने अपने खास पड़नेके लिये संबत् १७४३ चैत्र मुदी १४ रवि-के दिन श्रीवन्धपुर (यह कौन नगर है सो इसमें नहीं आया )-के श्रीआदिनाथ वैस्यालयमें लिखवाया था । इस गुटकेके देखनेसे विदित होता है ये सुरेन्द्रकीर्ति विद्वान थे क्योंकि इसमें प्राकृत संस्कृतकी निम्न भक्तियां हैं-सिद्धभक्ति, श्रुतज्ञानभक्ति, दर्शनभक्ति, चारित्रभक्ति, वीरभक्ति, २४ तीर्थेकरभक्ति, चेत्त्यभक्ति, वहंद म्बयंभू, पंचमहागुरुभक्ति, शांतिभक्ति, ३४ अतिशयभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, समा-धिमक्ति, योगभक्ति, निर्वाणभक्ति, अय्युआछोचनामक्ति, बृहदाछो-चनामक्ति, इनके सिवाय तत्त्वार्थ सूत्र, ऋषिमंडल, अष्टान्हिका बीनती, ' आराधनप्रतिबोध, गुर्वावली, वृट्हीक्षा विधिव प्रतिष्ठा विधि है, यह गुटका २७९ पत्रोंका है। इसके २३१ में गुर्वावली है। इसके १९ श्लोकसे काष्ठासंवका वर्णन इस भांति है कि इस काष्ठासंवके ४ गच्छ हैं-नंदीतर, माधुर, बागड और लाडबागड। सो यह। नंदीतर गच्छकी गुर्वावली वाही जाती है। सी नीचेके कपसे नाप हैं-

१ अईद्ब्ह्ममृरि

४ नागसेन

७ नोपसेन

२ श्रीपंचगुरु

९ सिद्धान्तसेन ८ रामसेन

६ गोपसेन ३ गंगुसेन

रामसेनके सम्बन्धमें लिखा है कि इन्होंने नाराभिंह नावकी जाति स्थापित की ।

रामस्नोति विदितः प्रतिबोधनपंडितः । स्यापिता येन एज्जाति-निर्विह मिधा सुवि ॥२४॥

इसस पता चलता है कि जो ८४ जातियां जैनियोंमें प्रसिद्ध हैं वे प्रायः पंचम कालके मुनि व महारकोंके द्वारा किसी २ खास कारणसे स्थापित की गई हैं। वह कारण भी बहुत करके यह हो सक्ता है कि जब किसीने किसी अजैन समूहको एक साथ जैनी किया तब उसका एक खास नाम रखके उसे एक जाति करार दे दिया।

0 1.		200
९ नाभिसेन	२८ मेरुसेन	४५ सुवर्णकीर्ति
१० नरेन्द्रसेन	२९ शुभंकरसेन	४६ भानुक्रीर्ति
११ वासवसेन	३० नयकीर्ति	४७ कविभूषण
१२ महेन्द्रसेन	३१ चंद्रसेन	४८ संयमसेन
?३ आदित्यसेन	३२ सोमकीर्ति	४९ विख्यातमूर्ति
१४ सहस्रकीर्ति	३३ लघुसहस्र कीर्ति	५० लघु राजकीर्ति
१५ श्रुनकीर्ति	३४ महाकीर्ति या	५१ नंदकीर्ति
१६ देवकीर्ति	महासेन	५२ चारुकीर्ति
१७ रामसेन	३५ यशःकीर्ति	५३ विश्वसेन (वादि
१८ विजयकीर्ति	३६ गुणकोर्ति	प्रसिद्ध)
१९ वासवसेन	३७ पद्मकीति	५४ देवभूषण
२० महासेन	३८ मुवनकीर्ति	५५ ललितकीर्ति
२१ मेघसेन	३९ महाकीर्तिया	५६ श्रुतकीर्ति
२२ सुवर्णसेन	विमलकीर्ति	५७ जयकीर्तदेव
२३ विजयसेन	४० मदनकीर्ति	९८ उदयसेन
२४ हरिषेण	४१ मेरुकीर्ति	५९ गुणदेवसूरि
२५ चारित्रसेन	४२ गुणसेन	६० विशालकीर्ति
२६ बीरसेन	४३ सहस्रकीर्ति	६१ अनंतकीर्ति
२७ कुछमूषण	४४ विजयसेन	६२ महेन्द्रसेन



सुरेंद्रकीर्ति भटारक-सूरतः सं० १७९०.

५ देखी १८ ५२.)

J. V. P. Surat.

६३ विनयकीर्ति	७८ रामसेन	९० विमलसेन
६४ श्रीजिनसेन	७९ जयकीर्ति या	९१ विशालकीर्त्ति
(कवीश्वर)	द्याकीर्ति	९२ निधसेन
६५ सूर्यकीर्ति	८० राजकीर्ति	९३ विद्याभूषण
६६ विश्वसेन	८१ कुमारसेन	(सं०१६०४*)
६७ श्रीकीर्ति	८२ पद्मकीर्ति	९४ श्रीमूषण या
६८ चारुसेन	८३ पद्मसेन	रत्नभूषण -
६९ शुभकीर्ति	८४ मुवनकीति	९५ चंद्रकीर्ति या
७० भवकीर्ति	८५ विख्यातकीर्ति	जयकीर्ति
७१ भवसेन	८६ भावसेन	९६ राजकीर्ति
७२ लोककीर्ति		•
७३ त्रैलोक्यकीर्ति	८७ रत्नकीर्ति	९७ हक्ष्मीसेन
७४ विनयकीर्ति	(मै० १४०२)	९८ इन्द्रभूवण या
७५ कमीं वसेन	८८ ऌक्ष्मीसेन	चंद्रभूषण
७६ सुरसेन	८९ धर्मसेन	(Ho १७०८)
७७ कुमारसेन	(सं०१५४७)	९९ मुरेन्द्रकीर्ति
•	000 000	

इस संस्कृत गुर्वाक्लीमें धुरेन्द्रकीर्ति तक नाम है उसका संबत गोपीपुरा मंदिरके पंचमेरके लेखके व इस गुटकेके अनुसार वि० सं० १७४३ और १७४७ है । प्रतिमाके शिलालेखमें विशालकीर्तिसे सुरेन्द्रकीर्ति तक जो नाम दिये हैं वे बराबर मिलते हैं।

इस गुटकेके अंतमें अलग जो नाम गिनाए हैं उनमें कुई नाम विशेषणके शामिल किये गए हैं तथा सुरेन्द्रकीर्तिके आगेकैं चार

<sup>\*</sup> बढीदा मंदिरके प्रतिबिम्बके लेखसे देखो, अध्याय ३ में ।

महारकोंके और नाम हैं—सकलकीर्ति, लक्ष्मीसेन, रामसेन और रत्नकीर्ति । उत्पर जो पट्टावली दी है वह आगरा मोतीकटराके दि० जैन मंदिरके सरस्वती भंडारके गुटके नं० १३९ से भी मिलती है।

इसी गोपीपुराके मंदिरमें दूसरे मेरुपर लेख है। उसमें काष्टासंघ खाड़ बागड़ गच्छका वर्णन है और वघरवाल जाति प्रतिष्ठाकारक है। इससे मालूम होता है कि वघरवाल लोग काष्टासंघ लाड़ वागड़ गच्छको मानते हैं। जब कि नरसिंहपुरा नंदीतट गच्छको मानते हैं।

# गौपीपुरा मंदिरकी एक चौनीसीपरका छेख ।

"सं० १५१३ वर्षे वेशाख सुदी १० बु० आचार्य, भी देवेन्द्र-कीर्ति शिष्य श्रीविद्यानंदी देवादेशात् काष्टासंघे हुमड वंशे श्रेष्टी काना भार्या बार सुत साजण मायो सुह्वदे आता सोमसा मार्या रही भानर सींघराज भार्या वरमादे साजण भार्या अधन सुत सदा श्रे सींबराज सुत वदा श्रे साजणे स्वश्रेये।य श्री जिन विंब कारियतम् । श्री बोघा बेलातट वास्तव्य श्री मूलंसचे आर्जिका संयम श्री श्रेयार्थम्।"

## नवापुरा-मेवाडा मंदिरकी प्रतिमाएं ।

मेवाड़ाका, गुजरातीका, चोपड़ाका, ऐसं नवापुरामें ३ दिगम्बर जैन मंदिर हैं। जिसमें चिंतामणि पार्श्वनाथका मेवाड़ा जातिका मंदिर प्रसिद्ध है—इसमें भी काष्टासंघी नंदीतट गच्छकी आम्नाय है यहां जो मुख्य श्रीक्षीतलनाथस्वामीकी प्रतिमा अभी भौरेमें है उसपर यह लेख है—

" स्वस्तिश्री तृप विक्रमात १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ श्रीमद काष्टा संघ नंदीतट गच्छे विद्या गुरौ श्रीरामसेनान्वये भट्टारक श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये सुरत्वंदरे. सास्तव्य मेत्राङ्गा झाती लघु शाखायांम् सा सनाथा विशनदास सुत

विठल श्राता मूलजी इत्यादि पुत्र पौत्रादिविह सह श्रीसीतलनाय विम्ब नित्यं प्रणमति "

इस छेखमें छक्ष्मीसेनके बाद कई नाम रह गए हैं -- विजय-कीर्ति मुरेद्रकीर्तिके शिष्य ये तथा शायद इन्हींका नाम सकल-कीर्ति है जो गुटकैमें सुरेन्द्रकीर्तिक पीछ हुए लिखे हैं अथवा यह दूसरे शिष्य हों- क्योंकि यह भी किंबदक्ती कही नाती है कि गोपीपुराके भट्टारकके दो शिष्य थे—तकरार होनेसे जो मूर्व था उसको लज्जा आई वह विद्या पढनेको कर्नाटक गया और खुब विद्वान होकर करमसदकी गहीका भट्टारक हो गया और स्रत आनेका विचार किया, पर गुरुवंधु जिससे झगड़ा हुआ था और जो यहां गोपीपुरामें भट्टारक था उसने स्ररतके नवाबसे आज्ञा हे ही कि नर्बदाके इस पार उसको उतरने न दिया जाय। करमसद्वाले भट्टारक सूरतके लिये रवाना हुए । भरुच याने ऋगुपुर नव आए तब नर्बदा नदीमें नौकावालोंने उतारनेसे इनकार किया तब मंत्र आराधनकर सेत्रंनी विछा इस पार आगए तब भरुवके नबाबको नौकावालोंने खबर दी। नबाब आया और इनकी 'विद्या देखकर, क्षमा मांगी । ये आगे चलकर बरियाव आए और ताप्ती नदी उतरना चाही । यहांपर भी नाविकोंने इनकार किया तब फिर आपने मंत्र आराधा सेत्रंजी विद्या नदी पारकर बरियावी भागलके द्वारपर सुरतमें आए। वहां द्वार बन्दकर दिये गए। तब फिर मंत्र आराज कर आप आकाश मार्गसे उसी स्थानपर आएँ जहां-पर नवापुरामें यह बेवाडाका मंदिर बना है। सुरतका नवाब व आवक आए-और इनकी विद्या देखकर सबने क्षमा मांगी। तब आपने वहीं यह मंदिर बंधवाया। इससे साफ प्रगट है कि ये विजयकीर्ति हैं और इनके गुरुधाता सकलकीर्ति हैं। दोनोंके गुरु मुरेन्द्रकीर्ति हैं क्योंकि इसी भौरमें एक चरणपादुका भी है जिसपर यह लेख है—

" स्वस्ति श्री सं० १८१२ माघ सुदी ५ गुरोै काष्ठा...संघे... श्री विजयकीर्ति गुरुपदेशात सुरेन्द्रकीर्ति गुरुपादुका नित्य प्रणमति—"

तथा यह प्रगट है कि यह सुरेन्द्रकीर्ति सं० १७९० तक रहे विजयकीर्तिने अपने गुरुके स्मरणमें यह पादुका स्थापित करवाई यह बात भी साफ २ प्रगट है—

सुरेन्द्रकीर्तिका चित्र उसी समयका ग्वींचा हुआ इस मंदिर-जीमें पाया गया है जो पाठकोंके ज्ञान हेतु यहांपर प्रगट किया जाता है। इस मंदिरका प्रबन्ध वीसा मेबाड़ा भगुभाई चुन्नीलाल कस्त्रचंद्र चोग्वावाला करते हैं। दसा मेबाड़ाके पहले यहां १०८ घर थे परंतु व कन्याओंके लोभसे वैष्णवोंसे मिलनेके लिये कंठी बांधकर वैष्णव हो गए तो भी उनमेंसे ८ व १० घरवाले श्रीर जिनमंदिरजी दर्शनार्थ अभी भी आते हैं।

### पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"श्री मूल्यंघे प्रतिज्ञा श्री श्री काय मुनींद्र ११६४ स्वानीयः संवत्सरे पुतमय भवतु ।"

#### धातुकी पतिमा।

''सं १४९७ मूलसंघे श्रीसकलकीतिं हुष्ट ज्ञातीय शाह कर्णा भाषा भोली सुता सोमा भात्री भोदी मार्था पासी आदिनायं प्रेणमति। "

## चौवीसी घातुकी।

"सं० १४९० वर्ष वै० सु० ९ सनी श्री मूलसंघे नदी संघे बलात्कार गणे स० गच्छे श्री कुं० म० श्री पद्मनंदी तत्पटे श्री श्री ग्रुमचंद्र तस्य श्राता जगत्रय विख्यात मुनि श्री सकलकीर्ति उप-देशात् हुब्ब ज्ञातीय ठा० नरवद भार्या बला तयोः पुत्रा ठा० देपाल अर्जुन भीमा कृपा जासण जांपा काह्या श्री आदीनाय प्रतिमेयं।"

#### पद्मावतीकी धातुकी प्रतिमा।

"सं० १३०४ वर्ष चैत्र सुदी ८ रबी **सूरत** तीथे वास्तव्य हुबह न्यानां आव्हा रान ठका जूरा गत सेगण राजी धार प्रसादी कर्तव्या ।"

#### पार्श्वनाथकी प्रतिमा।

"सं० १३८० वर्षे महा सुदी १२ रवी श्रीमूल संघे व्यामेरवाला--न्वेय साधु रतन सुत सोया भार्या लक्ष्मी प्रणमि तम् तत्।"

#### चोपडाका मंदीरकी प्राचीन प्रतिमा।

पार्श्वनाथ--सं० ११६० श्री मृलसंघे भट्टारक श्री ग्रुमचंद्र दो० विंघराज। ??

पद्मावृतीकी मितमा—एं० १२३५ की है।
गुजराती मंदिरकी प्राचीन प्रतिमाएं।

# रत्नत्रयकी धातुकी प्रतिमा।

"सं० १५१८ वर्षे श्रीमूळसंघे आचार्य भीविद्यानंदी गुरोधपदेशात् हुबड वंशे दो साइया भार्या अहीवदे तयोः पुत्राः हुया विम्बभज आस आसा प्रणमंति।"

## चौबीसी घातुकी।

''सं० १४९९ वर्षे वै० वदी २ सोमे श्री मूळसंघे सरस्वतिगच्छे

मृनि देवेंद्रकौर्ति तात्वाच्य श्री विद्यानंदीदेवा रुपदेशात् श्री हुबड वंश शाह खेता भार्या दर्दी तयोः पुत्र शा राजा मार्या गौरी द्वितीय गणी तयोः सु॰ भदा वदा राजा भार्त्री रुपाणा भार्या अणसु तयों पुत्री सदा मछीदास एतेषां मध्ये राजा भन्नी राणी श्रेया चतुर्वि-शातिका कराभिता।"

#### पापाणकां चौवीसी मतिमा।

"संवत ८७५ माघ बदी ५ श्रीदोशी लाड देत्र हुलाका माना दुतीय प्रणमंति।"

यह प्रतिमा बहुत प्राचीन मार्यम पडती है। संवर्तका निश्चयः नहीं हो सकता तंवतके अंक तीनठी हैं।

#### धातुकी मतिमा ।

"सं० १४२९ वर्षे श्रीमूलसंधे श्री स० गच्छे श्री विद्यानंदी गुरूपदेशात् सिंधपुरा ज्ञातिय श्रेष्टी पासा भार्या ऐस् पुत्र दामोदर सनवाल श्रीपति श्री आदिनाथ कारापिता।"

## आदिनाथ स्वामीकी धातुकी मतिमा।

"सं० १३८० वर्ष वैशाल सुदी १२ सनी श्री प्रवरसेन देव उपदेशेन सं० संडी बाला देव साले एपज सुत बीजासा माकीसा तंत्परिदारेण प्रणमति ।"

#### सिद्धयंत्र ।

"सं० १५०४ वर्षे फाल्गुण सुदी ११ गुरौ श्री गांधार वेजा कुछ श्री आदिश्वर जिनालये श्री मूल तं० व० स० गच्छे श्री कु० श्री पद्मनंदी देवा तत्यहे श्री सकलकीर्ति देवा तत्विष्य श्री सुवन-कीर्तिदेवन एनेदं श्री सिद्ध......श्री हुम्ह्यातीय श्री सुग्राम मार्या-र्ण जंत्र नित्यं प्रणमिति ।"

#### नंदी भारकी भार्चीन भविमा।

"श्री मूलसंचे भारतीय गच्छाविष पद्मनंदी शिष्य श्री देवेंद्रकीर्ति नामा श्री विद्यानंदी सच्छाव्यः २ श्री संवत चतुर्द्दा ख्याते नवतिनेव संजुता वैशाख कृष्ण पक्षे च दृतीयापि शुभे दिने यो मदविख्यातमते हुव खंदो जनाधिरवंतशे सुवीयमाल देवा विजयदेवी भवेजाया पुत्राः अजिन भार्या स्वतोदा दाख्यो घरणि तले भार्या हांसलदेवी तीतः जाताः त्रया सुता ४ प्रथम साईयो जाता लीलादे भा॰ गुणवित भार्या भीम मुजदोषाना सद् गर्जी तत्सुतौ जातौ द्वितीयः सहदेवाख्यो भार्या मेत्त सुत्तो सुवीर गंगादे या गर्गी संग दृतीयो निसाये तयोः पुत्रौ ६ जुठानी भार्या सवीरा सुत मक्तौ दे नेर्चा रम्यते मध्ये पापकर्म क्षयार्थे श्रीम्त्रीष्ठं विम्बं इंसलाइं अमदादा भार्या हासंबदे तयोः पुत्री अमकसात्र प्रणमित ।"

इस मंदिरमें सफेद पाषाणकी और घातुकी कई कायोत्सर्य प्रतिमाय हैं ाजो अतिप्राचीन होनेके कारण उपरके छेख पढ़े नहीं जाते।

और भी इस मंदिरमें एक सुवण अक्षरोंका लाल कागजोंपर लिखा श्रीतस्वार्थ सुत्र है जिसमें सुनहरी स्याहीसे व्याख्यान करते हुए एक महारकका चित्र है और उसके चारों ओर चौवीस तीर्थकरका चित्र है। पास ही कुछ श्रोतागण भी बैठे हुए हैं। जो कि वि० मं० १५२६ में मूल्संगी महारक श्री विद्यानंदिके उपदेशसे श्री राहुलस्याना....विकरमीणीसाने लिखवाया था।

# सिंहपुरा ज्ञातिका वर्णन।

सूरतनगरमें सांपानाजारमें सेठ प्रमुदास पानाचंद्रके यहां एक चैत्यालय है वहां एक पद्मावती देवीकी सूर्ति है जिसपर यह केल हैं-"सं• १०२२ जेठ सूरी २ मूलसंबे महस्य श्री मेरुचंद्र प्रहे साह श्री सिंहपुराज्ञातीय प्रेम जीवा भाई सुत भट्टारक श्री महाचंद्र शिष्य ब्र० जयसागर प्रणमित "

इस लेखमें सिंहपुरा जातिका वर्णन आया है। इसकी दन्तकथा सुरतमें यह प्रसिद्ध है कि इस सिंहपुरा जातिका एक दीवान देह-स्ठीकी सल्तनतमें था। वहां बादशाहसे कुछ अनवन होनेके कारण वह कुटुम्बसहित खंभातके नवाबके यहां आकर रहा। फिर सुरत, महुआ, व्यारा तथा बलसारमें रहा। सुरत जिलेमें अब भी इस जातिके १५ घर हैं। मुख्य सेठ प्रेमचंद हरगोविन्दभाई देवचंद मोती-रूपावाला सुरत है। परन्तु वे सब घर नरसिंहपुरा जातिसे सम्बन्ध करते हैं। क्योंकि सिंहपुरा जातिके और घर इधर नहीं रहे। इस लिये संबत् १९०४में सिंहपुरा और नरसिंहपुरा दोनों जातियां मिल गई।

यहांपर यह कह देना उचित होगा कि समयसमयपर जब जातियां छोटी रह गई तब वे एक दूसरेमें मिलती भी गई हैं ऐसा प्रमाण मिलतों है। ऐसी दशामें यदि दिगम्बर जैन धर्म पालनेवाली सर्व ध्रद्ध भिन्न २ जातिया परस्पर खानपान और बेटी ब्यवहार करें ती छोटी जातियांके घरोंका नाश न हो। और क्षेत्र विशाल होनेसे सोग्य सम्बन्ध प्रत्येकको प्राप्त हो जावे।

इस समय यहां दिगम्बर जैनियोंमें मुख्य सेट कालीदास व-खतचंद हैं जो दशाहुंबड़ हैं। ये ही पांच गोटोंके सेट कहलाते हैं। बीसाहुमड़ मंत्रेश्वर गोत्री परोपकार—कार्य्यमें लीन सेट मूलचंद किस नंदासजी कापड़िया हैं जो 'दिगम्बर जैन' पत्रके सम्पादक ' जैन मित्र' के प्रकाशक व 'जैनविजय' प्रेसके खामी हैं—नवापुरामें १ जैन पाठशाला व १ फुलकौर जैन कन्याशाला है। धर्मशाला चंदाबाही है, नहां परदेशी वात्री ठहरते हैं। नवापुरामें फुलवाड़ी नामक दशा हुंबड़ोंकी वाड़ी मी है।

उपर दि॰ जैनियोंकी कुछ स्थितिका जो वर्णन किया गया है उससे पाठकोंको मालूम होगा कि सुरत नगरमें दि॰ जैन समाजका बहुत बड़ा प्रभाव था।

वर्तमानमें इस सूरत शहरकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें वर्तमानमें सूरतकी कतारगाम, पूर्वमें रेलवेकी सहक, दक्षिणमें ऊवनाके मजूरोंकी जमीन तथा पश्चिममें ताप्ती नदी है।

पोने दो मील लम्बा सुरत शहर वसा है। यहां रेशम कीनखाब और जरीका काम अच्छा होता है। लकड़ी, चंदन व हाथीदांतपर सुन्दर कढ़ावका काम होता है। गुलामबावा मिल, पीपल्स मिल और स्वदेशी मिल सुत और कपड़े बनानेकी है। देशी कागज़ बनानेकी जमूं मिया कागजीकी मिल है। इसके सिवाय कई कातनेके जीन व बांधनेके प्रेस चावलकी मिलें व वरफ व सोडावाटर बनानेके कारखाने हैं। मीनाकारी व जवाहरातका जड़ावकाम भी अच्छा होता है।

सूरतमें प्रसिद्ध मुहले इस भांति हैं-

१-वेगमपुरा, बादशाह औरंगजेबकी बहन सुरतमें रही थी उसके नामसे बसा हुआ है इसमें नवाबी महल, खदेशी मिल देखने योग्य है।

२—सलावतपुरा, सिलावतस्वांने बसाया यहां ईखदाव मुहम्मदी बाग है।

- ३—नवापुरा—यहां झांपाबाजार कापड़ बाजार, दि॰ जैन मंदिर, सेठ माणिकचंदकी प्रत्रीके नामसे फुलकौर कन्याशाला व दि॰ जैन पाटशाला है। दि॰ जैनियोंकी वस्ती ज्यादा है। यहां गोक्कल अष्टमीका मेला होता है।
- ४-इंद्रपुरा-इंद्र नामके अनावला ब्राह्मणने बसाया ।
- ५—रुत्तमपुरा—अंग्रेनोंके दलाल रुस्तमजीने बसाया। यहां रुस्तम बाग, कबीरका मंदिर व मारकट है।
- ६-सगरामपुरा-सिवराम नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाधा । यहां नवसारी बाज़ार, व रोकड़िया हनूमान मशहूर है । तथा उसीका मेला भरता है ।
- ७-सामपुरा-सामजी नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया।
- ८--रुद्धपुरा-रुद्ध नामके अनावेल ब्राह्मणने बसाया।
- ९-रहमतपुरा-रहमतस्वांने बसाया ।
- १०-संडेरावपुरा-इसको संडेराव मराठाने बसाया । यहां गणपती चौथका मेळा भरता है ।
- ११-नानपुरा-यहांपर वलंदों (पुर्तगालों)ने कोठी की थी। प्रसीद्ध स्थान-नहांगीर बंदर या वलंदा बन्दर, प्रिन्सेस बाग, कोर्ट, जेल, सार्वनिक हाईस्कूल।
- १२-बास्तीपुरा-सुरतके गयासुद्दीन नवाबके नामसे प्रसिद्ध है। यहां आरमीनियन कवरिस्थान है।
- १ ३-सेम्यद्भरा-सेम्यद् पृद्वस्के नामसे ।
- १४-रामपुरा-रामभाई नामके बाह्मणने बसाया । यहां अर्देसर

कोटवालका बंगला, अनाथबालाश्रम, अशक्ताश्रम, प्रसिद्ध स्थान है।

१५ -रुघनाथपुरा-रुघनाथ बाह्मणने बसाया ।

१६-हरिपुरा-हरि ब्राह्मणने बसाया । यहां प्रेमचंद रायचंद इवे० जैन कन्याशाला, भवानी बड़, चारखानाका चकला मशहूर है।

१७-महीधरपुरा-महीधर बाह्मणने बसाया ।

१८-हेदरपुरा-हेदरस्वांने बसाया ।

१९-मंचरपुरा-मंचेरजी पासींने बसाया। यहां दिल्ली दरबाजा है।

२० कनपीठ-यहां पहले अनाजका मोटा बाजार था। अब भी अनेक दूकाने ऊंच कौमकी हैं। यहां यूनियन हाईस्कूल, बैंक व लीमड़ा चौक मशहूर नगह हैं।

२१-रहिया सोनीका फलिया (केलापीठ)-रहिया सुनारके नामसे मशहूर है। ऊंच कौम रहते हैं। यहां रामजी, बालाजी, अंबाजी आदिके हिंदू मंदिर प्रसिद्ध हैं।

२२ - वाड़ी फलिया-यहां संस्कृत पाउशाला है।

२२-संत्राङ्याबाड्-यहां गुलाबदास माईदास कन्याशाला है।

२४-गोपीष्टरा-प्रसिद्ध गोपीने बसाया । यहां श्वे० जैनियोंकी बहुत वस्ती है। यहां मगनभाई प्रतापचंद फ्री छाईबरी, . प्रेमचंद रायचंद धर्मशाला,श्वे० जैन मंदिरों व गोविंदजीका मंदिर प्रसिद्ध हैं। दि॰ जैन मंदिरजी भी है।

२५ — स्वपाटिया चक्छा — यहां दि॰ जैनियोंकी बस्ती भी है। सेट माणिकचंदजीके घरानेकी चंदावाड़ी दि॰ जैन धर्मशाला, २ दि॰ जैन मंदिर, रायचंद दीपचंद कृत्याशाला, विततिविधास है। 'नैनविजय' प्रेम तथा " दि॰ जैन ", 'जैन मित्र ' पत्रोंका दफ्तर है।

२६—केलापीठ—यहां कापड़ बाजार, व मोटा मंदिर है।

२७—भागातलाव-यहां स्त्री छोकड़ोंको अम्पताल, पारेख हुन्नरशाला, फिरंगीका कवरिस्तान है।

२८-बड़ेखांका चक्रला-यहाँ काजीकी मसजिद व मीनारा तथा पशु द्वाखाना है।

२९-आसुरवेगका चकला-यहाँ जुना द्बीर, मारकेट व जैन पाठशाला है।

३०—चौक बाज़ार-यहां मोटी अस्पताल, विकटोरिया बाग, सुवा-वड़खाना, बम्बई बैंक, किला, गवर्नमेंट हाईस्कूल, धे० जैन निगनंद हॉल, होपपुल, बकमीका द्रिया महल प्रसिद्ध है। रानिवारका हाटका मेला भरता है।

३१-मुह्णांचकला-यहां फ्रेज़रका द्रियामहल, म्यूनिसिपल हाल, अंग्रेनी कोठी, मिशन हाईस्कूल, चिंतामणि व पाताली हरमानके मंदिर, पारसी ऑफनेज, मिरज़ास्वामीकी मसीद, चुड़गरकी मीनारें प्रसिद्ध हैं।

३२-माञ्चीपीठ-यहां डाक्टर बहरामजीका धर्मादा दवाखाना है।

२२-रानीतलाव-**गोपीकी स्त्री** द्वारा एक तालाव बनाया गया था उससे यह नाम पड़ा है।

शहरमें म्यूनिसिपल्टीकी २९ शालाएँ हैं निनमें ४ गुजराती कन्याशाला, १ उर्द् कन्याशाला, दो अत्यंज शाला, छः उर्द् शाला, १६ बालकोंकी गुजराती शाला हैं। इसके सिवाय तीन जैनियोंकी, दो पारसियोंकी व ४ मिशनकी कन्याशालाएं हैं। गुजराती पाटशाला ३ मिशनकी, ३ पारिसयोंकी, १ जैनोंकी है। ४ फ्री रात्रिशालाएं है। एक संस्कृत शाला, १ पारख हुन्नरशाला तथा ५-६ वोहरोंके मदरसे हैं। अंग्रेनी हाईस्कृल ४ हैं, मिडलस्कूल ३ हैं, पार्सी लड़िकयोंकी एक इंग्रेनी स्कूल व मिशन जनानास्कूल व १ फ्री अंग्रेनी रात्रिशाला है।

यहां भी लायबेरी ११ व १२ हैं जिसमें जैनियोंकी मगनभाई प्रतापचंद जैन लायबेरी है। एंद्रस लायबेरी सबसे बड़ी है।

वर्तमानमें सुरत शहर साधारण व्यापारका स्थान है।

पाठकोंको माल्प होना चाहिये कि यही वह नगर है नहां इस पुस्तकके चरित्रनायक सेठ माणिकचन्द्रजीने जन्म धारण किया आ । जिस मुहलेमें उक्त सेठका जन्म हुआ था उसको अव स्वपाटिया चकला कहते हैं । जिस साधारण मकानमें उस शरीरने माताके उदरसे अवतार लिया था वह मकान चंदावाड़ी धर्मशालाके पास जैन मंदिरके बगलमें एक मंजलका छोटासा घर है जिसका अब भी दर्शन होता है ।

पाठकों के ज्ञानक लिये हम उसका चित्र यहांपर दिये देते हैं जिससे मालूम होगा कि जिस आत्मान अपने जीवनमें महा-परोपकार व अपनी कीर्ति विस्तारी वह पुरुष एक बहुत ही साधारण स्थितिवाले घरमें जन्मे थे। जो अपनी निम्न दशासे ऊपरको चढ़ता है वही पुरुषार्थ और पुण्यात्मा मनुष्य है। जिसने जन्म लेकर अपने वंशकी उन्नति की उसीका जीना सफल है। जो योंही पैदा होकर जीता है वह मरेके समान है। कहा भी ह—

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न आयते।
. स जातो बेन जातेन याति वंदाः समुन्नतिम्॥

# अध्याय तीसरा।

# उच्चकुलमें जन्म ।

नियोंमें एक प्रसिद्ध जाति हुंबह है जिसका मूल निवासस्थान बागड़ या मेवाड़ प्रान्त है ं हुंबह जातिका वर्णन । वहांसे ही इस जातिके छोग निकलकर अर अन्यस्थानोंमें फैले हैं । हुंब्ड़ जातिमें अधिकतर दिगम्बराम्नायके माननेवाले व कुछ इवेताम्बराम्नायी भी हैं । इस जातिकी स्थापनाका क्या इतिहास है उमका कोई प्रामा-णिक पता नहीं चलता है। तौ भी इस सम्बन्धमें भाई जवाहरलाल गुमाननी वैद्य परतापगढ़ राज्यने जो छानवीन करके पता स्रमाया है व हमें एक निक्च दिया है, उसके आधारपर यह प्रकाशित किया जाता है कि यह जैनियोंकी ८४ जातियोंमेंसे ५५ वीं जाति है । इसको स्थापित करनेवाले विनयसेन आचार्यके शिप्य कुमारसेन हुए हैं । इन्होंने सक्त् ८०० के अनुमान बागड़ देशमें इस जातिको स्थापित किया है। इसके प्रमाणमें गुमानजीने वि० सं० ९०९ में श्रीदेवसेनाचार्य रचित प्राकृत **दर्शनसार**की गाथाएँ दी हैं जो निम्न प्रकार हैं:--

गाथा-सिरिवीरसेणसीसे जिणसेणो स्थलसञ्चित्रणाणी।
सिरिपउमणादिपच्छा चडसंगसमुद्धरणधीरो ॥ ३०॥
भावार्थ-श्रीवीरसेनके शिष्य श्रीजिनसेन सकल शास्त्रोंके
ज्ञाता और श्रीपद्मनंदिके पीछे चारों संत्रोंकी रक्षामें घीर हुए ॥३०॥

गाया-तस्तय सीसी गुणवें, गुणैमहीं दिव्यणीण परिपुणी। पन्स्वीववास मिडिंग महोतवो मांविलिंगो य ॥ ३१॥

भावार्थ-उनके शिष्य गुणवान श्रीगुणभंदंत्री हुए जी दिन्य ज्ञानसे परिपूर्ण, पक्षोपवासके कर्ता, महातपी और भावर्लिगी थे ॥३१॥ गाथा-तेण पुणावि य मुर्च णेऊणं मुणिस्स विणयसेणस्स । सिदंतं घोषित्ता सर्व गर्व सम्मलेवस्स ॥३२॥

भावार्थ-इन्होंने श्री विनकसेन मुनिको सिद्धांत शास्त्रोंका उपदेशदिया। आप स्वर्गस्रोक गए।

गाथा-आसी कुमारसेणो णदियङे विणयसेण दिरकयओ । सण्णास भंजणेण ये अगहिय पुण दिरकओ जाओ ॥३ इत

भावार्थ-विनयसेनका शिष्य कुमारसेन नदीयह प्राममें हुआ उसने सन्यास या समाधिमरणको भंग किया फिरसे दीक्षा दी सो ग्रहण न की ॥ ३३॥

गाथा-परिवज्जिकण पिच्छं चमरं णोऊण मोहकलिदेण । उम्मेग्गं संकलियं वागड़ विसप्सु सब्वेसु ॥३४॥

भावार्थ-उसने मोरकी पी. छी छोड़ कर चमरीकी पीछी अएण की तथा मोहके वरामें होकर सर्व ही बागड़ देशमें प्राचीन मार्गसे रहित उन्मार्गकी प्रवृत्ति की ।

गाथा-इच्छीणं पुण दिक्खा खुछय लोयस्स वीर चीरयत्तं । कक्कसकेसमाहणं छहं च गुणहरं णाम ॥ ३५ ॥

भावार्थ-कीको पुनः दीक्षा, शुक्ककोंको बीरचर्या, चम-रीके कर्कम केशोंका प्रहण बताया व छठे गुणस्थानका विपरीत स्वरूप कहा ॥ १५॥ गाथा-आयम सच्छ पुरार्ण पायन्छित्तं च अण्णहा किंपि । विरक्ता मिन्छत्तं पविष्टियं मृद् लोएसु ॥ ३६ ॥

भावार्थ-आगम शास्त्र पुराण व प्रायश्चित्तको और प्रकार कहा । इस तरह मूढ़ लोगोंमें मिल्थ्या प्रवृत्ति चलाई ॥ ३६ ॥ गाथा-सा सवण संघवन्हों कुमारसेणों हु समयमिन्छत्तो । चत्तोवसमा रूथा कड़ों संघं परुविदि ॥ ३७ ॥

भावार्थ-सो मुनि संघसे बाहर कुमारसेनने आगममें मिथ्यात व उपदामभावरहित रौद्र होकर काष्ठासंघकी प्रवृत्ति की ॥३७॥ गाथा—सत्तवए तेवण्णे विक्रमरायस्स मरण पत्तस्स । . णंदियडे वरगामे कहो संघो मुणेयव्वे ॥ ३८॥

भावार्थ-विक्रमराजाकी सृत्युके ७९३ वर्ष बाद नंदीतट ग्राममें काष्टसंघ हुआ ऐसा जानना चाहिये।

बागड़ देशमें काष्टसंबकी प्रवृत्ति अधिक है और बागड़की तीन जातियां अर्थात् नागदा, नरिमंहपुरा और हुनड़ काष्टसंबके नामसे बोली जाती हैं। हुनड़ोंमें जो मूलसंबी हैं वे बहुत थोड़े हैं। बागड़ देशमें नंदीतट कोई प्राम अन नहीं है परन्तु मालुम होता है कि नंदिपड़का अपभ्रश नागहूद हुआ और वह कालान्तरमें नागदा हुआ। ८४ जातियोंके सिलसिलेमें ५४ वीं जाति नागदृह (नागदा) है। जो लोग नंदीतटके निवासी थे वह नागदा जाति हुई तथा इसी मेवाड़ वागड़में नरिसंहपुर पट्टन है वहांके निवासी नरसींहपुरा जाति कहलाई। शेष जो लोग कुमारसेनके शिष्य हुए वे हुमड़ कहलाए। कालांतरमें कोई मूलसंघको मानने लगे। काण्डासंघकी उत्पत्ति लोहाचार्यजीसे भी कही जाती है। ऐसा

मालुम होता है कि अभोहेक अप्रवाशोंको नेनी करते हुए जो संघ स्थापित किया वह उनके समयमें काष्ठासंघ कहलाया। इचर वागड़ मेवाइदेशमें कुमारसेनने मूलसंघसे कुछ अनमिलती प्रवृत्ति चलाई इससे यह भी काष्ठासंघ कहलाया।

व्वेताम्बरी छोगोंमें 'हुवल वार्णकस्य आसीसो ' नामकी एक प्रस्तक है उसमें हुमडोंकी उत्पत्तिमें यह लेख है कि-माड़वगड़ देश मालवामें एक भट्टारक विजयसेनसृरि थे उन्होंने अपने शिष्य धनेश्वरसूरिको अपनी बृद्धावस्था जान आचार्यपद दिया। एक दिन घनेश्वरसूरि सभाको व्याख्यान दे रहे थे, तब उनके गुरु आए। क्रथा-रसमें लीन होनेके कारण गुरूको आया न जान किसीने विनय न की जिससे विजयसेनका चित्त खेदिन हुआ सो एक दिन धनेश्वरको बाहर खाना कर दिया । धनेश्वरसूरी सिद्धपूर पाटन पहुंचे वहां चमत्कार दिखा कर भूपतिर्मिह आदि १८००० क्षत्रियोंको सेत्रुं जामें ले जाकर संवत ८२० में श्रावक बनाये और उस जातिकी नाम हुंबल रक्खा इस अहंकारसे कि मैंने अपने उपदेशासे नैनी किया। यह नाम निगडकर हमड हो गया। यह यथन इस कारण ठीक नहीं जचता है कि विजयसेन नाम श्वेताम्बर आचार्यका न होकर दिगम्बर आचार्यका होना चाहिये क्योंकि सेनगण दिगम्बरियोंमें है। यह विजयसेन नहीं किन्तू विनयसेन हैं, जिनके शिष्य कुपारसेनने हुमड़ ज्ञाति स्थापित की ।

सं० ८२० व ७८३ करीत्र २ मिळते हुए हैं। घनेश्वरसुरि निड़ालसेनके शिष्य नहीं हुए किन्तु यह बद्धभीपुरमें हुए, बहाँ शिलादित्य राजाकी प्रेरणासे सेत्रुंजय माहातम्य रचा है तथा इनका काल भी भिन्न २ है। इस ह्मड नातिका मुख्य स्थान बागड देशमें होनेसे तथा वहाँ उस नातिके अधिक दिगम्बराम्नायी प्राप्त होनेसे यह बात अधिकतर ध्यानमें नमती है कि कुमारसेनने ह्मड़ ज्ञातिकी स्थापना की हो। ह्मड़ नातिकी स्थापनाके सम्बन्धमें इतना ही छिखकर यह कहना पड़ता है कि यह नाति भी बहुत उच और प्रवीण हुई है। इस ह्मड़ नातिके अंदर २० गोत्र कहे नाते हैं परन्तु १८ के नाम प्रचलित हैं वह इस प्रकार हैं—

#### हमडके १८ गोत्र।

१ खेरजु	७ मद्रेश्वर	१३ सोमेश्वर
२ कमलेश्वर	८ गंगेश्वर	१४ राजीवानो
२ काकडेश्वर	९ विश्वेश्वर	१५ लिलतेश्वर
४ उत्तरेश्वर	१० संखेश्वर	१६ कासवेश्वर
५ मंत्रेखर	१ <b>१</b> आंबेधर	१७ बुद्धेश्वर
६ भीमेश्वर	१२ चाचनेश्वर	१८ संबेधर

ये नाम कैसे प्रसिद्ध हुए इसका हमारे पास कोई इतिहास नहीं है।

हूमड़ जातिमें दो भेद पाए जाते हैं - एक बीसा हूमड, दूसरे दसा हुमड । ये दो भिन्न भेद कैसे हुए इसका भी कोई विश्वास योग्य इतिहास नहीं मिल्रता है । परंतु यह दोनोंही भेदके लोग बहुत अधिक संख्यामें मिल्रते हैं, कहीं २ बीसोंसे दसा हुमड बहुत ज्यादा हैं। तथा दोनोंही भेदके लोगोंके बनवाए हुए व प्रतिष्ठा कराए हुए जिन मंदिर पाए जाते हैं व दोनोंही समान भावसे श्रीजिन प्रतिबि-म्बोंकी प्रछाल व पूजन करते हैं। इस सम्बन्धमें एक दूसरेसे कोई घृणा नहीं है। इन दोनों मेदोंमें खानपान मी सर्व तरहसे होता है। फर्क केवल परस्पर लग्न न होनेका है।

बड़ीधामें वाड़ी मुह्हेके दिगम्बर जैन मंदिरके प्रतिबिम्बोंसे पता लगता है कि संवत १६०४में काष्टासंबी भट्टारक विद्याभूषणके उपदेशसे हुंबड़ ज्ञातीय अनंत्रमतीन श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिष्ठा कराई । लेख यह है—

"सं० १६०४ वर्षे वैद्यास वदी ११ शुक्ते काष्ट्रासंघे नंदीतट गच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री विद्यालकीर्ति तत्यहे भट्टारक श्री विद्यस्त तत्प्रहे भ० श्री विद्याभूषणेन प्रतिष्ठितं—हूब्रड ज्ञातीय ग्रहीत दीक्षा बाई अनंतमती नित्यं प्रणमति।

ब्दूसरे भी इसी मंदिरकी एक प्रतिमाके छेखझे काष्टासंबी हुंबड़ ज्ञातिका पता छगता है। छेल यह है:--

" सं ० १६८६ वर्षे चैत्र वदी ३ भीमे भ० श्री रह्मभूषण भ० जयकीर्ति हूंबङ ज्ञातीय....पार्श्वनाथं प्रणमित '' .

इस लेखके यह भट्टारक काष्टासंघी हैं इसके प्रमाणमें एक इसी मंदिरकी दूसरी प्रतिमाका लेख है—

" भी काष्टाचंधे सं० १६८६...भ०...भूषण भ० जयकीर्ति नरसिंहपुरा कातीय... 2

इस लेखसे नरसिंहपुरा जातिका काष्ठासंघी होना भी सिद्ध होता है।

नर्रातिहपुरा जातिके काष्टासंघी होनेके प्रमाणमें इसी ब्रंदिरकी एक और प्रतिमाका यह लेख हैं—

" संवत १६५८ मा॰ सु॰ ५ दि० भी काइस्वेचे या० श्री विस्वभूषण गुरूपदेशात् नर्राधेदपुरा हातीय मालण देखा मेनि सा सि-

हुमड ज्ञातिका मुख्य केन्द्रस्थान परताबगढ़ राज्य है, उसमें इस नातिके बहुत प्रतिष्ठित दिशान आदि हो प्रताबगढके गए हैं व अब भी कई उच्च राज्य कम्मीवारी हमड । हैं । परताबगढ़ शहरसे ८ मील **देवगढ़** एक पुरानी बस्ती है। इसको बीकाजी महाराजने सं० १६१० में बसाया था। कई पीढ़ियोंतक यह बड़ाभारी नगर रहा था जिसका प्रमाण यह है कि यहाँ अमृतसागर, केसरविलास, परतापवावड़ी आ-दि कई मनोहर वापिकाएं हैं व पुराने मकान है। यहाँ दिगम्बर जैनियोंका एक बडा आलीशान मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा सं० १७७४ में हुई थी उस समय हूमड़ोंके यहां ८०० घर थे। इस मंदिरके मूलनायक श्री मिलिनाथ स्वामी है। मंदिरके प्रतिप्ठाकारक वर्षा-वत रिषभदासके पुत्र वर्द्धमानजी हूमड़ हुए है। यहाँ एक शिलालेख है उससे पता लगता हैं कि मूलतंबी भद्दारक रत्वचंद्रके उपदेशसे हूमड़ ज्ञातीय मंत्रेश्वर गोत्रधारी संववी वर्षावतके पुत्र वर्द्धमान आदिकोंने प्रतिष्ठा कराई । हमारे चरित्रनायकका जन्म जिस मंत्रे-भर गोत्रमें हुआ है उसीमें यह वर्षावतनी भी थे।

#### सारांश नकल लेख।

"ऊं. स्वस्ति.. विक्रमादित्व समयातीत सं० १७७४ वर्षे शाके १६३९ प्रवर्तमाने माह सुदी १३ रवि श्री देवगढ़ नगरे महाराजा- विराज महारावत श्री पृथवीसिंहंजी विजयी राज्ये कुंवर श्री पहाइसिंघ विराजमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुंद० म० श्रीरक्षचंद्र त० म० श्री हर्षचंद त० म० श्रीशुमचंद्र त० म० श्री शमरचंद्र त० म० श्री रक्षचंद्र गुरूपदेशात् श्रीमत् हूंबड इतिय मंत्रीश्वर गोचे

संघवी बर्षावत मार्या नानी रुक्ष्मणी तथोः पुत्र सं० वर्द्धमान भाता उदैभाण साह इंदर खेमजीसा चंद्रमानजी गोविंदजी वस्त्रमबी, श्रो मल्लिनाथप्रासाद प्रतिष्ठा महामहोत्सवैः सह कराविता।

वर्द्धमाननीके वंशमें किशननी अबसे २९ वर्ष पहले हो गए हैं उनकेदो महल अब भी यहाँ मौजूद हैं एकमें राज्यका डॉक्टर रहता है।

इस बड़े मंदिरजीमें एक वेदी श्री आदिनाथस्वामीकी हैं इसकी प्रतिष्ठा हूंबड ज्ञातीय अगस्त्य गोत्रे पाड़लिया घारी शाहजी रघुनाथ-जीने सं० १८३८में कराई थी उस समय यहाँ सामंतर्सिहजीका राज्य था। इनके वंशमें शाह हीरालाल जागीरदार अब भी मौजूद हैं। इसी-बड़े मंदिरजीमें एक सहस्रकूट कैत्यालय है जिसकी प्रतिष्ठा पाड़लिया गोत्र घारी फौजके कामदार राघोजी वरक्सीने कराई थी। इनके वंशमें अब रामलाल फूलजंद बम्बईमें एक घनिक व प्रतिष्ठित ज्यापारी है। देवगढ़में हुमड़ जैनियोंका इतना जोर था कि राज्यकी ओरसे यह आज्ञा हो गई थी "कि दिगम्बरियोंके १० दिन दशलाक्षणी व क्वेताम्बरियोंके ८ दिन पर्यूसन व सालमें २४ चौदस, २४ आठम व वर्षके पहले दीतवारके दीन कोई पशुघात न करे, न मदिरा बेची जाय।" इस भावार्यका शिला लेख सं० १७७४ वैसास छुदी १३ का श्रीपृथ्वीसिंहजी महाराजका देवगढ़के लास चौक बानारमें अब भी लगा हुआ है।

अब यहाँ दिगम्बर हुमडोंके केवल ९ घर रह गए हैं क्योंकि अब इसकी क्सती उजाड़ है। एक ग्रामके समान है। मनुष्य संख्या २० है। मुखिया भाई कानजी कून्या, मगनलाल गांधी, गेबीलाल दोसी और बर्द्धमान खापरा है। परताबगढ़ शहरमें ८५०० कुल वस्ती है । जिसमें १५०० जैनी हैं इनमें १००० दिग०, ३०० श्वे०, और २०० स्थानक-वासी हैं । इन दिगम्बरियों में थोडेसे नरिसंहपुरा जातिके हैं जिनका १ जूदा मंदिर है शेष सर्व हुमड़ हैं। इनके ३ मंदिर बड़े २ आली-शान और सुन्दर हैं । पाइलिया गोत्रधारी संवत् १७००के अनुमान जीवराजजी कामदार बड़े प्रसिद्ध हुए उनके बाद क्रमसे बर्दुवानजी, सूरजी, लानजी, कपूरजी, शिवजी, नवलचंदजी, जोधकरणजी प्रधान पदधारी हुए उनके पुत्र कानजी परतावगढ़ राज्यकी ओरसे जोधपुरमें वकील हैं । जोधकरणजीके बड़े भाई जोधराजजी भी प्रधान हुए, उनके पोते एक मुन्नालाल है जो वर्तमान महाराज कुंवरके प्राइवेट सेकेटरी हैं । दूसरे पन्नालालजी है जो मंगरा जिलेमें हाकिम रह चुके हैं ।

इसी गोत्रमें सखारामजी प्रधान हुए हैं इनकी सन्तान शाहजी बम्पालाल हैं जो जातिमें मुखिया व कोंसिलमें काम करते हैं। इसी गोत्रमें लालजी प्रधान हुए हैं उनके वंशमें शाहजी रत्नलाल अब मौजूद हैं यह गोम्मटसार समयसार आदि जैन शास्त्रोंके अच्छे मरमी हैं।

हूमड़ ज्ञातिकी तलाटी अड़कमें शाह जड़ावचंदजी प्रधान हुए हैं: इन्हींके वंशमें पंडित किशनलाल एक अच्छे जैन विद्वान थे जो हाल-हीमें स्वर्ग पधारे हैं। बंडी अड़कमें शाहजी शंकरलालनी प्रधान होगए हैं जिनके वंशमें पन्नालालजी आदि राज्यमें हेडकुर्क हैं।

श्री गिरनारजी तीर्थमें दिगम्बर जैनियोंके प्रभावको विस्तारनेवाले बड़ी कस्तूरचंदजी हूमड़ यहीं हो गए हैं। यह धनाडच, धर्मात्मा व शास्त्रोंके ज्ञाता भी थे। धर्मसे अत्यन्त प्रेम करते थे। प्रसिद्ध नेन विद्वान भागचंदजीकी संगति व बैय्यावृत्तिसे आपको बहुत लाभ होता था। इनके वंशमें बंडी मन्नालाल और हीरालाल विद्यमान है।

सं० १९१२ में सेठ छाछजी बंडीके खानदानके छोग सेठ कान्तूरचंदजी हीराछाछजी आदिने गिरनार तीर्थके मंदिरोंका जीणी-द्वार कराया तथा एक नवीन मंदिरकी स्थापनाकर उसकी प्रतिष्ठा सं० १९१५ में कराई।

इस समय परतावगड़में वीयावाला, रतनलालजी जुवा और माह कस्तूरचंदजी तलाटी हूमडोंमें मुखिया हैं।

हूमड़ जातिके लोक बागड़से निकलकर कुछ मालवामें व कुछ बम्बई, शोलापुर और गुजरातमें आकर बसे हैं।

शौलापुरके हूमड़ोंने ऐश्वर्यमें विशेष उन्नति की है। बहाँके प्रसिद्ध सेठ हरीभाई देवकरणने श्री मांगी-

सोलापुरमें हूमड़ोंका तुंगी, सम्मेद शिखर, पालीताना आदि तींथीं प्रभाव। पर मंदिर जीणीद्धार व धर्मशाला आदिमें

बहुत द्रव्य खर्च किया है तथा प्रत्येक धर्म-कार्यमें दानार्थ अप्रगामी रहते हैं। इनके वंशके सेठ वालबंद, हीरा-चंद और फूरुचंद तीनों भाई उदारचित्त हैं। इसी तरहं सेठ रावनी नानचंद, सेठ हीराचंद अमीचंद, सेठ सखाराम वं हीराचंद नेमचंद, सेठ नाथा रंगनी गांधी है। इन्होंने भी श्री गनपंथा, तारंगा, गिरनार, पावागड़ आदि तीथों पर श्री जिन मंदिर निर्मापण आदिमें बहुत द्रव्य खर्च किया है। सेठ हीराचंद नेमचंद विद्वान और शास्त्रके मरमी तथा जैन नातिके उत्थानमें मुख्य माग लेनेवाले हैं। सेठ नाथा रंगनी विद्यादान व शास्त्र प्रवारमें अति प्रेमी हैं। आपके वंशके सेठ गंगाराम, रामचंद्रजी आदिने शोलापुरमें एक दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्थापित किया है। सर्व इ्मड़ोंकी ओरसे शोलापुरमें चतुर्विध दानशाला अनुमान ४००००) के व्याजसे व ५००००) के व्याजसे ऐलक पन्नालाल दि० जैन पाठशाला है। श्राविकाशाला भी है निसकी सम्हाल श्रीमती कंकुबाई सुपुत्री सेट हीराचंद नेमचंद करती है आपको धार्मिक गंथोंका अच्छा मर्म है।

## शोलापुरके सेठोंने सन् १८९५ तक कहाँ२ प्रतिष्ठा कराई उसका वर्णन ।

	सिद्धक्षेत्र	साल	प्रतिष्ठा करानेवालोंके नाम
1	सम्मदश्चित्रर	9936	पदमसी निहालचंद तथा नानचंद खेमचंद
२	चंपापुरी	१९३३	मोतीचंद भेगचंद तथा जोतीचंद नेमचंद।
æ	पावापुरी	१९५०	रामचंद सांकला।
٧	गिरनार	१९२६	खेमचंद उगरचंद, पदमशी निहालचंद
			तथा नेमचंद निहालचंद।
۹	पालीताना	१९५१	इरीभाई देवकरण तथा मोतीचंद परमचंद।
Ę	मांगीतुंगी	1998	पानःचंद जोतीचंद तथा इरीमाई देवकरण।
•	गजपंथ 🕐	***	वस्ता खुशास्त्र।
۷	तारंगा	१९२३	हरिचंद, मोतीचंद, अभेचंद, जोतीचंद परमचंद।
\$	<b>कुंयलीगी</b> र	1980	इरिभाई देवकरण, पदमसी निहालचंद ।
•	<b>चिद्धवरकूट</b>	1949	मलुकचंद गणेश।
1	पाबागह	15×3,	गौतमचंद नेमचंद ।

फलटनके दूगडों में सेठ हीराचंद अमुलक एक वैरागी धर्मज्ञाता, श्रद्धालु महात्मा हो गए हैं जिनके रचे हुए फलटनमें हूमडोंकी मजनोंका बहुत प्रचार हैं। इसी फलटनके निवासी महिमा। हुमड़ जातिमें उत्पन्न बाल ब्रह्मचारी बाबा दुलीचंदनी हैं जिनकी अब १०० वर्षकी आमु है जिन्होंने आजन्म जिनवाणीकी सेवा की है। जैपुरके तेरापंथी बड़े मंदिरमें एक बहुत बड़ा दर्शनीय सरस्वती मंडार एक्ज किया है शिहतसे प्रंथोंकी विद्वानोंसे भाषा कराई है व अपने हाथसे नकल की है। आप दिनभर अब भी शास्त्रोंको व किसी रचनाको लिखा ही करते हैं। बहुतसे मंदिरोंकी प्रतिष्ठा कराई हैं। आप मंत्रशास्त्रके भी मरमी हैं। गुजरातमें दूमडोंका अधिक जोर ईडर तथा सुरतमें है। बागड़में वांसवाडाके रायबहादुर सेठ चंपालाल विजयचंदजी प्रसिद्ध, राज्यमान्य और धनाढ़य हैं।

बागड़ देशवार्छे हुमड़ें भी बहुत प्रसिद्ध हो गए हैं। श्री
धुलेब केशरियाजीमें प्रायः बहुतसी दि॰
बागड देशमें हुमड़। जैन प्रतिमाओं के प्रतिष्ठाकारक ये लोग हुए
हैं। श्री ऋषभदेवके बड़े मंदिरजीके चारों
ओर एक बड़ा भारी ऊंचा कंग्नेदार कोट है उसकी सागवाड़ा
निवासी हुमड़ ज्ञातीय कमलेश्वर गोत्रीय दि॰ जैनी सेट घनजी
करणजीने संवत १८६६में बनवाया है ऐसा वहाँपरके शिला लेखसे
प्रगट है (देखो नकल शिला लेख दि॰ जैन डाइरेक्टरी लपी सन्
१९१४ सफा ४७६)।

नागड़ देशके एक दूसरे कमलेश्वर गोत्रीय हूमड़ द्वारा संकत

१७२ इकी प्रतिष्ठित प्रतिमा श्री सेश्रुंजय पाछीतानाके उस दिगंबर जैन छोटे मंदिरमें है जो पहाडपर है व जिसको अब श्वेताम्बरियोंने अपने कबजेमें कर छिया है उसके शिला लेखकी नकल यह है—

यह महारक ईंडर गादीके मालुम होते हैं। ईंडर गादीकें भट्टा-रकोंकी नामावली द्वितीय अध्यायमें दी हैं उसके अनुसार पद्मनंदीसे क्षेमकीर्ति तक तीनों नाम मिलते हैं। सकलकीर्तिके पीछे रामकीर्ति तक नाम इस लेखमें नहीं हैं। केशरियानी या ऋषमदेवनीका नो मंदिर खुलेव ज़िला उदयपुरमें है उसमें बड़े मंदिरके चारों ओर जो दालानोंमें वेदियाँ हैं उनमें दिगम्बर जैन मूर्तियां महारकों द्वारा प्रतिष्ठित हैं—इनके कुछ संवत व भट्टारकके नाम इस भांति हैं—

> सं॰ प्रतिष्ठाकारक भट्टारक सं० प्रतिष्ठाकारक भट्टारक १७४६ क्षेमकीर्ति १७२४ यशकीर्ति १७७२ देवेन्द्रकीर्ति १७६४ त्रिमुवनकीर्ति १७५२ सुरेन्द्रकीर्ति

१७५४ - पुरेन्द्रकीर्ति - यह प्रतिमा श्री ऋषभदेवकी स्थाम वर्ष है। इस पर जो लेख है उससे प्रगट है कि धुलेवके पुरेन्द्रकीर्ति महारक द्वारा हूमड ज्ञातीय सेठ कानजीकी मार्थ्याने प्रतिष्ठा कराई। १७४६ - श्री शांतिनाथ स्वामीकी - इसमें जो लेख है उसमें मूलसंघ सरस्वती गच्छ सकलकिर्ति, देवेन्द्रकीर्ति, पट्टे श्री....कीर्तिद्वारा सूरतवासी हुमड ज्ञातीय विमलदास माणकजी नेमिदास आदिने प्रतिष्ठा कराई।

> इससे भी सुरतके हूमड़ोंकी धनाड़चता व धर्मज्ञता झलकती है। १७६४ सुमतिकीर्ति

१ ७६ ८-श्री वासुपुज्यस्वामीकी-इसकी प्रतिष्ठा भट्टारक नरेन्द्र-कीर्ति द्वारा महुआ वासी हुमड जातीय साह दादा नानजीने कराई।

गुनरात देशके श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्रपर एक चांद मूरजकी देहली है उसके भीतर जो शिला लेख है उससे विदित होता है. कि उसे दिगम्बर जैन हूमड़ ज्ञातीय गांधी नरपित आदिन बनवाया था। जौंगीद्वार कगया था। उस लेखकी नकल जो पढ़ी गई और जैनमित्र ता० २१ नव० १९०७ में लपी है सो यह हैं:—

" संयत १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्के श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे आचार्य्य कुन्दकुन्दाचार्य महारक श्री शुभचंद्र-स्तत्पट्टे भहारक श्री सुमतिकीतं गुरूपदेशत् ....हूम इति।य गांधी नरपति भार्यो....

# हूमड़ोंकी वस्ती।

हूमड़ोंकी क्ती अर्थात् मनुष्यसंख्या दिगम्बर जैन डाइरेक्टरी छपी सन् १९१४के अनुसार (देखो सका १४२०) इस भांति है।

वीसा इ	मड	बंगाल विहार	मध्य प्रदेश	राजपूताना और मालवा	गुजरात आर बम्बई आहाता	कुल
		×	×	<8€	१७०९	२,९५९
दसा हू	<b>म्ह</b>	3	8 द	१०६३९	७३९२	190000

### वीसा हमड़ोंकी विगत।

## राजपूताना व मालवामें ८४६ नीचे मांति है (देखो डाइरेक्टरी

#### सफा १३६१)—

ग्राम	संख्या	व्राम	संख्या	प्राम	संख्या
उसैन	و	झाल्सापाटन	९०	भींडर	€′
<b>उद्यपुर</b>	930	<b>ड</b> ंगरपुर	४६	मंदसौर	na
	* <del>*</del> * *	घरियाबाद	9,8	रतलाम	३३
कुरावड़	, ,		8	सङ्बर	80
खानपुर	٤	धार		सागवाड़ा	<sub>,</sub> २०
खेमरा	६५	धुलेव	४६	सेलाना	e
गलियाकोट	१२	, परता बगढ़	385		-
जावद्	37	भानपुर	77	কুন্ত	८४६
		0.			

#### गुजरात व बम्बईके आहातेमें १७०९ की विगत।

#### (देखो सका १३७९-१३८०)

माम	संख्या	म्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
आसु	હ	कुंभारगांव	৩	घोडेगांव	툊
इन्दापुर	२	कुरवानी	१३	विंचोछी	१३
ईंडर	90	कुरवली	80	जिती	88
उमरङ्	3	केडगांव	ξ	टेंमुरणी	8
अंतुर्णे	६०	कोराले	99	तिखंडी	१२
कडियाद्रा	90	खटाव	१८	दहीगांव	KB
करमाला	€ ४	खंडाङी	<	देवरगणूर	१३
कलंब	१६	घाडग्याची	गड़ी १	नातेपुते	211

· .	J JUNE JOW	VANA A	IN I'M WINE	ULINA COUNT
संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
٤	विवी	8	लोणन्द	१५
३ ह	्बुध	ş	वाखरी	77
8	भोरगांव	79	वाघोली	৩
१३		१६	विडणी	१०
8	भड	8	विहाल	9 9
ाडी ५	भोड्यांची व	वाडी ७	विनापुर	३२
8	म्हसवड	900	वीट	<b>१</b> १
९	मगराचे छिं	गांव २	वेलापुर	38
79	महीमानगढ	36	शिरसणें	٤
१०	<b>मांड</b> वे	? <	शोलापुर	4
ફ્	माडे	२५	सांगवी	٤
8	मालखांबी	9	सिद्धेश्वर क	ोली ४०
१७५	मेडद	१८	सिपुरे	ą
1 36	लंडल	१०	हातुरने	8 8
	लवंग	१३		. ,
, { 0	<u>જા</u> ામુર્ખે	80	16.181.114	
१३	<b>लिम्बझागर</b>	Ę	मीजाम	१७०९
	हिं से अ कर	६ विनी २६ नुभ ४ मोरगांव १३ मांनुर्डी १ भड ।डी ५ मोडधांची २ १ महामानगढ १ महीमानगढ १० मांडवे ६ माढे १ मालखांबी १७५ मेडद्	<ul> <li>६ बिनी</li> <li>३ मोरगांव</li> <li>१ भोत्रगांव</li> <li>१३ मांबुर्डी</li> <li>१६</li> <li>१ भड</li> <li>१ भड</li> <li>१ भड</li> <li>१ भोड्यांची वाडी</li> <li>१ महसवड</li> <li>१००</li> <li>मगराचे लिंबगांव</li> <li>१००</li> <li>मगराचे लिंबगांव</li> <li>१००</li> <li>मांडेव</li> <li>१००</li> <li>मांडेव</li> <li>१००</li> <li>मालखांबी</li> <li>१००</li> <li>१५० लवंग</li> <li>१३</li> <li>१६० लवंग</li> <li>१३</li> <li>१००</li> <l< td=""><td><ul> <li>६ बिनी ४ लोणन्द</li> <li>२६ बुव १ वाखरी</li> <li>४ मोरगांव २९ वाघोली</li> <li>१३ मांबुर्डी १६ विडणी</li> <li>१ भड ४ विहाल</li> <li>विहाल</li> <li></li></ul></td></l<></ul>	<ul> <li>६ बिनी ४ लोणन्द</li> <li>२६ बुव १ वाखरी</li> <li>४ मोरगांव २९ वाघोली</li> <li>१३ मांबुर्डी १६ विडणी</li> <li>१ भड ४ विहाल</li> <li>विहाल</li> <li></li></ul>

नीट-स्रतमें वीसा हमडकी ५० की संख्या है यह डाइरैकट-रीमें लिखनेका छूट गया है ।

### विगत दसा हमड़।

वंगालआहाता-सम्मेदशिलरमें ३ (सफा १३७२।

### मध्यप्रदेश । सफा १३२२

### बुरहानपुर २२, मूर्तिजापुर ७, सावरगांव ५-मीजान ४५ राजपृताना मालवा (सफा १३५९)

		Cattle also il	(///////	1 12 1	
ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
आंजनो	१६०	खोडन	.२५	जुहा <b>ना</b>	१२
आणोद	२७५	गहा	90	जेडाना	(
आंतरी	. ३५	गही	१५०	झाडोल	२०
आरोन	४९	गनोडा	8 ५	शबुआ	३९
उद्यपुर	80	गलियाकोट	२००	ठाकरणा	8 ५
ओगना	< 0	गांठोल	400	डडूका ं	१५५
ओवरी	909	गामडा	३.	<b>डुंगरपुर</b>	१५०
.क.चनार	<	गावडी	१०५	ढालवाडा	ξ
कनेजरा	१५०	गुवाडी	१५	तलवाडा	300
कुआं	90	गोरना	80	तेनपुर	y
कुल्यारी	77	गंगाधार	8	थांदला	(0
<b>कुना</b> ला	88	घाटागांव	२०	थोनावाणा	१५
कुशलगढ़	४२५	घाटोल	380	दडूका	१४०
कोकापुर	२५	चीतरी	६०	दीवड्।	१२
कोठडा	२३	छानी	200	देवगढ़	<b>२</b> ०
कोठरी	१०२	जवास	30	देवल	१६
स्वमरा	80	<b>जाडो</b> ल	9	घरियाबाद	200
साकड	96	जाबद	88	धुलेन (क्ला	•
खूंटा	38	नावरा	فع	नरवारी	१८६

	. ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	wara-awar a	***	** ***	00000
ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या .	ग्राम	संख्या
नवागांव	१५०	बावलवाडा	< 0	मोर	(
नाद्वेल	२५	बांसवाडा	90	रतलाम	९
नेनोर	१९	बीसाबेडा	३६	रागापुर	९ ०
नोगाम	<b>२००</b>	नीसीनाडा	90	रियावन	१४
प्रतानगढ्	2888	बोरी	200	रीचा	१६
पचलासाख	ई <b>१५</b> ३५०	भाउगह	91	रोयड़ा	3
.परतापुर 		भानदा	80	सनावदा	<b>ર</b> પ્ર
<b>परा</b> सिया	९५		20-		
पाड्वा	30	भोलूडा	200	समेना	२०
पाइसौंला	२८७	भूक्ष	90	सलुंमर	888
पाडा	१६	मंदसौर	608	सलोदा	५५
पारोदा	१५०	मनासा	२२	सागवाड़ा	४५०
पीठ	७६	माडोव	8.3	साछिमम्ह	35
-बनदानी	<	मावता	€ 0	सावला	२६९
बड़ोदिया	१६०	सुगाना	९६	सिंगोली	ą
बद्राणा	22	मुंबई	9	सिंघाना	१०
बरधा	80	मेतवाला	३०	सिडोदिया	६०
बागीदौरा	800	मेलखेडा	40	हनुनाउ	88
बादनगनाः	नी १	मोगडा	90		
(सिद्धक्षेत्र)		मोटा पचर	गसा १९	मीनान	१०६३९

# दसा हमड बम्बई आहाता।

(मका १३७६-७७-७८-७२)

	-			•	
प्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
अम्मोडा	83	उपाछे	8	कुरोली	व
अमनगर	१२५	उमदी	११	कुसुंग	११७
अ <b>क</b> लको व	£ {<	खोरान	२००	केम	२३
आकलून	(	कण्हेरगांव	3	कोथले	8
आगरखेड	3 ?	करंकमब	३४	कोरफल	8
आगोती	9	करनगी	28	कोराले	² , 8.
आनगर	90	करमाले	२९	कोरगांव	१३
आप	१३	करियाली	ξ	कोल्हापुर	ĸ
आलंद	११६	करोल	७०	कोलेगांव	?
आष्टी	५३	कलमन	88	खनीपुर	30
आष्टे 🕆	३	कलम	9	खरडा	७१
आसु	٩	कलंब	१०	खरेगांव	? 4.
इन्डी	99	कव्हे	\$8	खांडन	98
इंडर	570	किणी	<	खुंटे	१०
इन्दापुर	9	कुकेरी	79	खेरोछ	ير
उज्जनी	8	कुंयलगीरी	Ę	खोटाना मुब	ड़ा ३०
उनेहिया	१३५	कुमारगांव	٩	खंडाली	१३
उपलाई (धाव		कुमारी	3	गढोडा	<b>२</b> ०
भ (थोर	छी) ४	कुर्दुवाड़ी	३०	गणेगांव	१६
उपल्याटे	68	ক্তু	7 ?	गारोले	<b>&lt;0</b>
					-

•	· · · ·				V . 42
माम	संख्या	ग्राम	संख्या	श्राम	संख्या
गिर्वी	२८	नेउर	?	दारपाल	38
गुंजोटी	74	नेनले	3	दालवडी	8
गुणवड़े	१६	जेहर	१२	दाहोद	900
गुलंचे	<	टेंमुणीं	<	दुधनी	३०
गुलवर्गा	86		उपलाईं १ २	देराले	24
गोवली	१९	डोणने	१२	देलवाड	२ ५
घोषा	80	डोरलानी	90	धमनार	8
घोटी	٩	तडवेल	٩	<b>धारा</b> शिव	३६
चड़चण	१९	तडरगांव	€8	धारीसणा	80
चिक्रमण्णूर	8	तलदंगे	7	धूलिया	१०
चितरोड़ा	३०	तलोद	२५	न्हावी	7
चुंक्ली	3	तांदुलवाङ्गी	7	ननानपुर	<b>१</b> ५
चोपडे	800	तांचे	Ę	नरखेड	8
छाला	80	तारापुर	85	नखणे	ζ,
जबलगी	<b>१</b> ५	<b>तुल</b> शी	8	नरोन	
जबले (सोलापु	(¥) % =	तेभाई	१६	नलदुर्ग	2
जबले(निजामु	हीन)६	दगइ	٩	नागणपुर	9
नबले (अष्टी)	38	दहीगांव	88	नागणसुर	
नबलगी	१७	दहीगांव	३	नातेपुते	ę. 9
नांबुङी	२५	दहीटन	15	नांदगांव	8
<b>নি</b> गुर्डी	2	दहीवड़ी	\$ \$	नासन	१२
निती	Ę	दहेल	٩	निबगाम	<8
					-

-	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~		~~~~~~	1000000000	
ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
र्निवरगी	२६	विंपोडे	٤	भालेक	90
निबलग	३०	पुलुन	१३	भावनगर	90
निर्गुडी	3	पृता	7	भूम	१६
नेकाडा	४ ०	पणूर	१७	मुथार	8
नेरी	२	पं <i>ररपुर</i>	<b>८</b> २	भोंसे	y
नंदुर	34	फलरण	286	भंडाद कवरे	१८
प्रांतिन	8 ५	. <b>बडो</b> ळी	२०	<b>म्हस्</b> बड़	१९
पणदेर	<b>३</b> ୧	बंबई	२५०	म्हेसगांव :	٤
परिले	२१	बलम्ग	38	<b>म</b> उ	€0
परङ्ग	3 ্ ১	बाकरोल	900	मगरूल	३०
पलसदेव	३३	बार्सीटाउन	३६	मरोडे	٤
पांत्री	३	बारामती	હ.હ	मलवडी	२०
पापरी	, é	वालोसणा	80	मसले	8
पारोला	179	बावंड	<b>२</b> २	महूद	₹0
पालदी	3	नावी	80	मांडल	34
पालिम	. २५	बिबि	8	मांडवी	१५
<b>पिं</b> गली	80	बुध	83	मालेगांव	80
<b>पि</b> ठेवाड़ी	8	बेवले	१८	मुरुम	२३
<b>विवर</b> ज	ξ	नोराले	90	मेंद्रगी	98
पिपरे 	\$	बोरी	80	मोडिनंब	93
पींषलनेर षिंपलनेर	38	भडगांव	9	मोहाडी	१ ७
र <b>भ्यलनर</b>	३	भांडगांव	१३	मोहोल	40

ग्राम	संख्या	ध्राम	संख्या	प्राम	संख्या
मंगलंबेंड	१४	वड्गांव	38	<b>शिर</b> सर्णे	3
मंद्रुप	٤	वड्गांब (ख	एडे) ७	शिरसाले	६८
मुघोल	२	वडगांव (म	द्रुप) ३	शिरसाव	१५
येवती	9	वडाले	· ३२	शिराल	. 88
रखीयाल	३०	वडासण	39	शेटफल	
रणमोडबार्ड	8	वडून	१५	गेटफल	78
रणासण	80	वद्राड	३०	शेन्द्री	४०
<b>रा</b> नाके	8	वरग्वेडा	३१	शेन्दूरणी	34
रांदेल	१३	रवड	٩	गरी <b>चीवा</b> ई	ė
रानकुवा	80	वाखरी	9	शेलगांव	8
रोंपाले	3	वागद्री	? <	सोलापुर	3,00
लउल	89	वाघोली	? 0	सदानामुबाइ	
लच्छन	9	वागर	<	सरह	દ્
स्राकरोड़ा	६५	वांद्खेला	δ	सांडावी	<b>२२</b>
लावेशडी	و'	वालवड	7	सांगवी	8
<i>र</i> ासुर्णे	, 8	वालून	Ę	साद्डवेल	ę,
<b>लिंगगांव</b>	<b>२८</b>	विडणी	२५	सायहे	१२
ालनगाप स्टिंबलक		विजपुर	ষ্	सामोड़े	,
	२३	विनापुर	90	•	3
र्लिबुरे	9	वेळापुर	É	सायरा	٩
लंगेर	88	सिंदेवाड़ी	8	सासकल	3
स्रोणंद्	8	शिरवल	१२	सीतवाङ्	₹ ६

<b>*</b> ~~~~	***	~~~~	~~~~	~~~~~	AAAAAAAA
ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या	ग्राम	संख्या
सुरवडी	٩	सोनासण	११५	हिराली	Ę
सेलगांव	<b>3</b> 8	सोनगांव	٤	हिवले	\$ 8
सोनगांव	8	हरीश्वरपीपल	गांव ६६	होल	8
सोनगिर	१२१	हातकलंगडा	१३		
सोनारी	५२	हांनूर	e	मीज़ान	७३९२

नेट-६रतमे दसौँ हूमडकी संख्या १५० की है। यह भी डिरैक्टरीमें लिखना छूट गया है।

ट्यपुरसे २८ मीलपर एक भींडर नामका छोटासा देशी राज्य है। जिसकी अब वार्षिक उपन अनु-बेट माणेकचन्दर्जाका मान क्या २ छाम्बकी है। यद्यपि अब इसमें बंश-परिचय २००० वरोंकी बस्ती है परंतु १०० ब १५० वर्ष पहले इसमें ७ या ८०००

वरों की बस्ती थी जिनमें बौथाई बस्ती जैनियों की थी। अब भी बहाँ जैनियों के ४०० वर हैं, दिगम्बर जैन मंदिर तीन जब इवेतां म्बरीः मंदिर १ है। किसी समयमें यहाँ दिगम्बर जैन हुमडों के बहुतसे घर थे परंतु व्यापारादिके निमित्त परदेश जाने के कारण अब यहाँ केवल १० घर ही देखनेमें आते हैं।

हम जिस समयकी बात कहते हैं, उस समय भींडर नगर बहुत रमणीक था। जैनियोंकी प्रबटताके कारण वह एक अर्हि-सामई राज्य था। कहीं पर पशु वधका नाम भी नहीं सुन पड़ता था। मांसका किसीको दर्शन नहीं होता था। मद्य पीना तो दूर रहा

उसका कोई नाम भी नहीं छेता था। छोग सत्यवादी व नीति परायण थे। अपने पुण्य कर्मके उदयसे जो उपार्जन करते थे उसमें संतोष पाते द्वए तृष्त थे । तौ भी निरुधमी नहीं थे। निन मंदिरोंमें नरनारी धर्ममें छौछीन, विनयको प्रदर्शित करनेवाले तथा अर्हत, साधु और शास्त्रभक्तिमें तन्मय ये।श्री जिनेन्द्रके बिम्बका नित्य अभिषेक करके जलचन्द्रनादि अष्ट द्रव्यसे बहुत ही विनय और सार गर्भित अर्थ सुचक छन्दोंको पहते हुए पूजन होता हुआ दिखलाई पड़ता था । पूजनमें ऐसे छीन हो जाने हुए नरनारी मालूम पड़ते थे कि उनको और किसी बातकी मानो म्बबर ही नहीं है। पूजनके पीछे शास्त्र सभामें सर्व ही स्त्री पुरुष विनय सहित ैंबैठकर परीपकारी धर्मात्मा शास्त्रमरभी वक्ताके द्वारा जिनवाणीको सुनकर अपना हृद्य पवित्र करने थे। शास्त्रके पीछे मंदिरजीके बाहर पात्र मक्तिके निमित्त धर्मात्मा श्रावकोंको अपना वर पवित्र करनेके लिये आमंत्रण देते थे । और भक्ति पूर्वक जवन्य व मध्यम पात्रों-को दान करके आल्हाद भावसे परम पुण्य बांबते थे। कभी २ नग-रमें कोई मुनि महाराज व ऐलक, शुलक भी आ जाते थे उस समय शावक नन भोजनके समय द्वारांपक्षण करके प्रतिप्रहण करते थे। आहार एकके यहाँ होता था पर आनन्द सत्र मानते ये।

शास्त्रस्वाध्यायमें व मामायिक या जापमें दत्तचित्त श्रावक व श्राविकाएं दील पड़ती थीं। शामको मंदिरजीमें अनेक जन ध्यानमें लीन दिललाई देते थे। यद्यपि यह कोई न्यापारी मंडी नहीं थी तौ भी लोग जन धर्म कार्य व लानपानसे निवट कर बाजारमें जाते थे तो वहां एक मन हो न्यायपूर्वक लेन देन करते थे। शामको भंटा दो घंटे पहलेसे ही लोग घर पर आकर संध्याका भोजन कर लेते थे जिससे रात्रिको भोजन न करना पड़े।

और व्यापारों के साथ वहाँ अफीमका व्यापार भी होता था। जबसे चीन देशमें अफीमका ज्यादा व्यवहार होने छगा तबसे भारतको अफीम पेटा करके चीनको भेजना पड़ा। उस समय चीनको बहुत अफीम जाती थी। भींडरमें भी अफीमकी खेती होती थी और व्यापारी होग अफीम एकत्र कर बाहर भेजा करते थे।

विक्रम सं० १८४०के अनुमान वीसा हुमड़ ज्ञातिमें मंत्रेश्वर गोत्रधारी एक सावारण ज्यापारी गृहस्थ भींडरमें निवास' करते थे जिनका नाम शाह गुमानर्जा लालजी था। यह साधारण श्रावकके श्रामिक कृत्यों में मावधान, शरीरके दढ़, उद्योगी और विचारशील थे।

भींडरमें इनके मिवाय और भी कई बड़ २ अफीमके व्यापारी थे । शाह गुमानजी उनकी मंडलीमें जब जाके बैठने थे तब अफीमके • व्यापारकी बहुतसी बातें सुनते थे ।

> हिन्दुस्तानके प्रायः हर विभागसे अफीम आकर सूरतके बाजा-रोंमें जमा होता था। और वहाँसे जहाज़ींके

भींडरसे सूरत आनेका द्वारा चीन देशको जाया करता था। इससे कारण। गुमानजीके कानमें मूरत नगरके व्यापार क वहाँकी सुन्दरताकी भनक हरसमय पडकर

उनको यह लोग दिलाती थी कि स्र्तमें स्वयं जाकर अफीमका काम करना चाहिये। यहाँ पड़े २ साधारण उपन होती है जिससे: पूरा गृहस्थीका खर्च भी नहीं चलता है। वास्तवमें नो उद्योगी होते हैं वे द्रन्योपार्जनके योग्य मार्गीको सदा ही हुंहा करते हैं। और वे: कृत मनोरथ भी होते हैं। प्रकार्थी मनुष्य यदि पुण्यके मंद उद्यसे धनशाली न भी होने तौभी अपने खर्चके लायक धन अवस्य पैदा कर लेता है। वह कर्ज़ लेना बड़ा भारी फन्दा समझता है। आलसी मनुष्य सदा दुःखी रहता है। वह उद्योग करनेके बदलेमें बहुत दुःख व अन्यायसे अपना खर्च चलाकर अपने शरीरकी भी रक्षा करनेमें असमर्थ होता है। यदि उसके आश्रय कुटुम्ब हो तब तो बहुत ही कष्टमें आप भी रहता है और परिवारको भी रखता है।

साह गुमानजी पुरुषार्थी थे । इनका मन दिनपर दिन सूरत देखनंको ललचाने लगा। इन्होंने यह भी सुना था कि आनकल बहुतसे,इंग्रेज़ लोग सुरतमें आकर खूब न्यापार कर रहे हैं तथा उन्होंने अपनी सत्ता ऐसी जमाई है कि मुरतके किलेपर अंग्रेज़ोंका झंडा गड़ गया है तथा नाम मात्र मुगलोंका भी है। तथा नवाब अञ्चन जो सूरतके नवाब थे वे बिलकुल इंग्रेजोंके हाथकी कठ पुतली होकर रहे और उनके पीछे जो नवाब हफीजुद्दीन हैं वे मी उन्हींके हाथमें हैं । गुमाननी जिन्दे दिलके मनुष्य थे। वारवारकी रगड़से जैसे पत्थर चिस नाता है, वारवार पाठ करनेसे नैसे विद्यार्थीको पाठ पका हो जाता है, बार बार जाप करनेसे जैसे भाव निर्मल हो जाते हैं, ऐसे ही पुनः पुनः सूरत नगरकी चर्चाने गुमानजीके दिलको सूरत जानेके लिये पक्का ही कर दिया। एक दिन आप श्री जिन मंदिरजीसे आकर रात्रिको बैंठ २ विचारने छगे कि यहाँसे सुरतकी यात्रा हम अकेले कोरें कि कुट्रम्बके साथ करें। मनमें यही भाव आया कि परदेशमें अकेले जानेसे अपनी अर्घाङ्गिणीके साथ जानेमें बहुत आराम है। क्योंकि भोजनादिकी चिंतासे बुड्मिर घरहीके समान सर्व प्रकार आराम देनेवार्टी स्त्री है। पत्नी सहित पित नंगलमें भी हो तब भी वहाँ घरसाही आराम है और यदि पत्नी रहित पित व पित रहित पत्नी किसी ऊँचे बड़े भारी रत्न जड़ित महलमें भी रहते हों तो एक दूसरेके चित्तको साता नहीं। वास्तवमें पत्नी और पितके गुगलको ही गृहस्थ कहते हैं और यह एक दूसरेके सहा- यक हैं। पितका काम बाहर पूमकर द्व्य लाना है, पत्नीका काम आमदनीके भीतर घरका प्रबन्ध करना, सुन्दर स्वादिष्ट शरीरको लामकारी भोजन तयार करना, बस्त्रादिको संवारना, घरके खर्चका हिसाब ग्लना, घरकी सफाई रखना, बच्चोंको पालकर प्रवीण करना, पितको अपने मधुर मुन्कं हास्यमई व मिष्ट वाणीसे जैसे चंद्रमा कुमुद्रनीको प्रफुलित करे ऐसे रंजायमान करना, पितके गृही धर्मके आचरणके पालनमें सहायता देना, व समय पाकर शिल्पादि द्वारा कारीगरीकी चीज़ें बनाना, तथा कभी काम पड़े और घरका खर्च अधिक हो तो उनको विकवाकर यरका काम चलाना आदि है। सची पत्नी पितके जीवनको आदर्श रूप बनानेमें पूर्ण सहकारी होती है।

गुमानजीकी स्त्री पतित्रता थी-पतिसे अतिशय प्रेम करती थी-उनके मुखसे उनके मनकी बात समझकर उनके कहनेके पहले ही सर्व काम तय्यार कर देती थी, धमेमें भी सहायक थी, रसोई भी शुद्ध बनाती थी, कुरेबोंकी भी भक्त न थी। ऐसी स्त्रीके प्रसंगको गुमानजी क्षणभर छोड़ना नहीं चाहते थे। यद्यपि गुमानजीके चित्तमें एकदफे यह बात आई कि यहाँसे चौगुणा खर्च सूरत नगरमें है। कदाचित वहाँ हम आमदनी ज्यादा न कर सके तब हम तो क्षेने फाककर ही काट छेंगे प्रन्तु स्त्री होनेसे वहा भारी स्त्रच करना पहेगा तौभी आपने विकारा कि हमारी स्त्री बड़ी ही संतोषप्रिया

है। यदि हम सूखा खाएँगे तो उसे भी कोई इनकार न होगा। उहर-नेको मकान तो हमें रखना ही पड़ेगा इससे हर तरहं साथ है जाना ही अच्छा है। तीसरे साहजोने यह भी विचार किया कि हमें बैछ गाड़ी करके ही जाना है। इम दोनों एक गाड़ी कर छेंगे और घीरे २ रास्तेमें भगवानके मंदिरोंके द्दीन करते हुए मुरत पहुंच गायंगे।

ऐसा दृह संकल्पकर विक्रम संवत १८४० अर्थात् इ० सन् १७८३में गुमानजी सपत्नी सुरत नगरको प्रस्थान कर गए । अपने रहनेका मकान अपना ही था उसे अपने कुटुम्बियोंके सुपुर्द कर दिया। अब भी यह मकान भींडरमें मोजूद है और गुमानजीके ही कुट्रम्बीजन उसमें बास करते हैं।

थोड़े दिनोंमें आप सूरतमें आ पहुंचे और वहाँके श्री चंद्रप्रमुके

अना।

बड़े जिनमंदिरजीमें जो अब चंदावाडीधर्मशा-सेट माणेकचन्दके लाके पास है द्रीन करनेके लिये गए। भींडरमें पितामहका सूरत गुमाननी एक छोटेसे अफीमके ब्यापारी थे। इनकी सीधी आहत मूरतके किसी ज्यापारीसे

नहीं थी। आप दुर्शन करनेके बाद जाप देकर स्वाध्याय करने लगे। पासमें और भी श्रावक ज्ञास्त्र पढ़ रहे थे। उन्होंने इनको मेवाड़ देशका निवासी तथा धर्मात्मा और चतुर जान पूछा कि आपका कहाँ निवास है और कैसे आना हुआ ? गुमानजीने अपना सब हाल सरल मनसे कह दिया। वेश्रावक आजकल कैसे रूखे मनके न थे, परंतु वात्सल्य गुणके धारी थे । इनको एक आवक बड़े आदरसे अपने घर है गए और हर प्रकारसे खातिर की। गुमानजी अपने साथ अफीम मी लाए थे सो इनके सुपुर्द की । यह मी अफीमके

व्यापारी थे। मींडरकी ताजी अफीमको देखकर गुमानजीसे माद चुकाकर सबकी सब खरीद छी। गुमानजीको इस सौदेमें दुगनेसे ज्यादा लाभ हुआ।

उसी मंदिरजीके निकट एक छोटासा एक एकमंजला मकान खाली पड़ा था। उसीको भाड़े लेकर गुमानजी सपत्नी रहने लगे और बाज़ारमें अफीमका न्यापार करने लगे। अब यह भींडरसे स्वयं अफीम मंगाते थे और अच्छे भावोंसे बाज़ारमें बेचते थे।

अब ये दोनों बड़े मुखसे रहने लगे। मींडरमें जो खचकी तंगी रहती थी वह भी मिट गई। यह अपने निकटके कुटुम्बियोंको भी खर्चके लिये भींडर रुपया भेजने लगे और कुछ दान पुण्य भी करने लगे। पूर्वोपार्जित पुण्यका इतना तीत्र उद्य नहीं था जिससे लक्षपति आदि तो नहीं हुए पर वर्षमें कुछ दान पुण्य करनेके सिक्षय दोसी चारसों रुपये बचा भी लेते थे।

गुमानजीके दिन सूरतमें अपनी पतित्रता स्त्रीके साथ बड़े ही
आनन्दसं बीतने हो। स्रतमें इनको बहुत
साह गुमानजीको दिन रहनेके पीछे हीराचंद और वस्ततचंद
पुत्रोंका लाभ। दो पुत्ररत्नोंका लाभ हुआ जिनमें हीराचंद
बड़े और वस्ततचंद छोटे थे।

साह गुमानजी बड़े विचारशील थे और ब्रह्मचर्यका बहुत खयाल रखते थे। और उनका लग्न भी प्रौट अवस्थामें हुआ था, बाल्यावस्थामें नहीं। यद्यपि भींडरमें बालविवाहका रिवाज भी था पर वह धनाट्योंमें था। गुमानजी एक साधारण गृहस्थ थे इससे इनका विवाह युवावस्थामें हुआ था और उसीके एक दो वर्ष बाद ही यह भींडरसे सुरत आकर रहने लगे थे।

गुमानजीने सूरतमें जिस वरका आश्रय लिया था उसको छोड़ा नहीं । आपने और कोई वर भी नहीं बनवाया । उसी वरको उसके मालिकसे खरीद लिया और उसीमें आनन्दपूर्वक अपना जीवन विताया ।

साह गुमाननीका अपने पुत्रोंके सम्बन्धमें यह विचार था कि यह धर्मके श्रद्धावान हों और अभिषंक पूजन जप व स्वाध्यायमें सावधान हों, कामके योग्य हिसाब किताब व लिखना पहना कर मकें और व्यापारमें कुशल हो जावें, अतएव वरके पास श्री बड़े जिन मंदिरजीमें जो पंडित रहने थे उनके पास स्तुति, दर्शन, भक्तामर आदि पहवाते थे और दिनमें देशी पाठशालामें साधारण प्राथमिक शिक्षा हेने मेजते थे। जिस समयकी यह बात है उस समय प्राय-बालकोंको पढ़ानेका ऐसा ही कायदा था। धर्मका ज्ञान परोपकारार्थ देनेवाले कोई न कोई धर्मात्मा जिन मंदिरमें अवश्य तय्यार रहते थे। बहुतसे मंदिरोंमें पंडित या ब्रह्मचारी रहते थे जिनका पठन पाठन ही मुख्य काम होता था। हीराचंद बुद्धिके तीब, उत्साही और सुआ-चरण व आज्ञापालनमें दक्ष थे जब कि वखतचंदकी बुद्धि मंद थी।

थोड़े ही दिनोंमें जब हीराचंद हिसाब किताबमें पक्ते हो गए तब गुमानजी इनको अपने साथ व्यापार सिखानेके लिये बाज़ारमें ले जाने लगे। वास्तवमें व्यापार भी विना सिखाये व विना उसमें बुद्धि प्रवेश किये नहीं आता है। प्रायः मारवाड़ी लोग व्यापारमें कुशल इसी कारण होते हैं कि उनके पिता उन्हें लोटी उपरसे ही ज्यापार करनेकी रीतियां कताते रहते हैं, जो उनके मगज़में जम जाती हैं। यद्यपि उनमें यह दोष अवश्य होता है कि वे और ऊंची शिक्षा अपने पुत्रोंको देते ही नहीं। ज्यापारी शिक्षाके साथ साथ उनको दिनमें २ व ३ घेटे अच्छे शिक्षक द्वारा साहित्य, नीति व धर्मकी शिक्षा अवश्य दिलानी चाहिये। जहाँ तक देखा गया है जो बालक अपने १० व १५ वर्ष स्कूलकी संगतिमें वितातं हुए विश्व विद्यालयकी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेके छंत्रटमें लगजाते हैं वे फिर अपने मनको देशी ज्यापारकी ओर नहीं झुका सक्ते। फिर ज्यापारकी ओर झुकना उनके लियं कटिन हो जाता है यद्यपि असंमव नहीं है।

हीराचंद्का चित्त व्यापारमें छग गया और यह भी पिताकी मांति अफीमका व्यापार करने छगे। थोड़े हीराचंद्जीका स्वभाव दिनों बाद वखतचंद्र भी पिताके साथ व्यापार को जाने छगे पर इनका मन जैसे पढ़नेमें कम छगता था वैसे व्यापारमें भी न छगा। इनको बाजारकी मिठाई खाने व मेळे तमारो देखनेका अधिक शांक था जब कि हीराचंद अपने पिताकी भांति शुक्त ही विवेक बुद्धि थे। माता जो घरमें शुद्ध मोजन व मिठाई पक्तवान बनाती थी उसीको छेकर संतोषी रहते थे। मेछे ठेछेका भी शौंक न था। संवेरे शांम साधारण धर्म ध्यानमें चित्त छगाकर आनन्दित रहते थे।

गुमानजीको इस बातका अवस्य विधास था कि बाल्यावस्थामें विवाह करना बहुत हानिकारक होता है। जब तक प्रकृवीर्थ्य न हो तब तक विवाहका ख्याल भी पुत्रके दिलमें नहीं आना चाहिये और उसे वीर्य रक्षा और ब्रह्मचर्यका पूरा २ घ्यान रहना चाहिये। इसी कारण गुमानजी समय २ पर अपने पुत्रोंको समझाते रहते थे कि वीर्य रक्षाके बहुत बड़े लाभ हैं। युवावस्था तक इसको मले प्रकार स्थंभन करना चाहिये, किसी भी तरहं इसको खराब नहीं करना चाहिये। बहुतसे पिता अपने पुत्रोंको लज्जाके भयसे ब्रह्मचर्य-की रक्षाके उपायोंकी शिक्षा नहीं देते हैं इस कारण वे कुसंगतिमें पड़कर और हानि लाभसे अजान रहकर अपने ब्रह्मचर्यको बिगाड़ कर अपने मन और शारीरको निर्वल कर बैटते हैं और फिर उन्हींको बड़े होनेपर अपने पूर्व कुत्योंका पछतावा करना पड़ता है।

ज्ब हीराचंद २० वर्षसे ऊपर अवस्थाके होगए तब गुमानजी-न इनकी लग्न सुरत निवासी एक वीसा हुमड़

मौद अवस्थाम विवाह। न इनकी लग्न सुरत निवासी एक वीसा हूमड़ गृहस्थकी कन्यासे कर दी। इसका नाम विजलीबाई था। यह कन्या १२ वर्षकी

थी और यद्यिष लिखना पड़ना नहीं जानती थी तो भी घरके काम-काजमें बड़ी चतुर, सरलचित्त, सौम्यमृतिं, द्यावती और जिन्ध-मेमें श्रद्धालु थी। ऐसी स्त्री-रत्नको पाकर हीराचंद चित्तमें बहुत ही प्रसन्न हुए और दोनों अति प्रेमके साथ गृहीधर्म सेवने लगे।

सेठ गुमानजीकी स्त्री एक दिन कुछ बीमार होगई। सेठजी और

गुमानजी और उनकी पत्नीका मरण उनके प्रत्रोंने बहुत औषि की परन्तु आयु-कर्म रोष होनेका समय आजाने पर कोई उपचार कारगर नहीं हुआ। यद्यपि वह रोगग्रस्त थी पर होरासे नहीं चूकी थी।

अपने दिलमें अईत सिद्ध जपा करती थी और उसके पति व पुत्र

भी उसको धर्मकी बार्ते सुनाते रहते थे। निदान णमोकार मंत्र सुनते २ उसके प्राण परवेरू शरीरको त्यागकर अन्य गतिमें चलदिये।

सेट गुमाननी और उनके प्रत्नोंको ग्वासकर हीराचन्द्रजीको इस वियोगसे बहुत कछ हुआ। गुमानजीका जैसा प्रेम अपनी अर्घीगिणी से था उसीके प्रमाणमें उतना ही उन्हें वियोगका दुःस भी हुआ। वास्तवमें इस संसारके पदार्थ सर्व क्षणिक अवस्था वाले हैं। जो किसी अवस्थाके होने हुए हर्ष करेगा उसेही उस अवस्थाको बिगड़ जाने देखकर कछ व जोक होगा। जो ज्ञानी व निर्मोही साधुजन होते हैं वे किसीस माह नहीं करने अतएव उनको सांसारिक हर्ष और विषाद नहीं होता। यद्यपि गुमानजी शास्त्रके जाननेवाले थे पर विशेष वैराग्यवान न थे। इनको अपनी पत्नीके वियोगका ऐसा दुःख हुआ कि यह भी थोड़े ही दिनोंमें कुछ अस्वस्थ हो गए। और बहुत बीमारी न पाते हुए एक दिन बहुत स्वस्थतासे णमोकार मंत्र जपने हुए तथा श्री अरहन की प्रतिमाका घ्यान करते हुए शरीरको स्थागकर स्वर्ग प्रधोर।

विवाहके थोडे ही दिनोंके पीछे हीराचन्द्रको अपने माता
पिताका वियोग सहना पडा, परन्तु हीराचन्द्र
मातापिताके वियोग शास्त्रस्वाध्याय करतेथे इससे अपने मनको
का दुःख समझाकर अपने गृहकर्तन्यमें लग गए। शाह
गुमानजी हीराचन्द्रका विवाह तो कर पाये थे परन्तु वखतचन्द्रका
विवाह नहीं कर सकेथे। साह हीराचन्द्र बड़े बुद्धिमान थे और
अपने छोटे माईसे बहुत प्रेम रखते थे। कुछ काल पीछे हीराचन्द्रने
वस्ततचन्द्रकी लग्न करके अपने कर्त्तन्यको पूरा किया और दोनों

भाई एक ही घरमें प्रखसे शांति पूर्वक रहने छगे। यद्यपि हीराचं-दको छोटे भाईसे प्रेम था परन्तु बखतचन्द्रका मन अपने भाईका बाजार व जातिमें आदर देखकर ईर्षाभावसे भर आता था और इम कारण कभी २ स्वतंत्र होनेको मन चाहता था।

साह हीराचंद अपनी पत्नी विज्ञहीनाईके साथ अति प्रेमसे
रहते हुए। सं० १८९३ में एक कन्याका
साह हीराचंदजीको लाभ हुआ जिमका नाम हेमकोर (हेमकुमरी)
संतानको लाभ। रक्ता गया। यद्यपि इम युगलको यह इच्छा
थी कि प्रत्रका लाभ होगा क्योंकि प्रायः

सर्वसाधारणको पुत्रीकी अपेक्षा पुत्रकी प्राप्तिका अधिक प्रेम होता है। तौभी शाह हीराचंद्रको पुत्रीके लामसे किसी प्रकारकी उदासी नहीं हुई। सर्वस पहले सन्तानका लाभ होनंपर इनको व सर्व कुटुम्बियोंको बड़ा हर्ष हुआ। इन्होंने यथायोग्य उत्मव मनाया। श्री मंदिरजीमें पूजन कराई व यथायोग्य उत्मव मनाया। श्री मंदिरजीमें पूजन कराई व यथायोग्य दान धर्म किया। इस वर्ष सुरत नगरमें इतनी भारी अभि लगी कि आधा नगर भस्म होनंके साथ वह अग्नि साह हीराचंद्के मुहल्लेमें भी आई। खपाटिये चकलेके बहुतसे घर जल गए। साह हीराचंद्का वर भी भस्म हो गया। साह हीराचंद्ने अपने घर भस्म होनंका दुःख नहीं किया परन्तु बड़ा भारी दुःख जो साह हीराचंद व अन्य श्रावकोंको हुआ वह इस चंदाबाड़ीके निकटस्थ बड़े मंदिरमें अग्नि लगनेसे हुआ। श्री मंदिरजीमें अग्निकी लपकोंको जाते हुए देखकर साह हीराचंद, वखतचंदने अपने घरकी चिंता छोड़ तुर्त ही निकटके श्रावकोंको बुलाया और मंदिरके भीतरसे श्री जिन बिस्बोंकी रक्षा की। सर्व

प्रतिमार्श्नोंके मुरक्षित होवेषर मंदिरकी भीतें भस्म हो जानेपर भी श्राबकोंने संतोष माना और साह हीराचंद्रके साहसकी सराहना की, जिसने अग्रगामी होकर अपना खयाल छोड़ इस उपसर्गको निवारण किया। उस दिनसे साहजीने घीरे २ अपना मकान तो ठीक किया ही, पर श्री मंदिरजीके जीणोंद्धारकी बहुत बड़ी फिक की। चार वर्ष भीछं सं० १८९७में विजलीबाईको दूसरी सन्ततिका लाभ हुआ। इस समय जब विजलीबाईको गर्भ रहा तब साह हीराचंद्रके चितमें यह उमंग उठी कि अब तो शायद पुत्रकी प्राप्ति अवस्य होगी। परंतु इस वक्त भी साहजीको १ कन्यारत्नकी प्राप्ति ही हुई। साहजीने इसका नाम मंच्लाकोर (मंछाकुमरी) रक्तवा और पूर्वोपानित कर्मके उद्यसे जो लाभ हुआ उसीमें सन्तोष किया।

बिनलीबाई सन्तानकी रक्षा करनेमें बहुत चतुर थी। योग्य

खानपान करती थी ताकि उसके दूधमें कोई विजर्लाबाईकी विकार नहीं हो क्योंकि जो माता ऐसी वैसी संतान रक्षा। चीज़ें खाकर शरीरको विकारी व रोग प्रसित कर

लेती है उसके विकारी दूधसे बच्चेके शरीरमें बहुतसे रोग हो जाते हैं। बहुतसे बच्चे तो माताकी गोदमें ही कालके ग्रास हो जाते हैं। बिजलीबाईकी सावधानीसे न हेमकुंमरीके न मंच्छाके कोई भारी रोग हुआ जिससे माता पिताको चिन्ता हो। मंच्छा जब माताका दूध पान करती थी तब हेमकुमरी चार वर्षकी थी। इसका शरीर बहुत सुन्दर व गठा हुआ था। चिहरा गोलथा, चंचलनेत्र ये व मुख हंसता हुआ प्रफुलित कमलके समान था। जो कोई देखता उसका दिल उमझ आता और इसे गोदमें लेकर प्यार करता था।



सेठजीका जन्मगृह सुरतः

(देखो एष ९१)

इसकी बोली भी बड़ी ही मीठी भी। माताने इसको न तो कोई अपशब्द सिखाए थे और न मारना पीटना ही सिखाया था जैसे बहुधा करके माता पिता व कुटुम्बीनन छोटे २ बच्चोंको गाली देना व मारना पीटना सिखाते हैं। माता विजलीबाई हेमकुमरीका हाथ पकड़कर जिन मंदिरजीमें ले नाया करती थी और वहाँ पर कायदेसे हाथ जोड़ना व दंडकत करना सिखलाती थी व भगवानके २४ नाम बुलवाती थी। विजलीबाईने हेमकुमरीकी ऐसी अच्छी आदत ढलवाई थी कि वह नित्य प्रति समय पर ही भोजन करती थी और रात्रिके पहले ही:भोजनसे निश्चिन्त हो जाती थी। रात्रिको भोजन मांगती ही न थी। हां जल व टूघ लिया करती थी। सबेरे उठकर 'जयजय चंद्रप्रमुकी जय' ऐसा कहती थी।

विनलीनं जैसे हेमकुमरीके पालनेमें परिश्रम किया था बैसी ही मिहनत मंच्छाके भरणपोपणमें की । विनली अपनी कन्याको न कभी मारती थी न गाली देती थी और न कभी कोषभरे शब्द कहती व आकृति दिखाती थी । न कभी उसके मनमें यह खयाल आता था कि यह कन्या पर घर जानेवाली है, इसकी अच्छी तरह रक्षा क्यों करे जैसा बहुधा पुत्रमोही माताएँ स्वार्थ वश खयाल किया करती हैं और कन्याओंको सैकडों गालियाँ पुनाकर व मारकूटकर, रलाकर, पटककर, कोसकर, कुढ़कर अपना जला दिल ठंडा करती है और समयपर भोजनपान नहीं खिलाती हैं । बहुधा कन्याएं माता पिताकी बेगौरी और अनुस्साहरूप पालनसे शीघही कालका आस हो जाती हैं । साह हीराचंद दोनों प्रत्रियोंकी प्रकृक्षित

मृतियोंको देखकर बहुत आनन्दित होते थे और निरन्तर इस बातका उद्योग करते थे कि ये दोनों मुप्ति बनें, जिससे ये अपने पितके बरोंको दीसमान कर सकें और मेरे यशको उज्वल रक्सें।

साह हीराचंद व अन्य श्रावकोंने उस बड़े निनमंदिरनीके, जो मस्म हो गया था जीणीद्धार करनेका बहुत चंद्रमभुके मंदिरका ही शीघ प्रकथ किया, यहां तक कि संवत् १८९८ तक वह मंदिर फिरसे तय्यार हो जीर्णोद्धार । गया, तत्र मुहूर्त दिखाकर इसकी प्रतिष्ठा करानेकी मिती वैशाख सुदी १२ एंदन् १८९९ नियत की गई। देशदेश पत्र भेनकर संबको एकत्रित किया गया। भट्टारकोंकी आम्नायके भाणा पंडितने जो विद्याभूषण भट्टारकके शिप्य थे इस मंदिरकी प्रतिष्ठा विधिके अनुसार की । सुरतमें उस दिन जैन धर्म-की बड़ी प्रभावना हुई । सम्पूर्ण संघके मध्यमें साह हीराचंद अपनी दोनों पुत्रियोंके साथ जिनकी अवस्था क्रमसे ६ और २॥ वर्षकी थीं लिये दूए बहुत ही शोभंत थे और अन्य सज्जनोंको यह उत्साह होता था कि ये कन्याएं चिरंजीवित रहें तो हम हमारे पुत्रोंसे इनका सम्बन्ध करें । श्रीमंदिरजीकी प्रतिष्ठा होकर सर्व प्रतिमाएँ सविनय विराजमान की गई । भट्टारकोंकी आम्नायमें पद्मावती देवीके मस्तक पर पार्श्वनाथ स्वामीकी छोटी प्रतिबिम्ब हो ऐसी प्रतिमा निर्मापण-का रिवाज़ प्रचलित है उसीके अनुसार भाणा पंडितने एक मूर्ति मिर्मापण वराय उसकी प्रतिष्ठा की, जिसका हेख दूसरे अध्यायमें दिया गया है। इस समय मुरतमें जितने छोग बाहरसे आए य उनका मोजनादिने यथायोग्य सत्कार किया गया।

इस धर्मके कार्यमें यद्यपि साह हीराचंदने पंचायतीके साथ धनकी मदद बहुत नहीं दी थी तो भी अपनी उदारतासे अपनी राक्तिसे अधिक सहायता की थी, इतना ही नहीं इस कार्यके मुख्य प्रबन्धकर्ताओं में साह हीराचंद भी थे। इनके प्रबन्धमें निर्विद्यतया और विना किसी शिकायतके कार्यकी पृति देखकर लोग इनकी बुद्धि और धर्मवात्सल्यताकी बहुत सराहना करते थे।

साह हीराचंद्रजीकी जातिमें अति प्रशंसा होते देखकर वखतचंद्रका भन अप्रसन्न रहता था। इसके सिवाय
वखतचंद्रका पृथक वखतचंद्रकी प्रकृति भी हीराचंद्रने नहीं
हीना। मिलती थी। दूसरे इनकी पत्नी भी अपने
पतिको जुदा रहनेकी सम्मित दिया करती
थी क्योंकि वह दरदर्शिता और बदिसनाम काम लेका नहीं

थी क्योंकि वह दूरदर्शिता और बुद्धिमत्तासे काम लेना नहीं जानती थी। वावतचंदका मन प्रथक होनेको होता भी था पर जब वह बड़े भाईके वर्तावको अपनी ओर देखता था तब उसका मन तुर्त इस विचारको मिटा देता था। पर उसकी स्त्रीके प्रनः प्रनः प्रेरणा करने पर वावतचंदका चित्त स्थिर हो गया कि हम कल अवश्य २ अपने भाईसे जुदा हो जायगे। संबन् १९०० में या सन् १८४३ में कि जब सुरतमें सर्कार इंग्रेज द्वारा बिठाए हुए निमकके महसुलको प्रमाणसे अधिक समझकर प्रजाने हहताल की यी साह वावतचंदने एक दिन सबेरे जब साह ही राचंद श्री मंदिर बीसे निवटकर चरमें आए उदास मुल करके अपने मुँहसे शब्द व निकलते हुए भी बड़ी कठिनतासे ज्यों त्यों कर कह दाला कि मेरी इच्छा आजसे अलग ही रहकर भिन्न ही ज्यापार करनेकी है। अब तक तो मैं ज्यों

त्योंकर एक साथ रहा परंतु अब मुझको साथ रहना नहीं है इससे आप सर्व मालका विभाग कर देवैं।

साह हीराचंदको यह बात बज़के समान लगी। क्योंकि यह अपने छोटे भाईसे अति प्रेम करते थे और अपनी संतानसे इनकी अधिक खादिर करते थे व किसी प्रकारका कष्ट नहीं होने देते थे। दूसरे हीराचंदनीको अन तक किसी प्रजारका लाभ भी नहीं हुआ था, अतएव वह अपने भाईही को देखकर हर तरह सन्तोष. मानते थे।

हीराचंदजीने वखतचंदसे इस नादानीका कारण पूछा परन्तु कुछ उत्तर न पाकर परम्पर मेलके लाभ और भिन्नताके अलाभ भले प्रकार समझाए, पर जिसकी बुद्धिमें किमी प्रकारका हठ हो जाता है वह उसको नहीं छोड़ता। निदान जब वखतचंदकी समझमें कुछ भी नहीं आया तत्र हीराचंदने लाचार हो एथक होनेका प्रबन्ध किया। १५ दिनका समय लेकर सर्व हिमात्र तय्यार करके सर्व मालमता रुखा पैसा आवा आवा इस तरह बाँट दिया कि बाबतचंद और उमकी स्त्रीको इसमें पूरा २ सन्तोब हुआ। यद्यपि हीराचंदकी कमाई प्रायः उसीके ही परिश्रक्ती थी पर हीराचंदने अपना स्वार्थः कुछ न रख धर्म सम्बन्धको मध्यमें डाल कर पुरा २ न्याय कर दिया। विनलीबाईको भी इसमें किसी तरहकी नाराजी नहीं हुई। यद्यपि पृथक् होनेमें अवस्य उसको दुःख हुआ नयोंकि वह वखत-चंदकी बहुको बहुत चाहती थी और घरके कामकानमें उससे मदद भी बहुत मिलती थी। पुराना मकान साह हीराचंद्के ही अधिकारमें आया । वलतचंद दूसरे मकानमें रहने छगे ।

साह हीराचंदको पुत्र लामकी चिन्ता अवश्य रहा करती थी
सो धर्म और न्याय प्रकृतिधारीके पुण्यके
सेट मोतीचंदका उदयसे संवत् १९०३ में प्रथम पुत्ररत्नका
जन्म। लाम हुआ। साहजी और उनके कुटुम्बियोंने पुत्र लामका बडा ही आनन्द माना।

हीराचंद घनाद्य नहीं थे, साधारण गृहस्य थे, इससे इन्होंने किसी प्रकारका नाच तमाशा न करके केवल मंदिरनीमें उत्सव सहित पूजन कराई, कुटुम्बियोंका भोजनसे सत्कार किया और याचकोंको यथाशक्ति दान बाँटा । खूत्र विचार कर प्रत्रका नाम मोतीचंद रक्खा । यह पुत्रं सुन्दराकार और गोल मोतीके समान मुखवाला था। विजलीबाईके प्रत्रपालनके हुनरसे पुत्र धीरे २ बढ़ता गया और किसी प्रकारके रोगमें यसित न हुआ । इस समय हेमकुमरी १० वर्ष व मंछाकुमरी ६ वर्षकी थीं। हेमकुमरीको माताने घरका कामकान सर्व धीरे २ सिखला दिया था। साधारण स्थितिके कारण हीराचंद्के घरमें नौकर चाकर नहीं थे। हेमकुमरी और मंच्छाकुमरी छोटे बच्चेको खिलानेमें बहुत सहायता देती थीं। उस समय कन्याओं के पढ़ानेका रिवाज़ बहुत ही कम था इससे हीराचंदने अपनी कन्याओंको अ-क्षरज्ञान करानेका कुछ उपाय नहीं किया । तौभी नहाँ माता धर्मा-न्त्मा, प्रवीण और गुणवाली होती है वहाँ उसकी कन्याएं भी यदि माता चाहे तो प्रवीण बना सक्ती है। विजलीबाईके दिलमें सर्वसे पवित्र काम भगवत् भजन और तब फिर अपने बालकोंकी सेवाथी। बालिकाकी पुश्रुषाके सामने पतिभक्ति व पतिसेवा भी गौण रूपसे थी। मेरे लड़कालड़की बड़े यशस्वी व उपयोगी हों, घर्मकर्ममें साववान हों, आचरणमें कुराल और निर्मल हों, यही भावना निरंतर विजली-बाईके हृदयमें लहराया करती थी।

मोतीचंद्रके जन्मकं २-२॥ वर्ष पीछे ही संवत् १९०५ आषाढ़ सुदी ८ के दिन जब अष्टान्हिकाका महान सेठ पानाचंद्रका पर्व प्रारंभ होता है, विजलीबाईको दूसरे पुत्र-जन्म। रत्नका लाभ हुआ। इस पुत्रका उदय देख-कर व इनके मुखको निहारकर माताको बड़ा

ही हर्ष हुआ। पितान इसका नाम पानाचंद रक्ता। यद्यपि हीरा-चंद अफीमका काम करते थे पर अपना नाम हीरा होनेंस पन्ना हीरा मोती आदि जवाहरातके धन्देका मानो स्वप्न ही देखते थे और यह भावना रखते थे कि हम अपने पुत्रोंको जोंहरी ही बनाएंगे। इसी भावनासे प्रेरित हो ऐसे ही नाम अपने पुत्रोंके नियत किये। पानाचंद्रके जन्मपत्रका हाल मुनकर हीराचंद्र व कुट्टिनयोंको बड़ा ही आनन्द हुआ। जिसा इसका मुख अपने उच्च भाग्यको प्रगट करता था ऐसा जन्मपत्रने भी सुचित किया। मातापिताको अपने पुण्यके उद्य पर बड़ा ही सन्तोप था।

इस समय हेमकुमरीकी अबस्था १२ वर्षकी हो गई थी।
अबतक इसकी सगाई मातापिताने नहीं की
देमकुमरीका लग्न । थी। यद्यपि चारों ओरसे माँग आरही थी।
अब साह हीराचंदने विवाह योग्य जान हेमकुमरीकी लग्न बागड निवासी पर बम्बईमें व्यापार करनेवाले एक वीसाहुमड सेठ पेमचंदके पुत्र हेमचंदके साथ बड़े प्रेमके साथ कर दी।
इस लग्नमें साह हीराचंदने सम्बन्धियोंका बड़ा सन्मान किया और

न अपनी शक्तिको छिपाकर न स्वशक्तिसे बाहर विवाहमें खर्ची उठाया । हेमचंद बड़ा ही सुशील, सौम्यमुख, उद्योगी और धर्भ प्रेमी १८ वर्षका युवान था ।

हेमकुमरी हेमचंदको प्राप्त होकर परस्पर प्रीतिमें इस तरह रम गई मैसे हेमकी चमक हेममें रम नाती सेठ चुन्नीलालका है और दोनोंकी एकता अति सुन्दराकार परिचय। सुवर्णका दिखाती है। हेमचंद प्रेमचंदका न्यापार वम्बईमें चलता था। यह नरीके

कामके लिये प्रसिद्ध थे। अन भी इनके यहाँ ज़रदोज़ी काम बहुत ही अच्छा होता है। सेठ हमचंद व हेमकुमरीके तीन पुत्रोंमें एक पुत्र सेठ चुन्नीलालजी इस समय बम्बईमें विद्यमान हैं। इनको धर्मसे बड़ा ही प्रेम है। श्री जिनेन्द्रकी मक्ति व स्वाध्यायमें निरन्तर लीन रहते हैं । इनकी स्त्री नंदकोरबाई भी बड़ी धर्मात्मा लिखी पही व पतिभक्त हैं। इनसे ५ पुत्र व १ पुत्री है। बहे पुत्रका नाम अमरचंद है, जो व्यापारमें दक्ष है। इससे छोटा पुत्र रतनचंद बी० ए० क्वासमें पढ़ रहा है, तीसरा नौनीतछाछ इन्टरमें पट रहा है और और २ लड़के भी विद्याभ्यास करते हैं। सेठ चुन्नीलाल-जीन श्री पाबागढ़ क्षेत्रके एक प्राचीन जिन मंदिरका जीर्णोद्धार कराया है और उसकी प्रतिष्ठामें भी खूब द्रव्य लगाकर उस मौकेपर बम्बई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाका वार्षिक अधिवेशन कराया था । आप श्री पावागढ क्षेत्रकी अनन्यकारिणी समाके सभापति हैं। व्यापार भी अच्छा चलता है । बम्बईके गुजराती प्रतिष्ठित धनादर्थों-मेंसे आप भी एक प्रसिद्ध मान्य पुरुष हैं और ग्रुनराती मंदिरके प्रकंब करनेमें आप ही प्रधान व्यक्ति हैं। वास्तवमें जिसकी कुल-प्रक्परा अच्छी होती है उसकी सन्तित यदि ऐसा कोई अंतराय न पड़े तो वह भी अच्छी ही होती हैं। हेमकुमरीकी लग्न करनेके वाद साह हीराचंद व्यापारमें छीन हो गए। माता पिता पानाचन्दकी वृद्धि पाती हुई मूर्तिको देखदेखकर हर समय प्रफुलित होते थे।

सुरत नगरमें इंग्रेजी राज्यके होनेसे इंग्रेजी पढ़नेकी चर्चा बढ़ने लगी और साथ ही लोगोंमें पुस्तक और गणपतराव गायक-समाचार पत्र पढ़नेका भी शौक बढ़ा। संवत् वाड़का दान। १९०७ व सन् १८५० में एडूस लायबेरी

नामका पुस्तकालय स्थापित हुआ। लोग इसके द्वारा गुजराती व इंग्रेजी पुस्तक व पत्रोंके पढ़नेका लाभ लेने लगे। संवत् १९०८ व सन् १८९१ में गणपतराव गायकवाड़ जिनको अपने वैष्णव धर्मसे बहुत प्रेम था जंजूरी प्राममें खंडोबाकी यात्रा करनेको निकले थे तब सूरत होकर गए थे। यहाँके नागरिकोंने इनका बहुत सन्मान किया था। गायकवाड़ने स्वधमे वृद्धि या यश लाभ चाहे जिस कारणसे हो सूरतमें इतना धर्म व दान किया कि सारे नगरमें उनकी कीर्त्ति छा गई। जितने दिन वे ठहरे मानो धर्म व दानका राज्य ही हो गया।

उसी समय एक रात्रिको अपनी पत्नीसे बार्त करते हुए साह हीराचंदने
गायकवाड़के दानकी बड़ी प्रशंसा की और
दानकी वासनाओं में
गायकवाड़की जो कुछ चर्चा बाज़ारमें सुनी थी
वह सब कह सुनाई। उसी कथनमें यह भी
अवतार।
वयान किया कि गायकवाड़ने बाह्मणोंके सत्कार
करनेके सिवाय हरएक मंदिर व पाठशाला में द्रन्यदान किया तथा नगरके

गरीबोंको तृप्त किया। विजलीबाईका चित्त बड़ाकोमलथा। जब वह किसी गुणकी बात सुनती थी तो उसका दिल भर आता था। उसके मनमें यह आया कि कि कब मैं इस योग्य होऊँ कि खूब दान धर्म करूँ और सर्वको तृप्त करूँ । विचारते २ उसने हीराचंद्रजीसे कहा कि देखो हमारे भी कभी ऐसे पुण्यका उदय आवे जो हमसे भी खूब दान धंमेमें द्रव्य खर्च किया जावे। साह हीराचंदने कहा कि हम तो इतने भाग्यशास्त्री नहीं है क्योंकि इतने दिन व्यापार करते बीते कभी हम अपने खर्चसे अधिक नहीं कमा सके । ज्यों त्यों कर हेमकुमरीका विवाह किया था उसके पीछेसे ज्यापार साधारण ही चला । इँ।, जिस वर्ष पानाचेद्का जन्म दुआ था उस वर्ष व्यापार-में अच्छी पैदा की थी। अब तो साधारण ही लाभ हो रहा है। परंतु यह मुझे आशा है कि पानाचंद अवश्य भाग्चशास्त्री होगा और द्रव्य कमाएगा । उस समय यदि उसका परिणाम दान धर्ममें होगा तो वह भी अपने दानकी सुगंधको उसी तरह विस्तारे-गा जैसे आज गायकवाडका यश हो रहा है। इस तरह परस्पर बार्तालाप करते पति पत्नी उस रात्रिको अति प्रेमसे अपने खास शयनाल्यमें सोए । उसी रात्रिको विजलीबाई गर्भवती हुई । विनलीबाईका मन रात्रिभर दानकी उमंगमें भीज रहा था। यह वही रात्रि है जिसमें इस पुस्तकके नायक प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद-का जीव विजलीबाईके गर्भमें आया, जिस आत्माने गर्भस्थानमें निवास करते ही उस स्थानको दानचमेकी वासनासे वासित पाया।

ज्यों २ गर्भ बढ़ाता था विज्ञ बाईका मन दानके लिये उमंग-ता था । साधारण स्थितिके कारण इतना तो वह अवस्य करती थी कि जो कोई अपाहन द्रवाज़े पर आ जाता था उसको मुद्दीमरा अन्न जरूर दे आती थी। अच्छी मावनाओंका असर भी अच्छा ही हुआ करता है। विजलीबाईके धर्ममें झुकतं हुए भावोंका असर उस गर्भ स्थित बालक पर भी पड़ता था। जगतमें निमित्त नैमित्तिक सम्बन्धसे अनेक अवस्थाएं हो जाती हैं। पूर्वबन्ध जड़ द्रव्य कर्मीका असर संसारी आत्मापर पड़ता है। और संमारी आत्माके भावोंसे पुद्रलका परिणमन होता है। बाहरी पदार्थ भी माबोंमें असर डालते हैं।

सुयोग्य सम्बन्धोंमें प्राणींकी वृद्धि करते हुए नौ (९) मास बीत गए और दिबालीकी निकटताका समय सेंड माणिकचन्दका आ गया। इस कारण उच्च कुली सर्व ही अपने स्थानोंकी सफाई तथा लीपागीती करान जन्म सं० 13088 लगे । साह हीराचन्द्रने भी अपने मकानकी शुद्धि व पुताई कराई । कार्तिक बदी १३ ( आसौन बदी १३ गुत्र० ) का दिन आ पहुँचा। इसको **धनतेरस** भी कहते हैं। बहुतसे लोग आजकल वरमें कुछ नए बरतन भी खरीद कर लाते हैं। यह दिन एक मंगल दिवस माना जाता है। इसी दिन पातःकालके शुभ मुहूर्तमें विजलीबाईने पुत्ररत्नका जन्म दिया । इस समय भी पुत्रका मुख देखकर माता पिताको जो आनन्द हुआ वह बचन अगोचर है। जैसे पानाचंदके मुखपर तेन झलकता था ऐसा ही इस पुत्रके मुखसे प्रगट होता था । साह हीराचंदने इस पुत्रका **माणिकचन्द** नाम रक्ला और यथायोग्य श्री जिनमंदिरजीमें पूजा कहाई, कुछ दान बाटा तथा कुटुम्नियोंको तृप्त किया।

जब यह गोदमें खिलानेलायक हुआ इसको देखकर हरएक प्यार करना चाहता था। उंचा माथा, बड़ा सिर, बड़ी चक्षु, सुडौल हस्त पग आदि देखनेसे माणिकचंद एक महान पुरुष होगा ऐसी कल्पना बुद्धिमानोंक चिनमें हो उठती थी। जन्म पत्रसे मी इस बालकके ऐश्वर्यवान व यशस्वी होनेका पता लगता था। इसका शरीर भी बहुत सुन्दर और गटा हुआ था। खपाटिया चकलेका मकान जिसका चित्र पहले दिया गया है और जो अब भी मौजूद है मोतीचंद, पानाचंद और माणिकचंद पत्र और मंच्छाकुमरी प्रतीसे बड़ा ही रमणीक मालूम होता था। इस समय मंच्छाकुमरीकी आयु ११ वर्षकी, मोती-चंदकी ५ और पानाचंदकी २॥ वर्षकी थी।

हेमकुमरीकी तरह मंच्छाकुमरी भी घरके कामकानमें प्रवीण कर दी गई थी। जब यह १२ वर्षकी हुई मंछाकुमरीका साह हीराचंदने इस कन्याका विवाह सुरत विवाह। निवासी वीसा हुंमड़ गंगेधर गोत्री बीजलाल शीतलदासके प्रत झवेरचंदके साथ कर दिया। मंबरचंद साधारण लिखा पढ़ा था पर बुद्धि तीत्र थी। अप-

नी मध्यम स्थिति होनेके कारण पिताके साथ व्यापारमें जाता था।

मंच्छाबाई और अवरचंदके संयोगसे संवत् १९२४ चैत्र सुद्

सेउ चुन्नीलाल अवेरचन्दका जन्म। ११ के दिन सेउ चुन्नीलालजीका अन्म भया। यह चुन्नीलाल सेट माणिकचन्द पानाचंदके व्यापारमें मुख्य सहायक होनेके सिवाय वर्म कार्योमें बड़े ही उत्साही थे। आप भारतक्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कुन्न मेटीके सहायक महामंत्री थे, तीर्थभक्त थे। इन्होंने सूरतके सर्वसे प्राचीन श्री शांतिनाथनीके छोटे मंदिरका जीर्णीद्धार संवत् १९५६ में कराया और इसका शिखर बंधवाकर घूमसे प्रतिष्ठा की थी।

मोतीचन्द जब ६ वर्षसे अधिकका होगया तब हीराचंदने इसको देशी निशालमें पढ़ने भेज दिया। पानाचन्द सेठ नवलचन्द्रका और गोदके बच्चे माणिकचन्द्रको विजली-जन्म। बाई घर ही में नाना प्रकारकी उत्तम शिक्षा दिया करती थी। इतनेमें वह फिर गर्भवती दुई और संवत् १९११ में चतुर्थ प्रजरत्नको उत्पन्न किया। इस समय भी प्रजका लाभ देखकर माता पिताको बड़ा ही सुख भया। हीराचन्द्रने इसका नाम नवलचंद रक्खा। इसका जन्मपत्र भी इसके सौभाग्यवान और ऐश्वर्यवान होनेकी साक्षी देने लगा।

इस तरह चार प्रत्नोंसे मुशोभित होकर हीराचंद और विजलीबाई अपने घरको इसी तरह दीप्तमान मानने लगे जैसे राजा दशरथ और कोशल्या थी रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत और शत्रुष्नको देख कर आनन्दित होते थे।

हीराचंद अब धर्ममें और अधिक प्रीति करते भए। अधिक समय श्रीजिनेन्द्रकी भक्ति व स्वाध्यायमें व्यतीत करने छगे। तृयीय पुत्र माणिकचंद्रको उंगछी पकड़कर यह मंदिरजी छे जाते थे और अपने पास बिठाछेते थे। यह बाछक शुरुसेही बहुत विचारवान और शांत मिज़ाज़का था। रोना तो जानता ही न था। सच है जो अपने जीवनमें महान कृस्य करनेवाछे होते हैं उनकी शुरुसे ही उत्तम चेष्ठा होती है। उनको पूर्वजन्मका उत्तम संस्कार भी होता है। इसतरह हीराचन्द धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थको मोगते हुए अतिसंतोषसे रहने छगे और जातिमें एक आदरणीय गृहस्थ माने जाने छगे ।



## अध्याय चौथा।

## संठ माणिकचंदकी वृद्धि।

माह हीराचंद अब पुत्रोंकी सम्हाल व उनकी साधारण शिक्षा पर ध्यान रख़नं लगे। मोतीचंदको दो वर्ष १८५७के गदरका तक देशी निशालमें पढ़ाकर फिर एक गुज-राती स्कुलमं पडने भन दिया, इसी तरह समय। पानाचंदको भी दो वर्ष तक देशी निशा-लमें पढ़ाकर गुजराती स्कूलमें भेजा । इतनेमें माणिकचंद ६ वर्षके हुए। इसको मंदिरत्रीमें देर तक बैठनेका शौक था। जो कोई शास्त्र पढ़ता यह विना समझे भी छुना करता था। संबत् १९१४ या सन् १८९७ वड़ा विकट वर्ष था। सूरतमें छइकरका आना जाना बहुत रहता था। यद्यपि वहाँ कोई हुलड नहीं था। पर उत्तर हिंखुतानमें इंग्रेनोंसे देशी फौन बिगड़ उठी थी जिससे देहली, कानपुर, इलनऊ आदि स्थानोंमें बड़ा भारी गदर हो गया था। प्रजाजन लूटे जाने थे। लोग अपने २ मकान छोड़कर परदेश भाग रहे थे। इतिहासमें यह वर्ष बहुत प्रसिद्ध है। इस समय ईष्ट इंडिया कम्पनीकी सत्ता भारतमें थी। गदर शांत होनेके पश्चात् सन् १८५८की १ नवम्बरको प्रसिद्ध रानी कीन विकटोरियाने मारतकी राज्यतत्ता कम्पनीके हाथसे अपने हाथमें छी और मारतके वर्मकर्ममें सम्भाव रखने व हस्तक्षेप न करने आदिकी घोषणा प्रसिद्ध की।

इस समय माणिकचंदकी अवस्था ७ वर्षकी थी। पिताने इसे देशी निशालमें पढने भेग दिया। नवलचंद घर-हीराचन्दकी चितित हीमें माता पिताद्वारा शिक्षा प्राप्त करता था। संवत् १९१६का वर्ष हीराचंदके लिये अवस्था । कठिन था। उधर पुत्रीका खर्च बढनेके साय २ व्यापारमें शिथिलता हो गई। इचर विजलीबाईका शरीर बहुत नर्भ रहने लगा और थोड़े दिनोंके पीछ ऐमा शिथिल हो गई कि उससे घरका कामकाज भी न होने लगा । वडी कठिनतासे कुछ दिन सारे कुटम्बकी रसोई बनाई परंतु जब अधिक दोली पड गयी अर्थात् शब्यासे उठा नहीं गया तव हीराचंद्जी और छोकरोंको मिलकर सबकी रसोई बनानी पड़ी व घरका मन कामकान करना पहा । इस समय हीराचंदको चित्तमें बहुत ग्वेद रहने छगा । व्यापारमें लाभ कम होनेसे घरका खर्च बड़ी तंगीसे चलता था तथा अपनी पतिभक्ता स्त्रीके शरीर शिथित होनेसे मनको और भी उदासी हो गई थी। संपारकी विचित्र दशा है। पुण्य पापकर्मका उद्य एकके पीछ दूमरा आया ही करता है। इस समय मोती<del>वं</del>द १३, पानाचंद ११, माणिकचंद ८ तथा नवळचंद ५ वर्षके थे। सिवाय छोटेके तीनों अपना बहुतसा काम अपने आप कर छिया करते थे। सर्वोमें माणिकचन्दको अभीसे धर्मकी बहुत बढ़ी छय थी, यहातक की हररोज पासके मंदिरजीमें जा और लोगोंके साथ श्री निनेन्द्रकी प्रतिमाओंका प्रछाल किया करता, जाप देता व कभी २ पूत्रनमें भी खड़ा होता था । पिताको इस समय इ:सी व उदास देखकर मोतीचंद और पानाचंद आश्वासन देते भे बिसमें पानाचंद बड़े साहसके साथ कहते थे कि-पिताजी, आप चिंता न करें, में बड़ा हूँगा तब बहुत धन कमाऊँगा। माताकी सेवामें चारों ही प्रत्र छवळीन थे। माता अपनी शिथिल अवस्थामें इनको देखदेखकर अपने जीवनमें मैंने रत्न उत्पन्न किये ऐसा मानकर परम सन्तोष प्राप्त करती थी और जब कभी प्रेमभरी दृष्टिसे अपने स्वामीको निरखती थी तब अंतरंगमें महामुख प्राप्त करती थी। मनमें सिवाय ' अईत सिद्ध ' के विसीका स्मरण नहीं करती थी। मुखसे भी यही मदा कहा करती थी।

एक दिन बिजलीबाईके चित्तमें यह अच्ली तरह जम ग्रया कि अब मेरा अन्तसमय आ गया है। उसने साह माता विजलीबाईका हीराचंदको कहा कि अब मेरी आयु नहीं स्वर्भवास। मालुम होती, मुझे धर्मके बचन सुनाओ और जो कुछ मुझसे दान पुण्य कराना हो सो इसी

समय करा लो। साह हीराचंद्की आंखों से आंसु वहने लगे, दिल घवड़ा गया, पर यकायक मनको सम्हालर कहा—तुम्हें मरणकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। चिन्ता करनेसे भी आयु कम होती है ऐसा शास्त्रोंमें सुना है। धैर्य रक्खो। श्री पंच परमेष्टिका ध्यान करो। मुझे तो आशा है तुम बहुत शीघ अच्छी हो जाओगी। यदि तुम्हारी इच्छा है कि अभी कुछ दान धर्म किया जाय तो तुम्हारे लिये सब कुछ हाजिर हैं। ये चार पुत्ररत्न तुम्हारे मौजूद है। हमें तुम्हें कोई बातकी फिकर नहीं है। साहजीने मोतीचंदको १०० दिये और कहा कि बाज़ारमें गांधीके यहाँसे पूजनकी सामग्री ले आ। मोतीचंद समझता था, वह तुर्त गया पर बढ़े उदास मनसे सामग्री बंधवाकर कर आया । साहजीने तीनों छड़कोंको सामग्री साफ करके तथ्यार करनेको आज्ञा दी। उन तीनोंके साथ नक्छचंद भी चाँवछ उछटने पछटने छगा। उस समय माणिकचंदका मुंह सबसे अधिक उदास था। यद्यपि वह ८ वर्षका था, पर वह सम-अता था कि माताजीने अंत समयपर दान करनेको यह सामग्री मँगाई है। माणिकचंदका चित्त बड़ा कोमल था। किसी खास बातका उसके दिलपर बड़ा असर हो जाता था। कभी २ आंख़से पानी भी निकलनेको होता था, पर वह रोक छेता था कि और माई बुरा समझेंगे।

सामग्री तथ्यार होने पर सूरतके सर्व मंदिरों में दिये जानेको साहजीने थाल सज और यथायोग्य दो दो एक एक रूप नगदी रखकर विजलीबाईके सामने रख दिये। बाईने कहा कि हर एक मंदिरमें इनको भेन दो। साहजीने लड़कों के द्वारा मंदिरों में भामग्री भिनवा दी तथा प्रक्च करके २५०) और उसके सामने रख दिये और कहा—"जहाँ तुम्हारी इच्छा दानकी हो वहाँ दान करो।" इम समय मच्छाकुमरी भी आ गई थी। वह देखकर रोनेको हुई परन्तु साहजीने मना किया। विजलीबाईने २५०) देखकर एक दफे पतिसे कहा-आप मेरे लिये कष्ट न सहें। मंदिरों में सामग्री भेन दी सो बस है। हीराचंदजीने कहा में इस समय लाकार हूं नहीं तो तुमने जो उपकार किया है उसके लिये में कुछ नहीं कर सक्ता। हजारों लाखोंका दान तुम्हारे हाथसे होता। मेरी तो यह भावना थी। यह रकम तो कुछ नहीं है। श्री निनेन्द्रके प्रतापसे ज्यापारद्वारा सब कुछ मिल जायगा, सब कुछ हो लेगा; पर तुम्हारे हाथसे दान तो

होता ही आहिये। विजलीयाईने पचीस २ रुपये श्री सम्मेदशिखर, पावाग्रस, चालापुर, निरनार सिद्धक्षेत्रों में, १५) पालीताना सत्तुं नय, १%) श्री गत्रपंथाजी, १५) श्री पावागढ़जी, १५) तारंगाजी सिद्ध-क्षेत्रों में, ४०) भूखों को अनादि बांटने में और शेष रुपये शास्त्रदान में देनेको कहे। साहजीने सब लिख लिया।

हीराचंदको भी मनमें निश्चय हो गया कि अब इसका शरीर नाइता हुआ नहीं मारूम होता । हेमकुमरी भी उन दिनों सुरतमं ही थी। वह भी आगई। रात्रिको विजलीबाईने हेमकुमरीसे कहा कि, हेम! आज रात्रिको मेरा शरीर नहीं रहेगा एसा मालून होता है; सो तूम मुझे एक दंफ देहरासर छे दल कि मैं श्री जिनेन्द्र प्रमुके दर्शन कर लुं। श्री मंदिरजी पासमें ही था। मंदिरजीमें एक व्यासन थी। बह बलिष्ठ शरीरकी थी। वह अपनी गोदमें विजलीवाईको संदिरजी ले गई। साथमें दोनों बहुनें गई। बहां बहनोंने भगवानके सामने विद्याया । बहुत ही भक्तिसे प्रभुकी शांत छविको निरखकर मन ही मन स्तुति पढ़ धुक गईं और वहीं प्रतिज्ञा हे ही कि अबसे आज रातभर मुझे जलपानी आदिका त्याग है जो कुछ बख व शय्या आदि मेरे पास है उसके सिवाय और परिग्रहका भी त्याम है। र पर अक्त बिजलीबाई शांतिसे शब्यापर लेट गई। इस समय सबंको निश्चय हो गया कि अब बाईके प्राणान्तका अवसर है। और मी कुटुम्मीनन आ पहुँचे । नम्रह्रचंद तो सो गया, पर माणिक-चंदको नींद नहीं अर्ड् । यह वहे २ होने छगा । उधर साह हीराबंदलीका भी नी वंबद्धाया और योही देखे छिये एकान्तमें आकर खून रोए । फिर वे बन यांभकर शब्दाके पास आए और

उस समय कुटुन्त्रि व्यापा विवादा नेपान देखकर इनने समसे कहा कि इनके पास वे ही रहें जो धर्मके पाठ व णमोकार मंत्र पहें. रोष दूर २ बैर्ड और इस तरह बात न करें जो इनके कांबमें शब्द जाय ।

रात्रिको अनुमान ६ बजे होंगे तब विनलीबाईने कहा कि मुझे शच्यांसे भूमियर हे हो। भूमियर बासका साथरा करके उन्हें भीरसे लिटा दिया गया। उससमय साह हीराचंद स्वयं बेडे ही मिष्ट बचनींसे णमोकार मैत्र पढ़ने छंग व तारह भावना या समाधिकरणकी पाठ सुनाने छगे । धर्मध्यान करने '२ विज्ञसीनाईकी आस्म प्रातःकाल होते होते इस क्षणिक **अरीरको छोड़ कर चल दिया**-जीवके सम्बन्धमें होते हुए जो कान्ति शरीरकी थी वह मन जाती रही। अंगोपांग वैसेके वेसे रहते हुए भी शरीर अवेतन-जड़-मिट्टीके समान होगया । वे नाना प्रकारक ज्ञान पूर्ण विचार जो अभी २ श्तरीरके आश्रय हो रहे थे वे सर्व चंद्र होगए। कारण यही कि चैतन्य गुणधारी पदार्थ इस तम रूपी झोंपड़ीसे बाहर चला गया। नीवन क्षणिक है। कोई भी शरीरकारी अपर नहीं रह संस्ता, सर्व ही को , परलोकमं जाना है, अतर्व झानी जीव परलोकके लिये अदस्य यत्न रखते हैं। जो कामानके विषय-मोर्गोमें गाफिल हो जाते हैं वे अस्ते आपको ठगते हैं और स्वीटी मितमें नानेकी तम्यारी कर छेते हैं। वारों ही पुत्र अफ्नी मातको अनुबोर व मुर्दा देखकर हम असहाय हो वर ऐसा मानते हुए। आणिकचंद और भिताः हीराचंदके आंसोंसे आंधुकींका टेनकार बद्द न हुआ। प्रातकार ही सर्व दाय किया आदिका अक्टब

हुआ । अब वह घर जो विज्ञिताई सरीखी खीरत्नके रहते हुए विज्ञितीके समान चमकता था, बिल्कुल सुनमान हो गया । मानो एक प्रकाशमान दीपक ही बुझ गया ।

वरमें कोई भी स्त्री न होनेसे कुछ दिन तो हेमकोंर और मेटछाने रसोई बनाकर खिलाई तथा घरका कामकान किया, पर नव वे अपनी समुराल चली गई तब फिर अकेले हीराचंदजीको द्रव्य कमानेके साथ २ स्त्री सम्बंधी आरंभ कार्य्य भी करने पड़े, क्योंकि म्यित साथारण थी, इससे कोई रसोई करनेवालेको नहीं रख सक्ते छे। पर साह हीराचंद बड़े ही बुद्धिमान, धर्मबुद्धि व धैर्य्यारी थे, समताके साथ सारा काम करते हुए अपना समय विताते थे, पर नव नग भी खालो होने थे तभी विवलीबाईकी स्मृति बिनलीके समान इन्के चित्तक मन्मुल चनक उटनी थी। व ऐसी पतिवता स्त्रीको कब भूल सक्ते थे !

इम समय हेनक, मरी जब बम्बई जाने लगी तब अपने पितासे विनती की कि मुरतमें जब ब्यापार कम मोतीचंद्रका बम्बई हो चला है और बम्बईमें व्यापारकी वृद्धि जाना। है तब उचित है कि आप मोतीचंद्रको मेरे साथ कर देवें तो मैं इसे कोई ब्यापारकी जिसामें डाल दूँ। हीराचंद्रकी दशा बहुत शोचनीय थी। इस समय इनके अशुभ कर्मका उदय था। यह चाहते ही थे कि मोतीचंद्रकी उम्र १२ वर्षकी है, इसे कोई आलम्बन मिले; क्योंकि अफीमका

पुत्री हेमकुमरीके माथ फिताने मोतीचंदको बम्बई भेन दिया । उस वक्त सूरतमें बम्बईकी शोभा और महत्ताकी बड़ी धूम थी। मो-तीचंद अपने साथके लड़कोंसे व इचर उधर बम्बईकी बातें सुन चुका था। पिताकी आज्ञा पाते ही यह खुद्यीसे बहिनके साथ बम्बई चला गया ।

हेमचंदजीने मोतीचंदको बड़े प्यारसे र खा। मोजनपानादिमें भले प्रकार खातिर की कि जिसमें इसका मन उचाट न हो, और हेमकुक्शिकी सम्मतिसे मोतीचंदको मोती पुराना सिखानेक छिय मोती पोरनेवाले एक प्रवीण जोंहरीके सुपुद्दे कर दिया । मोती बंद बड़े आनन्दसे रहता और मोती पोरनेके हुनरको बड़े प्रेमसे सीखता था । उस समय बम्बईमें मोती पोनंका हुनर जिनको अच्छी तरह आ जाता था वे प्रतिदिन दो २ तीन २ रुपयेकी मज़दूरी सुगमतासं कर लेते थे। जब इसको बंम्बईमें दो वर्षके अनुमान हो गया और यह इस हुनरमें चतुर हो गया तथा इसे कुछ लाग भी होने लगा तब हेम्कुमरीने अपने पिताको खबर की कि द्वितीय पुत्र पाना इं दको भी यहां भेज दो।

पानाचंदकी उमर उस समय १३ वर्षकी थी । यह गुजराती स्कूलमें पानाचन्द्रका बम्बई मो आशासे, कि यह बालक चारोंमें तीव बुद्धि और साइसी है, अवस्य यह एक दिन जाना। मारी व्यापारी हो जायगा, ह्रेमकौरके लिखते ..ही इसे भी बम्बई मेज दिया। इसका मन पहनेकी अवस्थामें भी द्रव्य कमानेको चढ़ा करता था । पितासे आज्ञा बाते ही यह किसी सामाधीके साथ वस्मई आया और अपनी बहिनके यहां ठहरा। बहिनके कहनेसे सेठ हेमचंदने पानाचंदको भी मोती पुरानेके काम सर सीखनेको विठा दिया।

इसने बहुत ही थोड़े दिनोंमें इस हुनरको सीख लिया, क्योंकि यह बहुत चतुर व माग्यशाली था। इसके पगमें पालकीका आकार था। इनको देखकर प्रवीण प्रत्य भाग्यशाली कहकर बुलाते थे। बाद सीखनेके इसको भी व्यापारियोंसे मोती पोरनेका काम मिलने लगा। मोतीचन्द और पानाचन्द्र दोनों भाई बहुत दिलचस्पीसे व्यापारियोंका वाम कर देते थे, जिनसे इनको परिश्रमका अच्छा फल मिलने लगा। एक दिन दोनों भाइयोंने सलाह की कि बहिनके यहां सदा ही साचा भीना अच्छा नहीं। यहाँ परदेशियोंके जीमनेके लिये बीसियां व कोजनशालिए बहुत हैं, हम उनमें क्रिके विकर भोनन कर आएगें और स्वतंत्रतासे रहेंगे के विवार दोनों भाइयोंन किया और एक दिन अपनी बिलाको अपने मनकी बात समझा दी। हेमकोर बड़ी चतुर व समझदार थी। इनको आज्ञा दे दी। अब ये दोनों बीसीमें जीमने लगे और रुपये कमाकर अपने पितानीको भी मेनने लगे।

सं. १९१९की दिवालीके उत्सर्व शेखनेके ि इनकी बहिन मंच्छाकुमरी बम्बई आई, स्वॉकि उस बम्बईकी दिवाली। समय बम्बईकी दिवालीकी शोभा मकुर भी। अब भी दिवालीमें बम्बई बहुत ही सुर्सान्तत हो जाती है। भंच्छाबहिनने अपने दोनों माइयोंको मोती पुरानिक काममें उद्योगी व अपने परिश्रमसे द्रव्य कमाते व सर्च करते हुए देखा तन नहुत ही प्रसम हुई और खीटकर अपने पिताको सर्व हाल कहा, तथा यह भी कहा कि यदि आप भी हन दोमों प्रत्नोंको साथ लेकर बम्बई जावें तो अच्छा हो। इक्स पानांचदने भी अपने पूज्य पितानीको पत्र लिखा कि आप वहाँ अफीमका काम बन्दकर दोनों भाइयोंको लेकर बम्बई चले आवें, जिससे हम सब मिलकर यहां अपना भाग्य अजमावें। साह हीराचंदका काम यहाँ नहीं चलता था, रोज़ स्वयं हाथसे रोटो बनाकर खिलाते थे, इससे साहजीने भी बम्बई चलनेकी ठान ली।

इस समय माणिकचंदकी अवस्था १२ वर्षकी भी। यह देशी
निशालसे उठकर गुजराती शालामें धर्बी
सेठ माणिकचंदजीका कथा तक भाषा आदिका ज्ञान कर चुके थे
छोटे भाईके माथ तथा नयलचंद केवल ९ वर्षके थे। यह देशी
वस्त्रई जाना। निशालसे उठकर किसी गुजराती शालामें
भरती नहीं हो सके। वस ही में अपने पूज्य
पितासे गुजराती आदि सीखे थे। साह हीशचंदने अपना सन काम
समेट कर बाज़ारमें निसका जो देना था सो सन चुका दिया और
संवत् १९२०के प्रारंभमें ही हीशचंदनी दोनों पुत्रोंको देकर बम्बई
आ गए और एक श्वाकनीनी चाल' नामक माईके मकानमें उहरे।

साह ही राजदाजीको यह पसन्द नहीं या कि बाल्क आदि अनेनोंकी व अक्निकी केनोंकी कीसीमें हीराजंदाजीकी पुत्र मूल्य देकर अद्भुद्ध मोजन किया द्याय। सेवा। उन्होंने बाते ही मोतीचंद और पानाचंद्रको भी बीसीमें नहीं नीसने दिया, अपने हाणसे रसोई बनाकर रोज चारों पुत्रोंको खिलाने लगे और समयपर बाजारमें भी जाकर कुळ साधारण ज्यापार करने लगे ।

माणिक चंद्की रुचि हिमान किनानमें देखकर एक सराफके यहाँ वही खाता सीखनेके लिये नैठाया । १ वर्षमें ही यह सन हंग जान गए तन हेमंकौरके कहनेसे सेठ हेमचंद्र प्रेमचंद्रने अपनी दूकानपर बिडायर मुनीमतका काम लेना शुक्र किया। थोड़े दिनोंके नाद पानाचंद्रने पितानीसे कहा कि माणिक चंद्र बहुत परिश्रमी और चतुर है, मेरी रायमें इसे भी मोती पुराना सिखलाना चाहिये। हीराचंद्रजीने यह बात मानकर मोती पुराना सिखलानेमें माणिक चंद्रकों भी लगा दिया।

वास्तवमें माणिकचंद पानाचंदकी उच्च स्थिति लानमें मूल निमित्त कारण सेठ चुन्नीलाल है६चंदकी हेमकुमरीका उपकार । माता हेमकुमरी थी, जिसने अपने पिताको सुसी करने व भाईयोंकी उन्नत दशा करानेमें पूरी र महायता दी। हेमकुमरीन अपना सचा बहिनपना पालन किया ।

माणिक वंदमें एक यह बड़ाभारी गुण था कि जिस काममें दिल लगाते ये उसमें बिलकुल लवलीन हो जाते थे, वास्तवमें सेठ माणिचंदका . उपयोगकी एकामला बड़े २ काम ज्यापारमें ज्याना । कर सक्ती है । यह उपयोगकी एकामता है जिसके कारण एक मुनि धर्मच्यानसे शुक्क-ध्यानको पाकर कर्मोंको काट मील अवस्थाको प्राप्त कर लेते हैं । उपयोगकी एकतासे ही एक विद्यार्थी भोड़े ही कालमें किसी पाठको कंठ कर खेता है व सपझ लेता है। उपयोगके एक ओर देर तक जमाए रखनेक कारण एक ज्यापारी व्यापारके ढंम भले प्रकार मोच सक्ता है। प्रयोजन यह कि हरएक कामको पैर्यके साथ पूरा करनेके लिये उपयोगकी थिरताकी आवश्यकता है। एाडिसन जैसे अमेरिका आदि देशोंके विद्वानोंने इसीकी बदौलत नाना प्रकारके यंत्र निर्माण किये हैं। विद्वान लोग जब एकान्तमें किसी विषयका मनन करते हैं तो उसके भेदको खोज लेते हैं। टेलीप्राफ, टेलिफोन, बेतारका तार, मोटर गाड़ी, हवाई विमान आदि सर्व ही उपयोगकी थिरताके फल हैं। माणिकचंद इस उपयोगी गुणके आश्रयस उछ ही महीनोंमें ही मोती प्रानमें चतुर हो गए और अपने दोनों भाइयोंके साथ मोती पोकर दृष्य कमाने लगे। बाजारमें लोग पानाचंद और मणिकचंदके कामको बहुत ही पसंद करते थे और इनको खूब ही काम मिलता था।

कामकी अधिकता व अपना यश फेलता देख भाइयोंने पिता-जीको कहा कि नवलचंदको भी यह काम नवलचंद भी व्यापारमें सिखाना चाहिये। नवलचंद अब अनुमान शामिल्। ११ वर्षके थे। नवलचंदने भी १ वर्ष परि-श्रम कर इस कामको सीख लिया।

अब नारों भाई मिलकर नानासके ज्यापारियोंका मोती से लंकर और पो पोकर देते थे। इनको सक्से अधिक एकतासे चारोंकी नानारमें काम मिलने लगा, क्योंकि यह बहुत ज्यापारमें हृद्धि। चित्त लगाकर और सफाईसे वक्तके जमर सबका काम कर देते थे। चारों माइपोंसे पूर्ण प्रेम था। किसीके चित्रमें यह ईर्षा भाव नहीं था कि मैं इनसे चतुर हूं व मैं अधिक धनका हकदार हूं। चारों में पानाचन्द और माणि-क्रचन्द ही बड़े चतुर और उद्योगी थे, पर यह बहुत ही समझदार, क्षमाशील और सादे मिनाजके थे। अधिक द्रव्य कमानेकी शक्ति स्वनेपर भी कभी अपने मुंहसे अपनी बड़ाई नहीं करते थे। यदि इनमें मेल न होता तो इनकी इतनी प्रसिद्धि न होता । एकताके कारण बाजारमें चारों भाइयोंका कोई नाम नहीं लेता, किन्तु "भाई राम"के नामसे पुकारता था। सर्व व्यापारी इन बारोंको एक ही दिलचाले, ईमानदार, सत्यवादी और विश्वासमान्त्र जानने लगे। चार पांच वर्ष इस तरह मिहनत करने से इन्होंने खर्चसे अधिक रूपया पैदा कर लिया तथा मोती व जवाहरातकी पहचान भी अच्छी तरह कर ली।

जब हीराचंद्जी सुरतसे बर्म्बई आए थे तब सुरतसे बर्म्बई तक रलगाड़ी नहीं थी, पर संवत १९२१ जा सन् सुरतसे बर्म्बई तक १८६४ ता०१ नवर्म्बरसे सम्बंध बर्म्बई तक रेल्वे। रलगाड़ी चलने लगी जारों भाइयों मेंसे जब किसी की क्ला होती तम एक दो दिनके लिये सुरत चले माते थे और बहाँक लोगोंसे व अपनी बहिन मंच्लाकाईसे मिल आते थे। अब इनके मुखोंपर कांति बह गई थी, निराला जोश आरहा था। सुरतके लोग इनको उद्योगशील ब् कमाऊ जानकर बहुत ही प्रसन्त होते थे और जहाँ ये जाते ये ब जिससेचे मिलते थे वह इनका सन्यान करता था। प्रस्तवमें देखा जावे करते हैं । वे यह भय नहीं खाते हैं कि इसको हमें कुछ वन देना पड़ेगा या हमसे यह कुछ मांगेगा, किन्तु इसके विरुद्ध उन्हें बह आशा होती है कि यदि हमें कभी कुछ जरूरत होंगी तो इनसे मिल नावेगा । जगत स्वार्थ बुद्धिके नातेसे ही रहता है । इसी तरह जो साधु हैं उनमें यदि आत्मज्ञान और वैराग्य होता है तो जो समझदार हैं वे सन्मान करते हैं । गृही धनके किना और साधु वीत-रागता सहित आत्मज्ञानके बिना नि:सार है । गृहस्थके दिलको साहस्यक व रोनकदार बनानेवाले उद्योग हीमें धनका आगमन है । बस, इसी कारणसे अब इन चारों भाइयोंकी हर जगह खासिर होती की । इनमेंसे पानाचंद्र और पाणिकचंद्रके उपर लोग अधिक मोह करते थे, क्योंकि चारोंमें यही दो सिंह युगलकी भांति झलकते थे ।

नारों ही वम्बईमें तित्य भी जिनेन्द्रका दर्शन
माणिक चन्द्रजीको व जाप देकर मोजन करते थे। इनमें सबसे
८ वर्षसे प्रछाल- अधिक ध्यान धर्मकी ओर माणिक चंद्रका था।
की आदत। इनको ८ वर्षकी अवस्थासे श्री मंदिरजीमें
प्रछाल पूजा करनेकी आदत थी। इसको
इन्होंने बम्बईमें आकर भी जारी रक्ष्वा। यह गुजराती दि० जैन
मंदिरमें रोज सबरे जाते, वहीं कान कर प्रछाल पूजन करते, जाप
देते व कुछ पड़कर घर आ मोजन करते थे।

१९ वर्षकी उपर तक इनका स्वाध्वाय बहुत मांमूंडी था। एक दिन यह अपने १५ वें वर्षमें अर्थात् संवत् १९२३ में पुजासे निवटकर बैठे हुए थे तब एक मारवाड़ी शास्त्रके ज्ञाता उस मंदिरमें द्रीनार्थ आये। वे इस बालकको देखकर इसके पाम बैठ गए और इससे धर्मकी चर्चा पूछने लगे। इस समय तक यद्यपि ये कुछ पढ़ते तो रहते थे, पर किसी प्रश्नका जवानी उत्तर नहीं दे सक्ते थे। उस विद्वानने इनको उपदेश दिया कि तुम नियमसे शास्त्रोंका

स्वाध्याय क्रन क्रमसे किया करो और जो

माणिकचंदका श्रास्त- बात न समझो वह किसीसे मालूम कर लिया स्वाध्याय प्रारंभ । करो । उसने कहा कि तुम श्रीपद्मपुराण और श्रीरवकरंड श्रावकालारका

स्वाध्याय पांच सात बार कर नाओ, तुम्हें बहुतमी चर्चा माल्म हो नायगी। माणिकचंद शुरूसे ही गुणबाही थे। इस नातको इन्होंने पहें बांघ उसी दिनसे श्रीपद्मपुराणका स्वाध्याय करना प्रारंभुकर दिया। माणिकचंदको गुनराती पुस्तक व समाचाग्पत्र बांचनेकं भी शौक था। घरमें फुरसतके समय यह नाना प्रकारकी पुस्तकें पढ़ते थे तथा बम्बईमें जब कभी व्याख्यान सभा सुनते थे, मौका निकालकर नाते थे और व्याख्यान सुनकर उसका मार प्रहण करते थे और तीनों भाइयोंका इस तरफ कुछ ध्यान नहीं था। व साचारण धर्म-किया व व्यापार धन्धेमें ही लीन थे।

संबत १९२४ तक मोती पुरानकी मजुरी करते रहे किन्तु बहुत सादगीसे रहने, किसी भी व्यसन मजदूरीसे व्यापारमें में न पड़ने और द्रव्यका व्यर्थ व्यय न करने आना। के कारण इनके पास इतनी पूंजी हो गई कि इन्होंने मोती पुरानेका काम छोड़ स्वयं संवत १९२५में जवाहरातका व्यापार करना शुरू कर दिया।

इम वक्त बम्बईमें यद्यपि नरसिंहपुरा जातीय सेट प्रेमचंद वम्बईमें बीसा हमड़ोंमें तौ भी बीसा हुमड़ दिगम्बर जैनियोंमें तौ प्रथम जौहरी। सबसे पहले इन्होंने ही जौहरीका काम शुरू किया । पुण्यके उद्यसे इनको व्यापारमें दिनपर दिन लाभ होता गया । पिता हीराचंदके समान इनकी भी प्रवृत्ति दान करनेमें थी। इनमें सबसे अधिक रुचि दानकी तरफ माणिक् चंदजी की थी। जो कुछ रुपया ये चारों भाई बमाते थे उसे पिताजीको पास सोंग्त थे, व ही सब हिसाब रखते थे, तथा परस्पर यह भी उहराव कर लिया था कि आमदनीमंसे अमुक रकम धर्मादा स्वातं अवस्य निकालना और इस स्क्रममेंसे जब जैसा अवसर होता था दानमें विचारपूर्वक द्रव्यको लगाते रहते थे। संबत् १९२६ की दीपमालिकामें सेट हीराचन्दने चिट्ठा बनाया और तब मालून किया कि अब इतना दृज्य हो गया है जिससे बम्बईमें दकान खोली जा सकती है।

परस्पर सम्मति करके दूकान खोलनका निध्यय किया । उस समय यह विचार पड़ा कि दृकानका माणिकचंद पानाचंद क्या नाम रक्खा जावे । तब हीरा-चंदनीने कहा कि जिनका प्रकार लेक फर्मका खुलना। . प्रवर हो उन्हींके नामसे दुकानको चळाना चाहिये । में ऐसा प्रण्यात्मा नहीं इससे नेरा नाम नहीं होना चाहिये।

तन एकाएक मोतीचंद बोल टठे कि पितानी ! हम सबमें पुण्याधिकारी, तेजस्वी और चतुर पानाचंद जीह माणिकचंद हैं इसमें इन्होंके नामसे दृकानको प्रारंभ करना चाहिये। सर्वकी सम्मति इसीमें जभी और संवन् १९२७ में माणिकचन्द पानाचन्द जीहरी नामसे दृकान-कोठी स्थापित की। गुजरात देशमें पहले छोटेका फिर बड़ेका नाम रहता है। प्रायः जब किसीका नाम लेते हैं तो पिताके साथ ही लेते हैं, जैसे यदि माणिकचंदजीका नाम लेना होगा तो माणिकचंद हीराचंद नाम कहेंगे।

गुम मुहतीमें जिनधर्मके अनुसार पूजा पाठ करके माणिक बंद पाना बंद जोंहरी नामका फर्म कायम करके अनी साव-धानीसे ज्यापार करना शुरू किया गया। क्योंकि आपकारी मंडलीमें प्रायः ऐसा होता है कि जब कोई नयी दूकान होती है तो दूसरों को बह नहीं मुहाती है और वे जिस तरह हो उसे हराना चाहते हैं। यदि ज्यापारी चतुर होता है तो सर्व दूकान दारों के उपर अपने ज्यापारकी उत्तमता, इड़ता और सत्यतासे अपना प्रभाव जमा देता है और कुछ हिनों के बाद उसका काम पका समझा जाता है। माणिक बंद और पाना चंद दोनों ही ज्यापारमें बड़े ही कुशल थे। इनकी ने कर व सचाई व विश्वासपात्रता पहलेसे ही मशहर थी। इनके हाथ मोतीका बहुत माल आने लगा और ये बहुत
नेफेंके साथ बम्ब्र्डिक प्राहकों में फिरकर व
व्यापारमें कुकलता दलालोंके द्वारा बेचने लगे। सेठ पानाचंद
सत्यता व न्याय- माल व्यरीदने में अति चतुर थे,
परायणता। जबकि सेठ माणिकचंद माल बेचनेमें अति प्रचीण थे। माणिकचंदकी
बातपर ग्राहकोंको तुरंत दिश्वास आजाता था और नो दाम
यह बताते थे उसको सहममें मान लेते थे। माणिकचंदजीका
सत्यवादीपना प्रसिद्ध था। अपनी बड़ी उमरमें जब कभी
यह किस्निको दिक्षा देते थे तो यही कहते थे कि सत्य बोलो,
सत्यव्यवहार करो, सत्यसे ही प्रतीति होती है तथा मैंन
सत्यसे ही रुपया कमाया है। ज्यापारमें विश्वासपात्रताकी

आवश्यकता है और वह प्रतीतिपना सत्य वचन और सत्ब व्यवहारसे जमता है।

इस समय सेठ पानाचंद्र और माणिकचंद्र कमसे २२ और १९ वर्ष ही के थे, तथा मोतीचंद् २४ और नवलचंद्र १६ वर्षके थे। चारों भाई मिलकर कोठीमें काम करते थे। किसी मुनीम गुमाक्तेको भी नहीं मियत किया था। मनने काम बांट लिया था। द्रव्य कमाते हुए रहते भी चारों ही भाई अपने पिताके अति इड़ उमदेशके कारण ब्रह्मचर्यमें हुए थे। अभी तक इनमेंसे किसीका लाम नहीं हुआ था, तौभी किसीको भी किसी खोंटे मार्गमें जानेका व्यसम न था। पिताश्री अब भी इनको अपने हाथसे रसोई नमाकर विकारों थे। इनको दूसरे किसी नौकरकी रसोई सामा व सिरामा पसन्द न था। सेउ हीराचंदको अपने इन चार पुत्रग्रनोंको मेल मिलापके साथ रहते हुए व सदाचारमें चलते हुए व अपनी आज्ञाका उल्लेबन न करते हुए देखकर जो हर्ष होता था उसका अनुभव बास्तवमें उसी पिताको होसक्ता है जिसके ऐसे ही उद्योगी सदाचारी कई पुत्र हों।

पाठकोंको इस बातको जानकर बहुत आश्चर्य होगा कि सेठ हीराचन्द्रेन २४ वर्षके पुत्रका भी अभी तक संड हीराचेदजीको विवाह नहीं किया था। हीराचन्द चाहते तो शोढ़ विचाहका १२ वर्षकी उम्रमें ही विवाह हो जाता, पर मेठ हीराचंद मामूली पुरुष नहीं थे। पक्षपात । यद्यपि बाह्य दृश्यमें बहुत भोले और सीम्य थे: तथा होंठ कटा हुआ था सो कोई २ परोक्षमें 'होठ कटे' के नामसे भी पुकार देने थे तथापि अपने दिल्हमें संमार व व्यवहारको अच्छी तसह सम-इते थे। एक तो उनको यह विश्वास था कि प्रीट अवस्था ही में लग्न करना चाहिय, इसंग उनकी यह इच्छा थी कि हमारे पुत्र खुब ब्यापारकुराल हैं जिससे धनवान्, हो जावें। किसी बातकी कुदालता व प्रवीणताका लाभ भले प्रकार तब ही होता है जब बिलकुल एक चित्त हो उसीपर लक्ष्य दिया जावे । विद्यार्थी नगरसे एकान्त स्थलमें जब अम्यास करता है तब उसका चित्त विद्या लाभमें निरम्तराय नमा रहता है । शहरमें या घरमें रहकर पढ़नेवाले छात्र प्रायः मौजू-शीकमें, सम्बन्धियोंके यहां जाने आनेमें, दावत स्वनेमें, मेला देखा देखनेमं, नाचरंग खेल कूदमं ऐसे लग जाते हैं कि सिवाय कुछके और सर्व अधपड़े रह जाते हैं । ऐसी दशामें यदि उनकी सम

१२, १४, १५, १६ वर्षमें कर दी गई तब फिर उनका ध्यान पढ़नेसे हटकर धुएरालका माल उड़ानेमें व खीसे मिलनेके रूपालमें बंट नाता है। फल यह होता है कि वे विद्याका लाम नहीं कर पाते। सेठ हीराचंद यह बात अच्छी तरह नानते थे। इसी लिये नब तक कि मेरे प्रत्र नौहरीके काममें प्रवीण न होंगे तब तक में इनकी लग्न नहीं करूंगा चाहे मो कुछ हो यद्यपि इनकी माता नहीं है, घरमें कोई रसोई बनानेवाला नहीं है तौमी मैं रसोई बनाकर खिलाऊंगा परंतु विवाहकी नल्दी तो नहीं करूंगा इसी दृढ़ प्रतिज्ञाके कारण अनेक सम्बन्धोंकी मांग आनेपर भी हीराचंदनींने अवतक किसीकी सगाई तक भी नहीं की, विवाह तो दृर ही रहै। रसोई खिलाते समय सेठ हीराचंद इनको न्यापारमें साहसद्यक्त होनेकी, सदाचारसे चलनेकी, व ब्रह्मचर्यकी रक्षाकी दिशा दिया करते थे।

वास्तवमें जब तक ऐसा उपकारी पिता नहीं होता तब तक सन्तान उद्योगी और साहसवान नहीं बन सकती। आनकल लाखों पिता अपने पुत्रोंके साथ अन्याय करते हैं, उनके छोटेसे गलेमें स्त्रीरूपी भारी पाषाण बांध देते हैं, वे बिचारे उस भारसे कुचले लकीरके फकीर बन ज्यों त्यों चलते हैं, अपनी बुद्धिको चमत्कृत बनानेका अवसर उनके हाथसे जाता रहता है, इससे वे विचारे शारीरिक, मानसिक व धार्मिक तथा योग्य औद्योगिक उन्नतिमें बहुत पीछे रह जाते हैं इतना ही नहीं किन्तु अवनतिके गर्तमें गिर जाते हैं और अपनी गुप्त शक्तियोंको प्रफुलित करनेके उपायसे विचार रह जाते हैं।

आनकलके मातापिताओंको सेठ हीराचंदका दृष्टान्त प्रहम

करना चाहिये और अपने प्रश्नौकों जहान्कर्यके लाम व अजहाके दौष बताकर विद्या व हुनर सिंखलाना चाहिये। जब वे सींख जावें और उसके अनुसार द्रव्य पैदा करने लगे तब ही प्रश्नोंकी लग्न करनी चाहिये, विवाह हो जानेपर एक तरहका कथन हो जाता है, जिससे नवयुवक अपनी शक्तियोंका विकाश नहीं कर सकते।

पाठकोंको यह भी जानकर आश्चर्य होगा कि इतनी उमर होनेपर भी सेठ हीराचंदनीके प्रश्नोंने अपने ब्रह्मचर्यको दृढ़ रक्खा, किसी कुसंगतिमें नहीं पड़े, किसी असत् आचारको ग्रहण नहीं किया हम दशाका भी मूल कारण सेठ हीराचंदजीकी शिक्षा और दूमरा कारण लड़कपनसे दर्शन आदि धर्मकार्योका अभ्यास था, तीसरा कारण व्यायाम था, इन सर्वको डंड मुगद्र आदि देशी कसरत व कुक्ती लड़ना आता था। वास्तवमें दृढ़ विश्वास और यथार्थ ज्ञान ही चारित्र मुधारके उपाय हैं। पिताकी शिक्षाके उपर दृढ़ प्रतीति हीने इनको योग्यमार्गी रखा और ये चारों ही सर्व तरह व्यापार कुशल होकर उन्नतिके मार्गमें अग्रगामी हो गए। प्रण्योदयसे व्यापार कुशल होकर उन्नतिके मार्गमें अग्रगामी हो गए। प्रण्योदयसे व्यापार कुशल होकर उन्नतिके मार्गमें अग्रगामी हो गए। प्रण्योदयसे व्यापार कुशल होकर उन्नतिके मार्गमें लग्नगामी हो गए। प्रण्योदयसे व्यापार किसे लगा, लक्ष्मी आने लगी और मुख व शांतिसे अपने पूज्य.



## अध्याय पांचवां।

## युवावस्था और एहस्थाश्रम ।

एक दिन सेठ मोतीचन्द अपने एक मित्रके साथ शामके वक्त बम्बईमें समुद्रके तट पर हवा खाते हुए टहल मोतीचैरकी ब्रह्म- रहे थे। मनरंजायमानकी बातें होते होते चर्च्यमें रहता। मित्रने नहा-"सेठनी! आपकी अर्दाक्किणी आपके साथ प्रेममाव रखती है कि नहीं ! बुझे

तो पुण्योदयसे ऐसी स्रोका समागम हुआ है जिससे मुझे बहुतही आराम है। वह बहुत ही सीम्य और घरके कामकाजमें इश्रष्ट है।"

सेठ मोतीचंद अपने ही समान वयस्क मित्रको देखकर चित्तमें रुजायमान हुए और सोचने लगे कि हमारा तो अभी विवाह ही नहीं हुआ है, हम क्या जवाब देवें ! फिर भी अथना मन शांभ अपने पूज्य पिताकी विक्षाको याद कर बोले-" प्रिय मित्र ! मुझे तो अभी तक विवाहकी परवाह नहीं है। मैं अच्छी तरह जानता हं कि विवाहके बन्धनमें पड़नेके पहले मनु-ष्यको धनपात्र, व्यवसाई, दृदशरीर, तथा पक बीर्च्य हीना चाहिये। सो माई, मेरे प्रण्यके उदबसे वह सन नार्ते मेरे और मेरे माइयोंके उद्यमसे मुझे आकर प्राप्त हुई हैं। नंब मेरी उम्र २४ वर्षसे अधिक है। अनतक तो मुझे इसका स्थाल न था पर जाज तुम्हारे पूछनेसे ग्रहे इंग्डं स्थाल आबा है किं अवयोग्य अझीहिणीमा साम हो तो उचित है। तीनी हे किंत्र !

मैं इसका कुछ उद्यम करना उचित नहीं समझता हूं क्योंिक मेरे पूज्य पिता मेरे हितमें पूर्ण उद्योगी हैं, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है । वे जब उचित समझेंगे तब मुझे गृही बनावेंगे तबतक मैं अति स्वतंत्र रहता हूँ और ब्रह्मचर्यको पाल, व्यायामकर, योग्य मोजन ले, व्यापारमें उद्यमी रह तथा सदाचारसे चल अपने धर्ममें विश्वास रखता हुआ पूर्ण मुखी हो रहा हूं । हे मित्र ! वास्तवमें यह स्त्री तो शारीरके वीय्यको नष्ट करनेवाली और बहुतसी आकुलताओं में फंसानेवाली है । हां, गृहस्थको संतानके लामार्थ पत्नीकी आवश्य-क्रता होती हे ।

मित्र भी बहुत विचारशील थे—बोले—" सेठजी ! आपके विचार बहुतही अच्छे हैं, मुझे बड़ा हीआनन्द हुआ है । असलमें ब्रह्मचर्यके समान इस मनुष्यका कोई मित्र नहीं है । परमात्माका ध्यान वही कर सक्ता है जो इसको अच्छी तरह पालता है । आप इसकी चिन्ता न करें । में जानता हूं आपके पुज्य पिता बड़े ही गंभीर विचारवाले और धर्मात्मा हैं । आपको अपने जीवनका आधार उनहीं को समझकर उनमें भक्ति रखनी चाहिये । फिर मित्रने पुछा कि आजकल आपका ज्यापार कैसा चलता है ? सेठ मोतीचंद न कहा कि मेरे छोटे भाई पानाचंद और माणिकचंद ज्यापारमें बहुत कुशल और भाग्यशाली है उनके निमित्तसे बाजारमें बहुत अच्छा काम चल रहा है । यद्यपि अभी लक्षपित तो हम अपनेको नहीं कह सक्ते पर सहस्रोंकी कितनी संख्या तक हम पहुँच गए हैं और पहुँचते जाते हैं । इमारे पानाचंदकी निगाह माल खरीदनेमें ऐसी प्रुषड़ है कि के जिस भालको लेते हैं उसमें बहुत अच्छा

नफा उठाते हैं। मित्र मोतीचंदके इन शब्दोंको सुनकर चित्तमें कहने लगे कि वास्तवमें यह बहुत ही लायक मनुष्य है नो अपने छोटे भाइयोंके गुणानुवाद परोक्षमें कर रहा है और अपने आपको उनके सामने हीन जता रहा है, यही आर्य्ययन है, यही सज्जनता है, यही गुणप्राहकता है, यही एकताका कारण है। यदि परस्पर एक दूसरेके गुणोंको ग्रहण किया जाय और प्रत्यक्ष या परोक्ष एकसे ही भावोंसे गुणोंका कीर्त्तन किया जाय और दोष व छिद्र देखनेमें कम दृष्टि दी जावे तो एकतादेवी उनसे कभी नहीं रूठती है, जहाँ एक दूसरेके अवगुणको ब्रहणकर टीका की जाती है वहाँसे एकता रूट जाती है और फूट चंडालिनीका बास हो जाता है यही गुणप्राहकताका गुण इनके पिता सेठ हीराचंद्रमें है। हर्षकी बात है कि इन भाइयों में वही गुण है तब ही ये चारों भाई एक साथ मिलकर न्यापार करते और रहते हैं- किसी प्रकारकी भिन्नता देखनेमें नहीं आती है। इस तरह अनेक बातें करते २ दोनों मित्र हवा खाकर छौट आए !

सेठ मोतीचंद उस रात्रिको घरमें बैठे थे पर मित्रका वह प्रश्न इनके दिमागसे नहीं नाता था इससे कुछ चित्तपर उदासी सी छा रहीं थी । सेठ हीराचंदनी नित्य रात्रिको अपने चारों पुत्रोंसे दिनभरकी बातें पूछा करते थे तब परस्पर मित्रवत गोष्ठी करते हुए पांचों जने अपना थोड़ा समय विताते थे। यह मित्रगोष्ठी भी एकताके स्था-पनका एक मुख्य कारण है । इसके निमित्तसे किसी तरहका अवि-दवास व गैरलमझपना नहीं होने पाता है। उस रात्रिको सेठ हीराचंदने मोतीचंदको कुछ उदास देखा। सर्व भाइयोंके सामने तो सेटनीने इसका कारण पूछना उचित नहीं समझा नयों कि यह न्याय ही है।
कि को अंतः करणका रहस्य है वह एकान्तमें ही कहा जाता हैं।
जन मोती चंद शयनालयको गए तब सेठ हीराचंद कुछ रात्रि बीतने
पर उनको जगा उनकी उदासीका कारण मालूम करने लगे। मोतीचंदको मित्रके प्रश्नकी बात कहते हुए बहुत लज्जा आती थी पर
पितासे किसी बातको छिपाना भी वे उचित नहीं समझते थे।
उन्होंने थोड़ी देरबाद संध्याकालकी वार्ताको कह दिया।

सेठ हीराचंद अपने मनमें बिचारने छगे कि अब मुझे देर नहीं करना चाहिये और अपने पुत्रोंकी शीघ छग्न मोतीचंदका विवाह । करना चाहिये । मोतीचंदको कहने छगे कि तुमने उसे बहुत योग्य उत्तर दिया । हमने तुमारे छिये बोग्य सम्बन्ध ठीक कर छिया है । मोतीचंदने सिर नीचा कर छिया ।

पाठकोंको पहले कहा जा चुका है कि हुमड़ोंका विस्तार ईडरकी ओर भी था। गुजरात देशमें ईडर एक देशीराज्य है। वहाँपर अन भी वीसाह्मड़ और दश्महूमड़ जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, भट्टारककी गद्दी है, और एक प्राचीन दि० जैन शास्त्रभंडार भी है। वहीं गांघी मोतीचंद फूलचंद वीसाह्मड़ एक धर्मात्मा दिगम्बर जैमी रहते थे। संत्रत १९१२ में उनको एक कन्याका छाभ हुआ जिसका नाम स्वपन्तनी था। यह कन्या स्वरूपमें सुन्दर थी, इसके पिता भी बहुत बुद्धिमान और धार्मिक नियमोंसे परिचित थे। इन्होंने स्वपन्तनीको बहे प्रेमसे पाला था, इसे शुक्को ही

श्रीनिनवंदिरजीमें हे नाया करते ये । इस कन्यामें ऐसी आदत पह

गईं थी कि यह श्री जिनेन्द्रके दर्शनमें बड़े माब लगाती व खूब स्तुति पदकर नमस्कार करती थी। मंदिरमें हरएक नरनारी इसे देलकर प्रसन्न होते थे। यह कन्या मातापिताकी अति आज्ञा-कारिणी थी। उस समय ईंडरमें भी कन्याओंकी शिक्षाका न तो कुछ प्रबन्ध था और न मातापिताओंको यह भाव ही पैदा होता था कि हम कन्याओंको पढ़ावें। बिना पुस्तकके ज्ञानके भी रूपवती-की माताने इसे घरका सर्व कामकान बहुत ही छुपड़ रीतिसे करना बता दिया था। रसोईकी विधि व शुद्धता, पानी छाननेकी विधि, अत्र वीनना, घरकी सफाई, वस्र सीना आदि सर्व कार्मोको यह बहुत चतुराईसे करती थी। कभी २ पिता इसको अपने साथ धर्मी-पदेश मुनानेको छे जाते थे यह बहुत रुचिसे मुनती और जो मुनती उसे धारण कर लेती थी, इसका चित्त धर्मकथा व धर्मसेवन-में खूब ही खबळीन रहता था। विवेक और दया भी इसके चित्तमें य जिससे हरएक काममें जीवरक्षाका बहुत विचार रखती थी। यह कन्या मातापिता व कुटुम्नियोंकी अति ही प्यारी थी। माताके आग्रह होनेपर भी गांधी मोतीचंदने रूपवतीकी छन्न अल्प क्यमें करना ठीक नहीं समझा । गांधी मोतीचंद यही चाहते थे कि किसी बहुत योग्य सम्बन्धके साथ इसका पाणिप्रहण किया जाय। गुजरातके हुमड़ोंमें उन दिनों सेठ हीराचंद और उनके प्रत्रोंकी कीर्तिकी सुगंध फैल गई थी और हरएक उनके उद्योगकी सराहना करता था। ईंडरमें भी यही वर्चा होती थी। गांघी मोतीचंदका मन भी यही चाहने लगा कि इस दन्याका सम्बन्ध बम्बईके जीहरी सेठके साथ करें, जिसमें इसका नीवन बहुत सुखारे बीते और यह दान व धर्म खूब ही कर सके क्योंकि इसका चित्त अति ही आई और कोमल है। एक दफे गांधी मोतीचंद उस कन्याके साथ बम्बई पधारे और वहाँ मौका पाकर सेठ हीराचंदसे मिले और निवेदन किया कि हमारी कन्या रूपवतीको हम आपके श्रेष्ठ पुत्रको देना चाहते हैं।

हीराचंदने उसका जन्मपत्र माँगा तथा वह भी इच्छा प्रगट कि कि यदि आप रूपवतीको यहां छाए हों तो मैं उसे किसी मौकेपर देल भी हूँ । गांघी मोतीचंद इस बातसे बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा कि कल श्री जिनमंदिरजीमें जब वह दर्शन करने जायगी तब आप उसको देख सक्ते हैं। सेठ हीराचंद मंदिरजीमें वंटा आघ घंटा रोज सबेरे बैठते थे। दूसरे दिन गांघी मोती चंदके साथ रूपवती बहुत ही विनयके साथ द्रव्यको लिये दर्शन करनेके लिये श्री जिन मंदिरजीमें गई, उस समय सेठ हीराचंद शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। गांधीजीके साथ एक कत्याको द्दीन करते हुए देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए, उसकी चाल, दाल, विनय मिक्त, स्तुति पठन, सौम्य और मुन्दर रूप सेट हीराचंदके मनमें नक्श हो गए और उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि इस कन्यासे ही मेरा पुत्र सुशोभित हो, यही सची गृहिणी होगी । दूसरे समय पर गांधी मोतीचंद अब फिर सेठ हीराचंदजीसे मिले तब परस्पर वार्तालापमें एक दूसरेकी पसन्दगी हो गई, केवल जन्म पत्रिकाओंका विचार ही करना शेष रहा । थोड़े दिनके बाद यह विचार भी हो लिया ।

जिस दिन सेठ मोतीचंद और एक मित्रसे बम्बईके समुद्र-तट पर वार्तालाप हुआ था उसीके तीन मासबाद संवत् १९२८ में जब मोतीचंद २९ वर्षके ये सेठ हीराचंद इनके विवाहकी तय्यारियां

करने छगे। इस समय सेठजीके चित्तमें बड़ा भारी उत्साह था क्योंकि अपने नीवनमें यह पहला ही पुत्रका विवाह था जो इनको करना था। सूरतकी स्थितिसे अब इनकी स्थिति बहुत बदल गई है, बम्बईमें भी अब यह सेठोंकी गिनतीमें है तथा अपनी हमड़ जातिमें तो यह धनादचोंमें प्रसिद्ध हैं। इनका व्यापार ज्यों २ दिन वीतते जाते हैं चमकता जाता है।पुण्यात्मा पानाचंद और माणिकचंद जिस सौदेमें हाथ डालते हैं लाभ उठाते हैं। सेट हीराचंदने एक रात्रिको अपने चारों पुत्रोंको एकत्र कर सम्मति ली कि इस विवाहमें कितना रुपया खर्च करना चाहिये । जिस समय इस बातको छेडा गया। नवलचंद जिनकी उपर १७ वर्षकी थी और जिनको कुछ वाहरी चीजोंका शौक अधिक <mark>था यका</mark>यक कहने छगे कि पिताजी! आजकल हम लोगोंका बहुत प्रसिद्ध हैं, हमें इस विवाहमें खूब धन चाहिये जिसमें हमारी खूब प्रशंसा हो और जातिमें महत्वना प्रगटे । ईंडर राज्यमें भी हमारी खूत्र ही प्रसिद्ध हो । इसकी बात सुनकर सेठ हीराचंद हंसे और बोले कि हमको बहुत उन्नलना कूदना नहीं चाहिये, हमें अपनी सादी चाल व सादा स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिये। व्यापारका क्या भरोसा है ! आज यदि लाम है कल हानि हो जाय तो क्या किया जायगा ? इससे हमको खूब विचार करके एक रकम इस निमित्त काढ़नी चाहिये और न्या-पारमें किसी तरहकी जोखम आ जाने सो काम नहीं करना चाहिये। सेठ पानाचंद बोले, पिताजी ! आप कोई शंका न करें। हमारे व्यापारमें हानि की कोई आशंका नहीं है। आपके प्रताससे जो मारू अपनी निगाहमें आता है और खरीदा जाता है उसमें लाभ ही होता है। आप दिल खोलकर खर्च कीजिये। अपने माग्यके अनुसार हम और बहुत कमा लेवेंगे। माणिकचंदजीने कहा कि भाई पानाचंद, यह तो तुम्हारा कहना ठीक है पर हरएक काममें पूर्वापर विचारकी नरूरत है। बाजारकी स्थितिको पलटते देर नहीं लगती है। इससे हम लोग कितना रुपया इस विवाहके निमित्त निकालें इसका पका आंकड़ा बांधदेना चाहिये, पिताजी उसीमें सब काम निबटावेंगे। पानाचंदजीने पितासे पूछा कि कितनी रकम आप खरचना चाहते हैं? सेठ हीराचंदजीने कहा कि विवाहमें जितना खर्च किया जाय उतना हो सक्ता है। १ हजारसे १० हजारतक खर्च हो सक्ता है, पर मेरी समझमें २०००) दो हजार रुपयेका अनुमान बांधा जाय तो वश होगा। सर्व भाइयोंके ध्यानमें यह बात जंच गई और तय होगया कि दो हजार रुपये खर्च किये जावें।

विवाहका समय निकट आते ही बम्बईमें तय्यारियां होने लगीं और नियत मितीपर वारात ईडर पहुंची। सूरत और बम्बई-से बहुतसे माई शामिल हुए। ईडरमें गाजेबाजे आदिसे बहुतही धूम-धाम ला गई। बम्बईसे बारात आई है इस सबरसे बहुतसे नरनारी उसके देखनेको उत्कृष्ट हो घरसे निकल आए। २५ वर्षके युवान बरको बोड़ेपर सवार देखकर बुद्धिमान लोग बहुतही गुण गाते थे कि बास्तवमें विवाह तो इसी जमरमें ही करना चाहिये। बारात गांधी मोतीचंदके द्वारपर पहुंची। उसके उपर एक खिड़कीमें समजत अतिशय बौदनमें परिपूर्ण केडी थी।

अन इसकी अवस्था १६ अपकी थी। खद्यपि ईडरमें और छोग अपनी २ कन्याओं की छन्न १२, १३ वर्ष ही में कर देते हैं पर यह खास छग्न बम्बईबाछोंके सम्बन्धके निमित्तसे इस अवस्थामें हुई। यदि देखा जाय तो १६ और २५ वर्षीया सम्बन्ध बहुत ही प्रौढ़ और योग्य होता है । कन्या रूपवती अपने पतिको अति दृद नवान देखकर बहुत प्रसन्न हुई। जातिकी रसमके अनुसार लग्नादि कियायें हुईं। गांधी मोतीचंदने बरातियोंका बहुत ही सन्मान किया, किसी प्रकारकी दिल मैली न हुई जैसी कि बहुधा आजकलके मूर्ख सम्बन्ध करने वालोंमें हो जाया करती हैं। शुभ महूर्त्तमें, बारात विदा होकर ईडरसे सुरत आई। सूरतमें अपने जन्मके मकानमें ही सेठ मोतीचंद आदि उहरे। वहाँ अपनी नव वधूको देलकर यह बहुत ही गदगद बदन हो गए और ऐसी सौम्य ब रूप-वान वधूको पाकर अपने पुण्यके तीत्र उदयको मानते हुए । कुछ दिनों बाद रूपवतीका अपने पिताके घर आना हुआ । सेट मोतीचद व्यापारार्थ बम्बई आ गए । अभी इनको अपनी पत्नीसे सांसारिक प्रेम करनेका अवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

सेठ हीराचंद्जीने सुरतमें आकर सेठ घेलाभाई घरमचंदजी तासवालाकी कन्या फूलकुमरीसे पानाचंद-

सेठ पानाचंदका की लग्न करनेका निश्चय किया, चार मास विवाह। पीछे ही विवाहकी मिती नियत की । सेठजी नम्बई गए और पहलेकी तरह इस विवाहमें

मी २०००) रु० खरचनेका निश्चय करके ठीक मिती पर विवाहका प्रबन्ध हुआ । पानाचंदकी अवस्था २३ वर्षके अनुमान थी। फूलकुमरी करीन १४ वर्षकी थी, पर शरीरमें मुकुमारपना अधिक होनेसे बहुषा अखरू रहा करती थी। शुम मुहूर्तमें दोनोंका पाणि-म्रहण हुआ। सूरत नगरमें इस विवाहकी खूब धूमधाम हुई। सेठ हीराचंद और सेट घेलाभाई तासवालाने संबंधियोंका यथायोग्य सत्कार करनेमें कोई त्रुटि नहीं की।

सेठ हीराचंद अपने दो प्रत्रोंका विवाह कर बहुत ही संतुष्ट हुए । इनमें किसी तरहका अपयश न पाते हुए अपनेको कृतार्थ मानते हुए ।

थोड़े दिनोंके बाद मोतीचंद और पानाचंदकी पित्नयाँ वम्बईमें आ गई । अब सेठ हीराचंदको अपने हाथसे रूपवतीका सुघडपना। रसोई बनानेसे छुटी मिली। ये दोनों स्त्रियां घरका सर्व काम कर लेती थी। दोनोंमें विशेष चतुर रूपवती थी जो अकेले ही सर्व कामकाज करनेमें निरालस्य थी। पानाचंदकी स्त्री निर्बल्धारीर होनेके कारण वरके काममें अधिक मदद नहीं दे सकती थी तौभी रूपवतीको इसका कोई दुःख न था, जैसा बहुधा स्त्रियोंमें हो जाया करता है कि परस्पर द्वेष व ईवीमावसे प्रेम नहीं रखते सो बात इन दोनोंमें न थी। रूपवती बहुत ही सहन्दाल, समझदार और धर्मात्मा थी। बहुत ही आनन्दसे सारे कुटुम्को हर तरह तृप्त रखती थी।

थोडे ही दिन पीछे रूपवती गर्भावस्थाको प्राप्त हुई । सेठ हीराचंद और मोतीचंदके दिल्लमें बहुतही हर्ष रूपवतीको कन्या हुआ । तेउ हीराचंदको आशा हुई कि अब लाभ । पौत्रका मुख देखूंगा और जन्मोत्सव भले प्रकार करूंगा । ९ मास पीछे रूपवतीने प्रती- का जन्म दिया। यद्यपि इससे सेठ हीराचंदजीकी बह आशा पूरी नहीं हुई क्योंकि संसारमें सर्व ही काम इच्छानुसार होना अतिशय दुर्छभ है तथापि पुत्रीके होनेमें भी यथायोग्य दान पूजा व उत्सव मनाया गया। गांधी मोतीचंदको भी बहुत हर्ष हुआ। रूपवती इसकन्याको प्राप्त कर बहुत तृप्त हुई और बहुत होशियारीसे उसे पालने लगी। अब सेठ हीराचंदके कुटुम्बकोएक धनाढ्य, न्याय-वान गृहस्थीको जैसा संतोष होता है ऐसा संतोष रहने लगा, सो ठीक ही है, जब पुण्यका इंडदय होता है तब सांसारिक अवस्थाएं साताकारी प्राप्त होती हैं।

उधर व्यापारमें भी दिनपर दिन वृद्धि हो रही थी। तो मोतीका व्यापार पहले साधारण था वह अब पुण्योदयसे व्यापारमें बहुत बढ़ गया था। यह मोतीके बढ़े व्यापारी वृद्धि। बाजारमें माने जाने हो। संबत् १९३० तक इनके यहाँ हक्ष्मीका अच्छा वास हो चला। इस सालसे यह थोकबंध माल एकत्रकर बम्बईमें व परदेशमें भी बेचने लो। हुमड़ दिगम्बरियोंमें इनको सर्वसे पहले सफलीभूत सुनकर इधर उधरके बहुतसे दिगम्बरी हुमड़ व्यापारार्थ बम्बई आने लो और अपने र प्राम लौटकर इन सेठोंके व्यापार, सादे स्वमाव और कीर्तिकी महिमा गाने लो। यह भी एक बड़े महत्वकी बात इन चारों माइयोंमें थी कि लक्ष्मीकी लक्षिक साथ विनय, नम्नता और सादगी बढ़ती जाती थी—अमिमान तो पास सूकर नहीं निकलता था।

नारी भाईयोंमें सेठ माणिकचन्दकी आदत मिलनसारीकी अच्छी थी। यह सबसे मिलते, उनके दुःस माणिकचंदका परो- सुखको पृंछते और जो कुछ अपनेसे बनता मदद देते थे। पाठकोंको मालूम ही है कि पकारी स्वभाव । यह रोज श्री जिनमंदिरजीमें प्रछाल पूजन स्वाध्यायादि कार्य्य बड़े प्रेमसे करते थे। बम्बई नगरमें ज्यापारादि अनेक कार्येकि निमित्त बहुवा अनेक देशोंके जैनी माई आते और नव वे दर्शनार्थ मंदिरजीमें जाते तो जहाँ तक सेठ माणिकचन्द्रजीकी दृष्टि पहती व मौका होता यह अवश्य उन सबसे मिळते, उनका हाल पूछने और उनके कामकाजमें हर तरह सहायता देते थे। बहुतसे दक्षिण व उत्तरके जैनियोंके छौकिक और धार्मिक काम उक्त सेठकी मददसे हो जाते थे। इनके प्रतिदिनका थोड़ा समय इस प्रकारके परोपकारमें भी जाता था । कई माई जो आनीविकार्थ बम्बई आते उनको यह आ नीविकार्मे जोड़ देते व जब तक विना द्रव्य कमाए उनको हो चार मास रहना पड़ता यह उनके भोजन खर्चका व ठहर्रनेका प्रबंध भी कर देते थे। छोटे व बड़े सबके साथ बहुत ही प्रीतिसे बात करना इनका एक जातीय स्वभाव था। अन्य तीन भाइयों में मिलनसारीका गुण बहुत ही साधारण था। यदि कोई चाह करके ं बात करता तो ये सुनंकर उसको उत्तर देते थे । ये तीनों माई अपने नित्यके चाल् काम करनेमें ही दत्तचित रहतेथे परोपकारकी स्तोंन नहीं कार्क ये तीं भी अभिमानी व संकुचित चित्त नहीं थे। निस परोपकारके काममें सेठ माणिकचंद द्रान्य सर्वनेकी इच्छा प्रशुट

करते ये सर्व बड़ी ही खुर्ज़ीसे राजी हो नाते थे। सेठ माणिक बंद परोपकारी व धर्मतमा है यह देखकर सर्व भाइयोंको बहुत ही हर्ष होता था। इस कारण माणिक बंदनीका सुयश अभी ही से दूर दूर तक फैलना शुरू हो गया था। बहुतसे परदेशी हुमड़ बम्बईमें आकर नव यह मालूप करते कि सेठ माणिक बंदनी अभी तक कुमारे हैं तब उनके चित्तमें यह इच्छा हो उठती कि हम अपनी कन्या ऐसे ही योग्य पुरुषको परणावे तो उसका जन्म सफल हो।

हा याग्य पुरुषका परणाव ता उसका जन्म सफल हा।

शोलापुर जिलेके करमाला तालुकेके नामेजाजवाला

प्रामनिवासी एक मुख्य हुमड़ साह पानाचंद
सेट माणिकचंदजीका उगरचंद दोभाड़ा भीएक दफे बम्बई आये

बिवाह। और सेट माणिकचंदको प्रस्थक्ष देखकर
बहुत ही प्रसन्न हुए। इनके तीन कन्यायें
और एक प्रत्र था। जिनमें दो कन्यायोंका विवाह हो चुका था और
तीसरी कन्या कुमारी थी जो बहुतही सौम्य शरीर, गुणशाली

तीसरी कन्या कुमारी थी जो बहुतही सौम्य शरीर, गुणशाली और चतुर थी, जिसका नाम भी चतुरमती था। इसकी माताका नाम माणिकबाई था। इस कन्याके लामसे मातापिताको बढ़ा भारी हर्ष था और इसे सब ही बाहते थे। यह अपने मातापिताकी आज्ञानुसार चलनेवाली व माताकि सिखानेसे घरके कामकाजमें अति प्रवीण हो गई थी। मातापिता वह चाहते थे कि इसको किसी प्रसिद्ध प्रत्वके साथ ही परणाया जाय। स्रतके इन चारों भाइयोंकी कीर्ति दूर र तक इमडों में कैली हुई थी। शाह पानाचंद होमाहा माणिकचंद सेटको कुमारा जानकर बहुत ही संतोषित हो अपने चित्तमें यही अबते हुए कि हम अपनी चतु रचाईको इन्हींके

साथ परणाएंगे । शाहजी सेठ हीराचंदसे मिले और अपनी इच्छा प्रगट की। सेठ हीराचंद भी यह चाहते थे कि माणिकचंदकी आयु अब २२ वर्षकी हो गई है अतएव इसका विवाह हो जाना ही मुना-सिब है, पर सेठजी बहुत चतुर थें। वे हीरेको विना देखे हीरा कहनेवाले नहीं थे। शाह पानाचंदजीको कहा कि यदि आपकी इच्छा अपनी कन्या देनेकी है तो एक दंफ आप उसे लेकर बम्बई आइये, मैंउसे देखकर ब जन्म पत्री जांचकर आपसे पका सम्बन्ध करूंगा। साह पानाचंदको तो यह खटका था, शायद सेट माणिक वंदकी सगाई कहीं और हो गई हो तो हमें निराश होना पड़ेगा सो अब वह शंका निकर्ल गई और वह निश्चय हुआ कि अवस्य मेरी मनोकामना पूर्ण होगी क्योंकि वह कन्या भी एक भाग्यशाली है। कौन ऐसा है जो उसके गु-णोंको पसन्द न करें ? पानाचंदने सेठ हीराचंदजीको कहा कि आपकी इच्छानुसार ही कार्य्य होगा । कुछ काल पीछे दोभाडाजी बम्बईमें व्यापारिक काम करके छोटे और अपनी पत्नी व चतुरमतीको साथ लेकर श्री कुंथलगिरीकी यात्रा करते हुये बम्बई पधारे और अवसर पाकर सेठ हीराचंदजीको खबर दी कि कल आप मंदिरजीमें मेरी कन्याका निरीक्षण करें । दूसरे दिन साह पानाचंद दोभाड़ा सपत्नीक चतुरमतीके साथ श्री जिनमंदिरजी गए । उस समय सेट हीराचंद स्वाध्यायसे निवृत्त हो समतासे बैठे थे इतनेमें देखते क्या हैं कि एक कन्या चंद्रमाके समान अपनी मुखकी सौम्यताको प्रगट करती हुई बहुत विनयके साथ मुंह नीचा किये जमीनको देखती हुई हाथमें एक बाट-कीमें सामग्री लिये हुए अति कोमलाङ्गी सुघड़पनेको घारे हुए एक बड़ी स्त्रीके साथ मंदिरनीके भीतर आई । पीछेसे शाह पानाचन्दजी

दोभाडा भी आए । इनको देखते ही सेठ हीराचेम्दमे निश्चयंकर लिया कि मही वह कन्या है जिसके छिये मणिकचन्दकी दोना-ड़ानीने चाहा है। इसको विनयसे दर्शन करते, सामग्री चढ़ाते, स्तृति करते, प्रदंशिणा देते व नगरकार करते हुवै देखकर हीरा वदनी बहुतही रानी हुए तथा इसके गुर्णीकी सखकसे हीरा वंदनीकी निश्चय हो गया कि माणिकचंदको हर प्रकार प्रसन्न करनेवाली यह कत्या होगी । उधर सेठ माणिकचंदनी मी स्वाध्याय कर रहे थे । एकाएक वे उठे और उनकी दृष्टि इस कन्याके मुखपर पढ़ी, पड़नेके साथ ही इनका मन उसको अपने अंतःकरणमें रखकर लोमाबमान हो मये। दक्षिण व गुनरातकी श्रियोंमें परदा रखनेका रिवाम न अबहै और न पहिले था। यह परदेका रिवाम बंगाल, बिहार, युक्तप्रांत और पंनावमें मुसल्पानोंके विशेष सम्बन्धसे ही वला है। कह कन्या अपनी माताके साथ एक कोनेमें नाप करने बैठ गईं। साह पानाचंद मी जाप पाठ करने लगे। अपने स्वाच्याय करनेके ह्थान पर सेठ माणिकचन्द्रजी फिर बैटकर एक और शासको निकाल बाहरसे देखने लगे पर इनका उस कन्याके रूपालमें उलझ गया था। उत्तर वह कन्या जन अपनी माताके साथ उठी और चलते हुए जब फिर श्री जिनेन्द्रके े सन्मुख नमस्कार करनेको आई तब नमस्कार करनेके पीछे चलते हुए उसकी दृष्टि सेठ माणिकचंद पर पड़ी और उसके हृदयने उसको यही गवाही दी कि यदि यह कुमारे हो तो मेरे पति होने योग्य वही हैं। इस कल्बाकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके होगी। दूसरे समयकर शाह पानाचंद दोनाड़ा सेठ हीराचंदजीसे

मिले और वातचीत करके व जन्मपत्र आदि देख दिखा कर इस सम्बन्धका पक्का निश्चय कर लिया और शीघ्र ही विवाहकी मिती तय करली।

एक दिन सेठ हीराचंद मोतीचंद और पानाचंदको माणिकचंदके इस सम्बन्ध होनेकी बात कह रहे थे व चतुरमती कन्याकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे, कारणवश सेठ माणिकचंद भी उस समय घरमें आए और उनके कानमें यह सब शब्द सुन पढ़े। इन शब्दोंके सुननेसे सेठ माणिकचंदजीको जो हर्ष हुआ वह वचन अगोचर है। वह जिस रूपको अपने चित्तमें बिठा चुके थे, जिसकी मूर्तिका नक्श अपने अंतःकरणकी भूमिपर जमा चुके थे, जिसकी पूर्णिका नक्श सुगंध अपनेको स्पर्शित करानेके लिये आकर्षण कर चुकी थी, उसके लामका हद निश्चय जानकर, उससे साक्षात्कार होनेका हद विश्वास कर व उस मूर्तिके साक्षात् प्रहणका उमंग धारकर सेठ माणिकचंद अपनी युवावस्थाके निमित्त काम भावके विचारों में उल्झकर मन मोदक बनाने लगे।

२२ वर्षकी आयु धारी सेठ माणिकचंदकी वारातमें बम्बई व सूरत-के बहुतसे हूमड़ोंको छेकर सेठ हीराचंद दक्षिणकी ओर रवाना हुए । वहाँपर महाराष्ट्रदेशकी शोमा इनको गुनरातकी अपेक्षा एक विस्थणता बताती थी । सेठ हीराचंदने अपने पुत्रोंसे सम्मित करके इस विवाहमें २०००) रु. खर्च करनेका निश्चय किया । बहुतही धूमधामसे नाजजनवला प्राममें बारात पहुँची । गांववाले बम्बईके सेठों व स्रतके गुनरातियोंकी पगड़ियोंको देखकर आश्चर्यान्वित इए और बदुरमतीके माग्यकी सराहना करने लगे । सारे ही गांववाले सेट माणिकचंदको सिंह समान तेजस्वी, २२ वर्षका नवयुवक और बिछ्ड देखकर बहुतही आनन्दित हुए और ऐसा उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करलेनेके निमित्त शाह पानाचंद दोभाड़ाकी बुद्धिमानीकी खून प्रशंसा करने लगे ।

शुभ महूर्तमें लक्षादिक कियाएँ हुईं। जिस समय सेठ माणिकचंदका हाथ चतुरमतीके हाथसे मिलाया गया उस समय दोनोंको परस्पर स्पर्श होनेसे ऐसा हर्षभाव हुआ कि जैसा किसीको अमृतरसके पीने व चिन्तामणि रत्नके लाभसे होता है। सो बात ठीक ही है जहाँ प्रेमभावका सम्बन्ध होता है वहीं अपनी कल्पनासे रतिपना झलकता है। सांसारिक प्रख मनकी कल्पनाका फल है। इस विवाहमें श्री जिनमंदिरजीको व अन्य स्थानोंको दान धर्म भी अच्छी तरह किया गया।

इस विवाहको पूर्ण करके और नवीन बहुको लिबाकर सेठ हीराचंदनी बम्बई आए और थोड़े दिन सु-रूपमतीकी पुत्रीका खसे रहे कि एकाएक सेठ मोतीचंदकी पुत्री एक रात्रिको अतिशय शीत पवनके छग परलोक। ञानेसे बीमार पड़ गई। कुछ दिनतक बीमार रही। उसके अच्छे होनेके छिये खूब रुपये खर्च हुए पर वह अच्छी न हुई। उसकी आयुका अंत आन पहुंचा और वह सारे कुटुम्नको उदास करके व रूपवतीको अतिक्रेशित अवस्थामें छोड इस नहमयी शरीरको छोड़कर चलदी-उसका आत्मा अन्य पर्या-यको प्राप्त हो गया।

इस समय सेठ हीराचंदजीको जो दु:ल हुवा, रूपमतीको

नो होश हुवा व मोतीचंदको नो उदासी हुई उसको वे ही जानंत हैं। संस्थारका चारित्र ऐसा हंगेंजिक है कि किसीका मरोसा नहीं है। जिस क्सुपर यह आस्था की जाती है कि यह वस्तु हमारे पास बनी रहेगी वही वस्तु कालान्तरमें नव लुस हो माती है तब इस क्षुद्र मनुष्यका कोई वश नहीं बलता और यह हाथ अलकर रह नाता है। जिस कुटुम्बको बोहे ही दिन पहले सेठ बाणिकचंदनीके विवाहसे हुवे हुआ था उसीको इस समय शोक प्रवाहमें बहवा पड़ा।

थोड़े ही दिन पीछे सेठ हीराचंदनीके माव श्री के झरिया-केस्रियाजीकी यात्रा। जिनियोंको इस अंतिराय क्षेत्रकी पूर्ण मक्ति है । यह क्षेत्र उदयपुर राज्यमें धुलेत्र व ऋषभवेष नामके शाममें है। नहाँ यह क्षेत्र है वहाँ अति प्राचीन श्रीऋषभदेवजी जैनियोंके प्रयम तीर्थकरकी बहुत ही मनोज्ञ और सौम्य दिगम्बर जैन निम्ब मुड मंदिरत्रीमें विरानमान है। बही केशरियाजीके नामसे प्रसिद्ध हो गया है। प्रायः जैनियों में मी ऐसे लोग पाए जाते हैं जो किसी खैकिक कामकी सिद्धिके लिये ऐसी कामना करते हैं कि बदि इमारा अमुक कार्य्य सिद्ध हो जायगा तो हम अमुक काम करेंचे । किसी प्रसिद्ध घनाट्यने यह मावना की होसी कि हमारा अमुक स्थम हो जायगा तो हम अमुक तौलमर केरार ऋडावेंसे। उस कार्यकी सिद्धि उसके पूर्व पुण्यके उदयसे हुई पर उसने कही विश्वास कर लिया कि मैंने जो मानता मांगी भी उसको श्री सह-पमदेवसीने पूर्व कर दी, उसने बहां बहुतसी केदार अवह्रं । यह

नात ज्यों न प्रसिद्ध क्क्ष्रें और लोग भी ऐसा करने लगे । इस तरह इस क्षेत्र व प्रतिमा दोनोंको केशरियाजीके नामसे पुकारने छगे। यह भन्य मूर्ति करीब ६ फुट ऋंची पद्मासन स्थाम वर्ण अति सौम्य है। इस पर कोई सम्बत नहीं है इससे यह संबत छिलनेके रिकाजसे पहलेकी निर्मापित है। इसके चारों ओर और भी दि॰ जैन मूर्तियां एक धातुपटमें अंकित हैं। इस मूल मैदिस्के चारों ओर और भी वेदिया हैं जिनमें दि॰ जैन मूर्तियां विसनमान हैं, मन्दिरके चारों ओर एक बड़ा भारी कीट हैं त्रिसको सामकाङा निवासी हुमड़ जातीय दिसम्बर जैनी सेठ धनेजी करणजीने सं० १८६३ में क्तक्या था। इस क्षेत्रकी भक्ति करनेको दिगम्बर क्षेताम्बर सर्व जैनी जाते हैं। पहले सर्व प्रवस्य दि॰ जैनियोंके भट्टारकोंके हायमें था, पीछे उनकी डीलर्से राज्यने एक कमेटीके आधीन किया है जिसमें ८ मेम्बर हैं उसमें अधिकांक स्नेताम्बरी हैं, इससे वहां प्रतिमाओं पर नेकार पूछ व शृंगाराष्टि होने लगा हैं। स्वेताम्बरियोंने मूळ प्रतिमाजी पर नई बार चक्क चढ़ाना भी चाइए था परंतु इस प्रतिमानीफें अतिक्रय-के कारण वे ऐसा ने कर सके। वदापि यहां १०० वर दि० जैन-योंके हैं पर प्राय: सर्व मामूळी व्यापारी हैं। मुक्तिया सेठ क्चळ-राजजी व सेंड ब्रानलालजी हैं। यह मंदिर इतना श्रसिद्ध है क इसकी ऐसी मान्यता है कि इसके चारों ओर शिकार खेलना व मतस्यादि मारका मना है।गाँके बहर सूर्व कुंड नामका तालाव है निसके किनारे पर इसी मनाहीका एक लेस है जिसमें इस्ताशर जान सी॰ बुक्त केटेन स्यूक हिली ट्रैसर

मेबाड़ खेरबाड़ा ता० २२ मई सन् १८५४ है। इसकी अंग्रेनी नकल यह है—

### NOTICE.

To all whom it concerns the shrine of Rikhabdeva being one held in great sanctity by the Hindus of Gujrat and other countries, gentlemen and others encamping in the place are requested not to kill peafoul or peageons in the neighbourhood or to catch the fish in the small pucka tank, inear the village or to kill animals there.

Kherwarah 22 nd May 1854. John C. Brooke Captain Sule-Hilly Trocks, Mewar.

इस क्षेत्रकी मिक्त करनेकी बहुत कालसे सेठ हीराचंदजीकी इच्छा थी सो अब सर्व कुटुम्बको लेकर सेठ हीराचंदजी केशिरयाजी पघार। सेठ माणिकचंद पानाचंद और मोतीचंद व्यापारार्थ बम्बई ही में ठहरे। वहाँ जाकर इन्होंने बहुत कुछ दान पुण्य किया। यहाँ से श्रीतारंगाजी गिरनारजी और पालीतानाकी यात्रा बड़े भावसे की और घमेंमें जी खोळकर पैसा लगाया। यात्रासे लौटकर श्री केशिर-याजीकी बीतराग प्रतिमाकी महिमा अपने पुत्रोंसे कही जिसे सुनते ही माणिकचंदजीसे न रहा गया वे अकेले एक नौकरको साथ ले केश-रियाजी पहुंचे और वहां बड़े भावसे पूजन मजन करके बहुत दान पुण्य किया।

सेठ माणिकचंदजीका चरित्र लिखते हुए ता० २५ अक्टूबर

१९०२का गुजराती पत्र 'सत्येवक्ता' अपने अंक १५ प्रस्तक १७में इस मांति कहता है:—

"तेओ छं० १९३१मां पवित्र स्थान श्रीकेशरीआजीनी महान् यात्राष्ट्र गया इता, ते समय त्यां मोटो खर्च करी आवा धर्मने शोभा आपनारां मान्य भरेलां कार्यो करी आव्या इता."

सेठ माणिकचंदजीको विद्या व धर्ममें शुरूसे ही प्रेम था। इसी कारण वहाँके दिगम्बर जैनियोंको आपने शास्त्रस्वाध्याय करने व अपने २ बालकोंको विद्या पढ़ाने व धर्मके स्तोत्रादि सिखानेकी प्रेरणा की। केशरियाजीसे लौटकर सुरत होते हुए माणिकचंदजी बम्बई आए।

अब सेठ हीराचंद्जी अपना समय धर्मध्यानमें अधिक देने लगे। इनको न तो अब घरके कामकी चिन्ता थी और न व्यापार की। चारों भाई बड़े प्रेमसे इस तरह द्रव्य उपार्जनमें बृद्धि पा रहे थे जिस तरह दुइनका चंद्रमा प्रतिदिन अपनी कलाको बढ़ाता जाता है।

सेठ हीराचंदके चित्तमें कमी २ जो रुयाल उठ आता था वह केवल अपने चतुर्थ पुत्र नवलचंदके सेठ नवलचंदका विवाहका था। नवलचंदकी लग्नके लिये

विवाह । हीराचंदके पास प्रतिदिन इधर उधरसे आदमी आते व पत्र आया करते थे पर सेठ हीरा-

चंदने तो यही ही निश्चय कर रक्ष्या था कि २२ वर्षकी आयु जब तक नवलचंदकी न होगी तब तक हम उसकी लग्न नहीं करेंगे। तथा सगाई भी १ वर्षसे अधिक पहिले नहीं करेंगे। दिन जाते देर नहीं लगती है। संबत १९३२के अंतमें इनके पास टेंशुरणी

जिला शोलाप्रानिवासी दोत्भाड्य देवचंद जीवराज वस्क् आकर मिछे और अपनी पुत्री प्रसन्नकुष्टरीका वर्णन किया। हीराचंदजीने जनमपत्र दिया और लिया तथा प्रत्रीके देखनेकी इच्छा प्रमट की । देवचंद्रचीने कहा-मैं दो पास बाद बम्बई आऊंपा तब मैं उसे लेता आउंगा । यद्यपि वह ११ वर्षकी है पर शरीर ठिंगना है । मैं आपके पास ही: उसे उस समय ने आउंगा वय आपके पुत्र व्यापारार्थ वरसे बाहर जाते हैं। देवचंदजी अपने कहनेके अनुसार प्रसम्बद्धमसीको लाए। सेठ झीराचंद्वी उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। यह भी बहुत ही: प्रसन्नचित्त, उंदेक्षिज़ाज़ और लज्जावती थी । इसके मुखको देखकर हीराचंदनी राज़ी हो गए। और संवत् १९३३ में लमकी मिती निश्चित हो गई। ज्योंही देवचंद्रजी प्रसन्न-कुमरीको लिचे हुए घस्से बाहर ना रहे थे कि उधरसे नकलबंद किसी. कामके लिये घर आए थे सो इस कन्याको सिरसे पर तक देखकर भौंचक्रसे रह गए और वह कन्या भी इनके प्रकुलित, और हेंद्र शारीर व मुलको देखकर आनन्दित हो गई। दोनों अपने २ रास्ते चलदिये पर अपने। २ मनमें एक दूसंग्के रूपकी सहकको न मुद्धा सके । प्रेमका अंकूरा उसी दिन उग उठा । यह उसी प्रेप्त अंक्ट्रोका प्रमात है जिससे आन भी यह प्रसन्नवाई अपने पतिकी प्रेमायत्रारूप होती हुई व कई पुत्रपुत्रियोंकी माता होकर सेठ नवलचंदके अद्धीरिप्पीपनेके कर्त्वच्यको र बनारही है।

इस शुभा लग्नमें सेठ हीशाचंद एक बढी बारातको लेकर व ४०००) सर्चका निश्चमकर दक्षिण दिल्लामें नक्समंदके. मिसाहार्थ पक्षारे । टेंमुरणी छोद्यासा कसना है । बम्बईवाले ज्यापास्थिना उद्धाट पहुनाब उद्धाव व वारातका उत्सब देखनेके छिये आस-पास ग्रामोंके इतनेलोग आगये थे कि कई दिन तक टेंमुरणीमें एक बहाभारी मेलासा होगया था और गरीबोंको मोजनादिसे भी तृप्त किया था। विधिके साथ लग्न होकर सेठ नवलवंद नबोद्धा प्रसन्नकुमरीके साथ बिदा होकर अति प्रसन्नतासे सर्व संग्रसहित बम्बई आए और जैसे और तीनों भाई सपद्रीक गृहीधर्ममें लीन थे ऐसे यह भी लीन होगए।

अब सेट हीराचंद चारोंही पुत्रोंका विवाहकर और उन्हें व्यापार और गृहस्थधर्मके साधनमें तल्लीन कर अपने सेंद्र द्वीराचंदजीको कर्जन्यको साधन कर बहुत ही संतुष्ट हुए और जब कभी यह अपनी उस सुस्त नगरकी मंतोष । उस अवस्थाका मिलान जब कि इनकी स्वीका देहान्त हुआ था इस समयसे करते थे तो इनको अपने व अपने फ़्रोंके पुण्योदय पर बहुत ही त्रुप्तता होती थी। और यही मनमें आता था कि यद्यपि पूर्वनममकुत पुण्यकर्मिका उदय ही लक्ष्मी, कीर्ति आदि सामभियोंके संयोग कसनेमें कारण है तौभी इस जन्मकृत धर्मसेबनसे बांधा हुआ पुण्य भी इस जन्मों अपना उदय दे सक्ता है क्योंक्रि हमनेः अनेक्बार शास्त्रोंमें सुना है कि. जो कर्म यह जीव बांघता है उसमें स्थिति अंतमुहुर्त्त तककी पढ़ सक्ती है। इस-से यदि किसी प्राया या पापकर्मनिती स्थिति १० व १० वर्मकी पके तो इसी जन्मों उसकाः सर्वः फलः मोगा छियाः जाताः है । इस नप्रत्यात्यहः सत सहुतः हीः उचित है कि नास्यानसासे ही धर्मका

सेवन किया जाय। यह वर्म इस छोक परलोक दोनों में उपकारी है। घर्मके सेवनसे इस छोकमें भी मनमें शांति होती है और आगामी भी धर्मका उत्तम फल होता है। यह बड़े आनन्दकी बात है कि हमारे चारों ही प्रत्रोंका ध्यान धर्मके सेवनमें है। इस धर्मकी संगतिसे ही वे सदाचारी हैं और कीर्तिमान हो रहे हैं। हीराचंदजी ऐसा विचार करते हुए अब चित्तमें अति शांति रखने लगे।

यह बात भी बड़े आनन्दकी थी कि सेठ हीराचंदजीके घर-की स्त्रियोंमें कोई तकरार नहीं थी। चारों चारों स्त्रियोंमें ही स्त्रियां बड़े हेलमेलके साथ रहती थीं। एकता। रूपमतीबाईकी शांत प्रकृति व काम करनेकी चतुराई व सहनशीलता और धार्मिक

सुकावका ऐसा प्रभाव था कि जिसके सामने अन्य तीनों स्त्रियां रूपमतीकी आज्ञामें चलती थीं। वास्तवमें जिस घरकी स्त्रियोंमें सुमित होती है वहां अवस्य लक्ष्मी और आनन्दका निवास होता है। तथा वह घर ही वास्तवमें घर है जहां सुमित और एकता देवीका निवास है। उस घरमें पुरुषोंको एक आनन्द बाग नज़र आता है। इसके विरुद्ध जिस घरकी स्त्रियोंमें अनैक्य व कुमित होती है वहां भावोंके अशुभ रहनेसे प्रायः दारिद्य, दुःख और अपकीर्तिका निवास होता है और वह घर पुरुषोंके लिये एक नकिके समान मासता है। बाहरके कामकाजसे ब्रासित मुख होकर घरमें घुसते हुए उनको और अधिक ब्रास मोगना पड़ता है। अपनी पत्नीसे मिष्ट व आनन्दित बचनोंके सुननेके स्थानमें उनको कट्ठक और दुःखभरी घर मरकी दिकायतें इस तरह सुननेको.

मिलती हैं जिससे हृदय बड़ी भारी चिन्ता और खेदमें पड़ जाता है। पर जहाँ सुमित व एकताका बास है वहाँ घरमें पहुंचते ही स्त्रियोंके मुख पर प्रफुछता दीखती है। जब पित अपनी पत्नीसे मिलता है मिष्ट और प्यारकी भरी वार्तालापसे चित्त खिल जाता है। उसकी बाहरकी सारी थकावट दूर हो जाती है।

यद्यपि शुभ व साताकारी सम्बन्धकी प्राप्तिमें अंतरंग पुण्यका उद्य निमित्त कारण है तौभी बाह्य प्रस्था-पूर्व पुण्यका थंकी भी आवश्यकता है क्योंकि अंतरंग उद्य । पुण्योदय होने पर भी धनकी प्राप्तिमें बाह्य कारण व्यापारादिका निमित्त मिलाना ही

पड़ता है। इसके सिवाय श्री समन्तमद्राचार्य्यने भी दैव अर्थात् पूर्वपुण्यके उदय और पुरुषार्थके सम्बन्धमें एकान्त पक्षका निराकरण करते हुए यही कहा है---

अबुद्धिपूर्वीपेक्षायां इष्टानिष्टं स्वदेवतः । बुद्धिपूर्वीपेक्षायां इष्टानिष्टं स्वपीरुपात् ॥

अर्थात—नो कोई कार्य अबुद्धि पूर्वक अर्थात् अपनी बुद्धिके विना लगाए अकरमात् होता है जिससे अपना इष्ट या अनिष्ट हो, नैसे बैठे २ अपने उत्तर मकानका गिर पड़ना वह कार्य्य अपने पूर्व कृत कर्मके उद्यकी मुख्यतासे होता है पर नो बुद्धि पूर्वक कार्य्य होते हैं नैसे धनागम, मोजनपान उनमें अपने इष्ट या अनिष्ट होनेमें मुख्यता अपने पौरुषकी है यद्यपि इसमें भी सिद्धिका होना अंतरंग पुण्यकर्मका उद्य है परंतु पुरुषार्थ मुख्य इसलिये है कि यदि उद्योग न होता तो वह पुण्य कर्म यों ही झड़ जाता इसलिये पुरु

पक्के तो सदा पुरुषार्थी ही रहना ही चाहिये। से हीराचंदका सन्त्रोष और चारों माइबोंका अट्टूट परिश्रम ही इस उन्नितमें मुख्य कारण हुआ है। यहापि अंतरंग पुण्य कर्मका भी उदय है पर जैन पिद्धान्तानुसार प्रायः बाह्यनिमित्तके न होने पर कर्म विना रस दिखलाए यों भी झड़ जाता हैं। जैसे किसीको भगवन् भजनमें २ घंटे लगे उसको उस समय किसी बातकी असाता नहीं है। उस वक्त मन्द असाता वंदनी कर्म अपना किना रस दिये ही झड़ रहा है। युवावस्था व गृहस्थाश्रमके सुख मोमते हुए चारों भाई अपने पूज्य पिताका बहुत ही मक्तिस सम्मान करते हुए रहने लगे और दिन पर दिन ज्यापार वृद्धि करके धन द्वारा अपने ऐश्वर्यको बढ़ाने लगे।



### अध्याय छडा।

## सन्तंति लाभ ।

न्यों २ बृटिश राज्यकी दहता भारतमें होती गई त्यों २ विलायतके साथ भारतका व्यापार संबन्ध च्यापार वृद्धिका बढ़ता गया । संवत १९३२ या सन् १८७५ में जब यहां लार्ड नार्थनुक वायसरायका काम कारण। कर रहे थे तब भारतमें एक बड़ी मारी बात यह हुई कि भारतकी रमणीकता हाल जानकर भारतकी सैर करनेके लिये बादशाह इंग्लैण्डके पुत्र प्रिन्स आफ वेल्स बम्बईमें ता. ८ नवम्बरके दिन पघारे, उनके स्वागतार्थ सारा बम्बई नगर खूब सजाया गया था, जगह २ ध्वनाएं सुशोभित थीं, २ मास पहलेसे सर्व नगरवासियोंने अपने २ मकान झाड़ने, पोतने और संवारने शुरू कर दिये थे। हम बादशाहके पुत्रसे मिर्लेगे ऐसी उत्कंठा देशीरानाओं व प्रतिष्ठित मनुष्य और धनपात्रोंको हुई, इससे हमें वस्त्र और आभूषण अच्छे २ बनाने चाहिये, इस भावके जगनेसे बम्बईमें जवाहरातकी विकी म्बूब बढ़ी । सोतियोंके कंठोंकी बहुत माँग हुई । इस समय सेठ माणिकचंद पानाचंदने बहुत अच्छे २ कंछे तय्यार किये और दलालों के द्वारा विक्री कर बहुत लाभ उठाया । इन चारों भाइयोंमें मोतीको छांट कर ठीक रीतिसे ऐसा समाना कि उन सर्वकी लड़ी एक विशाल शोभाका किस्तार करें इस बातका एक अपूर्व गुण था। राज-कुमार दिहली, पठियाला, म्बालियर, इन्दौर आदि स्थानोंमें भी गए थे

इससे वहाँके छोगोंमें भी जवाहरात खरीदनेकी बहुत उमङ्ग हुई थी। सेठ माणिकचंद पानाचंदका बहुतसा मोती इन शहरोंमें भी खूब विका । इतने ही में हिन्दुस्तानमें यह खबर उड़ी कि ता० १ जनवरी सन् १८७७ ( अर्थात् संवत १९३४ ) को दिहलीमें एक बड़ा भारी दरबार होगा जिसमें सर्व राजा महाराजा आदि प्रतिप्ठित जन शरीक होंगे। इस हरबारकी खबरने और भी छोगोंके चित्त-को सुन्दर २ वस्त्राभूषण खरीदनेके लिये उभार दिया । इस मौके-को पाकर उक्त सेठ माणिकचंद पानाचंद और भी उद्योग शील हुए और अच्छे २ मोतीके कंठे वनाकर बम्बई व हिंदुस्तानमें विक्रीकर स्त्रुब नफा उठाया । यह दरबार भारतमें बड़ा नामी हुआ । पार्लियामेन्टने महारानी क्वीन विक्टोरियाको एम्प्रेस आफ इन्डिया अर्थात भारतकी बादशाहज़ादीका पद देनेके . लिये यह दरनार करवाया था। इससमय भारतके बाइसराय लाई लिटन थे। इस दरबारमें बहुतोंको ईनाम व पेन्हार्ने दी गई तथा १६००० कैदी छोड़ दिये गए।

माणिकचंद्जीको इधर उधर हरएकसे मिलने जानेका व सभा आदि देखनेका बहुतही शौक था। यद्यपि विलायतसे यह दुकानमें ज्यापारकी अधिकतासे दिहली ज्यापार। तो न जासके पर बम्बईमें इसकी चर्चामें खूब दिछ छगाते थे। इन्होंने मालुम किया कि विलायतवालोंको भी जवाहरात लेनेका अब शौक हो चला है। जब प्रिन्स आफ वेल्स विलायत लौटकर गए और अपने मित्रोंसे

भारतके राजा महाराजा धनाढचोंके आभूषण पहननेका वर्णन किया तबसे वहाँ के छोगों में जवाहरात खरीदनेका जो शौक थोड़ा था वह बहुत ही बढ़ गया । बम्बईमें एक पारसी व्यापारी सेठ फरामजी एण्ड सन्सकी कम्पनी है । इन्होंने पहले पहल विलाय-के व्यापारियोंको जवाहरात मिजवानेका उद्योग किया। बम्बईमें एक जौहरी न्यापारी सेट साकरचंद छाछभाई श्वे॰ जैनी हैं, सबसे पहली इन्हींके मालको फरामजी कम्पनीने विलायत भेजना शुरू किया। माणिकचंदनी सेठ फरामजीसे मिले और विलायत तरह माल भेजना उसका सर्व कायदा जानकर अपने भाई पानाचंद और नवलर्चेंद्रसे कहा । इस समय मोतीचन्द बीमार थे । इनको भगंदरका रोग हो गया था जिससे दुकान पर बहुत कम आते जाते थे। पानाचंदने कहा कि जब हमारा व्यापार यहीं खूब चमक रहा है तब हमें इतनी दूर अपना माल भेजनेकी क्या जरूरत है ? इतनेमें नवलचंद साहस करके बोले कि भाई, व्यापार करनेमें हमें संकोच नहीं करना चाहिये, यहाँ तो हमें थोड़ासा ही लाभ मिलता हैं पर विलायतमें अभी ही मालकी विकी शुरू हुई है, वहां शाहज़ादेके छौटनेसे नया २ शौक बढ़ा है, तथा अभी इस बाज़ारमें केवल एक ही व्यापारी माल भेनते हैं वहाँ दूगने तिगने हो जानेमें कोई संदेह नहीं है इससे विलायतके साथ व्यापार अवस्य शुरू करना चाहिये। माणिकचंदजीने भी इस बातका समर्थन किया, पानाचंदनी चुप हो रहे । तय हो गया कि फरामनी कम्पनीके मारफत माल भेजा जाय।

बम्बईसे बिलायस माल मेननेबार्लोमें दूसरे देशी ज्यापारी सेठ माणिकचंद पानाचंद हुए। पहले एक पारसल भेजा उतपर विलायत-प्रथम पारसलमें बार्छोने बहुत कमती दार्मोकी मांग की। इस-घाटा । को देखकर पानाचंद चित्तमें बहुत नाराज़ हुए, पर विखायतबाखोंकी नवाहरातके खरीदनेमें सदा ही यह आदत रहती है कि वे पहिले बहुत कम दाम देते हैं फिर धीर २ बढ़ते हैं, इनके इनकार करनेपर थोड़ा २ दाम बढ़ाकर आफर आया। पानाचंदकी यह आदत नहीं थी कि किसी सोदेमें इतनी देर लगाई नाय! अब भी लागतमें तुकसान ही होता था । पानाचंदने माणिकचंद और सबलचंदको कहा कि विलायतवाले माल पहचानना नहीं जानते हैं। हमने तुम्हारे कहनेसे वहाँ माल भेजा नहीं तो अब तक हम उसमें बहुत कुछ नका कर लेते, अब तो हम ज्यादा न टहरकर घाटेसे ही बेचे डालते हैं और आगामी हम माल भेजना पसन्द नहीं करते। दोनों माइयोंने बहुत समझाया भी कि अभी आप ठहरें, थोडे ही दिनोंमें अच्छा ओफर आएगा पर पानाचंदनी झँझला गए, इस तरह इन्होंने पहिले पारसलमें बाटा सहा ।

कुछ दिन बाद माणिकचंद और नवलचंदने सलाह की कि
यह बात तो ठीक नहीं हुई कि हमारी
दूसरे पारसलमें दुगना सलाहसे विलायतके व्यापारमें घाटा हो।
मुनाफा। हमें फिर भी साहस करना चाहिये और
देखना चाहिये कि क्यों नहीं नफा होता है।
साकरचन्द लालभाईने तो विलायतके व्यापारमें अच्छी सफलता पाई

है और हमें भी पहिले पारसलमें नका होता पर भाईकी नल्दीसे ही जुकतान हो गया है, ऐसा विचार कर एक दिन आपने बड़े भाईसे आग्रहपूर्वक कहा कि हमारे कहनेसे एक छोटासा पारसल एक दफे आप और भेजिये। इनके साहसको देखकर केवल ५०००) की लुगतका एक पारसल फिर भेना गया। इसके ऑफर ऐसे अच्छे आए कि इस पारसलमें इनको ५०००) का मुनाफा हो गया। अब तो तीनों भाइयोंका खूब दिल भर गया और लगातार १५,२०,६०,४०, पचास पचास हनारकी लागतके पारसल भेनने लगे और प्राय: हरएकमें दुगना तिगना मुनाफा कमाने लगे। इस तरह इनका विलायतसे व्यक्तार शुरू हुआ जो अब तक जारी है।

संसारकी बहुत ही विचित्र दशा है। कोई भी सदा सुखकी नींद नहीं सो सके। एक न एक आकुइता

सेठ पानाचंदकी रूपी कांटा छगा ही रहता है। सेठ पानाचं-पर्जाका मरण। दकी स्त्री फुलकुमरी अपनी निर्वेहताके कारण सदा ही बीमार रहा करती थी।पानाचंदको

इस स्त्रीसे सांसारिक मुखका लाभ यथोचित नहीं हो सका जिससे सेठ पानाचंदका मन कभी २ बहुत उदास हो जाता था। यह फुल-कुमरी एक दिन बहुत बीमार हो गई और कुछ दिन पलंग पर पड़ी रही। बहुत कुछ औपिष्ठ करने पर भी आराम नहीं हुई आर

अपने विवाहके ५ वर्ष बाद ही उसका आत्मा देहको त्याग गया। थोड़े ही दिन पीछे पानाचंदका द्वितीय विवाह सांगछी ज़िला

फल्टन निवासी नवीबाईके साथ हो गया ।

सेठ पानाचंदका द्वितीय विवाह। इस विवाहको सेठ हीराचंदने बहुत साधारण रीतिसे कर दिया था। यह बहुत भोली व आज्ञामें चलनेवाली थी पर कमेबोगते इसका भी शरीर निर्वेश और रोगी बना रहता था जिससे सेठ पानाचंदको पत्नीका यथेष्ट मुख प्राप्त करनेमें बहुत अन्तराय भोगना पड़ता था। सेठ माणिकचंद और चतुरमतीमें अतिप्रेम था। चतुरमती गर्भवती हुई और मिती फागुण बदी १ सं-सेठ माणिकचंदको वत १८३४ के दिन एक कन्याको उत्पन्न पुत्रीका लाभ। किया जिसका नाम सेठ हीराचंदने फूलकुं-चर्ची (फुलकौर) रक्खा। बृद्धावस्थामें पौत्री-

का मुख देख हीराचंदकी आत्माको बहुत संतोष हुआ। इस कन्यांके जन्मका यथोचित उत्सव किया। यह कन्या चतुरमतीके द्वारा दिन परिदेन वृद्धिको प्राप्त होने लगी। सेठ माणिकचंद कभीर घरमें शामके वक्त भोजन करके इसे हाथमें लेकर खिलाते व इसका गुला बके फूलसदश मुख देखकर आनन्दित होते थे।

इस संवतके चातुर्मासमें अंकलेश्वर (गुजरात) नगरमें त्यागी महाचंद्रजीने चातुर्मास किया त्यागी महाचंद्रजीका था। यह त्यागी प्राकृतव संस्कृतके बड़ेभारी परिचय। पंडित थे। इनको गोम्मटसार त्रिलोकसार। दि अनेक प्रंथ कंठ थे। इन्होंने कई ग्रंथोंकी रचना की है। अधिक निवास सीकर (राजपूताना) की तरफ रहता था। इनका रचा एक जैनेन्द्रपुराण सीकरमें मौजूद है जिसके कुछ माग उनके शिष्य पंडित रिषमदास बड़ाछिन्द्वाड़ा (मध्यप्रदेश) के पास देखनेमें आए हैं। इस ग्रंथमें चारों अनुयोगोंका वर्णन प्राकृत, संस्कृत और देश माषा तथा छंदोंमें हैं, अभी तक इसकी प्रसिद्धि नहीं हुई है।

इनका बनाया हुआ एक स्टायु जैनेन्द्र न्याकरण है। परताबगढ़ राज्य मालवामें नये दिगम्बर जैन मंदिरजीके भंडारमें इस न्याकरणके ३० पत्रे हमें देखनेको प्राप्त हुए, पूर्ण नहीं मिला। अंकलेश्वरमें किसीके पास पूर्ण है ऐसा छुनते हैं। इसके ५००० क्लोक हैं ऐसा मालूम हुआ है। प्रारंभमें कर्ताने इस मांति प्रतिज्ञा की है।

" महावृत्ति ग्रंभत्सकलनुषपूज्यां मुखकरी । विलीक्योद्यद् , ज्ञान प्रभुविभयनंदी प्रविद्विताम् । अनेकैः सच्छन्दैर्भ्रमविगतकैः सदृद्धः मृतां १ प्रकृतें उद्दम् तनुमति महाचन्द्र विद्युधः । इसका भाव यही है कि जैनेन्द्र महावृत्तिको देखव

इसका भाव यही है कि जैनेन्द्र महावृत्तिको देखकर मैं यह वृत्ति लिखता हूँ।

अनेकांतासिद्धिः—सूत्रकी न्याख्या इस तरह की है:—
" प्रकृत्यादि विभागेन अस्तित्वनास्तित्वनित्यत्वानित्यत्वसामान्यासामान्याधिकरण्य विशेषणविशेष्यादिक शब्दानां,
सिद्धिरनेकाः स्वभावो भवेत् ।

पृष्ठ २० वें में है कृष्णश्चकंबलश्च कृष्णकंबलः " यहाँ समासका वर्णन है।

इनको बुध महाचंद्र कहते हैं। इन्होंने हिन्दी भाषामें बहुतसे पद व सामाधिक पाठ बनाया है जो अति प्रसिद्ध है जिसकी आरंभित कड़ी है—

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सिंहये दुःख भारी, जन्म मरण नित किये पापकी है अधिकारी। कोड़ि भवांतर मांहि मिलन दुर्लम सामायिक, धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक। इनके पद भी बड़े ही वैराग्यवर्द्धक व आध्यात्मिक हैं। कल-कत्तेके ८४ वर्षके वृद्ध पंडित अर्जुनलालनी इनके एक भननको कभी २ कहा करते है जिसकी प्रारंभकी कड़ी यह है। "सुन अत्सयारे रिव वहल छाया रे त्यूं ही कर्म छिपाया मैला हो रह्या रे। त् सिद्ध सहस्पीरे नित अचल अरूपीरे जड़ पुद्धक हसी माही रिम रह्या रे,

उस समय इनके पास केवल एक लंगोट और एक चहर-की ही परिग्रह थी। मोरिपिच्छिका तथा कमंडल था। दिनमें केवल एक दफ भोनन करते थे तथा उस चातुर्मासमें केवल ४ पस्तु ही रक्खीं थीं। गेहूं, इमली, लालिमस्य और सुखी सांगड़ीका साग; और सर्वरसोंका त्याग कर दिया था। इतना होनेपर भी विना किसी शास्त्रको रक्खे हुए न्यास्थान देते हुए इतनी ज़ोरके गंभीर शब्द कहते थे कि बहुत दूरतक आवाज नाती थी। इनको किसी भी सवारीपर चड़नेका त्याग था। चातुर्मासके बाद यह अंकलेश्वरसे पैदल चलनेकी यहाँतक प्रशंसा प्रसिद्ध है कि एक दफ इनको अंक-स्थिरसे श्री कुंयलिगरी प्रतिष्ठांके अवसरपर नाना था तब वहाँपर इनके शिष्य अमरेन्द्रकीर्ति तो ग्लेके हारा कुंयलिगरी गए और यह पैदल ही ठीक मितीपर वहाँ पहुंच गए थे।

त्थागी बुध महाचंद्रजीनं त्रिलोकसार पूजा बहुत ही मनोहर छन्दोंमें बनाई है। अंकलेश्वरके चातुर्मासमें आपने श्रावकको उपदेश देकर इस बृहत् पूजन करानेके समारंभको कराया जिसका महूर्त वैशाख सुदी २ का पड़ा। १९ दिनका पूजन विधान हुआ। नगरके बाहर पारसीबाड़ेके नाकेपर खेतकी वाडीमें एक वड़ा भारी मंडप बांधा गया था जिसमें एक बड़े बिस्तारके साथ चावलोंसे तीन लोकका

मंडल प्रस्पाकार बनाया गया। प्रतिदिन श्रीयुत महाचंद्रजी बहुत गाजे बाजेके साथ स्वयं उस अपनी बनाई भाषा पूजनको पढ़ते थे। तीन लोकके अकृतिम बैत्यालयोंकी पूजनके समय स्थापना उस मंडलमें ठीक उसी स्थानवर होती थी जहाँ कि चावलोंसे वह स्थान निर्देश किया गया था। छोटे २ लकड़ीकी स्थापनाएं उतनी ही बनाई गई थी, जिनपर रकाबी रम्बकर स्थापनाके समय नियत स्थानपर रक्षीं जाती थीं। बाहरसे आसपास ग्रामींके बहुत भाई आते जाते रहते थे।

इस समय कारणवरा सेट माणिकचंद्रजी बम्बईसे सूरत आए।
वहाँ अंकलेश्वरकी पूजा समारंभकी बात सुनकर
अंकलेश्वरकी पूजामें व त्यागी महाचंद्रके द्दीनकी भावना करके
सेट माणिकचंद्र। सेठ माणिकचंद्रजी अंकलेश्वर आए। पूजन
समारंभ देख व महाचंद्रजीके द्दीन प्राप्तकर
आप बहुतही राजी हुए। रात्रिको मंडपमें खूब भजनगान हुआ
करता था। गंधर्व मी आए थे।

अंकलेश्वरसे ६ मील एक मजोत ग्राम है वहाँपर एक अति प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जिसके भौरमें सजोतके शीतल- चतुर्थकालको बहुत ही शांत बीतरागमई नाथजी। पद्मासन २ हाथ उंची श्री शीतलनाथ स्वामीकी प्रतिबिम्ब विराजमान है। इस बिम्बके दर्शनसे लेखकको जो आनन्द हुआ है वह बचन अगोचर है।

उस सजोतमें एक मेवाड़ा दि॰ जैनी धर्मचंद हरजीव-

नदास फुटकल अनानकी दूकान करते हुए धर्मचंदजीका सेटसे रहतेथे। इनको भजनभाव व नृत्यका शौक था। परिचय। श्री शीतलनाथजीके सन्मुख भजनभाव करते हुए आनन्द मनाते थे। यह धर्मचंदजी धर्मके

बड़े रोचक थे। पहलेलड़कईमें तो इनको धर्मसे कुछ भी प्रेम नहीं था इसके दो वर्ष पहले महुवा निवासी एक खंडेलवाल ब्रिद्धान् जैन पंडित शिवलालजीने अंकलेश्वरमें चातुर्गात किया था। यह पंडित बहुत विद्वान् व गंभीर ध्वनिके थे। शास्त्र सभा प्रतिदिन करते थे और सर्व लोग सभामें जाते थे। धर्मचंद दिलमें रुचि न रखनेपर मी दार्मके मारे जास्त्रमें बैठ जाते थे और ज्यों त्यों कर समय परा करते थे पर पंडितजीकी दृष्टि धर्मचंद पर जम जाती थी। जिसदिन यह नहीं जाते दुसरे दिन पंडितजी टोक्ते थे। इसपर अधिक भाव होनेका कारण यह था कि धर्मचंदके पिता हर जीवन रतनचंद शास्त्रके जानकार व शास्त्रानुसार आचारके पालनेवाले तथा पंडित शिवलालके मुलाकाती थे। एक गुण इनमें यह था कि यह भनन गान व कवितामें चतुर थे। अपने घरके चैत्यालयमें नित्य खूब गागाकर पूजन करते थे, इसी कारण इनके पुत्र धर्मचंदको भी शुरूसे ही गाने बनानेकी रुचि हुई। यह परोपकारी भी थे। अंकलेश्वरके १०, १२ लड़कोंको अपने घरमें भक्तामर सूत्रजी पूजा पाठ आदि पढ़ाते थे । इन्होंने रिवन्नत कथाका हिन्दीमें एक नाटक बनाया है जिसका नाम रविव्रत आख्यान है। इस नाटकको यह मंदिर-जीमें खेलते थे। सर्वस्वांग कायदेसे भरवाते थे। कई इनके साथी भी थे । जिस स्थानपर मुनिका वर्णन आता है वहां नम्न मुनिका भेष न बनवाकर एक बड़ा चित्रपट टांगते थे और उसके पीछे एक माई खड़े होकर मुनिका पाठ करते थे। उपदेश देते थे। इस आख्यानका एक पद नीचे दिया जाता है।

" कहो मुनि कौनसी करम गति आई—टेक० सेट सेटानी पूंछत मुनिसे, सुख गया दरिद्रता आई। कहो० क्या मैंने जैनधर्म भृष्ट कीया, क्या घृतमें तेल मिलाई॥ कहो० क्या मैंने रात्रि भोजन नहीं पाला, बत निंद्या झूठ मिलाई। कहो० हरदास अरहंत चरणकुं वारवार बलि जाई॥ कहो०

रिश्वलालमीके द्वारा बार बार टोके मानेपर एक दिन धर्मचं-दको लज्जों आई और यह शिवलालमीसे एकान्तमें मिलकर बोले कि हमें कुछ धर्मकी बात बतावें मिससे मुझे रुचि हो। तब शिवलालमीने कहा कि जो पुस्तक हमने तुम्हारे पिताको दी थी व जिसमें दशलाक्षणी व अष्टान्हिका आदि पूजन भाषा द्यानतराय कृत हैं, उसे ले आओ। इस पुस्तकको धर्मचंद्जी पहचानते थे क्योंकि दशलाक्षणीके दिनोंमें उस पोथीके द्वारा इनके पिता गावजाकर पूजन पढ़ते थे और यह खड़े हुए द्वय चढ़ाते थे। उस समय पहले २ द्यानतराय कृत पूजनोंका प्रचार इसी पोथीसे हुआ। धर्मचंद्जी उस पुस्तकको लाए। शिवलालमीने उसमेंसे नीचे लिखी तीन गाथाएं बड़ी कठिनतासे धर्मचंद्जीको कंठ कराई और उनका मतलब समझाया—

#### गाथा

गइ इंदियं च काये । जीये वेये कशाय णाणिय संजम दंसण लेस्या । भविमा सम्मत्त सण्णि आहारे ॥ १॥

गुणजीवा पजाति । याणा सण्णाय ममाणा ऊरे । उवऊगो विय कमसो । वीसंतु परूवणा भाणया ॥ २ ॥ झाणाविय पच्चाविय जाय कुलकोड़ि संजुया सब्वे । गाहा तियेण भाणिया कमेण चाँवीस ठाणाणि ॥ ३ ॥ भावार्थ--गति ८, इंद्रिय ५, काय ६, योग १५, वेद ३, कषाय २५, ज्ञान ८, संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, मन्य २, सम्यक्त ६, संज्ञी २, आहारक २, गुणस्थान १४, जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, मंज्ञा ४, उपयोग १२, यह वीस प्ररूपणा कही हैं। तथा ध्यान १६; प्रत्यय अर्थात आश्रव ५७; जाति ८४ लक्षः, कुलकोड १९९॥ इन चारोंको मिलाकर २४ म्थान ऋमसे जानने चाहिये । वाम्तवमें इन गाथाओंके उलझावमें डालकर उसके मुलझानेके लिये जो परिश्रम करेगा वह जिनवाणीके रहस्यको जान जायगा। पं० शिवलाल बडे बृद्धिमान और परोपकारी थे जिन्होंने धर्मचंदके साथ बड़ा उपकार किया । इन गाथाओंको कंठकर अब यह गति आदिका विशेष हाल जाननेके लिये भाषा शास्त्रोंको देखने लगे। इनको शौक इतना बढ़ा कि ये सजोतमें अपनी अनानकी द्कान पर पुस्तक रखतं, सौदा देते २ नव छुट्टी पाते तब वांचते और उसमेंसे एक कापी पर नोट कर होते थे। इस तरह यह अपनी स्त्रीके साथ सजोतमें धर्म सेवन करते रहते थे । पिता-जीका देहान्त हो चुका था, सो इस धर्म विद्या सीखनेकी रुचिके दो वर्ष पीछे ही अंक्लेश्वरमें यह उत्सव हुआ था। इस महा पूजाके कार्य्यमें धर्मचंद मुरूय भाग हेते थे और महाचंद्रजीसे बहुत हित रखते थे। उनकी मले प्रकार वैय्यावृत्त करते थे। एक दिन

धर्मचंदजीने महाचंदजीसे प्रार्थना की कि इस उत्सवके सम्बन्धमें कोई पद बना दीजिये । महाचंदजीने दूसरे दिन र्क पद लिखकर धर्मचंदजीको दे दिया । जिस रात्रिको सेठ माणिकचंद मंडपमें बैठे हुए थे उस रात्रिको धर्मचंदने वह पद मंडपमें गाया। इस मजनको सुनकर सेठ माणिकचन्द्का प्रेम इस भजनपर हो गया। यह तो पाठकों-को मालूम ही है कि सेठ माणिक वंद गुणबाही और मिलनसार थे, यह मौका पाकर धर्मचंद्से बात करने छगे । धर्मचंद पहलेसे ही बात करना चाहते थे क्योंकि वे इनके गंभीर सिंह सदृश अति मुन्दर मुख, और शरीरको देखकर अपने मनमें यह जान रहे थे कि यह कोई बड़ा भारी सेठ है। इनकासा सुन्दर रूप धर्मचंद्रके देखनेमें नहीं आया था। यह उस समय घोती, कोट और मुस्ती पगड़ी पहने हुए थे। दाहने कानमें सुन्दर दो गोल मोती और नीलमकी एक कड़ी अटकाए हुए, गलेमें मोतियोंका कंठा द्रुए, हाथोंमें सुवर्णके कड़े पहने द्रुए एक राजाके समान दीखते थे, पर धर्मचंदका साहस नहीं पड़ता था ऐसे प्रभावशाली व्यक्तिसे बात करे। जब माणिकचंदजीने स्वयं बात की तो यह बहुत ही हिंधत हुए और तब इनको मालूम हुआ कि यह सुरत निवासी बम्बईके प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद हैं। माणि-कचंदनीने धर्मचंदनीके भजन गानेकी बहुत प्रश्नंसा की और कहा कि आप यह भजन मुझे नकल करके बस्बई भेन देवें क्योंकि मैं ज्यादा ठहर नहीं सक्ता, कल ही मुझे बम्बई पहुंचना है। धर्मचंदजीने सहर्ष स्वीकार किया। घर्मचंदकी स्थिति साधारण थी तथा इनको दिन रात यह द:ख रहता था कि इनको आनीविकाके लिये हिंसा-

कारी गहोका व्यापार करना पड़ता था। माणिकचंदसे मिछकर इनको यह भी आशा हुई कि कभी कोई छौकिक काम होगा तो इनसे निकल सकेगा। यह सेठ इतना घनाढ्य और पुण्यात्मा होने पर भी गर्व रहित है। हमारे पाठकों को मालूम होना चाहिये कि यह धर्मचंद वही परोपकारी तीर्धभक्त भाई धर्मचंद मुनीम पाछीताना दिगम्बर जैन कारखाना हैं जिनके उद्योगसे उस तीर्थका बहुत ही सुधार हुआ है व ज़िन्होंने अपने उपदेशसे हजारों यात्रियोंका कल्याण किया है व कर रहे हैं। इनकी अवस्था अब ६४ वर्षकी हैं। अपने प्रणके अनुसार ५ व ७ दिनमें धर्मचंदने वह भनन नकल करके बम्बई भन दिया।

# वह भजन इस भांति है।

(राग जंगलो)

मंडलसार त्रीलोक सीरोमणी, पुर अंकलेसर माही हो २ मंडलसार ा टेक ॥

संवत् सत उगनीस तासपिर धिर पैंतीस समाय हो।
पंडित राज महेंद्र आवे चोथी शुक्छ चैत्राय हो॥१॥ मं०
अंकलेश्वरके सर्व पंच बुध राज समीप जुं आय हो।
बोले उत्सव जिनवरकी प्रभावना करणी चाहि हो॥२॥ मं०
चैत्र शुक्त पृनिम दिन मंडप आरंम्यो पुरवांही हो।
गज चालीस छंब अति सोमित न्यास वीश गज पायहो॥३॥ मं०
बदि ग्यारसी रवीवारे मंडल भरणांरंम कराय हो।
सुदि वैशास्त तिजी रवीवारे पूंजा प्रारंभाय हो॥ ॥ मं०
तादिन श्री जिनचर सुद्धानमें रथ यात्रा करवाय हो।

निस्वाद सुखाय हो ॥ ११ ॥ मं० ऐसे गावत और बनावत नरनारी चितलाय हो ।
श्रीजिनचलत पालखीमें नहां नर तिर्यंच दुतरफाय हो ॥१२॥ मं० फिरी श्रीजिनको उत्सव सजूत मंडपमें पत्रराय हो ॥१३॥ मं० किरी अभिषेक किरी फिरी पूजन महाचंद्र चितलाय हो ॥१३॥ मं० सप्तस्वर संजूत करी पूजा दिन पंद्रहा तक ताय हो ।
बदि दुतियासनीवारे पूजन पुरण करी सुख पाय हो ॥१४॥ मं० देश देशके नात्री आये मंडल जिन दरसाय हो ।
पूजन करी किर श्री जीनवरको सब हों मनमाहि हो ॥१५॥ मं० श्री जीन प्रमावनां ठाईम महाचंद्र बुषराय हो ।

पा यह जन्म सफल लखि अपनौ सीकर नगर गया हि हो। ॥ १६॥ मंडल सार०

पाठकोंको इससे प्रगट होगा कि हमारे चरित्र नायक माणिक चंदजी कैसे धर्मप्रेमी, विद्याप्रेमी और गुणानुरागी थे।

सेठ मोतीचंदकी स्त्री रूपमतीको फिर गर्भ रहा था। जबसे इसको यह गर्भ हुआ तबसे इसका प्रेम दान

प्रेमचंदका जन्म । व वर्ममें और भी अधिक हो गया था । इसके मनमें पूजा व शास्त्र सुननेकी ही गाड़

रुचि रहा करती थी। जब संवत १९३४ का चातुर्मास निकट आया तब इसके मनमें यह भावना हुई थी कि मुझे ईडर जाना चाहिये और वहीं मेरेको प्रमृति हो तो अच्छा है क्योंकि यहां कोई बरा-बर सेवा करनेवाला नहीं है— चतुरबाईके एक छोटी कन्या है और पानाचंद तथा नवलचंद्की बहुएँ बहुत छोटी हैं। रूपमती बहुत बुद्धिमती थी। इसलिये अपने पतिसे इस बांग्में पूछा मोतीचंदने भी यही उचित समझा और अपने पिता सेठ हीराचंद्नीको कहा। हीराचंद्-जीने भी इस बातको पसन्द किया और गांधी मोतीचंदको पत्र दिया। गांधीनी स्वयं आकर रूपमतीको ईंडर हेगए। श्रीषोडशकारण व श्री दशलाक्षणी पर्वमें रूपाबाईने ईडरमें खूब धर्मध्यान और कुछ दान भी कि-या। गर्भावस्थामें ऐसे दान धर्मकी प्रवृत्तिको देखकर सर्व बुद्धिमान यही अनुमान करने लगे कि कोई अतिधर्मात्मा वालक रूपवतीके गर्भमें आया है। यह भी एक निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध है कि जैसा बालक गर्भमें आता है वैसी ही प्रवृत्ति माताकी हो जाती है। एक दरिद्री पापी पुत्रको गर्भमें रखनेवाली माता मिट्टीके टुकड़े खाती

और चने चवाती है व लड़ाई झगड़ा करना अच्छा समझती है। इस सम्बतमें बम्बई और मदरास हाते में पानीके कम पड़नेसे इतना कठोर दुष्काल पड़ा था कि निम्नसे पार्लियामेन्टमें ऐसी रिपोर्ट की गई कि इस दुष्कालसे साढ़े तेरा लाख आदमी मर गए। ऐसे समयपर रूपावाईने बहुत कुछ अन्नादि बटवाया तथा बम्बईके उदार सेठोंने गुनरात व दक्षिणकी तरफ बहुतसा द्रव्य भेनकर दुप्काल पीड़ितोंकी सहायता की । इतनेमें आसौन १४ का दिन आगया और प्रातःकाल शुभ नक्षत्रमें रूपमतीन एक बहुतही सौम्य मूर्ति पुत्ररत्नकी जन्म दिया। इसके अति मुहावने मुखको देखकर माताको जो हर्ष हुआ वह कहा नहीं जा सकता । गांधी मोतीचंदन अपनी पुत्रीकी संतति रत्नको निरखकर बहुत ही हर्ष माना और बडी धूमवामसे इस पुत्रका जन्मोत्सव किया। सर्व कुटुम्बको इसकी ओर बहुत ही प्रेम आकर्षित हुआ इससे सबने इसका नाम **प्रेमचंद्** रक्ला । जन्मपत्र बनदाया गया । ज्योतिपियोंने इसको पुण्यशाली, विद्यावान तथा धर्मात्मा होगा ऐसा कहा । गांधीजीन श्री जिन मंदिरजीमें बड़े उत्सवसे पूजन कराई और कुटुम्नियोंको उचित दिन भोजन कराया व दुःखियोंको दान बांटा । जिस दिन इस पुत्रका जन्म हुआ उसी दिन तार द्वारा बम्बई खबर भेजी गई। संठ हीराचंद, मोतीचंद आदि सर्व ही कुटुम्बी जन व स्त्रियोंको पुत्र जन्म सुनकर बड़ा ही आनन्द हुआ क्योंकि यह सेठ हीराचंदका प्रथम ही पौत्र था और चारों भाइ-योंमें एक यही बाछक जन्मा था। सेठ हीराचंदने बम्बईके जिन मंदिरजीमें वृहत् पूजन रचाई तथा दानके लिये भी द्रव्य निकाला।

सेठ मोतीचंदको यद्यपि पुत्रके लामसे बहुत सन्तोष हुआ पर इनको मगन्दरके रोगने बहुत व्याकुल कर रक्ता था। कितनी ही औषघिंय की पर कुल शान्त न हुआ—रोगको कम होनेके बदले बिंदत देखकर पूज्यपितासे कहा कि अब चातुर्मास बीत गया है ईडरसे कुटुम्बको बुलाना चाहिये मगसर मासमें रूपाबाई पुत्र रत्न प्रेमचंदके साथ बम्बई आई परंतु अपने पतिके रोगको बढ़ा हुआ देखकर बहुत खेदित हुई। मोतीचंदनी बीमारीसे बहुत दुःस्ति थे पर अपने धर्मके स्मरणमें सावधान थे असातावंदनीय कर्मका उद्य है ऐसा मानकर चित्तमें धेर्य लाते थे।

और जब कभी अपने पुत्रका मुख देखते तो प्रफुछित हो जाते थे क्योंकि यह पुत्र रत्न हरएकको बहुत ही प्यारा स्थाता था। पुत्रके जन्मको ९ मास ही बीते थे कि फागुणमासमें एकाएक मोतीचंद बहुत ही अधिक बीमार हो गए सोतीचंदका परस्रोक। और ऐसे वक्तमें कि जब रूपाबाई घर काममें स्यी थी पिता और माई सब घरसे बाहर

थे। यह अपने कमरेमें छेटे हुए ही यकायक अरहंत अरहंत कहते हुए अपने इस शरीरको छोड़कर चल दिये। थोड़ी देर बाद जब रूपाबाई छोकरेको छिये हुए कमरेमें आई और अपने पतिको बहुत ध्यानसे देखा तो इसे निश्चय हो गया कि इनका आत्मा इस शरीरको छोड़कर चल दिया है। रूपाबाईका स्वरूपवान मुख एकाएक उम्हल गया। उसके मुखको प्रेमचंद आंख खोलकर देखता है तो आश्चर्यमें मर जाता है। रूपाबाई एकाएक बैठ गई और नीचा मुख करके शोक सागरमें निमन्न हो गई।

संसारकी ही बड़ी विचित्र दशा है। ६ वर्ष पहले जिस स्नीको अपने पतिके सम्बन्धि सांसारिक सुखका लाम हुआ व ५ मास ही पहले जिसको एक अति उत्तम पुत्रका लाम होकर सन्तोष हुआ उसीको आज अपने प्राणिपयका वियोग सहना पड़ा! कमेंकि उद्यकी दशा बड़ी ही विचित्र है। जैसे कहीं धूप आती है और थोड़ी देर बाद वही पर छाहीं पड़ जाती है और जहां पर छाहीं होती है वहीं फिर धूप आ जाती है, ऐसे ही पुण्य कर्मके स्थान पर पाप और पापके स्थान पर पुण्य अपनी रंगत दिखलाते हुए अज्ञानीको. कभी महा आनन्द व कभी महाशोकमें डाल देते हैं परंतु ज्ञानीके लिये एक मात्र नाटकका खेल है। ज्ञानी अपने शरीरके सम्बन्धको ही त्यागना चाहता है। उसके यह मावना है कि यह आत्मा शांत आनन्दमय अवस्थाका लाभ लेवे और सदा ही मुक्त रूप रहे अतएव वह ऐसा विचारता है—

स्रोक—द्वप्तां ऽहं देहसंयोगाज्जलं वानलसंगमात् इह देहं परित्यज्य शीतीभृताः शिवैषिणाः (आ०शा० २५४)

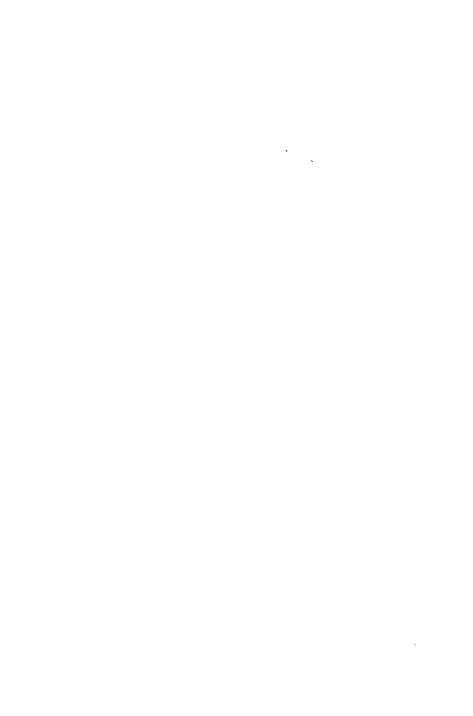
भावार्थ — मैं देह संयोगसे उसी तरह दाहको पा रहा हूं जिस तरह अग्निक सम्बन्धसे जल गर्म होकर जला करता है जो मोक्षके इच्छुक साधुजन हैं वे इस देहको त्यागकर शांत हो गए हैं। ऐसा २ विचार करनेवाले ज्ञानीजीवको अपना व दूसरेका देह आत्मासे अलग हो जाय उसमें कोई विवाद नहीं होता। रूपाबाईने यद्यपि अनेक शास्त्र सुने थे और अच्छी तरह आत्मा और देहके मेद विज्ञानको जानती थी, केवल आत्मोज्ञतिकी मावनासे ही धर्मको अतिप्रेमसे साधन करती थी तौ भी इस समय यकायक शोक नोकवायके तीन उदयसे इसका चित्त धैर्ध्यसे चलायमान हो गया, मन म्लानित हो गया, तरह २ के विकल्प आने लगे, आंखोंसे भी अश्रुधारा वहने लगी, मेरी कौन रक्षा करेगा ? इस छोटे पुत्रको कौन खिलाएगा ? इसको कौन विद्या पढ़ाएगा ? में कैसे दिन काट्ंगी आदि अनेक भावोंके आवेशोंसे मन क्षेमित हो समुद्रकी तरह उगमगाने लगा।

इतनेहीमें खबर पहुँच गई कि सेठ मोतीचंद एकाएक चलवसे। यह संवार सेठ हीराचंदको वज्रके समान हृदय भेदनेवाला हुआ। तीनों भाई भी इसे सुनकर, आन हमारे शरणभूत कमरेका एक खंभा टूट गया, आन हम तीन खंभेवाले ही रहकर इस गाईस्थ्यके बोझको कैसे सम्हाल मकेंगे इत्यादि चिंताओं में डूब गए। अति उदास मुख हो घरेमें आए और मृत मोतीचंदके जडमाई निर्जीव कलेक्सको आभा रहित देखकर कुछ कह मुन न सके और मनमें अति पश्चाताप करते हुए कि हम इनके मरणके अवसरमें इनको कोई धर्मीपदेश न दे सके और न भगवानका पवित्र नाम सुना सके और न दान पुण्य कुछ करा सके। थोड़ी देरमें अम्बईके सारे बाजारमें खबर पहुंच गई कि सेट हीराचंदके बड़े पुत्र युवावस्थामें ही शरीर त्याग गये। अनेक कुट्रम्बीजन व मित्र मुलाकाती जमा हो गए अज्ञानी आंसु भरभरकर रोते हुए और ज्ञानियोंने वस्तुका स्वरूप विचार कर सन्तोप धारण किया । हीराचंद जीने मृत कलेवरको जन्तुओंकी विशेष उत्पत्तिके भयसेपडा रखना उचित न समझा और तत्काल स्मशान मूमिमें लिबा दग्ध किया की।

इस समय और सबने ही किसी न किसी तरह अपने चित्तको धैर्य्य



सेठबाके भतीजे सेठ प्रेमचंद मोतीचंद्जी.



बंधाया और इसे होनेहार मान संतोष धारण किया पर विधवा रूपाबाईके चित्तको जो क्षोभ व कष्ट हुआ वह उसीके या श्री केवलीभगवानके अनुभव गोचर था ।

रूपाबाईकी अवस्था इस समय २२ वर्षकी थी-खिलती नवानी
थी। अति मनोहरांगी रूपाबाईको एक परम
विधवा रूपाबाईके पवित्र धर्मकी श्रन्दा ही ऐसी प्यारी
धार्मिक विचार। सस्वी थी जो इसके मनको थांमती थी,
इसके वैधन्यपनेके दुःखको मुलाती थी तथा
इसके विचन्यपनेके दुःखको मुलाती थी तथा
इसके विचन्यपनेके दुःखको मुलाती थी तथा
इसके विचने चान ज्योति प्रगट कराकर संसारकी क्षणभंगुरताका
चित्र खींचती थी, जब पतिस्मरणका बहुत कष्ट होता था और यह
अपनी दृष्टि पुत्र प्रेमचंद्र पर डालनी तब यह तुर्त प्रसन्न चित्त हो
जाती थी। प्रेमचंदको वारवार निरखकर उसके रूप व गुण इसके
मनको शोक रहित करनेमें बहुत सहायता देन थे।

यद्यपि रूपाबाईको पित वियोगका क्लेश था परंतु उसको किसीने हाय हाय करते, रोत रहते व छाती कूटते नहीं देखा क्योंकि उसके आत्म विचारमें यह भी निश्चय था कि हरएक जीव अपने २ कमौंका फल इस शारीरमें भोगता है, आयु भी एक कम है। जब इसकी स्थित पूरी हो जाती है तब हरएकको शारीर छोड़कर जाना होता है। रूपाबाईने श्री पद्म पुराणको कई दफा सुना था। श्री सीताजीका वह वर्णन इसके मनके सामने छाजाता था कि जब अभिकुंडसे रक्षित होनेपर सीताजी तुर्त आर्यिकाकी दीक्षाके छिये बनको चलीगई थी। रामचंदजीके गृहस्थ अवस्थामें रहते हुए व उनकी अंतरंग इच्छा व प्रेम रहने पर भी

ऐसा कि यह अभी दीक्षान ले और राजमंदिरमें चले, पर सीताजीको शारीरसे प्रेम न था इसीसे शारीरके सम्बन्धी पतिसे मी प्रेम हट गया था--उनका प्रेम आत्माकी ओर आकर्षित हो गया था इसीसे आत्म कल्याण करना पतिकी क्षणिक सेवासे भी उत्तम समझकर सीताजी बनको ही चल्दींथी। इस वर्णनको जब २ स्पृतिमें लाती थीं रूपाबाई पतिकी स्पृतिके दु:खको भृलाती थीं और धर्ममें दिन पर दिन हढ़ माव करती जाती थीं।

सेठ माणिकचंद बड़े विचारशील व द्यालुचित थे। युवती रूपाबाईको वैघन्यमें देखकर इनका चित्त भीतरसे भर आताथा और यही विचार करते थे कि इसे किसी तरहका कष्ट न हो। एक दिन सेठजी अपनी भावनके पाम जाकर उसको कहने लगे—माताजी, आप कोई चिन्ता न करें, अब आप मन लगाकर खूब दान पुण्य करें, तीर्थ यात्र करें, तत उपवास तप करें, पुत्र प्रेमचंदको पालन करें, आपकी आज्ञा हम सब तरह माननेको तयार हैं, मोतीचंदजी अपने हाथसे कुछ दान नहीं कर गए थे। अब आप इच्छानुसार दान धर्म करें, किसी तरहका संकोच मनमें न लावें। यह सर्व लक्ष्मी आपकी ही है।

रूपाबाईको इन बचनोंसे बहुत ही सन्तोष हुआ। इसके हाथ-सर्वको प्रति मास १००) कभी १९०) सेठ माणिकचंद दे दिया करते थे। रूपाबाई घरमें सर्वकी सम्हाल रखती हुई तीनों भाइयोंकी स्त्रियोंको संतोषित करती हुई, अपनेसे किसीको कष्ट न हो इस तरह वर्तन करती हुई और पुत्र प्रेमचंदको बड़ी सुरक्षासे पालती हुई रहने लगी। रात्रिको जलपान लेनेका भी त्याग कर दिया, श्रंगार करना बन्द कर उदासीन रूपमें करण्य रंगके कमड़े पहनने शुरू किये जैसा कि गुजरात देशमें रिवाज है। पान खाना त्याग दिया, दिनमें नियम करके दो तीन वार प्रमाणसे मोजन पान करने छगीं, प्रायः सदा ही एक न एक रसको छोड़ने छगी, अष्टमी व चतुर्दशीको उपवास व एका-सन करने छगीं, दोनों समय कभी तीनों समय बड़े भावमे जाप व सामायिक करने छगीं। जैसा समय मिछे पृजा सुनने व शास्त्र सुननेमें विताने छगीं। अब घरमें कामकी अधिकतासे रसोई करने वाछे नियत हो गए थे, इससे क्षियोंके आधीन केवछ सामानकी देख भाछ व साग तकीरी आदिकी तथ्यारी करना इतना ही काम रह गया था। इघर इन सेठोंका ज्यापार खूब बड़ चछा था। विछायतके हर सप्ताहके मेछमें इनके एक २ दो २ पासंछ पन्नास पन्नास हजार तकके जाने छगे थे, दूसरे तीसरे दिन विछा-यतसे माछके ऑफर तार द्वारा आने छगे थे।

तारद्वारा विकी होने लगी। दो तीन वर्षतक विलायतका ज्यापार इतना नोरसे चला कि हरएक पार्सव्यापार में अट्टूट लमें इन्होंने दुगनेसे कम लाभ नहीं किया,
लाभ। विलायतमें जवाहरात पहननेका नया शौक पैदा
हुआ था उससे मोतीकी खूब ही विकी
हुई। माणिकचंद पानाचंदका फर्म मालकी सुन्दरता, सफाई
व लांटमें विलायतमें भी प्रसिन्द हो गया। इन वर्षोमें
लक्ष्मीने सेठोंके घरको अच्छी तरह भर दिया।

इन दिनों **चीन** देशमें भी माल जाने लगा था। प्रसिद्ध सेठोंने वहां भी **मारु मेजना और अच्छा न**फा करना शुरू कर दिया विलायत, चीन, व भारत तीनोंके न्यापारमें तीनों भाइयोंने बहुत सचाईसे वर्तन करके अच्छा धन पैदा सेठ हींगाचंदको लक- किया । इधर जब लक्ष्मीकी कृपा थी तब वेका रोग । उधर और चिंता न हो ऐसा नहीं था । संठ हीराचंदको संवत १९३५ में लक्क्वाकी बी-मारी हो गई जिमसे वे बड़ी कठिनतासे मंदिर तक जाते थे, शेष घरमें ही पड़े रहते थे । अपने पिताको कष्टावस्थामें देखकर कृत उपकारको न भूलनेवाले कृतज्ञ सेठोंका दिल बहुत दु:ख पाता था पर प्रत्येक जीव भिन्न र हैं, हरएकका कर्म्म हरएकके साथ है, कोई महान हितु भी अपने मिन्नके सुख तथा दु:खको च्या नहीं सक्ता, हरएकको अपने बांधे कर्मका फल आप ही भोगना पड़ता है ।

इन समय इनके घरमें एक बालक और रहता था जिसका नाल चुन्नीलाल था, यह सेठ हीराचंद्रनीकी चुन्नीलाल झवेरचं- दूसरी कन्या मंच्छाबाईका एत्र था जिसकी दका मम्बन्ध । लग्न सेठनीन गंगेश्वर गोत्रधारी सुरतंक शाह झवेरचंद बीजलालके साथकी थी और जिसका जन्म मंबत १९२३ चेत्र मुदी ११ को सुरतमें हुआ था। यह बालक तीक्ष्णबुद्धि था। पिनाकी स्थिति बहुत साधारण थी, यह किरानेकी दलाली करते थे। इसके पिताने इसे गुजराती पांचमी पुस्तकतक पढ़ाकर १० वर्षकी ही उमरमें इसके मामा सेठ माणि-कचंद पानाचंदके पास बम्बई मेजा दिया कि यह चतुर होकर धन-षात्र हो जावे। यह बालक सेठके घरमें बड़े प्रेमसे स्वता गया। एक वर्ष भी बम्बई आए नहीं हुआ था कि इसके पिताने सुरत बुलाकर इसका विवाह ११ वर्षकी उमरमें ही कर दिया। बम्बईके सेटोंने बहुत रोका पर उसने ध्यान नहीं दिया। इस कन्याकी उम्र ११ की थी और नाम जड़ावबाई था। विवाह होनेपर फिर चुन्नीलालको बम्बईमें भन दिया। यह सेटोंके साथ रहकर दूकान व घरके काममें पड़ गया और अधिक पढ़ने लिखने पर कुछ भी मन न लगाया, और कुछ काल पीछे मोती पोरनेका काम सीखने लगा।

इतने ही में सेठ माणिकचंदकी पत्नी चतुरमतीको द्वितीय

गर्भ रहा। इस समय सेठ माणिकचंदको यह
दितीय पुत्री मगनम- अभिलाषा हुई कि पुत्रका दर्शन हो तो

तीका जन्म। अच्छा है। यह बात गृहस्थियोंमें प्रायः

स्वाभाविक ही है कि व पुत्रीकी अपेक्षा

पुत्रके अस्तित्वको उत्तम मानते हैं।

चतुरमतीको इस गर्भके रहने हुए अपनं पतिसे अधिक प्रेम उत्पन्न होता था, यद्यपि प्रेमभाव पहले भी था, पर इस गर्भके कारणसे एक बहुत ही गाढ़ प्रीतिभाव पतिकी ओर झलक उठा था जिससे चतुरबाई सेट माणिकचंदकी खूब ही सेवा करने लग गई थी, बारबार इनको देखकर प्रसन्न हुआ करती थी।

चतुरबाईको धर्मके सम्बन्धमें जैसे रूपाबाईको खबर थी व रुचि थी ऐसी खबर व रुचि नहीं थी, साधारण रीतिसे दर्शन व जपकरना जानती थी, पर जबसे इसके यह गर्भ रहा यह चतुरमती धार्मिक कार्योमें खूब मन छगाने छगी। मंदिंरनीमें

कभी र पूजन सुनने बैठ जाती, कभी कोई शास्त्र पढ़ता तो सुनने लग जाती, दान धर्म करनेमें भी खूब मन चलने लगा। इसकी ऐसी चेष्टा देख बुद्धिमान जन अपने दिलमें यही जानते हुए कि जो कोई जीव इसके गर्भमें आया है वह कोई पुण्यवान, धर्मात्मा और उत्तम जीव है । सेठ माणिकचंद भी बड़े चतुर थे, इनको भी अपनी पत्नीकी विलक्षण दशा देखकर मनमें यही भान हुआ कि हमारे पुण्य वृक्ष खिला हैं, किसी महान जीवन आकर मेरी स्त्रीके गर्भवासको पवित्र किया है। कुछ मासका गर्भ हो गया. तब सेठ माणिकचंदने मनमें विचारा कि यहां रूपावाईके एक छोटे पुत्र पेमचंद्की सम्हाल है, पानाचंद्की स्त्री छोटी व निर्वल रोगी है, नवलबंदकी वहू बहुत ही छोटी है, यहाँपर प्रसृति होनेसे बालककी सम्हाल नहीं हो सकेगी अतएव इसको अपनी माताके यहां भेज देना ठीक होगा । सेठ हीराचन्दजीसे आज्ञा हे आप अपनी स्त्रीको नान्नेज प्राम पहुँचा आये । धीर २ प्रसुतिका दिन आ गया और सं० १९३६ के मिती पौष वदी १० (गुजराती मगसर वदी १०) के दिन चतुरमतीने शुभ नक्षत्रमें एक चंद्रमुखी पुत्रीका जन्म दिया। यह कन्या बहुत ही सुन्दर शरीर, सौम्यवदन और गंभीर मुखवाली थी । माता देखकर बहुत प्रपन्न हुई और अपने पिताको इशारा कराया कि सेठ माणिकचंदभीको तार देकर बुला लिया जावे क्योंकि चतुरबाईका अति गाढ़ प्रेम सेठजीकी तरफ हो उठा था। तार पाते ही सेठ माणिकचंद नान्नेन आ गए और पुत्रीकी नन्म कुंडली ठीक करा उसका नाम मगनमती रखा । सेटनी एक माससे अधिक वहीं उहरे । पुत्रीका गंमीर, सौम्य, गौल और विशास ग्रुख

व रारीरकी सुंदरता देख अपनेको अन्य मानते हुए, यद्यपि इनको प्रतीनन्म सुनकर कुछ खेद हुआ था पर जब इस प्रतीको देखा तो सारा खेद जाता रहा, इसकी चैतन्यता व आंखकी ज्योति इसे एक होनहार कन्या बतलाते थे। सेठ माणिकचंदको इस कन्याकी तरफ इतना मोह हुआ कि जैसा किसीको प्रत्र पर भी नहीं होता। कई मास बाद सेठनी फिर नालेन आए और चतुरबाईको फुलकुमरी और मगनमतीके साथ बम्बई ले आए।

बम्बईके जौहरी बाजारमें ही सेठ हीराचंद मयकुटुम्बके रहते थे। यद्यि हीराचंदजी लक्तवेकी बीमारीसे सेठ हीराचंदका दुःली रहते थे पर घरमें प्रेमचंद व फूलकुमरीको स्वर्गवास । इवर उधर खेलते कूदते, हंसते, गिरते पड़ते और मगनमतीको भी चतुरबाईकी गोदमें

जमीनपर विसिलते हुए देखकर बहुत ही खुश हो जाते थे।

सं० १९३७ के दशलक्षणीके दिन आगए, बम्बईके श्रावक लोग धर्मध्यानमें जीन हो गए, नरनारी छुन्दर बस्ताभूषण पहन सबेरेसे ही मंदिरजीमें जा पूजन पाठ पढ़ने छुननेमें लग गए। भादो छुदी ९ की प्रातःकालका समय था, पुष्पांजलि व अष्टमीके वतवाले सबेरेसे ही मंदिरजी आ गए थे, सेठ माणिकचंदजीने अष्टमीका उपवास किया था तथा यह प्रजाल पूजन नित्य ही करते थे सो उस दिन बड़े सबेरेसे ही घरसे मंदिरजी आ गए थे, ८ बजेके अनुमान पानाचंदजी भी मंदिर चले आए रूपाबाई, नवीबाई व चतुरबाई भी पुत्रपुत्रियोंके साथ मंदिरजी आ गई थी, नवलचंदजी आनेकी तथ्यारी-में थे—स्वान करके कपड़े पहन रहे थे। उसर हीराचंदनी अव

ऐसे अशक्त हो गए थे कि कुछ दिनोंसे इनका मंदिर जाना भी बन्द हो गया था। पर प्रगट रूपसे कोई ऐसी बात नहीं थी कि निससे सेठ हीराचंद्की तिवयत असाध्य व नाजुक समझी जाती हो। उधर तो भादों मासकी खटपट इधर हीराचंद्जीने एकाएक णमोकार मंत्र कहते व श्री अरहंत सिद्धको नमस्कार करते हुए अपने ही सहवासमें प्राण छोड़ दिये।

एकाएक मरण जानकर तीनों ही सुपुत्र बहुत ही दुःग्वित हुए। हम अपने पूज्य पिताकी कुछ भी सेवा न कर सके इसका पछतावा करते हुए जो उदासी इनके चित्तको हुई उमका वर्णन नहीं हो सक्ता है। माणिक वंद्जीका चित्त बड़ा कोमल था, इनके अश्चओंकी घारा वह निकली थी पर थे समझदार । तुर्त सम्हालकर जीवको गया जान व केवल जड़ पुद्गलको देख उसमें अधिक जंतु न पड़े इस ख्यालसे शीघ्र ही सर्व सम्बन्धियोंको एकत्रकर स्मशान-में दुग्ध किया की। सेठ हीराचंदजी ६० वर्षकी आयुमें अपने जीवनके कर्तव्यको बहुत ही नीति व परिश्रनसे पूर्ण कर, सेठ माणिकचंद, पानाचंद, नवलचंदु ऐसे उद्योगशील धर्म व जाति हितैपी तथा परोप-कारी पुत्रोंको छोड़ स्वर्गधाम पधारे। हीराचंदजीके भाव मृत्युके समय आर्तध्यान रूप नहीं थे किन्तु श्री पंचपरमेष्ठीके ध्यानमें अनुरक्त थे निससे सेठनीकी आत्माको शुभभावोंके निमित्तसे अवस्य शुभ गति प्राप्त हुई होगी। मरण कालमें जैसे भाव होते हैं वैसी ही गति आत्माकी होती है। जिन जीवोंको निरन्तर धर्मध्यान, सामा-यिक, जाप, पूजन, भक्ति तथा खाच्यायका अभ्यास रहता है वे जीव अवस्य मरण कालमें पूर्व अम्यासके निमित्तसे शुभ भावोंको प्राप्त कर सकते हैं परंतु जो अपने जीवनमें धर्मध्यानका अम्यास महीं करते हैं उनके भाव मरणकालमें सांसारिक संबंधके चेतन अचेतन पदार्थीमें उलझ जाते हैं जिससे आर्त्त व रौद्र ध्यानके बशीभृत हो वे नीच गतिमें चले जाते हैं, इससे हरएक प्राणीको उचित है कि वह अपनी आत्माके भविष्यको विचार कर धर्मकी शरणको कदापि न स्यागे, गृह सम्बन्धी कामोंको करते हुए धर्मका अम्यास करना हरएक गृहस्थका मुख्य कर्तव्य है।

सेठ हीराचंद्रके जीवन वृत्तान्तका अंत इस अध्यायमें होता है। इम सेठका जीवन वृत्तान्त मनन करने योग्य है। धैर्यको कायम रखते हुए, परिश्रमको न छोड़ते हुए अपने पुत्रोंको योग्य सुआचरणी व धर्मसेवी बनानमें जो भाव उक्त सेटके थे वे प्रशंसनीय थे। इन्होंने बालविवाहसे विरोध करके घोड़ आयुमें जब पुत्र धन कमानके योग्य हो गए तब उनका विवाह किया, यह बात इस कालमें बहुत ही अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। यदि छोटी आयुमें वे लग्न कर देते तो उनके पुत्रोंका उपयोग भोगविलासमें अधिक लीन हो जाता और एक महान गरीब व साधारण स्थितिसे एक धनाल्य प्रसिद्ध व्यापारीकी अवस्थामें पहुंचना स्वप्नमें भी दुर्लभ हो जाता। पुत्रोंको कष्ट न हो, उनका शरीर अशुद्ध वीसीके भोजनसे रोगिष्ट न हो इसलिये वर्षो तक जो सेठ हीराचंदजीने अपने हाथसे रसोई बनाके स्विलाई है यह एक अतिशयगंभीर, सहनशील, प्रेमालु और दीर्घ दर्शी व्यक्तिका ही कार्य्य हो सकता है।

वर्तमान कालमें भी सेठ हीराचंदजी ऐसे पिताओंकी जरूरत है

जो अपने स्वार्थका स्वयाल न करके अपने प्रत्रोंको सुपृत्र बनानेमें पूरी २ चेष्टा करें, उनके सच्च हितको देखें। हमारे प्रत्र धर्म, अर्थ और काम प्रकार्थके पालनमें प्रवीण हों यही भावना मातापिताके दिलोंमें यदि हो और वे उस मावनाकी सफलतामें प्रमादी न हों तो उनकी सन्तान अवश्य सुयोग्य बन सकती है। भारतका उद्धार उस समय तक होना कठिन है जब तक संतानकी रक्षा और शिक्षाका योग्य प्रबन्ध न होगा। हमारे पाठकोंको सेठ हीराचंदके जीवनसे पूरी २ शिक्षा लेनी चाहिये।



## अध्याय सातकाँ।

## लक्ष्मीका उपयोग।

सेट माणिकचंद्जीको अपन पूज्य पिताके वियोगका बड़ा भारी दुःख था, रह रह कर यह खयाल शुभ कार्यमें देर आता था कि हमने कोई भी भारी दान अपने पितासे नहीं कराया यह हमने बड़ी न लगाना। भूल की। यद्यपि मेरे दिलमें तो बहुत दिनसे था कि पिताजीसे प्रार्थना करूं कि वे कुछ आज्ञा देवें पर अभी **च्या जल्दी है फिर करलेवेंगे इसी खयालसे मैं पिताजीसे कुछ भारी** दान न करासका । बास्तवमें जो दान धर्म आदि कार्य्य करने हों उनको जब सोचे तब ही कर डाले। पीछे करूंगा, इस विलम्बसे बहुधा पछताना पड़ता है क्योंकि हम कर्मभूमियोंकी आग्रुकी समाप्ति होनेके कालका कोई निश्चित समय नहीं है। खैर, यद्यपि अब पिताजीकी आत्माको दानका पुण्य नहीं होगा तोभी मैं उनका यश स्थिर करनेके लिये जहां तक मेरा बशा होगा कुछ दानधर्मके बहे २ काम अवस्य करूंगा । अब मुझे रुक्ष्मीको केवर एकत्र ही नहीं करनी चाहिये किन्तु और भी अधिक दानमें लगाकर सफल करना चाहिये, कारण यदि मैं और पानाचंद भाई मोतीचंदकी तरह अकाल मृत्युके वश हुए तो फिर इतना वन प्राप्तिका परिश्रम वृथा ही चला जायगा, इस भांति विचार कर एक दिन माणिकचंदजीने भाई पानाचंद और नवलचंदसे एकान्तमें बात की कि हमलोगीने अबतक रुपया कमाया तो बहुत पर कोई भारी काम नहीं किया। देखों न, पितानीसे और न भाई मोतीचंद्रनीसे हमलोग कुछ दान करा सके, इसी तरह हमलोग भी मर गए तो हमारी यह लक्ष्मी हमारे द्वारा सदुपयोगमें न लग सकेगी। इससे अब कुछ काम करना चाहिये। पानाचंद्रनीने बड़े साहसके साथ कहा कि दान धर्ममें कहां पर क्या काम करना व किस तरह करना यह सब तुम्हारे सुपूर्व है, तुम विचार करके जिस काममें द्रज्य लगाना चाहो मुझसे केवल पुछलो और खर्च करो, किसी प्रकारका संकोच मत करो, मरा चित्त तो ज्यापारके सिवाय दूसरी बातोंके विचारमें कम जाता है तुम अच्छी तरह लक्ष्मीका उपयोग करो। नवलचंद्रने भी इस बातमें अपनी पसन्दगी प्रगट करनेके अर्थ अपना प्रसल मुख दिखा दिया-कुछ उत्तर न दिया क्योंकि नवलचंद्रनीको बात करनेमें बहुत संकोच होता था।

इस समय भारतमें बडे छाट लॉर्ड रिपनका जमाना था, यह छाट बड़े द्यालु, प्रजावत्सल व भारतमें शिक्षा आदिके प्रचार करानेमें उत्साही थे। इनके समयमें बहुतसी प्रबन्धक शक्ति स्थानीय हाकि-मोंको दी गई कि वे द्रव्यको एकत्र कर अपनी शक्तिसे उपयोगी कामोंमें लगावें। इनके समयमें शिक्षा की ओर खास ध्यान दिया गया जिसके लिये सर विलियम हन्टरके नेतृत्वमें एक कमीशन नियत किया गया। इनके समयमें नेपाल और काश्मीरके सिवाय सर्व भारतकी जनसंख्या एक साथ पहले पहल सन् १८८१ में लिखी गई।

इस समय जैनियों में भी छिलने पढ़नेकी चर्चा कुछ ज्यादा हो चली थी । रेलवेके निमित्तसे परदेश जाना सेठ हीराचंद नेमचं- आना भी बढ़ गया था । इमड़ोंकी ऐश्वर्य दका सेठ माणिक- वृद्धिका दक्षिणमें शोलापुर नगर अब भी चंदसे परिचय। प्रसिद्ध है । उस समय शोलापुरमें सेट हीरा-चंद नेमचंद दोशी परोपकारके काममें प्रसिद्धि पारहे थे। यह रोठ हीराचंद नेमचंद निहालचंद उत्रेश्वर गोत्र धारी दशा हुमड़के ग्ल्नबाईसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे छोटे पुत्र हैं। बड़े का नाम सखारामनी है, यह मूल निवासी ईडरस्टेटके वांकानेर शामके हैं। नेमचंद्रके पिता निहालचंद्र भीमजी पहले ज्यापारके लिये फलटनमें बसे और कपड़ेका काम शुरू किया। संवत १८९५ में इन्होंने एक दुकान शोलापुरमें भी की। सेठ हीराचंद मगसर बदी ८ (गुजराती कार्तिक बदी ८)सं. १९१३के दिन शोलापुरमें जन्मे। १० वर्षकी उम्रतक सर्कारी शालामें मराठी पढ़ी फिर स्कूल छोड़कर संस्कृत, न्याकरण और कान्य-का अभ्यास किया और सागवाड़ाके भट्टारक राजेन्द्रभूषणसे जब के शोलापुरमें ४ मास टहर, भक्तामर व सूक्तमुक्तावलीके अर्थ सीखे । संबत १९२६में यह अपने पिताजीके साथ श्री गिरनार और सेत्रं-जयकी यात्राको गए थे। जुनागढ़में इनके पिताने अपने भानेजे शाह मोतीचंद खेमचंद और भतीजे दोसी तलकचंद पदमसी आदिके योगमें एक दि॰ जैनमंदिर नया बंधवाकर सं॰ १९२६ वैशाखमें प्रतिष्ठा करा दी और वहां चार महीना ठहरे। आयुकर्म समाप्त होनेसे नेमचंद (गु०) वैशाख वदी १४के कि स्वर्ग पथारे। यात्रासे छौटकर इन्होंने खानगी रीतिसे इंग्रेजीका भी इतना अभ्यास

कर लिया कि यह समाचार पत्र व पुस्तकें पड़ लेते व चिट्टीपत्री कर रेते थे। सं० १९३०में इनकी लग्न हुई। १७ वर्षकी उम्रसे यह कारेकी द्कान सम्हालने लगे। शोलापुरमें स्गिनिंग एन्ड वीविंग मिल है इसके एजन्ट बम्बईनिवासी सेठ वीरचंद दीपचंदजी थे। इनके साथ सेठ हीराचंद कपडेका व्यापार करने थे। इनको धर्मशास्त्रोंके वांचनेके सिवाय बाहरी पुस्तर्कोंके पड़नेका भी बहुत शौक था। संवत १९३६में इन्होंने शोलाग्ररके बानारमें एक लायबेरी (सार्वजनिक पुस्तकालय) स्थापित कराया और आप उसके मंत्री हुए। लायबेरीके निमित्तसे सेठ हीराचन्द्रजीकी सर्व साधारणमें बहुत मान्यता हो गई, यहां तक कि संवत १९६७में शोलापुरकी म्यूनिसिपालि-टीमें आप सर्कारी मेम्बर नियत हुए । उम समय व्यापारियोंपर कर बढाया गया था उसको उक्त सेटने लोगोंकी तरफसे सर्कारसे लिखा पड़ी करके बहुत घटवा दिया इससे इनकी बहुत कीर्ति हुई, जैन जातिमें जो कुछ जागृति इस समय फैली हुई है, स्वाध्यायका जो प्रचार हो रहा है, प्रन्थोंके प्रकाशनका जो कार्य्य हो रहा है, संस्कृत व धर्म विद्याकी पट्टाईमें विद्यार्थी दत्तचित्त हो रहे हैं इस सर्वके मूल कारण उक्त सेठजी हैं। अब भी आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं और जाति व धर्मसेवामें छीन हैं तथा बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाके सभापति हैं। सं० १९३७को शोरापुरसे आप किसी न्यापारी कार्यके निमित्त बम्बई आए उसी समय और मी शोलापुरसे जैनीमें ज्यापारी बस्बई आए थे। सेठ हीराचंदजीको शास्त्र स्वाध्यायका नियम था. यह बम्बईके जिन मंदिरमें स्वाध्याय करने लगे इतनेमें क्या

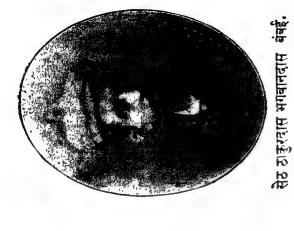
देखते हैं कि एक बहुत स्वरूपवान सेठ सिंहसमान देदीये.
मुखाकृतिको रखनेवाले, धोती दुपटा जोहे हुए श्री जिनेन्द्रकी
प्रजाल पूना करके आये और शास्त्रस्वाध्याय करने लगे। सेठ हीराचंदने इनको प्रतापशाली व धर्मप्रेमी तथा स्वाध्यायमें अनुरक्त
देखकर बात करनेकी इच्छा दिलमें धारण की। जब यह सेठ स्वाध्याय
कर चुके तब ही अपना स्वाध्याय पूर्ण किया और इनसे कुछ पूछना
ही चाहते थे कि इतनेमें सेठ माणिकचंदने अपनी आदतके वश स्वयं प्रश्न किया कि आपका कहाँ निवास है, कब आए इत्यादि।
परस्वर वार्तालापसे सेठ माणिकचंदने निश्चय कर लिया कि यह एक
बुद्धिपान, चतुर, विद्वान, शास्त्रके ममी तथा परोपकारी ज्यापारी
हैं। आपने सेठ हीराचन्दको अपनी दुकानपर बुलाया।

माणिकचन्द्रजीने दृकानपर इनका बहुत सन्मान किया तथा हित जनाया। यही प्रथम अवमर है जब सेठ माणिकचंद्रने अपने जीवनके धर्मकार्यों में मुख्य मंत्र देनेवाले सच्चे धर्मात्मा मित्रसे मिल्लेका लाम लिया। बातचीत होते हुए सेठ माणिकचंद्रने पृज्य कि आजकल जैन जातिमें कौन रसी आवश्यकताएं हैं जिनमें धन व्यय करना चाहिये? उत्तरमें सेठ हीराचंद्रने कहा कि आजकल जैन जातिमें धर्मविद्याका बहुत कम प्रचार है, लोग स्वाध्याय बहुत कम करते है, तथा जो इंग्रेजी पढ़ते हैं उनको धर्म शिक्षा बिलकुल नहीं मिलती, बहुतसे लोग स्वाध्याय करना भी चाहते हैं तो उनको ग्रंथ बड़ी कठिनतासे मिलते हैं, प्रायः पुजा पाठ आदिके ग्रन्थ लिखे हुए अजुद्ध देख बड़ते हैं इससे लोग अजुद्ध पुजा पढ़ते हुए दीख पढ़ते हैं, आपने अपनी गिरनार व पालीताना

की यात्राका हाल भी कहा कि तीर्थोंकी व्यवस्था योग्य नहीं है, प्राचीन मंदिर वेमरम्मत पड़े हैं, अंतमें आपने बताया कि हमारी-रायमें अब विना खास आवश्यकताके नवीन श्रीजिनमंदिरजी बंधवानमें द्रव्यको न लगाकर प्राचीन मंदिरोंका जीर्णोद्धार करना चाहिये, तीर्थोंकी व्यवस्था सुवारना चाहिये, वहांका हिसाब ठीक कराना चाहिये, धर्मशालाओंकी दुरुस्ती कराना चाहिये, पाठशालाएं आदि स्थापित करना चाहिये, जो इंग्रेजी पड़नेवाले छात्र धर्मशिक्षा लेवें उन्हें पारितोषिक व मासिक छात्रवृत्ति देनी चाहिये, शुघ्र ग्रंथ लिखान चाहिये व मेरी रायमें तो यदि ग्रन्थ छपाएं जाय तोभी कुछ हर्ज नहीं है।

इस बातको सेठ हीराचंद्रने द्वे राब्दोंमें इम लिये कहा था कि उस समय प्रन्य छपनेकी बात भी कोई नहीं करता था व जो ऐसा कहता उसे बहुत निन्छ समझते थे। सेठ माणिकचंद्रजी बड़े गुणप्राही थे और उत्तम बातको उसी तग्ह अपनेमें लीन करते थे जैसे कोमल भूमिमें मेयका पानी समा जाता है, सेठ हीराचंद्रकी बातोंको दिलमें जमाकर उनकी पूर्तिका मनन करने लगे।

थोड़ ही दिनोंबाद सेउ माणिकचंदजी सूरत गए और श्री चंद्रप्रभुजीके बंद्र जिन मंदिरको जिसके चंद्रप्रभुजे मन्दिरका जीर्णोद्धारमें अग्रिसे मस्म होजाने पर सेठ पुन: जीर्णोद्धार । हीराचंद्रजीने बहुत उद्योग किया था फिर जीर्ण द्शामें देखकर उसका उद्धार करना ऐसा मनमें निश्चय किया और बम्बई आकर अपने माइयोंसे सम्मति करके जीर्णोद्धारके वास्ते प्रबन्ध किया। मंदिरके नीचेश्री चंद्रप्रभू स्वामी





[ देखो एन्ड १८६ ]

सेठ हीराचंद नेमचंद सोलापुर.

की बेदी सिंहासनादिके बनवानेमें करीब २०००) आपने खर्च किये। मंदिरजीको ठीक करानेमें सेठ माणिकचंद प्रायः सुरत आते जाते रहे। जब यह मंदिर बन चुका तब संवत १९३९ में इसकी जी-णींद्वार प्रतिष्ठा उक्त सेठोंने बम्बईके दूसरे सेठ माणिकचंद लामचंद चौकसीके साथ मिलकर बहुत धूमधामसे की जिसमें ८०००) खर्च हुए। महारक १०८ श्री गुणचंद्रजी प्रतिष्ठाकारक थे। दो तीन नवीन प्रतिमाएं भी आई थीं इससे पंचकल्याणक विधान हुआ था। शोलापुरसे दो उपाध्याय विधि कराने आए थे। इस उत्सवमें गुन् रातके बहुत लोग एकत्र हुए थे, संख्या १०००के होगी।

इस समयमें प्रसिद्ध श्रुद्धक धर्मदासजी भी आए
थे। आप बड़े आत्मानुभवी ये, आपने
श्रुद्धक धर्मदासजी। सम्यग्ज्ञानदीपिका आदिकई ग्रंथ बनाकर छपवाए हैं। इनके सहपाटी भट्टारक वीरसैन
कारंजा व पीतांबरदासजी पारोला आदि हैं। यह तीर्थभक्त भी थे,
शिखरजीकी सेवामें बहुत लीन रहते थे, बहुतसी धर्मशाला इनके
उपदेशसे वनीं, राजा पालगंज उस समय पार्श्वनाथसिंह थे, जो शुल्लकजीका बहुत सन्मान करते थे। राजाके मकानके
पास प्राचीन दि॰ जैन मंदिर है जिसमें बहुत प्राचीन श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति अतिवीतराग ध्यानाकार है। यह मंदिर जीर्ण
होगया था। आपने राजाको उपदेश देकर दुरस्त करवाया और
फिर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठा की जिसका शिलालेख वहाँ पत्थरमें खुदा
हैं। उसकी नकल यह है—

श्रीमत् श्रीसमेद शिखर मंदिर जैन दि० तस्य जीणोंद्वार प्रतिष्ठा करापितं गादि पालगंज राजासाह्य श्री श्री पार्श्वनाथास्ट्रंजी प्रतिष्ठाचार्य श्री धर्मदासजी.....बदी २ संवत १९३९ मंदिर पालगंजमें अयं सत्यः।

एक दफे राजाको कुछ द्रव्यकी जरूरत हुई। आपने देशमें घूमकर ७५०००) जमा करके राजाको कर्ज दिलाए। जब शिखरजीके पहाड़ पर वाडेम नामके अंग्रेनने मूअरका कारखाना किया था उसके उठानेमें आप प्रयत्नशील थे। कलकत्तेके राय बद्रीदासजीसे आपका पत्र व्यवहार रहता था। आपने ही बद्रीदासजीको हुद किया कि इस हिंसाके कामको बन्द करानेका प्रयत्न करो। उस समय दिगम्बर क्षेताम्बरमें पूरा २ मेल था। आपके पत्रकी नकल ' जैन बोधक ' अंक ४१ माह जनवरी १८८९ में छपी है जिसके कुछ बाक्य दिये जाते हैं—

## पत्र मिती भादवा वदी ८ संवत १९४५

शहरुंसै चिठी आई । आपने सर्वको खबर दिई आपकी तारीफ कहांतांई लिखें। "

सेठ माणिकचंदने अंकलेश्वर निवासी धर्मचंदनीको खास पत्र देकर सूरत बुलाया था यह वही धर्मचंद है जिन्होंने सं० १९३४ में अंकलेश्वरकी त्रिलोक पूजा विधानके समय सभामें श्रीयुत त्यागी महाचंद्र कृत भनन गाया था और जिसकी नकल सेठ माणिकचंदको भेजी थी। धर्मचंद नृत्य व गानमें बहुत चतुर थे। सूरतकी इस प्रतिष्ठामें इन्होंने अपने भजनोंसे खूब भक्ति दरशाई जिससे नरनारियोंका चित्त धर्मप्रेमसे भर गया। एक दिन धर्मचंदने सेठ माणिकचंदजीसे एकान्तमें कहा कि में एक छोटेसे प्राममें पड़ा हुआ हिंसाका धन्धा-कर रहा हूं, आप मेरे लिये कुछ काम बताओ जिससे में इस हिंसासे बच् । सेठ माणिकचंदजीने इस धर्मात्माकी बातको अपने हृदयमें घर लिया और उनसे कहा कि तुम कोई चिन्ता न करो, हम विचार करेंगे। इस उत्सवमें मंदिरजीको ८०००) की उपन बोलीमें हुई, उसको सेठ माणिकचंदने जमा कर बम्बईमें एक मकान खरीद इसको अब २००००)के करीब तक पहुंचा दिया है।

इस वक्त प्रेमचंद और फुलकुमरी ५ वर्ष और मगनमती ३ वर्षकी थीं। इन तीनोंको ऐसे मनोहर वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत किया गया था कि जो हज़ारों जैन नरनारी सुरतमें आए थे वे इनको देखकर मोहित हो जाते थे। सर्वोंके गलेमें मोतियोंके हार व हीरके कंटे बहुत ही शोमाको विस्तार रहे थे। जो सेट हीराचंदकी पूर्व स्थि-तिको जानते थे वे इन बच्चोंको देखकर सेट हीराचंदके उद्योगशीक और सदाचारी पुत्रोंके प्रण्य और पुरुषार्थकी खूब ही सराहना करते थे।

सुरतकी प्रतिष्ठासे इन तीन पुराषार्थी पुरुषोंका यश और भीः विस्तृत हो गया।

सं० १९४० के जाड़ेके दिन आए। बम्बईमें एक दिगम्बर श्री गोमदृस्वामीजी- जैन गुजराती प्रसिद्ध धनाढ्य सेठ सौभाग-शाह मेघरान रहते थे । इनकी भी धर्ममें बड़ी की यात्रा सं.१९४०। प्रीति थी तथा इनके भाई सुरत गहीके चंद्रकी-र्ति नामके भद्दारक थे, जिनका वर्णन अध्याय दूसरेमें आया है। इन्होंने एक दिन बम्बई मंदिरमें वर्णन किया कि हमारी इच्छा दक्षि-णकी ओर श्री जैनबिद्री और मूलबिद्रीकी यात्रा करनेकी है, जिनभाइयोंकी इच्छा हो साथ चलें । सेठ माणिकचंदनी तुर्त तयार होगए। इनके उद्यत होते ही १२५ मनुष्योंका संघ यात्राके छिये जुड गया । सेठ पानाचंद और माणिकचंद और रूपाबाई आदि सर्वे कुटुम्ब लड़के बच्चे यात्राको रवाना हुए । घरमें केवल नवलचंद सकुटुम्ब रहे ताकि व्यापारका काम बन्द न पड़े । इस यात्रामें इन प्रसिद्ध मोतीके जौहरियोंने बहुत रुपया खर्च करना विचारा | कई महाशयोंको यात्रा करानेमें मली भांति मदद भी की। सेठ माणिकचंद बड़े परोपकारी थे। सबको आराम पहुंचाकर आप आराम करते थे । रास्तेमें सबके टिकट, माल असवावका प्रबन्ध, उहरनेके लिये स्थानकी तलारा, हिसानका रखना, वहांवालोंसे बार्तालाफ करना यह सब काम बहुतही खटपटी निरालसी सेठ माणिकचंदके जिस्मे था।

सर्व संत्र सकुराल श्री जैन बद्री पहुंचा। मैसूर राज्यमें श्रवण बेलगोला नामका नगर मैसूर स्टेशनसे ५५ मीछ व फ्रेंचरांक स्टेशनसे ३० मीछके अनुमान है। वर्तमानमें लोग बम्बईसे हुबली होकर आरसीकेरी स्टे-शानसे जाते हैं यहांसे भी ३० मील है। यहाँ गोमहस्वामीकी बृहत मूर्ति है जो ५ मील दूरसे अपने मन्य दर्शन प्रदान करती है। उस समयकी कुछ व्यवस्था जो थी वह यहाँ " जैनबोधक " अंक **४** पुस्तक १ दिसम्बर सन् १८८५ के अनुसार लिखी जाती है जिस यात्राका वर्णन उस पत्रके सम्पादक सेठ हीराचंदने स्वयं सम्बत् १९४१ में यात्रा करके छिला है—" बेलगोला प्राममें ८ दि॰ जिनमंदिर हैं जिनमें पट्टाचार्यका मंदिर दुरुरत है शेष नहीं। मंदिरोंमें घास बढ़ गई है, मंडपमें पक्षियोंके घर हैं जिससे दुर्गय आती है। यहाँ दो पहाड़ एक दूसरेके सन्मुख हैं, एक बड़ा जिसको घोडपेटा दूसरा छोटा जिसको चिकपेटा कहते हैं। बड़ेपर ८ व छोटेपर १४ दि॰ जैन मंदिर है। व्यवस्था पट्टाचार्घ्यके आधीन है । कई मंदिरोंके दरवाजे नहीं है जिससे पशु पक्षी उपसर्ग करते हैं। यहाँसे १ मील दूर जिननाथपुर एक प्राम है, यहाँ दो प्राचीन मंदिर हैं। एक प्रतिमा नहीं है, दूसरेमें श्री शांतिनाथ-स्वामीकी बहुत प्राचीन प्रतिमा है जिसकी पीटपर लिखा है कि यह मंदिर कोल्हापुरके भीमसेन सेनापतिने बनवाया। इस मंदिरका कुछ भाग गिर गया है सो गांवका पटेख जैनी न होनेपर भी मंदिरकी दुरुस्तीका प्रयत्न करता है। सेठ हीराचंद नेमचंद छिलते हैं कि हमारे साथवालोंने १००) व बेलगुलगांववालोंने २००) इस प्रकार २००) इसकी दुरुतीके लिये ब्रह्मपुरि शास्त्रीको दिये तथा

मंदिरों में दरवाजे छगानेको भी रुपये पट्टाचार्घ्यको दिये हैं। इस संबंधमें जब सेठ हीराचंद यात्रासे छौट आए तब पट्टाचार्घ्यजीने सेठजीको हिंदी भाषामें पत्र भेजा उसकी नकल " जैनबोधक " में है. उसका कुछ सारांश यहां दिया जाता है।

"......आपने श्री गांमहस्वामीके पहाड़ ऊपर और चिकपेटा ऊपर दरवाजे दुरुस्त करने वास्ते रुपये दे गए ये जिसमेंसे चिकपेटा ऊपर शांतिनाथ महाराजके मंदिरके दरवाजे तयार हो जुके हैं वाकि तयार करनेके लिये लोहाके सिलापटी सब लाए हैं.....गोमहस्वामीके पहाड़ ऊपर बड़े दरवाजेको खिड़की तयार करके बिंठाई है....... जिननाथपुरके मंदिरके दुरुस्तीका काम ब्रह्मद्वीर शास्त्री मूलबिद्रीसे यहाँ आवेंगे तब उनके विचारोंसे शुरू करेंगे.....काम पूरा करके आपको लिखेंगे चंद्रप्रभ काव्य व्याख्यान सहित श्रापनेको दिई है.......तयार होनेसे आपके वास्ते एक प्रति भेज देवेंगे......आशीर्वाद

## <sup>सही</sup> भट्टारकजीकी द्राविड लिपिमें।

इस पत्रकी कुछ नकल यहाँ इसिलिये प्रगट की गई है कि हमारे पाठकोंको मालूम हो कि कनड़ी हिन्दीको भारतकी देशमें भी हिन्दी लिखने व पढ़नेका रिवान राष्ट्रीय भाषा है जिससे भारतकी यदि कोई भाषा क होनेका दावा। लिपि राष्ट्रीय होसक्ती है तो यह हिन्दी भाषा ही है। दूसरे यह कि

पट्टाचार्यजी प्रंथोंके मुद्रणमें विरोधी न होकर सहकारी थे।

गोमहस्वामीका बड़ा पहाड़ एक ही पत्थरका है उत्पर चढ़नेपर १ बड़ा दरवाजा आता है उसके भीतर जाते ही एक दम खुछी, निर्मल, शांतस्वरूप, बहुत विस्तीर्ण, मनोहर बाहुबाल स्वामीकी नम्न मूर्त्ति नज़र आती है। मृतिके दर्शनसे अंतःकरणमें एक प्रकारका आश्चय युक्त आनंद होता है। १६ हाथ चौड़ी और ४० हाथ उंची ऐसी उस्कृष्ट ध्यानारूढ़ तेमस्वरूप मूर्तिकी तरफ रातदिन नेत्र लगांके केंद्रे तौभी तृप्ति नहीं हो सकती। बाहुबिल्खामी प्रथम तीर्थकर श्री ऋषमदेवके पुत्र थे, इन्होंने दीर्घकाल तपश्चरण किया था निससे चरणमें वल्मीक लगे हैं उनमेंसे सर्प निकलके पांवसे खेल रहे हैं। शरीरके ऊपर बेल चढ़ी हैं ऐसा हुबेहुब भाव पत्थरमें मनोहर खुदा हुआ देखनेमें आता है। गोमहस्वामीके वाएं हाथमें बालबोध अक्षर खुदे हैं—

"वामुण्डराजे करवियलें"
गंगरजे सुतालय करवियलें"

इस ही अभिप्रायके सीधे हाथमें कानड़ी और द्राविड़ छिपिमें अक्षर खुदे है । चामुण्डराय विक्रम संवत् ६००के अनुमान हुए है+ । उन्होंने सबयं यह अक्षर हिखबाए है ऐसा ब्रह्मसूरि शास्त्री

कहते हैं।

वाई तरफ जो कनडी अक्षर हैं उनका तात्पर्य है-

" नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्तीका शिष्य बसदी सेठीने कोट बंधायके चौवीस तीर्थकरोंकी प्रतिमाएं स्थापित कीं।" यह प्रतिमाएं श्री बाहुबिल स्वामीकी मूर्तिके पीछे प्रदक्षिणामें विराजित हैं। गोमहस्वामीकी बाई तरफकी इमारतमें एक तेलिया पत्थरपर लिखा है—

नोट-वर्तमानमें चामुंडरायके होनेका संवत १०५० के लगभग माना जाता है। देखो प्रशस्ति गोमष्टवार।

शके १२०२ प्रमायी संवत्सरे कार्तिक सुदी १० सोमवार में संबुदेव गोमइस्वामीके वास्ते गदियानेकी दूध दररोज़ देऊंगा।

तथा गोमटस्वामीके सीधे हाथकी तरफ इमारतमें कूष्मांडिनी देविकी मूर्ति है जिसके नीचे लेखका भावार्थ है——

"नयकीर्ति सिद्धान्त चकवतीका शिष्य बालचंद्रदेव उनका शिष्य कीर्तिसेठीका पुत्र बम्मसेठीने इस यक्ष देवीकी प्रतिष्ठा की ।"

कई स्थानों में पत्थरके खुदे हुए प्रतिमाके समीप बत्स सहित गौ, हस्ती, सूर्य्य, चंद्र हैं, इसका हेतु ब्रह्मसूरि शास्त्री कहते हैं की दान देते समय ये चार साक्षी रखके दान देना ऐसा शास्त्राधार है जिससे यहाँ बताए हैं। चांगुंडराजांके पहले कुडणराजा हुआ है उसके समयका शिलालेख चिकपंटा याने छोटे पहाड़ पर है। अक्षर धवल महाधवलके लिपिके हैं। इसका वर्णन वृहत् हरिवंशमें

। मैसूरका राजा कृष्णराजकी माता देवी रमणी जन धर्मी थी जिसने चिकपेटाके उपर श्रीआदिनाथके जीर्ण मंदि-रको फिरसे बनवाया। इस ही मंदिरमें श्री भद्रबाहुका चित्र चंद्रगुप्त राजाके समयका पत्थरमें खुदा हुआ है। चिकपेटाके उपर श्री मद्रवाहुके पादुका छंबे एक बालिस्त ८ अंगुल हैं। वहाँ बालबोध अक्षरमें लिखा है—

"भद्रवाहु स्वामी पादुका जिनचंद्र पणिमंद्" और एक यंत्र निकल है।

	¥	
28	श्री	२
	8	

श्रवणबेलगुल गांवमें एक तालाव है जिसको मैसूरके पहले खजांची अण्णाप्पा सेठी जैनने बंधवाया था। लम्बा फुट २०० चौड़ा फुट ४०० है। पूर्व बाजूके द्वींजेपर जैन प्रतिमा पत्थरमें खुदी हुई है।

बेलगुल गांवके बड़े मंदिरको हालीवीड़का राजा नरसिंह ब्रह्मालका मंत्री हुलम्पा भंडारीने शाका १२०० के अनुमान बनवाया था । वहाँ कनड़ीमें शिलालेख है उसका भाव है— "नयकीर्ति मुनिका शिष्य भानुकीर्तिको शक १२०० बहुधान्य नाम संवत्सरे चेत्र मुद्ध १ रविवारके दिन सवणपुर नामका गांव (वेलगुलसे एक कोस पर है) जागीर दिया। दूसरा शिलालेख है जिसमें शाका १२८० कीर्ग संवत्सर भाद्रपद शुद्ध १ है। आगे नहीं पढ़ा गया। यहाँके अनंतनाथके मंदिरको मूलसंघ देशीयगण कुंदकुंदाचार्यान्वय चारुकीर्ति पंडिताचार्यके वक्त मंगा स्त्रीने बनवाया है। शाके १७९२में खरनाम संवत्सरमें मैसुरके राजा कुष्णराजने श्री बाहुबलि स्वामीकी सेवार्थ चारुकीर्ति पट्टाचार्यको ६ गांच इनाममें दिये हैं जो अब तक जागीरमें मौजूद हैं।

इन दोनों पर्वतोंपर १४४ शिलालेख हैं निनकी नकल व इंग्रेजीका उल्था राइस साहबने अपनी प्रस्तकमें छपाया है निसका नाम हैं "Inscriptions at Sravanbelgola" जो बंग-लोरके सर्कारी प्रेससे मिलती है। यहाँ पर मुनियोंका सदा निवास रहा है। बहुतसे लेखोमें उनकी पट्टावली व समाधिमरणकी बात है। भदबाहु श्रुतकेवलीकी समाधि यहीं हुई। उस समय मौर्यवंशी राना चंद्रगुप्त मुनि अवस्थामें मौजूद थे। उन्होंने ही अंततक सेवा की थी। ऐसे रमणीक अतिशय क्षेत्रके दर्शन प्राप्त कर सेठ भाणिक चंदके संवको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ। बड़े सेठ माणिक चंदकी पर्वत पर चढ़ते हुए सेठजीने देखा कि वृद्ध दया और सीढ़ियोंका प्ररुष व स्त्रियोंको बहुत ही कष्ट हो रहा है, प्रबन्ध। पत्थर चिकना ढालु है बारबार पैर फिसल्ता है। सेठजीका शरीर भी छोटा व भारी था।

इनको भी पर्वत चढ़ते हुए बहुत कप्ट हुआ। यह चढ़ते २ विचारने छगे कि यदि इस पर्वतपर सीढ़ियां बनजावें तो सदाके छिये यात्रियोंका कप्ट दूर हो जावे। अन्तक छाखों हजारों ही यात्री हो गए होंगे किसीके दिछमें यह भाव पैदा नहीं हुआ। पाठकगण, इससे समझ छेंगे कि किस कदर भारी परोपकारबुद्धि सेठ माणिकचंदमें थी। आप ऊपर गए, संत्रसहित परमानंददायक श्री बाहुबछि स्वामीके दर्शन करके अपने जन्मको कृतार्थ मानते हुए। पानाचंद भी बहुत ही प्रमन्न हुए। सर्वने वहां बड़ी भक्तिसे चरणोंका प्रछाछ किया किर अष्ट द्रव्यसे खूब भाव छगाकर पूजन करके महान पुण्य उपाजन किया। दर्शन करते २ किसीका भी मन नहीं भरा।

दूसरे दिन छोटे पर्वतों के मंदिरों के दर्शन किये। श्री भद्रबाहुस्वामी के सिहियों के चंदेमें १०००) चरणों को स्पर्शकर महान आल्हाद प्राप्त करते हुए। सेठ माणिक चंदने अपने भाईसे सलाहकर अपने संत्रको एक त्रकर निश्चय किया कि बड़े पहाड़पर २००० सीढ़ियां बनवादेनी चाहिये। ५०००) से अधिककी एक पट्टी की जिसमें आपने १०००) की रकम भरी। रुपया एक त्रकर पट्टाचार्यजी के प्रपुर्द किया कि इससे सीढ़ियां बनवादी जावें। यह काम सेठ माणिक चंद-

नं इतने महत्वका किया कि आनतक इन सीढ़ियोंके द्वारा यात्रि-योंको आराम पहुँच रहा है व आगामी पहुँचेगा।

वहांसे संघन श्री मूलिबद्री जानेका विचार किया और गाहि-योंके द्वारा पैदल प्रस्थान किया।

मूलिबद्रीके रास्ते व मूलिबद्रीका कुछ हाल उत्पर लिखित जैन बोधकके अनुसार यहां कुछ दिया जाता है:—

श्रवणबेहगोहासे १ कोस वसतीहेली गाँवमें एक जिन मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा नयकीति वेद्धगाड़ी द्वारा मृह- सिद्धान्त चक्रवर्तीके हाथसे हुई है। बिद्रीकी यात्रा। यहाँसे १२ मीह चंद्रायण पटण गांव आता है। यहां जैनके २ घर हैं पर मंदिरजी नहीं है। यहां जैनके २ घर हैं पर मंदिरजी नहीं है। यहां जैनके २ घर हैं पर मंदिरजी नहीं राजा बल्लालकी स्त्री शांतग्राम है जिसको हालीवीड़ी राजा बल्लालकी स्त्री शांतग्राम है जिसको हालीवीड़ी शांतिनाथजीका मंदिर है, ४ जैन घर हैं। यहाँसे ८ मीह हासन शहर हैं, २ जिन मंदिर हैं, यहाँसे २० मीह हालीवीड है यहां २ जिन मंदिर है श्री आदिनाथजीके मंदिरके बाहर प्रतिमा के नीचे एक हेख है जिसका भाव यह है:—

" मूल संघ देशीय गच्छ गण पुस्तक कुंदकुंदान्वय, इंगलेश्वर प्राममें माघनांदि महारकके शिष्य दोय श्री नेमिचंद्र महारक देव और श्रीमंत् अभ्यचंद्र सैद्धांतिक चकवर्तां० जिसमें पहले हैं सो वालचंद्र पंडितदेकके शिक्षागुर और दूसरे विद्यागुरु थे। बालचंद्रमे कहा था कि शाका शालिवाहन ११९७ भाव संवत्सर भाद्रपद शुद्ध १२ बुधवार मध्याह कालमें अवना अंत होगा। एक मास तक अनदान लिया पर्यकासनसे समाधिस्य हुए। तथा सार चतुष्टयका व्याख्यान नेमिचंद्र बांचते हैं और उनके शिष्य वालचंद्र सुनते हैं। दूसरी तरफ अभयचंद्र बांचते है और बालचंद्र सुनते हैं ऐसे चित्र हैं और लेख है। चित्र केवल नग्न हैं।

शांतिनाथ मंदिरमें मुनि प्रतिमाके नीचे लेख है-

" कुलमूषण सैडांतिक शिष्य माघनंदिके शिष्य शुभनंदिके शिष्य चारुकीर्ति पंडितदेव शाके १२०२ प्रमाधिनाम संवत्सरे कार्तिक वदी ९ शिनवार वालचंद्रके शिष्य अभयचंद्र समाधिस्थ हुए। ''

यहाँ दूसरी मुनि प्रतिमा है । उसके नीचे लेख है-

" शाके १२२२ शार्वरी संवत्सरे चैत्र वदी ३ गुरुवार रामचंद्र सलधारी समाधिस्थ हुए। यह बालचंद्र पंडित देवके शिष्य थे। मुनि प्रतिमाके बाज्में पीछी कमंडल है।

पार्श्वनाथ मंदिरमें एक फूटा हुआ शिला लेख है जिसपर शक १६३२ है। आगे नहीं बंचा। यहाँ एक दूसरा शिला लेख है जिसपर शाका १५७० ईश्वर नाम संवत्सर फाल्गुण शुद्ध ५ गुरुवार है। इस मंदिरमें स्तंभ है जिसपर लिंगायत लोगोंने शिवलिंग स्थापन किया था उसको जैनियोंने निकाल डाला, दोनोंमें झगड़ा हुआ जिसका फैसला वेल्रके कृष्णापा नाईक आयनवरू कलिकाल अष्टम चक्रवर्ती व्यंकटादि नायकने करके समाधान किया।

यहाँसे १० मील वेलूर गाँव है। यहाँ जिनमंदिर नहीं है पर एक बड़ा विष्णु मंदिर है, उसके शिलालेखसे प्रगट होता है कि यह पहले जैन मंदिर था फिर विष्णु मंदिर किया गया है। वह लेख इस प्रकार है:—

" श्रीमदिशुद्धवोधाय शांतायामलकीर्तये।

स्याद्वाद सत्यवाक्याय, जिनेन्द्राय नमो नमः ॥ १ ॥
जयतु जयतु शश्चत् शासनं जैनमेतत् ।
सकलविपुलधर्म श्रीलतावद्वमूलं॥
सुद्द्मिद्द्धारित्यां यावदेषाधरित्री ।
वसतिवस्तिहरूचेरईतस्थानलक्ष्म्याः॥ २ ॥ "

इसमें एक छोटीसी पाषाणकी चौवीसी मूर्ति फूटी पड़ी हैं। इम गांवमें संस्कृत शाला हैं। ६० छात्र पढ़ते हैं। कई न्याय भी सीखते हैं।

यहाँसे २२ मील गिरा विजसली नामकी पहाड़ोंकी झाड़ीमें एक खेड़ा गांव है जहाँ इस्रायची व काली मिर्च बहुत होती है। ९६० तोलेका एक मन, इस तौलसे एक एकड भूमिमें २५ मन इस्रायची होती है। १ मनका दाम ५३) है।

यहाँसे १५ मील नंगलमें एक चौकी है। वहाँसे १६ मील निड़गल गांव है। यहां श्री शांतिनाथनीका मंदिर है। यहाँसे विषार १९ मील है, यहां ८ निन मंदिर हैं। सर्कारसे २६८) साल ईनाम मंदिरों की सेवार्थ मिलते है। यहां श्री गौमहस्वामीकी मूर्ति है। श्रवण बेलगोलाकी मूर्तिसे आधे आकार होगी जिसके दक्षिणभागमें लेख है उससे प्रगट होता हैं कि शाका १९९९में तिम्म राजाने प्रतिष्ठा कराई। प्रतिमानीके पगका तला २॥ हाथ लम्बा है। यहाँ उपाध्याय जैन बाह्मण हैं निनको इन्द्र कहते हैं। उनके ८ व जैनियोंके अनुमान ४० घर हैं। इनमें रोटी व्यवहार है पर बेटी व्यवहार नहीं हैं। यहाँसे मूलविद्री १२ मील है। यहाँ १८

निन मंदिर हैं। सर्कारसे इन मंदिरोके छिये १०००) वार्षिक अनुमान मिलता हैं। यहीं रत्नोंके विम्बः व धवल, जय-धवल व महाधवल नामके यंथ हैं जिनकी रक्षाके लिये एक कमिटी है उसके मेम्बरोंके नाम हैं:—

१-कोंडे पदमराज शेड़ी

२-राजा कुंजम रोडी

३-गुम्मण सेड्डी

४-नेमिराज उपाध्ये

इन चारोंके सामने इन रतन विम्बों व धवलादि ग्रंथोंका द्रीन प्राप्त होता है। यह गाँव बंगलोर निलेमें हैं नहां नैनियोंके २००० के अनुमान घर हैं। यहाँ मृत पुरुषकी मिलकियत भानजेको मिलती है ऐसा ही सर्कारी कायदा भी है जिससे जैनी बहुत दरिद्री हुए व नष्ट हुए। यह रिवान इसके १००० वर्षके अनु-मानसे है जिसको भूताल पांड्य राजाने शुरू किया था। अब इसको सब नापसन्द करते हैं। यह रिवान जैन उपाध्यों में नहीं है। यह देश तौलब कहाता है। यहाँ उपाध्यायके घर १५ व जैनियोंके करीब २५ घर हैं। यहाँसे १० मील कारकल है। यहाँ १४ जिन मंदिर हैं। नेमिनाथ स्वामीके मंदिरमें जो शिलालेख है उसमें श्वाका १३७९ ईश्वर नाम संवत्सर कार्तिक मासमें भैरवरायाने बनवाया। शांतिनाथ मंदिरमें लेख है सो उसे समस्त गुरुने शक १२७६ भाव संवत्सरमें फाल्गुण शुद्ध ५ बुधवारको बनवाया । चंद्रनाथ मंदिरको शालि॰ शक १५१४ विनय नाम संवत्सर भाद्रपद शुद्ध ३ रविवार नरमण्णा रोडीने बनवाया । यहाँ भी वेणूरके समान श्री गोमह-

स्वामीकी बड़ी प्रतिमा पहाड़ पर है जिसपर लेख है उससे प्रगट है कि शाका १३५३में फालगुण सुदी १२ सोमवारको चंद्रवंसी मैरवेन्द्रके पुत्र श्री बीर पांड्य राजाने प्रतिष्ठा कराई। यहाँ चतुर्मुख मंदिरमें बड़ा शिलालेख है। यहाँसे लोग जहाजमें जानेको १८ मील गाडी पर चल मंगलोर बंदर पर आते है। यहाँ भी एक जिन मंदिर है। २ घर जैन व १ उपाध्यायका है। यहाँसे जहाज पर बैठके २ दिनमें बम्बई पहुँचते हैं। टिकट ११) लगता है।

सेठ माणिकचंद संघमहित इसी मार्गसे यात्रा करके जहाज़ द्वास बम्बई छौट आए। इन्होंने जैनबिद्रीके भंडारमें भी अच्छी रकम दी व रास्तेके मंदिरोंमें भी दान किया।

मूड्बिद्रीके रत्निम्न व घवलादि प्राचीन ग्रंथोंके दर्शन करते वक्त अच्छी रकम भेट घरी जिसे देख-धवलादि ग्रन्थोंके कर वहाँके पंच और भट्टारकजी बहुत प्रसन्न उद्धारका विचार । हुए । सेठ माणिकचंदनीने दर्शन करते समय यह ज़रूर ध्यानमें लिया कि यह प्राचीन ग्रंथ जिन ताड़पत्रों पर है वे बहुत जीर्ण हो गए हैं । बहाँके लोगोंको सेठजीने कहा कि इनकी दूसरी प्रति करानी चाहिये । तब वहाँके लोगोंने कहा कि ये तो इसी प्रकार बहुत दिनोंसे हैं, हम तो दर्शन करके व कराके कृतार्थ होते हैं, हम गृहस्थी तो बांच ही नहीं सक्ते, भट्टारकजी इस प्राचीन लिपिको पढ़ नहीं सक्ते, हां; जैनबिद्रीमें क्रह्मासूरि शास्त्री है वे ही इसको पढ़ना जानते हैं।

इस तरह बड़े आनन्दसे सेठमी यात्रा करके निर्विच्न वर छोटे। रूपाबाईजीको इस यात्रासे बड़ा ही आनन्द हुआ । पुत्र प्रेमचंद्नीः बढ़े भावसे दर्शन करता था । चतुरमती फूलकुमरी और मगनमती कन्याओंको हरएक यात्रामें साथ रखती थी और दर्शन पूजन कराके बहुत आनन्द मानती थी । पानाचंदजीको भी इस यात्रासे बहुत धर्म लाभ हुआ ।

यात्रासं लोटकर सेटनीके चित्तमें उन प्राचीन प्रंथोंक उद्धा-रकी बात नमी रही और यह विचार करके कि बह काम किस तरह सम्पादन हो। आपने शोलापुरके सेट हीराचंद नेमचंदको याद् किया क्योंकि इनकी विद्वता व बुद्धिमानी सेट माणिकचंदके चित्तमें उिल्लाऔर प्रेरणा की कि आप स्वयं यात्रा करके उन प्रन्थोंको देखें और उनके उद्धारका उपाय करें। सेट हीराचंदने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हम अबके अर्थात् संवत् १९४१के नाड़ेमें श्रीमूल-बिद्दीकी यात्राको यथा संभव अवस्य नार्वेगे।

अब सेटजीन प्रेमचंद और फुलकुमरीको ६ वर्षसे अधिक जान इनके पढ़ानेको एक अच्छी गुजराती प्रेमचंद, फुलकुमरी और शालामें मेना तथा घर पर भी एक अध्यापक मगनमतीको शिक्षा । नियत किया तथा धर्मकी शिक्षा मुख जवानी इन बालकोंको माता रूपाबाई दिया करती थी व सेट माणिकचंदजी भी देते थे, तथा मगनमतीको तो यह बहुत चाहतं थे, २॥ वर्षकी उमरसे सेटजो इसको अपने साथ

नोट-गुजराती संवत दीवालीसे जब कि मारवाड़ी संवत चैत्र सुदी १ से ग्रुरू होता है इससे मारवाड़ी सं० की अपेक्षा सं० १९८० है।



सेठनी युवावस्थामें २० वर्षके निकट.

भोजनके समय छेकर बैठते थे, फुरसतके समय खिछाते थे, धर्मकी बातें बताते थे और पास ही शायन कराते थे। जब यह शाछा जाने योग्य हुई तब इसको भी भेजा।

इस समय भारतमें लार्ड रिपनके पीछे लार्ड डफरिन वाइसराय थे। इनके समयमें अमीर काबुलसे जो कई वर्षोसे झगडा चलता था मो शांत हो गया, सरकारसे गाड़ी मिन्नता हो गई ओर प्रति वर्ष एक लाख २० हज़ार पाउंड अमीर काबुलसे सर्कारको मिला करं, ऐसा ठहराव हो गया। तथा ब्रह्माका मुल्क जो अब तक स्व-तंत्र था सो सन् १८८५ में भारतमें मिला लिया गया, इससे ब्रह्मा और भारतमें न्यापारकी वृद्धि होने लगी।

सेट माणिकचंद्रकी सूचनाके अनुसार सेठ हीराचंद्रजी जैनबिद्री और मूलबिद्रीकी यात्राको शोलापुरसे
सेट हीराचंद नेमचं- मगसर सुदी ६, सं०१९४१ को रवाना हुए
दक्ती जैनबिद्री मूल- और गुज० पोष बदी ११ को लौट आए।
बिद्रीकी यात्रा। यह शोलापुरसे रायचूर आरकोनम होते हुए
बॅगलोर शहर पहुंचे। वहाँ एक जिन मंदिर

नया देखा परंतु उसमें प्रतिमाएं सब प्रानी देखीं सिर्फ मूल नायक कायोत्सर्ग पीतलके बिम्बको सं० १९३९का श्रवणवेल गोलाके पारदानाथ शास्त्री द्वारा प्रतिष्ठित पाया । यहाँ प्रतिमाओंके इचर उबर दो भित्र सिंहासनों पर पद्मावती देवीको विराजित पाया पर क्षेत्रपालकी स्थापना कहीं नहीं देखी । यहाँ २० जैन घर हैं मंडीमें जैन निणापा मंदिरकी व यात्रियोंकी अच्छी सम्हाल रखते हैं । इनके पास कनहीं माषामें द्वादशानुपेक्षा लपी हुई देखका

सेठ हीराचंदको बहुत हर्ष हुआ कि इधर छपनेका रिवान है। पूछनंसे मालूम मी हुआ कि इधर कोई विरोध नहीं करता है । इस समय सेठ हीराचंद्जीके दिलमें यह पका इरादा हो गया कि यात्रासे छौट कर जिस तरह बने प्रंथोंक मुद्रण करके प्रचार करनेका कार्य्य हाथमें छैना चाहिये। यहाँसे भैसूर गए। वहाँ एक धनवान व्यापारी मोदीखाने तिमायांक मकानमें उतरे थे। इनके यहाँ जिन चैत्यालय है तथा इनके ४ पत्र हैं १ शांतरानय्या, २ अनंत राजय्या, २ ब्रह्मसूरिअय्या ( इन्होंने मैट्किजेशन तक इंग्रेजी अध्ययन किया था ), ४ पद्मनाभरैटपा । यहाँ सेठनीने ग्रंथ भंडार देखा उसमें पुरुदेव चम्पू, जीवंधर चम्पू, गद्यवितामणि आदि ग्रंथ देखे। यहाँ नाग कुमार और राजण्णा दो नैन संस्कृतके विद्वानोंसे मिले । यहाँ अप्पाऊ पिले फोटोबाफरसं १२) रु० में सेठनीने श्रवण बेलगोलाके दोनों पहाड़ोंके गोमहस्वामी तथा चारुकीर्ति पद्वाचार्यके ऐसे ४ फोटो लिये । यहाँसे शारंग पट्टण होते हुए गाडी द्वारा श्रवण बेलगोला आए।

श्रवण बेलगोलामें पहुंचकर इन्होंने विद्वान शास्त्री ब्रह्मसूरिजीसे बहुत प्रीति उत्पन्न की। उन्हींके साथ वहाँकी यात्रा भी की तथा वहाँके भट्टारक पट्टचार्थ्यजीसे भी बहुत स्नेह बढ़ाया। मनमें यह विचारा कि जो ब्रह्ममूरि शास्त्री हमारे साथ मूलिबिटी चलें तो उन घवलादि प्रन्थोंका महत्त्व प्रगट होवे और उनके जीणोद्धारका उपाय किया जावे। सेठजीने अपने संघसे पट्टी करके वहाँके मंदिरादिकी मरम्मत-के लिये जो रुपया दिया इससे इनका प्रभाव बेलगोलाके जैनियों पर अच्छा पड़ा। ब्रह्मसूरिजीने अपना शास्त्र मंदार मी दिखाया

जिसकी सूची 'जैन बोधक ' अंक २९ मास जनवरी सन् १८८८में सुदित है इसमें निम्न अपूर्व ग्रंथ है—

१-केवलज्ञान होरी जैन ज्योतिष ग्रंथ स्लोक संख्या १०००० संस्कृत चंद्रसेनकृत

२-क्रिया निघंट १००० बौधमती व्याकरण

३-कारक निघंट ,, ,,

४-न्याय विनिश्चय अलंकार ३००००, वृहद् अनंताचार्य कृत

५-त्रिविक्रम वृत्ति ४००० प्राकृत न्याकरण त्रिविक्रमदेवकृत

· ६-माघनंद संहिता मूल टिप्पण ५००० माघनंदि

७--पुरुदेव चंपृ ३००० हरिचंद कविकृत

८-प्रायश्चित्त समुचय टीका २०००

९-मूलाचार टीका ८००० कल्याणकीर्ति

१०-लोक विभागी ३०००

११-शास्त्रचार ममुचयव्याख्या २००० माघनंदि व्याख्या प्रमाचंद्र कृत ।

ये प्रंथ प्रकाशित होने योग्य है-

ब्रह्मसृरिशास्त्रीको अनेक ऐसे काम थे निससे वे सेठनीके साथ मूछिबिडी नहीं जा सक्ते थे परंतु सेठ हीराचन्दने प्रेम व आग्रहसे तथा घवलादि यन्थोंके पड़नेकी उत्कंठासे अपने सर्व परिवार सहित चलनेकी तथारी की । उस समय सेठनीके साथ लाला रिषभदास आगरा, नाबा दुलीचंदजी, तोड्मलजी उजैन, कस्तूरचंदजी और भगतजी, पन्नालाल, वेणाचंद कालुजवाले, मोतीचंद फलटनवाले, नेमचंद म्हसवड्वाले आदि कई माई थे। रास्तेमें सर्वके साथ धर्म चर्चा करते दुए मूलबिडी पहुंचे। वहाँ श्री पार्वनाथ स्वामीके मंदिरजीमें अब सर्व संबक्ते

सामने धवलादि ग्रंथ जो सिद्धान्त ग्रन्थोंके नामसे प्रसिद्ध हैं दर्शनार्थ वहाँके पट्टाचार्य और पंचींने निकाले उस समय सर्व संघको बड़ा आनन्द हुआ। ब्रह्मसूरी शास्त्रीका मूलबिद्रीमें बहुत सन्मान था। पुराने ताड़पत्र पर लिखे हुए कुछ पत्रोंका संग्रह भीतर भंडारसे पंच लोग निकाल कर लाते थे और उसीको दूरसे दर्शन कराकर भेट चढवाकर लोगोंको निदाकर देते थे। जन ब्रह्मसूरिजीने इन पत्रोंको पढा तो इनमें कुछ और ही वर्णन पाया । घवलादि प्रथाका कुछ भी अंश न था क्योंकि सूरिजी क्योवृद्ध विद्वान थे। इनको मालुम था कि उनमें गुणस्थान मार्गणा स्थान आदि सम्बन्धी सुक्ष्म चर्चा है तथा श्री गोमट्टमार इन्हींके कुछ अंशको हेकर श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्तीने लिखा है तब सुरिनीको बड़ा आश्चर्य हुआ और पट्टाचार्यनीसे कहा कि यह तो सिद्धान्त प्रन्थ नहीं है आप. भीतरसे और यंथ निकलवाइये, उनमें श्री धवलादिको ढुंढा जावे। पंचलोग कुछ लज्जित हुए, भीतरसे और जीर्ण ताड पत्रों पर लिखे हुए प्रन्य लाए । उन सबको देखकर सुरी शास्त्रीने धवल और नयध्वल प्रंथोंको छांटकर अलग किया और उन्हें अति विनयसे विराजमान कर सुरि शास्त्रीने बहुत ही मिष्ट ध्वनिसे मंगलाचरण पढ़के उसका अर्थ किया तथा कुछ और भी सुनाया ।

उस समय सेटजीने पंचोंसे निवंदन किया कि यदि आप छोग शास्त्रीजीसे इस प्रंथको दोतीन दिन थवलादि ग्रंथोंका तक मुनैं तो आपको और हमें सर्वको पढ़ाजाना। विशेष छाभ होवै। उधर बाबा दुलीचंदजीनेः भी यही इच्छा प्रगटकी। उस समय थोड्रासाः

वंथका वर्णन सुननेसे जो आनन्द सर्वको हुआ था उसको विचारते हुए उन छोर्गोंसे नाहीं न होसकी और वे इस बात पर राजी होगए । दूसरे व तीसरे दिन भी सर्व संघने शास्त्रीजीके मुखसे श्री धवल और जयधवस्रके इधर उधरके कई भाग सुनके बहुत आनन्द प्राप्त किया। सेठ हीराचंद छिखते हैं कि इन पुस्तकोंकी छिपि जूनी कनड़ी है तथा सुनते ममय हमने कुछ श्लोक लिख भी लिये थे। इस तरह सेठजीने अपनी खातरी करके कि यही धवल जयधवल हैं तथा अति नीर्ण होगए हैं इनकी नकल होनी चाहिये इस विचा-रको अपने मनमें रक्ता और ब्रह्मसूरी शास्त्रीसे सम्मति मिलाते रहे कि इनकी प्रति आप कर देवें तो बहुत अच्छा है क्योंकि उस लिपिको उस प्रान्तमें भी पडनेवाले सिवाय वृद्धसूरि शास्त्री नीके और कोई नहीं था । सूरि शास्त्रीने कहा कि यह काम बहुत काल लेवेगा तथा यहाँके भाइयोंको भी समझाना होगा । यह काम कई वर्षीका है। मुझे व एक दोको और कई वर्षी तक ठहरना हो तव ही इनकी नकल होमकी हैं क्योंकि इनमें क्रमसे ६०००० और ७२००० स्होक हैं।

> रोठ हीराचंद मंगलोर बंदरसे जब बम्बई आए तब एक दिन उहरे थे और सेठ माणिकचंदसे मिल-

धवल्रजयधवलकी प्रति-कर सच हाल कहा। दोनोंने परस्पर लिपिका विचार। बात की कि किसी उपायसे इन धवलादि प्रन्थोंकी प्रतिलिपि हो और बालबोधमें भी होकर हम सबको उनका लाभ मिले तो एक बहुत आवश्यक काम हो जावे। हीराचंदजी बहुत गंभीर थे। सेठजीसे कहा कि हम कोई न कोई उपाय केरेंगे, आप चिंता न कीरें। सेठ हीराचंद शोलापुर लौटकर जैन जातिकी सेवामें विशेष दत्तचित्त हुए। उन दिनों हूमडोंमें कन्या-कुरीति निवारण विकय बालविवाह व कन्या बड़ी वर लोटेकी चर्चा। लग्न व वृद्धविवाह इन तीन कुरीतियोंका बहुत रिवाज था। शोलापुर जिलेमें

आकलूज निवासी वीसा हुमड हेठ गंग राम नत्थूराम प्रसिद्ध नाथारंगजीवाले भी बहुत परोग हारी व जातिकी कुरीतियों-को देखकर उनके छिये दुःखित थे व इनके मिटानेके छिये बहुत प्रयत्न शील थे। शोलापुरमें सेठ हीराचंदको उद्योगशील जानकर गंगारामनीने चैत्र मुदी २ बुधवार शाके १८०७ को एक पत्र लिखा कि उत्परकी तीन कुरीतियोंके मिटानेका यत्न करें। उनके कुछ शब्द यहाँ दिये जाते हैं।

" येणं प्रमाणं तीन रीति चालू आहेत. त्या आपले धर्म विरुद्ध आहेत व त्यां पासून आपलें लोकांत फार नीचरव आलें आहे ब पुढे कांही दीवसांनीं याचे परिणाम फार वाईट होणार आहेत. या साठीं कांहीं या वहिवाटी सुधारण्या विषयीं प्रयत्न करण्याचें माझे मनांत फार दिवसां पासून पालन घोळत आहे. व मी गांवी-गांवच्या लोकांचे मत गरीब व श्रीमंत यांचे घेत असतों. तरी या कामीं कोणाचें विरुद्ध मत फारसें नाहीं. मात्र खन्या अंत:करणानें झटणारा मनुष्य असला म्हणजे त्याचे प्रयत्नानें या वाईट चाली हळूहळू निघृन जातील या विषयीं तुमचा अभिप्राय काय आहे तों कळवाल तर बेरें होईल. ''

भाव यह हैं — यह तीन रीति धर्म विरुद्ध हैं। इनसे स्रोग नीच होते जाते हैं। कुछ दिनोंमें और भी खराब दशा होजाय गी। इसके धुधारमें प्रयत्न करनेकी मेरे मनमें बहुत दिनोंसे है। मैंन गांव गांवमें जाके गरीब व श्रीमंतोंके मत लिये तो कोई मुझसे विरुद्ध मत नहीं धरते, मात्र अंतःकरणसे उद्योग करनेवाला मनुष्य चाहिये तो यो कुरितियां धीरे २ निकल जांयगी। आपका क्या अभिप्राय है सो लिखें।

इस पत्रको देखकर सेठ हीराचंदजीने शोलापुर जिलेके ग्रामींके माईयोंके अभिपाय मंगानेको

· जैनबोधक 'का उदय। पत्र भेनने प्रारंभ किये। कुछ दिनोंबाद 'जैन बोधक ' नामक

एक मासिक पत्रकी पहली जिल्द छपवाकर सेप्टेम्बर सन् १८८५ का अंक प्रसिद्ध किया और खास र जैनियोंको जिनका आपको परिचय था मेजा। दिगम्बर जैनियोंमें इस समय तक केवल १ वर्ष पहले सबसे प्रथम एक ही मासिक पत्र और निकला था जिसको ज्योतिषरत्न पंडित जियालाल जैन चौघरी ने सन् १८८६ में निकाला था इसका नाम " जैन प्रकाशा हिंदुस्तान " रक्ता था। यह हिन्दी और उर्दू दोनों माषाओंमें निकला था परंतु आंधेक दिन चल नहीं सका था। जैन बोधकने समाजके ज्यागत करनेमें बहुत उपकार किया है। इसको १८९८ तक स्वयं हीराचंदने फिर पं कलापा भरमापा निटवेने सन् १९११ तक चलाया। फिर पांच वर्ष बंद रहा और अब इस वर्ष यह फिर शोलापुरसे जीवरान गौतमचंद दोशी द्वारा संपादित होकर निकलने लगा है। इस पत्रके पहले अंकमें सम्पादकने पत्र निकलनेके मुख्य उद्देश्य प्रगट किये हैं उनका सार इस मांति है:—

- (१) अजैनोंको बताना कि जैन मत नास्तिक नहीं है।
- (२) धार्मिक विद्याकी वृद्धि कराना ।
- (३) जैन विद्वानोंके कितने विषयोंमें भिन्न मतोंको मिलाकर एक मत करना।
- (४) शंकाओंको प्रगट कर विद्वानींका समाधान प्रकाशित करना।
  - (५) यात्रा सम्बन्धी हाल प्रगट करना ।
  - (६) तीर्थक्षेत्री आदिका हिसाव मंगाकर प्रगट करमा।
- (७) देश भिन्न होनेसे जो रीति भिन्न पड़ गई है उनका जास्नके अनुसार कराके परस्पर संबंध हढ कराना।
  - (८) विवाहादि कार्य शास्त्राधारसे चलवानेका प्रयत्न करना ।
  - (९) विद्या व नीति मार्गकी शृद्धिकी प्रेरणा करना।

इसका पहला अंक सेठ माणिकचंदजीके पास भी भेजा गया था पर उसको किसी औरने लेलिया था—सेठजीके देखनेमें नहीं आया। एक दिन मंदिरनीमें सेठजीको किसीने एक छापी हुई पुस्तक देदी, उसको देखकर आपको बहुत ही हष हुआ कि जैनियोंमें भी पत्र निकलना शुरू हुआ। आप यकायक सब बांच गए। सम्पादक अपने मित्र सेठ हीराचंदजीको समझकर इनको इस बातसे बहुत खेद हुआ कि सेठ हीराचंद नेमचंदने मुझे सीधे पत्र क्यों नहीं भेजा ? अभी तक सेठ हीराचंदके साथ सेठ माणिकचंदका दिल खोलकर पत्र ज्यवहार व मेल नहीं हुआ था। अतएव बहुत सन्मानके साथ सेठ माणिकचंदने अपनी दृकानके नामसे एक पत्र छिखा। पाठकोंको उचित है कि इस पत्रको खूब ध्यानसे पढ़े। इससे उनको

पता लग जायगा कि ३३ वर्षकी अवस्थामें सैठ माणिकचंदजीके धर्म व जातिकी उन्नतिके सम्बन्धमें कैसे गंभीर व उदार विचार थे।

#### सेठ माणिकचन्दजीके पत्रकी नकल।

" स्वस्ति श्री सोलापुर महाशुभसुथाने पुज्याराध्य दोशी हिराचद नेमचंद तथा शा० मोतीचंद खेमचंद तथा शेठसरवे जोग मुंबई बंदरयी लि० शा० हीराचंद गुमानजी तथा चिरंजीव भाई पानाचंद तथा माणेकचंद तथा नवलचंद शेठसरवेना घण करीने धर्मस्नेह वांचजो. जत अत्रे सर्वे राजाखुशी छे. आपनी राजी खुशीना कागल लखज्यो. बीजू इसो एइवुं सांभत्युं छे के आपने आपना जैन घरमन विशे तथा आपनी हंबड़नी नात विशे घणी मेहनत लेवा मांडी छे ते सांभली हमी घणा खुशी थया छइये. वली तमीए ग्रांसिक चोपानियं काढ्यं छे ते पण घणं साम्हं उत्तम पगलं छे, वास्ते मेहरबानी करीने ए मासिक चोपान्यं हमोने मोकली आपज्यो, अने तेनो जे लवाजम होय ते अगाउयी इमारा पासेथी मगावी लेजो अने जे दिनथी पेहलो अंक सुरू होय ते दिनशी मोकलज्यो, वली आप सर्व पुन्यशा ळी छो अने मरवे वाते संपूर्ण छो. वास्ते करीने आपणे एक फंड एहवं काढवूं जे ते फंडमाथी खर्च करीने वे आदमी सारा ज्ञानी अने गुणवान परीक्षा करीने राखवां. तेमने सरवे मुलकमां मोकछवा अने ते गापोमा उपदेस करे अने नातनी वातोमा सुधारों करे अने ते सर्वे गामोमाथी जे कोई ए फंडमा नाण् आपवा धारे तेना पासेथी उघरावी एक मोहोटूं फंड वर्ध तो खर्च वधारीने सवे देशावरमा पहवां उपदेश करतां माणसो राखी तहानां रिपोट दर महिने मंगाववा अने तहां हां हां विगाहा के ते सुधारवा अने धरममा केंटलोक मिध्यातनी

भाग पेशी गयो छे ते सुधारवो वया नातमां केटलाक वांधा तथा तड़ पड़ेला छे ते भेगा करवा तथा दापानो रिवाज काढी नाख्यो अने बाललग्न थवा नई देवूं जेमके पांच वरसनी कन्या अने पांच वरसनो वर येहवा रीतना लग्नो नहाणपणमा वेवाह करी मुके छे ते पछी आगल जता घणां विगाड़ा थाय छे. वली नुद्ध उमरनाने पह्साना लोमथी कन्या आपे छे ने ते विचारी कन्याने बाल रंडापो आवे हे अने पहे आपना धर्म विरुद्ध चाले हे. वास्ते खरो द्वधारो ए करवानो छे. वली **गुजरातमां रहवा कूट-**बानो पण घणो विगाड़ो छे. ते विशे पण सुपाशे करवो. वली जे गाममां आपणा जैन धरमी मिईनी वस्ती वधारे होय तहां त्रे**न पाठशाला कढाव**री अने तेनो लवाजम सरवेना माथे नाख**वा** एइवा प्रकारना सुधारा करवा माटे एक मंडली नेमवी अने तेन फंड चालू करवूं एहवा कामोनो आरंभ तमोएन करवा मांडयो छे ते हमो घणा खुकी छईये अने अमारा लायक ए काममा काई काम बतावशो तो बनशे तेटली मेहनत करीछुं. येज कामकाज लखज्यो. जोइतूं करतूं मंगावज्यो. इमारूं ठेकाणुं मुंबइमा मंगादेवी आगल जवेरी माणेकचंद पानाचंदने पोचे ए प्रमाणे सरनामूं करज्यो संवत् १९४१ जेष्ठ बीजा वद ९ सोमे

#### लि॰ माणेकचंदना जुहार वांच**ज्यो**.

हमारे हिन्दीके पाठकगण उत्परकं पत्रका भावार्थ समझ गए होंगे तथापि जो जरूरी बातें हैं उनका भाव नीचे दिया जाता है:—

" आपने मासिक पुस्तक निकाली है यह बहुत ही उत्तम प्रयत्न शुरु किया है। आप एक फंड ऐसा निकार्छे

कि जिससे दो बहुत अच्छे ज्ञानी गुणवान मनुष्य परी करके रक्वे जांय और उनको सर्व मुल्कमें मेजा जावे और वे यामोंमें उपदेश करें और जातिकी बार्तोमें सुधार करें और इस फंडमें यदि और छोग पैसा दें तो फंडको बढ़ाकर उसमेंसे सर्व देशावरों में उपदेश करनेके लिय मनुष्य रक्खे जाय और उनके का-र्व्यकी मासिक रिपोर्ट मंगाई जावे । वहाँ जो २ विगाड़ हो उसे सुघराया जावे तथा धर्ममें मिध्यात्वका माग बहुत चुस गया है उसको दूर करना चाहिये । ज्ञातियोंमें तुड़ पड़ गए हैं उनको मिलाना चाहिये। **कन्या विकय**का रिवान दूर करना चाहिये और बाललग्न नहीं होने देना चाहिये। तथा गुजरातमें रोने पीटनेके रिवाजमें सुधारा करना चाहिये। बहे २ प्रामोंमें जैन पाठशालाएं स्थापित करानी चाहिये। इन कामोंके लिये एक सभा कायम करें । उसका फंड चालू करें इन कामोंका आरंभ आपने जो करना शुरू किया है इसरो हमें बहुत ही खुशी है तथा हमारे योग्य कोई सेवा आप बतावेंगे तो हम यथारांकि मिहनत करेंगे"

अपने अंत:करणसे जाति व धर्मकी सेवामें अपनी दाक्तिको योग रेनेकी स्वीकारता बतानेवाली यह चिट्ठी थी इसीलिये सम्पादक जैन बोधकने अपने अंक २ अश्विन शाका १८०७ व अक्टोवर १८८५ सफा १७-१८ में प्रगट कर दी थी।

सेठ माणिकचंदनीके पत्रको पाकर हीराचंदनी जाति प्रधारके लिये और भी उत्साहसे काम करने लगे। सेठ हीराचंदका जा-तथा विद्वान उपदेशक नहीं मिल सक्ते इसी त्युक्रतिका प्रयत्न। लिये उक्त सेठनीके उपायको अभी काममें लेनेके पहले दिलमें ही रखते हुए परन्तु संस्कृत व धार्मिक विद्याकी उन्नतिकी योजना करने लगे। स्वाध्या-यके प्रचारार्थ ग्रन्थ भी मुद्रण कराने लगे।

द्योलापुरमें संस्कृत पाठशाला तो आपने शाके १८०५ पौष मासमें ही चालू कर दी थी, सोलापुरमें संस्कृत उसमें एक मारवाड़ी गृहस्थ शिक्षक नियन पाठशाला। किये गए। इन्होंने १० मासमें कुछ छात्रोंको सारस्वन ज्याकरण, अमस्कोष, ह्यावली,

समासचक सिखाया । उनके स्वदेश जाने पर शिक्षक न मिलनेम ४ मास शाला बंद रही थी फिर अकलकोटके रा० रा० मीमाचार्यको नियत करके गु॰ फागुन बढ़ी १० शांक १८०६ से फिर शाला चालू कराई तब १० छात्र भरती हुए ! श्रावण मुदी ६ शा. १८०७ में १९ हो १९ इन्हींमें पासू गोपाल जास्त्री भी थे जो उम समय अमरकोश १ कांड, रखवंश २ सर्ग व एकीभावस्तोत्र पृर्ण कर चुके थेतथा हरीभाई देवकरणवाले सेट वालचंद रामचंद अमरकोश १ कांड आधा पढ़ चुके थे। इस पाठशालाकी उक्त सेट-ने इतनी उन्नति की कि शाके १८०८ श्रावण बदी ११ को इसका दूसरा वार्षिक उत्सव किया । उस समय २३ छात्रकी परीक्षा छेंक इनाम दिया गया था उस समय पासू गोपाल रचुवंश ३ सर्ग, किरा तार्जुनीय १ सर्ग, स्वयंभू श्लोक १५, संस्कृत प्रथम पुस्तक पाठ ५ पढ़ चुके थं। इस बक्त पाठशालाके लिये ६०००) के अनुमान ध्रीव्य फंड भी जमा कर लिया जिसमें समसे अधिक रकम अपन कुटुम्बसे प्रदान की । इंसका वर्णन जैन बोधक सप्टेम्बेर सन १८८६में मुद्रित है।

कुरीति निवाणमें यहाँ तक सफलता प्राप्त की कि नवम्बर १८८५ के अंक ३ रेमें १४ महारायों की क्रीति निवारण प्रतिज्ञा प्रगट की कि हम ६० वर्ष पीछे आन्दोलनमें लग्न न करेंगे। इनमें कोठारी केवलचंद परमचंद व जोतीचंद भाईचंद बारामती. सफलता । गुलाबचंद खेमचंद फटलन, नानचंद लक्ष्मीचंद

वाटरकर आदि हैं। तथा अगस्त १८८६ के अंकमें ५९ महाश-योंकी प्रतिज्ञाएं प्रगट की कि हम द्वितीय छन्न इतनी उम्रसे आगे नहीं करेंगे । ६५ व ४० वर्षसे आगे छम्न न करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा लेनेवाले इनमें ४ महाशय हैं जिनमें २ आकलुनके हैं, ४२ व ४५ वर्षसे आगे न करेंगे ऐसे प्रणकर्ता ४ हैं।

प्रनथ प्रकाशनका काम भी शुरू करके काठ्य प्रकाशिका व स्वभाषित छपवाए जिसकी माँग ग्रंथ प्रकाशन कार्य ब्रह्मसूरि शास्त्रीनं अपने पत्र वैशाल और बह्मसूरी शुद्ध १२ शाके १८०७ में की है। उस शास्त्रीका पत्र। पत्रकी कुछ नक्ट यह है।

,, आपका पत्र आया....चिकपेटाके मंदिरकुं कवाड़ दो तयार होके घर दिया. बाकी कवाटका काम चलते है | तथा जिननाथपुर मंदरका काम चार महिना वायदा करके पांचशे पचास रुपयेकूं गुत्ता दिये हैं और कान्यप्रकाशिका तथा सुभाषित छपाये सा पुस्तक दोनोकूं जर्ह्दी भेज देना ) इंमीरे पास बहुत ग्रंथ अपूर्व हैं । प्रत्यंतर अभावसे नष्ट होता है । यह सब ग्रंथ प्रत्यंतर करनेका तरत्द जरूर आप कर देना । बड़े पहाइऊपर शिडी: (पायरी) करनेका काम कुछ हुवा नहीं है। वैशाख श्रद्ध १२ शके १८०७ मुकाम श्रवण बेळगुळ ब्रह्मसूरि शास्त्री.

इस पत्रसे यह भी पता लगेगा कि शास्त्रीजी अपने भंडारके ग्रंथोंके प्रकाशनके लिये बड़े उत्सुक थे तथा जो मरम्मत व सीदी आदिके कामके लिये सेठ हीराचंद व माणिकचंदनी अपनी यात्रामें कह आए थे उनकी पूर्तिका उनको कितना बड़ा रूयाल था। उस समय नागपुर गादीके अष्टारक विशास्त्रकी ति बड़े प्रसिद्ध थे, विद्वान भी थे। आपने एक पत्र सेठ हीराचंदको भाद वद ३ शांके १८०० को लिखा है जो जैनबोधक अंक ९ जनवरी १८८६ में छपा है इसका कुछ अंश प्रगट किया जाता है।

" जैन बोधक देखकं इर्ष हुआ। इससे जैन मतकी प्रसिद्धि करनंम सुलमता होगी। जैन मतके पूजा पाठादिक व पुराणस्तोत्र पाठादिक लेख कोंकी अज्ञानतासे अग्रद्ध पाई जाती हैं उनको ग्रद्ध कराकर प्रगट करें। । जैन धर्मी स्वतंत्र छापाखाना रक्खों। उसकी वर्गणी करें। हम मी शामिल होंगे। जैनियोंके सिवाय दूसरोंको न वेचें। जो पुस्तक छपे वे पहले विद्धान मंडलीसे ग्रद्ध करा ली जावें। "

सन् १८८७में उक्त भट्टारकने शोलापुरमें चातुर्मास किया था। दोनो वक्त शास्त्रका व्याख्यान करते थे। एक दफे सभामें यह प्रश्न हुआ कि रात्रिको अभिषेक व अष्ट द्रव्यसे पूजा करनी या नहीं आपने समाधान दिया कि—

रात्रि अभिषेक किंवा अष्ट द्रव्योंसे पूजा करना योग्य नहीं। त्रिकाल पूजा करनेके अर्थ यह है कि रात्रीको पूजा न करना। संवेर अभिषेक और अष्ट द्रव्यसे पूजा करनी, दुपहरको पुष्पोंसे पूजन करना और संध्याको दीप घूपसे पूना करना ऐसा त्रिकाल पूनाका अर्थ है।

भट्टारक विशालकीर्तिके पुस्तक मंडारकी सूची जेन

बोधक अंक २७—२८ नवम्बर व दिम् ०

भट्टारक विशालकीर्ति। सं. १८८७में मुद्रित हैं। इनमें अपूर्व बंध ये हैं। युक्त्यनुशासन सटीक, २ अष्टसहर्त्वा सुनहर्रा स्थाहीकी लिखी हुई, ३ यति प्रायश्चित्त, ४ कियाकलाप मामायककी संस्कृत टोका, ४ आचारसार वृक्ति वसुनंदी सिद्धांतिकृत, ६ क्वेताम्बर पराजय ग्रंथ, ७ परमत सार ग्रंथ, ८ पचलान भाषा, ९ रमल शास्त्र संस्कृत, १० वैद्यसार ग्रन्थ सटीक, ११ एकाक्षरी निग्रंट, १२ चंडकृत ज्याकरण प्राकृत ।

गु॰ मंत्रत १९४३ के जाड़ेमें फिर सेट माणिकचंदनीके चित्तमें तीर्थ यात्रा करनेकी उमंग हुई। यात्रा श्री सेत्रुंजयादि। इस समय भी सिवाय नवलचंदनी और उनकी पत्नीके सर्व ही सेठजीका परिवार पानाचंदनी तथा रूपाबाई आदि श्री केशरियाजी गिरनारजी सेत्रुंजय-जी आदिकी यात्राको रवाना हुए। साथमें करीब २०० मनुष्यांका संघ था। प्रथम ही श्री शेत्रुंजयर्जा पहुंचे। उस समय यहाँ पालीतानामें नीचे एक पुरानी धर्मशाला थी जो अब मी वर्तमान नए मंदिरजीके पीछे है तथा नये मन्दिजीके सामन एक छोटेसे मकानमें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी एक छोटी प्रतिमा विराजमान थी। पहाइपर दो मंदिर जुने थे जो अब भी हैं। एक छोटेको श्वेताम्बरियोंने छीन छिया है। बढ़ा मंदिर कहते हैं कि किसी धनाइय भैसा साहुने बनवाया था। इसमें मूल नायक श्री शांतिनाथ

स्वामी हैं, संवत १६८६ है। इस पर्वतसे दि० जैन शास्त्रानुसार गत चतुर्थ कालमें श्री युधिष्ठर मीमसेन और अर्जुन ऐसे तीन पांडव और ८ कोड मुनि मोक्ष पथारे हैं। सेठजी संघ सहित पहुंचे तो वहाँ ठहरनंकी बहुत तकलीफ मिली क्योंकि पुरानी धर्मशालाको राज्यने रोक रक्ता था वहाँ कोई प्रबन्ध ठीक नहीं पाया जिससे चित्तमें बहुत उदासी हुई। उस समय वहाँ कोई मुनीम भी नहीं था; केवल पुजारी व नौकर थे, सो भी बहुत ही अन्यवस्थित। सेठजीन इंवताम्बर समाजके वड़े २ मंदिर व रमणीक धर्मशालाएं देखकर और अपनी स्थितिका मिलानकर बहुत ही खेद माना और दिगम्बरियोंके आलस्यकी अतिशय निन्दा की।

यहाँ पहले भवानीप्रसाद नामका एक दिगम्बरी चालाक मुनीम था सो संवत १९४१ तक काम करता रहा था। उस समय राजा पालीताना और क्वेताम्बरियोंमें बहुत झगड़ा चलता था। राजा और भवानीप्रमादका मेल था। इस अवसरको देखकर यह चाहता था कि शहरमें एक बड़ा मंदिर बनवानेको राजासे जगह लेलूं। सो उद्योग करके राजासे इसने वह जगह जहाँपर अब नया मंदिर है लेली। राजाने बिना किसी लिखा पढ़ीके देदी। यहाँ कुछ मकान बने हुए थे। यह राजाको मुकदमें में पद्द करता था। भावनगरके दिगम्बर जैन पंचोंके हाथमें यहाँका प्रबन्ध था। वहाँ दिगम्बरी व क्वेताम्बरीन में मेल था। श्वेताम्बरियोंने मुनीम भवानीप्रसादकी ऐसी शिकायतें की जिससे मावनगरके लोग भवानीप्रसादसे नाराज़ हो गए। भवानी-प्रसादने नमीन लेकर भावनगरवालोंसे रुपया मांगा कि मंदिरका काम शुरु हो परन्तु उन्होंने मुनीमको रुपया नहीं भेजा तब इसने



सेठनी करीब ४० वर्षकी अवस्थामें.

लाचार हो २१००) राजासे उधार छिये और मंदिरका काम चालु किया, इतनहीमें राना पूनेमें गुनर गया तत्र भवानीप्रसादको वंताम्बरियोंन बहुत दिक किया एक रात्रिको भाटोंने इसे इतना पीटा कि यह विचारा अपनेको असहाय देखकर मंदिरकी कुंजियां आदि अपने नीचे जो एक क्वेताम्बरी पुनारी था उसे सौंपकर चल दिया। राजाके मरनेके बाद रियासतसे २१००) का व्याज सहित तका-जा होने लगा तथा जो जमीन राजाने दी भी पर लिखा पढ़ी नहीं की थी उसके दाम मांगे जाने लगे। रियासतने २१००) के बढ़ले उस पुरानी धर्मशालाको कबजेमें कर लिया और उसमें एक मुसलमा-नको राव दिया था । ऐसे ही अवसर पर सेठनी पहुंचे थे सो इनको यहांकी व्यवस्था देखकर बहुत खेद हुआ। यात्रा करके सेटजी संव सहित भावनगर भी गए। वहाँके पंचौंको श्री सेत्रुं नयकी अन्यवस्था-के कारण बहुत धिकारा । वहाँके दि० लोग ऐसी गफलतमें थे कि भवानीप्रसादके स्थान पर किसी क्षेतास्वरी जैनको मुनीम रखनेका विचार कर रहे थे। सेठ माणिकचंद्नीन उनको मना किया और यही ज़ोर दिया कि किसी धर्नात्मा दिगम्बर जैनी ही को मुनीम रम्बना चाहिये जिससे तीर्थकी सुज्यवस्था हो।

भावनगरवालों के पास पालीतांना तीर्थके १८०००) ह. जमा थे पर उसको उपयोगमें न लगाकरं केवल पैसा जमा करना ही जानते थे। वहाँ वालोंने सेठजीको कहा कि आप ही किसीको बनाइये। इतनेहीमें इनको सजीत निवासी धर्मचंद ह-धर्मचंदर्जा पालीता- रजीवनदासकी याद पड़ गई जिसने सेठजीको नाके मुनीम। त्यागी महाचंद्रजीका भजन भेना था व जिसने सुरतकी प्रतिष्ठा समय कहा था कि मुझे

अनाजके व्यापारसे छुड़ाकर किसी अच्छे काममें लगा दो। सेठजीको अ¶नी बातका बहुत ख़याल रहता था। आपने तुर्त कहा कि आप लोग सनोत पत्र देकर धर्मचंदजीको बुछा छेवें , वह बहुत धर्मात्मा और सचा आदमी है। सेटजी तो संघको लेकर श्री गिरनार आदिकी यात्रा करते हुए केशरियां नी गए। वहाँ भावसे यात्रा करके खूब दान पुण्य करते हुए बम्बई छौट आए । उ्धुर, भावनगरके पंत्रींने तुर्त धर्मचंदको पत्र छिखा। धर्मचंद पत्र पार्ते ही गद्गद हो गया। ग्रामकी छोटोसी दुकानमें काम करते हुए दु:खी रहता था। इसकी स्त्री भी मालमता वेचनेमें चतुर थी। प्रायः गुजरातकी स्त्रियाँ छोटेर दकानदारोंको व्यापारमें मदद दिया करती हैं । धर्मचंदने दकान स्त्रीको सोंपी और आप तुर्त भावनगर आ गया। वहाँ वालोंने भी इमको जिनेन्द्र भक्त व धर्मात्मा देखकर इसे सुनीम नियत कर पाली-ताने भेजा । यह १ मास रहे पर स्त्रीके विना भोजन बनानेका कष्ट रहता था सो छुट्टी लेकर घोघा बन्दरसे जहाज़ पर मूरत आए। यहाँके दिगम्बर जैन पंचौंको पालीतानामें नया मंदिर बननंकी आवश्यक्ता व वहाँकी दुर्व्यवस्था वर्णन की । यहाँसे अंकलेश्वर जा सजोतकी दुकानको उठा मालमता बेंच स्त्री सहित धर्मचंद्जी पाली-ताना पहुंचे और नहाँ प्रतिमा विराजमान थी उसीके एक तरफ यह स्त्री महित रहनं छगे और सर्व काम र.म्हाछ कर सेवा पृजामें दत्तचित हो गण । सेठ माणिकचंदको बारवार पत्र छिखा कि आप ्रे एक दफे यहां आकर व्यवस्था ठीक करावें

सेट माणिक चंदने सं० १९४४ में नवल चंद्र सेटको मेना। संटजी सपत्नीक आए और यात्रा करके बहुत आन-पालीतानाके लिये सेट न्दित हुए। धर्मचंद्रजी भजन भाव व एकामें नवल चंद्रका प्रयत्न । बहुत निप्रण थे । नवल चंद्रजीका मन अपत्नमें में मोहित कर लिया। यह वहाँ धर्म संवत्र करते हुए एक माए ठहरे । इस बीचमें इन्होंने सर्व उपवस्था ट क कराई । घोघा बन्दरमें त्रिभुवन बाबा नामके एक खटपती दलल थे । वह भी इनके साथ रहे । इन्होंने राज्यसे पुरानी धर्मशालाको खुड़ाया। २१००) का ज्याज जोड़के रु. ६२४८) राजाको भावनगरमें जो १८००० तिथेके जमा थे उसमेंसे दिये। राज्य नये मंदिरबाली ज्ञमीनका रुपया मांगता था और इसी लिये वहाँ भी कुछ काम नहीं करने देना था अतल्व सेट नवल चंद्रने १०-) गजके भावमें फैसला करके रु० १४०००) उस १८००० मेंसे देकर जमीनको अपने कबजेमें किया और मंदिर बनानेका काम शुक्र किया जाय इस विधान

बम्बई आकर भाइयोंसे सब हाल कहा। सेठ माणिक चंद्रनी
पालीतानामें नये मनवल चंद्रकी कारवाई पर बहुत प्रसन्न हुए
और भावनगरवालोंको लिखा कि आप पांच
निदरका प्रवन्ध। आदमी चंदेके लिये बाहर निकलें तथा मंदिरका काम शुरु करा दें। मो रुगया खर्चको चाहिये वह हमारी
दूकानसे मंगात रहें, चंदा आने पर वसुल हो जायगा। अब इम
शुभ कार्यमें देर न करें। भावनगर व घोषावालोंने इस बातको स्वीकार किया। सेठ माणिक चंद्रजीसे १०००) मंगाकर काम शुरु कस्राया

रमें दढ़ हुए।

और मावनगरके सेठ नरोत्तम भीखा भाई व घोषेके त्रिभुवन बाचा आदि ५ महाशय पहले शोलापुर आए क्योंकि नैसे अक शोलापुर दान करनमें प्रसिद्ध है ऐसे पहले भी था। वहाँसे तार करके बम्बईसे सेठ माणिकचंदनीको बुलाया। सेठनीको धर्मकाय्येी-में बिलकुल आलस्य न था। आप फौरन गए और वहाँके पंचौंको सर्व हाल समझा करके ३५००) रु० का चंदा कराया। उस समय सेठ हरीभाई देवकरणने मंदिर बनने पर प्रतिष्ठा कराना स्वीकार किया। इनके साथमें सेठ रावजी कस्तरचंद हो गए और यह ठहरा कि प्रतिष्ठाके समय जो खर्च पड़े उसके दो भाग हरीभाई देवकरण और १ भाग रावनी कस्तूरचंद खर्च करें तथा उस ममय तीथेंक भंडारमें ११०००) दोनों देवें। सेठ माणिकचंद-जी इस बातको पक्की कराके अपनेको बहुत ही पुण्यवान मानते हुए। आप बमबई छीट आए और उन छोगोंको और स्थानोंमें चंदा करने 'मेजा । मुनीम धर्मत्रंदृजी धीर २ मर्व व्यवस्था सुधारने लगे और बड़े ही भावसे नए मंदिरजीको तय्यार कराने लगे।

सेठ माणिकचन्द्रजीकी खास घरणासे मुनीम धर्मचन्द्रजी प्रति वर्ष आमद खर्चका हिसान बनाकर भावनगर तीर्थके हिसाबका और बम्बई मेजने छगे। जैनबोधक अंक मुद्रण। २०-२१ मास फेब्रुआरी-मार्च सन्१८८८ में सं० १९४३ और १९४४ का हिसाब

मुद्रित है--

### हिसाब सं० १९४४ कार्तिक सुदी १ मे फाल्गुण वदी ३० तक।

			ग्वर्च
94=)1	शिलक	१३२॥)।	इमाग्त स्वान
111(=93,0	भंडार उत्पन्न	9011=)1	शुभ म्वाने
३०=)	शुभ खाते ं	I)	जीवदेया
9 8111-)	जीवदया म्वान	(۹)	भावनगर
11-)	फुटकल	२२।)॥	<b>फु</b> टकल
-)n	केशर वास्ते	3 0)	गोर्टा जनर
€ o )II	भावनगरमे	9°)	रजपृत उका
રાા)	गोठी जंबर खान	<b>३</b> )	रजपुत नव्
		:::-)	चांदवा यांधनको लोहेके
	६ ६ ५ II <u>=</u> -)		सिकचं कराये
			२९३)॥।
		:10=11=)1	शिलक
•			६६५॥=)

श्री सेत्रुंजयकी यात्रासे छोटकर सेठजीने प्रेमचंद व अपनी दोनों पुत्रियोंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान बालकोंकी शिक्षा। दिया। फुलकुमरीके साथ मगनमतीजीको भी गुजराती शालामें भेजने लगे। फुलकुमरीकी अपेक्षा इसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी, पढ़नेमें इसका मन भी अच्छा लगता था। शालासे सीख कर आवे उसे घर पर देखे। घर पर जो शिक्षक आता था वह भी बहुत भावसे तीनोंको शिक्षा देता था।

सेठ माणिकचंद् बहुत मिलनसार थे। समाचार पत्र देखते रहते थे। सं०१९४३ व सन् १८८७के फेब्र्-जुबिलीपर बम्बर्डमें आरी मासकी १६ तारीखको महारानी गौवध बन्द। कीन विकटोरियाकी जुबिली भारत-वर्षमें बड़े घूमधाममे मनाई गई। उस दिन कोई भी मुपलमानाहि गौवय न करे ऐसी अर्जिया वस्वईके गवर्नर-साहबके पाम मंत्री गई । जैनियोंकी तरहसे अर्जी भिनवानेमें सेठ माणिकचंद्रने बहुत प्रयत्न किया । इनका फल यह हुआ कि उस दिन किसीने भी गौबध न किया । मुसल्मानीन इस बातको अच्छी तरह मान लिया ऐमा जानकर ता० २३ फेब्रुआरीको नामदार गर्वनरने प्रशंसाजनक यह प्रस्ताव प्रसिद्ध किया कि हिन्दृ और परिसर्थोकी इच्छानुसार मुमल्मान लोगोंने श्रीमती महारानी कीन विक्टोरियाके सन्मानार्थ जुबिलीके दिन जो गोवघ न किया बहुत आनंदकी बात है। बस्बईके सर्व लोग परस्पर एकता रखने हैं यह तारीफकी बात है।

बम्बईमें बहिरामजी दीनसाजी पांडे नामके गृहस्थ थे जो स्वतः मांसाहारके त्यागी थे तथा अन्य पार-पारिमयोंमें मांसाहा- सियोंसे मांसाहार लुड़ाते थे। सेठ माणिक-रकी बन्दी। चंदकी इनसे मुलाकात थी। इस गृहस्थन अगस्त १८८६में एक मांसाहाररिहत भोजन दिया जिसमें २०० पारसी दारीक हुए। इनमें बहुतसे मांसाहारके त्यागी भी कुछ प्रयत्न करनेवाले थे। मोजनके पीछे सभा भी हुई थी उसमें सेठ माणिकचंदजी भी गए थे। बहिरामजीने अपने भाषणमें

कहा कि धान्य, वनस्पति और फलोंसे कैसे २ उत्तम भोज्य बनते हैं इसीके दिख़ानेके लिये यह भोज्य दिया गया है । ऐसे भोजन-से श्रुधा भी तृप्त होती है व आवस्यक राक्ति भी पैदा होती है। मनुष्य अपने म्वानेके लिये गरीब पशुओंको मारे यह नैवरके निय-मकं विरुद्ध है। घोड़ा ऐसा राक्तिशाली प्राणी वनस्पति खारुर रहता है तत्र मनुष्योंको इसकी क्या जरूरत है ! कलकतेमें जैसी मां-माहार वर्जक मंडली है वैसी यहाँ भी होना चाहिये तथा कहा कि थोड़े दिन बाद पारसी स्त्रियोंके लिये भी एसा भोजन भें दँगा। तथा सभामें रुस्तमजी होरमसजी मास्टरको पेश किया जो ३० वर्पसे मांस नहीं खाते और सब तरह तन्दुरस्त थे। अंतमें मांसाहार न करनेसे क्या २ फायदे होते हैं ऐसी इंग्रेजीकी पुस्तकें बांटी गई। सेउनी भी इस पुस्तकको लाए । सेठनी अपने पास नहाँ कहीं सफ-रमें जाते १०-१५ ऐसी पुस्तकें रखते थे और रेलमें समझदार लोगोंको जिन पर शंका होती थी कि यह मांस खाते हैं रहते थे और जवानी भी बात करके उनसे इससे घृणा पैदा कराते थे। वास्तवमें भारतसे मांसाहार मिटानेका उपाय शाकाहारका जीमन मांसाहारियोंको खिलाना व पुस्तक बांटना है इसीसे विलायतमें बड़ी सफलता हुई है।

इसी वर्ष सन् १८८७कं प्रारंभमें कलकत्तेमें प्रथम ही कांग्रेस अर्थात् भारतकी राष्ट्रीय सभाका अधिवेशन कांग्रेस पारंभ। प्रारंभ हुआ जिसमें बाहरसे २५० प्रतिनिधि पधारे। राजसम्बन्धी क्या २ छुधार करने इसपर विवेचन होकर प्रस्ताव पास हुए। सेठ माणिकचंदका कुटुम्ब पहले जब सूरतसे बम्बई आयातब एक किराएके मकानमें ही जौहरी बाज़ारमें जुबिलीबागका निवास रहता था। जब सं० १९२७ में दूकान और ताराचंदका खोली तब वह भी एक किराएके मकानमें जन्म। ही थी पर द्रव्यकी वृद्धि होनेपर मं० १९३५में मोती बाजारमें एक बड़ा मकान

४ सनपर खरीद किया, जबसे उसीमें दूकान रक्षी व वहीं रहने मी लगे। तथा आज भी सेठ माणिकचंद पानाचंदका फर्म उसी मकानमें है। शहरकी घनी वस्तीसे कुछ दूर खुले स्थानपर तारदेव मुहल्लेमें एक जुबिलीबाग नामका स्थान था। इसको सं १९३८ में करीब २५०००) में खरीद किया था। अब इसमें बहुतसी दूकाने हैं भीतर कमरे हैं बीचमें बंगला है आगे बगीचा है। इसीमें श्राविकाश्रम है। कई वर्ष बाद उस बागकी इमारतंक ठीक होनेपर हवाकी स्वच्छतांक कारण सर्व कुटुम्ब इस बागमें रहने लगा। सेठ नवलचंदकी स्त्री प्रसन्नकुमारीके कुछ वर्ष पहले एक प्रत्रीका जन्म हुआ था पर उसका जीवन अल्पकाल ही रहा और वह बल बसी।

सं० १९४५ मिती कार्तिक सुदी २ का दिन सेठ नवलचंद और उनकी पत्नीको बड़ा ही आनन्दवर्धक हुआ क्योंकि उस दिन इनको एक पुत्रका लाभ हुआ। पुत्रके जन्मसे तीनों भाइयोंको बड़ा ही हर्ष हुआ। मंदिरजीमें पूजा कराई गई, यथोचित दान पुण्य किया गया सम्बन्धियोंको तृप्त किया गया, और पुत्रका नाम ताराचंद रक्सा। पुत्रकी रक्षाका सेठ नवलचंदने पूरा २ यत्न किया, माता भी बड़े यत्नसे रहकर पालन करने लगी। इन सेठोंके यहां सं० १९३६ से ही गाड़ी घोड़ा था। इससे जुबिलीबागसे शहर आनेजानेमें इनको कोई किटनता नहीं थी। तथा जुबिलीबागका स्थान ट्राम्बेके पास ही है। ट्रामके द्वारा कुछ ही मिनटमें चाहे जहां जा सक्ते थे।

सेठ माणिकचंदजीका ध्यान चारों तरफ रहता था। व्यापारके अवसर भी देखा करते थे। पाठकोंको मालूम जमीनका व्यापार। ही है कि इनका खास व्यापार विलायतस शुरू हो गया था। ३ वर्ष तक इनका विला-यतका व्यापार ऐसा चला कि उसमें इन्होंने दुगने तिगने भी किये और बहुत रुपया कमाया पर आगे चलफर इतनी उपन नहीं रही। इसका कारण यह हुआ कि जब इन्होंने व्यापार शुरू किया था तबतो यह और साकरचंद छालुभाई दो ही ज्यापारी विलायतको मोती भेजने वाले थे। अब कई हो गए तथा विलायत बाले भी ऑफर बहुत खींच कर देने लगे। जो नए भेजने वाले थे वे थोड़ेसे ही नफेमें पाल वेचने लगे । अतल्व ३ वर्ष बाद मालमें सवाए व कभी २०) व १५) सैकड़ेसे अधिक लाभ नहीं होता था जिसमें फ्रामजी सन्सका कमीशन व खरचा बहुत पड़ जाता था। संवत १९४५ में सेठ माणिक वंदजीने हीरेके एक प्रसिद्ध मुलाकाती व्यापारी सेठ अबदुल हुसेनके साझेमें ज़मीनको खरीदने और बेचनेका न्या-पार शुरु किया । इसमें भी इन्होंने कई छाख रूपया पैदा किया व बहुतसे मकान व ज़मीन अपने उपयोग व भाड़ा पैदा करनेके छिये अलग रख ली। दो तीन वर्ष तक इसका न्यापार भी खुब बला। एक दिन सेट माणिकचंदने भाई पानाचंद और नवलचंदसे

सम्मित की कि सुरतमें यात्रियोंके आरामका

सुरतमें चन्दाबाड़ी व अपनी निरादरीके जमीन आदि उत्सव

धर्मशालाका करनेका कोई स्थान नहीं है अतएव श्रीचंद
निर्मापण। प्रभुजीके मंदिरके पासके स्थानको लेकर एक

सुन्दर धर्मशाला बनवा दीजाय तो बहुत अ-

च्छा है। भाइयोंने पसन्द किया और इस कार्यमें २००००) खर्च करनेका निध्यय किया । सेट माणिकचंद सुरत अरण और न-कसा वगैरह टीक करके काम लगा गए। यह धर्मशाला संवत १९४८में बनकर तय्यार होगई। यह बहुत सुन्दर कमरोंसे शोभा-यमान है, हरतरहका आराम है। जीमनक लिये बड़ा स्थान है। इसका नाम भाइयोंने श्री चंद्रप्रभुके नामसे चन्दावाडी रक्ला। तथा इसके खर्चको चलानेके लिये इसके आधीन बम्बईके पहले भोईवाड़ेमें एक मकान ले लिया और इस वाडी व मकानको संवत १९५६ में एक ट्रष्ट कमेटीके आधीन करके उसका ट्रष्ट कर दिया। इससे परदेशी जैन यात्रियोंको टहरनमें बहुत आराम मिलता है। पाली-तानामें पाठकोंको मालूम ही है कि धर्मचंद मुनीमके द्वारा भंदिर निर्माणका काम चल रहा था परंतु इमसे ही सेटनीको संतोष नहीं द्वुआ व हरमासके कामका व्यौरा मंगाते थे और जब कभी आवश्य-का होती फौरन चले जाते थे।

सं. १९४८ तक आप ७ या ८ बार पार्लीताना गए।
इनके साथ इनकी पुत्री मगनमती सदा जाती
पार्लीतानामें दौरे थी। सेठनी इसको अपने पुत्रके समान
और मदद। मानते थे। हरतरहकी शिक्षा देते थे।
मगनमतीका भी मन सदा पिता ही के साथ
भरता था लड़कईसे साथ २ मोजन करने व बैठनेकी आदत पड़
गई थी। पालीतानामें काम देखते देखते कभी दोपहर होजाती थी
पर मगनमती पिताके बिना मोजन नहीं करती थी उन्हींके साथ
आप भी काम देखा करती, जब सेठनी खात तब ही जीमती।
कई २ घंटे तक कभी २ इसे अपनी मूख दाबनी पड़ती थी।
सं. १९४८ तक मंदिरके बननेमं बहुतसा रुपया बाहरसे आकर
लगा तो भी सेठनीको धीर २ करके १००००) पालीताना

पालीतानामें एक बड़ी धर्मशालाकी आवश्यक्ता है ऐसा सेठजीक मनमें खटका करता था। नदीके पालीतानामें धर्मशा- तट भेरोंपुरा अब वसता है पहले वहां जंगल लाके लिये जमीन। या जब कभी सेठजी उधरसे जाते मुनी-मजीको कहते थे कि देखो यह जमीन आगे चलके बहुत कीमती होजायगी इससे इसे मौका लगे तब जहर खरीद लेना ज्यों २ ढीलकी गई दाम बढ़ गए आखिर ॥।) गज पर २०००)में जमीन खरीद ली। रुपया जो कम पड़ा सो सेठोंकी दुकानसे मंगाया गया। यद्यपि मंदिरजी सं. १९४८ में तय्यार हो चुका था पर इसकी प्रतिष्ठाका महुत संवत् १९९१ में बना था।

क्षेत्रके नाम लिख कर भेजना पडा।

कभी २ सेटनीको अपने पुत्र न होनेका स्याल आजाता था।

यद्यापे मगनमतीके जन्मके पीछे एक पुत्रका
सेटजीको पुत्रकी जन्म हुआ पर वह ९ मास पीछे ही मर

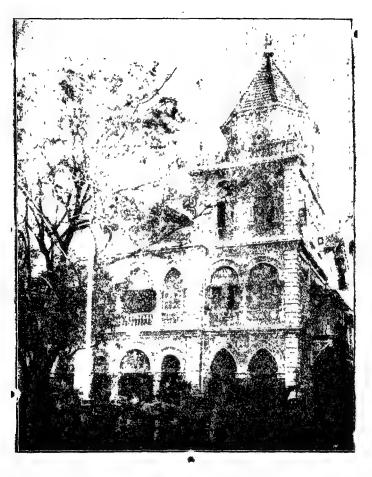
आशा। गया अने फिर चनुरमतीको गर्भ रहा था
और सेटनीकी आशाके अनुमार इम बार
भी पुत्रका जन्म हुआ। सेटनीने कोइ खाम उत्सव नहीं किया।
वह पुत्र धीरे २ बढ़ने लगा।

नंदावाड़ीको स्थापित करके बम्बई आनं पर परस्पर माइयों में
सम्मति हुई कि अपने सर्व कुटुम्बको
रत्नाकर पैलेमकी एक माथ उत्तम वाग्रके स्थान पर रहने
स्थापनामें करीब योग्य एक मनोहर बंगला ऐमा निर्मापण
१॥ लाखका करना चाहिये जिसमें एक नैत्यालय भी
सव । स्थापित किया जाय जिससे धर्म साधनमें
किसीको कभी अंतराय न पड़े इसमें एक

लाख डेड़ लाख रुपयेके अनुमान म्वच कमना विचार किया गया।
सेठ माणिकचंदने शास्त्रों में स्वर्गीय महलों व चक्रवर्ती राजा आदिके
महलोंका वर्णन पढ़ाथा। चित्तमें उमंत हुई कि इन्द्र महल्ठ ममान
महल समुद्र तट पर बहुत ही रमणीक पाषाण और ईटका बनवाया
जाय। बम्बईमें चौपाटी समुद्रके तट पर एक ऐसास्थान है जहां
पर शहरकं सर्व ही भले नर नारी शामके वक्त सेर करने जाया
करते हैं। सेठजीने ऐसी जमीन इसके लिये तजवीज की जिसके एक
और बी० बी० सी० आई रेलवे जाती है और दूसरी ओर समुद्र
तट परकी बड़ी सड़क है इस ज़मीनको २४०००) रु०में खरीदा

और इस विस्तार पूर्ण जगहमें ऐसा महल बनानेका नकशा तय्यार किया कि जिसमें सडककी तरफ आगेको बागीचा हो, भीतर गाडी घोडा बांधने व सहीसोंके रहनेकी नगह हो। आगेको नीचे और ऊपर बड़े २ हाल हों जिनमें पांच पांच सौ आदमी बैठ सर्के। हॅालके आगे उत्पर व नीचे सुन्दर बरामदा हो । चारों भाइयोंक आरामके छिये अलग २ कमरे हों व और भी पुत्रोंके छिये। कमरे हों व कोई बाहरके महमान आवें उनके भी ठहरनेका स्थान हो। हरएक कमरेमें स्नान घर, पानी रखनेकी जगह हो, रोशनी व हवा खूब आ मके तथा इसीसं लगा हुआ एक हालमें चैत्यालय हो जिमके आगे भी १९० आदमीके बैठनेकी जगह हो और इस बैत्यालयके उत्तर कोई मकान न हो तीमरे खनमें भी कमरे हों और मबंक उपर एक ऊंची टावर (Tower) हो जो दूरसे दीखे और जिम-पर ग्वेंड़े होकर दूर तक समृद्र और नगरका दृश्य दिखलाई पड़े। रसोईका स्थान एक कोने पर रवग्वा कि किसी तरह धुआं किसी बैठने व मोनेके कमेरमें न जा सके। मलविमर्जनका स्थान और भी दूर रवखा गया कि उसकी दुर्गय कहीं भी नहीं आ सके । ऐसे महल बनानेका नक्शा बनवाया और सर्व भाइयोंने उसे पसुन्द किया । इस समय प्रेमचन्द्र भी १४ वर्षके हो गए थे स्कूलमें बहुत मन लगाकर इंग्रेजी पहते थे । मैट्कुलेशनमें एक ही वर्ष पहुंचनेको भी रहा था। प्रेमचन्दको नकशा परुन्द कराया। रूपाबाई माता भी बड़ी चतुर थी उसे भी दिखलाया । सबकी राय पड़ने पर सेट माणिक चंद्रजीन एक बहुत चतुर मिस्त्रीके सुपुर्द यह काम कर दिया। आप नित्य प्रति घंटा दो घंटा देख चाल रखते थे। इस समय आपकी अवस्था ४० वर्षकी थी । अपनी इस उम्रमें आप अपनेको ज्यों २ प्रग्यशाली सेटजीका परोपकार देखते थे त्यों त्यों अधिक यह धर्ममं तल्लीन व कार्यकुशलता । होते थे । अनेक गुजरात व दक्षिणके जैनि-योंको यह आश्रय देकर कुछ मास अपने

ही स्थान पर रखकर उनको भोजनादिकी सहायता करते थे फिर आजीविकामें जोड देते थे। आप सभाओंमें जाना समाचारपत्र बांचना, जो नई पुस्तक गुनगर्ना भाषाकी निकले उसको पहनाः कुछ समय भी वृथा न खोना, मंत्रेरेसे रात्रि तक नियस्ति रूपसे हर एक काममें लगे रहना ही सेंड माणिकचन्द्रके समयका उपयोग था। जिस लक्ष्मीको इन्होंने और इनके भाइयोंने बुद्धिबलसे उपार्जन किया था उसका भलीनकार उपयोग करना यही इनकी भावना थी और व्यापारके समय व्यापारमें ऐमी चतुराईसे वर्तेतें विके इनके पास जो प्राहक आता था वह लौट कर नहीं जाता था । जो दाम यह कह देते थे विश्वासके साथ दे देता था। जाहर छोगोंमें अधिक मिलने जुलनेसे जिन किसीको कुछ नवाहरानकी जरूरत पड़ती थी सेठ माणिकचंद्को याद करता था। यह उसकी मरज़ीके माफिक उसको मालदे देने थे और दाम इतना ठीक लेने थे कि दूसरा कोई भी नहीं दे सक्ता तथा उमे भी विश्वाम आता और यदि वह दूसरोंसे बाजारमें जांच कराता तो ठीक पाता । अपने मेछके कारण यह बहुत रुपया कमाते ये इसलिये यह वात प्रसिद्ध थी कि जैसे सेठ पानाचन्द माल लरीदनेमें चतुर हैं वैसे सेउ मागिकवन्द माल वेचनेमें प्रबीण हैं।



सेटजीका भवन (र न कर पेलेस चौपारी-सम्बई.

(देखो पृष्ट २३८)

J. V. P.

सेट माणिकचंदनी जब इसतरह लक्ष्मीका उपयोग कर रहे थे तब शोलापुरके दानी सेठोंका मन भी दानमें शोलापुरमें चनुर्विध उत्सुक हो रहा था। उनके मनको उपयोगी कार्योकी ओर आकर्षित करनेवाले सेठ दानशाला । हीराचंद नेमचंद बड़े प्रवीण थे। एक द्फे आपने उपदेश दिया कि छक्ष्मीका उपयोग चार प्रकारके दानसे करना चाहिये । गरीबोंको, अनाथ बालक व विधवाओंको अन्न देना आहारदान है, रोगियोंकी आर्ति मिटानेके छिये पवित्र देशी औ-षि देना औषिधि दान है, मनुष्य पशु आदि संकटमें पड़ते हुए प्राणिझोंका भय मेट कर रक्षा करना, पिनरापोलमें मदद देना सो अभयदान है. धार्मिक व लौकिक विद्याकी वृद्धि करनेमें महायता करना सो विद्यादान है। इससे धनपात्रोंको कुछ अलग धन एकत्र कर उनके न्यानका उपयोग चारों दानोंमें सदा हुआ करे ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये। शोलापुरकी मंडलीके ध्यानमें यह बात आगई और ताः १२ नवस्वर सन् १८९१ को नीचे प्रवाण है. २८११६) का फंड करके उमका व्यान ॥) सेकड़ा उत्पन्न करके चारों दानोंमें, म्बर्च हो ऐसा प्रस्तान होकर चतुर्विध दानशालाका कार्य्य प्रारंभ होगया। फल्टनके एक जैन वैद्य बलवंत नेमाजीको वैद्य निवत किया गया। यह कार्य अनतक जारी है और इस फंडके निमित्तसे बहुतसे गरीब छात्र शोलापुर पाठशालामें पढ़ते हुए भोजन पाते रहे हैं। पशुशालाको मदत होती रही है। विद्यादानार्थ पाठ-शालाको मदत दी गई है। उसका रुपया सुम्पर सेठोंक यहां जपा है। इसकी प्रबन्धार्थ एक कमेटी है पर उसका ट्रष्ट रजिष्टरी अब तक नहीं हुआ है जिसकी बहुत आवश्यकता है ऐसी धौन्य संस्था चारों दानोंके लिये हरएक नगरमें होना चाहिये। दानार्थ लक्ष्मी खरची हुई ही स्व और परका उपकार करती है:—

## नाम चंदा देनेवाले दातारोंके।

७५०१) सेट हरीभाई देवकरण ६१०१) सेट हरीचंद परमचंद प्रुप्त अ२०१), वस्ता खुशाल ४२०१), मोतीचंद परमचंद स्वाराम खुशाल १२०१), रायचंद खुशाल १२०१), गोतीचंद साकला १२०१), सीखाराम नमचंद १००१), मोतीचंद ग्वमचंद १००१), जोतीचंद नमचंद १००१), गौतम नेमचंद १००१), पदमसी नहालचंद १००१), पदमसी कस्तूर १००१), मलुतःचंद गणेश १००१), राभचन्द गोवनजी

#### रु. ३८११६)

यह संस्था थोड़े ही दिनोंमें बड़ी उपयोगी हो गई। जैन बोधक अगस्त सन् १८९२ में कार्तिकसे ज्येष्ट तक ८ मासके सदावर्त बटनेका हिसाब यह है कि ३७३ जैन व २९८५ अजे-नोंको ज्यवहारके पदार्थ दिये गए। इन ३३५७ में ११७२ प्राणी बिलकुल अशक्त थे। तथा औषधालय में ८०४ रोगीने द्वा ली जिनमें ४१९ अच्छे हुए।



## अध्याय आरखाँ।

# न्यक्ष्य और वियोग।

संट माणिकचंद जब २ सूरत जाते थे इनकी दोनों पुत्रियोंके लिये मांगपर मांग अली थी और निकट फुळकुमरी और मगन- सम्बन्धी बार २ टींकर थे कि इनका एम मनीकी मगाई। करना चाहिये अतएव सेठजी जन चंदाबाही धर्मशालाको खोळनं सं. १९४८में सुरत गए थे तब फूलकुमरी और मगनमती दोनोंकी नगाई सूरतमें ही पक्की कर ली थी। सुरतमें एक विसा हुमह त्रिभुवनदाम ब्रिजलाल रहते थे जो मध्यमस्थितिके गृहस्य थे । इनके प्रत्रका नाम मगनलाल था यह माधारण पहा हुआ व किसी कुआचरणमें नहीं था तथा अपने पिनांक साथ व्यापारमें का हुआ था। फूल-कुमरीकी सगाई इसीके माथ पकी हुई। इन दोनों बहनोंमें फूलकुमरी बहुत भोली व सीधी थी परंतु मगनमतीका रूपद्दीनीय था। इसके सम्बन्धको अच्छे २ चाहते थे। सुरतमें एक धनाड्य व्यापारी तास-वाला केणीलाल केशुरदासकी कोटी प्रख्यात है। इनके दो पुत्र थे नेमचंद और जयचंद दोनों साथ २ रहते थे। किसीको कोई सन्तान न थी। तब नेमचंद ईंडरसे खेमचंद नामके लड्केको दत्तक लाए। इसी खेमचंद नेमचंदके साथ भगनमतीकी सगाई पक्की हुई। इस ल्डकेको साधारण लिखना वांचना आता था। स्वभाव मर्यादाशील, **मिल्लनसार प्रेमालु और वैर्यवान था। स्वरूपमें भी सुन्दर था पर** भार्मिक शिक्षा व आवरणकी आदत न डाले जानेसे इसका मन सांमारिक बार्तों में विशेष था। अपने सांसारिक मित्रोंके साथ पैसा खर्च करनेमें हाथ खुल्ला था। बड़े आदमीका दत्तक पुत्र-प्रायः ऐमा ही होता है। उसको पैसे खर्चते हुए दर्द नहीं मालून होता नक इसकी सगाई हुई तक इमकी अवस्था १९ वर्षकी थी।

गु. सं० १९.४९ में सेठ माणिकचन्द्रजी मर्व कुटुम्ब सहित सुरत गए और इन दोनों कन्याओंका विवाह

दोनों पुत्रीयोंकी लग्न। लगातार एक साथ ही किया। इन विवाहमें सेठजीन बहुत रुपया खर्च किया तो भी वह

१०००) में अधिक न होगा। तासवालेन भी बड़ी धूमबाम की गई। नंदाबाड़ी में ही सेट माणिकचंदनीन समारंभ किया। दोनों की वरात्व विदाका जुलूम बहुत मामानमें निकला। वर और बधूकी सवारी हाथीपर हुई। नगरमें गाजे बाजोंकी भरमार ऐसी हुई कि नगरभर इनके देखने के लिये उमड़ आया। सुरतमें बिरादरी के कई जीमन दिये। बहुतसे सम्बन्धी व मित्र बाहरसे बुलाए गये थे उनकी खातिर की गई। नगरके प्रतिष्ठित पुरुषोंको दावत दी गई और नौकर चाकर मुनीम व सम्बन्धियों को बहुत कीमती पौदाकों दी गई। इस समय फूलकुमरी १५ तथा मगनमतीकी १३ वर्षकी आयु थी।

श्रीमती चतुरबाईकी गोदमें जो छोटा प्रत्र था सो सुरतमें लग्नके समयपर ही यकायक बीमार होकर पुत्रकी आश्रासे १। बर्षकी उम्रमें चल बसा। सेठजीको इस निराञ्जता। तरह पुत्रकी फिर निराञ्जता हो गई। वास्तवमें संमार इसीका नाम है एक तरफ हर्ष होता है तो दूसरी तरफ शोक हो जाता है। थोड़े दिन पीछे चतुरबाईको

फिर गर्भ रहा । तब सेटजीने खास दासियां नियत कीं कि वे गर्भकी सम्हाल व रक्षा करें ।

सेठ नक्छचंद्का प्रथम पुत्र ताराचंद्र उमनमय ४ वर्षका था। इसका शारीर स्वास्थ्ययुक्त था। माता सेठ नवलचंद्के बड़ी ही यत्न रखती थी। पिता भी हरसमय दिनीय पुत्रका नम्हाल करते थे। प्रसन्तवाईको फिर भी गर्भ जन्म। रहा। संवत १९४९ आसोन वदी ६० के दिन शुभ महुर्तमें जुबिली बागके बंगलेमें बाईने हि.

तीय पुत्रको जनम दिया। यह बालक बहुत ही सुन्दर शरीर व सौम्य वदन था। माता देखकर गद्रगद बदन हो गई। सेटोंको भी बड़ा हर्ष हुआ। विधि सहित सर्व उत्सव किया। दान धर्म खुव किया और पुत्रका नाम रतनचंद रज्या। पानाचंद और माणिकचंदके कोई पुत्रन था इससे खाभाविक है कि इनके व इनकी पिनयोंके दिलोंमें कोई ईपीभाव उत्पन्न हो। परंतु ये भाई ऐसे सरल प्रकृति व धर्मात्मा थे कि इनको अंत करणसे हर्ष हुआ। पानाचंद व्यापारकी धुनमें अधिक रहते थे। माणिकचंद और चतुरबाईका चित्त मगनमती पुत्री के कारण भरा हुआ था। ये इसे पुत्रकी भांति चाहते थे।

आगरा निवासी पंडित गोपाछदासनी संबत १९४९ के आपाद मासमें बम्बई रहनेके छिये आए। श्रीयुत पंडित पंडितजीका जन्म संबत् १९२३में बरैया गोपाछदासजी। जातिघारी छक्ष्मणदास पिता और छक्ष्मीमती माताके द्वारा हुआ था। पिताका देहात सं-१९३० में हो गया। माताने बहुत कष्टसे इनको मैट्किछेशन तक

इंग्रेनी पढ़ायी । गणितमें यह बहुत चतुर ये । २० वर्षकी उम्रमें हाईस्कूल छोड़कर अनानकी दूकान पर लाभ न देखकर अनमेरमें जा सं० १९४४में रेलवे आखिट आफिसमें नौकरी की । पत्नीका सम्बन्ध १४ वर्षकी उम्रमें हुआ था। वहाँ पंडित मोहनलालनीके णस दो वर्षमें गोम्पण्यास्का अभ्याम किया । सं० १९४६में उर्शन और स्वात्याय प्रतिदिन करनेका नियम किया। इस बैकरीसे काम चलतः न देख आगरा आकर १ वर्ष व्यापार किया इतनेमें अनमेरके सेट मूलचंदर्जाने आपको अनमेर बुलाकर ज्यनी दुकानपर हाक नियत किया । सेठ माणिकचंद्की दक्षिण ात्राका हाल सेठ जुलबंदजीके कानोंतक पहुंच चुका था तथा जैन गेंधक पत्रमें जो सेउ होराचंद्जीन अपनी यात्राका हाल छापा था उसको भी पहकर सेउ मूलचंद्नीको बहुतोंने सुनाया । विचार कः रते २ आप संवत १२३८में दक्षिणकी यात्राको तैयार होकर पं० गोपालदासजीको सत्य ले बम्बई आए । यहांसे आप जैनबिद्री मू-लिब्दीको गए । मूलविद्धीमें आपने श्री धवल जयधवलादि प्रंथोंको जीर्ण दशामें देखकर उनकी प्रति करानेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको आग्रह पूर्वक कहा का। शास्त्रीने २००के अनुमान श्लोक लिखे एसी सूचना भी सेंड साहबको बादमें की थी। उक्त सेंड साहबको विद्याका कुछ प्रेम था । शोलापुरमें आपने जैन पाठशालाकी परीक्षा ले ५०) का इनाम दिया । आपने प्रसिद्ध नैपुरके विद्वान पंडित सदासुखनी की वृद्धावम्थामें अच्छी वैय्यावृत्त्य की थी तथा उनका समाधिमरण भी अजमेरमें ही हुआ ऐसा सुनते हैं। गोपालदासजी र्गत्रासे लैटिकर कुछ दिन अजमेर ठहरे पर आजीविका यथेष्ट न

देखकर सं. १९४९ के आषाढ़ मासमें बम्बई आए। इनको व्या-स्थान देने व शास्त्र बांचनेका अच्छा अम्यास था। बम्बईके जैन मंदिरमें भादोंके दिनोमें श्री दशहक्षणजी व सुत्रजीके अर्थ आपने बहुत अच्छी तरहसे वर्णन किये। उस समय सेठ माणिकचंदजीने खूत्र ध्यानसे सुने। माणिकचंदजीको विद्याबृद्धि, सर्व मुल्कमें जैन प्रमिके प्रचार, कुरीतिके नाशका कितना बड़ा स्थाल था सो पाठ-कोंको उसी पत्रसे निश्चय हो गया होगा जो उन्होंन सेठ हीराचंद-जीको भेजा था व जिसकी नकल इसके पहले अध्यायमें दी गई है पर बम्बईमें कोई सहाई न मिल्रेनेस माणिकचंदजी कुछ उद्योग न कर सके थे। अब २६ वर्षके नौजवान गोपालदासको अपने ऐसे विचा-रोंके धारी, परोपकारी और तीत्र वृद्धि देखकर इनको बड़ाही हर्ष हुआ। सेठजीन इनको अपने पास बुलाकर इनसे बहुत प्रेम जताया। रोज इनसे बार्तालाप करने लगे तथा सेठजीकी महायतासे आप जवाहरा-तका व्यापार करने लगे और सुखसे बम्बई हीमें रहने लगे।

> सेठ माणिकचंदकी इच्छानुसार गोपालदासजीने अपने उपदे-शोंसे बम्बईके भाइयोंको सभाके अनेक लाम

मुम्बई हि॰ जैन दिखाए। उस समय लोग सभा होना किष्टान सभाकी स्थापना। पादिरयोंकी नकल करना समझते थे। सर्व भाइयोंकी मरजीस मिती मागसिर सुदी

१४ संवत १९४९ को मुम्बई दि॰ जैन सभा स्थापित हो गई जिसके मंत्रीका कार्य सेठ माणिकचंदजी और उपमंत्रीका पद पंडित गोपालदासजीको दिया गया। यह सभा प्रति सुदी १४ को होती थी जिसमें नाना प्रकारके ज्याख्यान होते थे। इस सभाके प्रतापसे बम्बईवालोंने धर्मरक्षाके अन्तक अच्छेर प्रशांनीय कार्य किये हैं। तीथोंका सुधार व परीक्षालय द्वारा भारतकी पाठशालाओंकी परीक्षा लेना व संस्कृत विद्याकी उन्नति आदि कार्योमें बहुत बड़ा काम किया है। सेठ माणिकचंद्जी बड़े ही नियमित काम करनेवाले थे। प्रति सुदी १४ को नियमसे सभाको बुलानं और ज्यास्यान कराते थे।

सं० १९४९ में चौपाटीका रत्नाकर पैलेस भी बनकर तथ्यार हो गया, जो भवनवासी देवोंके भव-रत्नाकर पैलेसमें श्री नको हंमता था। पैलेसकी ऊंची टावर दूरसे चंद्रममु चैत्यालयकी दिम्बलाई पड़ती था। समुद्रकी मनोहर ठंडी स्थापना। वासु हर वक्त इस महलकी बैच्यावृत्यमें ऐसी लीन थी कि इसे बिलकुल म्बच्छ रखती थी।

महलमें फर्शसे पत्थर जड़ा हुआ था। भीतों पर चित्रकारी व रंग साजीका काम किया गया था। शीशके कपाट रत्नाकर पैलेसके ना-मको मुशोभित करने थे। हरएक कमेरेमें मनोहर पलंग, कुरसी, टेबुल, अलमारी, लम्प, झाड आदि फरनीचर सजाया गया था। बीचके बड़े हालमें बैटकखाना था जिसमें संगममिरकी टेबुलें पड़ी थीं। चारों ओर कई कुरसियां पड़ी थीं तथा टेबुलपर 'बम्बई समाचार' आदि पत्र रहते थे। हालके चारों ओर भीतके सहारे आराम कुरसियां मनोहर गहेदार कुछ बैटने लायक और कुछ लेटने लायक और कुछ लेटने लायक थीं, कई बड़े २ दर्पण लगाए गए थे, कई बड़ी २ तसवीरें व कहीं २ पर बड़े सुन्दर खिलौने सजाए गए थे। सारा महल एक दर्शनीय प्रदर्शनी बन गयी थी। चैत्यालय भी बहुत ही

उत्तम कांचकी भीतोंका अनेक चित्र सहित बनवाया गया। काचोंमें नारिकयोंके दुःखोंके चित्र व कौन २ पापसे कौन २ दःख होता है ऐसा नकशा दिया गया था। वदी चांदीकी सुन्दर रची गई। तीन तरफ भीतों में ऐसे वांच जड़े गये थे जिससे एक मंदिरके अनेक मंदिर मालूम होने ये। स्फटिकमणिकी मूल नायक श्री चंद्रपम्की प्रतिमा चांदीके मिहामन पर अतिराय वीतरागता व ध्यानको प्रगट करनेवाली पौन हाथ ऊंची सुशोभित हुई उनके सिवाय और भी कई छोट २ स्फटिकके बिस्त्र विराजमान किये गये। एक धातुका चौबीमी पट्ट भी बिराजमान किया गया । चैत्यालयकी ऐसी मनोहर शोर्मां थी कि दर्शकको सैकड़ों ध्यानाकार प्रतिबिम्बोंके द्शन उन कांचोंके निमित्तमे होने थे। इस महलकी तैयारी होकर नैत्यालयकी बड़ी धूममे व मक्ति व पृजा सहित प्रतिष्ठा की गई ! मर्व कुट्म्ब एक माथ एक ही पेलेसमें रहकर धर्म कर्म साधन करने लगा । सेठ मांणिकचंदजी वडे प्रेमसे नित्य प्रछाल व पूजन करने लगे। स्वाध्यायके लिये कपाटोंमें लिग्वित व मुद्रित ग्रंथ भी रक्षे तथा एक कपाट ऐसा भी रक्ता कि जो उस समय तक प्रंथ छप थ उनकी कई २ प्रतियां भेटमें देन व न्योछावर लेकर देनेको रक्खी गई जिससे स्वाध्यायका प्रचार हो ।

सेठ माणिकचंद्जीका यह कायदा था कि स्वाध्याय करते समय व बड़े हॉलमें बैठते हुए जो कोई द्र्शनके लिये आते उनसे धर्मकी बात पूछकर स्वाध्यायका उपदेश देते, तथा पुस्तक लेनेको कहते ये। रात्रिको व्यालु करके व समुद्र तटपर घूमनेके बाद तथा चैत्या-लयमें द्र्शन करके सेठजी सदर जीनेके सामने ही बढ़ी कुरसीपर बैठ जाते थे । और दर्शन करने आनेवार्लोको चाहे धनाट्य हो चाहे गरीब बड़े प्रेमसे कुरसीपर बिठाकर उनका दुःख सुख पूछते थे। उनको धर्मोन्नति व नात्युन्नतिकी प्रेरणा करते थ ।

इस महल और चैत्यालयकी ऐसी प्रख्याति हुई कि बम्बईके लोग इसं एक देखने योग्य वस्तुओं में गिनने लगे और देशी परदेशी जैनी अजैनी सब बिना रोकटोकके बंगलेमें घूमकर देखने लगे। गुनरात व दक्षिणमें परदेका रिवाज नहीं है केवल डचोड़ी पर एक जमादार रहता था जो आते जाते लोगोंको देख लेता था। रात्रिको बंगलेमें रोशनी ऐसी होती थी मानो दिन ही मौजूद है। बैत्यालयमें शामको प्रेमचंद मोतीचंद बड़ी भक्तिसे आरती पहते और करते थे। रूपाबाई अपने पुत्रके मिक्तभरे शब्द सुनकर प्रफुछित होती थी। नम्बर्डके जैनी अब चौपाटीकी तरफ शामको प्रायः सर्व ही आने लंग और वैत्यालयके दर्शन नित्य प्रति करने हुगे। तथा सेठनीस उपदेश पाकर व बार्तालाप करके परस्पर लाम लंत देने हुए।

चतुरबाईको गर्भ था जिसकी सम्हाउ सेट माणिकचंदजीन बहुत की थी। उसके मंतानका जनम उसी बंगलेमें

तारामतीका जन्म । हो जहाँ गर्भ रहा है एसा भाव करके गुज० कार्तिक मास सं० १९५० तक चतुरबाईजीका

जाना चौपाटीके बंगलेमें नहीं हुआ था जुनिल्पी बागके बंगलेमें ही मिती कार्तिक वदी १ को सेठजीकी प्रत्रकी आशाको इसी तरह रखते हुए एक कन्याको जन्म दिया । यह कन्या भी मुन्दरमुख थी। शारीर बड़ा नर्भ था। इसकी रक्षा पृरी २ की गई। सेठजीने साधारण रीतिसे जन्मोत्सव किया तथा इसका नाम तारामती रक्ता। प्रस्तिका समय चले नानेक बाद कन्याको लेकर श्रीमती चतुरबाई नौपाटीके बंगलेमें चली गई और स्वर्गपुरीके समान वहां निवास करने लगीं। यद्यपि मगनपतीकी लग्न हो गई थी पर इसका चित्त पितानीके पास ही बहुत प्रसन्न रहता था। इस नए बंगलेमें वह सूरतसे आकर महीने दो दो महीने ठहर जाती थी और समुद्र व चौगटीकी बहारसे संसारिक आनन्द मनाती थी।

सेठ पानाचंदनीकी अवस्था सं० १९५०के प्रारंभ में ४५ वर्षकी थी। यद्यपि इनकी आंतरिक इच्छा सेठ पानाचंदर्जाकी विवाह करनेकी नहीं थी पर कोई संतानका तृतीय छग्न। लाभ न होनेस कुटुम्बी जन इनको विवाहका बहुत ज़ोर दे रहे थे। इन्होंने भी स्वीकार कर

लिया। इनका शरीर अभी भी भंत प्रकार हह व उद्योग पूण था। परतापगह राज्य जिला मालवामें हुमड़ जातिके एक साधारण स्थितिके थारी सेठ शंकरलाल नंदलालजी थे जिनकी पत्नीका नाम चिमनाबाई था इनके एक कन्या रुक्मीबाई थी जो सीधे मिजान की व यरके कामकाज में चतुर व हह शरीर थी, स्वास्थ्य भी अच्छा था। स्वरूप भी ठीक था। इसीके साथ सेठ पानाचंदजीका विवाह परतापगढ़में हो गया। विवाहमें कोई विशेष धूमधाम नहीं की गई। इसकी अवस्था अनुमान १६ वर्षके थी। सेठ पानाचंद तुर्त कन्या विदा कराके बम्बई लाए और चौपाटी बंगलेमें संसारिक मुखमें अमरके समान लिस हो गए। इनको यह आशा थी कि प्रवका लाभ हो क्योंकि प्रव विना एक गृहस्थी प्रत्यकी शोमा नहीं है।

इधर प्रेमचंद मोतीचंद स्कूलमें मैट्कुलेशन तक शिक्षा पाचुके
थे । इनकी द्वितीय भाषा संस्कृत थी । अवस्था
सेट प्रेमचंदजीको १६ वर्षकी हो गई थी । रूपाबाईजीने अव
व्यापारकी शिक्षा। ज्यादा स्कूलमें पढ़ाना ठीक न समझा और
व्यापारमें झुकाना ही उचित जानकर प्रेम-

चंदकी आगे पहनेकी इच्छा होने पर भी स्कूलसे उठाकर दूकानपर भेजना व मोती पुगना मिखाना शुरू किया। प्रेमचंदका मन बहुत सीधा था तथा अपनी पृज्य माताका परम भक्त था। माताकी आज्ञाका उछंवन पाप समझता था। सहपं माताकी इच्छानुमार ज्यापार मीखने लगा। सेठ साणिकचंदका इमपर बड़ा हेत था क्योंकि प्रेमचंदका मन धार्मिक व परोपकारके कार्योमें अच्छा लगता था। मभामें जाने आने व ब्याख्यान सुननेका अच्छा शौक था। कभी २ स्थानीय समामें कुछ कहनेका भी अभ्यास करने लगा। जैन बोचक मराठी पत्र व मराठीमें छपी जैन पुस्तकोंको अच्छी तरह बांचता था। छोकिक पत्रोंको भी देखता था। जैन जातिकी उन्नति हो इस बातपर पूरा लक्ष्य था।

सेठ माणिकचंद पानाचंदका भानना सेठ चुन्नीलाल झंबरचंद बराबर इन्हींके साथ रहते व दूकानपर काममें सेठ चुन्नीलाल झवेर- मदद दिया करन थे। चौपाटी बंगलेमें चंद व्यापारमें यह भी अपनी पत्नी जड़ावबाईके साथ शामिल। एक कमरेमें सुखसे रहने लगे। इनको व्यापारमें बहुत ध्यान देते हुए व अपने काममें पूर्ण सहकारी जानकर सेठोंने इनका कुछ भाग अपने फर्ममें नियत कर लिया और अपने बराबर इनकी प्रतिष्ठा बाजारमें हो ऐसा अवसर इनको दे दिया । चुन्नीललजी अपने तीनों मामाकी इच्छानुसार व्यापारमें खूब परिश्रम करने छगे।

सन् १८९२ के अप्रेल मासमें बम्बईके जैन युनियन ऋबमें एक जैनीने "प्रवाससे फायदे" इस जै**नियोंमें विलायत** विषयपर एक निकंब इंग्रेजीमें पढ़ा था फिर जानेकी चर्चा। गुनराती भाषामें कई भाषण हुए थे कि मद्यमांस पदार्थ त्याग करके यदि जैनी समुद

यात्रा करें तो कोई हर्जकी बात नहीं है !

सन् १८९३में चिकागों में एक बड़ी भारी प्रदर्शनी अमे-रिकावालोंन संगठित की थी तथा भारतके अमेरिका पदर्शनीमें हरएक धर्मवालेको अपनेर धर्मके सिद्धान्तींको जैन विद्वान भेज- कहनेके लिये बुहाया था। धर्म सम्बन्धी नेकी चर्चा। व्यवस्था करनेके विभागके अधिकारी जान हेनरी बरोज थे। इस समय क्वेताम्बरी साधु आत्मारामजी महाराजका नाम बहुत दूर दूर तक प्रसिद्ध था। उनके पास उक्त अमेरिकनका एक पत्र आया निमकी नकल यह है:-

# " पुज्य महाराज ।

इस धर्म समाजमें आप खुद जातसे आय सक्तोंगे ! आपका दर्शन होनेसे इमकू बहुत आनन्द होगा जिस जैनघर्मकी अटल ध्वजा आप उड़ाय रहे हो उस घर्मका वर्णन और उपदेशका प्रकाश हरकोई आदमीके दिलपर मुगमतासे पड़े ऐसा एक व्याख्यान लिखके यहां भेकनेकी आप कृपा करोगे ? जो आप

इतना काम करोगे तो इम बहुत खुश हो जायमें और समाजके हेतुओंमें कितनेएक दरजे फायदा होगाः मेरे दूसरे रिपोर्टकी कितनी-एक नकलों मैं आपके तरफ भेज देता हैं।

आशा है के आपके तरफसे ज्यादा खुलासा जल्दी मिलेगा।

**चिकागो** यूनाइटेड स्टेट्स। ता० ३**-**४-९३ आपका सेवक **जॉन हेनरी बेरोज** सभापति (जेन बोधक जून १८९३)

इस पत्रको पानेक पहले भी पत्र आया था उसके अनुसार आत्माराजीने बम्बईके जैनियोंको लिखा था कि अपने जैनमतकी तरफसे
दो आदमी वहाँ भेजना बहुत ज़क्री है। एक संस्कृत और मागधी
भाषाके जानकार पंडित अमिचंद जी और दूसरे वीरचंद
राघवजी बी. ए। तब ता० २५ मार्च सन् १८९३ को
बम्बई जैन एसोसियेशन आफ इन्डियान सेठ तलकचंद माणिकचंदके
सभापतित्वमें एक सभा की। उसमें सेठ माणिकचंद आदि कई
दिगम्बरी भी गए थे। एसोसियेशननं भेजना निश्चय करके खर्चके
प्रबन्धके लिये एक कमेटी नियत कर दी जो अहमदाबाद, भावनगर
और सुरतके महाजनोंकी सलाहसे सब बंदोबस्त करे।

ता० २ अप्रैलको सेट हीराचंद्र नेमचंद्रजीके (जो सभाके कायनिकार जैनियोंकी मके उपसभापति थे।) सभापतित्त्वमें दिगम्बर
जैनियोंकी सभा हुई। उपमंत्री पंडित गोपानेका विचार।
लदासजीने पेश किया कि दिगम्बरियोंकी
तरफसे एक या दो भाइयोंको चिकागो भेजना
चाहिये। इस समय सेट हीराचंद्जीने बम्बईमें मी दुकान कर ली
भीर अधिकतर यहीं सहते थे तथा अप्रैल १८९३से जैन बो-

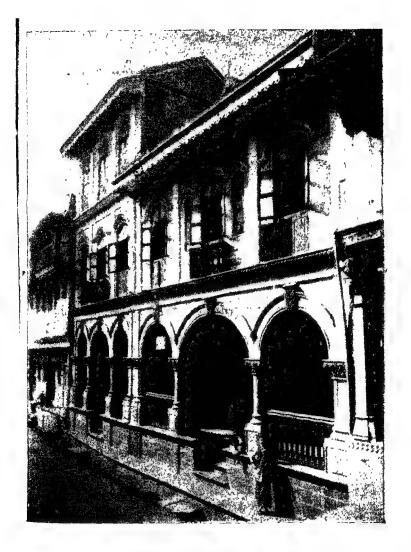
धक भी निर्णयसागर प्रेस बम्बईमें छपने लगा था । षं० धन्नालाल आदि सभासदोंने आदमी भेजनेकी आवश्यक्ता बताई । सभामें एक मद्रदासनी थे। उन्होंने कहा कि ऐसी क्या जहरत है ! यदि नहीं भेजे तो क्या नहीं चलेगा ! तब सेठ हीराचंद सभापतिने समझाया कि दिगम्बर मतका अस्तित्व बतानेको व जैनमत नास्तिक नहीं है किंतु यही सांचा आस्तिक है आदमी मेनना ही चाहिये। दूसरी आवश्यक्ता यह है कि इस भारतमें हिंसा और प्राणीबय बहुत होता है तथा यहां जो वाइमराय आदि हाकिम आते हैं सो छंडन-की पालियामेन्टके हुकमके अनुसार सब कानून चलाते हैं। इसमें ७०० सभासद हैं जिनमें कई मांसाहार व मद्यपानके त्यागी हैं। सन् १८३२ में वहां मिर्फ ७ आदनी मद्यके त्यागी थे सो सन् १८९२ में फक्त यूनाइटेड किंगडममें ७० लाख आदमी मद्येक न्यागी हो गए। मांमाहारकी सौगन्ध करनेवाले हालमें ३५०० आदमी हैं। इतना तो जिनियोंके प्रयत्न विना हुआ है। अब जो नैनीलोग वहाँ उपदेशक भेर्निगे तो कितने ही मद्य व मांसके त्यागी बन जांयरो । जैन धर्मका व्यवहार चारित्र हिंसा मेटना व मद्य मांस छोड़ना छुड़ाना है सो अपना जैनी उपदेशक पार्लियामेन्टके निष्प-क्षपाती व कोमल हुर्यी सभासरोंको जीव हिंसासे भारतमें हिंसा बंद होनेका कानून होनायगा। यह वात असाध्य नहीं है पर कप्ट नाध्य है। तब मंद्रदासजीने कहा कि रसोई पानीका आ-गबोटमें कैसे बनेगा इसपर सेट गुरुसुखरायजीने कहा कि श्रीपाल राजा धवलसेटके साथ जहाजमें बैटकर कई महिने तक समुद्रमें फिरा था सो वहां रसोई पानी सब कुछ उसका

होता था कि नहीं ? जहाजमें स्पर्शास्पर्शका कुछ दोष

इसके पीछे गोपालदामजीने कहा कि श्रीपालराजाका प्रमाण भी है और अभी उस वक्तमें बहुत-पं गोपालदासर्जा- से नैनी भाई बम्बईसे कोडियाल बंदर और का विचार समु- मूळीबद्रीसे बम्बईको आगबोटमें बैठके आते हैं सो वहां रमोई पानी बनाके द्रयात्रामें ा हैं। गये साल सेठ मूलचन्द्रजी और दूसरे २०० आदमी जैनिबद्री मूलबिद्रीकी यात्राको गये थे उनके साथ मैं भी था और **पंडित लक्ष्मीचंदर्जा** लक्करक*े*ल भी थे सो हम सब मंगलोर बंदरसे आगबोटमें बैटके गोवा बंदरको दो दिनमें आए थे। आगबोटमें अपना अलग चुला बनाके रसोई थी, सो सेट मूलचंदर्जी और मैं और दुनरे भी कितनेक जैनी भाईयोंने उस आगबोटमें बैटक रहोई जीमना, पानी पीना किया था तो अमेरिका और इंग्लेंड नात वक्त आगबोटमें अपना अलग चूटहा बनाके और अलग पानी रखके शुद्धता पूर्वक रसोई करके जीम लेगा तो धर्मकी अथवा जातिकी भी कुछ हरकत दीखती नहीं है सो सब भाइयोंके दिलमें पमन्द होवे तो नीचे लिखी हुई चार बार्तोकी अनुकूलता मिलनेसे आदमी भनदेना ऐसा इस सभाकी अभिप्राय बड़े २ शहरको भेनदेना ।

### चार बातों की तफसील-

१-अंग्रेनी और संस्कृत पढ़ा हुआ एक नेनी मिले तो बहुत उत्तम, नहीं मिले तो एक संस्कृतका विद्वान और एक इंग्रेनीका



चंदाबाड़ी धर्मशाला स्ररतः

(देखो पृष्ठ २३६)

J. V. P. Surat.

विद्वान ऐसे दो और तीसरा एक नौकर ऐसे तीन आदमीका संयोग मिलाना ।

२-उनके खर्चके वास्ते बन्दोबस्त होना।

३-भोजनकी शुद्धता होनी।

४-नातिकी आज्ञा होनी।

सबने उस अभिनायमें हां प्रगट की तब गोपालदासजीने जानेके योग्य विद्वानोंके नाम कहे—पंडित पत्नालाल झरगरलाल, भूरामलजी जेपुर बी. ए., माई मेहरचंजी धुनपत। बाद सभा विसर्जन हुई। (जै० बो० अप्रैल १८९३) ये चिट्ठियाँ भेजी गई जिनपर ज्रह्मस्री द्यास्त्रीने जो अभिन्नाय भेजा उसका सारांश यह है:—

चिकागो नानेमें यदि मकारत्रय, जीवद्या, तथापंत्र नमस्कार रूप मूल गृहस्थत्रमंका छोप नहीं होवे तो

त्रह्मसृरि शास्त्रांकः कुछ हानि नहीं है। इस नावतमें प्रमादवशसे समुद्रयात्रामें विचार। अतीचार लगे तोमां उसको प्रायश्चित कहा

है। प्रायिश्चत्त प्रंय अकलंक स्वामीकृत, इंद्र-नंदि आचार्यकृत, श्री नंदिगुरु प्रायिश्चत और भी दोय तीन प्रंय हैं उनमें मकारत्रय मूलगुणको प्रायिश्चित कहा है। विदेशामन-को और समुद्रयान करनेके वास्ते कहीं भी प्रायश्चित नहीं कहा है। महापुराणमें ऐसा लिखा है कि जिस २ उपा-यसे मार्ग प्रभावना होय- वह उपाय मत प्रकाशके वास्ते अवश्य करना। समंत्रभद्र स्वामीने मत प्रभावनाके वास्ते अनेक देशों में संत्रार किया था। सो चिकागो अमेरिका खंडमें नाकरके अपने जैनधर्मका प्रसंग करके स्थापन करना बहुत उत्तन है। इसमें शास्त्रको तथा आचारको विरोध नहीं है ऐमा हमको दिखता है। दर्शनसे श्रष्ट हुआ सो श्रष्ट होता है। चारित्रसे श्रष्ट हुआ सो पुनः स्थितिकरण हो सकता है इसके वास्ते समयभूषणके श्लोकः—

मनः शुद्धं भवेदास्य स शुद्ध इतिपठ्यते ।
विना तेन कृतकानोष्ययं नैव विशुद्धयिति ॥ १ ॥
कार्याकार्यविचारजः सर्वभाषाविशारदः ।
सर्वसास्त्रार्थवित्साधुर्धर्मस्य प्रतिपादकः ॥ २ ॥
सगुणा निर्गुणोवािष आवको मन्यते सदा ।
नावज्ञा क्रियते तस्य तन्मूला धर्मविशिना ॥ ३ ॥
येन येन हि कृत्येन धर्मबृद्धिः प्रजायते ।
तत्तत्कुर्वन् यतिर्मान्यो भवेदत्र न संशयः ॥ ४ ॥
सम्यग्दर्शनशुद्धानः नपमास्येन जायते ।
कमक्षयस्ततो नृनं तदेव प्रतिपालयेत् ॥ ५ ॥
सम्यक्तमूलं सर्व स्याज्ज्ञानं चारित्रमेव वा ।
।वना तनापरे नैव कुर्यातां मोक्षसाधनं ॥ ६ ॥

दिगम्बर जैन समान इस तरह सम्मितिके वाद्विबाद ही में
पड़ गई और चिकागो भेननेका कुछ
वीरचंद राघवजीका भी प्रकथ नहीं किया। उधर द्वेताम्बरचिकागो गमन। समाजने सबप्रकथ करके श्रीयुत वीरचंद
राघवजी बी. एको ताः ४ अगस्त
१८९३के दिन जहाज़में बिडाके चिकागो भेन दिया। आत्मारामजी
महाराजने एक निवंध हिन्दीमें तयार करके वीरचंदजीको दे दिया
कि इसका तर्जुमा करके सभामें सुना देवें।

सेट माणिकचंदनीको बड़ा भारी उत्साह था कि कोई दिग-

मनरी जैन बिद्वान चिकागो जावे और मत्य जैनवर्मका सिद्धान्त प्रतिपादन करे। पर उद्योग करनेपर भी न कोई जानेबाला बीर ही तय्यार हुआ और न समाजने रुपयेका प्रबन्ध किया, इससे सेठजीको बहुत हतारा होना पड़ा।

इंग्रेनी विद्याकी जैनियों में उन्नित हो और सायमें वे जैत-धर्मको भी जाने इम प्रकारकी उत्तेजना देनेमें चौगले बेलगांवको सेठ माणिकचंद और सेठ हीराचंद नेमचंदका छात्रवृत्ति । पुरा ध्यान रहता था। सेठ हीराचंदके बम्बई रहनेसे माणिकचंदको धार्मिक व परोपकारके

कार्योमिः अच्छी२ सम्मति मिउने लगी और असमर्थ जैन परदेशी छात्रोंको मासिक छात्र वृत्तिया देना प्रारंभ की ।

पाठकाण जानते ही होंगे कि दक्षिण महाराष्ट्र जैन मभाके मुख्य संचालक व दक्षिणके जैनियों में जागृति फेलांने वाले श्रीयुत्त अण्णाप्पा फड्याप्पा चौगले की. ए. एल एल. की. यक्कील बेलगांव हैं। यह पूना दक्षिण कालेनमें पहला वर्ष बी. ए. पास कर चुके थे। इनको मक्कीरसे १६० मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी, पर इनके अधिक बीमार होनेक कारण वह मिलता बंद हो गई थी, स्थिति गरीन थी, विना मदद आगे पहना बंद होता था। सेठ माणिकचंद्रजीके पास इनका पत्र आनेसे एक वर्षके लिये आपने और हीराचंद्रजीने ६) छः छः रु. मासिक छात्रवृत्ति देनी चालु कर दी और धर्मप्रंथ देखनंकी प्ररणा की। इस सहायताका फल यह हुआ कि कुछ दिनों बाद इसने संस्कृतमें एक जिनस्तुति बनाके सेठोंके पास भेजी जिसका नाम तापापहार स्तोन्न है सो यहां दिया जाता है—

#### श्रीतापापहारस्तोत्रम् ।

स्वात्मस्थितं तं परमात्मसंज्ञं मर्वे गतं कालकलामतीतम् । विश्वेश्वरं विश्वविकाशहेतुं बंदे विमुं वंद्यमगम्यतत्वम् ॥ १ ॥ तापापहारे कुशलो जनानां मदापहारेऽपि मदाश्रितानाम । त्रिलोकनिःश्रेयसदत्तदृष्टिस्तापात्स नः पातु निनो वंरण्यः ॥ २ ॥ इंद्रादिदेवा मुबनैकनाथं स्तोतुं प्रवृत्ता अपि यं न शक्ताः । तस्यानुरूपं स्तवनं विधातुं राक्तः कथं स्थामहमन्यबृद्धिः ॥ ३ ॥ रत्नाकरम्यान् पृथुरत्नराशीन्वयोमिन मियतान्तारकसंचयान्या । गणान् गुणानां भवतश्च देव व्यजीगणन् के मनुनास्त्रिलोक्णम् ॥ ४ ॥ तथाऽपि विश्वेश यथाश्रमं त्वां स्तवीमि भक्तया भवतापशान्त्यै । अल्पश्चतोऽस्मीति न वीतराग तन्मय्युपेक्षा भवता विधेया ॥ ५ ॥ आस्ताममेयो जिन संस्तवम्ने नामापि ते तापमपाकरोति । दूरे वसत्येव राशी तथापि प्रीणाति खिन्नं ससुधोऽस्य रहिमः ॥ ६ ॥ दुव्यीधिसर्गा भवकाननस्थाः सहस्वशः सन्ति निसर्गदृष्टाः । तान्वारयेद्स्तसमस्तरांको मस्योऽध्यपाशस्त्रयय बद्धमक्तिः॥ ७॥ कुष्ठाभिभूतश्च्युतजीवनेच्छो यष्टि विना संचरितं त्वशक्तः । त्वत्पाद्वसद्भयदत्तमौछिः सद्यो भवेत्कांचनतुल्यकान्तिः॥ ८॥ मो भो भवावधौ मनुजाः पतन्तो श्रयध्वमेतां निनभक्तिनौकाम् । सुवं तयात्येष्यय युयमेनं भीमं विपन्नककु शकु हो मिम् ॥१॥ कि भूषणै: कुंडरुकंकण।यैभनोज्ञवेषेश्च विनाशशीलै:। यः स्थैर्ययुक्तां जिनभक्तिमालां धत्ते स धीरो गतबंधनः स्यात् ॥१०॥ त्वद्भक्तिमालावृत्तदेहवंषं बाह्यः कथं मामरिरुच्छिनत्ति । मिचत्तवासे त्विय संहतारावंतर्द्विवामप्यवसानमेव ॥ ११ ॥

गंगेति गंगेति जना बदनित का बाडिस्त गंगा तब मिक्ततोड्या । तस्यां कथं भक्तिपुरापगायां मग्नस्य में क्वेशनतिन गच्छेत् ॥ १२ ॥ तापापहाराय महौषघानि तंत्राणि मंत्राणि च योजयन्ति । जानन्ति ये नैव तव प्रभावं तंत्रादिमंत्रादिगुरुस्वमंत्र ॥ १३ ॥ ध्यानाष्ट्रनानां मुनिष्टुंगवानां प्रकाशयंख्वं गिरिगह्नस्रि । त्रैहोक्यदीपोऽमि न वायुक्क्यो विकीर्णनीरंघ्रगमिक्ताहः॥ १४॥ मंयम्य वृत्ति मकलेदियाणामन्विष्य च त्वां हृद्यं मनीद्राः । त्वामव लब्धा गालिनायमंत्रः जबन्ति जन्मोपरमोबद् खम् ॥ १५ ॥ चित्रं प्रभो यत्पुरमंदरीणां लीलाकटाक्षधेतुरैर्मनस्ते । नाऽभृद्विलीलं त्वथवा समेगे. शृंगं चलं जात् बलाल वायो: ।।१६॥ किमन्न चित्रं यदि नाम कामः पहर्तुकामः सपदि प्रदृग्नः । न दह्यते दीपविनाशनार्थं समुत्पतन् कि सहसा परंगः ॥ १ ५ ॥ निनंद्रचंद्रेण विनातियोरं नगत्तमो नैव विनाशमिति । उचारमात्रेण यदीयनाम्नो योगाणि दःखानि जना जयन्ति ॥ १८॥८ क्रत्स्नैरवेद्यो जिन विश्ववंत्ता सर्वेरदृश्योऽप्यमि विश्वदृश्वा । गर्म्मुरूणामगर्म्भ्यो सन्ननीश्वरम्त्वं नगदोश्वरोऽसि ॥ १९ ॥ अद्रव्यमप्यांथेतमथेयुक्तैरचित्यमईन्ननुचितये त्वाम् । आवंदमानं सुरवृंदवंद्यं वंदे जिनेंद्रं जितरागमोहम् ॥ २०॥ विश्वेश्वरं मनमथञ्जूमकेतुं योगीश्वरं नित्यमसंख्यमकम् । गुरुं छच्चं स्थूलमथापि सुक्ष्मं त्वां सर्वरूपं प्रवदन्ति संतः ।। २१ ॥ अशोकमामंडलपुष्पवृष्टिश्वेतातपत्रत्रयचामरौदाः । दिव्यध्वनिश्चासनदुंदुभी च प्रदर्शयन्त्येव त्वेश्वरत्वम् ॥ २२ ॥ समीहितार्थप्रतिपत्तिहेतुं त्वां ज्ञानराशि विमछं वरेण्यम् ।

राकाषिदेवं सद्यं शरण्यं शकादिदेवाः शरणं व्रजनित ॥ २३
यथोचितं भक्तिविराजमानैयंक्षेरसंख्येरनुगम्यमानः ।
त्वत्पापशाखानखदिव्यदीप्त्या विश्राजमानं कुरुते किरीटम् ॥ २४ ॥
यमोऽपि मत्तं महिषं प्ररूढः पत्नीसमतो वृत्यप्रमदंदः ।
बद्धांजलिस्तिष्ठति देव नम्नः कुरः प्रकृत्याऽपि हि पुजयंस्वाम् ॥२५॥
प्राप्ताश्च शेषाः प्रतिहारभूमि नाथा दिशामादरपालिताज्ञाः ।
कल्पद्वपुष्पाणि तवांधियुग्मे किरन्ति भक्तिन्नणतोत्तमांगाः ॥ २६ ॥
गंभीरमद्रव्यनिपृरिताशाः प्रशस्तवाचो पृतिद्व्यवीणाः ।
गंधवंपृंगास्तव कीर्तिमच्छां गायन्त्यहो भक्तिवशुद्धदेहाः ॥ २७ ॥
ध्यायन्ति चे पृत्यमनन्तवीर्यं नाथं त्रिसंध्यं करुणापयोधिम् ।
असंशयं ते अतकर्मवंत्राः कल्याणभाजो मनुजा भवन्ति ॥ २८ ॥
तस्मात्प्रमादानवधूय जन्तोः संरक्षणार्थं भवदुःखसंघात् ।
लोकस्य निष्कारणवंधुमेतं श्रीशान्तिनाथं भज शान्तिहेतुम् ॥ २९ ॥

स्तोत्रेमंत्रैः कठिनतपसा नाथ मक्तयाप्रणत्या यः स्मृत्या वा विशद्हृद्दयः सेवतं देवदेवम् । प्रण्यात्मानं कथित्व नतं सेथयंतं नृवर्यम छक्ष्मीर्विद्याऽभिमतफलदातापशान्तिश्च मुक्तिः ॥ ६०॥ या चौगुलेत्युपाह्नेन अण्णप्पा नामधारिणा ॥ जिनभक्तयावनम्रेण वणुमामनिवासिना ॥ स्तुतिस्तापापहाराख्या जिनस्य रचिता तु सा । तनोत् विदुषो हर्ष पिक्रस्यवाम्रमंत्ररी ॥ युग्मम् ॥ , इति सर्वे शुभम् । " करकृतमपराधं संतुपर्वेत् संतः ॥" इति महाराप्ट्रदेशे पुण्यपत्तनवर्तिनि दक्षिणविद्यालय आंगल-विद्यादि संस्कृतकान्यालंकारव्याकरणाद्यधीयानेन वेणुप्रामनिवासिना चौगुलेत्युपनाम्ना अण्णाप्याभिवानेन विरचितं श्रीतापापहारस्तोत्रम् ।

संठ माणिकचंदनीकी इंग्रेनी पट्नेवालोंको आत्रवृत्ति दिये जा-

नेकी खबर दूर दूर फैल गई थी। लखनऊ

बाबू अजितप्रसादजी निवासी बाबू अजितप्रसाद एम. ए. का विलायत जानेके एल. एल बी. वकील, सम्पादक, इंग्रेजी लिये निवेदन । जैन 'गजट'से हमारे पाटक अच्छी तरह परि-

चित हैं। आपने सेठजीको पत्र दिया कि में भिविल भिविस पास करनेके लिये विलायत जाना चाहता हूं। मेंन इसी वर्ष (सन् १८९३) बी॰ ए॰ पास किया है, उस्र १९ की है। हररोज़ स्वाध्याय करता हूं। दर्शन भी करने जाता ग्हता हूं। मुझे विलायत जानेको रूपया कर्ज चाहिये। उस समय इनके पिता कममरियटमें क्लर्क थे। इतनी शक्ति नहीं थी जो द्रव्यका प्रवन्ध कर सकें। दि॰ जैन समाजमें विलायत भेजनेमें भिन्न २ भम्मित होनेके कारण सेठजीने स्वयं मदद नहीं दी किन्तु जैन बोधक अगस्त १८९३ में इनका पत्र प्रगट कराकर अन्योंको प्रेरणा करवा दी कि सहायता करें, पर इसका कोई भी प्रवन्ध नहीं हुआ। वास्तवमें बहुतसे छात्र धनकी मददके विना अपनी इच्छानुसार विद्या सम्पादन करनेसे विद्यत रह जाते हैं।

भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभा नामकी सभा पंडित चुन्नीलाल मुरादाबाद व अन्य परोपका-सेट माणिक चंद जीका रियोंके उद्योगसे सन् १८९१में व संवत महासभा मथुरामें १९५७में मथुरा जंबूस्वामीजीक मेले पर प्रथम गमन । मंगठित हुई थी इसके सभापति श्रीमन् सट लछमनदासजी सी० एम० आई, मथुरा व उपसभापति रायबहादुर सेट मूलचंद्जी सोनी, अजमेर व लाला उन्नमेनजी सहरानपुरवाले आदि थे। संवत १९५०के वार्षिक अधिवंशनके लिये मुम्बई स्थानीय मधाने ३१ प्रतिनिधि चुने ध पर मेलेके समय जो सदा कार्तिक बदी २से ८ तक होता है निम्त-लिखित चार् महाशय पथारे ।

(१) सेठ माणिकचंद्नी (२) सेठ गुरुमुखराय नी ः३) सेठ हीराचंद नेमचंदजी (४) और पंडित गोपालदासजी बरैया। इस वर्ष मेलेमें १०, १५ हनार आदमियोंकी भीड़ थी। मधुराके चौरासी स्थानपर शहरसे २ मील एक बड़ा भारी जिन मंदिर है। वहां अंतिम केवली श्री जंबूस्वामीजी महाराज्के मोक्ष जानेके चरण चिन्ह स्थापित हैं तथा श्रीअनितनाथजीकी बहुत विशाल वीतरागता प्रदर्शक मूर्ति है। इस वर्ष आगरा, अछीगढ़, हाथरस आदि १३ नगरोंसे श्रीजीकी वेदियां जलेन सहित आईं थीं। कार्तिक बढ़ी अके दिन सेठ लक्ष्मणदासजीके डेरेपर नियमावलीका विचार हुआ। रात्रिको मंदिरजीमें शास्त्र छपने न छपनेकी चर्चा चल पड़ी थी। सेठ हीराचंद नेमचंदने पुस्तक छपनेकी पुष्टि व

पंडित प्योरेलाल, छेदालालजीने विरोधमें व्याख्यान दिये थे तथा लोगोंको प्रेरित किया था कि कोई मुद्रित पुस्तक न खरीदे।

अष्टमीकं दिन रायबहादुर सेट मूलचंद्जीके डेरेमें सर्व प्रति-निधि जमा हुए। मूलचंद्जीने कहा कि गायबहादुर सेट मूल- एकताके अभावसे सभा होना कठिन है। चन्द्जीका उपदेश। विद्यावृद्धिके लिये ग्राम २ में पाठशाला खोलो, कालेजके लिये रुपया आना कठिन है। इससे महामभा व कालेजकी बातें सब छोड़ो। मद्यमांस छुड़ानेका उप-देश द्ये। ऐसे बड़े मेलेमें हजारों आदमी आते हैं, पंडित लोगोंकी चर्चा व सुन नहीं मक्ते। ऐसे मेलेमें सब लोग समझें ऐसा साधारण धर्मका उपदेश खड़े होकर देना चाहिये। रात्रिको शास्त्रमभाके पीछं सेट मूलचंदजीने खड़े होकर धर्मके विषयमें व्याख्यान दिया नथा सेठ ल्ह्मणदासके डेरेपर नियमावली पर विचार हुआ।

उस ममय छाला रूपचंद्रजी (म्हारनपुर)ने भी कहा कि यहां तो कुछ मुननको मिलता नहीं सो कोई खड़े होकर उपदेश देनेमें ऐसा उपाय मोचो कि जिससे मेलेक सक लाला रूपचंद्रजीकी राय। लोग शास्त्रजीको सुन सके। सबको सुनानके वास्ते खड़ा रहके बांचे तौभी कुछ हर्ज नहीं हैं परंतु सबको उपदेशका लाभ मिलना चाहिये। अंतमें नियमावली पसंद हो गई। दूसरे दिन रातको सभा हुई। नियमावली स्वीकृत हुई, कार्याध्यक्ष नियत हुये। सभाके मंत्री पंडित प्यारेलालजी अलीगढ़, मूलचंद वकील मथुरा, व मैरोप्रसादजी इलाहाबाद नियत हुए।

अपने डेरेपर आकर सेठ हीराचंद और सेठ माणिकचंदजी बातें करने लगे कि अभी जैनियोंमें सभाका सेंड हीराचंद और सेंड शौक बहुत कम है तथा अज्ञानता बहुत है। माणिकचंदजीकी इसका कारण यही है कि हमारे भाई शास्त्र वार्तालाप । स्वाध्याय नहीं करते । इसके न होनेमें एक अंतराय सुलभतासे ग्रंथोंको नहीं प्राप्त करना है। यदि ग्रंथ मुद्भित हो जावें तो हरएक भाई इच्छानुसार लेकर पह सक्ता है। देखो अपने मंदिरोंमें प्रायः पोथियोंमें भक्तामरजी, सूत्रजी, व पृना पाठ अशुद्ध लिखे मिलते हैं। लोग अशुद्ध ही पाउकर जाते हैं। अर्थ पर तो कुछ ध्यान देने नहीं, पर छापनेमें यह फायदा है कि एक प्रति शुद्ध करली गई तो उसमे हज़ारों प्रति शुद्ध तय्यार हो सक्ती हैं, देखो मैं आपको (पुस्तक हाथमें देकर) यह भक्तामर-स्तोत्र दिखाता हूं इसमें गुजराती भाषामें अर्थ व पद्य देकर आमोद निवासी सेठ हरजीवन रायचंद शाहने अपवाया है। इससे हमारे गुनराती भाई स्तोत्रका शुद्ध पाठ भी कर सकेंगे व अर्थका भी बोध होगा कितना बड़ा लाभ है। गुनराती अर्थ सहित यह पहली ही पुस्तक है जो गुजरातके दिगम्बर जैनीने छपवाई है। सेठ माणिकचंदने उस प्रस्तकको इघर उघर पदा। बडे ही प्रसन्न हुए और उपका पता ठिकाना अपनी नोटबुकमें छिल छिया। आगे चलके सेठ हीराचंदजीने कहा कि अब प्रंथोंका मुद्रण बंद नहीं हो सका। आप जानते ही हैं कि मैंने कियाकोश, नेमदृत काव्य, रत्नकरंड श्रावकाचार, संस्कृत पूजापाठ, भजन-सद्योध मालिका आदि कई प्रंथ प्रसिद्ध कर दिये हैं व अपने पत्रद्वारा भी ग्रंथोंका भाव प्रगट कर रहा हूँ।
सोनपतवाले पंडित मधुरादासजीके भाई मेहरचंदजीने सज्जनचित्तवस्त्रभ टीका सहित व नाना रापचंद्र नाग जैन
बाह्मणने निर्वाणकांड, रूपचंद कृत पंच मंगल व त्यागी महाचंद्रकृत
समायिक पाठ भाषा छपवाए हैं तथा मदरासमें आपर्ट साहबने
दााकटायन व्याकरण छपाया है जो १०)में मिलता है तथा
बड़ौदाके महाराजने समाधिशतक व नीतिवाक्यामृत, जैन ग्रंथोंको
गुजराती व मराठी भाषांतर कराकर छपानेका विचार किया
है। पड्दर्शन समुच्चव, द्वयाश्रय महाकाव्य, बुद्धिसागर आदि जैन
काव्योंके प्रकाशके लिये बेंगलोरके मैसूर आर्चिलडिकल आफिसमें
काम करनेवाले पं० पद्मराजराणांन काल्यांबुधि प्रकाश मासिक
पुग्तक निकालना प्रारंभ किया है।

सेठ माणिकचंदजीने कहा—पंडित प्योरेळाळजी कितना ही मना कर परंतु मुद्रिन अंथोंका प्रचार अब बन्द नहीं हो सकता और ऐसा विना हुए इस कालमें ज्ञानकी वृद्धि भी नहीं हो सक्ती। इतना वार्ताळाप करके दोनों निद्रित हो गए।

बम्बई छोटकर सेठ माणिकचंद आनन्दसे अपने कार्य्य व्यवहारमें छीन हो जए। यह अपने बंगछेमें रोज प्रातःकाछ अनेक समाचार पत्रोंको पढ़ा करते थे। एक दिन एक अखबारमें वीरचंद रागवजीके पत्रकी नकछ बांची जो उन्होंने जैन एसोसियेशन आफ इंडियाको मेजी थी और जिसमें चिकागो व अन्यत्र जैन्धर्मके व्याख्यानोंसे क्या र छाम हुआ सो छिखा था। यह पत्र जैनबोधक अंक १०९ माह सप्टेम्बर १८९४ में मुद्रित है जिसको उपयोगी जानकर हम उसकी पूरी नकछ नीचे प्रगट करते हैं:—

#### नकल पत्र वीरचंद राघवजी।

"में अगाउ बे पत्र सवीस्तर छम्बा पञ्जी हुं फरीथी सविस्तर लखी शक्यो नथी तेनुं कारण अहिंनी स्थिति संपूर्ण समज्या पछी जाणवामां आवशे. आ दंशमां भाषणो आपवानी पण ऋतु होय छे. गरमीना दिवसोमां माग्येन भाषणो आवशामां आवे छे. अहिं शिया-ळाओमां तथा पानम्बर् ऋतुमां बहु भाषणो आपवामां आवे छे. हुं अहीं सप्टेंबरनी शरूआतमां आव्यो ते वन्तरे पानन्वर ऋतु शरू थई हती, जुदा जुदा धर्मी विषे वादविवाद चलाववा माट करवामां आवेला मेलावडानी बेठक पण ए वस्तते शरू थई गई हती. अने ते सप्टेंबरनी आखंर खलास थई गई हती. हिंद्स्तानना धर्म संबंधी ए मेलावडामां सारां भाषणो थवाथी। लोकोनी रुचि ए धर्मी उपर वधारे थवा लागी हती. मेलावडामां जुदा जुदा धर्मी संबंधी एटलां वधां भाषणो थवानां हतां के, दंरक प्रतीनिधिने फक्त त्रीस मिनीट बोज्जा देवानी परवानगी मळी हती. तेने छीघे ब्राह्मण धर्म, बोद्धधर्म तथा जैनधर्म बच्चे शो फर छे ते लोकोन यथास्थिति मालम पडचुं न हतुं. लोकोनी मात्र एटली खात्रो थई हती के, हिंदुस्तानना धर्मो ब्बीस्ती धर्म करतां वधारे उत्तम छे. आटली असर छोकोनां मन उपर थया पछी एकदम हिंदुस्तान पाछा आववुं ए मने ठीक लाग्युं नहीं. जैनधर्म ए बौद्धधर्म तथा धर्म करतां जुदो छे एम समजाववानी मारी फरज हती. अत्यार सुधी अहिंयां केटलाक लोको एम समजता इता के, हिंदुस्तानना छोको तमाम बौद्धधर्मना छे. वणा छोको वळी एम धारता हता के, हिंदुस्तानमां तमाम छोको ब्राह्मण धर्मना छे. जैनधर्म ए झूं तेने विषे लोकोने नरा पण खबर नहीं हती. आ मेळावडो थयो स्यारे लोकोने मालम पडचं के " जैन " ए नामनो पण एक धर्म छे. सर एडवीन आरनोल्ड नामना एक अंग्रेन गृहस्थे " लाइट ओफ एशिया " नामनं पुस्तक ( नेमां गौतम बृधनुं जन्मचरित्र कवीता रूपी आपेलुं हे ) प्रसिद्ध कर्युं हतुं अने ते आ देशमां बहु फेलाव्युं हतुं, नेन लीधे बौद्धधर्म धर्म जगाए जगाए प्रसिद्ध थयो हतो परंतु जैन धर्म संबंधी लोको पयोगी पुस्तक अंग्रेजी भाषामां छपायलुं नहीं होवाथी ए धर्म संबंधी लोकोने कशी माहीती न हती. आवां कारणोने लीधे मारा मनमां एवो विचार अयो के हुं आ देशमां जैन धर्मने माटे आव्यो अने ए धर्मन माटे माराथी बने नेटली उन्नति न थाय त्यां सुधी मारुं अहीं आववं नकामं हतं. आ देशमां लोकोनी खीस्ती धर्म उपस्थी श्रद्धा ओड़ी थती जाय छे त्यारे एवं प्रसंगे मारी फरज छे के, जैन धर्म संबंधी ज्ञान आ देशमां मार फेलाववुं नोइए. मेलावडी खलाश थयो एखे चिकामो दाहेरमां जुदी जुदी जगाए भाषणो आपवानो ृमारो विचार थयो परंतु ऋतु वणी थंडी हती तथा खुछी जगामां भाषणो आपी शकाय नहिं तेबुं होवाथी ते माटे खास बंदो-बस्त करवा अहिना केटलाक उमदा विचारना पादरीओने मळ्यो अनं तंओए पोताना देवलोमां मने भाषण करवानी परवानगी आपी. चिकागोना लोकोन नाहेर रीते मालूम पड्यूं के मेळावडो परो थया पछी हं अहीं थोडो वखत रहेवानो हुं तेथी घणा लोको हं जे मकानमां रहें हुं त्यां मने मळवा आववा लाग्या. जैन धर्म संबंधी कर्मने स्वरूप केबुं छे ते तथा स्वर्ग, नर्क, मोक्ष, देवलोक, आ-

त्मा, पुण्य, पाप वगेरे घणा घणा विषयो उपर मारे ए लोको साथ वातचीत थई. केटलाक लोकोए मने कहां के जैन प्रतिनिधि तरीके मारी फरन छे के हिंदुस्ताननी जुदी जुदी फिल्रप्लफी अथेति पड़ दर्शनतुं स्वरूप मारे समनाववुं जोईए अने साबित करवुं जोईए के जैन दर्शन सवळा दर्शनोमां उत्तम छे. ए उपस्थी जे मकानोमां हूं रहुं हुं त्यां एक वर्ग उवाडवामां आज्यो, तेनां आशरे ५० पुरुषो तथा स्त्रीओ जैन धर्म अने तेनां तत्व शुं हे ने संबंधी ज्ञान मेळब्बा माट आबबा लाग्या. ता. १५ मी में सुधी में ए प्रमाण कर्यु. हं चिकागोना जे भागमां रहं छं तेने एंगलयुड: कहे छं. त्यांथी आशरे दश माईल उपर बीजे एक वेस्ट चिकागो नामनुं परं छे. त्यांना लोकोए पण मने कहा के नेओ आटलं द्र मारां भाषणो सांभळवा आवी शके नहिं तथी मारे ने जगोए जई भाषणी आपनां जोईए. त्यां एक जाहेर मकान नहीं हतुं अने मकान माडे लेबा नईए तो पार विनानो खर्च थई नाय तथी मो. पीटर्मन नामना एक उपदा दिल्ला प्रहस्थना घरमां गोटक्ण करवामां अवी हती, त्यां पण ता. १५ मी मे सुघी में भाषणो आप्यां. एंगलबुडनां युनवर्सेलीस्ट चर्च नामनुं एक स्तीस्ती देवल है, त्यां पण में एक भाषण आप्युं. हाइडपार्क नामनुं एक परुं छे, त्यांना प्रेसवीटे-रियन चर्च नामना देवलमां पण में एक भाषण आप्यं. ओल सोल्स चर्च नामना देवलमां छ वलत में भाषणो आप्यां हतां. हाइलपार्क नामना बीजा एक परामां में भाषणो आव्यां. कुक काउनटी नार्मल स्कूल नामनी अत्रे एक प्रख्यात शाळा छे तेना प्रोफेसरो तथा विद्यार्थीओ समक्ष में एक भाषण आप्युं हतुं. इन्हीनेइस प्रेस

विमेनस कला हजूर पण में एक भाषण आप्युं हतुं. कोरीसन चर्चमां एक सब जडन शेरमेनना घरमां त्रण अने इवींग ऋबमां एक भाषण आप्युं हतुं. 'घी फर्स्ट सोसायटी ओफ स्पीरिच्युआलीस्ट' नामनी एक मंडलीनी सभामां चार वखत में भाषणो आप्यां हतां. ए सिवाय बीजी घणी जगाए में जाहेर भाषणो आप्यां छ, ए जाहेर भाषण सिवाय मारी स्थापित विद्याशाळामां में वारंवार भाषणो आप्यां ने तो जुड़ा अने सैंकडो छोको हुं जे मका-नमां रहुं छुं त्यां मळशा आवी धर्म संबंधी चर्चा करे ते पग जुड़ी. आवी रीत अत्यार सुधी मारो तमाम वस्वत भाषणी आक्वामां तथा छोको, साथ धर्मनी चर्चा करवामां गयो छे. एक पण दिवसनी रातना १२ वागा अगाऊ सुवा पाम्यो नथी. शियाळो खतम थयो छे तेथी भाषणो आपवानी ऋतु पण खतम थई छे. वसंत ऋतु चाले छे अने गरमी पडवा लागी है नेथी लोको थंडी जगाओवां जवा लाग्या छे , एटले हवे हुं फुरसद लई शक्यो हूं. अत्यार सुधी में चिकागो तथा तेनी आसपासनां परांओमां भाषण आप्यां छै. चिका-मो तथा शहेरमां पंदर लाख माणमनी वस्ती छे. तेथी त्यां आटलां भाषणो आपवानी नरूर हती, परंतु युनाईटेड स्टेड्म मोटो देश छ अने बीनां शहरोमां भाषणो आपवाथी जैन वर्मनी कीर्ति जगाए जगाए फेळाहो. एवा हेतुथी हुं बीजा दाहेरोमां भाषणो आपवानो इरादो राखुं छु. सपटे-म्बर मास पछी भाषणो आपवानी ऋंतु शुरु थशे तेटला बखतमां जुदा जुदा विषयो उपर भाषणो आपवानुं हुं नकी करी राखीश. ऑगस्ट मामनी ता. ५-१२ तथा १९ ना रोजे न्युयार्क पासे आ-

वेला लीलीडेल नामना शहेरमां हजारो लोको समक्ष जैन धर्म उपर भाषणो आपवा माटे त्यांना लोकोए मने बोलाव्यो छे. ते बखते हुं त्यां नईश्व. हिंदुस्तानना लोको विषे स्त्रीस्ती धर्मना मिशनरीओ आ देशमां एटबा बबा खोटा विचारो दर्शावे छे के ते विचार दूर कर-वानी हिंदुस्तानमां नन्मे हा दरेक ग्रहस्थनी फर्न हे. दाखला तरीके आ मेलावडामां हानर रहेठा लंडनना एक मीशनरो डान्टर पेन्टेको-सेट हिंदुस्तानना तमाम लोकोनी वर्तगुरु उत्तर मोटो हुमलो कर्यो हतो. जैन धर्म संबंधी ते कहां बोल्यो नहतो. पण मामान्य रीते हिंदुस्तानना लोको विरुद्ध तेण भाषम आप्युं हतुं. बीमे दिवसे जैन धर्म संबंधी भाषण आपवानी मारी वारी हती, तेथी जैन धर्मसंबंधी भाषण आपदा पहेलां में इंहामां एं मीशटरीन सारी रींत जवाब आप्यो हतो. आ मेलावडानी मुख्य असर ए यई छे के, अहिंना लोको स्त्रीस्ती धर्म उपर श्रद्धा ओछी राग्ववा लाग्या छे अहिंना स्त्रीस्त्री देवलमां जनारा लोको केटला है। तेनी तपास करतां मालम पडे छे के चिकागोनी वस्तीमांथी दर बसे माणसे फक्त एकन माणन रविवारे देवछनां नाय छे. बाकीना माणसो बीलकुल देवलतां जता नथी. परन्तु में स्त्रीस्ती देवलमां भाषणी आप्यां हतां त्यारे जे लोको कोईपग दिवसे त्यां आज्या न हता ते मारा भाषणो सांमळवा आव्या हता. जैन धर्मनी खूबीथी मीसीस चार्ल्स हारवडे नामनी एक बातु एटली बधी खुशी थई छे के तेणीए मांसाहारनो त्याग कर्यो छे. तेणीए तथा तेणीना पतिए चोधुं त्रत आद्र्युं छे, अने हुं हिंदुस्तान पहोंचीश त्यार पछी हुं पसन्द करूं तेवा एक जैन छोकराने पुरेपुरी केळवणी आपवाने



श्रीमती मगनवाई और उनके पति श्रीयुत खेमचंदजी.

(देखो एड २४४)

J. V. P. Surat.

जेटली खर्च थाय तेटली आषवाने तंओए कबुल कर्यु छे. अमेरिकाना केटलाक वर्तमान पत्रोए जैनधर्म विषे पोताना उत्तम मतो जाहेर कर्या छे. त्यानां 'धी आई ' नामना एक पत्रमां गई ता० २३ मी मार्चना अकमां एवं लखाण करवामां आव्युं छे के भाषणनो विषय जैनधर्म अने ते धर्म विषे मी० गांधी अहींना मेळावडामां पोताना लोको तरफथी भाषण करवाने आव्या हता. जुदा जुदा देशोमांथी आवला अनेक विद्वान प्रतिनिधीओए मेळावडामां अने ते खलास थया बाद पूर्व देशना धर्मो विषे जे भाषणो कर्यो हतां, ते तमाम धर्मो करतां बुद्धिवान अमेरिकन लोकोनं वलण जैनवर्म तरफ वधारे सारीरितं दळ्युं हुं ''

यह दत्र गुनरातीमें है तोभी हमारे पाठक समझ गए होंगें। इससे यह झलकता है कि वीरचंदन अपने लगातार व्याख्यानोंका एमा असर जमाया कि इनके पास ५० के करीब स्त्री पुरुष जैन तत्वज्ञान सीखनेके लिये आने लगे तथा पादिस्योंने गिग्नाघरमें भाषण देनेकी इनाजत देही। एक स्त्री और उसके पतिने चौथा वन लिया तथा ४ जैन बालक पूर्ण धर्म विद्या पढ़े इसके कुल खर्चको उटाना मंजूर किया। दूसरे किसी दिन सेठजीने एक चिकागोकी मेनकी चिद्वीका तर्जुवा एक पत्रमें पड़ा जिसमें इंग्रेजीभी छपा था। वह पत्र यह है-

"To the Editor of the Pioneer."

The Jain Community was very ably represented by Mr. Veerchand Raghaojee Gandhee B. A. of Bombay, who made an exceedingly

favourable impression and continues to do so in the lecture courses which he is still delivering in verious parts of the country.

Chicago 30, January.

Merwin Marie Snell.

## भावार्थ।

सम्पादक "पायोनियर "

वीरचंद गांधी बी. ए. बम्बईने जैन जातिकी तरफसे बहुत योग्यता दिखाई, बहुत बड़ा असर पैदा किया और अब जो देशके भिन्न २ भागोंमें व्याख्यान दे रहे हैं उससे असर बढ़ता जाता है—

> चिकागो, २ • जनवरी। दः मरविन मेरी स्नेल (जैन बोधक जून १८९४)

एक दिन सेठ माणिकचंदको महासभाके अधिवंशनकी याद पड़ गई। शास्त्रोंके छपने न छपनकी

सेट हरजीशन रायच- चर्चा दिलमें आ गई। सेट नीके दिलमें न्दसे परिचय। सेट हीराचंद नीका बहुत बड़ा मान था। प्रेम भी खुब था। हरएक बानमें

इनकी सजाह लेते थे। धार्मिक मित्र ही मानते थे इससे संट हीराचंदके ममान सेउ माणिकचंदजी भी ग्रंथ मुद्रणके पक्षपाती थे। इनको पूर्ण विशास था कि विना मुद्रित ग्रंथोंके स्वाध्यायका प्रचार नहीं हो सक्ता। इतने हीमें इन्होंने उस भक्तामरजीको याद किया जो गुजराती अर्थ सहित ज्ञषा हुआ मथुरामें देखा था।

पता इनकी नोटनुकर्में लिखा ही था। आपने श्री भक्तामरजीकी बहुतसी प्रतियां मंगाकर अपने घरमें व दूसरे पाठ करनेवालोंको बाँटनेके लिये सेटनीन प्रथम ही एक पत्र सेट हरजीवन रायचंदको आमोद लिखा जिन्होंने अनुवाद करके प्रकाशित किया था । यह नरसिंहपुरा जातिके एक सुशिक्षित गृहस्थ हैं. जैन शाम्बोंके मननका अभ्यास है, तत्त्वको समझते हैं, परापकारी हैं, गुज-रानमें माननीय हैं। सेठजीका पत्र पान ही सेठ हरजीवन रायचंदको बहुत हर्ष हुआ । क्योंकि यह तो इनके कर्ण गोचर हो ही चुका था कि बर्म्बर्डमें सेट माणिकचंद जौहरी एक बहा ही धर्मात्मा, पैरोपकारी व मिलनसार सेठ है। इनके प्रतापसे बहुतसे गुजराती बंधुओंने बम्बईमें धन्दा प्राप्त किया है। सेठ हरजीवन रायचंदने पुस्तकं भेजीं व उत्तरमें एक लम्बा चौहा का लिग्वकर गुजरात देशके अज्ञानकी दशा बतलाई । यह पत्र बांच-कर सेठजीको बहुत ही सन्तोष हुआ । सेठजी जेसं पत्थर पहचा-ननेमें जौहरी थे वैमे मनुष्यकी भी पहचान करनेवाले सच्चे जौ-हरी थे। ऐसे विद्याप्रेमी, परोपकारी पुरुषोंके लाभको महान लाभ समझते थे । इस पत्रका उत्तर सेठजीने दिया और उपदंश किया कि वे कुरीतियां बन्द करनेमें, व स्वाध्यायके प्रचारमें परिश्रम करें। तथा बाहकोंके हिये पाटशाहा खोलें। यहींसे इनका सम्बन्ध प्रारंभ हुआ। अन तो वर्षमें दोचार दुफे परस्पर पत्र व्यवहार होने लगा। धर्म सम्बन्धी पुस्तकोंका गुजरातीमें भाषान्तर करनेको कई देफे. सेठनीने लिखा ।

सेठ माणिकचंदजीको पालीताना सेत्रुंजयके उद्धारका बहुतः वड़ा ध्यान था और ऐसा ही मुनीम धर्मचं-एक विधवाका दजीको था जो सच्चे दिलसे तीर्थकी उन्न-२०००) का तिमें दत्तिचत्त थे। दक्षिण हैदराबाद दान। निवासी सेठ प्रणमल हणुमंतराम पांड्याकी. विधवा बाई रामबाई पालीताना पधारी

थी । आप धर्म वंदर्जीके उपदेशमे २०००) के दानका उपयोग नीचे प्रमाणे कार्यों में करनेको कह गई:—

- २००) पालीतानाकी नई धर्मशालामें कोठरी नग १ बनाना । ११००) पहाडपर शांतिनाथनीके मंदिरके मोटे मंडपमें संगमर्भर पत्थर लगाना ।
  - ५००) ग्रामके नये मंदिरजीमें जो गभारा है उसमें चांदीके द्वार जड़े जावें।
  - २००) सं० १९५१ की प्रतिष्ठांके समय नए मंदिरमें एक प्रतिमा पवराई जावे।

इस स्वबरको सेंड माणिकचंद्रने सं० १९५० जेट वदी १६ सोमवारके दिन ल्यिकर जैन बोधकमें छ्याने भेजी दी जो इस पत्रके अंक १०७ जुलाई १८९४ में मुद्रित है। इस पत्रके नीचे सेंड-जीका यह रिमार्क था—

" एकठां काम करवाने वे इज़ार रुशीया बाई आपी गयां छै तेने संघ तरफयी अने इमारी तरफयी घन्यवाद आपिये छिये। अमे सरवे बंधुजनोने विनंती करिये छीये के एइवा उदार दिलना भाईयोने पईसा सारी टेकाने वापरवाने इल्लमां सऊयी उत्तम ठेकाणुं श्री शोलापुरना चतुर्विष दानशालामां भदत करवी. ए ठेकाणुं घणुं लामनुं छे । ''

पाठकोंको इमसे मालूम होगा कि विद्यादान आदि ४ प्रकार-के दानोंका व उसके होनेवाल कार्च्यका कैसा महत्त्व सेठ माणिक-चंदजीके दिलमें था।

वस्बई दि॰ जैन सभा सेठ माणिकचंदके मंत्रिस्व व पंडित गोपालदासके उपमंत्रित्वमें बहुत कायदेसे दि॰ जैन सभावम्ब- काम करने लगी । इसका प्रथम व र्षिकोत्सव ईके कार्य । मगसर मुदी १४ को हुआ । सालमें १९ अंतरंग व १९ उपदेशक सभाएं हुई । इस

ममय सभाके आधीन ६ माने चालु थे।

म्बाना	आमद	ग्वचि	बचत
सभा	२२३॥)	१२४)॥।	(SIE)1
पाउशाला	38811=1)11	२६५)॥	९९॥=)
पुस्तक	386111=)11	१९३1-)	१९९॥–)॥

कुल ९३७=) ५८२।=)। ३५४॥=)॥।
नेन पाठशालामें पं॰ जीवराम शास्त्री पहले नियत हुए। फिर पं॰
निवासाचार्य व एक ज्योतिष शास्त्री भी रखा गया। इसका
उपयोग स्वयं गोपालटाम और पं. धन्नालालजीने भी लिया। सं०
१९५१ मगसर सुदी १४ तक पं॰ गो।।लदास शाकटायन, सभासोत, चंद्रप्रमुकाल्य ६ सर्ग, सर्वार्थ सिद्धि पूर्ण, राजवात्तिक अध्याय, परीक्षामुख परिच्छेद १॥, अलंकार चिंतामणि प्रथमपरिच्छेद,

कुवलयानंद पौन, गृहगणित स्पष्टाधिकारसे पूर्वतक, जिनेन्द्रव्याक-रण थोड़ा, आदिनाथ पुराण पत्रे ५५—इतने विषय अपनी तीत्र बुद्धिके कारण पढ़ चुके थे तथा पं० धन्नालाल शाकटायन पड्लिंग, नंदप्रमु कान्य २॥ सर्ग, परिक्षामुख १ परिच्छेद ही कर सके थे। पुस्तक खातेसे लिग्वित ग्रंथ गोम्मटसार अष्टशती आदि भं-डारमें मंगाये जाते थे। तथा समाने एक परिताषिक भंडार भी कायम कर लिया था कि अमुक २ विषयोंमें परीक्षा देकर जो भारतमें कोई जैन विद्यार्थी उतीर्ण हों उनको ईनाम दिया जाय अर्थात् परीक्षालयकी नींव जेट सुदी १ सं १९५१ को डाली गई थी।

दमहरं अर्घद तिहवारोंपर बहुतसे रजवाड़ों आदिमें पशुवध होता था उसको रोकनेके लिये कई दयावान पशु हिंसावदीका प्रयत्न जैनी भाई प्रयत्न कर रहे थे। उनमें हमारे और सुरतके लोगोंद्वारा सेठ माणिकचंदनी भी थे। प्रयत्नसे क्या मानपत्र! नहीं होता १ धरमपुरके महाराणाने अपने राज्यमें होनेवाले पशुवधको बंद किया तब सुरतके लोगोंन राजाको मानपत्र दिया उसका जवाब जो राजाने दिया वह जैन बोधक अंक ११२ दिस० १८९४ में मुद्रित है, जिसका सारांश यह है—

में सन् १८९१में राज्यगद्दीपर बेठा तब ही से मैं ऐसे रिवाजसे विरुद्ध था। मैंने बम्बई, सूरत बड़ौदा आदिके विद्वानोंसे ७५ मत शास्त्रीय प्रमाण सहित इस हिंसाके विरुद्ध मंगाए तबसे मैं बंद करना चाहता था सो इस साल बंद करा दिया है तथा आमरण तालुकेमें भी कर दिया गया तथा मेरे राज्यमें चैत्र सुदी १५ के दिन मनुष्यको बड़ी निर्दयतासे मारते थे व मनुष्यके कपालपर तलवारका जरूप करते थे सो सब बंद कर। दिया है आदि । "

इसके बाद नगरसेठ गुलाबदासने महाराणा साहब व कुंवरको हार पहराया ।

रूक्मणीबाईको विवाह लानेके बाद ही वह गर्भवर्ता हुई और ९ माम बाद एक कन्याको जन्म दिया। सेंड पानाचंदको यह पहली संतति थी जो सेंड पानाचंदको पुत्रीका लाभ । शाप्त हुई सेट । पानाचंदने सामान्य रूपसे उत्सव किया। माता कन्याको पालने लगी। पालीताना राज्यमें जिन नये मंदिरको बंड परिश्रमसे सेठ माणिकचंद और नवलचंदन तय्यार कराया पार्लीताना मंदिरकी था उसकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त माच शुक्र ५ सं० १९५१ नियत था। जिसके छिये मतिप्रा । २ मास पहलेसे खास तयारियां करानेके लिये सेठ माणिकचंदजीने मुनीम धर्मचंदको ताकीद की थी। नई धर्मशालाके ज़मीनमें दो दो सौकी लागतके १० कोठे बनवाए तथा जो २००) दे उसीका नाम लिखा नाय ऐसा प्रस्तान किया। उहरनंके लिये श्वेताम्बरी धर्मशालाएं भी ली गईं। भावनगर व वीवाके भाई एक मास पहलेसे यहां रहकर सब प्रबन्ध करने लगे। प्रतिष्ठाकार शोलापुरके सेठ हरीभाई देवकरण और रावजी कस्तुरचंदजीने १ मास पहलेसे अपनी ओरसे

भाजनचाला खोल दी थी कि किसी नैनी भाईको भोजनपानका कष्ट न हो । बम्बईसे तीनों भाई सर्व कुटुम्ब सहित पालीताना कई दिन पहलेसे आ गए थे। शोलापुरके बहुत महाशय तथा गुजरात देशके व कुछ उत्तर हिन्दुम्थानके यात्री करीन ५०००के जैनीभाई एकत्र हो गए थे। भट्टारक कनककीर्ति प्रतिष्ठाकारक थे। श्री शांतिनाथ स्वामीके धातु व पाषाणके मनोहर बडे २ बिम्ब निर्माण कराए गए थे। मंदिर भी बहुत ही रमणीक स्वर्गपुरी-के मंदिरके समान तय्यार हुआ था। रंगावंजी व पत्थर व चांदी-का काम था। जो यात्री पालीताना गए हैं उनको उस मंदिरकी शोभा याद होगी। इस समय सूरतकी गादीके भट्टारक श्री गुणचंद्रजीको निमंत्रण नहीं किया गया था तोभी आप आगण थे । दोनों भट्टारक अपने २ मान पुष्ट करने व पैसा एकत्र करने-की ही धुनमें थे उपदेश व धर्मचर्चाका ख्याल न था। दोनों में बात बातपर तकरार होती थी। ज्ञान कल्याणकका दिन माव सुदी ४ रात्रिको ७ बजे था परन्तु श्री गुणचंद्रनी भट्टाग्कन बड़ा ही विघ्न किया और कहा कि मेर् आम्नायवालोंने जितनी प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई हैं उनको सूरमंत्र हमदंगे तथा हमें कितना रुपया दोगे ? जबतक यह पक्का न होगा कल्याणक न होने देंगे । सुरमंत्र देनेके समयमें परस्पर मतभेद होनंसे रात्रिकं १२ बन गए तब कल्याणक हुए। यहां तब भाट लोगोंने झगड़ा किया कि प्रतिमाके आभूषण हमको मिलने चाहिये पर पुलिस व राज्यका उत्तम प्रबन्ध होनेके कारण कोई फिसाद न होकर सर्व शांति रही और सानन्द प्रतिमा मात्र सुदी ५ को बिराजमान करदी गई। प्रतिष्ठा-

कारकोंने २२००) यहांके ठाकुर साहबको नजरानाके दिये। प्रतिष्ठाकारकोंने अपने प्रणके अनुसार क० ११०००) श्रीजिन-मंदिरजीके मंडारमें भी दिया और सर्व खर्चा। उठाया सेठ पाना-चन्द माणिकचन्द और नवलचन्दजीने भी क० २१००) मंडारमें दिये। तीनों भाइयोंने इस प्रतिष्ठाको निर्विघ्न पूरी करनेमें पूर्ण परिश्रम उठाया।

मंदिर प्रतिष्ठाके बाद संठ माणिकचंदको चिंता हुई कि धर्मशालाका काम पूरा होना चाहिये। उसक
पार्लाताना धर्मशा- लिये आपने अनुमान पत्र १२०००) ह०
लाका प्रवन्धं। का बांधा जिसमें २५००) का एक बंगला
तथा कुछ कमरे ४००) ह० व कुछ २००)
ह० वाले बनने तजवीज किये। यात्रामें आए हुए लोगोंसे बहुत
कुछ भरवाए, ४००) आपने दिये और १२०००) का प्रवन्ध
कराके काम जारी करनेकी सूचना मुनीम धर्मचंदको की। जो
१००००) का कर्ज़ सेठोंन मंदिर निर्माणके लिये दिया था
सो इस प्रतिष्ठाकी आमदसे वसूल हो गया।

सेट प्रेमचंद्की माता अपनी वैधव्य अवस्थामें ब्रत उपनाम करनेमें बहुत ही दृश थीं। हर समय धर्म-रूपावाईकी १२३४ ध्यानमें अपना काल निताना यही इसे इष्ट उपनासकी तपस्या। था। सं० १९९१ में नाईने १२३४ बारहसी चौतीस उपनासके कर-

नेका नियम धारण किया।

## १२३४ वतोंका हिसाब इस मांति है:—

अहिंसा महाव्रतके भेट १४ सत्य महाव्रतके भेट ८ अचीर्य व्रतके ,, २० परिग्रहत्याग महाव्रतके ,, २४ रात्रिभोजन त्यागव्रतके ,, १ मनवचनकाय गुप्ति ३ ईर्या समिति ,, १ भाषा समिति ,, १० एषणा समिति ,, ४६ आदान निक्षेपण स० १ प्रतिष्ठापना समिति १

230

१३७ को मन वचन कायसे गुणे ४११ हुए, कृत कारित अनुमोदनामें गुणे १२३३ हुए इसमें अनिच्छा रात्रिभोजनत्याग भेदः १

> कुछ १२३४ हुए। (जनबोधक मार्च-अप्रेल १८९२)

इस तरह १२३४ उपवास पूर्ण करनेपर यह बत पूर्ण होता है। इन उपवासोंको जब पूर्ण कर हे तब उद्यापन करे।

एक वर्षमें जितने कर सके करे। लगातार करनेका अभिप्राय नहीं है। सो रूपाबाईने इस कठिन प्रतिज्ञाको धारण किया।

सेठ माणिकचंद्जी गृहस्थके वर्तोंके पालनमें भी बड़े साव-धान थे। अन्यायका धन लेना, असत्य सेठ माणिकचंद्का बोलना, कुशील आचरणसे इनको पूर्ण परिग्रहममाण वत । घृणा थी। जब यह पालीत।नाकी प्रतिष्ठामें गए तब इनको परिग्रहका प्रमाण नहीं था। प्रतिष्ठा होनेके बाद रात्रिको एकान्तमें सेठजी और धर्मचंद्जी अपने २

दुखसुख, धर्म कर्मकी वार्तालाप मित्रके समान कर रहे थे। तब धर्मचंदजीने कहा कि आपके पूर्वकृत पुष्यके उदयसे लक्ष्मीका लाभ हुआ है, पर लक्ष्मी तृष्णाको बढ़ानेवाली है। इसकी तृष्णाने बहुतोंको नरकादि नीच गतिमें पहुंचाया है। यह जितनी आती है उतनो ही अधिक होनेकी बांछा पैटा करती है। किसीको आयुका भरोमा नहीं है। इससे इस तृष्णाको स्वाधीन रखनका उपाय **परिग्रहप्रमाणवत** है सो आपको है या नहीं? मेटजीन जब 'न' कहीं तब वर्षचंदजीन फिर कहा कि आप प्रमाण क्यों नहीं कर लेते कि इननी लक्ष्मी मेरे भागमें जब हो जावेगी तब में नवीन उपार्जन छोड़ दूंगा। आप प्रमाण चाहे जितनेका करें पर प्रमाण होना आवस्पकीय है। सेटजी भी इस बातको अच्छी तरह समझते थे पर धनसंग्रहका लोभ नहीं मिटा था। इससे नियम नहीं हे सके थे। इन्होंने कहा—भाई धर्मचंद, जब मैं वम्बई पहुँचूं तत्र तुम मुझे पत्र लिखना पर यह तो बताओ क्या तुम्हारे नियम है ? धर्मचंदने कहा कि मुझे अभी तक प्रमाण नहीं है पर आगामीके लिये करनेका विचार हैं। मैं शीघ ही प्रमाण करके उसकी नकल आपको भेजूंगा ।

सेठ माणिकचंद बम्बई पहुंचे ही थे कि भाई धर्मचंद्नीका पत्र पहुंचा जिसमें परिप्रहप्रमाणकी सर्व विगत लिखी गई थी उस ममय सेठजीकी दूकानपर सेठ रामचंद नाथारंगजी भी मौजूद थे इन्होंने भी इस पत्रको पड़ा और धर्मचंद्की बहुत प्रशंसा की। सेठजीने वह पत्र अपनी जेबमें रख लिया। रात्रिको चौपाटी जाकर सेठजीने ज्यालु करके समुद्र तटपर धूमकर अपना पक्का विचार कर लिया कि

आन रात्रिको हम भी परिग्रहका प्रमाण कर हैवेंगे। आयु कायका कोई भरोसा नहीं है। लक्ष्मीकी तृष्णा तो जन्म भर नहीं छूट सक्ती। रात्रिको आरतीके पीछे श्री चंद्रप्रमु भगवानकी स्तुति व विनय कर सेटनी चैत्यालयमें बेठे और अभनी नोट बुक्रमें परिग्रहकी संख्या लिख ली। तथा यह प्रणकर लिया कि अमुक धन मेरे भागका दूकानमें हो जायगा तब में अपना सम्बन्ध छोड़कर धर्म व जातिकी सेवामें लीन हूंगा और जवाहरातके कामसे पेन्द्रान ले लूंगा। सेटनी बहुत विचारशील थे। प्रमाण इतनी रकमका किया कि जो न तो बहुत कम था और न बहुत असम्भव था। परिग्रह प्रमाण करके अपनी इच्छाकी मीमा बांधकर सेटनीन गृहस्थ श्रावकका एक स्तुत्य कृत्य पूर्ण किया।

बीरचंद रायवजी गांधी बी. ए. चिकागोकी धर्म मनामं शामिल होकर फिर अमेरिका इंग्लेंड, फ्रान्स और जर्मनीमें फिर ता. ८ जुन १९९६ अमेरिकासे लोटना। बम्बई आए। उनको जहाज परसे लेनको दो तीन सौ प्रतिष्ठित प्रस्व जैसे संठ तलकचंद माणिकचंद, संट वीरचंद दीपचंद, गोकुलभाई मूलचंद आदि गए थे। उनमें हमांग्रिसिद्ध सेठ माणिकचंद भी थे। बड़े सतकारसे अंग्रेजी बाजेके माथ फ्लोंके हार पहराते हुए ६०, ७० गाडी सहित मारकेटसे जौहरी बाजार होते हुए उनके मकान भायखलेपर उन्हे पहुंचाया। अमेरिकामें क्या किया इस बातके जाननेकी लोगोंको अति उत्कंठा श्री। वीरचंदजीका एक व्याख्यान भायखलेपर सेठ प्रेमचंद रायचंदके बंगलेमें हुआ वहां अति भीड थी। दूसरा लाल्काग व तीसरा

मांगरोल सभामें हुआ। हमारे सेटजी सबमें गए थे। वीरचंद राववजीने कहा कि चिकागोमें उन्होंने सम्यग्दर्शन, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त, इश्वर मृष्टि कर्ता नहीं ऐसे बहुतसे व्याख्यान व वोष्टन शहरमें दो मास ठहर कर ८० व्याख्यान दिये । आपने वहा कि हालमें अमे-रिकावालोंका विश्वास किश्चियन धर्मपर नहीं है। वे जो बात गुक्ति व प्रमाणसे सिद्ध होती है उसको ग्रहण करते हैं। यदि जैनी अपने धर्मके उपदेशका कम जारी रांवे तो हजारों आदमियोंका जैनी होना मंभव है। आपने वहां गांधी फिलाज़ाफिकल सोसा-यटी कायम की है। उपदेशके फलमें कईयोंने मांसाहार त्यागा। कई एकान्तमं ध्यान करने लगे। वर्ड णमोकार मंत्र जपने लगे। इन्होंने म्बानपीनेमें अपने धर्मको बिलकुल हानि नहीं पहुंचाई । आग-बोटमें १००) ज्यादा करके अलग चूल्हा रक्ला गया था। इ-न्होंने आगबोटके क्याग्रेन और इंग्लैंड अमेरिकाके विक्वासपात्र आदमियोंके सार्टीफिक्ट भी दिग्वलाए कि खानपानमें अशुद्धता नहीं की । तौभी बम्बईके मोहनलाल महाराज खे॰ यतिने तकरार की कि इनका प्रायश्वित होना नाहिये । महाराज आत्मारामजी इसकी आवस्यक्ता नहीं मानते थे। तौ भी तकरार मिटानेके लिये उनको आज्ञा की कि वे श्रीजिनेन्द्रदेवका अभिषेक व पूँजा करें, एक नौकार मंत्रकी माला नर्षे व योगशास्त्रके एक अध्यायका पाट करें, इतना प्रायिश्वल दिया । वीरचंदनी २२ मास इस. यात्रामं रहे थे।

संवत १९५२ में सेट माणिकचंदनीने हीराचंद नेमचंदनीसे पूछा कि आपके जैन बोधकसे माछूम हुआ धवलजयधवलके कि रायबहादुर सेट मूलचंदनी अजमें उद्धारकेलिये चंदा। रके प्रयत्नसे श्री धवलादि ग्रांथोंकी नकल होनी शुरू होगई है तथा ३००१ होन पहले

लिखे भी गए थे सो क्या वह काम जारी है या बन्द हो गया। तब सेठ हीराचंदने उहा कि वह काम यों बन्द होगया है कि सेठनी उस प्रतिको अजमेरके लियं चाहते थे मोः वहांवालोंन इनकार किया इससे वह काम योंही रह गया। तब सेठ माणिक चंदने कहा कि यदि वे ग्रंथ सड़ जांयगे तो फिर कहांसे आ-एंगे ? दूसरे आप कहते थे कि वे जिस हिपिमें हैं उसे सिवाय ब्रह्मसूरि शास्त्रीके दूसरा कोई जानता नहीं है तथा शास्त्रीजीकी उम्र ५५ वर्षकी है। यदि यह कालवरा होगए तो नकल भी न हो मकेगी । इससे यदि वहांवाल दूसरे स्थानपर प्रन्थ देना नहीं चाहते तो अभी यही प्रयन्ध कीजिये कि उसकी वहां दो नकलें हो जांय एक कनड़ी लिपिमें व एक बालबोध हिन्दी लिपिमें, इतना काम बहुत शीघ्र होना चाहिये। तब सेठ हीराचंदन कहा कि इसके छिये तो वे छोग अवस्य कबूल कर लेंगे पर हमें ब्रह्म-सूरि शास्त्रीके साथ दो प्रवीण लेखक और रखने पहुँगे जो कनड़ी व बालबोधमें लिख सकें। इस सबके लिये कमसेकम १००००) का प्रबन्ध होना चाहिये सो कैसे हो, तब सेठ माणिकचंदने कहा कि १००) सौ सौ रुपयेके १०० मागकंत लिये जावें पहले दस दस रुपये करके १०००)तहसील कर काम शुरू किया जावें। जब काम

चलने लगे तब फिर २५) पचीस २ वसूल किये जावें। इस तरह काम पूरा किया जावे । हीराचंदजीके दिलमें यह बात जम गई. उसी समय ब्रह्मसूरि शास्त्रीको यह मब हैकीकत हिस्ती। वहाँसे उत्तर आया कि इसमें कोई हर्न नहीं है। मूड़बिद्रीवाले ख़ुशीसे स्वीकार करेंगे तथा मैं पूर्ण परिश्रम करके प्रति लिपिका प्रबन्ध कर दूंगा । फिर सेठ हीराचंदजीने जन बोधक अंक १२९ मास मई १८९६ में यह बात प्रकाशित की और सौ सहायक मांग । इस अपीलको देखते ही सेठ माणिकचंद पानाचंदनीने १०१) का एक भाग लेना स्वीकार किया। उन्हींका अनुकरण धरमचंद अमर-वंद, शोभागवेद मेघराज, माणिकवंद लाभवंद, सेठ जवारमल मूलचंद, गुरुम्खराय सुखानंद आदि १६ वस्बईके व गांधी हरीभाई देवकरण आदि १९ शोलापुरके व अन्य फलटन, दहीगांव, इंडी आलंद व सेठ हरमुखराय फूलचंद आदि ११ कलकत्ताके एव मिलाकर अक्टूबर १८९६ तक सब १४२२९) की स्वीकारना हो गई। लाला रूपचंद महारनपुरने **जैन गजट** पत्रमें मालम कर १००) की महायताका पत्र जुलाई मासमें पंडित गोपालदास-नीको बम्बंई भेजा । सेट हीराचंद्जीने नवानी पक्की बात करनेके लिये ब्रह्मसूरि शास्त्रीको शोलापुर बुलाया। वे मार्गसिर सुदी ४ को आए तब सेठ माणिकचंदजीको बुलानेके लिये तार दिया। तार पाते ही सेठ माणिकचंद गांधी रामचंद नाथाके साथ सुदी ६ को शोलापुर पहुंचे। शोलापुरकी मंडलीके सामने बहासूरि शास्त्री को १२५) मासिक व आने जानेका खर्च देनेका ठहराव हुआ तथा शास्त्रीजीने पौष मासमें मूरुनिद्री जाकर प्रति लिखने कबूल किया। इनके पास गजपित उपाध्याय भी लिखने के लिये नियत किये गए। दोनों महारायोंने मूलिक्दी जाकर मिती फागुण सुदी ७ बुधवारको पुस्तकों के लिखने का काम शुरू कर दिया। फिर शाके १८२७ चैत्र सुद १० को ब्रह्मसूरि शास्त्री का पत्र शोलापुरवालों के नाम आया कि जयधवलके १५ पत्रे अर्थात् १५०० स्त्रोक लिखे गए। इतने में मंगलाचरण, मार्गणास्थल और गुणस्थानकी चर्चाका निह्नपण है। पुष्पदंत आचार्यने प्राकृत भाषामें सूत्र बनाए उसके उपर गुणधर महाराजने लिल्नपद न्यायसे संस्कृत और प्राकृतमें टीका बनाई है।

मेट माणिकचंद हीराचंद ऐसे धर्मात्मा पुरुषोंके उद्योगसं रूपया भी एकत्र हो गया तथा कई वर्ष तक ब्रह्मसूरि शास्त्री जीत रहे पर वे प्रंथोंकी लिपिको पूर्ण किये विना ही कालके वशा हो स्वर्ग पथारे। तबसे गजपति उपाध्यायने धवल व जयधवलकी दोनों प्रति लिखकर पूर्ण कर ली है। तथा इस वर्ष तीसरे महाधवल प्रंथकी प्रति करानंका काम सेट हीराचंदनी मूलिबदी नाकर प्रारंभ करा आए हैं। तथा इस वातकी कोशिश चल रही है कि इन प्रंथोंकी कई प्रतियां होकर भिन्न २ स्थानोंमें रहें जिससे पठनपाठन हुआ कर व एक स्थलमें विघ्न आनेपर भी प्रतियोंकी अनुपलब्धि न हो पर मूलिबद्रीके पद्याचार्य और भाई अभी तक वृथा ममत्व करके ऐसा करनपर राजी नहीं हुए हैं।

श्री धवल ग्रंथके जीर्ण ताड़पत्रके पत्रे ५९२ है सो कनड़ी प्रति जो अब हुई इसके २८०० व बालबोध लिपिके १३२३ पंत्रे हुए है। इसमें ७३००० श्लोक हैं।





स्याद्वादवारिधिः, न्यायवाचस्पति वादिगनकेसरी स्वर्गीय पंडित गोपालदासनी बरैया.

इसका मंगलाचरणका प्रथम क्षोक यह है— गाथा—सिद्धमणंत भणिदिय मणुवममप्युत्य सोक्खमणवर्ष्क । केवल यहोह णिज्जियदुण्णय तिमिरं जिणं णमह ॥

भावार्थ स्वकार्य सिद्ध करने वाले, अतीन्द्रिय अनुपम व स्तुत्य सुखको प्राप्त करनेवाले तथा केवलज्ञानरूपी सूर्यसे मिथ्यानमके अधकारको हरनेवाले जिनन्द्रको नमस्कार हो।

श्रीजयधवल प्रन्थके कनड़ी जीर्णपत्रे ५१८ हैं उसकी कनड़ी कापी जो अब हुई उसमें २१०० व हिन्दी कापीमें ७५० पत्रे हैं इसके क्ष्रोक ६०००० हैं। इसके प्रारम्भमें १ क्ष्रोक मंगला-चरणका यह हैं—

गाथा—तिस्थयणच उवीस विकेवल णाणेण दिह सब्बहा।
पसियंतु सियसरोबा तिहुवण सिर सेहरा मज्ज्ञं॥

भावार्थ — केवलज्ञानसे मर्व पदार्थिको देखनेवाले, मुक्ति पानेवाले व तीन भवनकं शिरोमणि ऐसे २४ तीर्थकर मेरेपर प्रमन्न होडु ।

रुमणीवाईकं साथ लग्न होतं ही ९ मास बाद सेठ पाना-चंदको सबसे प्रथम जिस पुत्रीरत्नका भी सेट पानाचंदजीको लाभ हुआ था वह कुछ मास जी कर दि० पुत्रीका लाभ । संसारसे चलबसी थी। अब सं. १९५२में फिर सेठ पानाचंदको एक पुत्रीका लाभ हुआ। इसका शरीर शुरूसे ही दृढ़, सौम्य व गठीला था। यथायोग्य जन्मोत्सव करके इसका नाम लीलावती रक्खा गया। माताने इसके शरीर रक्षणमें खूब प्रयत्न किया। मगनबाईजीका विवाह सूरतमें जिस कुम्टुबमें हुआ था वे यद्यपि प्रतिष्ठित और धनादृ च थे पर एक मगनबाईजीको बहुत साधारण बुद्धि और संकुचित हृद्यके पुत्रीका जन्म। थे। सास व पित दोनों यही चाह्न थे कि यह रात्रि दिन घरका काम कान किया

करे, सीना परोना करे, अनाज फटके दले । मगनवाईजीको पुम्तक बांचने व कुछ धर्म ग्रंथ देखनेका शौक था परन्तु सास व पतिके भयसे इनका धर्म व अन्य पुस्तकोंका देखना, ल्यिना, बिलकुल बन्द् हो गया था केवल प्रतिदिन चंद्रप्रमु स्वामीक मंदिरके दर्शन करना व जाप देना इतनी ही धर्म क्रिया होती थी। यह मंदिर उनके घरके निकट ही है। यदि कदाचित् भूलमं मभी कोई पुस्तक हाथमें लेती व सास समुर देख लेते तो ही कोधित होते थे । साधारण संसारिक प्राणीकी तरह रहते हुए इस कन्याका चित्त भीतरसे प्रफुल्लित नहीं रहता था। जो अपने पिताकी सुहवतमें बैठती, उनकी बात सुनती, अनेक समाचार व पुस्तकें वांचती व धर्म ग्रंथकी भी स्वाध्याय करती उसका मन केवल घरके वन्धोंमें केसे टीक रह सक्ता था ? इससे मगनबाई नी थोड़े दिन यहाँ रहकर पिता द्वारा बम्बई बुला ली जाती थी। वहां चित्त प्रसन्न रहता पर पतिसे इसको प्रेम, यह पतिमें अनुरक्त व उसकी भक्त सो बम्बई ज्यादा न ठहरकर सूरत चली आती। खेमचंद और मगनवाईको सं० १९५२में एक प्रत्रीका लाभ हुआ। खमचं-टकी माता व पिताको पौत्रीके लाभसे बहुत हर्ष हुआ । मगनबाई-नी चंद्रमुखी समान धुन्दर पुत्रीको प्राप्त कर प्रेमसे पालने लगीं और अब अधिक सुर्तमें ही रहने लगीं। चीरे २ धार्मिक रुचि चट गई, संसारिक रुचि बढ़ गई। पुस्तक देखनेकी भी याद न रही सो कायदंकी बात है। जिस विषयका संस्कार अधिक रहता है वही पक्का हो जाता है और वह पिछले असरको घो डालता है।

ताः १७ मई सन् १८९६को जैन युनियन क्रम बम्बईमें पंडित गोपालदासजीका "अष्टकर्मण पर पंठ गोपालदामका न्या- न्यान्त्यान हुआ। इसमें सेठ माणिकचंद- ग्यान व बीरचंद जी आदि दिगम्बरी, वीरचंद राध्वजी, गायवजीका फनेहचंद कपूरचंद लालन, हीरजीभाई परिचय। जादि द्वेताम्बरी माई मौजूद थे। न्या- ख्यान बहुत ही युक्ति पूर्ण और विद्रता-

पूर्ण हुआ। वीरचंद राध्वजी व हीरजीने व्याख्यानकी प्रशंसामं धन्यवाद प्रगट किया। सभाके पीछे राध्वजी और पं० गोपालदासका परस्पर वार्तालाप होनेसे दोनों विद्वानोंको बहुत आनन्द हुआ।

दंताम्बर जैनसमाजने वीरचंद राघवजीके कार्यको इस कदर सराहनादी कि उनके चितमें फिर वीरचंदजीका पुनः अमेरिका जानेका विचार हुआ और सन् विदेश गमन। १८९६में ही अपने स्त्री बच्चों सहित पं० फतेहचंद कप्रचंद लालनके साथ अमेरिका रवाना हो गए। खेद तो इस बातका है कि ऐसा फल देखकर भी किसी दिगम्बर जैन विद्वानको भेजनेका प्रकथ दिगम्बर जैन समाजने नहीं किया और न कोई दिगम्बर जैन सेक्कार ही तय्यार मिला कि वह जावे। हरएक काम साहम और पूर्ण प्रय-त्नसे होते हैं। जहां प्रमाद है वहां कार्य्यसिद्धि कोसों दूर है। सेठ हीराचंद नेमचंद व सेठ माणिक नंद जैनियों में ऐसे प्रख्यात हो गए थे कि हरएक मुख्य कामके लिये सेठ हीराचंदको पं० लोग इनकी याद करने थे। पं० लालने लालनेका पत्र। चिकागोसे सेठ हीराचंदको ता. ३ फर्वरी १८९७ को एक पत्रद्वारा श्री ज्ञानार्णव और

आप्तमीमांसाकी बचिनका व दूसरे अध्यात्मज्ञानके ग्रंथ मंगवाए और लिखा कि यहां बहुतसे अमेरिकनोंने मांसाहारका त्याग कर दिया है।

सेठ माणिकचंद्जीकं मंत्रित्व और पंट गोपालदामजीके उप मंत्रित्वमें बम्बई सभा बहुत कुछ जैनसमाजकं वम्बई दिए जैंन उद्धारार्थ प्रयत्न करने लगी। पाठकोंने वह परीक्षालय। गुजराती पन्न बांचा ही होगा जो सेठ माणिकचंदने जेठ दूना बदी ९ संवत

१९४१को सेट हीराचंदको लिखा था कि एक मंडल ऐसास्थापित हो जो सम्पूर्ण मुल्कों में जैन धर्मज्ञानको फैलावे, कुरीति मिटवावे आदि। उसी अपने अंतरंग भावकी पूर्ति सेट माणिकचंदजी, पं० गोपालदा-सनी आदिकी सहायतासे धीरे करने लगे। वास्तवमें विचार कक होता है और कार्य्य कब होता है। जहाँ विचार पक्का होता है वहाँ कालान्तरमें यदि कोई अनिवार्य्य विघ्न न आवे तो वह पुरा होता ही है। बम्बई सभामें पारितोषिक खाता पहले ही खोल दिया था। जैन बोधक अंक १२४ मास अकटूबर १८९६ में मारत- वर्षके १७ शहरोंकी पाटशालाओंके १४६ छात्रोंने रत्नकरंड, द्रव्य-संग्रह, प्रमेयरत्नमाला, चंद्रप्रमुकान्य आदिमें परीक्षा दी, १०९ पास हुए और ११७) का इनाम बांटा गया । उस समय बम्बई, जेपुर, खुरई, शोलापुर, हिसार, सिरसावा, अलीगढ़, दिहली, मुरा-दाबाद, कामा, प्रयाग, शिवनी, शेरकोट, वर्धा, अवागढ़, रोहतककी पाटशालाएँ शामिल हुई थी। अधिकसे अधिक विषय पर्ममें तत्वा-धेमुत्र, न्याकरणमें कातंत्र, कान्यमें धर्मशर्माम्युद्य, न्यायमें प्रमेय-रत्नमाला थे। आज भी वही परीक्षालय सेट रावजी मखाराम दोशो शोलापुरके प्रयत्नसे नियमित कासे चल रहा है। यद्यपि पाठशा-लाओंकी संख्या बहुत नहीं बट्टी-२०-२५ ही शामिल होतीं हैं पर पठन विषय बढ़ गया है। अब गोम्मटमार, राजवार्तिक, अष्ट महस्त्री, प्रमेयकमलमार्नट, शाकटायन, जैनेन्द्र, यशिस्त्रक आदिमें छात्र परीक्षा देते हैं।

स्वाध्यायका प्रचार बढानेके लिये सेठ माणिकचंदने चौपाठीपर एक पुस्तकालय खोल दिया था। जितनी जैनधर्मपुस्तक नहां कहीं भी पुस्तकें छपती थीं उनकी प्रचार। बहुतसी प्रतियां मंगा लेते थे और उन्हें चौपाठी द्शीनार्थ आनंबाल भाइयोंको न्योछावर लेकर

व बहुतोंको योंही देते थे। पाठशालाओं में अर्थ मूल्यपर व कहीं भेट भी भेजते थे। सबेरेरात्रिको आप अपना कुछ समय व उपयोग इस काममें भी लगाते थे। जैन बोधक अंक १३४ माह अक्टूबर सन् १८९६ में आपने नोटिन भी छपवा दिया था कि तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीका हमारे यहाँसे मंगाई जावे। जैन बोधक सन् १८८९ से निकला है परंतु उसमें नैन स्त्री शिक्षा सम्बन्धी लेख अंक १३५-१३६ नव एक जैन भगिनीका म्बर- दिसम्बर १८९६ के पहले नहीं देख-लेख। नेमें आया। इस अंकमें एक बड़ा जोशदार लेख आदिराज देन्वेद्र उपाध्यायने मुद्रित

कराया था। इसको पढ़कर एक गुमनामजैन भगिनीने अंक १३८ फ्रेब्रुआरी १८९७ में एक मराठी लेख प्रगट करके बहुत हृद्यविदारक दशा स्त्रीशिक्षांके अभावकी बतलाई है कि लोग एसा कहते हैं कि दूसरेके घर जानेवाली कन्याकी इतनी कौन पर-वाह करे ? यदि कोई पति अपनी अर्द्धांगिनीको सिग्वाने लगता है तो चारों तरफ उसकी निंदा होती है । पूर्वके समान आर्थिका आदिका सम्बन्ध भी नहीं मिलता। इस जैन बहननं प्रार्थना की है कि अपनी कन्या व बहनोंको पढ़ाना चाहिये। उनके छिये छात्रवृत्ति व इनाम नियत करना चाहिये। यह जैन भगिनी कौन है ? कैसी आवश्यक्ता इसनं स्त्री शिक्षाकी बताई है ? ऐमा विचार इस छेखको पहते ही सेठ माणिकचंदजीका हुआ और अबतक आपको स्त्री शिक्षाका बहुत तुच्छ रूबाल था पर इस लेखन आपको इधर भी आकर्षित कर दिया और यह स्त्री शिक्षाकी भी भावना करने छगे। जैन बोधक जुन १८९७में यह पढ़कर कि फल्टरनके शा. मोतीचंद मलुकचंद कालु-सकरने कोल्हाप्टरकी एक जैन कृष्णाबाईको ५) मासिककी छात्रवृत्ति देना स्वीकार की है व कोल्हापुरकी ४ विद्यार्थिनी रतन--करंड श्रावकाचारका अभ्यास करती हैं, सेठ मणिकचंदको बड़ी ही खुशी हुई और यह सोचने हमें कि यह सब उस जैन भगि-नीके लेखका असर है।

सेठ माणिक्रचंजीने जैन बोधक अगष्ट १८९७में यह पहकर कि एक नर्मन स्ट्रयावर्गकी यूनिवर्सिटीके जर्मनीके अफसरका संस्कृत प्रोफेसर अर्नस्ट छेनमानने एक पत्र ब्रह्मसुरि शास्त्रीसे भेगा हैं उसमें छिखा है कि ब्रह्मसुरि शास्त्रीसे सम्बन्ध। कुछ ग्रंथ मिले पर मुझे भगवती आराधनासार और आराधना कथाकोप चाहिये तथा पत्रक

उत्प यह गाथा लिखी थी-

जिण पवयणं पिछद्धं जम्बू दीविम्म चेव सव्वीम्म।
कित्ति जस व अचिरा पावेष्जड सयल प्रदवीए॥
अर्थ-जैसे भारतमें जिन प्रवचनकी सिसिद्धि है ऐसी इसकी
कीर्ति सर्व लोकमें फैले।

यह वाक्य पढ़कर सेठजीको आश्चर्य हुआ। ब्रह्मसूरि शास्त्रींने जर्मनवालोंको प्रंथ दिये तथा इस गायाके अर्थन अपने सेठजीको उत्साहित किया कि अपने जैन प्रंथोंका प्रचार यदि यूरुपमें हो तो बड़ा लाम हो। सं० १९५३में सेठ नवलचंदजीने अपने भाइयोंसे गय करके स्वतः श्री सम्मेद्शिखरजीकी यात्रा करनेका सेठ नवलचंदजीकी निश्चय किया—स्व कुटुम्ब सहित यात्रा-सम्मेद शिखरकी या- को पधारे अपने भानजे चुजीलाल झंबरचंद- जा और सीढ़ीका को भी कुटुम्ब सहित साथमें लिया। यह काम। सम्मेदाचल पर्वत हजारीबाग (बिहार प्रान्त)-में जैनियोंका महा पवित्र तीर्थ है। खास कर दिगम्बर जैन समाजको यह इसीसे विशेष मान्य है कि इस भरतक्षेत्रमें २४ तीर्थकर जो हरएक दु:लमा सुखमा कालमें होते

हैं वे सब यहींसे मोक्ष जाया करते हैं—अनन्ते २४ तीर्थकर हो गए व आगामी होंगे। उनकी व अनन्त मुनीश्वरोंकी मोक्ष इस पर्वतसे हुई है इस कारण यह मर्व पर्वत पृज्यनीय है। इसकी दि किनियोंमें बड़ी भारी मिहमा है। इस वर्तमान दु:खमा सुम्वमा कालमें हुंडावसर्पिणी कालके निभित्त २४ मेंसे श्रीक्रपमदेव कैलाश, श्रीवासपृज्य मंदारिगरी, श्री नंपनाथ गिरनार व श्री महावीर म्वामी पावापुरसे मोक्ष पथारे तो भी इनकी कूट श्री शिष्वरनी पर नियत है। जो भाव सहित दर्शन करते हैं उनको दुर्गति नहीं श्राम होती। सर्व पहुंचे। मबसे पुरानी कोठी जो उपरैली है जिसको बीस पंथी भी कहते हैं उसमें ठहरे।

सेठ नग्छनंद्रजी भी सेट माणिकचंद्रजीकी तरह प्रकथ कार्य करने व कर रानेमें कुराछ थे। आप स्नानकर थोई हुई सफेद धोती और चद्रा ओहकर अप्ट द्रव्य लेकर व कल्स झारी रकाबी छन्ना आदि लेकर सर्व माथियों के साथ श्री शिखरजीकी यात्राको चले। सीतानालेमें जाकर सामियीको घोकर तय्यार हुए, और कल्समें प्रछालके लिये जल भरा। मीतानालेसे श्री कुंधुनाथकी टोंकको आते हुए पहाड़का चढ़ाव कुछ विकट मालूम हुआ। देखा कि जो वृद्ध स्त्री व पुरुष हैं व बालक हैं उनको इस चढ़ाईके चढ़नेमें बहुत कप्ट हो रहा है। पर मक्तिवश सब जा रहे हैं। सेठ नवलचंदजी भी चढ़ तो गए पर इनके मनमें यह विचार आया कि यदि यहां सीढ़ियां वन जावें तो सबको बहुत सुमीता होवे। आपने सर्व कुटोंपर चरण पादुकाओंकी प्रछाल करते हुए अप्ट द्रव्य चढ़ाते हुए, प्रदिक्षणा देते हुये बड़े भावसे नमस्कारपूर्वक मिक्त की। बीचमें जलमंदिरजी आता है उसमें तीन स्थानों पर प्रति-

बिम्ब थे, बीचमें खेतांबरी तथा दो बगलके कोठोंमें दिगम्बरी प्रतिमाओंकी बड़े भावसे प्रछाल पूजन की। शाम पडते २ यात्रा करके नीचे आए। महान आनंद्र माना।

रात्रिको चन्नीलालजीने भी आवश्यक समझा तब वहां एक मभा बुलाकर ४००० सीढ़ियोंके बनवानका मीढ़ी वनवानेमें निश्चय करके यात्रियोंसे चन्दा किया उसमें सबसे पहले १००१) अपनी तरफसे दिये। 2002) कुल चन्दा ६०१४) का किया गया और उपरेली कोठीके मुनीम बाबू हरलालजीको सीढी बनवानेका काम मपुर्द किया गया।

सेठ नवलचन्द्र सुकुशल अन्य यात्राओंको करके सर्व संवसहित बम्बई छोट आए ।

मुनीम धर्मचंद्ञीने बहुत परिश्रम करके संवत १९५४ तक पाछीतानाकी धर्मशाला नकरो व विचारके पार्लातानाकी दि०जैन अनुसार पुरी करवा दी। इसमें १२०००) का धर्मज्ञालाकी पूर्ति । प्रबन्य सेठ माणिकचन्द्रजीने किया था पर खर्च रु० १९०००) हुए। ७०००) का कर्ज सेंडजीने अपनी दुकानसं दिया । किसी तरह कामको पुरा कराया नयों कि इनके दिलमें यह चिंता थी कि यात्रियों को कोई कष्ट न हो। यह रूपया धीरे २ आमदनी आनेपर अदल कर दिया गया। तीर्थ व धर्म प्रेम इसीका नाम है कि नव काम पड़े तब उसकी जिस तरह बने निकाल लेना चाहिये।

सेठ पानाचन्दकी पत्नी रूक्मणीबाईकी पुत्री छीछावती अब २॥ वर्षके करीब हो गई थी तब फिर एक पुत्री-सेठ पानाचन्दको का जन्म हुआ। यद्यपि सेठ पानाचन्दकी और पुत्रीका छाभ। यह भावना थी कि पुत्रका द्दीन हो तो शुभ है क्योंकि "सेठ माणिकचन्द पानाचन्द" जब फर्मका नाम था तब जो व्यापारी व मित्रवर्ग इनसं मिलते व इनसे व दूसरोंसे इनकं पुत्रोंके सम्बन्धमें प्रश्न करते उसे उत्तर देते वक्त एक प्रकारका संकोच भाव चित्तमें आजाता था, परंतु इस सम्बन्धमें मनुष्यका पौरुष सफल होना उसके बिलकुल आधीन नहीं है। इस पुत्रीका नाम सेठनीन रत्नमती रक्ता और जन्मके समय यथायोग्य पुता पाठ व उत्सव कराया। रुक्मणी-बाइं इस पुत्रीको भी बहुत भावसे व लाड़ प्यारसे पाछने लगी।

जैसा पहले कहा गया है संवत् १९५२ में मगनबाईजीके एक पुत्रीका जन्म हुआ था। तबसे यह अमगनबाईजीको और धिकतर सुरत रहती थी और गृहस्थीमं खूब
पुत्रीका लाभ रचपच रही थी इष्ट वियोगका निमित्त होनेवाला था इससे वह पुत्री जिसे मगनबाईजी
गोट्में रखकर और उसका प्रसन्न मुख देख देखकर मनमें हिंपित

गादमें रखकर और उसका प्रसन्न मुख देख देखकर मनमें हिंदित होती थी—जैसे कोई पक्षी किसी फूलपर आसक्त हो उसको बारबार स्पर्श करें तैसे यह उसके मोहमें छवछीन थी। पर वह जीव बहुत अल्प आयुकर्मको बांधकर आया था। करीब १ वर्षके ही जी कर उस प्रजीने मगनमतीकी गोदको खाछी कर दिया। जैसे किसीके पास १ हजारकी थेछी हो और उसे कोई छुटछे तब उ-

सको जो दुःख होता है उससे असंख्य गुणा दुःख इस समय मगनबाईजीको हुआ । इसको खानापीना न रुचने लगा । नीचा मुख किये आंसू वहाया करे। पति खेमचंदको भी शोक हुआ था पर उसके संसारिक मित्र अनेक सो उनके सँग नगरमें रमते हुए थोड़े दिनोंमें शोक भूछ गया । पिता माणिकचंदजीका अपनी पुत्री मग नवाईं पर निज पुत्रसे भी अधिक प्रेम रहता था। पुत्रीके इष्ट वियो-गसे उन्हें भी कष्ट हुआ पर चित्त थाँभकर एक शिक्षापूर्ण पत्र अपनी पुत्रीको ऐसा लिखा कि जिसके पड़ते ही इसका चित्त शांत हुआ और पिछली घामिक बार्ते सुनी सुनाई याट हो आई । सेठ माणि-क चंद्रजी अपनी पुत्रीको महीनेमें दो चार पत्र भेजते ही रहते थे-सदा शिक्षा देते रहते थे व किसी२ बातमें सम्मति भी पूछते रहते थं । मगनबाईनीको दो वर्ष बाद फिर गर्भ रहा । खेमचंदको आशा होने लगी कि अब पुत्रका लाभ होगा, पर अपना विचारा 📆 🕏 होतानहीं। संबत् १९५४ में दूसरी प्रत्रीका जन्म द्वुआ। यह भी सुन्दरशरीर सुडौलअंग व मनहारिणी थी ! इसे देखकर माताको बहुत सुख हुआ।

इसका नाम के दारमती रक्ता गया। मगनवाई नी इस प्रती-को पाकर बहुत ध्यान व यत्नसे इसकी रक्षा करने लगीं। प्रायः छोटे २ बच्चे माताकी असावधानीसे मर जाते हैं। जो माताएं अशुद्ध व अनिष्टकारी भोजन करतीं, रोगी रहतीं, आल्क्स्य करतीं, सभय पर दुग्ध नहीं पिलातीं, गर्मी सर्दी हवाका यथोचित यस्न नहीं करतीं उनकी सन्तानका जीना बहुत कठिन हो जाता है। यह एक रत्नको हाथसे गमा चुकी थी अतएव अब बहुत ही सावधानी-से केशरकी रक्षा करने लगीं।

श्री शिक्निकी यात्रासे छोटनेके बाद प्रसन्नवाईनी घरमें सुखसे रहने छगीं। पुत्र ताराचंद इस समय सेट नवळचंदको ९ वर्षके थे। शालामें पट्ने थे। रतनचंद ९ पुत्रीका लाभ। वर्षका था जो अपने सुन्दर शरीर और हंस-मुखको प्रगट करता हुआं सर्व कुटुम्बको

अपनी रमयितयासे आनिन्दत करता था। अब मिती श्रावण मुदी १६ सं० १९५४ को प्रमन्नबाई जीको एक प्रजीका, लाभ हुआ। यह भी बहुत मुन्दर मुख गुलाबके फूल समान थी। सेटजीन अब भी यथायोग्य जन्मोन्सव किया और इपका नाम माणिकमनी रक्खा। मानान जैसे पहली दो मन्तानोंको यन्नमे पाला—िकसो तरहका एमा निमित्त न आनं दिया जिससे अकाल मृत्यु हो, उसी तरह अब यह इम प्रजीको भी बड़ी ही सावधानीसे पालने लगी।

इम बक्त सं. १९५४ में सेठ प्रेमचंद्र सब तग्हसे ज्यापारमें कुराल, धर्ममें छवलीन य सदाचारसे वर्तन

सेट मेमचंद्रजीकी लग्न । करनेवाले हो गए थे । सेट माणिकचंद्रजी और माता ऋगाबाई इनको बहुत चाहती थी ।

अब यह २० वर्षकं हो गए। माताने बाल अवस्थामें विवाह करनेका बिलकुल भी विचार नहीं किया था क्योंकि रूपाबाई बहुत ही विचारशील थी। भावनगरमें एक सेठ गुलाबचंद अमरचंदजी बागड़िया थे उनकी कन्या चंचलबाई थी जो यद्यपि स्वरूपवान थी पर कुल सुकुमारांगी तथा अशक थी इसीके साथ सगाई हुई। वारात भावनगर बड़ी धूमसे गई। सेठोंने वहां अच्छी रकम खर्च करके बहुत नाम किया। रूपाबाईजीने वहां धर्मकी खूब प्रभावना की इसमें ५०००)से कम खर्च न पड़े होंगे। सेठ प्रेमचंद चंचलबाईको व्याह कर मुखसे रहने हुगे।

संवत १९५५ के प्रारंभमें बम्बईमें प्लेगका ज़ोर था। तब सेट माणिकचंदजी आदि सूरत आए. और शेट.माणिकचंद स्वयं यहां कई मास चंदावाड़ी धर्मशालामें टहरे। अध्यापक। सेटजी नित्य श्रीचंद्रप्रमुक्ते बड़े मंदिरजीमें संवा पूजा करते, जाप देते व बैटते उटते थे। एक दिन इन्होंने विचार किया कि यहां कोई ऐसा साधन अब नहीं है जिससे बालकोंको कोई दर्शन, व भगवानके नाम भी बतावे तथा कुछ बालक यहां सीम्बन योग्य मालूम पड़ते हैं। आपने लोगों-को कहकर बालकोंको २ घंटेके लिये मंदिरजीमें बुलाया और जबतक आप कई मास तक मूरत रहे नियमित रूपसे बालकोंको हररोज राजिको दरीन, स्तुति, णमोकार मंत्र, निर्वाणकाण्ड भाषा, पंच मंगल आदि सिखा कर उनका बहुत ही उपकार किया और उन बालकोंको इनाममें भी वार २ छोटी २ धार्भिक पुस्तकें, रूपाल आदि

सेठ माणिकचंदजीमें और घनाहचोंकी मांति समयका दुरुपयोग करने व आल्ह्म्यमें पड़े रहनेकी आदत नहीं थी। जैसे चीटी हमेशा काम करती नज़र आती है ऐसेही सेठ माणिकचंद सदा ही कोई न कोई काम करते हुए ही देख पड़ते थे। सूरत ऐसे विलासिय नगरमें दूसरे घनाट्य जैसे राग रंगमें लगे थे ऐसी रुचि सेट माणिचंद्जीकी नहीं थी। इसीसे सेठजीके चित्तमें बालकोंपर द्या आई और उनको स्वयं धर्मशिक्षा देकर अट्ट ज्ञानदान किया। यह उदाहरण इस बातके प्रगट करनेके लिये वश है कि सेठ माणिकचंदको धार्मिक शिक्षाका कितना प्रेम था।

सेठ माणिकचर्को धामिक शिक्षाका कितना प्रेम था।
थोड़े दिन बाद कुछ कार्यवशात सेठ माणिकचंद्जी सुरत
आये थे तब एक दिन सेठजी चंद्रप्रमुके
स्मूलचंद किसनदास मंदिरजीमें धर्मकार्यसे निवट कर पाटे पर
कापिड़ियाका प्रथम बेठ थे तब एक बालकको दर्शन करते हुए
परिचय। देखकर इनके मनमें आई कि यह कुछ
होनहार मालूम होता है, इंग्रेजी पटता
मालूम होता है। उसको कुछ उपदेश करना चाहिये। यही वह
स्मूलचंदजी कापाइचा थे जो इस समय भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं,
"दिगम्बर जैन" मासिक पत्रके सम्पादक हैं, जैनिमत्र साप्ताहिक पत्रके प्रकाशक, 'जैनविजय' प्रेमके स्वामी और रात्रिदिन जैन जातिकी
सेवामें लीन हैं। उस समय इनकी आयु १७ वर्षकी थी। यह
चीसा हुमड़ मंत्रेधर गोत्रियारी सुरतिवासी सेठ किसनदास
पूर्तमचंद कापिड़ियाके तृतीय पुत्र हैं।

इंग्रेजी छठी स्टेन्डर्डमें पढ़ते थे पर धर्म साधनमें सिनाय दर्शन करनेके कुछ नहीं जानते थे । जब यह दर्शनकर चुके तब सेठजीने इनको बुछाया । पास बैठाकर पूछा कि तुम कुछ धर्मकी बात जानते हो । जबाब ना का पानेपर फिर सेठजीने यह जानकर कि यह संस्कृतके साथ इंग्रेजी पढ़ते हैं कहा कि धर्मज्ञानके बिना धर्म-सेबन नहीं हो सक्ता है—केबल इंग्रेजी पढ़नेसे छाम न होगा । तुम मेरी साथ चन्दावाडीमें चलो। मैं एक पुस्तक तुमको दूंगा जिसको तुम हररोज पहना। इस बालकको बड़ा ही हर्ष हुआ जब इमन एक गंभीर मृत धनवान सेठको अपनेसे इस तरह बात करते हुए देखा। सेठजी अपने पास हमेशा ही कुछ धमेकी व कुछ मांसाहार रोकनेकी पुस्तकें बांटनेके लिये रखते थे। उस समय सेठ हीराचन्द नेमचन्द हारा मृद्धित श्री रत्नकरंडश्राचकाचार हिन्दी और मराठी अर्थ सहित इनके पास था वही इनके योग्य है ऐसा समझकर उनको चन्दावाडीमें ले जाकर वह पुस्तक दी और प्रतिदिन बांचनेका नियम दिलाया। मृलचंद हम पुस्तकको पाकर बहुत प्रसन्न हुए और खुशी र अपने घर गए। अब यह सेठसे कभी र मिलन लगे और धमेकी बातें मालूम करने लगे। थोड़े दिन बाद सेठजी बम्बई लौट गए।

संटमाणिक वंदनीको सं० १९५५ आरी शोकोद्पादक क्ष्यमें आया। श्रीमती मगनवाई जीकी गोदमें मगनवाई जीका जब केशर ११ मासकी खेलती कूदती थी, वैधव्य। अपनी मुलकनसे माता पिताको प्रसन्न करती थी तब यकायक एक दिन संवेरिक समय

खेमचंदका मरन गर्भ हो गया, खून चढ़ गया, पलंगमें लेट गए, माता व स्त्री भी आ गई, पिता भी आए, तरह २ के उपचार होने लगे। पर देखते २ बाधा इतनी बढ़ी कि दो घंटे भी पूरे नहीं हुए ये मगनमती बढ़े संकोचमें प्रत्रीको लिये हुए बैठी देख रही थी, माता दवाई दरमतमें लगी हुई थी कि यकायक खेमचंदने आंखें का दीं, देखते २ जीव शरीरसे निकल गया। सारे अंग उपांग व

विना अनात्मभूत जड़ हो गए- आकार रहते हुए भी चेतना विना किसी कामके न रहे। माता वारंवार पुकारती है-"खेमचंद, नंत्रमचंद्र" पर खेमचंद शब्दको समझनेवाला चेतन ही जब नहीं तब कौन मुख़को प्ररणा करे कि तू हां कह। बेबोल, प्राणरहित, मुद्दी शरीर जानकर माता ज़मीनपर गिर पड़ी । मगनबाई हाय हाय करती हुई धाड़े मारकर रोने लगी। केशरके भी रुआई आ गई। इतनमें जितने और घरमें थे आए। खेमचंद चल बसे इस खबरन सर्वकी शोकसागरमें डुबा दिया। इन समय सबसे अधिक नुक्रमान यौवनवती .१२ वर्षकी अति स्वरूपवती, मुशील,पतिप्रेमिनी मगनमतीको हुआ था । उसके दिलको थांभनेवाला, उसके मुखको प्रेमसे निरम्बनेवाला, उसे स्नेहभावसे प्यार करनेवाला, उसके यौवनरूपी मकरंदका पिपास अमर, उसके एक मात्र जीवनका आधार, उसके दुःख सुखमें एक अनुपम साथी इस वर्तमान पर्यायसे चल वसा और इसे अपने जन्म-भर एकाकी विधवा अवस्थामें छोड़ गया। वह घर जो थोड़ी देर पहले गाईस्थ्यमई मुखमें डूत्रा हुआ था सो बातकी बातमें शोकके अंधकारसे व्याप्त हो गया । यदि किसीका राज्य छिन जाय. धन लूट नाय यहां तक कि उसे क्ना रहित कर दिया नाय तौ भी दु:ख नहीं होता है जितना कि एक जीवनके आवार इष्ट बस्तुके सदाके छिये वियोग हो जानेपर होता है। वास्तवमें यह संसार असार है, यह एक माया जाल है, जो इसमें लुभाता है वह सदा त्रास पाता है, जो ज्ञानी होता है और अपनी आत्मीक विभूतिको पहचानता है वह जब अपने शरीरमें ही नहीं छुभाता तत्र उसके सम्बन्धी अन्य वस्तुर्योसे कैसे प्रेम करेगा ? ऐसे ज्ञानीके



श्रीमती मगनबाई वैधन्यावस्थामें.

(देखो एछ २०२)

J. V. P. Surat.

लिये किसीका संयोग व वियोग हर्ष या विवादका कारण नहीं है पर ऐसे ज्ञानी जगतमें विरहे हैं । अनादि मिध्यात्वके संस्कारसे जानते हुए भी तुर्त परके छोभमें फंस जाते हैं। खेमचंदके शरीरकी दाहादि किया हुई । मगनमतीने शृंगार उतारा । सौभाग्यके वन्त्र आभूषण डालकर उदासीन कपड़े पहने क्योंकि अब इसका जीवन वीतराग विज्ञान स्वरूप धर्मके साथ ही रमण करनेमें वीतनेवाला था । बम्बई तार दिया गया। समाचार पाते ही सेठ माणिकचन्दको इतना कष्ट हुआ कि जैसा कोई हृदयमें वज्रका आधात करे। इस समयका दुःख सेटनीको अपने जन्ममें और कभी नहीं हुआ था। सेउनी इसे अपने पुत्रके स्थानपर मानते थे। इमकी युवानीमें इसके उस विधवापनेका पत्थर गिरते हुए स्वाभाविक है कि ऐसे द्यापृ-र्ण-मायालु पिताको दुःख हो। माता चतुरबाईजीने जब सुना। उसके रोने कूटने विलखनेका पार नहीं रहा । महान त्राप्त रूप अवस्थानें दुन गई। इसकी हाय हायने सर्व कुटुम्बको जमा कर दिया। मातः रूपाबाई आदि सर्व ही ऐसे दु:खित हुए कि जिसका वर्णननहीं हो सक्ता । सबके मुख फीके पाला पड़े बृक्षकी तरह हो गए। परि-णामोंकी विचित्र गति है। एक जातिक भाव एक अन्तमूहुर्तसे अधिक नहीं रहते । नाना संकल्प विकल्पोंको करते हुए नव सेठ-नींक चित्तमें शास्त्रोंकी बार्ते याद आने लगीं-सती सीता. अंजना, द्रोपदी, चन्दना, अनंतमती आदि सतियोंके चरित्र स्पृतिमें आए । जब शंभूकुमार व चंद्रनखाका चरित्र याद आया तब चित्तमें वैर्य हुआ कि संसारमें सर्व ही प्राणी अपने बांधे हुए कमेंकि बरा हैं। यह दु:ल कोई नया नहीं है मड़े २ प्रण्याधिकारियोंके उत्पर

भी ऐसे संकट आ जाते हैं, आप सम्हले और फिर सर्व कुटुम्बको संमारकी अमारता दिखाते हुए सम्हालने लगे ।

अन विश्वा मगननाईनीको रह २ कर पतिकी यादके साथ पिताकी संगति याद आने लगी। सेठनी भी यही विचारने लगे कि अन मगननाईको यहीं अपने पास रखना चाहिये और उसके आत्माका कल्याण हो ऐसा मार्ग उसे

विधवा मगनवाईको बताना चाहिये। यदि वह सूरत रहेगी उमका पिताद्वारा विद्याः जीवन बिगड़ जायगा। उसकी सामको भ्यास। धर्मविद्याका प्रेम नहीं है। यह वहां पुस्तक-तक न देख सकेगी। घरके कामका जमें ही

फंसकर अनना जन्म खराब करेगी जैमा कि प्राय. होता है कि म्वाधीं सास व इत्रसुर अपनी विधवा बहूको पट्टने लिखने व धमें के तत्व जाननेकी ओर नहीं लगाते। बस उसको एक दासीके ममान घरमें रखते हैं। बर्तन मंजवाना, अनाज फटकवाना, लड़कीको खिलाना आदि काम अच्छी तरह लेते हैं तब कहीं सबके पीछ बचा खुवा व खखा सूखा मोजन खानेको देते हैं अथवा यदि उछ छोटी हुई व धनाढ्य हुई तो सास स्वसुर उसे गहने कपड़ेसे लादे रखते हैं। वह सीना परोना करती है व खाली बैठे २ बुरे विचारोंकी सड़क अपने दिलमें बना लेती है। ऐसा विचार कर सेटजी १ महीने पीछे ही मगनबाई जीको बम्बई ले गये। चौपाटीके बंगलेमें जब यह आई तब माता चतुरबाई इसको लिएट गई और धाई मार २ कर रोने लगी।। चतुरबाई का मन सूक्ष्म बातको गृहण करने योग्य न था। कुरुमके मोहमें अति लवलीन था। शरीरकी सुकुमालता, पुत्रके जीवित

न रहनेकी चिन्ता, शरीरका अस्वस्य रहना, वे तीनों ही कारण ऐसे ये कि जिनसे उमका चित्त आकुलताका स्थान बन रहा था। अब चौथा अपनी प्राणण्यारी प्रजोके पितिवयोगका महान क्लेश जिससे चतुरबाईकी चिन्ता और संकटका ठिकाना न रहा। उसके दिलमें यह मदमेंपर मदमें दूर ही नहीं होने थे। सेठ माणिक-चंदजी और स्वयं मगनबाई बहुत समझाती थी पर मोहकी लहरोंने उसे ऐमा विह्वल कर रक्ता था कि उमको बिटकुल धैर्य नहीं होता था। चित्तके शोकसे शरीर और अधिक अस्वस्थ होगया था।

ड्यर सेट माणिकचंद्रकी अपने पुत्र तमान मगनबाईकी आत्माको जानते से । २, ६ माममें ही एक वयोद्ध, अनुभवी, उदामीन एक विद्वान पंडित माधवजीको मगनबाईको संस्कृत और धर्म उम्तक पहानेके लिये नियत किथा और मगनबाईको सेटने आज्ञा को कि तम राजिदिन विद्या माधनमें हो ध्यान दो इसीस तेरा भटा होगा। तू वरके कामकाजमें भी मत फंसे और न वन उपवास कर शारीरको मुखांब, तुझे विद्या आजायगी तो तू स्वपरोपकार करके अपना जनम मकल करेगी। सेटनीके शब्द ये थे—

"व्हेन, घरनं कामकान अने अत उपवास बाजुए मुकीने भणो " सेउनी सगनबाईको वहन कहकर पुकारते थे। सेटनीने चतुर-बाईको भी समझा दिया कि तुम मगनबाईसे कुछ घरका काम न लेना, इसे मन लगाकर विद्याभ्यास करने देना। परमोपकारी पिताकी ताकीद्से मगनबाईनीका चित्त धीर २ धर्मसाधन व वैराग्यमें जमता गया। पंडितनीके द्वारा धीरे २ बाईने संस्कृत मार्गोपदेशिका ब्याकरण दो भाग, थोड़ा अमरकोश, थोड़ी लखुकौमदी, थोड़ी न्यायदीपिका पदी तथा दि॰ जैन परीक्षालयद्वारा प्रविशिकाकी तीन परीक्षाएं धर्म में पास कीं। इसवक्त लाहौरके बाबू ज्ञादचंदने आत्मानुशासन और मोक्षमार्ग प्रकाशको तथा देवबंदके जैनीलालने बड़े रत्नकरंड-श्रावकाचारको छापकर प्रसिद्ध कर दिया था। सेठजी छपी पुस्तकं रखते हैं यह प्रसिद्ध हो गया था, इससे जो कोई भी पुस्तक छपाता था सो पहले सेठजीके यहाँ मेनता था। सेठजी स्वयं पसंद कर यदि उपयोगी समझने तो उमकी बहुतसे कापियां बांटने व न्योछावर लेकर देनेके लिये मंगा लेने थे। नए छपे हुए ग्रंथोंको वैराग्यउत्पादक जान सेठजीने मगनबाईजीसे बांचनेको कहा। धीरे २ मगनबाईजीने आत्मानुशासन, रत्नकरंड श्रावकाचार, व मोक्षमार्गश्रकाशका स्वाध्याय करके अपनी परिणतिमें बहुत फेर कर लिया और स्वाध्यायको बराबर नारी रक्तवा।

पं. फतहचंद लालन को अध्यात्मक्षानका अभ्याम था और यह सेठ माणिकचंद्रजीके पास मिलने आयाः पं. लालनका उपदेश। करते थे। मगनवाईजी चौपाटी बंगलेपर सेठजीके पास ही रात्रिको बैठकखानमें बैठती थीं। जब सेठजी आनेवालोंसे बात करते तब यह भी सुनती और अपने अनुमवको बढ़ाती थी। पं. लालन द्वारा आत्माकी कथनी सुननेसे मगनवाईजीको अध्यात्मिक रुचि भी हो गई। युवावस्था होनेपर भी इसके भाव वैराग्यमें भर गए और यह पिताकी आज्ञामें चलती हुई, शास्त्रीसे विद्या अभ्यास करती हुई, स्वाध्यायमें मन लगाती हुई अर्थात ज्ञानके सुखमें मगन होकर घीरे पितिवियोगके शोकको बिलकुल भूल गई और अपने जीवनको ज्ञान मित्रके साथवस्त्रील करनेमें सफल मूल गई और अपने जीवनको ज्ञान मित्रके साथवस्त्रील करनेमें सफल स्वाह्मी स्व

मानने लगी। यह सबपूज्य परोपकारी सेट माणिकचंद्रका ही प्रताप था जिससे आज मगनबाईजी दि॰ जैन स्त्री समाजमें बहुत ही स्तुत्य काम कर रही हैं और श्राविकाश्रम द्वारा अपने समान अनेक बाइयोंको आत्मरुचिवाली और परोपकारिणी बनानेका उपाय कर रही हैं।



## अध्याय नकां।

## समाजकी सची सेवा।

संबत् १९५६का महा विकट साल आ गया । इस वर्ष चारों ओर भारतमें दुष्काल ही दुष्काल हा गया : सं० १९५६के दुष्का- गुजरात, काठियावाइ, मेवाइ भी अन्न और लमें ५०००) की नलके महाकष्टमे पीड़ित हुआ । सेट माणिकचंद्जीका चित्त करुणादानसे द्वीभूत मदद् । होयगा । इस निकटवर्ती धान्तके अकाल पीड़ितोंकी महायताके लिये मेठजीन कर ५०००। दान किया तथा बड़ौदामें सेठ फकीरचंद शेमचंद जेव पीव ने एक हिन्द-बालाश्रम खोला उसमें भी आपने १००) दिये। बम्बई दिल जैन सभाके सभासदोंको एकत्र कर आपने बेतुल आदि मध्य प्रदेशके जैनी भाइयोंके आए हुए पत्र सुनाकर प्रगट किया कि एक जैन-अनाथालय भंडार स्थापित होना चाहिन । चूंकि आप स्वयं दातार और अग्रगण्य थे । आपकी सूचनाको बम्बईके भाइयोंने मान्य करके ता० ९ नवम्बर १८९९ को यह भंडार खोला तथा २११४) का चंदा तुर्त हो गया जिसमें आपने १०१) दिये व सबसे अधिक सेट जीतमल कन्हैयालालने ५०१) व सेट गुरुम्खराय मुखानंदनीने २२२) प्रदान किये । लाला बैननाथ हाथरसवालोंने इसमें बहुत पदद दी। सभाकी ओरसे भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभाकी आज्ञानुसार बेतुल राहरमें बाबू गोविन्द् लाहनूं हेडमास्टर वर्नान्युलर स्कूलकी मारफत एक आहारदानशाला खोली गई इसके द्वारा ता० ७-१२-९९

को २५ अनाथ नैनबालक रहने गए। इनको मोनन वस्त्रके सिवाय धार्मिकिशिक्षा आदि देनेका भी प्रबन्ध कराया गया। आकळून व पंढरपुरमें भी ऐमी आहार दानशालाएं खोली गई। बेतुलमें २० बालक हो गए उनकी रक्षा सभा द्वारा बराबर होती रही। ९ लड़-कोंको वेतुलमे नागपुर विद्याम्यामके लिये भिनवाया गया।

मुरतं एक दिगम्बर जैन छात्र केशवलाल डाह्याभाईन मेट्रिकु-लेशनकी परीक्षा पास की थी और कालेनमें जैन विद्यार्थियोंके कष्ट भरती होनंके लिये बम्बई आया था उस समय निवारणार्थ वम्बईमें यहां हिन्दुओंका केवल एक ही बोर्डिंग था जि-जैन बोर्डिंगका सका नाम गोकुलदास तेजपाल बो-विचार। र्डिंग हाउस था। यह छात्र उसीमें रहनेके लिये गया। उसके कार्य्यकर्ताओंने इसको स्थान

नहीं दिया। तथा पुपरिन्टेन्डेन्टकी बातचीतसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह इसी लियं स्थान नहीं देते हैं कि यह केशवलाल मैनी है। इसको बड़ी निराशता हुई, तब इसने यह सब हाल विद्यार्थियों के पिता सेठ माणिक चंदनीसे कहा। आपको उस वक्त बड़ा भारी खयाल आया कि मैसे यह आज मटकता है व निराश्रय होकर अपमान सहता है ऐसे और भी लात्र भटकते होंगे व उदास होकर व शिक्षण लेनेसे बन्द रहते होंगे। जैनियों में अब इंग्रेजी पढ़नेकी रुचि हुई है तब कालेजमें भी पढ़ने आर्वे ही गे अतएव परदेशी जैन लात्रों को आश्रय देनेका कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। उस लात्रके तो ठहरनेका सेठनीने तुर्त प्रबन्ध कर दिया और रात्रिको सेठ हीरा चंद नेम चंद जीसे सम्मित ली कि क्या करना चाहिये। परम सच्चे मित्र हीरा चंद जीने

सम्मति दी कि आपके पास लक्ष्मीकी कृपा है इससे आप एक जैन बोर्डिङ्क स्थापित करें, दक्षिण व गुजरातके अनेक छात्रोंको बड़ा भारी लाभ पहुँचेगा । बेलगांव निवासी अण्णाप्पा फडयाप्पा चौगुले बी. ए. भी उस वक्त कालेजमें पढ़तं हुए चौपाटीपर सेटनीके बंगलेमें ही रहते थे सो रात्रिको सेटजीके साथ बैठकर बातें करते थे और प्रेरणा करते थे कि आप कोई धर्मका काम करो मुख्य मंमति बो-डिंगकी देते थे जिससे भी संटजीको इस कार्य करनेपर विशेष रुचि हुई और यह बात सेठजीके दिलमें गड़ गई। वास्तवमें जिम मित्रके उपर विश्वास और प्रेम होता है उसकी बात तुर्त ही दिलमें बैट जाती है फिर आपने दूमेंग दिन अपने माई पानाचंद, नवलचंद और श्रेमचंद्से मलाह ली। अपने पुत्र समान मगनवाईनीको भी विठाला और मत्र हकीकत बयान की। प्रेमचंदके त्रिचार बहुत ऊंचे थे और मेट माणिकचंदकी भांति धर्म व विद्याकी उन्नतिमें पूर्ण लब्दीन थे। प्रेमचंद बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि काकार्जा, आप इस कामको अवश्य करें । सेठ पानाचंद्रने कहा कि अभी तक हम लोगोंने अपने पूज्य पिताके स्मरणमं कोई काम नहीं किया है इससे उन्हींके नामसे बोर्डिंग कायम किया जाय तथा लाख पौन लाख रुपये लगाकर बहुत अच्छी इमारत तय्यार की जाय जो देखनेमें व आराममें भी ठीक हो। सेट नवलचंद्जीने भी कुछ विरोध नहीं किया तब स्थानकी सछाह हुई तो जुबिछी-बागके पास ही स्थान बनाना निश्चित दुआ क्योंकि वह स्थान शहर व कालिनोंसे बहुत दूर नहीं है और हवा भी अच्छी है। तथा यह भी तय हुआ कि इसी वर्ष इस कामको पूरा करना

चाहिये। दूसरे ही दिनसे सेटजीने स्थानकी तजवीज करना व नकशा बनाकर और पमन्द कराकर होशियार मिस्त्रीके द्वारा काम प्रारंभ करा दिया।

इसी वर्ष भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका चतुर्थ अधिवेशन मिती कार्तिक वदी ५ सं० वर्म्ड्रमें दि० जैन प्रां- १९५६से ७ मुताबिक ताः २२ अक्टूबर तिक सभाका स्थापन। १८९९से २५ तक श्री नंबूखामीकी निर्वाण भूमि चौगसी मधुगमें हुआ। इस समय

डम समाके महामंत्री **मुंद्रा चम्पतरायजी** डिप्टी मनिस्ट्रेट नहर, कानपुर थे किन्होंने महासभाका कार्य्य बड़ी ही रुचिसे अपने नीवन पर्यत किया और अनेक विघ्नोंके आनेपर भी इसे स्थिर रक्ता । महासभाको बाकायदा महासभा बनानेमें स्वर्गवासी बाबू बच्चलालनी प्रयाग निवासीन अपनी उम्रभर जी तोड़ परिश्रम किया या । उन्हींक उद्योगसे इस महासभाकी रजिप्दी सर्कारी एक्ट नं० २१ सन् १८६० ई० के अनुसार हुई। इस वर्ष महासभाने प्रस्ताच नं० १ इस विषयका स्वीकृत किया कि "तमाम भारत-वर्षमें प्रान्तिक समाएं कायम की नावें जो सर्व प्रकारसे इस महास-भाके उद्देश्योंको प्रचलित करनेमें सहायता देवें '' तथा इस कार्य्यके करनेका भार बाबू बनारसीदास एम. ए. हेडमास्टर विकटोरिया कालेन लक्करके सुपूर्द किया गया। यह महासभाके ज्वाइन्ट ननरल सेकेटरी कई वर्षीतक रहे और रातदिन इसकी उन्नतिमें जी तोड़ परिश्रम किया। आपने ही महासभाके दो प्रभावशाली वार्षिक अधि-विश्वन सन् १९०४ और १९०५ में कमसे **अम्बाला छावनी**  और सहारनपुरमें कराए तथा बहुतसी प्रस्तकोंकी मददसे इंग्रेजीमें एक जैन इतिहास सिरीज नं० १ Jain Itihas Series पुस्तक रची जिसके प्रचारसे यह अज्ञान अंधकार कि जैनी नास्तिक हैं या बौद्ध या हिन्दू धर्मकी शाखा हैं या प्राचीन नहीं हैं बिलकुल उड़ गया। जैन इतिहास सोसायटी कायम कर जबतक आप लक्कर रहे बहुत काम किया। सहारनपुरमें वकालत करनेक पीछे व परस्पर महासभाके कार्यकर्ताओंमं मनमिलान न रहनेसे आपने यकायक जैनजाति सम्बन्धी सब काम छोड़ दिया। यह जैन कोमके अभा रयकी बात है। बाबू बनारसीदासने बम्बई प्रान्तिक सभा स्थापित होनेके लिये बम्बई मभाके मंत्री सेट माणिकचन्द्रजीको पत्र लिखा उसके अनुमार मिती कार्तिक सुदी ५ सं० १९५६ को बम्बई सभाकी प्रबन्धकारिणी सभाकी बैठक हुई।

इस सभामें यह निश्चित हुआ कि प्रान्तिक सभा स्थापित हो तथा उसकी नियमावली बनानंका कार्य सेठ माणिकचंद हीराचंद, सेठ रामचंदनाथा, पं० गोपालदामकी और पं० धन्नालालकीके सुपूर्व हुआ और मिती कार्तिक मुदी १४ को उपदेशकसमाकी बैठकमें सेठ हरमुखराय अमोलकचंदके सभापतित्वमें वह नियमावली पास की गई तथा तय हुआ कि प्रान्तके मुख्य २ भाइयोंको भेजकर सभासद बनाए जार्वे और तब इसका काम शुरू किया जावे। बम्बई सभा सेठ माणिकचंद और पं० गोपालदासजी ऐसे उत्साही संचालकोंके द्वारा बहुत कायदेसे ऐसे २ काम बराबर करती रही जिससे सार मारतवर्षको लाम हो। इस बक्त समाके पास पाठशाला खातेके सिवाय उपदेशफंडका खाता भी था जिसके द्वारा उपदेशक भेजकर दौरा कराया जाता था । मिती मगसर धुदी ८ से बाबू जुगलकिशोरजी देवबन्द उपदेशक नियत हुए थे निन्होंने कुछ दिनों तक बहुत स्थानोंमें श्रमण कर उपकार किया। सरस्वती भंडार खातेसे संस्कृतादि ग्रंथ संग्रह किये जाते थे, पारितोपिक भंडारसे परीक्षा-लयद्वारा भाग्तवर्षके विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उत्तम छात्रोंको ईनाम दिया जाता था । औपघालय खाता या जिससे दबाई बटती थी।

सभामें कभी २ सेट माणिकनन्द्रजी भी व्याख्यान देते थे। सं० १९५३ में मिती आषाड़ सेट माणिकचंद्रजी सुदी १४ की सभामें आपने ४ शिक्षात्रन व्याग्व्यानदाता। पर गुजराती भाषामें सेट हरमुखराय अमी-लक्षत्रंदके सभापतित्वमें बहुत गंभीरतासे

कहा था।

सेठनीकं भतीजे सेठ प्रेमचंद मोतीचंद जौहरीमें बहुत अच्छी
योग्यता थी। यह भी हर एक समामें आते
प्रेमचंद मोतीचंद और कभी २ व्याख्यान दिया करते थे।
व्याख्याता। श्रावण सुदी १४ को सेठ माणिकचंदनीके
सभापतिस्वमें आपने सप्त तत्वोंका वर्णन बहुत
योग्यतासे किया जिन्नसे पं० गोपालदास व अन्य सभासदोंको ऐमा
निश्चय हुआ कि यह अपने काका माणिकचंदकी मांति परोपकारी
व समाजसेवक होगा।

प्रेमचंद्रजीकी प्रथम स्त्री चंचलबाई बहुत अशक्त तथा बीमार रहती थी। १ वर्ष ही के पीछे ही वह प्रेमचंद्रजीका द्वितीय इस शरीरको छोड़ कर चल दी। माता विवाह। स्वाबाई तथा प्रेमचंद्रका ऐसा ही भवितन्य था यह जान शांत मन रहे। इस वर्ष माताने प्रेमचंद्रका द्वितीय विवाह खालियर राज्यके जाचद निवासी एक वीसाह्मड़की कन्या चम्पाबाई जीके साथ किया। यह कन्या स्वस्वान, सरल स्वभावी, और आज्ञानुमार चलनेवाली थी। इसके लाभसे माता व प्रेमचंद्रको बहुत सन्तोप हुआ।

सेठ माणिकचंद्रजीकी प्रथम प्रश्नी फूलकुंदरीको एक कन्या जन्मी जिसका नाम कमन्त्राचती रक्षता फूलकुंदरीको तथा जन्मोत्पद करके इसकी रक्षाका पृरा कन्याका यत्न किया। इसके दो वर्ष बाद दूसरी प्रश्नो लाभ। हुई जो सिर्फ पांच दिन ही जीवित रहकर मृत्युके दश हो गई इस समय फूलकुंदरीको भी असाध्य बीमारी हो रही थी और एक माम बाद वह भी चल कसी।

सेट पानाचंदकी स्त्री रुक्मणीबाई संतानकी रक्षामें बहुत चतुर थी तथा इसके इस समय संतित-वियोग सेट पानाचंदजीको करानेवाले कर्मोका उद्य न था। लीलावती पुत्रका लाभ। ४ वर्ष और रतनमती २ वर्षकी थी तब भी यह बाई पुनः गर्भवती हुई। इस समय पानाचंदको यद्यपि पुत्रकी निराशासी थी पर पुण्यके उद्यसे गुज० मिती आश्चिन बदी १४को बाईने एक पुत्ररत्नको उत्पन्न किया। पुत्रका लाभ देख पानाचंद्रनीको और विषेश कर माणिकचंद्रनीको बहुत ही हर्प हुआ क्योंकि अब तक इन दोनोंके कोई भी पुत्र जीवित नहीं था और बाज़ारमें ये मान्य गिने जाते थे। सेठ माणिकचंदजीने खूब धूमधामसे मंदिरजीमें पूजन कराई, दान बांटा, वस्त्रादि दिये, गाना बनाना हुआ । बड़े भाईके चित्त प्रपन्नताके अर्थ इम जन्मोतमबको इमनरह किया कि जिससे इमकी बहुत प्रमिद्धि हुई व माता रुक्मणीको बहुत संतोष हुआ। अपनी ५१ वर्षकी आयुमें पुत्रलाभ होनेसे सेट पानाचंदको अकथनीय आनन्द हुआ । सेठजीने इसकी रक्षाका पूरा २ यत्न किया ।

मिती मार्गशीर्प बढ़ी १० संबत १९५६ को सेठ माणिकचं-द्नीन बम्बई सभाकी प्र० कमीटि बुलाई ।

वम्बई सभामें शिखरजी ८ समासद एकत्र हुए । सभापति सेट व जैनमित्र। हामुखराय अमोलकचंद किये गये, उपमंत्री पंट गोपालदासजीने भारतवर्षीय दि० जैन

महासभाका वह प्रस्ताव नं० ३ जो उसने ता० २४-१०-१८९९ को पास किया था, पेश किया। वह प्रस्ताव यह था।

" महासभा प्रस्ताव करती है कि श्री सम्मेद शिखरजीके अगड़ेके विषयमे जो सबकमेटी मेले हायरसमें स्थापित हुई थी वह अन तोड़ दी जाय और उसका चार्ज बम्बई सभाके सुपुर्द हो। इस कामके खजाञ्ची सेठ माणिकचंद पानाचंद जी जौहरी, बम्बई निवासी नियत किये जावें । जिन भाइयोंके पास इस सम्बन्धी ह्रव्य हो वह उक्त सेठ साहबके पास मय हिसाब किता-बके भेज देवें और आगेको भी उन्होंके पास भेजते रहें (एक

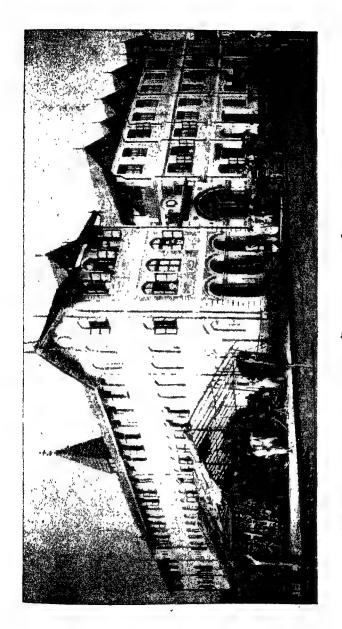
नकल इस प्रस्तावकी बजरिये चिही बम्बई सभाको मेजी जावेगी) सेठ नवलचंद्नी संवत् १९५३ में शिग्वरजी गए थे तन ६०००) का चंदा करके सीतानालेसे कुन्थनाथ स्वामीकी टींकनक ५००० सीढियां बनवानेका काम मुनीम हरलालनीके सुपूर्व कर आए थे। सीढियोंका काम चलाया गया। ७०० सिढियां बन गई थीं । इतनेमं इवेताम्बरी लोगोंको यह बात पयन्द न आई । य सीदियां सर्व जेन स्त्रीपुरुपोंके आरामके लिये बनवाई गई थीं इप वातका कुछ भी विचारन करके इंबतास्वरी भाइयोंने ता. १२ जन-वरी सन् १८९९ को रात्रिके ममय चोरीसं २०५ मीहियां तडवा डालीं और इस अनुचिन क्रियासे महान कमेका बंध किया । इमपर फौज़दारी मुक्दमा हुआ जिससे इवंताम्बर कोठीके दो भाइयोंको कुछ दिनकी मना व मुत्रलके हुए। इस समय हरलालनी मर गए थे। राघवजी वीसपंथी कोठीके सुनीम थे। इसीने यह फौजदारी सुकद्मा चलाया था। बम्बई सभाने हुई जैनियोंको मूचनार्थ ४००० विज्ञापन हाथरमके मेलेपर बाँट तथा महामनाको मुचना दी। उसने मुकदमेकी पैरवीके छिये एक कमेटी बनाई थी उनने प्रमाद्वरा कोई यथोचित कार्रवाई न की। उधर इवताम्बरियोंने हाईकोर्टमें अपील की निससे दिगम्बरियोंकी तरफसे ठीक पैरवी न होनेसे अमफलता हुई इसीपर महासभाने उक्त प्रस्ताव पास किया था।

सभासदोंने इम प्रस्तावको स्वीकार किया तथा निश्चय किया कि वकीलोंकी राय लेकर दीवानीमें मुकदमा चलाया जाय और एक होशियार आदमी कोशिश करनेके लिये नियत किया जाय । इसी अंतरंग सभामें सभाके कार्योंको विस्तारह्मपर्ने लानेके छिये पं. गोपाछदासनीने एक मासिक पत्रकी आवश्यक्ता बताई। सबके ध्यानमें नंचने पर "जैन मिन्न" पत्रके निकाछनेका निश्चय किया गया। सम्पादक पं. गोपासदासनी वरेया और प्रोप्राइटर सेट माणिकचंदजी नियत हुए। आपने स्वीकार किया तथा पत्रमें यदि घाटा रहे तो दो वर्षके बास्ते अधिकमे अधिक १००) साछ सेट माणिकचंद पानाचंदनी और ५०) साछ सेट नाथारंगजीने देना खीकार किया। सेटनीको ममानोद्धारका कितना प्रेम था इसका यह भी एक नमूना है।

बम्बईमें शीघ्र ही बोर्डिंगका मकान सेंट माणिकचंदनीके प्र-यत्नसं त्रयार हो गया जिसका वास्त्विधान सेंड हाराचंद ग्रानर्जा (मुद्र्त) मिती मगसर सुदी ६ को बड़ी धूम-जैन बोर्डिगका महने। धामक माथ किया गया। इस बोर्डिगका नाम सेठ पानाचंट आदि सेठोंने अपने पज्य पिताके स्मरणके लिये उन्हींक नामसे सेठ **हीराचंद गुमान जी** जैन बोर्डिंग रक्ता। बोर्डिंगके लिये २६०४ वार नमीन ली गई थी। इस पर तीन खनकी सुन्दर इमारत छात्रोंके रहनेके लिये बनाई गई जिंसकी इमारतकी स्थावर मिलकियत २५०००) की तथा बोर्डिंगके मकानके सामने इसी ज़मीनमें ४००००) की मिलकिय-तका एक मकान बनाया गया जिसका भाड़ा बोर्डिंगके खर्चमें छगे तथा ५०००) की खुली जगह गिल्ड स्ट्रीटके नाकेपर स्वसी गई। कुल ७००००) स्थावर मिलकियतमें १२५०) फरनीचर, ४५०) रसोईके वर्तन इस तरह ७१७००) ट्रष्टी फंड खाते रखकर यह रकम चारों सेठोंकी तरफसे नीचे लिखे ट्रिप्टियोंको ५ अप्रेल सन

१९००को सुपुर्द करके ट्रष्टडीड रिनप्टर कराया गया जिसकी इंग्रेजी नकल पाठकोंके ज्ञानहेतु अंतमें दी गर् है। ट्षी-

- १ सेठ पानाचंद हीराचंद
- २ सेठ पाणिकचंद ..
- २ सेठ नवलचंद ..
- ४ सेठ प्रेमचंद्र मोतीचंद्
- ५ सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी शोलापुर 🛒 🖣 बम्बई.
- ६ सेठ राजा घरमचंद राजा दीनद्याल प्रसिद्ध फोटाग्राफर, इस बोर्डिङ्गके तीन मंत्रलोंमें सुपिरिन्टेन्डेन्टके रहनेके स्थान व रसोईवरके सिवाय २३ कपर हैं जिनमें ४७ छात्र रह सक्ते हैं। ट्रप्डोडमें खास ३ नियम हैं कि-
- (१) हीराचंद गुमानजीके वंशमेंसे दो दृष्टी हमेशा कमेटी-में रहेंगे यदि वंशमें कोई न रहे तो उनके निकट सम्बन्धियों में रहेंगे।
  - (२) ट्ष्टीकी संख्या कमसे कम छः व अधिक ८ होगी।
- (३) ट्रष्ट कंगेटी व उसके द्वारा नियत प्रबन्ध कारिणीमें सब मेम्बर दिगम्बर नैन होंगे।
- (४) इसमें मेट्कुलेशन पास जैन छात्र भरती किये जाते हैं उनमें सबसे पहले संस्कृत द्वितीय माषा रखनेवाले दिगम्बरी छात्रोंको, फिर अन्यभाषा रखनेवाले दिग॰ छात्रोंको फिर संस्कृतवाले क्वेताम्बरी छात्रोंको फिर अन्यभाषा बाले स्वे० छात्रोंको स्थान दिया जाता है फीस किसीसे नहीं छी जाती। इंट्रेन्ससे नीचे व चौथे इससके



सेड हीराचन्द्र गुमान नी बोडिंग स्कूल-बम्बई. (देखो एछ ११९)

' Jain Vijaya P. Press,

उत्तरके छात्र मेनेनिंग कमेटीकी रायसे मरती होते हैं।

- (५) दिगम्बर जैनधर्मकी शिक्षा सर्वको छेनी होगी ववार्षिक परीक्षा देनी होगी।
- (१) नित्य दर्शन पूजाके लिये एक दिगम्बर जैन चैत्बालय रहेगा।
  - (७) २३ कमरों मेंसे ४ संस्कृत विद्यार्थियों रहनेके लिये रहेंगे।
- (८) जो ४००००)की मिलकियतका मकान है उसका खर्च देकर जो भाड़ा बचेगा उसमेंसे ६) रु. सेकड़ा अमानत खाते जमाकर २००) रु० साल दिगम्बर जैन मेदिरके खर्चके लिये निकालकर बाकी गरीब लाबोंको लाबयृत्ति देनेमें खर्च किया जायगा जिसमें ५०) सेकड़ा बोर्डिंगमें रहनेवाले लाबोंको, ४०) सेकड़ा परदेशमें पदनेवाले लाबोंको और १०) सेकड़ा जैन धार्मिक शास्त्रोंको मुख्य-नासे पढ़नेवालोंको दिया जाय।

ता० १७ जून सन् १९०० को उत्तरके ६ ट्रियों के सिवाय नीचे लिखे मेम्बर प्रक्रमकारिणीमें और शामिष्ठ किये गए-७ पं० गोपालदासनी बरैया, ८ सेट गुरुमुखराय सुखानंद, ९ गांघी रामचंद नाथा, १० पंडित घनालाल काशलीताल, ११ परीख चुनोलाल प्रेमानंद, १२ जौहरी चुनीलाल झंबरचंद, १३ अण्णाप्या फड्याप्या चौगुले बी. ए. एल. एल. बी.। इनमेंसे ट्रष्टके इस नियमके अनुसार कि सेठोंके बंशमें नो बड़ा ट्रस्टी होगा सो सभापित रहेगा, नौहरी पानाचंद हीराचंद समापित, खनाश्ची झंबेरी प्रेमचंद मोतीचंद सेकेटरी, हीराचंद नेनचंद आ० माजिप्टेट शोलापुर तथा ज्वाइन्ट सेकेटरी नौहरी चुन्नोलाल झंबेरचंद नियत हुए। व्रेवके सर्व कीमें भगवत्के दर्शनसे आनन्दित होती थीं। ता. १६ जनवरीको सेठ माणिकचंदने सर्थ मुख्य माइयोंको छेनाकर सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगका निरीक्षण कराया तथा वहाँ बोर्डिंगकी ओरसे एक सभा हुई। समापित खाला बद्रीदास पानीपत हुए। पंडिंग मंगतराय व बोर्केछाल खनां-चीने बोर्डिंग देखकर हर्ष प्रगट किया। सभापितने १०) दस दस रूपये मासिककी एक संस्कृत व १ इंग्रंजी विभागमें ऐसी दो छात्रवृतिएं १ वर्षको दी।

बाबू शीतलप्रसाद्नीको स्त्रीशिक्षा प्रचारकी बहुत रुचि
थी। यह जैनगजटमें इमकी उत्तेजनाके बरास्त्रीशिक्षाके लिये अ- बर लेख दिया करते थे। इनको विश्वास
ध्यापिकाओंका था कि विना स्त्रीशिक्षाके प्रचारके समाज
प्रचन्ध। कभी सुधर नहीं सक्ता। लखनऊमें इन्होंने
श्रीमती पार्वतीबाईको कुछ विद्याका स-

हारा देकर स्त्रीशिक्षांक प्रचारमें उत्तजित किया था। फिर जबसे मगनबाईजीका समागम हुआ इनको बारबार लेख लिखने, उनको शुद्ध करने, व्याख्यान देनं व स्त्रीशिक्षा-प्रचारमें तन मन धन खगाने-की प्रेरणा की तथा तात्त्रिक दृष्टिके लिये श्री अर्थ-काशिकाजीका स्वाध्याय कराया। नित्य बंगलेपर रहते हुए शीतलप्रसादजीका मगनबाईजीको यही उपदेश होता था कि अध्यापिकाएं जबतक तथार न होंगीं तबतक कन्याशालाएं खुल नहीं सक्तीं। इससे बम्बईमें कुर आश्रम खोला जाय उसमें विवशा व श्राविकाओंको रखकर सिखाया जाय। मगनबाईजीको यह बात पसंद आगई थी, पर जब

क्रेंड माणिकचंद नीसे ममनवाई वर्णन करती तब सेढ़ नीके ध्यानमें यह बात यकायक नहीं आली थी। एक दिन सबेरे जब मंदिर-जीसे स्वाध्याय करके सेठनी दीवानखानेमें बैठे थे तब शीतलप्रसाद-जीने मगनवाईजीके सामने सेठजीको बन्टामर खूब समझाके कहा कि आप यदि जैन जातिका उद्धार करना चाहते हों तो जनतक माताएं धर्मात्मा व पुआचरणी नहीं होंगीं, समानका उद्धार नहीं हो सक्ता; क्योंकि जबतक माताएं अच्छी न होंगी पुत्र योग्य नहीं पैदा हो सके। स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाएं तय्यार करनेका प्रय-त्न करेना चाहिये। सेठनीने कहा कि बाहरसे कोई आनेवाळी नहीं हैं। तब बहुत जोर देकर शीतलप्रसादजीने कहा कि आप इसका उद्या तो करें। तब सेठजीने अपने एक मकानमें २, ४ कोठरियां खाछी कर दीं और मगनबाईनीको आज्ञा दी कि पढ्नेबाछियोंको बुलाओ फिर और प्रबन्ध हो । तब मगनबाईजीने ता. १६ फर्वरी १९०६ के जैनगनटमें यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि बम्बईमें श्राविकाश्रम खोलनेका प्रबन्ध हुआ है, फार्म मंगाकर श्राविकाएं मर कर भेजें तथा स्वीकारतापर यहाँ आर्वे । युहां उनके भोजनपान आदि व शिक्षाका कुछ प्रबन्ध किया गया है। यह नोटिस वर्तमानमें चलने वाले आविकाश्रमका बीन भूत है।

मगनबाईजीको यह भी प्रेरणा की गई कि वह पड़ी लिखी लियोंसे पत्रव्यवहार करे कि वे अपने २ बाहरकी पड़ी लिखी यहां स्त्रीशिक्षाकी उत्तेननामें उद्योग करें लियोंसे पत्रव्यवहार। इस पत्रव्यवहारके प्रभावसे श्रीसती गंगादेवी मुरादाबादने मगनबाईजीको फ-र्वरी मासमें लिखा कि मैंने मंदिरजीमें ८ से ९ तक लियोंको नं॰ २-तत्वार्थसुत्र ४ से ६ अध्याय और प्रकार्थसिद्ध युगाय ९० श्लोक।

नं० ३—तत्वार्थ सूत्र ७ से १० अ० और द्रव्यसंग्रह पूर्ण।

सन् १९१२ में ६० इंग्रेनी पढ़नेवालों मेंसे १८ छात्रोंन

परीक्षा दी थी जिसमें १९ पास हुए थे। तथा सन १९१४ में

१२ में से २९ ने परीक्षा दी थी १५ पास हुए। इस बोर्डिंगमें

कसरतशाला, रीडिंगरूम, लाइबेरी भी है। छात्रोंको इतना आराम क
पढ़नेका सुभीता है कि सर्कारी परीक्षाओं में बहांके छात्रोंका बहुत
अच्छा फल रहता है।

धर्म दिक्षा हेकर नो छात्र बहांसे निकल कर जाते हैं उन-मेंमे अधिकांश वार्मिक आचार व उसकी उन्नतिके उपर अपना स्वभाव रखते हुए देखनेमें आते हैं जिनके कुछ उदाहरण ये हैं—

- १-दि॰ बरुवंत बाबाजी बुगटे, मेट्कुलेशन पास, पैतृक कृषिकर्म, दक्षिण महाराष्ट्रजैन सभामें खास भाग ।
- २—दिं ल्डे अणाप्पा बाबाजी, एम. ए.; मकीरी काम, द० म० सभामें खास भागतथा Jainiva प्रस्तकरची है।
- ३--वं मेहता मक्तजी जूठा, बी. ए. बारिष्टरी, वं. समाजमें धर्म व जातिकी उन्नतिमें अग्रसर ।
- ४—दि० परीख लल्लुमाई प्रेमानंद, एल. सी.ई., बम्बईमें असिम्टेन्ट क्लेक्टर इन्क्टैमक्स, अहमदाबाद, रतलाम बोर्डि० व

श्राविकाश्रम बन्गईकं मंत्रो व प्रान्तिक समाके मुख्य कार्याध्यक्ष ।

- ५-१वं० बरोड़िआ उमेर्चंर दौठाचंर जूनागढ़, बी० ए०, इवे० जैन वन्करेन्सके मंत्री।
- ६ दि॰ शाह नानचंद्र पृतामाई, मञ्जन, बी०ए०, मास्टर हाईम्क्रूड बड़ौदा, नित्य वार्मिक कियामें लीत व दि॰ जैन पाठशा-लाके निरीक्षक
- इने॰ उदानी मनीलाल हुकमचंड भेनपुर, एम॰ ए॰, वकील, जाति उल्लिक कामोंमें तस्यार ।
- <-,, अंकल यशवत सांगणा बेलगाम, बी० ए०, सर्कारी रेकेन्य्रमें चाकरी, वर्भमें बहुत प्रेम हैं।

यहांसे जो छात्र पढ़के गए हैं वे अच्छे २ पहाँ पर प्रतिष्टित हैं पर उनकी धार्मिक प्रसिद्धिका पना नहीं है जैसे—

- े—स्वे॰ परीख परभूलाल वावजी गोंडल, एल. एल. बी., मुनमफ, गोंडल ।
- २-,, कोटारी प्रभाशंकर त्रीकमनी एल० एम० एंड० एम०, चीफ मेडिकल आफिसर छतरपुर (बुदेलखंड) ।
- २--,, मोदी अमृतलाल बर्द्धमान वांसदा, एम० ए० एल० एल० बी०, नायब दीवान वांसदा स्टेट जिला सुरत।
- 3—स्वै॰ नाणावटी चंदुलाल बालाभाई बड़ौघा, बी॰ ए॰, चीन देशमें शांमहाईमें न्यापार ।

५-व्वे० शाह त्रिमुवन ओघवजी भावनगर, बी० ए० एल० एल० बी॰, सोलीसिटर।

६-वं शाह सोमचंद करमचंद राजकोट, बी० ए० एत० एत० बी . चीफ वकील नवानगर काठियावाड ।

इत्यादि उपर लिखित व्यवस्था दिखानेका प्रयोजन यह है कि बोर्डिंगके आध्यसे कितना लाभ हुआ है। जब तक स्वतंत्र जैन कालेज मुख्य २ प्रान्तोंमें न हों तब तक ऐसे बोर्डिंगोंक होनेसे छात्र ऊंची शिक्षा लेकर लौकिक उन्नति करेंगे तथा धार्मिक शिक्षाके बीनसे अवस्य उनके जीवनमें धर्म शिक्षा रहित हात्रोंकी अपेक्षा आचरण आदिमें कर्क रहता है।

यहां पर जो छात्र रहते हैं उनको दिवसमें शामकी ज्याल करने व कंदमूल आदि अभक्ष्य पदार्थ न देनेका नियम है ।

सन् १९१६ दिसम्बर तक जबसे बोर्डिंग खुला उसका संक्षिप्त नक्शा और भी दिया नरता है 1

## १६ वर्षका संक्षिप्त नकशा।

शुरूसे २११ खेट छात्रीने लाम लिया २३३ दि० छात्रोंने " १८ ने एल. एल. बी. परीक्षा पासकी १८ ,, बी० ए० 75 कुल ३४९८०) बात्रवृत्तिमें सर्च किया गया

इस बोर्डिंगकी कमेटीके आघीन और मी कई फंड हैं जिनका योग्य उपयोग होता है--उनमें एक बहुत विद्यार्थी लोनफंड। उपयोगी फंड विद्यार्थी लोनफंड है। इसमेंसे विद्यार्थियोंको कर्न दिया जाता है नाकि उनका अभ्यास न छूटे। इसके लिये सेठ माणिक बंद्जीने ताः २५--१०--१९०४ को ५००) अपनी पुत्री फूलकौरकी यादगारमें दिये थे। इसमें रुपया आते जाते रहकर सन १९१२ के अंतमें रु. १०१५ ॥ = )। थे इसमेंसे विलायत इंजीनियरीका अभ्याम करनेको, जाते हुए वोरा छोटालाल हरजीवनदा-सको २००) दिये गए थे। यह स्था० खं० माई आजकल बड़ीधा कलाभवनके प्रिनितपल हैं। तथा ५०) बनारसीटास जलेसरको बी. ए. के अभ्यासके समय दिये गए थे। यह अब बकालत करते हैं। यह सब रुपया पीछ आगया है। सन् १९१२ में ४ छात्रोंको २२३॥=)॥ कर्नके दिये गए थे। छात्रोंको थोड़ीसी मदद मिलनं पर वे अपना अभ्यास अच्छी तरह आगे चला सकते हैं। ऐसे र फंड धनादचोंको कायम करके छात्रोंकी सहायता करनी चाहिये।

प्राचीन शास्त्रोंके उद्धारका प्रेम सेठ माणिकचंदमें कितना था इसका एक नमूना तो धवलादि ग्रंथोंकी शेठ माणिकचंदजीका एनरावृत्ति है सो आगे बता चुके हैं। दूसरा शास्त्र प्रेम। यह है कि जब विद्वानोंसे आपने मालूम किया कि स्वामी समन्तभद्राचार्यने श्री उमास्त्रामी

कृत दशाध्याय तत्वार्थसूत्र पर गन्धहस्त महाभाष्य नामकी ८४००० श्लोकोंमें वृत्ति बनाई थी तथा अब जिसका पता कहीं नहीं लगता है तब आपने 'जैनमित्र' अंक २ फर्वरी १९०० में यह नोटिस प्रसिद्ध किया कि जो कोई इस ग्रंथका हमको दर्शन मात्र करा देंगे उन्हें हम बड़ी खुशीसे ५००) ह० इनाम देंवेंगे।

अपने पूज्य पिताकी यादगार कायम रखनेके लिये सं० १९५६ में जैन बोर्डिंगके सिवाय दूसरा म्तृत्य काम सूरतमें ही० गु० सेठ माणिकचंदजीने यह किया कि म्हरतमें जैन पाठशालाकी एक '' हीराचंद गुमानजी जैन पाठशाला '' स्थापना। मिती चैत्र सुदी ९ के दिन सबेरे खपाटिया चकलाके श्री चंद्रप्रमुके मंदिरजीमें स्थापित

की । इसका महूर्त बड़ी घूमधामसे किया गया जिसका सर्व प्रबन्ध सेट चुन्नीलाल झवेर चंदने किया । सेठ हरगाविन्द्दास देवचंद मोती-रुपावालोंके सभापतित्वमें सभा हुई । बालक और बालिकाओंको इनाम दिया गया तथा तीन शिक्षक नियत करनेका टहराव हुआ । मिती बैसाख सुदी ३ तक इसमें ३० लड़के व लड़कियां हो गई थीं जो संस्कृत, धर्म शिक्षा व इंग्रेजी आदि पहते थे जिनमें प्रवेशिकाक ग्रंथ पढ़नेवाले ५ छात्र थे । इन्हींमें हमारे उत्माही मूलचंद किसमदासजी कापिइया भी थे, जिनको सेटजीने रत्नकरंड धावकाचारकी पुस्तक देकर उत्साहित किया था तथा इन्हींको पाठशालाका प्रथम उपमंत्री और पीलेसे मंत्री भी किया था। यह पाठशाला कई वर्षों तक ठीक चली फिर मुस्त हो गई। छात्रोंने आना बन्द किया पर मूलचंदजीने बराबर विद्याम्यास जारी किया जिससे आपने शास्त्रीके पास चंद्रपम काव्य तक देख लिया व व्याकरण तथा धर्ममें महासमाके परीक्षालयसे रत्नकरंड ध्रावकाचार,

तत्वार्थसूत्र, द्रञ्यसंग्रह, कातंत्र पंचसन्धि-पट्लिंग और चंद्रप्रभ काव्य छह सर्गमें परीक्षाएं भी पास कीं और दो परीक्षाओंमें तीन २ रुपये पारितोषक भी प्राप्त किये।

सुरतमें एक अति प्राचीन मंदिर जुना पड़ा हुआ था जिसके भूमित्रमें दे बड़ भज्य प्रतिबिम्बर्थ, जिनमें मूरतमें दि० जैन एक जो श्री पार्श्वनाथजीकी है उस पर संवत् मंदिरका जी १२३५ है और दो पर कुछ भी लेख नहीं जोद्धार । है। इस मंदिरका जीजीद्धार रू० ७०००) मर्च कर दोठ चुन्नीलाल झवेरचंदने

कराया तथा इमकी जीणोद्धार प्रतिष्ठा मिती वैसाख सुदी ३ के दिन थी। वास्तुविधान, ध्वजारोहणादि कार्यको विधि पूर्वक करानेके लिये नांदणी (कोल्हापुर) के पंडित कलाप्पा भरमाप्पा निटंब आए थे। उत्मव बड़ी धूमधामसं किया गया था।

उत्सवमें आविकाश्रम बम्बईमें मुख्य आनेररी संचालिका श्रीमती

रुलिताबाई अंकलेश्वरसे आई थीं। यह मुनीम रुलिताबाईका धर्मचंद्नी सेत्रुं नयकी भाननी हैं। उस समय परिच्य । यह संस्कृतका अभ्यास कर रही थीं। सेठ माणिकचंद्नीको इसके मिलनेसे बहुत हर्प

हुजा तथा मगनबाईजीको तो एक द्वितीय हस्त ही मानों मिल गया। इसकी भी वैधन्य दशा थी। उमर मगनबाईजीके बराबर ही थी। सेटजीने इस बाईको भी विद्याम्यासमें खूब दत्तचित रहनेके लिये प्रेरित कर दिया। इस समय वे भूमिन्नरकी प्रतिमाएं उत्पर बेदी पर बिराजमान की गईं। इस मंदिरका नाम श्री शांतिनाथजीका मंदिर प्रसिद्ध हुआ।

सेठ माणिकचंदजीको यह जानकर बहुत शोक हुआ कि भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभाके सभापति राजा लक्ष्मणदासजी- राजा सेठ लक्ष्मणदासजी सी का देहान्त और आई० ई० मधुरा अपनी केवल ४५ वर्षकी आयुमें १५ नव० सन् १९००के धर्मशाङाका विचार। दिन इम संसारसे कुच कर गए। सेठजीको अपनी स्थितिपर ध्यान आया कि मेरी अब स्या अब ४८ वर्षकी है। कालचक हरसमय सिर पर चूम रहा है इमसे मुझे जो कुछ करना हो सो शीघ कर छेना चाहिये। आप सोचने रंगे कि बम्बईमें दि॰ जैन यात्रियोंको जो श्री पालीताना, गिरनार, पावागढ, आबू, तारंगा आदिकी यात्रा करते हुए बम्बई आते हैं ठहरनेकी बड़ी भारी तकलीफ होती है इससे इनके लिये शीव्र एक बड़ी भन्य धर्मशाला बन जावे तथा उसमें एक लेकचर हॉल भी हो जिससे जैन व जैनेतर विद्वान अपने अनुभवकी बार्ते सुनाकर सर्व साधारणका कल्याण करें। दूसरे मेरी इच्छा है कि गुजरात व दक्षिण में शीघ ऐसे ही बोर्डिंग स्थापित हों तथा जो जैनियोंमें कुरीति व अनेकता फैड़ी हैं सो मिटै इत्यादि काम जितनी जल्दी हो मुझे करने चाहिये।

एक दिन अपने विचार किया कि जैनियों में ८४ जातियां है
पर सिवाय दोचारके और किसीके इतिहासका
जैनियों में ८४ जातिके पता नहीं तथा प्राचीन शास्त्रों में तो सिवाय
इतिहासके लिये बाह्मण, क्षत्री, वैश्य और शृद्ध चार क्णोंके
इनाम। और जातियों का पता नहीं चलता। येजातियाँ
कैसे हुई इसकी चर्चा भी समाक मेम्बरीस

चलाई पर चित्तको सन्तोष न हुआ तब आपने एक नोटिस 'जैनमित्र' व 'जैनगजट में अपने नामसे मुद्रित कराया । यह जैनमित्र अंक १०-११ प्रथम वर्ष सन् १९००में व जैन गजट अंक ४ इटा वर्ष सन् १९०१में मुद्रित है। वह इस मांति है—

## ५०) रु. इनाम।

" पुराण और शाम्त्रोंके देखनंसे मालुम होता है कि पहिले ममयमें त्राह्मण, क्षत्रिय, वैदय और शुद्ध ये चार जातियें ही थीं। ययपि शुद्र जातिके गुणकर्मानुसार खाती, रंगरेन, दरजी, धोबी, कुम्हार, लुहार, आदि जातियं प्राचीनकालसे प्रसिद्धिमें हैं, परंतु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैस्य तथा खासकर जैन वैस्योंमें जुदी २ जातियं अप्रवाल, खंडेलवाल, ओमवाल, जैसवाल, परवार, सैतवाल, वयंग्वाल आदि नहीं थी और वर्तमानमें प्रसिद्धि है कि जैन जाति-कुछ समय पहले ८४ विभागों में विभक्त (बंटी हुई) थी, जिनमें की २०-२५ जातियां वर्तमान समयमें मोजूद भी हैं और अग्रवाल, खंडेलवाल आदि कई जातियोंकी उत्पक्तिके इतिहास भी प्रसिद्ध हैं सो इन बातोंके विचारनेसे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि हमारी यह पवित्र जैन जाति (वैश्य जाति) एक ही थी परंतु पीछेसे अनेक कारणोंसे अनेक नातियाँ (टुकडा) हो गई और उनमेंसे ५०-६० जातियाँ हम लोगोंके जन्मसे ही नष्ट हो गई और रही सही जातियाँ दिनों दिन नष्ट होती जाती हैं जिसका उपाय अनेक जातिहितैषी महाशय अहो रात्रि सोच रहे हैं परंतु अभी तक अन्छ होती हुई जैन जातियोंके उदारका कोई भी उपाय दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हमारी इच्छा है कि जातिहितैपी भाइयोंको पहिले यह बात जानना चाहिये कि:-

- (१) हमारी बहुत बड़ी पवित्र जैन नातिके ८४ टुकड़े क्यों हुए हैं
- (२) और सिवाय २०--२९ जातियोंके अन्य जातियां शीघ्र ही क्यों नष्ट हो गईं !
- (३) और अब वर्तनानमें कौन २ मी जाति कहां २ पर कितनी २ मौजूद है :
- ( ४ ) और उनमें में कौन २ सी जाति शीघ हो नष्ट होने वाली है !
  - ( ५ ) और उनके नष्ट होनेके मुख्य २ कारण कौन २से हैं ?
- (६) तथा नष्ट होती हुई उन जातियोंकी वृद्धि (उन्नति) करनेके कौन २ उपाय हैं: —

इन ७ प्रश्नांका उत्तर प्रमण महिन मिनिन्स मिने विना नातिहितैपियोंके नात्युन्नित कारक उसप करने हमारी समझमें तो युथा ही हैं। इम कारण हम हमारी नातिके परम-हितैषी शोधक विद्वानोंमे हाथ जोडकर प्रार्थना करने हैं कि नो महाशय उक्त प्रश्नोंके उत्तरकृष एक "जैनजाति-द्रपण" नामक इतिहासकी पुस्तक लिखकर मेंनेंगे उनको नातिहित साधनेका महान पुण्य और यशकी प्राप्तिके सिवाय उन पुस्तकों-मेंसे ५ विद्वानों की कमेटीद्वारा नो सबसे अच्छी और प्रमाणीक समझी नायगी उसके रचयिताको ५०) रू. नकद इनाम दिये नांयगे। आशा है कि हमारी इस प्रार्थना पर विद्वजन अवस्य ही ध्यान देंगें। जिनको यह पुस्तक बनाना हो वे प्रारंभसे पहले हमको सूचना देकर प्रारंभ करें नहीं तो वह पुस्तक कमेटीमें पंज्ञ नहीं हो सकेगी।

> जैनियोंका हितैषी— जोहरी माणिकचंद पानाचंद्,, पोष्ट कालवांदेवी. बस्बई ।

इस उत्तर लिखित विज्ञापनको पढ़नेसे सेठ माणकचंद्रजीमें जानिप्रियता कितनी चरम सीमाकी थी उसका साक्षात् पना लगता है। जैसे आज कल कोई र विद्वान् जैन जातिकी कमीके कारणोंको दृंद रहे हैं व उसकी वृद्धिके उपायोंको सोच रहे हैं ऐसे ही सेठजीको चिन्ता थी।

विज्ञापन दंने पर भी अनतक इस जैननातिदर्पणको किसीन भी नहीं लिखा इसका कारण यही है कि हमारे जैन विज्ञान प्राचीन ज्याज लगानेमें परिश्रम नहीं उठाते। अब भी यदि कोई इस पुस्तकका पाठक इस सुचनाके अनुमार पुस्तक तय्यार कर तो वह संठनीकी स्मृतिमें ही समझी जायगी। पाठकोंको अगो चलकर मालुम होगा कि जातियोंकी संख्या आदिका ठीक २ पता लगानेके लिये सेठजीन दि. जैन डाइरेक्टरी अनुमान २००००) खर्च कर दिगम्बर जैन बनानेका बीज। डाइरेक्टरी तय्यार कराके छपाई है जिसका मूल्य ८) है इसके देखनेसे जातियोंकी कमीका पूरा २ पता चलता है पर जो २ विचार उपर दर्शीए गए

हैं उन ७ प्रश्नोंके उत्तरमें अमीतक किसीने कढ़म नहीं उठाई है 🕽

इस सभाके स्थापित होनेका पक्का विचार तो कार्तिक सुदी
१४ सं० १९५६ को बम्बईकी मभामें
वम्बई प्रान्तिक हो चुका था पर प्रान्तके सभासदोंको नियमासभाका कार्यारंभ। वलीके अनुमार एकत्र करनेमें करीब १
वर्षके बीता। मिती आश्विन सुदी २ सं.
१९५७ को इसका एक परोक्ष अधिवंशन होकर २१ सभासदोंकी
सम्पतिसे ८ प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

प्रबन्धकारिणी सभा २८ समासदौँकी नियत हुई उनमेंसे मुख्य सभासद व कार्यकर्ती यह हुए—

सभापति—सेट माणिकचंद पानाचंद्रजी । उपसभापति—राजा दीनद्यालजी । महामंत्री व 'जैनमित्र 'के सम्पादक—पंडित गोपालदासजी बरैया ।

कोषाध्यक्ष—सेट गुरुमुखराय मुखानंद ।

•ंत्री विद्याविभाग-अण्णाप्य फड्याप्या चौगुले बी. ए.।

•ंत्री विद्याविभाग-अण्णाप्य फड्याप्या चौगुले बी. ए.।

•ंत्री उपदेशक विभाग—सेट नाथारंगर्जा।

•ंत्री तीर्थक्षेत्र—सेट चुनीलाल झवेरचंद नौहरी।

•एस्तकाध्यक्ष—पंडित धनालालनी।

शोलापुर, बेलगांव, आमोद, सोजित्रा, आदिके सेठ हीराचंद्र, कुवेरप्पा भरमाप्पा हंगले, हरजीवन रायचंद्र, शाह सावलदास प्रमुदास आदि सभासद हुए। मगसर सुदी १५ सं. १९५७को बम्बई सभाने अपने उपदेशक भंडार, अनाथालय, जैनमित्र, व शिखरजी सम्बंधी काम पान्तिक सभाके जिम्मे कर दिये और यह अपना काम जोर शोरसे चलाने लगी।

जैसे सेट माणिकचंद्रजी स्वयं दान करते थे वैसे दूसरोंको भी प्रेरित करते थे। बम्बईके सेठ माणि-सेट माणिक चंद जीकी कचंद लाभचंद चौकसीकी विववा पत्नी नवलबाई गु. भादो बदी ११ सं. १२,५६ दानार्थ प्रेरणा 🕒 को गुनर गई। इसको धर्म व विद्याकी हिन थी। सेट माणिक चंद्रजी इसको धर्मार्थ खर्च करनेकी सदा प्रेरणा क रते रहते थे। मरणके पहले इमने १२०४२) का दान करके यह वसीयत नामा किया कि-

- ५००१) रु. के व्याजसे बम्बईमें एक जैन पाटशाला आने पतिके नामसं चले।
- ३०६९) श्रम खातेमें टृष्टियोंकी इच्छानुसार।
- ६०२) मेंसे १००) चांदीकी प्रतिमा बम्बई मंदिरमें, २५०) सोनका छत्र मुरतके जुने मंदिरमें, ५१) फलटनके आदि-नाथ मंदिरमें छत्र व उपकरण, २०१) कर्मदहन, जिन गुणसंपत्ति, मोल्ह कारण व दशलक्षणीके उद्यापनमें ।
- ३१५) शिखरनी, गनपंथा, चंपापुर, तारंगा, गिएसार, मांगी-तुंगी, पात्रापुर, कुंथलगिरि, पालीताणा, केशरिया, दहीगांव, सूरतके विद्यानंद स्वामी इन १२ स्थानोंमें २५) पचीस २ रुपये व १५) बस्बईके तेरापंथी मंदिरमें चांदी-का छत्र।

२०५) मरण कियामें खर्च। २८५४) सम्बन्धियोंको बांटा जाय।

कुल १२०४२)

सेठ माणिकचंद पानाचंद, सेठ प्रमचंद घरमचंद, सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर, शाह भगवनदास कोद्रमी तथा शाह ल्लूभाई लक्ष्मीचंद दृष्टी नियत हुए।

श्रीमती मगनवाईक पतिके वियोगसे माता चतुरवाईके दिलको बड़ा भारी बका लगा। एक तो वह पहले ही श्री॰ चतुरवाईका बीमार रहती थी अब अधिक बीमार रहते परलोक गमन। लगी। जब जब यह मगनवाईजीको देखती इसके आंसु भर आते थे। दूसरा दुःख

इसमें जासु पर जारा पा दूसरा दुःस उमके दिलमें प्रका जीवित न रहना था। इसको ३ प्रत व ४ प्र-त्रियोंका लाभ हुआ पर केवल ३ लड़िकेंबें ही जीवित रहीं, शेष सन्तानें केवल गर्भका भार देकर हीव कुछ दिन माताकी गोदको भरी हुई करके खाली कर गई। शरीरकी अस्वस्थता और मनकी दुर्वलता दोनोंने इसको ऐसा द्वापा कि गु० मिती मगसर सुदी ८ सं० १९९० रात्रिको इसको मरोसा हो गया कि अब मेरा जीवन नहीं रहेगा, मगनवाईको पास बिठा लिया। मगनवाईको अंतरंगमें बडा खेद हुआ। सेठनी भी आगए और एक दफ प्रेमहृष्टिसे देखकर बोले-नेरे स्मरणार्थ हम २०००)का दान करते हैं। इसकी दान सुची भी आप कहते गये और मगनवाईनी लिखदी गई। इस भांति दान किया—

१०००) बम्बईके हीराचंद गुमाननी जैन बोर्डिंगके विद्या-



सेंडजीकी प्रथम पत्नी श्रीमती चतुरबाई.

देखो एष्ठ १४३)

J. V. P. Surat.



सेठनीकी द्वितीय पत्नी नवीबाई.

J. V. P. Surat.

( देखो वृष्ठ ३४२ )

थियोंको जो धर्मकी परीक्षामें प्रथम रहे उसे इसके व्याजसे प्रति वर्ष इनाम देना ।

- १००) जीवद्याके छिये।
- १००) बाहरगांवके मंदिरोंमें उपकरण ।
- ९००) बम्बईमें दशलक्षणी पर्वके १० दिन ४ वर्ष तक २५) की पूरी गरीबोंको बांटना ।
- १००) सुगंधदरामी त्रत और फलदराम त्रतका उद्यापन करना ।
- १००) अन्य धर्मकी टीपोंमें देना।
- १००) बम्बईके उपदेशकपंडारमें ।
- १००) बम्बई प्रान्तके •तीर्थक्षेत्र खातेमें।
  - ५०) केशरियाजीमें सोनेका छत्र मेजना।
  - ५०) सम्मेदशिखर मंडार।
  - ५०) पाछीताना
  - ५०) पावागढ्
  - २५) गनपंना ,
- ५०) पावापुर
- ५०) शोलापुरकी चतुर्विधदानशाला ।
- २५) गि(नार मंडार
- २५) चंपापुर ,,
- २५) औषघालय केकड़ी।
- १६) सूरत जैन पाठशालाके बालकोंको इनाम ।
- ५०) मगनबाईको गुजरात वनिक्युलर सोसायटी अहमदाबादका लाह्फ मेम्बर बनाना ।

५०) मगनबाईको मगनभाई प्रतापचंद जैन लाइन्नेरी—सूरतके लिये गु० वर्नाक्षुलर सोसायटीका लाइफ मेम्बर बनाना । २२१६ कुल जोड ।

इन दो सोसायटियोंका छाइफ मेम्बर बननेसे गुजराती भाषा-की पुस्तकें सब पढ़नेको प्राप्त हो सक्ती हैं। मगनबाई विद्यामती हो इसी आशासे मातापिताने यह कार्य किया।

इस मांति दानका संकल्प किया । मगनबाई कृपाबाईजी आदि रात्रिभर धर्मका उपदेश व णमोकार मंत्र सुनती रहीं । प्रमान होते ही चतुरबाईका आत्मा शरीरको छोड़कर चल दिया । इम ममय बाईकी उम्र करीब ४० वर्षकी ही थी ।

सेठ माणिकचंद और चतुरबाईका परम्पर प्रेम हमेशा ही रहा था इमिलिये सेठनीका एक बड़ाभारी सहारा जाता रहा । इस समय छोटी कन्या तारामतीकी अवस्था करीब ाव वर्षके थी । यह गुन-राती शालामें पढ़ने जाती थी ।

सेट माणिकचंद और भतीजे प्रेमचंद अब घार्मिक व मामाजिक कार्यों में और भी अधिक भाग होने हो। ४२ ग्रामोंका विरोध गुजरात देशमें ओरान प्रान्तके ४२ प्रामों-मिटाना। के २५० घर हैं। इनमें कई वर्षोंसे विरोध होनेके कारण परस्पर आहार व विवाह सम्बन्ध

बंद था। ता० १० जनवरी सन् १९०१ को सेठ माणिकबंद और प्रेमबंद प्रान्तिक समाके उपदेशक मुत्रालाल राजकुमारको साथ लेकर आरान आए, उस समय सर्व प्रामवासी एकत्र हुए।

उबदेशकसे उपदेश कराया । फिर सेटोंने सर्व भाइयोंको इस तरह युक्तिपूर्वक प्रमझाया कि उनका परस्परका विरोध मिट गवा और सर्व एक हो गए । तब सेटजीने अपने खर्चसे उन सर्व माइयोंको एक पंक्तिमें बिटाकर भोजन कराया । धर्मके बारसल्य गुमको बढ़ाकर आपने बड़ामारी उपकार किया ।

शोलापुर निलेमें बासीं स्टेशनसे २० मील आकलून ग्राम है। यहां २० घर दि० जैनोंके हैं। प्रसिद्ध आकळ्जकी प्रतिष्ठा दानी व व्यापारी जिनवाणीयक सेठ ना-और प्रान्तिक सभाका थारंगजी गांधीका यही जनम प्राम है। सेठ नाथारंगजीके ७ एत्र थे । इस सबय सेठ अधिवेजन । शिवरामके सिवाय सेठ गंगाराम, रामचंद्र, आदि छहों भाई पुत्राप्ति सहित मौजूद थे। इनकी दूकाने पंदरपुर, बीजापुर, आकलून तथा बम्बईमें हैं। एक जिन मंदिर पुराना था पर धर्मध्यान टीक न होनेके कारण दूसरा मंदिर बनवाया था, इसकी जिन-बिम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव मिति माच सुदी ९ मं० १९५७सं १३ तक था। प्रतिष्ठाकारक शोलापुर पाठशालासे तथ्यार हुए व वहीं प्रथमा-ध्यापक श्रीमान् पंडित पासू गोपाल शास्त्री थे । इसी अबसरपर बम्बर्ट प्रांतिक सभाको निमंत्रित किया गया था, इस कारण २००० के अनुमान नरनारी एकत्रित थे। बम्बईके जींहरी माणिकचन्द पाना-चन्द्र सर्व कुट्रम्ब सहित व पंडित गोपालदासनी आदि पश्चेर ये। प्रांतिक समाकी तीन बैठकें हुई। प्रयम दिन सभापति रा० रा० मोतीचन्द् मळ्कचन्द कल्लनकर फल्टननिवासी हुए। दूसरे दिन मात्र सुदी ११ को हमारे चरित्रनायक सेठ माणिकचंद जी समापति हुए । आपने चौथ प्रस्तावपर बहुत जोर देकर कहा कि-हम जैनियोंको जैन पद्धतिसे विवाह करानेका स्निन डालना चाहिये। प्रस्ताव पांचगं यह पास किया कि जैन समाजकी. स्त्रियों में धार्मिक व तद्विरुद्ध सांसारिक दिश्लाका प्रचार किया जाय। ७ वें प्रस्तावमें पं० घनालाल उपदेशक विभागके मंत्री और सेठ प्रेमचन्द्र मोतीचन्द्र जींहरी सरस्वती मंडारके मंत्री नियत हुए। सभामें संठनीके मित्र पालीतानेके मुनीम धर्म-चन्द्रजी मी पथारे थे। आपने सत्रुं नय तीर्थपर धर्मशालाकी सहायताके लिये लोगोंका ध्यान खींचा। सुदी १२ के दिन तीसरी बैठकमें भी हमारे सेठनी ही सभापति हुए। इस जलसेमें पंडित गोपालदासने बम्बईमें एक संस्कृत विद्यालयके स्थापित होनेकी आवश्यका बताकर अपील की त्ये तुर्त १२८) का चन्दा हो गया, जिममें १०१) सेठजीन अपने पूज्य पिताके नामसे दिये। इस प्रतिष्ठामें नैनसिद्धांतके महत्वपर पं० गोपालदामनीके पिल्लक ज्याल्यान बहुत प्रभावशाली हुए।

प्रांतिक सभामें स्त्रीशिक्षाका प्रस्ताव पास होनेपर माघ सुदी १२ दुपहरको ६०० स्त्रियोंन एकत्र हो प्रांतिक सभाके साथ स्त्रीस्त्रभा की। इसमें अंकलेश्वरकी लिलता-स्त्रियोंकी प्रथम सभा। बाई, शोलापुरकी रखाबाई, आकलूनकी ज्ञानीबाई, बम्बईकी माता रूपाबाई और सगनबाई जीने धर्म, आवरण, मिध्यात्व और कुरीति निवारणपर व्याख्यान दिये। सगनबाई जीने अनित्यपंचाशतके संस्कृत श्लोक सार्थ सुनाए, जैन कन्याशाला स्थापित करनेकी प्रेरणा की व पढ़ने पर जो दिया। अनेक स्त्रियोंने पढ़ना स्वीकार किया। इसमें अजैन प्रतिष्ठित स्त्रियां भी आई थी जो ज्याख्यान सुनकर बहुत प्रसम् दूई।

मात्र सुदी १२ की रात्रिको सर्व सभाकी ओरसे सेट माणिकचन्दजीने पंडित गोपालदास पं० गोपाळदास और बरैया और पंडिन घनालालजी कामलीवाल-धन्नालालजीको को मानपत्र दिया, क्योंकि इन दोनों वि-हानोंके प्रयत्नसे सभामें आगन्तुकोंको बहुत मानपत्र । धर्मनाभ हुआ था। शास्त्रस्याच्यायकी आवश्य-क्ता बताए जाने पर २५० भाइयोंने स्वाध्यायका नियम छिवा था। सेठ नाथारंगजीने ६ जिवनारं दीं । (३५५) मंदिर भंडार व

२०१) संस्कृत विद्यालय बम्बईको दिया तथा ४५० घमेवरीला, सटीक, ४५० अकलंकस्तोत्र सटीक व ४५० मोतियोंकी जापें सेट हीगचंद नेमचंद्की रायसे धर्मप्रचार हेत् बांटी। इसी वर्ष ता० ५२ जनवरी १९०१ को भारतपर अग्वंड

राज्य करनेवाली महारानी (एम्प्रेस) विकटो-महारानी विकटोरि- रिया परलोकको सिधार गई । आपने १८ याका वियोग । वर्षकी उम्रमें मन् १८३७ को राज्य ग्रहण करके ६४ वर्ष राज्य किया । इनके नीके महारान्। सप्तम एडवर्ड सिंहामनारूढ़ हुए।

दक्षिण महाराष्ट्र प्रांतमें जैनियोंकी संख्या बहुत है जो मराठी कनडी भाषाके बोछनेवाले व अधिक द्र० म० जैन सभामें खेतीका ज्यापार करनेवाले हैं। इस प्रांतकी सेटजीको अभि- दशाके सुवार हेतु एक समा ३ वर्षसे नंदनपत्र । स्थापित हुई थी । इसकी तीसरी बैठक मात्र सदी १ ता० २१-१ १९०१से कोल्हा- पुरके पट्टाचार्य लक्ष्मी सेन भट्टारक के सभापित वमें श्रीअतिशय क्षेत्र स्तवनिधिपर हुई। इसीमें नियमावली ठीक की गई तथा चौगले बी० ए० एल एल० बी० कील जो बम्बई बोर्डिंग के सुप्रिटेंडेंट रह चुके थे व मेठ माणि कचंदकी छात्रवृत्तिसे विद्या लाममें उत्तेजित हुए थे, ऑनरेरी सेकेटरी नियत हुए। कोल्हापुरमें संस्कृत पाठशालांके लिये १००००)का चंदा हुआ तथा यह तय हुआ कि बम्बई के प्रसिद्ध ज्यापारी सेठ माणिकचंद पानाचंदजी जोंहरीन एक बोर्डिंग स्कूल बांधकर अंग्रेजी व संस्कृत विद्याभिलाषी जैन विद्यार्थियों के लिये उत्तम प्रकारकी तजवीज की है व विशेष करके दक्षिण के विद्यार्थियों को अत्यानंदसे उत्तेजन देते हैं इसलिये उत्तका अत्यंत उपकार मानकर इम सभाकी ओरसे उन्हें एक आनंद प्रदर्शक पन्न भेजा जाय तथा इसी भांति इस कार्यमें उत्तेजना देनेके कारणभूत शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचंदको भी एक अभिनंदनपत्र भेजा जाय।

आकलुन बिम्बप्रतिष्ठांक समयपर शोलापुर, फलटन आदिकं बहुतसे जैनी पथारे थे। सेट माणिकचंदनीको सेट माणिकचंदनीको सेट माणिकचंदनीको मिटकर अनेकोंन ज़ोर दिया कि आवकं दितीय बिवाह। पुत्र नहीं है, पुत्र विना आप ऐसे प्रसिद्ध संटकी शोभा नहीं है, तथा यद्यपि आपकी अवस्था करीब ४९ वर्षकी है पर आपका शरीर दृढ़ परिश्रमी और सब तरह बल्लिष्ट है, आप अवस्थ विवाह करा होवें। सेटजीकी बिल्ड-कुल इच्छा नहीं थी कि मैं ऐसा करूं, किन्तु यही भावना थी कि अब हमें धर्मसेवा व बरोपकार ही करना है, तौ भी जब मावन

रूपाबाई व सेठ पानाचंदने बहुत ज़ोर दिया तब आपने स्वीकार कर लिया ।

फल्टनमें एक बीसा हुमड़ हरीचंद दोहु थे उनकी लड़की नवीबाई उर्फे फूलुबाई हैं, उसीके साथ सेठजीका, चतुरबाईके विवाह मरणके ४ मास पीछे ही, चैत्र मासमें साधारण रीतिसे हो गया। मेठजी पुत्रकी आद्यासे नवीबाईको लेकर बम्बई आगए। वह पढ़ी लिखी नहीं थीं इमलिये सेठजीन उनको अध्यापिका रखकर लिखना पढ़ाना सिखाया।

जैन समानमें इस समय राय बहादुर सेठ मूळचंद्जी अति
' प्रग्न्यात थे। आप धर्मपालनमें बड़े प्रवीण
राठ बठ सेठ मूळ- व शास्त्रके ज्ञाता थे। आपने यद्यपि कोई
चंदजीका वियोग विद्योन्नितका महा स्तम्म नहीं खड़ा किया,
ओर सेठ माणिक- पर अनमरमें पाषाणकी निस्पां बनवाकर
चंदके चित्तका उममें सुवर्णकी अयोध्या, ऋषमदेवके कल्याविचार। णकोंका दृश्य बनवानमें व श्रावक सुह्छेमें
मनोहर सुवर्ण व मीनेकी पचीकारी सहित

मंदिर बनवानं व उसमें सुवर्णम समोशारण स्थापित करनेमें बहुत द्रव्य लगाया तथा उस मंदिरमें स्थान स्थानपर चर्चा रहोक, स्तुति, स्तीत्र लिखवाए। आनके दिन अनमरमें ये दर्शनीय पदार्थ हैं। नैन अनैन सब दर्शनका लाम होते हैं। मिती आषाढ़ सुदी ३ ता० १८ जून १९०१ को आप मी इस पुद्रलमई श्रीरको यहीं छोड़कर चल बसे। आपके मरणके समाचार पाकर सेठ माणिकचंदनी अपनी तरफ देखते हुए। उसी समय इनको

अपने परिग्रह्ममाण वतकी याद आ गई और यह सम्मिलित जायदादका हिसाब विचारने लगे। अपने प्रमाणके अनुमान लक्ष्मीको होती हुई देखकर आपने यह इरादा किया कि अबकी दिवालीपर दूकानका सब हिसाब बनवाकर पका निश्चय करके फिर अपना सम्बन्ध कार्यसे हटा लूंगा और रात्रि दिन धर्म व जातिसेवामें अपना रोप जीवन बिताऊंगा।

मिती आसोज सुदी ८ से १२ तक बम्बईमें स्थात्सव हुआ।
खुरजे व मेरटसे स्थ आये थे। दो जलेव
बम्बईमें रथोत्सव बड़े धूमसे निकलीं थी, जिनमें २०६१।)।
और प्रान्तिकमभा- की उपज हुई। माणिकचन्द्र पानाचन्द्रने
की बैठक। १२५) देकर चंवर टोरनेकी बोली ली थी
तथा १००१) देकर एलिचपुरके सेट लालासा
मोतीसाकी तरफसे तानासावजीने श्रीजीकी खबासीकी बोली ली
थी। इसमें शोलापुर आदिके अनेक माई प्रधारे थे। बम्बई प्रान्तिक
सभाकी बैठकमें राजा दीनद्यालके पुत्र राजा धर्मचंद सभाप ति
हुए। सेट माणिकचंदजीने स्वागतकारिणी सभाके प्रमुखकी ओरसे
भाषण पढ़ा। सभामें मुख्य प्रस्ताव बम्बई संस्कृत विद्यालयके लिये
धूवभंडार करनेका हुआ।

आश्विन सुदि ९ के प्रातःकाल हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डि-क्र स्कूलके मकानमें संस्कृत जैन विद्यालयका संस्कृत जैन विद्या- शुम सुदूर्त किया गया । राजा दिनद्यालके लयकी स्थापना । हाथसे विद्यालय खोला गया । लाजोंको तीन विद्वानोंके द्वारा धर्मशास्त्र, व्याकरण और न्यायका पाठ दिया गया । सभामें ७ वाँ प्रस्ताव सेठ माणिकचंद्नीने उपस्थित किया कि बाह्यविवाह, वृद्धविवाह और कन्याविकयका रिवान बन्द किया नावे।

इस जल्सेमें एक दिन सेठ प्रेमचंद मोतीचंदने जिनवाणीके उद्धारके लिये बहुत ज़ोरदार भाषण दिया था । सभामें विद्यालयके ध्रुवभंडारके लिये १२०००) के अनुमान चन्दा हो गया । इममें सेठ माणिकचंद पानाचंदने १००१) दियं थे ।

गु॰ सं॰ १९५७ के अंतका सर्व हिमान तय्वार हो गया। सेठ माणिकचंदने अपना परिग्रहप्रमाण व्रत सेटजीका व्यापारसे पूर्ण होता हुआ जान सेठ पानाचंद और पृथक् होना । नियलचंद् तथा प्रमचंदको बिठाकर कहा कि हम अब दकानमें शामिल नहीं रह मक्ते, क्योंकि हमारा नियम अब हमें माथमें व्यापार नहीं करने देता है। भाइयोंको सेठ माणिकचंदके नियमका हाल नहीं मालूम था । सब बड़े आध्यर्यमें पड़े कि अति परिश्रमी सेट माणिकचंद निनंक द्वारा ज्यापार दिनपर दिन उन्नतिपर है इम तरह क्यों सम्बन्ध छोड़न हैं । इनको समझाया भी पर इन्होंने तो अब पन्दान लेनी विचारी यी । अपनेको समाजसेवाके छिये बछि देना था, परोपकारार्थ तन मन धन लगाकर स्वहित करना था। इसी बातपर जोर दिया कि हमारा भाग अलग कर दिया जाय । तब पानाचंद्जीने खुब विचार करके जो ज़मीन व मकानोंकी स्थावर मिछकियत थी, उसको बांट दिया । सेठ माणिकचंद्के भागमें प्रसिद्ध जुनिलीनागके सिनाय कई और मकान भी आए । जवाहरातकी कीमत जोड़कर विभाग किया गया।

सेठ माणिकचंदने और भी कहा कि इस धनमेंसे कुछ धर्मादा निकालना चाहिये फिर भाग करना चाहिये। रु० २ लाखके दा- इस पर बम्बईमें धर्मशाला आदि बननेके लिये नका संकल्प। दो लाखका धन धर्मादेके लिये निकालकर शेपका भाग हुआ। दूकानका सम्बन्ध अब सेठनीने छोड़ दिया, तौभी आप प्रतिदिन ४ या ५ यंटे दूकानपर बैठते थे। बहांपर धर्म सम्बन्धी पत्रज्यवहार किया करते थे। किसीको यह प्रतीत नहीं होता था कि इन्होंने अपना सम्बन्ध दूकानसे छोड़ दिया है। सेठ माणिकचंद्जीने बड़ी दोनों प्रतियोंके नामपर एक २ मकान खरीद दिये और ताराब्हेनके नामसे रोक रु० जमा किये निसमें इनको अपने जीवनमें कोई कष्ट न हो।

मगननाईकी खाम जायदाद कई छक्ष रु० की थी और यही
अपनी सास समुरके पीछे उस सन धनकी
मगनवाईकी निर्छो- स्वामिनी थी, पर पिता माणिकचंदने उसका
भता। मन उम धनसे फर दिया। यही कहा कि
तेर पालनके लिये यहां कुछ कमी नहीं है,
यदि जो तू अभी धमुगलके धनके लोममें रहेगी तौ तू अपने आत्माका
हित नहीं कर सकेगी। मगननाई उसी वक्त इस नातको समझ गई।
उस मारी सम्पत्तिसे मोह हटा लिया और नम्बईमें ही एक पुत्रकी
मांति सेठ माणिकचंदजीके साथ रहनं लगी। कभीर दो चार दिनको
परदेशीकी मांति स्वमुरालमें हो आती थी। यह बड़े सन्तोषसे
पुत्री केशरको परस्ती और धार्मिक विद्याका अम्यास करती थी।

इसी संवत् १९५८ में सेठ पानाचन्द्रजी अपनी पत्नी हक्तमणी-बाई और दो कन्याएँ व छोटे पुत्रके साथ सेठ पानाचन्द्रकी श्री शिखरजीकी यात्रार्थ गए। साथमें सेठ शिखरजीकी प्रेमचन्द्र मोतीचन्द्र जौंहरी और सेठ पाना-यात्रा। चन्द्रके साले मोतीलाल और झंबरेलाल भी थं। बड़े आनन्द्रसे यात्रा की, पर जब श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर पहुंचे तब वहां यह मालुम किया कि गय बद्रीदासजी (श्रें) कलकत्तेवाल यहां प्रतिमानी बिराजमान करना चाहते हैं तथा आमंत्रण पत्रिकाएँ निकाली हैं। आपन चिडीमें मब समाचार माणिकचुन्द्रजीको लिग्वे और शिखरजीसे शीघ ही चम्बई लौट आए।

वस्वड़ंमें खबर होते ही श्रीमान् लाई कजिनको तार दिया गया कि श्री पार्श्वनाथजीकी टोंकपर जैसे सदासे चरण पादुकाओं-का स्थापन है वैसे ही रहे—प्रतिमा विराजमान न की जावें। तथा जब पानाचन्द्रनी वस्बई आये तब वहांकी तस्यारीका हाल कहा कि राय बदीदास माह सुदी १ दको चरणोंके स्थानपर प्रतिमा बि-राजमान कर्नवाले हैं। और सेठ माणिकचन्द्रको जोर दिया कि वे स्वयं जावें और इस बातको रुक्तावें। सेठ माणिकचन्द्र तीर्थरक्षामें पूर्ण लौलीन थे। जबसे महासमाने यह काम बस्बई सभाके आधीन किया तबसे ही राजिदिन शिखरजीकी सुन्यवस्थाके ही प्रकन्यमें थे। आपके उद्योगसे सीढ़ी तोड़नेके हर्जमें स्वेतास्वरियोंपर ५०००) की दीवानीमें नालिश की गई थी जिसके लिये समानने ६०००) के करीब चन्दा एकत्र किया था सो सर्व करके रु० १८४९) की डिगरी स्वे॰ पर जज साहबने दी थी। एक चिन्तासे मुक्त हुए ही थे कि दूसरी यह फिकर हुई।

आप उसी दिन चलनेको तय्यार हुए। आपके साथ सेट पानाचंद रामचंद शोलापुर, सेट नाथारंगजी शिखरजीकी रक्षार्थ गांधी आकलूज, लल्लुभाई प्रेमानंद बोरसद, सेट माणिकचंदका बालचंद व हीराचंद आदि भाई मी गए। दौरा और उप- आप नागपुर होते गए और वहांकी पाठशा-सर्ग निवारण। लाके लिये ६२००) का चंदा कराया। वहांकी पूट मेटी व सेट गुलाबसाब आदि तीन भाई

शिखरजीके लिये साथ हुए। शिखरजी पहुंचे । गीरी ही व आराके भाई आए। वहां लाला सुलतानिसंह दिहली बाले मिले। उन्होंने चरण उखाड़ नेकी बात कही व रुकवाने में पूर्ण मदद देनेका बचन ही न दिया, किन्तु अपने संघसे १०००) जमा कराके दे दिया। कोशिश चल ही रही थी कि लाई कर्जने रांचीके डिप्टी कमिश्नरको जकरी प्रबन्धके लिये हुकम दिया। वहांसे चरण उखाड़ नेकी मनाईका हुक्म आ गया। उस समय सेठजीने बीमपंठी कोठीके हिसाबादिको संतोषजनक न पाकर वे आरा गए। वहांके पंचोंको समझाया। उन्होंने चेत्र सुदी १ तक सब हिसाब प्रसिद्ध करने व १ साल तक अच्छी कार्रवाई करनेका बचन दिया। सेठ माणिचंद्र जी फिर बम्बई आ गए। यहां आने पर खबर आई कि प्रतिष्ठा होनेकी तारीख पर २०० कान्सटेबल, दारोगा व सप्यको भेजा गया जिससे मूर्तिकी प्रतिष्ठा न हो सकी। चरण सदाकी भांति विराजित रहे। सक्तरिके इस न्यायसे सेठजी व सर्व दिगम्बर जैन समाजको सन्तोब हुआ। इसी वर्ष सेठ माणिकचंदने

पंजीकी बाडी नामके स्थानको ३२०००) में खरीद किया, पर यह म्थान पीछेसे धर्मशालाके योग्य न नान कर यों ही रहने दिया ।

श्रावक मंडली शोलापुरने सेठ माणिकचंदजीके धार्मिक क्रत्यों पर मुग्ध होकर ता० ६ अक्टूबर १९०१ को एक मानपन्न अर्पण किया निपकी नकल इस मांति है-

## मानपत्र-

जवेरी दोठ मांणेकचंद पानाचंद जोग्य. प्यारा धर्मबंध,

जत अमे नीचे भही करनारा सोलापुरना दिगंबर जैन श्रावको आप साहेबनी स्वधर्म विषे अत्यंत पीति देखीने आ मानपत्र आपने आपवानी रजा लईये छीये ते कपा करी स्वीकारशी.

आपणा जैन बंधुओ स्वधर्म संबंधी तेमज राजकाज संबंधी केवलणीमां घणा पछात पडेला जोईने तेमने धर्म संबंधी अने राजकाज, वैदकीय, शिल्पशास्त्र वगेरेनी ऊंचा प्रकारनी केळवणी मेळववानं अतिशय जरूरन साधन जे "बोर्डिंग हाऊस" ते मुंबई जेका म्होटां शहरमां पोतानां पोणो लाख रुपिया आशरे खर्च करीने आपे बांधी आप्युं तेथी आपनी धर्मकृत्योमां लरी उदारता प्रगट थाय छे.

श्री सिद्धक्षेत्र सभोदिशिखर ज्यां बीस तीर्थेकर अने असंख्यात मुनी मोक्ष पाम्यां छे त्यां जात्राळ्ना सगवड माटे पगथियां करवातुं काम चाल्यं इतं. ते आपणा श्वेतांबर भाईओए वगर कारणे उखाडी नांखीने क्रेश वधार्यो: ते काममां आपे आगेवान यई महेनत लईने सरकारनी अदालतमां जय मेळव्यो. तेथी आएणे टेकाणे स्वचर्म वात्सस्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्पष्ट देखाय छे.

अयजवल: महाजवल जेवां प्राचीन अन्योना जीजींद्वार करवामां

पण आप साहेब आगेवान यई सर्वे भाइओनी मददथी काम चलाब्युं छे तेथी ज्ञानबृद्धि माटे आपनी अत्यंत उत्कंठा देखाई आवे छे.

भी गंधहरतमहाभाष्य नामना अत्यंत उपयोगी परंतु अदृष्ट थयेला धर्म पुस्तकनी तपास लगानी आपनारने पांचसो क्षियानु इनाम आपे जाहेर कीधुं तेयी आपना विषे प्रवचनवात्सस्य गुण रहेलो जणाई आवे छे.

तंमज आपणा केटलांक गरीब अने निराश्रीत जैन बंधुओने बिद्याम्यास करवा माटे योग्य पारितोषिक अने स्कालर्शियो आयोने उत्तेजन आयो छो, तेथी जैनधर्मना यथार्थ दाननो मार्ग आय बताबी आपो छो.

एवीज रीते स्वधम संबंधी हरएक काममा आप पोताना तन, मन, धनथा महेनत करीने अमारा जेवा धर्मबंधुओने पण साथे छेई पुण्यनी लाम आपी छो. एवा तमारा सद्गुणी जोईने अमने घणी संतीय थयो छे. ते संतीयना वे बील आ मानपत्रमां टांकीने आपने भेट करी छे, ते आप मानपूर्वक संगिकार करशो एवी अमे उमेद राखिये छीये.

**बालिपुर,** ) आपना, तारील ६ अक्टोबर सन् १९०१ ( सदमुण चाहनारा ।

आकल् नकी बिम्बप्रतिष्ठाके समय सरस्वती भंडारके मंत्री
सेठ प्रेमचंद मोतीचन्दको किया गया था।
सेठ प्रेमचंदकी स- जबसे आपने बहुत कुछ उद्योग किया।
रस्वती भक्ति। आपने मई १९०१ के जैनमित्रमें एक प्रभावशाली लेख प्रकाशित करके शास्त्रोंकी रक्षाका
उपाय बताया था। इस लेखमें आपके अंतरंग भावको झलकानेबाले
कुछ वाक्य यह थे—"हमारे भाइयोंके क्क्षों करोडोंका व्यापार

होता है। एक सौ रुपयाके ज्यापारमें -) आना इस कार्यमें मी दे दिया करें...."

"धर्मकार्यमें किसीकी अप्रतिष्ठा नहीं होती, जैसे अलीगढके सरपद अहमद्खां सिताई हिन्दने जगह २ से मांगकर कालेज बना दिया कि जिसमें टक्षोंका धन जमा होगया । हालमें अभी २००००) पर्कारने मी दिया है। हम हमारे भाइयोंसे एक लाख रुपया भी एकत्रकर कालेज न बना सकें। भाइयो ! विचार देग्वो ! परभवमें सिवाय पुण्यकर्म (धर्म) के दूमरा सुख देनेत्राला नहीं है। '१ यह हारीर जिसको मनुष्य अपना मान रहा है चितापर ही जल जाता है, केवल शुभ या अशुभ को किया हुआ अर्थीत् कमाया हुआ कर्म है वही जीवके साथ जाता है। " " भाइयोंको अपने तनसे वनसे मनसे प्राणी मात्रका भठा करनेवाली निनवाणीका शीघ्र ही जीर्णोद्धार करना चाहिये। बम्बईके गन ग्थोल्सव व प्रांतिकसमा बम्बईकी तीसरे दिनकी बैठकमें मरस्वती देवीकी रक्षा पर भाषण देते हुए कहा था कि यदि ५००) रु. की महायता हो तो ईडरके भंडारका उद्धार हो सक्ता है तथा आपने प्रेरणा करके पन्नालाल नाकलीवालको दो मासके लिये ईडर भेना।

इन्होंने नाकर बहुतसे प्रंथोंकी मुची आदि बनवाई तथा ईडरके पंचोंने कई बंडल संस्कृत ग्रंथ सेठ माणिक-ईडरके संस्कृत-पाकु- चंदनीके पास भेन दिये। सेठनीने एक त ग्रंथोंकी प्रशस्ति। विद्वान् शास्त्रीको निषत कर उन ग्रंथोंक पत्र ठीक कराकर सुन्दर वेष्टनोंमें बांधे तथा उनके मंगलाचरण व अंतिय प्रशस्ति, ग्रंथके नंगर व हकीकत सहित रिजिष्टरों में लिखा ही और ग्रंथ ईडर भेज दिये। यह रिजिष्टर सेठ माणिकचंदके चौषाटीके चैत्यालयमें हैं। विद्वानोंको उससे बहुत हाल मिल सक्ता है। अभी तक ईडरके मंडारका पूर्ण उद्घार नहीं हुआ है।

सेठ प्रमचंद और सेठ माणिकचंद नैन नातिके पत्रोंको बराबर बांचते थे। नैनगनट अंक ८ ता० १ मार्च बाबू बच्चूळाळजीका १९०२ में यह पढ़कर कि महासभाके मुख्य अकाल मरण। कार्यकर्ता व गज़टके सहाई तथा समाजो-द्वारक पूर्ण उद्योगी बाबू बच्चूळाळजी प्रयाग विवासी ता० १ मार्चको स्वर्ग प्रशंह । दोनों सेठोंको बहुत बोक

निवासी ता० १ मार्चको स्वर्ग पर्धार । दोनों सेठोंको बहुत शोक हुआ, पर इस परसे ये और भी धर्ममाधनमें दत्तचित्त हो गए।

सम्बत् १९५९ मिती कार्तिक वदी ५से १० मुताबिक ता० २२-१०-१९०२ से २६ तक भा० सेठ माणिकचन्द्रका दि० जैन महासभाका वार्षिक जल्सा चौरासी महासभामें गमन और मधुरामें बड़ी धूमधामसे हुआ । बहुतसे वि-तीर्थक्षेत्र कमेटीका द्वान व जातिके मुखिया एकत्र हुए थे। स्थापन। बम्बईसे सेठ माणिकचन्द्रजी, सेठ रामचन्द्र नाथा, सेठ गुरुमुखराय, पं० धनालाल, पं०

जवाहरलाल शास्त्री गए थे । उसी समय पं० गोपालदासजी भी आए, थे । ता० २२ अक्टूबरको पं० गोपालदासके पेश करने व सेठ माणिकचन्द, बाबू देवकुमार, मुंशी चम्पदरायके समर्थनसे भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी स्थापना हुई, जिसके समासद ३५ चुने गए । सेठ माणिकचन्दनी महामंत्री और



सेउ चुत्रीछाल झनेरचन्द और लाला रचनाथदास सरनौ सहायक महामंत्री नियत हुए। जबसे बम्बई प्रान्तिकसभाने यह खाता खोला था और चुन्नीलालनीको तीर्थक्षेत्रका मंत्री नियत किया था तबसे यह तीथोंके सुधारमें, हिसाब मंगाने आदिमें पूर्ण प्रयत्नशील थे।

सेट चुन्नीलालजीने भादवा सुदी ५ तक प्रांतिक सभा बम्बईकी रिपोर्टमें अपनी जो रिपोर्ट प्रगट कराई है मेठ चुन्नीळाळका उससे विदित हुआ कि आपने ३८ स्थानों में व्यवस्था व हिसानकं फार्म भेजे व पत्र-परिश्रम । व्यवहार किया जिससे २१ स्थानोंके फार्म भरकर आए तथा डाह्याभाई शिवलाल इंस्पेक्टरद्वारा तीर्थेकिः निरीक्षण भी कराया । आपने अपनी रिपोर्टके अन्तमें ये शब्द दिये हैं:-

इस प्रकार २१ फार्म आए हैं । यद्याप सर्वकी हिसाब प्रथा उत्तम नहीं है, दो चारको छोड़ और न हिमाबीको देख संतीप हो सक्ता है ताभी इस सच्चे दिलस प्रवन्धकर्ताओं और मनीमोकी फार्म भेजनेकी मिहरबानीका धन्यवाद देते है ।

महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहणके उपलक्ष्यमें भारतके वाइमराय लार्ड कर्जननं ता० १ जनवरी दिहली दर्बार । सन् १९०२को दिहलीमें एक बड़ा भारी दर्बार किया था, जिसका एम्फी थियेटर दिहलीसे ५ मीलपर बना था जिसमें २५ ब्लोक थे। भारतके राजा महाराजा रईस आदिके सिवाय, नेपाल, फारूप, अफगानस्तान आदिके भी प्रतिनिधि आए थे। १२००० से अधिक भीड़ थी। विछा-यतसे डयूक आफ कोनाट भी पशारे थे। छाट साहबने दर्शरमें महाराज एडवर्डका तार धुनाया जिसके कुछ राज्द ये हैं:—" मेरी यही आन्तरिक अभिलाषा है कि मैं मी माताके सहरा भारतीय प्रजाका धुशासन करके उनका प्रेम और भक्तिका लाभ करूं। मैं भारतके समस्त करद राजाओंको धुनः विधास दिलाता हूं कि मैं उनकी स्वाधीनताका सन्मान, अधिकार और स्वत्वका आदर करता हूं तथा उनकी उन्नति और मलाई होनंसे प्रसन्न होता हूं "

द्बरिके दिन जैनियोंने भी अपने २ मंदिरमें विशेष पूजा की व बृटिश माम्राज्यकी जय मनाई व दान बांटा । बम्बईमें भी ऐसा हुआ । जैपुरमें भी महासभाके सभासदोंन जल्सा करके महासभाकी ओरसे एक अभिनंदनपत्र छाट साहबको महाराज जैपुरके द्वारा भेजा ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका पांचवां वार्षिक अधिवेशन ता० २७ और २८ जनवरी सन् १९०३ को द० म० जैन सभा- क्षेत्र स्तवनिधि पर हुआ । सभापति श्रीमन्त द्वारा अभिनंदन पायप्या अप्याजीगव देमाई थे। सभाने एक पत्र । वर्ष पहले एक दक्षिण महाराष्ट्र विद्यालय खोला था उसमें ११ विद्यार्थी पढ़ते थे उ-

सकी रिपोर्ट सुनाई गई । इस सभाने जैन शिक्षण फंडमें २००००) का फंड कर लिया था । सभामें शिक्षाप्रचारके प्रति कोल्हापुरके महाराजका आमार माना गया तथा सेठ माणिकचंद पाना-चंद जोंहरी बम्बई और सेठ हीराचंद नेमचंद शोला-पुरका शिक्षाप्रचारके अर्थ अभिनंदन पूर्वक आमार माना गया। वास्तवमें जो सच्चे दिलसे परोपकारार्थ तन मन धन लगाते हैं वे जगतमें बिना चाहे भी परम कीर्ति लाम करते हैं। जिम व्यक्तिपर माता रू राजाईको अवलम्बन था, जो हीराचंद गुमानजीके कुलका सेठ माणिकचंदकी
प्रेमचंदका अचानक तरह एक रत्नमय दीपक था, जिसके स्वमाव,
स्वर्गवास और धार्मिक किया व समानसेवाको देखकर परोपस्वहस्तिलिखित कारियोंको सन्तोप होता था कि सेठ माणिदान पत्र । कचंदके पीछे यही दिगमकर जैन समानमें
जागृति फेलाएगा, जिनका परिणाम बहुत शांत,
विचारशील और उदार था, जो संस्कृत इंग्रेजी व वर्तमान देश चाल

विचारशील और उदार था, जो संस्कृत इंग्रेजी व वर्तमान देश चाल यवहारसे अच्छी तरह परिचित था, जो जिनवाणीका ज्ञाता अ-म्यासी व पूर्ण भक्त था, 'जिसका अखंड वात्सल्य और प्रेम अपनी जन जातिसे था वही प्रफुल्लित चनकता हुआ तारा ग्रकायक अपने चहुं ओरके मनुष्योंकी दृष्टिसे इमी संवत १९५९ में चैत्र सुदी १४ की रात्रिको लुस हो गया!

शरीर पिंनर वैसा ही दीम रहा है पर शरीरमें अनेक विष्टाओंको करानेका जिम्मेदार वैतन्य आत्मा यहांसे वह दिया है। यद्यपि शरीर छोड़ने समय इनकी अवस्या २५ वर्षकी थी पर यह गाफिल नहीं हुआ था। रात्रिको ही अपनी तिबयत नव एकाएक विगड़ी तब आपने अपनी माता, स्त्री तथा काकाओंके सामने अपने ही हाथसे नीचे लिखा दानपत्र लिखकर हस्ताक्षर कर दिये—

१—माटुंगा रोडकी जमीन जो अनुमान २००००) की है वह तथा अपनी जिन्दगीके बीमाके ५०००) यह दोनों रकमें हीराचंद गुमाननी जैन बोर्डिंगकी कमेटीको इस शर्तगर देना कि "प्रेमचंद मोतीचंद कोलरशीप खाता" सोलकर इस रकमके व्यानसे गुनराती प्रथम पुस्तकसे इंग्रेनी चौथी क्षास तक विना मानापके निराधार विद्यार्थियोंको स्कालरिशप दी जावे।

२-मेरी माताश्रीके बारहसौ चौतीस उपवासके व्रतका उद्यापन ५०००) के खर्चसे करना।

३ - अपनगर ( ईडरके निकट ) के स्टेशनपर " प्रेमचंद मो-तीचंद धर्मशाला " नामसे १०००) खर्च करके एक धर्मशाला बनवाना ।

४—निम्न लिखित तीर्थोंमेंसे प्रत्येक तीर्थको इकावन इकावन रु. की रक्षम भेजना—१ श्री सम्मेदशिखर, २ श्री चम्पापुर, ३ श्री पावापुर, श्री गिरनार, ५ श्री केशरियाजी, ६ श्री पावा-गढ, ७ श्री गजपंथाजी, ८ श्री मांगीतुंगी ९ श्री पालीताना, १० श्री तारंगाजी, ११ श्री सिद्धवरकुट, १२ श्री सोनागिरजी, १३ श्री कृंयलगिरजी, १४ श्री ईडरका मंदिर, १५ श्री चतुर्विध-दानशाला मोलापुर।

इस तरह ह० २१७६९) का दानपन्न अपनी माताको देकर अपने मोन धारण कर लिया, हाथ जोड़ सबसे क्षमा मांगी और शांत मनसे भीतर २ अपने शुद्ध आत्मस्वभावका चिन्तवन करते २ बाहरसे णमोकार मंत्रकी ध्विन सुनते २ स्वर्ग पधारे । चंपाबाई अपनी १९ वर्षकी आयुमें ही वैधन्यताको प्राप्त हो गई! माता रूपाबाई को पुत्रके वियोगसे बहुत शोक आया, पर धर्मके ज्ञानके कारण अपने चित्तको थांम व कर्मका उदय विचार शांत चित्त हो गई। सेठ माणिकचंद बहुत विलाप करने लगे, क्यों-। कि सेठनीको इसके गुणोंपर अतिशय प्रेम था। पानाचंद और नवलच- न्द्रजीको भी बहुत शोक हुआ, क्योंकि यह दूकानके काममें भी बहुत चतुर था। बम्बई बोर्डिंगकी ट्रष्ट कमेटीमें कोपाध्यक्ष और बम्बई प्रांतिक समाके सरस्वती मंडार खातका काम आपने अपने जीवन पर्यत बहुत ही योग्यतासे सम्पादन किया था इससे बम्बईकी जैन समाजको आपके वियोगका बहुत ही ताप हुआ। आपने संस्कृतका अच्छा अम्यास किया था व मराठी लिखना पट्ना भी आप अच्छा जानते थे। सेट हीराचंद नेमचंदकृत मराठी व्यतकथासंग्रह और 'महाचीरचरित्रका गुजराती भाषामं बहुत ही उत्तम उच्या किया था और उसे प्रकाशित कराया था। इसने प्रसिद्ध गिथोंकी यात्रा भी कर ही थी। यह बहुत ही द्यालु, सहनशोल, नाहसी व विचारशील था। इसके चित्रसे उस मध्यके गुण स्वयं झलक रहे हैं। हमारी ममाजके नव युवक धनाइयोंको सेट प्रेमचंदके जीवनचरित्रसे शिक्षा लेनी चाहिये और अपनेको विषय कथायोंसे बचाकर धर्म व नीतिसे परोपकारमें तन मन धन लगाते हुए अपने जीवनको ज्यतीत करना चाहिये।

सेट माणिकचंद्जी नवीबाईके माथ अपन गृही कर्मको , वितात थे कि नवीबाईके गर्भ रहा। सेट-नवीबाईके प्रथम जीको बहुत संतोप हुआ और मनकी इच्छा-पुत्रका जन्म। चुसार नवीबाईन मिती वैशाख सुदी १२ को एक पुत्रका जन्म दिया। पुत्रछाभसे सर्व

कुटम्बको हर्ष हुआ। वास्तवमें संसार कैसा विचित्र है कि निस वरमें १ मास पहळे शोक छाया हुआ था उसीमें आज प्रत्रनन्मका उत्सव मनाया जाने छगा। नवीबाई प्रत्रको बहुत सम्हालसे पालने लगी। सेठनीने भी दासियां नियत कीं कि इसे कोई कष्ट न हों।

सेठ रावजी नानचंद्र गांधीने शोलापुरमें जिनिक्सन पंच कल्याणकोत्मव मिती ज्येष्ठ सुदी ६ से ९ वंबई प्रांतिक सभाका मं० १९६० तक बहुन ही समारोहके साथ दितीय वार्षिकोत्मव पासू गोपाल शास्त्री द्वारा कराया । बाहरसे और शोलापुरकी करीन २००० के माई आए थे। हमारे विस्वप्रतिष्ठा । सेठ माणिकचंद्र आदि वस्बईके अनैक मज्जन पर्धार थे। सेठ रावजी नानचंदने नया

रथ तैयार कराया था सो पंचायतीमें अपीण किया तथा प्रतिदिन मक्का भोजनसे सत्कार किया। प्रांतिक सभाके सदस्योंका बहुत सन्मान किया और ५०१) सभाको भेट किये। प्रांतिक सभाकी ४ बैठकें हुई। सेठ हरीभाई देवकरणवाले सेठ बाल चंद रामचंद सभापति हुए। आपने कहा कि इतनी बातोंका प्रक्ष्य किया जाय कि—दि० जैन धर्मशास्त्रके ज्ञाता विद्वान तयार हो, जैन धर्मानुमार लग्न, विवाह, मृत्यु आदि कियाएं होवें, व्यथव्यय रोका जावे, मृत्यु पीछे रोने कूटनेका रिवाम बंद हो, बाल्यविवाह व कन्याविक्रय रोका जावे व तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्थाका सुप्रबंध हो। १८ प्रस्ताव पास हुए जिसमें मुख्य ये थे—(१) महाराज सप्तम एडवर्डके राज्यारोहाणोत्सवमें हर्ष (२) सक्तरसे प्रार्थना हो कि विद्याविभाग आरोग्य संबंधी तथा जेलसानकी रिपोर्टोंमें जैनियोंका अलग खाना हो (३) मृत्युके पीछे छाती कूटनेका रिवाम जोधपुर मारवाड़की तरफसे इस गुजरातमें आया है। मारवाड़के रजवाड़ोंमें जब राजगोतीका

मरण होता था तो रानियें रोने व छाती कूटनेके लिये महलोंसे बाहर नहीं होती थी। वे सब अपनी दासियोंको बाहर भेजती थीं वे ही रडती पीटती थीं। दासियोंको इस प्रकार करनेमें उनका स्वार्थ सवता था—उनको कपंड वगैरह मिल्रेंत थे।

सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद्ने पेश किया कि निप्त २ तीर्थ-क्षेत्रका हिमान आया है उन्हें घन्यवाद दिया नाय व नहां २ से हिमान नहीं आया उमको प्रेरणा की नाय।

तीसरे दिन संट माणिकचंद्रज्ञीन प्रगट किया कि शोलापुरके चतुर्विघदानशालांके वैद्यक विभागमें जो वेद्यक शिक्षाकी छात्र पंहगा उसे प्रथम वर्ष ६) दूमरे वर्ष उत्तेजना। ७) व तीमरे वर्ष ८) मासिक मिलेगा इस श्रात पर कि इम प्रान्तके किसी पवित्र औषघालयमें २५) महीने पर औषघालयका काम करें। जिन्होंने जैन पद्धतिसे विवाह कराए थे उनको सभापति द्वारा छपं द्रुए मनोहर धन्यवाद पत्र दिये गए। प्रान्तिक सभाके फंडमें २१३०) आए तथा बावी निवासी रामचंद्र अभयचंद्रके निकट ५०००) की एक धर्मादाकी रकम थीं उसके ज्याजसे एक विद्यार्थीको वैद्यक पढ़ाई जाय ऐसा ज़ाहर किया गया। इस शिक्षाकी उत्तेजना देनेका अमिप्राय सेठजीका यही था कि हम बम्बईमें औषधालय कायम करें तब उस वैद्यका उपयोग हो।

नगत्में किसी भी प्राणीकी एकसी दशा नहीं रहती इसीसे यह जगत परिवर्तनशील है । जिसको जीता सेठ पानाचंदका जागता, काम करता हुआ सबेरे देखते हैं स्वर्गवास । वही शामको चेतन रहित होता है। जब तक वह आत्मा अपने स्वाधीन स्वभावको नहीं पाता है तब तक इसका जन्म मरण नहीं मिटता है। आयु कर्मका प्रेरा यह जीव शरीरमें अपनी उम्रसे अधिक नहीं रह सक्ता।

मिती कार्तिक बदी ११ संबत् १९६० की रात्रिको सेट पानाचंद् हीराचंद्का शरीर अति अशक्त हो गया। तिबयत तो कई दिन पहलेसे खरात्र थी । यथाविधि औषधि होती थी । इस समय सेठ माणिकचंद, नवलचंद, चुन्नीलाल, रूपाबाई, रूनमणीबाई, मगनबाई आदि कुट्मबी पास बैठे हैं, सेठ पानाचंद बराबर होशमें हैं, पंडित वंशीधर जो उस समय संस्कृत विद्यालय बम्बईके छात्र थे अब शोलापुर जैन पाटशालामें शास्त्री हैं, पास बैठे हुए समाधि-मरण आदिके पाठ पढ़ रहे हैं, पानाचंदनी बड़े ध्यानसे सुन रहे हैं। माणिकचंद्जीको इस समय यही ध्यान है कि भाईका मन किसी भी तरह आर्त्त रौद्र ध्यानमें नहीं फंसे, धर्म ध्यानमें लीन रहें जिसमें दुर्गतिसे बचकर सुगतिमें जावें इमलिये जब कभी उन्हें भालप होता कि इनका ध्यान और तरफ हुआ है तब ही सेट माणिकचंद यह वाक्य कहते-"भाई, पंडितजी कहते हैं उधर तुम्हारा ध्यान है ना ? तब वह धीरेसे कहते कि मेरा ध्यान है, बराबर चाल रक्खो। मिलकियनके विभागके समय धर्मकात्ला आदि कार्येकि निमित्त करीन २ लाखके दानका संकल्प हो ही चुका था। इस समय आपने कहा कि भाई, मेरी प्राइवेट मिलकियतमेंसे १५०००) वागड देशके इमड् छात्रों में विद्या प्रचारके लिये खर्च करना तथा १००) तीर्थ क्षेत्रोंमें देना। सेठ माणिकचंदने तुर्त लिख लिया। सेठ माणिक्वंदने कहा-भाई, और भी कुछ दान करना

हो सो करो । भाईने कुछ उत्तर न दिया । इतनेमें देखते २ आंखें फिरने छगीं तन पंच नमस्कार मंत्रकी घोषणा प्रारंभ हुई । सामने तीनों सन्तान भी बैठी थीं—छीछावती ७ वर्षकी, रतनबाई ४ वर्षकी व प्रत्र ठाकुरमाई ३ वर्षका था—तीनों माताके पास बैठे हैं । सेठ माणिकचंदका सख्त हुक्म था कि कोई रोने न पावे न कोई शोर करे । उस म्थानपर इतनी शांति थीकि यदि कोई मखमलके गद्दे पर भी पग धरे तो उसका शब्द सुन पड़े । वास्तवमें मृत्यु होते समय पूर्ण शांति रहनी चाहिये जिससे मरनेवालेके मावोंमें भी शांति रहे, कोई विकल्प न पेश हो । उस रात्रिको सेठ पानाचंदनं चारो प्रकारके भोजन व औपिध तक लेनेका त्याग कर दिया था। सेट माणिकचंदके पूर्ण प्रवन्धसे पानाचंदजीका आत्मा धर्म ध्यानमें छीन होता हुआ शांतता पूर्वक इम चर्महाड़के पींजरेसे निकलकर म्वर्गधामको प्थारा ।

सेठ पानाचंद्र जवाहरातकी परीक्षामं बम्बईमरमें प्रधान समझे नातं थे। आप बहुत ही शांत, विचारशील, उदार चित्त व निरा-शितको आश्रय देनेवाले थे। परोपकारार्थ मेरा धन खर्च हो यही इनके चित्तमें, रहा करता था, कोध करना तो जानते ही नहीं थे, मौन रखकर विचारनेकी आदत थी। यह कैसे गंभीर प्रकृतिके व दह मिज़ाज व शांत पुरुष थे, यह बात उक्त सेठजीके चित्रके द्शेनसे भले प्रकार झलक उठती है। आपने अपने ५४ वर्षमें धर्म अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थीको यथायोग्य पालन करके गृहीके कर्तव्य-को सदाचार, सद्वर्ताव और नेक नियतीसे अच्छी तरह निवाहा आपके वियोगसे बम्बई मरमें जाकि छा गया। नौहरी बाजारमें कई दिन तक बड़ी उदासी रही। दुसरे दिन प्रात:काल दंग्व कियाके अर्थ कब ले गए तब सैकड़ों मनुष्योंकी भीड़ थी। बिरादरीके सिवाय नोंहरीबानारके दूकानदार दलाल आदि जिसने सुना फौरन हाज़िर हो गये थे।

अब रुक्मणीबाई जो कि बहुत धीर प्रकृतिकी थी, यद्यपि इसे विशेष पुस्तकोंका अभ्यास नहीं था तो भी कुछ अक्षर ज्ञान था, बड़ी शांतिसे अपने तीन मंतितरतोंका पालनपोषण करने लगी-लीलावतीको शालामें मेजने लगी। इप कुटुम्बमें पासियोंकी मांति यही रिवाज़ था कि लडका हो या लड़की शुरूसे विद्याभ्यासमें लगाकर चतुर बनाना फिर लग्न करना। छोटी उम्रमें सगाई करना बड़ा पाप ममझने थे।

पानाचंदनी भी चल दिये। प्रमचंद इसके पहले ही न रहे थे।
अब सेट माणिकचंदको रात्रि दिन यही
सेट हर जीवन रायचं- ध्विन रहने लगी कि जो कुछ करना है उसमें
दर्की सम्मितिकी एक दिन भी ढील नहीं लगाना चाहिये।
कदर। सेट प्रमचंद गुनरातके छात्रोंमें शिक्षा प्रचारके
अर्थ जो दान कर गएथे उससे सेटजीने यही
सोचा कि गुजरातके किसी स्थानपर एक जैन बोर्डिंग खोला
जावे तो ठीक हो। आपको विस्वास था कि आमोदके दोठ
हरजीवन रायचंद एक विचारशील, धर्मात्मा और शास्त्रके ज्ञाता
गृहस्य हैं। आपका परिचय सं० १९५० में हुआ था जब श्री
मक्तामरजी गुजराती टीका सहित सेठजीने मंगाई थी तबसे पत्रव्यवहार
बरावर रहता था। सुरतमें जब चुलीलालने मंदिर प्रतिष्ठा कराई थी

तन भी आपको बुलाया था । आपसे साक्षात् मिलकर बहुत प्रीति प्रगट की थी तथा सुरतके बड़े मंदिरजीमें तब छपं हुए नोटिस बांटकर आम सभा की गई थी। उम समय इन्होंने ऐक्य पर बहुत अच्छा भाषण दिया था। सेठ हरजीवनको भी गुजरातके बालकोंको वर्म विद्याके साथ छौकिक विद्या दी जाने इसकी नड़ी चिन्ता थी तथा यह सेटनीको अपने पत्रोंमें इस त्रृटिको दूर करनेके लिये लिखा करते थे । अब सेटजीने इनको पृछा कि गुजरावमें एक बोर्डिंग स्थापन करनेका हमारा विचार है जिसमें मेटिक तक छात्र रहकर पढ़ें, रोप कालेनकी पढ़ाई बम्बई बोर्डिंगमें रहकर करें तथा बहौदा, सुरत, अहमदाबाद ये तीन मुख्य नगर हैं इनमेंसे कौनसी जगह तुमको पसंद है, कारण सहित छिखो । तब सेठ हरजीवनने अहमदाबादको पमन्द किया कि यह बड़ा न्यापारी नगर है। मब तरह विद्याका माधन है । जिनके बाउक रहेंग वं बारम्बार आकर देख भी सकेंगे, क्योंकि मालके लिये उनको आना ही पडता है तथा यहां कालिन भी है, अच्छा है-मिलें हैं आदि। संउनीको यह बात बहुत पसन्द आई तब हरजीवन रायचंदको छिग्वा कि गुजरातके लोग अपने छात्रोंको मेर्जेंगे या नहीं, क्योंकि वे लोग ऐसा समझते हैं कि धर्मक खातेमें हम अपने लड़कोंको क्यों स्क्लें ? तब आमोदके यह परोपकारी सज्जनने उत्तर दिया कि इसकी आप चिन्ता न करें तथा एक पत्र आमोदके दिगम्बर जैन पंचानका भिनवाया उसमें पंचोंने हिम्मतके साथ छिखा कि मुहुत्तेके दिन हम १० विद्यार्थि-ओंको साथ लेकर आवेंगे, आप निश्चिन्त रहो। तत्र सेठजीको नहुत ही संतोष हुआ और तुर्त ही मार्गशीर्ष सुदी ६ को

बोर्डिंगका महूर्त अहमदाबादमें किया जाय ऐसा निश्चित करके गुजरातके भाइयोंको बुलानेके लिये पत्र दे दिये।

सेठ माणिकचंदजीका सदा ही यह कायदा रहा है कि पहले यह किसी नवीन कायको शुरू करके उसकी गुजरात दिगम्बर जैन परीक्षा वरते थे। जब वह चल जाता बोर्डिंग स्कूल-अह- तब उपको सदाके लिये ऐसा पका कर देने थे कि वह कभी किसीके तोड़े न ट्रट महाबाद । सके । वम्बई बोर्डिंगकी स्थापनाके समय इस नीतिको इमलिये नहीं काममें लिया कि तम्बईमें जैनियोंक ज्ञात्र अवस्य ही आवेंगे इस बातका संटको दह निश्चय था । यहांके काममें मंदेह था उसीलिये पहले सेठनीन २ वर्षक निवीहके लिये ५०००) बोर्डिंगमें दिये तथा २५ छात्रोंका प्रबन्ध करके एक मकान भाड़ेका लेकर बोर्डिंग खोलनेका महूर्त बड़ी घामधूमसे किया। इसमें ईडर, कलोल, सूरत, सोजित्रा, अंकलेश्वर आदि गुनरातके बहुतसे भाई पदारे थे उनमें मुख्य जयसिंहभाई गुळाबचंद, हरजीवन रायचंद आमोद, मातीचंद ईंडर पशारे थे। वंबईसं पंडित गोपा-लदास बरैया, लल्लुभाई प्रेमानंददास परीम्व तथा सेठ माणिकचंदजी आए थे। मगसर सुदी ६ मं० १९६० के प्रात:काल प्रथम ही मंगल कलको साथ नगरमें १ वरघोडा निकाला गया । फिर स्थानपर आकर श्री जिनवाणीकी पूना करके एक सभाका अधिवेशन बडे समारोहके साथ किया गया जिसमें अहमदावादके प्रतिष्ठित भाइयोंको छपे हुए कार्ड द्वारा स्वयं सेठ माणिकचन्द्र कई भाइयोंके साथ जाकर निमं-त्रण कर आए थे वे सब शामिल हुए जैसे-रावबहादुर केशवलाल

हीरालाल, नौंहरी लल्लुभाई रायचंद, रा० व० लालशंकर उमियादांकर, रा॰ व॰ हरगोविन्ददास द्वारकादास कांटावाला, प्रोफेसर आनंदशंकर बापृभाई ध्रुव, डॉ॰ जोसेफ बेजामिन इत्यादि भाई पद्यारे थे । सभापतिका आसन रा० रा० दीवान बहादुर अम्बालाल शाकरलाल देशाई एम. ए. एलएल. बी. ने प्रहण किया था । पं० गोपालढासजीने विद्याभ्यासकी आवश्यक्ता एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर बताई तथा लल्लुभाई प्रेमानंददास आदि वक्ताने बोर्डिंगका हेतु समझाया, फिर समापतिने एक शिक्षा-पूर्ण भाषण देते हुए कहा-'' जिस प्रकार यात्र। करनेवालों में जिनके पास पर्यटनकी पूरी २ सामग्री रहती है वह आगे और जो माधनहीन होते हैं व पीछे पड़ जाते हैं उसी प्रकार संसार यात्रामें जो जाति विद्या भाधनसे हीन है वह अवश्य ही पीछे रह जाती है। इस संस्थाके स्थापन कर्ता उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान् नहीं हैं, परंतु वह " द्रव्यका सदुपयोग किस तरह करना चाहिये " इस विषयके सच्चे मर्मज्ञ नौंहरी हैं आदि कहा। " इस समय कहा गया कि नो कोई सहायता करेंगे वह सहर्ष स्वीकार की जायगी। तन आकलूजके भाईने १०) मासिक एक वर्षके छिये दिया । ८१ गृहस्थोंकी एक विजिटर्स कमिटी बनी । जो ३) वार्षिक देवह इसका में बर हो सक्ता है । इसमें करमसद, इंडर, जहर, नरसीप्रर, सोनासन, बड़ौदा, ओरान बोरसद, अहमदाबाद, सूरत आदिके भाई मेम्बर हुए। बोर्डिंग-का प्रबन्य बम्बई बोर्डिंगकी मनेर्जिंग कमेटीके आधीन रहा । मंत्री

गया था।

छल्लूमाई प्रेमानंददास एल. सी. ई. नियत हुए । शुरूमें ही इसमें ३८ छात्रोंकी भरती हो गई अपने द्रव्यसे पढानेवालोंके लिये २९) प्रति छ: माहीके लिये लेने नियत हुए। इसमें पहले द्रजेसेलेकर छठे द्रने अंग्रेजीतकके छात्र भरती हुए।

स्याबाई संपारके चिरत्रोंसे मही प्रकार अनुभव होती हुई जबसे प्रमचंद पुत्रका वियोग हुआ तबसे स्व्याबाईका व्रती- और भी अधिक उदासीन रूपमें धर्म साध- द्यापन। नमें हीन हो गई। तप करके जैसे अनंतमती, चंदना आदि सिबयोंने अपनी पर्यायोंको सफल किया था ऐसे ही यह बाई करती थी। छोटे २ व्रतोंके साथ इसने १२३४ के उपवासोंका आरंभ संबत १९५१ में किया था सो ९ वर्षमें उनको निर्विध्न पूर्ण किया तथा जैसे प्रमचंद सेट मरत समय ५०००) इस उद्यापनमें खर्च करनेको कह गए थे उसी प्रमाण सेट माणिकचंद और नवलचंदने रूपाबाईनीकी आज्ञास पूजनका महा समारंभ रचा। चौपाटीके बंगलेमें ही बड़ हालमें सजधनकर मंद्र किया गया। जहां कई रोज नित्य पूजन भजन गान हुए। बाहरते भी खास २ भाइयोंको बुलाया

सेठ माणिकचन्द्रके परन मित्र भाई घरमचंद्रजी भी सपत्नीक पालीतानासे बम्बई आ गये थे । यहां कर्म-धर्मचंद्रजीकी स्त्रीका योगसे इनकी स्त्रीको प्लेगकारोग हो गया वियोग । और कई दिन बीमार रहकर माह मुदी ४ सं० १९६०को इस पर्यायको छोड़कर च्छ दी। उस समय सेठोंने इनको बहुत धैर्य बंधाया। माह सुदी ९ के आस पास कई दिनों तक चौपाटोका मंदिर नर—नारियोंसे भरा रहता था। मगवत्के गान भजन नृत्य खूब होते थे। जैनी भाई-योंका भोजनादिसे सन्कार, मंदिरोंमें दान आदि करके यह उद्यापन वड़ भावसे करके रूपाबाईको बहुत सन्तोप हुआ। तथा इस बनके हर्षमें ५०००) गुजरात दि० जैन बोर्डिंग स्कूलको दिया गया तथा बोर्डिंगमें विद्यार्थी अच्छी तरह रहनेकी रिपोर्ट जानकर सेठ माणिकचन्दने निध्य किया कि प्रेमचन्दजीका कहा हुआ २५०००) शीघ लगा दिया जाय तथा ५०००) बोर्डिंगके मकानके लिये भी निकालनेका विचार दृद किया।

इसी वर्ष सं० १९६०में सेट माणिकचन्द्की प्रथम पृत्री फूलकौरका यकायक मरण हो गया। सेटजीकी प्रथम शेटजीको यह भी एक भारी शोकका स्थल पुत्रीकी मृत्यु। आन पहुँचा, पर ज्ञानी और विचारवान सेटने इसे भी थिरटासे सहन किया। फूल-

कौर कमु (कमला) कन्याको छोड़ गई जिसकी प्रतिपालना और रक्षाका भार मगनवाईजीने अपने हाथमें ले लिया।

कोल्हापुरसे थोड़ी दूर एक अतिशय क्षेत्र स्तवनिधि है। वहाँ दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिक अधि-स्तवनिधिमें द० म० वंशन मात्र सुदी १४ ता. १६ जनवरी मन् जैन सभा। १९०४ से १८ तक था। इसमें अध्यक्ष सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर नियत किये गए है। सेठ हीराचंदके लिसते ही सेठ माणिकचंदकी भी

तुर्त रबाना हुए । शोलापुरसे सेठ वालचंद रामचंद व सेठ रामचंद नाथा आदि कई महाशय पर्वार । पहली समामें कोल्हा गुरके एक विद्यार्थीको जिसने प्राचीन जैन प्रयोंके उद्धार पर माषण दिया था सेंड माणिकचंदजीने प्रमुत्र हो ४) इनाममें उसी समय दे दिया । यह सेटनीके विद्या प्रेमका नमूना है। सभापतिका भाषण बहुत विद्व-तापूर्ण हुआ, उसको सुनकर मि॰ यादवरावजी एम. ए. एलएल. बी. कमिश्तर कोल्हापुर जो अजैन थे बहुत प्रमन्न हुए और उठकर कहा कि-" जैन धर्मके मन्तव्य बहुत उत्तम है। अहिंमा धर्म बहुत ही श्रेष्ठ है आदि।" तीसरे दिन सेंट माणिकचंदनोने इस बातपर व्याख्यान दिया कि चंदेमें स्वीकार किया हुआ मूळ द्रव्य "च्याज देने रहेंगे " इव मंशासे वापर नहीं रखना चाहिये, उस द्रव्यसे डरना चाहिये। इस भाषणके असरसे बद्धनता बाकी रूपया लोगोंनं अदा करदिया। वास्तवमें यह बात अनुचित है कि जब हम कुछ दान करें तो उस द्रव्यको अपने ही पान जमा रक्षें इससे हमारा ममत्व लगा रहता है अतल्व उस द्वावको तो अपने यहांसे निकाल कर दे डालना चाहिये। हां, यदि कोई रकम व्याजपर अरने यहां जना करावे तो फिर जना करना चाहिये। उन्नी रक्त-मको विना निकाले लोभ नहीं घटता है।

समाने प्रसन्न हो सेठ माणिकचंदनी और सेठ हीराचंदनीको निम्न छिसित मानपन्न दिया-



सेठजीकी पुत्री फूलकौरवाई.

(देलों एष्ठ १६२)

J. V. P. Surat.

## दक्षिण महाराष्ट्र जैनसमाजातर्फे मानपत्र. श्रीयुत माणिकचंद हिराचंद जव्हेरी

मुंबई जैनशांतिक सभेचे सभापति यांस.

श्रीमन्माणिक्यचंद्रो जयतु भुवि सदा रिमिम: स्वोपकारै:। जैनाः सर्वे समुद्रा इव बहु मृदिता यांतु वृद्धि तमेक्य ॥ १॥ महाशय !

या प्रांतांत आपण प्रस्तुत वर्षाच्या जैनपरिषदेकरितां आमच्या आमंत्रणाम मान देउन केलेल्या आगमनाने येथील आपल्या धमबां- धवास अनुप्रहीत केल्याबदल त्यांचेतर्षे आधीं आज फार आनंदांने आपले मनःपूर्वक आभार मानितों, संसारांत मनुष्यांस सतत भोगाव्या लगणाच्या दुष्प्रसंगांस अलीकडे आपणांन टकर देणें भाग पडले असतांही आपण आपल्या धीर स्वमावास अनुनक्त धर्मकृत्यांत आपलें मन स्थिर ठेविलें आणि आमच्या अल्पशा मार्वननिक चळवळींना उत्तनन देण्यासाठीं हा जामदायक प्रवास स्वीकारिला, हें आझांवर आपलें उपकार आहेत.

या उपकारास मार्गे सारणाऱ्या आपल्या अनेक सत्कार्यांचें आणि त्यांचें मूल आपल्या सच्छीलाचें स्मरण या प्रसंगीं सह नच होतें. धर्मबांधवांविषयीं प्रेम, जात्मुकतीची उत्कट इच्छा, साधे व प्रमळ आवरण, गरीबांविषयीं सहानुभूति आणि अपार औदार्य या गुणांची केवळ जिवंत मूर्तींच आज आमच्या भाग्योदयांने जैनसमाजांत उद्य पावली आहे असे आपल्या सहस्राविध धर्मबांधवांना वाटत आहे.

दक्षिणेतील गरीव विद्यार्थ्यात द्रव्यद्वारे साद्य देऊन, प्रसंगी

त्यांस उपदेश करून आणि त्यांनविषयीं प्रेम बाळगून या प्रांतांतील नैनसमानांत जी किंचित् विद्यावृद्धि होत आहे त्याचें बरेंच श्रेय आपल्यास आहे. पाऊण लाख रुपये खर्चून आपण जे विद्यालय मुंबईस जैन विद्यार्थ्याकरितां बांधिलें आहे त्या योगान चिरकाल आमच्या समाजास फायदा होईल यांत शंका नाहीं.

आपल्या दानश्र्रेतेची उदाहरणें देण्याचे कांहीं कारण नाहीं. तथापि इतर्के म्हटल्या शिवाय आद्यांस राहवतच नाहीं कीं हिंदुस्था-नांतील लक्षाविष जैन लोकांत आपण या गुणानें केवल अद्वितीय आहां. ज्यांच्या औदार्थाची सर्व देशभर पसरलेलीं मनोहर स्मारके जैनांच्या धार्मिकतेची साक्ष जगास देत आहेत त्या माहात्म्याचा पुण्य श्लोक मालिकेंत आपणांस गणण्ययास बिलक्कुल हरकत नाहीं.

जैन लोकांची सर्व प्रकारें उन्नती व्हावी; त्यांची स्थिती उर्जित व्हावी; व्यापारांत, सिक्षणांत व धार्मिकर्तेत त्यांना यश मिळत जावे. या चितेंत आपण सर्वेदा व्याप्त आहां व या उद्देशानें आपण प्रत्येक धार्मिक चळवळीम उत्तेजन देत आहा. याबदल आपले अभिनंदन करून श्री निनेश्वरकृपेनें या आपल्या सदुद्योगांत आपणांस अखंद सिद्धि मिळों अशी आधीं प्रार्थना करितों. तसेंच जैनसमाजाच्या उद्धारासाठीं असेंच यत्न पुर्देही चालविण्यास आपल्यांस निनेश्वर देवोंत अशी ही आमचीं विनवणी आहे.

आपले

श्री क्षेत्रस्तवनिधि } A. P. Chaugule B. A. L. b. ताः १८ जानेवारी } A. B. Latthe M. A. १९०४ ई० } &c. &c.

स्तवनिधि क्षेत्रमें एक दिन कन्याविक्रयकी हानिकारक रीति-पर चर्ची हुई उस समय बताया गया कि कन्याविक्रयके द्रव्यसे अपनी कन्याओंको बेचनेके समान निन्धकर्म ज्ञातिभोजनमें श- और नहीं हैं तथा तो छोग ऐसे द्रव्यसे र्राक न होनेकी बने हुए ज्ञाति भोजनमें शरीक होते हैं वे प्रतिज्ञा भी महा निन्ध काम करने हैं। यह भोजन उच्छिष्टके समान है। उस समय हमार सेठ-

जीने इस बातकी प्रतिज्ञा की कि हम ऐसे भोजनको नहीं लांबेंगे इनके साथ निम्नलिखित भाइयोंने और भी नियम लिये—

१-सेठ हीराचंद रामचंद (हरीभाई देवकरण)शोलापुर्

२- ,, हीराचंद नेमचंद

३-शा. वालचन्द्र जीवराज

8-सेठ रामचन्द्र नाथारंगजी

वस्वर्ड

सेठ माणिकचंद्रमें गुणग्राहकताका अच्छा गुण था। आपमें
यह आदत थी कि गुणोंको प्रहण करे—
उदार पुरुषका दोषोंकी तरफ ध्यान न देवें। सेठजीन जेनसन्मान। मित्र अंक ८,९ वैशाख, जेठ १९६०, में
बम्बई प्रांतिक समाके सभापतिकी हैसियतसे
एक धर्मात्मा सेठकी मृत्युपर अपना शोकोहम प्रगट किया है।

ह बमात्मा सठका छत्युवर अपना शाकाह्म प्रगट किया है। शोलापुरमें एक घनाढ़च अग्रेमर दाववीररत्न सेट रावजीमाई कस्तरचंदजी थे जो मिती चैत्र कुठ १४को

लोकवहादुर रावजी अपनी ५६ वर्षकी आयुमं परलोक सिवारे-कहतूरचंद शोलापुर। इस नरनं अपने पिनाकी सम्पत्तिको मुंबई, शोलापुर, पूना आदि स्थानोंमें व्यापार करके बहुत वृद्धि-गत किया और अपने जीवनमें निम्निलिखित उल्लेख योग्य धर्मकार्य्य किये ।

- (१) सं० १९३३ फागुण सु० २ को रु० ५००००) खर्च कर श्री तारंगाजीमें जिनबिम्न प्रतिष्ठा कराई।
- (२) सं० १९३४ में सम्मेद शिखरजीकी यात्रामें हजारों खर्च किये।
- (३) सं० १९३८ में श्री केशरियाजीकी यात्रामें संघ सहित जाकर १००००) खर्च किये।
- (४) सं॰ १९४८ में श्रीगोमहत्त्वामीकी यात्रा बड़ी घूनघामसे की, हजारों रुपये खर्च किये ।
- (५) सं० १९४८ में चतुर्विधि दानशालाको बड़े भावसे स्था-पन कराया।
- (६) सं० १९५१ में पालीतानामें सेठ हरिभाई देवकरणके साथ बिम्बप्रतिष्ठा कराई उममें ५००००) पचास हजार रु० खर्च किये।
- (७) सं० १९५७ में बम्बई संस्कृत विद्यालय फंडमें १०००) दिये।

पालितानाकी प्रतिष्ठाके समय इनका पुत्र राममाऊ २ ५ वर्षकी आयुमें परलोक सिधार गया । आपने कुछ भी शोक न करके स्वयं शांति रक्खी व औरोंको धैय्य बंधाया। शोलापुरके जैनियोंमें इनकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी तथा यह लोक बहुाहुर कहाते थे।

बैशाख बदी ३ सं० १९६० को सेठ चुकीलालने फल्टनमें पाठशालाकी स्थापनाके समय एक मनोफल्टनमें सेठ चुन्नी- हर भाषण देकर उमके द्याम बताए व एक
लालका विद्याभेम । घड़ी प्रदान की । इसमें गांधी नाथारंगजीकी
तरफसे २९) मासिक ५ वर्ष तक देना
स्वीकार किया गया था ।

सेट माणिकचंद्रजीकी परोपकारार्थ मेवा जगतके नीवोंके छिये दृष्टान्त रूप है। द० महाराष्ट्र जैन स्थाको शिक्षण फंडके लिये उन्नति देनके लिये उसके शिक्षणफंडकी व-सेटजीका भ्रमण । सुलीके लिये नैसं आपने स्वनिधिकी सुभामें अपने भाषणसे बहुतसा स्थया एकत्र करा दिया वैसे इनके लिये भ्रमण करना भी स्वीकार किया। ता० २० मई १९०४को सेठ माणिकचंद्नी शिक्षण फंटको वसूलीके लिये आने-वाले थे पर कार्य बाहुल्यके कारण न आ मके पर उमी रोज रा० ग० ए॰ बी॰ छट्टे॰, स॰ स॰ हैंजे ऑन॰ जनगल सेकेटरी; स॰ स॰ बलवंत बाबाजी बुगटे बेलगांव आगए थे और अपने व्याख्यानोंसे तुम कर रहे। थ । इतनमें सेठ माणिकचंदजी अपने मित्र सेठ हीराचं-इनीके साथ बेळगांव स्टेशनपर ता० १ जुनको पघारे । स्टेशनपर बड़े भारी समारोहके साथ स्वागत किया गया । होसुरमें श्री लक्ष्मीसेन स्वाजीके मठमें स्थान दिया गया। कोल्हापुर आदिसे भी कुछ छोग आए थे। एक दिन माणिकचंदनीके, दूसरे दिन रा० दत्तात्रय आण्णा बुणे शोलापृग्के सभापतित्वमें सेठ हीराचंदजीके दो ज्याख्यान हुए। जैनधर्मकी बड़ी महिमा हुई।

एक नवसुवक्ने तुर्त परस्त्रीत्यागका त्रत लिया । फंडके लिये कहा गया तो रा० रा० चिमप्पा अण्णा र्छेगड़ेने ५०१) तुर्त रोकड़ा दियं, करीब २०००) की भरती हुई। किसीने नए आंकड़े भरे। रा० रा० त्रवाणेन १००) ग्रंथ म्वाध्यायार्थ बांटनेके लिये देना कब्ल किये। वास्तवमें शास्त्रदान बहुत कल्याणकारी है। सर्व मंडलीसे सत्कार प्राप्त कर रूपया एकत्र कर दोनों सेट, छट्टे और अन्य लोग कोल्हा-पुर गये । वहां रा० रा० भर सेठ, पाटील मजिस्ट्रेट, शास्त्री कला-प्पा भरमप्पा निष्टवं आदिनं म्बागत किया। प्रो० बीजापुरकरने सेटजीको ब्लाकर पानसुपारी की । यहां उस समय डकन कालेनके प्रोफेसर पाटक श्री छक्षीमेन स्वामीके मठमें प्रथ देखने आए थे। यहांसे किणीसगांच गण । यहां ८००) ह० जमा हुए, फिर वड़गांव गए, वहां २३२) रु० एकत्र किये। किणीसमें गरीब जैन बालक विद्या पढे इसके लिये एक शिक्षक रखनेका (बर्च सेट <del>ही</del>राचंदने देना कबूल किया । फिर **कोल्हापुर** आए । रा० रा० आपा दादा गोंदा पाटीलकी अध्यक्षतामें उपदेश हुआ। पाटीलजीने ४००) शिक्षण फंडमें देना कबूट किये।

यहाँपर हीराचंद्जीकी रायसे सेठ माणिकचंद्जीनं विद्यालयके लिये एक मुंद्र इमारत तय्यार कोल्हापुर बोर्डिंगकी कराना स्वीकार किया तथा महाराज कोल्हा-इमारत बनानेकी पुरकी जब भेट हुई तब सर्कारने भी यथाशक्य स्वीकारता। मदद देना कबूल करके चौफाल्याके मालाकी जगह इमारतके लिये दान की। इस काममें दीवान साहब, रा० सा० सावंत मामलेदार, बापूसाहब आदिने खूब परिश्रम किया। सेठनी तुर्त बम्बई आए और माई नवलचंदकी राय लेकर अनुमान २२०००) इस कोल्हापुर बोर्डिंगकी

कोल्हापुर बोर्डिंगकी बहुत सुन्दर इमारत बनानेके लिये खर्च करना इमारतका महते। निश्चित करके पत्रव्यवहार करके ता० १५ अगस्त १९०४ को नीव डालनेके लिये

तनवीन हुई। यह भी तय हुआ कि महारान कोल्हापुरके हाथसे महर्त्त हो । इसी तारीखरर चम्बईसे सेठ माणिकवंदनी, शोलावुरसे सेट हीराचंदनी व अन्य ग्रामोंसे बहुत आदमी आए थे। शहरके अधिकारी व सम्य पुरुष सब उपस्थित थे। ठीक २ बजे दोपहरको महाराज छत्रपति थो० एँजन्ट सहित आ विराजे, तब मि० रहे एम० ए० ने इंग्रेजीमें एक लम्बा भाषण दिया, जिसमें कहा कि यह द० म० जैन सभा अप्रेल सन् १८९९ में स्थापित हुई है, परंत सन् १९०२ से एक शिक्षण फंड १२०००) का किया गया और विद्यालय यहां स्थापन किया गया है। फिर इसको बोर्डिक्समें बदुलागया उसमें अब २० छात्र हैं जो हाईस्कूलमें पढ़ते हैं तथा फंड अब ४००००) का है इसमें में ६०००)का फंड रोकड़ा आया है जो बम्बईके प्रसिद्ध सेठ माणिकचंद पानाचंद जौंहरीके यहां जमा है। बाकी रूप-येका लोग ४) सैकड़ेका व्यान देते हैं। बोर्डिक्नके मकानकी बड़ी जरूरत है जिससे १०० छात्र रह सके, जो धर्मशिक्षा छेते हुए रहें। इसके लिये महाराजने विकटोरिया मरहठी बोर्डिंगके पास बहुत अच्छा स्थान दिया है जिसपर सुंदर इमारत बनाना सेठ माणिकचंद-जीने कबूल किया है। उसकी नीव आज श्रीमन् महाराजके द्वारा

डाली नायगी। तब सेठ माणिकचंद्रनीने महाराजको विनती की कि नीव रक्षें तब महाराजने चांदीकी थापीसे चूना रक्खां। इस तरह सेठ माणिकचंद्रने कोल्हापुरमें अति सन्मानके साथ बोर्डिंग बनानेका महूर्त किया। इस उत्सवको पूर्ण करके सेठजी जो कि अब परोपकारमें ही अपना जीवन अर्थण कर चुके थे बम्बई होते हुए अहमदावाद आए।

यहाँ ता० २२ अगस्तको बोर्डिंगका नामकरण संस्कार था। सेठ माणिकचंद्रजीने हीराचंद्र गुमानजी अहमदाबाद बोर्डिंगको जैन बोर्डिंगकी मेनेजिंग कमेटीमें ता० २७ ३५०००)का दान। मार्च १९०४के दिन यह प्रस्ताव पेश किया कि नीचेकी शस्तोंसे हम ३५०००) किम-टीके आधीन करते हैं कि गुजरात दि० जैन बोर्डिंग अहमदाबादका नाम फेर कर हमारे स्वर्गीय भतीने प्रेमचंद् मोतीचंद्का नाम उसमें दिया जावे—

(१) २५०००) कायम फंडके लिये (२) ५०००) बोर्डिंग-के मकानके लिये (३) ५०००) प्रेमचंद्की माता रूपाबाईके १२३४के उपवासके उद्यापनके हर्षमें। इस तरह ३५०००)का ज्यान बोर्डिंगके छात्रोंके रहने व भोजनादिमें खर्च हो। प्रबन्ध इस कमिटीके हाथमें रहे तथा यह कमिटी अपनी तरफसे एक आनरेरी सेकेटरी मनेजिंग कमिटीके मेम्बरोंमेंसे नियत करे। यह मंत्री वार्षिक रिपोर्ट बम्बई बोर्डिंगके मंत्रीको मेजे जो यहांकी रिपोर्टके साथ छपकर बाहर प्रगट हो। यह रकम गवर्नमेंट सिक्युरिटीवाले आचरियेमें या अच्छा माड़ा आवे ऐसे मकानमें रोकना। इस रकमका ज्यान उपरके हेंत्रके विरुद्ध कभी खर्च न करना तथा इस नोर्डिंगको कभी उखाड़ना नहीं। यदि कदाचित कोई विद्यार्थी न आनेसे नोर्डिंग न चले तो नम्बई नो०के ट्रस्टी अपनी सम्मतिसे इसका उपयोग गुजरातके दिगम्बर जैन धर्म पालनेवालोंके अंदर विद्या प्रचा-रार्थ खर्च करें। इस प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार किया गया।

इसीके अनुसार ता० २२ अगस्त १९०४ को प्रातःकाल अहम गाना वा बिरस्मरणीय रहनेकी स्थापनासे बहुत आस्त १९०४ को प्रातःकाल अहम गाना वा बिरस्मरणीय रहनेकी समाप वित्व में सभा हुई। उस समय २५०००) देकर नाम बदलनेका महत्व प्रगट किया गया। जयसिंहभाई गुलाबचंद मिनि० आसीद, शा॰ हरजीवन रायचंद व पं० लालन आदिके भाषण हुए। मत्रीने पुस्तकालयके लिय अपील की तो २२५) रु० आये। एक गुम नाम भाईने १०० मासिक छात्रवृत्ति दी। रात्रिको १९००) का चंदा हुआ। गुनरातके बहुत भाई आये थे। इस सभामें रा० रा० लड़े एम० ए० भी शरीक हुए थे। इन्होंने टंग्रेजीमें भाषण दिया था। ता० २३ की रात्रिको रा० रा० रामचंद गांधीने बालविवाहके विरुद्ध जोरदार भाषण दिया निसका ओताओं पर अच्छा असर हुआ। माता क्याबाईको अपने पुत्रका नाम चिरस्मरणीय रहनेकी स्थापनासे बहुत आनन्द हुआ।

अहमदाबादसे सेठ माणिकचंदजी बोरसद पदारे। वहां ता० २६ अगस्तको सेठ जेठालाल प्रेमानन्दकी बोरसदमें भ्रमण ओरसे एक सार्वजनिक पुस्तकालयकी और मानपत्र। स्थापना सेठजीके कर कमलोंसे बड़ी धूम-धामसे हुई। स्थापनकर्ताने १०००) नकद व २००) की पुस्तकें दी तथा अन्य उपस्थित सज्जनोंने ४००) की मदद दी । सर्व जैन मंडली सेठनीके उपदेश व विद्याप्रेमको देखकर अति प्रसन्न हुई और परम हर्षमें भरकर एक मानपन्न प्रदान किया जिमकी नकल इस भांति हैं—

## मानपत्र.

## झवेरी दोठ माणेकचंद पानाचंदनी पवित्र सेवामां. प्यारा धर्मबंधु,

आजे अमो बोरमद निवासी दिगम्बर नैनौ आप साहेबनी स्ववर्म अने केळवणी प्रत्ये अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आप-वानी तक लक्ष्ये छीये ते स्वीकारी आभारी करशो.

श्री जयधवल, महाधवल जेवा प्राचीन ग्रंथोना जीणोद्धार करवामां आपे आगेवानी भाग लई सर्वे भाइओनी मदद्यी काम चलाव्युं छे तेथी आपनी धर्म शास्त्रज्ञान वृद्धिमाटे अत्यंत उत्कंठा जणाई आवे छे. आपे सूरत जेवा पौराणिक शेहेरमां जैनी यात्राळु ओनी उतरवानी सगवड माटे 'जैन हाल ' जेवुं चन्दावाडी नामनुं मकान बंबाववा पाछळ रु० २०००) नो खरच करी जैन कोम उपर जे उपकार कर्यो छे ते आपनी जैन भाइओ प्रत्येनी उदार लागणी बतावे छे.

आपणा जैनी माईओ स्वधर्म अने रानकान संबंधी, रानकीय, वैद्यकीय, शिल्पशास्त्र अने इंग्रेजी गुनराती साहित्य वीगेरेनी ऊंचा दरज्जानी केळवणी मेळववामां अत्यावश्यक साधन ने बोर्डिंग स्कूल के ते मुम्बई जेवा मोटा शहेरमां श्वेतांवरी, दिगंबरीनो भिन्न

भाव राष्ट्रया विना पोताना आशरे पोणोलाख रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री रोठ हीराचंद गुमानजीना स्मरणार्थे आपे बांधी आपी समस्त जैन कोम उपर जे उपकार कर्यों छे ते पशंग्रनीय हे अने ने आपनी धर्मपहित ऊंचा घोरणनी इंग्रेनी केट्रक्मी आपवानी अपश्वपात लागणी प्रदर्शित करे छे.

तमन गुजरादमां अमारी दिगम्बरी जैन को मर्मा के सवणीना बोहोळो फेटाबो करवा माटे मोजन, अभ्यास वीगेरे बधी सगवडो पूरी पाडनारी एक बोर्डिंगस्कूल आपना कैलामवासी भन्निना रोठ प्रेमचंद्र मोतीचन्द्ना नामथी अमदाबादमां रु० ४००००) ने खरचे उपाही तथा कोल्हापुरमां एवीन सगवडवाली भैन बोर्डिंगनुं मकान पोतान खरचे बंधावी आपी स्वधमी भाईओ प्रत्येनी शुद्ध लागणी अने धर्मकृत्यमां भारे उदारता प्रकट करी छै.

मुंबई जेवी अलबेली नगरीमां कोई पण कोमने उपयोगी थई पडे तेवी एक भव्य धर्मशाळा बांधवा पाछळ दोढ लाग्व रुपीआ यमीदा काढ्या छे ते आपनी गरीबो प्रति द्यावृत्तिनी लागणी प्रकट ऋं छं. छंबटमां आपनी आवी आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तप सेवान माटे तथा विद्या अने विद्वान् प्रति आपनी सदैव शुभ लाग-णीओ माटे अमी आपने आ मानवत्र आपतां श्री जगत्कर्ता (!) पासे अतः करणपूर्वक प्रार्थना करीए छीए के आप दीर्घायुषी थाओं ने परमात्मा आपने आवां उत्तम कार्यो करवाने सदैव सन्मति आपो,

एवं इच्छी आ मानपत्र मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राग्वीए छीए. तथास्तु. बोरसद २६ ओगस्ट १९१४.

आपना मट्गुण चाहनारा—
परी० प्रेमानंद नारणदास
शा० भाइजी पानाचंद
शा० मथुरदास पानाचंद
शा० छगनलाल मलजी
शा० काळीदास जेशींग बीन किशोरदास
शा० धरमचंद ताराचंद

श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि निनके उपसर्गको बलमद श्री
रामचंद्रने दूर किया था कुंथलगिरि पर्वतसं
कुंथलगिरि क्षेत्रपर मोक्ष पथारे हैं। यह पहाड़ उत्तम मंदिरोंस
सड़कके लिये शोभित है। दक्षिणमें बारसी टाउन स्टेशनसं
१००१) का १० कोस है। रास्ता बड़ा खराब है। बैलांको
दान। बहुत तकलीफ होती है। पिंपलगांवस तो
बहुत ही खराब है। रास्तेमें सावरगांवकी
नदी व पर्वत बहुत कठिन है। गाड़ी छः बैल लगनेपर भी नहीं
चलती। यहांसे मूम राज्यके वाकवड़ तक चढ़ उतर बहुत कठिन
है। इतनी दूर सड़क बांधनेको १० या १२ हनारका अंदाज
किया गया है व सर्कार मूमने चौथाई सर्च देना कब्ल किया है

शा० शीवलाल पानाचंद

तन सेठ माणिकचंद्जीने १००१) दिये तथा इसके प्रक्रिक लिये एक कमेटी ७ महाशयोंकी बनी । सेठ माणिकचंद पानाचंद जोंहरी बम्बई, गांधी रामचंद नाथा बम्बई, दोशी हीराचंद नेमचंद शोलापुर, गांधी वालचंद रामचंद शोलापुर, शा. हीराचंद प्रेमचंद पगंदा, सेठ नानचंद वालचंद धाराशिव, सेठ रावजी सखाराम, मृम । यह सड़क जहां तक मालुम है अब तक बनी नहीं है।

नवीबाईके संयोगसे सेठ माणिकचन्द्रको १॥ वर्षके अनुमान हुआ पुनमचंद नामके एक पुत्ररत्नका छाम सेठजीको फिर भी हुआ था इमसे सेठजीको बहुत संतोष पुत्रवियोगका दुःख हुआथा। परंतु आप बोरमदसे बम्बई आए कि व १०००) का पुत्रको बिमार पाया। उसकी औषधिका दान। प्रबन्ध बहुत कुछ किया पर वह जीव उच गोत्री होनपर भी अरुगयु था सो सेठजी

और उसकी माताको यकायक शोकसाग में डुबाकर ता० २८ अगम्तकी मंध्याको शरीर छोड़ चल बमा। संटनीको रंग तो बहुत हुआ पर धैर्य्य और ज्ञान तथा अनुभवंन यही शिक्षा दी कि शोक करना खुथा है। कौन पुत्र और कौन पिता ? यह सब माननंका रिस्ता है। जिसका मेरेसे भला हो वहीं मेरा पुत्र है। आप अपने जातिके बालकोंको ही अपना पुत्र जानते थे और जहां तहां उनमें धार्मिक और लौकिक ज्ञानकं प्रचारार्थ तन मन धनसे मदद करते रहते थे। आपसे नव कमी कोई पुत्रकी बात करता आप यही उत्तर देते कि मेरे जातीय बालक ही सब मेरे पुत्र हैं। मुझे पुत्रकी कामना नहीं है।

उदारचित्त दानी सेउने पुत्रकी स्पृतिके लिये १०००) का दान इस प्रकार किया-

- २०) जैन महाविद्यालय, मथुरा ।
- ६०) दि० जैन प्रान्तिक सभा, बम्बई।
- ४०) पंजाब, अवध, मालवा और नागपुरकी दि० जैन प्रान्तिक सभाओंके सहायतार्थ।
- १००) सेट घेमचंद मोतीचंद दि० जैन बो० स्कूल,अहमराबाद,
- १००) श्री कुंथलगिरिकी सङ्ककं लिये।
- १००) द० महाराष्ट्र जैन बोर्डिंग, कोल्हापुर ।
  - ५०) सिद्धक्षेत्र गनपंथाजी ।
  - २५) जैन अनाथालय, हिसार ।
  - २५) " जैपुर।
- १००) पिंजरायोल-सूरत ।
  - ५०) रक्तपित्त औषधालय-त्रम्बई।
  - ५०) महाजन अनाथ बालाश्रम-सूरत ।
  - २५) ,, अहमदाबाद्।
  - २५) भोजनशाला-मुस्त
- २३०) फुटकल ( इच्छित कार्योमें )

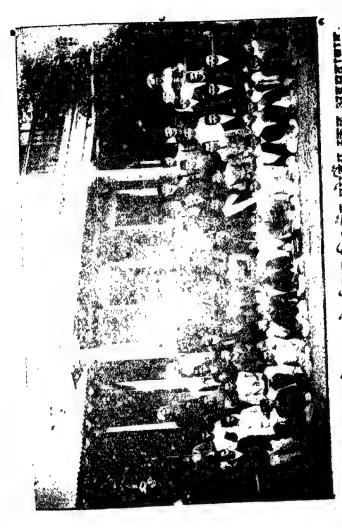
२०००) कुल

पाठकोंको इससे शिक्षा लेगी चाहिये कि सेठनी अपने पैसेसे कितने विचारके साथ उपयोगी कार्मोमें दान किया करते थे !

सेठ नाथारंगजी गांधीवाले सेठ हरीचंदजी नाथा आकलन (शोलापुर)का आसौन वदी ९ सं०१९६१ सेटहरी वंद नाथाका के दिन अपनी ६६ वर्षकी आयुमें समाधि मरण और २५०००) मरण हुआ । आपने उस दिन २५०००) का दान विद्यार्थियोंके उत्तेनन व जिनवाणी-का दान। के प्रचार आदि दानके अर्थ संकल्प करके व अन्य पुण्य दान करके मरणसे दो घंटे पहले सर्व बाह्य अभ्यंतर परिव्रहको त्याग आत्मध्यानमें उपयोग लगा दिया और उसी अव-स्थामें आत्मा निकल स्वर्ग धामको पधारा । यह बड़े उदारचित्त थे । उस समय इनसे छोटे छः भाई रामचंद्र नाथा आदि मौजूद्रथे । आप बहे बुद्धिशाली थे। पिताकी मिथति। साधारण थी। जद वं मरे तब यह २२ वर्षके थे । इन्होंने ऐसा व्यापार चलाया कि बेड व्यापारी हो गए और अपनी दूकार्ने पंढरपुर, आकल्कन, बीनापुर, गंदूर, मोरेना, बम्बई ऐसी छः जगह खोल दीं। यह उदारचित्त भी थे। आकलजकी प्रतिष्ठामें १८०००) खर्च किये। यह दि० नैन प्रान्तिक सभा बम्बईके उपमभापति थे। सेठ माणिकचंदके हमारों लाखोंका दान इनकी बृद्धिमें अंकित हो रहा था। रुक्ष्मीको अपने हाथसे कमाकर जो अपने हाथसे ही उपयोगी कार्मों में लगाते हैं वे ही सचे बृद्धिमान व चतुर धर्मात्मा हैं।

हक्ष्मी टमनी व चंचल हैं। जो इसे संग्रह करते हैं और दान वर्ममें नहीं लगात हैं उनके तीन्न मोह उपना करके यह उन्हें टम लेती है और वे जीव इसके टमे अपने अशुभ भावोंके अनुसार नकी निगोदमें व निन्दा पशुमतिमें ना महान कष्ट उटाते हैं परन्तु जो इसको दासीके समान समझकर मोह नहीं करते सदा इससे अपने आत्माका काम लिया करते हैं वे इसके द्वारा महात पुण्य बांध परभवमें अट्ट सम्पदाके स्वामी होते हैं अतएव लक्ष्मीको नित्य दान धर्ममें बहुत विचार पूर्वक खर्च करो, जैसे प्रसिद्ध सेठ माणि कचन्द्रजी अतिशय आवश्यक कार्मोमें लगाकर इसकी सफलता करते रहते थे। उक्त सेठका जीवन भारतवर्षके धनपात्रोंके लिये अतिशय अनुकर्णीय है। सेठनी सार्वजनिक संस्थाओं में भी दान करते रहते थे जैसे बालाश्रम सूरत, अहमदावाद आदि।





(हेलो छड १७६) सेठ प्रेमचन्द्र मानिष्यं िं जेन बोर्डिंग स्कूल अहमदाबार

## अध्याय दशकां।

## महती जातिसेवा प्रथम भाग।

क्ष्में नथा गुल खिलता है। अब तक सेठनीकी परोपकार-ताका केन्द्र अपनी और अपनी पत्नी इन दोनोंके जनमन्यान दक्षिण और गुजरातकी ही तरफ था पर अब क्षेत्र बढ़ते र सारा भारतवर्ष हो गया। सर्व दिगम्बर जैन जातिका कल्याण पहले आप केवल मनसे ही चाहते थे पर अब बचन और कायसे भी करना प्रारंभ किया, यहां तक कि मारे भारतके माई आपकी परोपकारनाको कभी भूल नहीं सके।

भारतवर्षीय दिगम्बर नैन महासमाके वार्षिक अधिवंशन
स्थान चौरासी मथुरा ही में होते थे पर लाजा
अंबालामें महासभाका बतारमीदास बॉइन्ट बतरल सेकेटरी महाजल्सा और सेठ सभाक हट प्रयत्नसे इसका दशवां वार्षिक
माणिकचंदको अधिवेशन अम्बाला लावनीमें ता० २८
धन्यवादं। दिसम्बर १९०४ से ता० ३० तक बड़े
भारी समारोहके साथ हुआ था। पहली
बेउकमें लाला सलेखचंद रईस नजीवाबाद समापित हुए थे तब
प्रस्ताव नं० ४ इस तरहका पास हुआ कि " महासभा
सेठ माणिकचंद पानाचंदजी साहब जौंहरी बम्बईनिवासी-

को धन्यवाद देती है कि उन्होंने पंडित कन्हैयालाल शेरकोट

निवासीको १२०) इनाम देकर इसके लिये उत्साहित किया है कि उसने पीलीभीतके लिखत हरी आयुर्वेदीय विद्यालयसे वैद्यराज और वैद्यरसकी परीक्षामें उत्तीर्ण पत्र हासिल किया है। "

सेटजी अपनी धनवृद्धिके प्रारंभसे ही परदेशी विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियें दे देकर उत्साहित करने रहते थे। इससे संकड़ों तील बुद्धि छात्र जो धनकी सहाय विना अपने पढ़नेकी उमंगको द्वा कर बैठ रहते सो पढ़कर अपनी विद्याकी उमंगको पूर्ण करते हुए। कन्हैयालालजी शेरकोटकी पाठशालाका तीलवृद्धि छात्र था जिसके अध्यापक पं० रमुनादत्त शर्मा थे। इनकी पढ़ाईके फलसे प्रसल्ल हो पंडित गोपालदास और बच्चलालजीकी सिफारिशसे उक्त पंडितजीको एक मानपत्र मा० दि० जैन महामभाने ता० २६ अक्टूबर १८९९ सं० १९५६ को दिया था तथा कन्हैयालाल सं० १९५७ की परीक्षामें प्रवेशिका चतुर्थखंडके पांचों विपयोंमें उत्तिण हुआ था उसको २॥) मासिक छात्रवृत्ति श्रीमान् सेठ माणिकचंद पानाचंदकी ओरसे दी गई थी।

यही पं० कन्हैयालाल आज कई वर्षीसे कानपुरके दि० जैन औषधालयमें इतनी योग्यतासे काम कर रहे छात्रहत्ति देनेका हैं कि वहांके सर्जन इंग्रेजने उस औषधाल-अपूर्व फल । दकी प्रशंसा की है। रोगी उनके हाथसे बहुत शीघ अच्छे होते हैं। नगरमें इनकी चाह भी खूब हो गई है जिपसे वह प्राइवेट पकानोंमें देग्वनेम १००) व २००) मासिक कमा लेते हैं। ता० २९ दिसम्बर १९०४ को मधुराके सेठ द्वारकादामजी अंबाला प्रधारे। उनका स्वागत बहुत धूमशामसे तीर्थक्षेत्र कमेटीकी हुआ। हाथीपर सवारी नगरमें घूमी। ता० दृढ्ता। ३० दि० की सभामें द्वारकादासजी सभापति दृष्ट तब प्रस्ताव ५ इस विषयका पास हुआ

कि प्रस्ताव नं० १० अष्टम वर्षकी दुरुम्तीमें महामभा तजवीन करता है कि कमेटी जो तीर्थक्षेत्रोंकी निगरानीके वास्ते महासभाके अब वर्षमें नियत हुई थी वह बदस्तूर कायम रहे । उनके कार्यकर्ता भी वे ही रहे तथा महासभा अधिकार देती है कि वह अपनी नियमावली अयन ही मम्बरोंसे मंजूर कराके कीर्रवाई करें । प्र० नं० ६ में महाविद्यालयके लिये एक हेपुटेशन पार्टी बनी जिसने उसी वर्ष मध्यप्रास्तमें बुम्कर करीब ६०००) एकत्र किये व धर्मकी प्रभावना की । उस समय भी ६॥ हज़ारका चंदा हुआ जिनमें २०००) लाला मलेखचंद किरोडीमलजी रईस नजीवाबादन दिये । जैनगज़ट जो कई बंधीम मासाहिकसे पाक्षिक चल रहा था उसकी संतोपजनक कार्रवाई देख फिर सामाहिक करनेके लिये प्रस्ताव नं० ८ पास हुआ व प्र० नं० अमें तथ हुआ कि आगामी अधिवेशन सहारनपुर में किया जाय ।

बम्बई दि॰ जै॰ प्रान्तिक सभाके प्रस्तानानुसार सेट माणि कवंदनीन सभापतिकी हैसियतसे जैनि-

अर्जीका जवाब व वस्वई योंकी संख्या जेलादिमें भिन्न दिखानेके गवर्नरसे भेट। छिये एक मेमोरियल बम्बई गवर्नरकी सेवाग भेजा था जिसका जो जवाब आया बल

इस भांति है --

शिक्षा स्नाता, बम्बई कोंसिल, ता० १ अगस्ट १९०४ व नाम-सेट माणिकचंद पानाचंदनी

प्रेसीडंट दि० जैन प्रान्तिक सभा, ब्रम्बई ।

महाश्च्य ! आपके ता० ४ जुलाई १९०३ के पत्रका उत्तर
इस प्रकार देनेको मुझे आजा हुई है:-

- (अ) आगामी वर्ष जत्र परिक्षापत्र जांचके छिये आवेंगे तब देशकी शिक्षा सम्बन्धी दशाकी सूचीमें जैनियोंको एथक् दिख्छानेकी बात पर ध्यान स्वर्गा जायगा।
- (क) जुडीशियल और ऐडिनिस्ट्रेटिवकी सूचीके तीसरे खानेमें बौद्ध और जैन एकत्र दिखलाए जाते हैं इसमें रदबदल करनेकी आवस्थका नहीं है।
- (क) ज्युडीशियल और ऐडिमिनिस्ट्रेटिक्की सूचीके आठवें (जन्म रण सम्बन्धी ) खानमें जनियोंको पृथक दिख्लाना अशक्य है।
- २- संनेटरी (आरोग्यता)के किमश्नर साहबकी रिपोर्टमें जैनियोंके एथक विवरण देनेके विषयमें आपको फिर लिखा जावेगा।

आपका सेवक जैं**० स्लंडन**; गर्वनमेंट सेकेटरी। (जैनमित्र वर्ष ६ अं० ९ )

सन् १९०४ दिसम्बरमें राष्ट्रीय सभा अर्थात कांग्रेसका २०वां अधिवेशन बम्बईमें हुआ था। सभापति सर बम्बई बोर्डिंगमें सभा हेनरी काटन हुए थे। प्रदर्शनी भी बड़ी व सेठजीका यश शानके साथ हुई थी। इस निभित्त परदेशी गान। बहुतसे जैनी भी बम्बई पधारे थे। ता० ३१ दिसम्बरकी रात्रिको ७ बने हीराचंद गुमा- नजी जैन बोर्डिंगमें श्रीयुत शोलापुर निवासी सेठ वालचंद् रामचंदके सभापतिस्वमें सभा हुई थी। बोर्डिंगके कार्य विवरणको सुनकर इसकी उपयोगिता प्रगट हुई, पं० बंसीधरको धार्मिक विप-यमें निप्रणताके अर्थ एक सुवर्ण पदक दिया गया और शेष धर्मशि-क्षामें उत्तीर्ण बोर्डरोंको इनाम दिया गया। सेठ माणिकचंद् व प्रेमचंद्की तीन वार जय कही गई। २००) उपस्थित मंडलीन टाइबेरीमें दिये। सेठ माणिकचंदको अपनी जातीय मेवाका यश मिलते हुए देखकर बहुत संतोष हुआ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाका वार्षिक अधिवेशन मान वर्टी १४ से माघ मुदी २ ताः ३से ६ फवंशी १९०५ स्तवनिधिपर द० म० तक स्तवनिधि क्षेत्रपर पड़े समारोहमं जैन सभा । हुआ । अध्यक्ष श्रीयुत सेठ नेमीलाल गुला बसाह नागपुरवाहे हुए थे । वरारसे बहुत

महाशय आए थे। सेठ माणिकचंद जी स्वागत कमिटीके प्रमुख थे भो पहले ही पहुंचे थे। ताः १ को स्टेशनपर मभापित हा स्वागत किया गया। शिक्षणफंडमें २०००) की उपन हुई। गंध्राण दादा तात्या चिवेट कुई त्वाइने १००) उत्पन्नकी नमीन दी। क्षेत्र भंडारमें २०००) के अनुमान आय हुई भो क्षेत्रमें मरम्भतको आवश्यक्ता नान सेठ माणिकचंद जीके यहां नमा करा दी गई। समामें ८ वा प्रस्ताव इस विषयका रा० रा० लंड एम. ए० ने पेश किया कि जैनियोंकी संख्याकी कमीके कारणोंको दूर किया नाय उसके लिये सभा सम्मित देती है कि दुव्येसन नन्य रोगोंके फैलाव व बालविवाह आदि कारणोंको रोका नाय। इसका समर्थन

श्रीमान होट माणिकचंदजीने बहुत नोरके साथ किया। सेठ माणिकचंदजी सपत्नीक स्तवनिधि पधारे थे। ता० ५

र्स्ना समाजकी अध्यक्षा ।

फर्वरीकी रात्रिको स्त्रियोंकी एक महती सभा सेठजीकी पत्नी हुई जिसका अध्यक्ष स्थान सेठजीकी धर्मपत्नी नवीबाई नीको दिया गया था। इसमें १५०० से अधिक स्त्रियां थीं। इस सभामें श्रीमती डाक्टरनी कृष्णाबाईन स्त्रीशिक्षा

पर बहुत ही असरकारक भाषण दिया । जैन समानकी तरफसे एक अगुठी नज़र की सो डाक्टरनी बाईन विद्याखातेमें झन कर दी। इस अंगृटीका नीलाम सभामें १५०) रु० में हुआ तथा दो इनाम और भी आए थे सो भी १२०) रु० में नीलाम हुए। इस रुपयेसे न्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी जाय ऐसा उहराव हुआ !

महाराष्ट्र सभाके जल्सेमें स्वयं कोठ माणिकचंदने १२ वां प्रस्ताव यह पंश किया-" बाहरसं आए धर्मादेका द्रव्य । हुए व्यापारियोंसे माल विक्री अथवा गाड़ी पर सैकड़ा पीछे कुछ धर्मादा वसूल करनेकी

इय ओर प्रथा है, परंतु यह धर्मादेका द्रव्य नाच तमाशोंके सिवाय किसी उत्तम लाभकारी कार्योमें कभी नहीं लगाया नाता है इसलिये प्रत्येक स्थानके मुखिया पंच महादायोंसे प्रेरणा की जाती है कि वे उक्त धर्मीदा द्रव्यको किसी सार्वजनिक कार्यमें लगानेका प्रयत्न करें । इसको वर्णन करते हुए सेठजीने समझाया कि व्यापारमें जो हम धर्मादा जमा करते हैं वह हमारी जातीय मिल्लियत नहीं है **परं**तु धर्मके लिये वह पबलिकका पैसा है। अतएव उसको धर्म व परोपकार कार्यमें खर्च करना चाहिये। उससे खैल तमारो कराना अधर्म है। उस पैसेको अमानतमें आप रखनेवाला हैं ऐसा समर्के और खर्च करता रहे। बहुतसे लोग ऐसे रुपयेको अपनी वहियों में नृमा करते चले जाते हैं पर उसका उपयोग नहीं करते। जब वह द्रव्य ज्यादा हो जाता है तब परिणाम गिर जाते हैं और वे उनको लियाकर रहने देते हैं खर्चका नाम भी नहीं लेते। " इम प्रस्तावका समर्थन रा० ग० अणाप्यः सरभाषा चिवटे और विष्णपंत शास्त्रीने किया। प्रस्ताव पास हुआ। इमका लोगोंपर अच्छा प्रभाव पड़ा। आगामी वर्षके लिये दोठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई कोपाध्यक्ष नियत हुए।

संवत् १९६६ के जाड़ोंमें शोलापुरके सेठ रावजी नानचढ़ श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्राको खाना श्रीमती मगनवाईजी- हुए । सेठजीन उन्हींके साथ श्रीमती मग-की तीर्थयात्रा । नवाईजीको अंकलेश्वरकी विदुषी बाई व मग-नवाईकी सहधर्मिणी ललिताबाई व रसोहया

आदि १० मतुष्यों के साथ यात्रार्थ मन दिया। सेटर्जाने मगनबा-ईजीको, संस्कृत व धार्मिक विद्या पड़ाकर व अनेक गुजराती व हिन्दी उपयोगी पुस्तकें तथा नित्य समाचारपत्र देखनेकी आज्ञा देकर इस योग्य कर दिया कि मगनबाईजी विना संकोचके यात्राका कुछ प्रबन्ध कर सकती, टिकट मंगा सक्ती, असवाब तुछवा सक्ती, व आवश्यकानुसार बात कर सक्तीं थीं। गुजरात देशमें इस तर-हका परदा नहीं है जैसा कि उत्तर भारतमें है कि स्त्री एक गुड़ि-याकी तरह होती है। वह स्वयं यात्रा नहीं कर सक्ती। उसके हाथ

पैर मुंह सब दका हुआ रहता है। उसको कुछ खबर नहीं। अस-वावमें एक स्त्री भी मानी जाती है जिसे उठा कर छे चलना पडता है। गुजरातकी स्त्रियां मुंह नहीं दकतीं-ज़रूरत पड़नेपर कायदेके साथ देखभाल व बातचीत कर सकती हैं। अनपढ़ गुजराती स्त्रियोंकी अपेक्षा मगनबाईजी परदा न रखनेका पूरा छाभ ले सकती थी। यह पढ़ी लिखी ऐसी चत्र थी कि जो बातें पुरुपोंको न मालम उनका इसे ज्ञान था । चौपाटी बंगलेपर जब सेटनी रात्रिको दीवानखानेमें बैठते तब यह भी दूसरी इर्सीपर बैठती और जो र बार्ते संठजी लोगोंसे करते उनको सुनती व कभी ज़रूरत होनेपर बीचमें भी बोलती थी । कुछ व्याख्यान देने व परोपकार करनेका भी शौक हो चला था। वृत्ति भी वैराग्य रूपमें थीं; इसीस सेटजीने मौका दिया कि इपको प्रवासका अनुभव हो और यह जातिसेवांक लिये तय्यार हो । लिलिनाबाई भी इसीके समान संस्कृत व घार्मिक विद्यामें चतुर थी, परिणति वैराग्य ह्वा थी । दोनोंका मेळ भी था । दोनों एक दूसरेकी रक्षा करें, एक दूपरेका स्थितिकरण करें इसीलिय दोनोंका साथ सेठजीने कर दिया । कई मास यात्रामें विताए । बुन्देल्रखंडकी यात्राएं भी की । शिलरजीकी यात्रा वह भावसं की । फिर लौटते हुए काशी, अयोध्या होती हुई लखनऊ प्यारीं।

लखनऊमें बाबू धरमचंद फतहचंद जौंहरीका नाम सेठजीन नोट करा दिया था सो चौकमें आई और बड़े मंदिरजीके निकट स्थानमें उक्त जौंहरियोंने बहुत सन्मानके साथ टहराया।

चौकका मंदिर बहुत सुन्दर बना है। भीतर संगममेरका नड़ाव

व रंगावेजी अच्छी है। पांच वेदियाँ हैं। वाबू शीनलपसादका मूलनायक श्री नेमिनाथ स्वामीकी परिचय। बड़ी ही शांत दो गन ऊंची पदासन प्रति-

बिम्ब मध्य वेदीमें विराजित है। द्रीन करते हुए जी नहीं तृप्त होता है। दूमरी वेदियां क्रमसे श्वेत वर्ण चंद्रपम्, चोवीसी, झंतकापापाण श्री पार्श्वनाथजी व श्री शांतिनाथजी की ४ हैं। शांतिनाथकी जितिबम्ब शाचीन है, परम वीतरागता झलकाती है करीब २। हाथ ऊंची पद्मासन है। द्रीन करने २ जी नहीं तृप्त होता है ऐसे ही चौथी वंदीमें श्री पार्श्वनाथजीकी बड़ी श्री प्रसन्तमुख आत्मिक आनंद रसको पीती हुई एक मध्य प्रतिविम्ब है। इसी वेदीके आगे मगनबाई और लिलताबाई दोनों शुद्ध योए वस्त्र पहने मामग्री लिये हुए बहुत ही लिलत उच्चरणके माथ अष्ट द्रव्यसे पूजा कर रही थीं, करीब २ प्रातःकालका समय था। इन दोनों लियोंको नित्य श्री जिनन्दकी पूजा करनेका अभ्यास था। किस समय ये पूजा कर रहीं थी, मंदिरजीमें कई श्रावक शास्त्र स्वाध्याय कर रहे थे। यहां पहले कभी किसीन स्त्रियोंको अष्ट द्रव्यसे पूजा करते हुए नहीं देखाथा सो सब आध्ययमें दूब रहे थे और सोच रहे थे कि ये कौन हैं, किस देशका विश्वां हैं।

उन स्वाध्याय करनेवालों में एक बाबू शीतलप्रसाद भी ये जो उस समय मंदिरजीके पासवाले मकानमें अपने बड़े माई लाला संतूमलके कुटुम्बके साथ रहते थे। शीतलप्रसादकी उस समय अवस्था २६ वर्षकी होगी। यह अप्रवाल वंशन गोयल गोत्रीय लाला मक्खनलालके पुत्रोंमेंसे एक थे। दो सीतलप्रसादसे बड़े और एक छोटा था। पर उस समय केवल दो बड़े भाई ही मौजूद थे। अनंतलाल जवाहरातका और सबसे बड़े संतलाल टोपी चिकनका काम करते थे। सबसे छोटा भाई पन्नालाल था नो अपनी १८ वर्षकी आयुमें इम समयके ८ या ९ मास पहले ता० १५ मार्च १९०४को प्लेग रोगसे पीडित हो परलोक सिधारा था। इमीके दो दिन पहले शीतलप्रसादकी स्त्री भी प्लेग रोगसे मरण कर गई थी। यह स्त्री एक वैष्णव अग्रवालकी पुत्री थी पर जिन धर्ममें ऐसी गाड श्रद्धादान थी कि किसी कुदेवादिकको नहीं पूजती थी। माता पिताने कुछ विद्या नहीं पट्टाई थी। पतिको विद्या पढाने-का शोक सो रात्रिको मोनेक पहले आध घंटा अक्षर व पुस्तकज्ञान कराकर सोनेकी आज्ञा मिलती थी। पतिकी कृपासे थोडे ही दिनोंमें जैन घर्मकी पुस्तक पढ़ने लगी। यी। पतिसे गाढ़ प्रेमथा। शरीर अस्वस्थ रहा करता था, इसीके चार दिन पहले ता० ९मार्च १९१३को शीतलप्रसाद-की माता श्रीमती नारायणदेवी यकायक एक ही दिन प्लेगमें बीमार रहकर परलोक सिधार गई। यह नारायणदेवी साक्षात् देवी ही थीं। इनको आल्स्य छू तक नहीं गया था। आप सबेरेसे रात्रि तक परिश्रम करनेमें ही मुख मानती थीं । शीतलप्रसादके पिताका १ वर्ष पहले देहान्त हो गया था । शीतलप्रसाद उस समय सर्कारी रेलने हिपानके दफ्तरमें इन्के थे। माता इन्हींके साथ थी। इनको बहुत चाहती थीं। नारायणदेवी रसोई कियामें बहुत निपुण थीं। स्वादिष्टते स्वादिष्ट भोजन बनाना जानती थीं । थोड़े खर्चमें स्नेह भरा मोनन बनाकर अपनी आयु पर्यंत छोटे प्रत्रोंको खिलाती रहीं। घरमें सफाई रखनेमें चतुर थीं । समय बचनेपर छखनऊके चिकनका कसीदा काहकर महीनेमें ८) व १०) रु. के अनुमान पैदा कर लेती थीं। बड़ा ही सरल मिनाज़ था। ऐसी माता व आज्ञाकारिणी स्त्री: व छोटे भाईके समागममें कुछ दिन शीतलप्रसादको स्वर्गके समान मुख मालून होता था और अरनेको साता होनेका बड़ा गर्व था कि मैं संतोषमें दिन विना रहा हूं, पर संसारकी दशा क्षणभंगर है, अंतराय कर्म किसीकी स्थितिको एकमी नहीं रहने देता । छखन-उ.में प्लेग प्रकोप हुआ। और ता० ९ में १५ मार्चिक पीतर वे ही तीन साथी जिनकं उपर शीतलप्रसादकं शरीरका वैय्यावृत्त निर्भर था यकायक इम हाइवई देहको छोड्कर चल दिये । इस वस्नासे शीतलप्रसादके चित्तको जो आयात पहुंचा वह वर्णनके बाहर था। पर श्री ज्ञानार्णव, स्वामिकार्तिकेयानुप्रदा आदि शास्त्रके पड्नेक। एमा भारी अमर चित्तमें था कि शोककी तम्क्र आती थी और नाती थी पर इतनी बलवती नहीं हुई थो कि आंखोंसे आंसुओंकी धारा वहा निकाले । शीत्लप्रसादको रोते न देखकर लोग आश्चर्य करते थे । मा० दि० जैन महासभाके साथ शीतलप्रसादका सम्बन्ध बहुत पुराना हो चुका था। नव बाबू सूर्यभानने जैनगज़ट जारी किया था और उमकी प्रतियें श्री शिवरजीमें वांटी थी उसमेंसे एक प्रति शीतलप्रसादके पिना मक्खनलालको प्राप्त हुई थी जो यात्राको गए थे. उस समय शीतलप्रसाद कलकत्तेमें थे और अपने मंझले बड़े माई अनंतलालके साथ जवाहरातका व्यापार व दलाली करते थे। पिताने वह जैन गजट शीतलप्रसादको दिया उसीको पढ़कर शीतलप्रसादके मीतरकी ज्ञान चिनगारी नग उठी और इसने नैनगनट मंगाना शुरू किया व उसमें लेख मी भेजने शुरू किये। सबसे पहला छेल ता० २४ मई १८९६ के अंक २२ में छपा है जिसमें पंडितोंसे प्रार्थना की गई है कि—

" ऐ जैनी पड़ितो, यह जैनधर्म आप ही के आधीन है। इसकी रक्षा कीजिये, द्योति फैलाइय, सोतोंको जगाईये और तन मन धनसे परोपकार और ग्रुद्धाचारके लानेकी कोशिस कीजिये कि जिससे आपका यह लोक और परलोक दोनां मधेरें आदि "।

शीतलप्रसादके कुट्रम्बकी कलकत्तकी जैन बिरादरीमें बड़ी मान्यता थी। इमका कारण यह था कि इनके पूज्य पितामह छाछा मंगरुसेनजी संस्कृत और फारमीके विद्वान् होनेकं सिवाय जैन धर्मके अच्छे मर-मी थे । यह जैन मंदिरमें सभाका शास्त्र पड़कर धर्मे पिदेश देते थे । गोम्मटसार व समयसारकी चर्चाका अच्छा अभ्यास था । लखनउके शाहजीकी कोठीमें कोषाध्यक्ष थे। इनको गणितमें छीलावतीका अच्छा ज्ञान था । कभी २ इंग्रेन लोग गणितका प्रश्न हल करनेको इनके पास आते थे। शीतलप्रसाद्वर इनका बड़ा प्रेम था। कभी यह लखनऊ आते तव १० वर्षके बालकको अपने माथ श्री मंदिरनी ले जाकर जो शास्त्र आप पहते सो बंचवाते थे। जैनगज़ट और महासभाके साथ शीतलप्रसादका यहां तक गाड़ सम्बन्ध हो गया था कि नव यह कलकत्तेसे लखनऊ सन् १८९८ के अनुवान गए तबसे करीन २ प्रतिवर्ष ही श्री चौरासी मथुराके दर्शन किये और महासमामें शरीक हुए । जैनगज़ट पत्रपर अतिशय प्रेम था । बाबू बच्चूळाळ प्रथागके देहान्त होनेपर जैनगजटका मुद्रित होना शीतळ-प्रसादके द्वारा छलनऊमें अंक १० सप्तम वर्ष ता० १ अप्रैछ १९०२ से शुरू हुआ, तब यह पत्र पाक्षिक था। उस समय शीतलप्रसाद

वोष कम्पनीके यहां अमीनाबादमें ५०) मासिकके एकौन्टेन्ट थे। लावनऊमें मिडिल क्षांस तक शिक्षा पाकर कलकत्ते व्यापारार्थ गए। वहां कई वर्ष रहे । एक वर्ष सील्स फी कालेजमें पढ़कर ता० १९ अप्रैं १८९६ को इन्ट्रेन्स परीक्षाके प्रथम विभागमें उत्तीर्ण पत्र प्राप्त कर लिया था। द्वितीय भाषा शुरूसे हिन्दी और संस्कृत थी। उखनऊमें आकर टामपन सिविल एन्नीनियरिंग कालेन रहकीकी फोर्थ ब्रेड एकौन्टेन्टिश्व नामकी परीक्षा ११ फर्वरी सन् १९०१में पास की । १॥ वर्ष पीछे फिर अवध रेलवे एकाज़िम-नग्के दफारमें इस गरतसे भरती हुए कि शीघ ८०) मासिक पानवाले एकौन्टेन्ट हाँ जावेगे और तब १५०) तक बढकर आगे तरको करेंगे । परांठ इन्हें स्वाध्यायका शौक न था । जब छलन-ऊमें डग्रेनी पट्ने थे तब नित्य द्शीन व कभी २ प्रछाल पुजन व कभी ज्ञाश्र मुनते थे। द्रीन क(के जीनना यह नियम ८ वर्षकी उम्रमें लिया था इसीसे चर्मकी लग्न लगी रही । यदि यह नहीं होती तो इंग्रेजी इक्टब्की संगतिमें पड़कर नेसे और बालक धार्मिक किया छोड बैठने हैं वैसे यह भी छोड़ बैठते पर दर्शनके नियमने वर्म मार्गपर कायम रक्ता । स्वाध्यायका अभ्यास कलक-करेतमें बाब् ऋषभदास प्रयाग निवासीको एक दिन पंडित सदायुख-नी कत रत्नकरंड श्रावकाचार पढते हुए सुनकर प्रारंभ हुआ था। नव तक जैनगुन्ट लखनऊमें शीतलप्रसादके द्वारा छपता रहा बाबू देवकुमार आरा निवासी सम्पादक थे। शीतलप्रसादको लेख लिखने व समाचार देखनेका शौक था। बहुतसे लेख स्वयं लि-सकर समाचार छांटकर यह दिया करते तथा प्रुफको जांचकर

पत्रको तय्यार कराकर आरा भिजवा देते थे । यह पाक्षिक रूपमें अक ५ दशम वर्ष ता० १६ जनवरी १९०५ तक निकला। फिर शीतलप्रसादके खास उत्साह व परिश्रमको देखकर व देवकु-मारजीकी हार्दिक इच्छा व मददको जानकर महासभाने इसको साप्ताहिक करनेका प्रस्ताव अम्बालाके अधिवेशनमें पास किया उसके पीछे ही ता० १ फरवरी १९०५से अंक नं ० ६ से साप्ताहिक रूपमें निकलने लगा और इस प्रकार यह पत्र लखनऊमें ता० ११ नवम्बर १९१० तक छपता रहा । जब इसके सम्पादक बाबू जगलकिशोर देववन्द हुए तब शीतलप्रसादका म्बास सम्बन्ध जैन गज़रसे छुर गया । शीतलप्रपादके चित्तमें जबसे उनकी स्त्री माता व भाईका एक साथ मरण हुआ, संसारसे उदासी छा गई थी । यद्यपि दुपतर रेखवेमें जाते थे पर मन त्यागके सन्माव हो रहा था। नव ये दोनों बाइयां पूनन कर चुकी तब शीतलप्र-साद साहम करके उनका नाम ठिकाना आदि पूछने लगे। सेट माणिकचंदको यह अच्छी तरह जानते थे। जैनमित्र, जैन-अज़टमें इनके कार्योंकी महिमांक सिवाय मधुराके मेलेपर प्रत्यक्ष देखा था । यद्यपि उस समय वार्तालाप करनेका कोई अवसर नहीं मिला था यह नानकर कि यह सेट माणिकचन्दनीकी पुत्री है, बाबू शीतलप्रसादको बड़ा हर्ष हुआ, तुब श्रीमती मगनबाईजीन पूछा कि क्या यहां कोई श्राविका पटी हुई हैं ! उम ममय छम्बन-ऊमें श्रीमती पार्वतीबाईको शास्त्रका कुछ अभ्यास था व धर्मसे लग्न थी. उन्हीका नाम व पता बताया क्योंकि शीतलप्रसादको भोजन करके दफ्तर जाना था अतुण्य यह फिर भिलेगे ऐसा कहकर चल

दिये। शामको दफ्तरसे आ भोजन करके खबर भिजवानेपर श्रीमती मगनबाईजी मिली तब इन्होंने बाबू अजितप्रसाद बकीलका पता पृद्धा व मिलनेकी इच्छा प्रगट की। सेठजीने सब नोट करा दिया था कि अमुक नगरमें अमुकरसे मिलना। शीतलप्रसाद इनको ब इनकी पुत्री केशरमतीको एक मनुष्यके साथ बाबू अजितप्रसादनीके मकानपर ले गये। उन समय जिम दंगसे बाईजीने वातचात की उससे मालुम होता था कि इनको दुनियांका, सभा सोसायटी आदिका अच्छा अनुभव है। दो दिनतक दोर वई। धर्म चर्चा करनेसे व प्रश्नोत्तर करनेसे दोनों बहनोंको धर्मका अधिक लाम मालुम हुआ। इनको शीतलप्रमादनीन खीशिक्षा प्रचारार्थ उत्तेजिन किया और प्रेरिन किया कि जैनगजटमें मुद्रिन करानेको लेख भेज तो शुद्ध करके छ्यादिये जावेंगे। बाइयोंने स्वीकार किया।

मालवाके प्रसिद्ध प्राचीन नगरमें नएपुराके मंदिरका जीर्णोद्धार कराकर विम्वप्रतिष्ठाका पंचकल्याणकोत्सव उज्जैनकी विम्वप्र- इन्दौरके सेट तिलोकचंद कल्याणमलजीन चैत्र निष्टा और सेटजी- मुदी ९ से १३ सं० १९६१ तक कराया का ममागम। था । १६००० के अनुपान जेनी भिन्नर प्रान्तोंके एकत्रिन थे । अजमेरके सेट नेमी-

नंद्जी, पाटनके विनोदीराम बाळचंद, ल्ह्करके राजा फूलचंद आए थे । बस्बरसे सेट माणिकचंद्जी सकुटुम्ब व श्रीमती मगनबाई सहित पर्धार थे । माथमें पालीतानाके मुनीम धरमचंद हरजीवनदान व अंबरेश्व(की लिलताबाई भी थी । प्रतिष्ठाकारक पंडित बापूलालजी रतलाम और पं॰ नरसिंहदास्त्री थे । त्यागी दौलतरामनी, अनंगत-

मनी, नानकीलालजी, शीलचंदनी, मुत्रालालजी आदि भी आए थे। दौछतरामनी गोम्मदृसारके ज्ञाता, विद्वान व वैराग्य संयुक्त य । इस उस्सवमें छखनऊसे शीतलप्रसाद भी आए थे । जबसे इन-की पत्नीका देहान्त हुआ था तबसे धार्मिक कार्योंमें विशेष मन था सो रखने दफ्त में छूटी लेकर इस महान उत्सवको देखने व उपदेश करने चले आए थे। शीतलप्रसादको मभामें व्याख्यान देनेका बहुत शौक था। कलकत्तेमें मासिक व पाक्षिक सभामें व लखनऊकी सभाओं में व महासभाके अधिवेशनों में भी व्याख्यान दे चुके थे। इस उत्सवमें सभा होना बड़ा कठिन था। कोई म्वास प्रबन्ध नहीं था। **सेठ माणिकचंदजी**को भी सभाका बहुत शौक था। चैत्र पुदी १२ की रात्रिको आपने ठान लिया कि मभा अवस्य कराएंगे । आप एक छोटेसे मंडपमें गए । वहां स्वयं खड़े होकर बिछोना बिछवाया, बुटावा दिल्याया और प्रथम ही १०-२० आदिमयोंको लेकर बैठ गए, इन्नेमें सभा जुड़ गई। उस समय संउ माणिकचन्द्रके उत्पाह व परिश्रमको देखकर बड़ा आनन्द्र होता था । इसी रात्रिको हकीम कल्याणरायनी, शीतलप्रसाद्जी, पन्ना-ळालजी गोधा, चिरंजीळाळ अनाथाश्रन हिसार, और माणिकचंद विद्यार्थीके व्याख्यान हुए। सेठ माणिकचन्दजी और पं० यनालालजीके उद्योगसे मालवा प्रांतिक सभाकी नियमावली संशोधित हुई, कार्य-कर्त्ता नियत हुए व १५००) का चंदा सभाके खर्चके लिये हो गया। मेलेमें आए हुए १५० लडकोंकी परीक्षा ली गई। परीक्षकोंमें पं० घन्नालाल, पं० लक्ष्मीचन्द बागीदोरा, लाला भगवानदास तथा शीतलप्रसादजी आदि कई भाई थे। तथा श्रीमती श्रृंगार्वाई ( जो



श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादनी गृहस्थावस्थार्मे.

J. V. P. Surat.

(देखो पृछ ३९३)

गोमहसारको अच्छा समझती भी तथा निनका चारित्र बहुत उज्वल था ), मगनबाई, ललिताबाई, हंगामीबाई आदि विदुषी स्त्री मंडलीने ५५ कत्याओं की परीक्षा ली। सर्व चालक बालिकाओं को यथोचित इनाम दिया गया । एक दिन सेठ माणिकचन्द्रजी द्वरहरको अपने बड़े डेरेमें बैठे हुए थे, वहांपर सेठ अमरचंदनी शीतलप्रसाद-जी व धर्मवन्दजी थे । शीतलप्रसादजी उस समय सेठ माणिकवन्द-जीसे खुले दिलसे बात नहीं कर सकते थे, केवल माणिकचन्दजीको बड धर्मात्मा सेठ जानकर उनकी बातें सुननेको दर बैठे थे। मगनवाईजी भीथी, जो सेठ अमरचन्द बड़नगरवाळोंसे कुछ धर्मचर्चा-के प्रश्न कर रही थीं (यह अमरचन्द्रजी अब गृहवास छोड़कर उदासीनाश्रममें शांतताके साथ धर्मसेवन कर रहे हैं )। उस समय वागद देशके ५०-६० भाई मेठजीके सामन आकर बैठ गए। ये इमड़ जातिक थे। ये लोग बंड़ ही दीन बचनोंसे कहने लगे कि हमार वागड प्रान्तमें धर्मका विच्छेद हो रहा है, कोई सम्बोधने नहीं आता है और न कोई पाउशाला ही है। आप द्या करके वहां प्रवार और अपने जाति भाइयोंका उद्धार करें । सेठ माणिकचंदजीने बड़े ही वात्सल्यभावसे उनसे वार्तालापकी, वहांका सब हाल पूछा और उपदेश दिया कि आप लोग कन्याविकय न करें, न वालविवाह वृद्धविवाह करें, स्नानादि करनेमें विवेक रक्षें, शास्त्रको पढ़ा कों व बालकोंके पढ़ानेके लिये पाठशालाएँ खुलवार्वे, उसके लिये थोड़ी बहुत मदद हम मी देवेंगे इत्यादि आश्वासन दिया और यह भी कहा कि हम शीघ ही कोई उपदेशक आपके प्रान्तमें भेजेंगे। इतने बहे बनाइंच सेठकी इतने प्रेमके साथ

साधारण बस्त्र पहने हुए व ठीक २ बात करना न जाननेवाले बागड़के भाइयोंसे बात करते हुए देखकर शीतलप्रसादके चित्तपर सेठजीकी सादगी, निगर्वता, जातिप्रेम, व धर्मोत्रतिके उत्साहका बड़ा भारी असर पड़ा।

जैनगजट अंक २२ ता० १-६-०५में सबसे पहले श्रीमती

मगनबाईद्वारा लिखित " स्त्रीशीक्षा " पर

मगनबाई जीका एक छोटामा लेख मुद्रित है। इसमें दिग्वलाया

प्रथम लेख। है कि " मालवा बुंदल खंड आदि प्रांतों में

मैंन यात्रार्थ पर्यटन करते बढ़ी ही आध्यर्थी-

त्यादक किम्बद्नती सुनी । उस देशमें हमारी जैन स्त्रियं बतलाती हैं कि पढ़नेसे स्त्रियां विधवा होती हैं, दोष लगता है ....। ११ इन वाक्यों से पाटकों को उस समयका हाल मालुम होगा कि जब लोगों का स्त्रिक्षासे बहुत कम प्रेम था तथा विधवा होने का भय बहुत चुसा हुआ था, परंतु अब १०--११ वर्षमें यह भय बिलकुल मिट गया है। जैमा शीतलप्रसादनीसे प्रण किया था उसी के अनुसार मगनबाई नीने यह पहला लेख भेगा व आगामी भी भेजती रही थीं।

सेट माणिकचंद्जीको यह बात पसन्द न थी कि
उनकी स्थापित की हुई कोई भी संस्था
अहमदाबादमें बोर्डिंग- अधूरी स्थितिमें रहे, इसीलिये वं रात्रि
के लिये नया मकान । दिन फिकरमें रहते थे कि अहमदाबाद बोर्र्डिंगको किरायेके मकानसे निकालकर अच्छे
अपन खास बोर्डिंगमें रखना चाहिये। इसके लिये आप बीवमे
अहमदाबाद आये और सेठ हरजीवन रायचंद आमोद बालोंको

साथ छे एक दछाछके साथ बहुतसी जगहोंको देखने गए। साथ वा-लोंने जो जगह पसंद की सो सेठजीके ध्यानमें न आई। हाल जहां बोर्डिंग है उस जगहको सेठजीन अपनी दीर्घ दृष्टिसे स्वयं यसन्द की तब और भी सहमत हो गये । इस जगह मकान भी बना हुआ था। कुल नमीन ४०४४ वर्ग गन थी। बोर्डिंग फंडमेंसे १६०००) देकर यह मकान खरीद छिया गया । आन यह ५००००) की मिलकियतका हो गया है। संउनी किनने अनुभवी वं इस बातका इसीसे अच्छा १ता लगता है।

सेठ माणिकचंद्रजीका चित्त जैसे जैन जातिक उद्घारमें जीन था ऐसे ही सर्व मनुष्यममानकी तथा सेटजीका दया दान । पशु पक्षीकी भी रक्षाका पूर्ण ध्यान थः । ज्ञागः निवासी एक द्यालुबाद्यग लाभ-शंकर लक्ष्मीदास हैं, उन्होंने अपने जीवनका उद्देश्य जीव-

द्या प्रचार बना लिया है। लंडनमें जो जीवद्याकी सभा सुमाय-टियें हैं उनसे इनका खास सम्बन्ध है। वहांके इस विषयके ममाचारपत्र भी आप मंगाते रहते हैं व वहांकी छपी पुस्तकोंको वितरण कर मांसाहारका त्याग कराने व पशुरक्षा करानेका यत करते रहते हैं। सेठ माणिकचंदनीसे आपकी पूर्ण मुछाकात थी । सेटजी लाभशंकरकी सम्मतिसे अपना बहुतसा रूपया जीवद्या-प्रचारमें खर्च करते रहते व इंग्रेजी पुम्तकोंको महा ही बांटते रहते थे। लंडनमें **ह्यमेनीटेरियम लीग**र्का एक जीवद्या सम्बन्धी संस्था है इसका मासिक पत्र भी मंगाते ये तथा इस सहय उस संस्थाको ३१ वाउन्ड याने ४६५) रु० भेनकर सहायत्।पहुंचाई ा वास्तवमें जो महापुरुष होते हैं उनका उपयोग जीवमात्रके .हतमें प्रवर्तन करता है। आपने थोड़े दिन पहले कालेज व स्कूलोंके बड़े मुमलमान विद्यार्थियोंसे इंग्रेजी पुस्तक देकर अहिंसापर उनके विचारानुभार निबंध लिखवाकर जो उत्तम रहे थे उनको इनाम दिया था। सेउजी जानते थे कि पुस्तक बांचते व लिखते २ मनुष्यके विचारोंमें फर्क पड़ता है। विचारोंके पलटनसे ही पशुहिंसा व मांसाहार त्यागका कर्तन्य हो सकता है।

द० म० जैन सभाकी ओर आपका बहुत प्रेम था। उम प्रान्तमें शिक्षाका प्रचार हों इसिल्ये जो सेटजीका चंदेके लिये शिक्षण फंड हुआ था उसकी वस्तृतीके लिये भ्रमण। उक्त मेटनी श्रुतपंचमी अर्थात् जेठ सुदी ५ कं करीत्र नांदणी गांवमें गए और महारकजीके मटमें ठहरे थे। वहां क्या देखा कि श्रुतपंचमीके धार्मिक उत्भवके लिये भी आतिशवाज़ी और रोशनीकी तस्यारी हो रही है तथा प्रति वर्षके समान वेश्यानृत्य भी होनवाला है। इसपर सेठनीको बड़ा आध्यर्थ हुआ। आपने भट्टारकसे इन सब कुप्रयाओंको बंद करनेके लिये निवदन किया। भट्टारक भी समझ गए और इनकी करनेका आज्ञापत्र नारी कर दिया।

यहां सेठजीको एक माणक भाई नामके मुसल्मानसे भेट हुई, जिसके कुटुम्बमें कोई मांस नहीं खाता ? द्याप्रेमी मुसल्मान- तथा जिसके उपदेशसे नांदणीके सब मुसल्मा-का समागम। नोंने मांस खाना छोड़ दिया था। सेठजीको ऐसे व्यक्तिसे मिल्लेसे बहुत आनन्द हुआ। -आपने उसको जीवद्या प्रचारार्थ और भी हद कर दिया। ईडरके भंडारसे करीब ४०० ग्रंथ सेठनीके यहां आए हुए ये जो संस्कृत व प्राकृतके प्राचीन थे। बंबई सेठजीकी सरस्वती। आते ही इन्होंने एक विद्वान् इसिल्ये नियत भक्ति। कर दिया कि जो ग्रंथोंका सूचीपत्र बनावे। उसमें इतने विषय लिखे जानेका निश्चय किया—नाम ग्रंथ, आचार्य्थ, लेखक, भाषा, पत्र वं क्ष्रोक संख्या, प्रति लिखनेका समय आदि मंगलाचरण, अन्य प्रशस्ति और महजन्म्य इतिहास। इसके तीन रिजन्दर सेठजीके चौपाटीके बंगलेपर सौजूद हैं, विद्वान देखकर लाभ उट सकते हैं।

सेट माणिकचंदनीको, जबसे ज्यापारमे निवृत्त हुए रात्रि दिन धर्म व जातिमेत्राका ही ध्यान था। धर्मके मेटजी द्वारा स्याद्वाद निमित्त पगसं ठक २ कर चलनेपर भी पाठशाला काशीको रेलकी व बैलगाड़ी तककी यात्रा करनेमें स्थापना। कभी कष्ट व प्रमाद नहीं होता था, सबेरेसे १२ बज रात्रि तक यही विचार रहा करते थे। जेठ सुदी १० मं० १९६२ ता० १२ जुन १९०५ को काशीमें दिगम्बर जेन नातिकी ओरसे मंस्कृत धार्मिक विद्याकी उन्नतिके अर्थ श्रीयुत पं० पन्नालाल बाकलीवाल, बाबा भागीरथकी और पं० रणेशप्रमादनीके उद्योगसे पाठशाला खुलनेका महुत्ते था। उसका उद्घाटन सेट माणिकचंदनी करें ऐसी प्ररणा होनेपर सेठनी बम्बईसे तुर्त ही काशी पधारे और मैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। शहरवालोंने आपका बहुत सन्मान किया। पाठशालाका महुर्त मेदागिनी जैन मंदिरमें सबेरे ८ बजे हुआ। उस समय बाहरके

खास २ भाई आए थे। आरासे बाबू देवकुमार आनरेरी मिनस्ट्रेट व किरोड़ीचंदजी रईस, लखनऊसे बाबू अजितप्रसाद एम० ए० एछ० एछ० बी० वकील और बाबू शीतलप्रसाद, देहलीके लाला मोतीलाल,. बहवासागरके लाला मूलचंद गईम, झांमीके लाला गबद्मलजी, आगरेसे लाला वनशामदामजी आये थे। समामें शहरके दिग० व स्वे० भाइयोंके सिवाय स्वेताम्बर यशोविशय पाठशालाके अध्यक्ष यति धर्मविजयजी, इन्द्रविजयजी व बौद्धोंके महाबोधि सोसायटीके आसि० संक्रेटरी मी आये थे। बाबू नानकचंद्रनी बी० ए० हेड मास्टर सागरके पंदा करने और बाबू देवकुमारके समर्थनसे सेठ माणिकचंदजीने अपनी अयोग्यता प्रगट करते हुए सभापतिका आसन लेकर णमोकार मंत्र पढ़कर पाठशालाका पग्दा हटाया और अध्यापकोंको पाठ पड़ाने-की आज्ञा दी । पाठ हो जानेपर पं० गणेशप्रसाद्जीने व्याख्यान दिया कि कादी ही मंस्कृत व धार्मिक विद्या प्राप्तिका स्थान है। इमका अनुमोदन अजितप्रमाद्जी और नानकचंदजीने किया। फिर यति धर्मविजयजीने पाठशालाकी चिरम्थायिता चाहते हुए सेठनी भक्त, शूर और दानी हैं ऐमा मिद्ध किया। बाबू शीतलप्रसादनीने नियमावली व प्रबन्धकारिणी सभाके नाम सुनाए। बाबा भागीरथजीन मूल फंड स्थापनकी प्रार्थना की । बौद्ध माधुने इंग्रेजीमें हर्ष प्रगट किया । बाबू शीतलप्रसादजीनं मर्वको धन्यवाद दिया । बाबू देवकु-मारजीने शोलापुरसे आया हुआ बम्बई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाका सहानुभूति सूचक तार धुनाया। इन्हीं दिनोंमें सेठ मोतीचंद प्रेमचंद शोलापुरकी तरफसे बिम्बप्रतिष्ठाका उत्सब था तथा बम्बई प्रा० समाका नैमित्तिक अधिवेदान जेठ छुदी ७ और ८ को

को था। गांधी रामचंद नाथा सभापति थे। इसमें सेठ चुकीटाल झवेरचंद भी बम्बईसे शाभिल हुए थे। इन्होंने तीर्थक्षेत्रों
के प्रबन्धके उपाय प्रचारमें लाए नावें ऐसा प्रस्ताव किया। जबसे
प्रांतिक सभाने तीर्थक्षेत्र सुवार खाता कायम किया सेठ चुन्नीलाल
तीर्थिक सुधारमें बगबर इत्तचित गहै। शिख्यजी वीसपंथी कोठीका
प्रबन्ध ठीक करानेके मिवाय बहसीके कुछ दिन पहेले ता० २६ मई
१९०५को आप पावापुरीजी गर्ग। वहां मुनीम ग्रावबजीने भंडारके छत्रचमरादि गिरो रख डाले थे। इनके जाते हो वह भागा।
सेठजीने पावापुरीका प्रबन्ध तीर्थक्षेत्र कमेटीक हाथने लिया। तलकचंद ईखरदास और पुजारी हीरामनको काम मीरा। शोलापुरके
तारको सुनकर मबको बड़ा हर्ष हुआ। पश्चान मभारति
माहबको पुष्पमालादिसे सन्मानित करके सभाका कार्य समाप्त किया।
इस पाठशालाके लिये उक्त तीनों मंरवापकोंन १००) मासिकका प्रबन्ध बाहरसे कर लिया था तथा
सेठजीकी २५) मा- काशीमें ता० १४ मई १९०५की सपामें

मिककी मदद। ३०) मासिक काशीके भाइयोंने व २०)

बाबू देवकुमारजीन देना स्वीकार किया था।

सेट माणिकचंदजीने २५) मासिक सहायता देना स्वीकार किया सो
अपने जीवन पर्यत बराबर दिया तथा बादमें भी उनके जुवछीबागके ट्रस्टियोंने देना प्रारंभ किया है। उस समय १५ महाशयोंकी
प्रब० कमेटी बनी थी। समापित सेठजी व मंत्री बाबू देवकुमारजी,
उपमंत्री बा० जैनेन्द्रिकशोर आरा व कोषाध्यक्ष बाबू छेदीलालजी

नियत हुए थे। बावू देवकुमारजी अपने बुजुर्गोकी बनबाई हुई

हुई गंगातटपर श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीके मंदिरके नीचेकी बड़ी धर्मशाला पाठशालाके लिये नियत कर दी। यह स्थान काशी भरमें बड़ा ही रमणीक है। नौकामें जानवालोंकी दृष्टि इम बड़ी इमारतको देख चक्राचौंध खाजाती है। महूर्तके दिन ५ छात्र भरती हुए, ३ सुयोग्य विद्वान् अध्यापक नियत किये गए।

यह पाठशाला अब स्याद्वाद महाविद्यालयके नामसे प्रसिद्ध है। इसने समाजमें संस्कृत विद्याकी रुचि पेदा करादी है। ३१ जुलाई १९१५ तक ४० विद्वान् यहांसे शास्त्रीय विशारद आदिकी सर्कारी व बम्बई परीक्षालयकी परीक्षाओंको पास करकें गण हैं जो समाजका काम कर रहे हैं। जैसे—

- १ न्यायाचार्य ५० गणेशप्रमादजी—अधिष्ठाता जैन पाठशाला, सागर
   २ ,, पं० माणिकचंद्नी—अध्यापक जैन मिद्धांत विद्यालय,
   मोरेना ।
- ३ पंडित बद्रीप्रसाद अध्यापक, जैन पाठशाला, कचनर ।
- ४ पं > वृजलाल ,, जैन महाविद्यालय, मधुरा ।
- ५ पं• निद्धांम्ल ,, जैन पाठशाला, ललितपुर ।
- ६ पं० कुमारैय्या ,, जैन पाठशाला कारकल (दक्षिण)
- ७ पं० उपरावर्सिह ,, स्याद्वाद महाग्वालय-काशी ।
- ८ वर्णी नेमिमागर धर्म प्रचारक, दक्षिण प्रान्त ।

सेट माणिकचंद्ज़ीको इस संस्थासे इतना प्रेम था कि जैमा आगे मालुम होगा। आपने स्वयं २०००) देकर २००००) के करीन चिरस्थायी फंड करा दिया व ६०) मासिककी मदद जौंहरी महाजन कांटा बम्बईसे सदाके छिये करा दी। सेठ माणिकचंदजीकी ज्येष्ठ मगिनी मंछाबाईके एक पुत्र सेठ चुनीळाल झंबेरचद थे और दूसरी एक कन्या सेठ टाकुरदास भग- घोली बहन थी। इसके और सेठ भगवानदास वानदास और दि- कोद्रजीके एक परोपकारी माहसी पुत्र ठा-गम्बर जैन डाइ- कुरदास उत्पन्न हुआ था। यह पढ़नेमें रेक्टरी। शौकीन था। १२ वर्ष तक सूरतमें रहकर शालामें अभ्याम किया, फिर बम्बई जाकर

अपने मामा चुन्नीलालके साथ गहने लगा और संस्कृत द्वि० भाषा महित इंग्रेजीका अभ्याम करने हुए भेट्रिक पास किया और प्रिवियम तक शिक्षा ली । मं० १९५९ में नौंहरी माणिकचंद पानाचंदनीकी दुकानमें बैठने लगे। यह जिस काममें लगाया जाता था दिलस करता था ऐसा देखकर सेट माणिकचंदनीने इसके छिये दिगम्बर जैन डाइरेक्टरीका काम नियन किया। दि॰ नैनियोंकी कहां २ वस्ती कुल भारतमें है, किमर जातिके हैं, कहांर मंदिर व पाठशाला हैं इत्यादि व्यवस्थाके जाने विना कुछ समाजका सुधार नहीं हो सक्ता। इस कामको आवश्यक जानकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने अपने हाथमें लिया था पर द्रश्य व उत्पाहके अभावसे यह काम कुछ चला नहीं । संठमीके चित्तमें इमकी बड़ी भारी आवश्यक्ता प्रगट हुई थी । ठाकुरदासजीन फार्म छपत्रा कर मर्व स्थानोंमें भेजे पर बहुत ही कम भर कर आए। तब सेटजीकी सम्मतिसे प्रवीण मनुष्य मेजे विना फार्म मरकर नहीं आमक्ते ऐसा निश्चयकर जैनामित्र वर्ष ६ अं० ९ में यह नोटिस दिया कि दौरा करानेके छिये जैनी भाई चाहिये।

ठाकुरदासके लगातार परिश्रमसे और सेठ माणिकचंद पानाचंदके करी २००००) के खर्चसे यह डाइरेक्टरी छपकर सन् १९१४में १४२१ सफोंकी पुस्तक तय्पार हो गई है जो ८) में बम्बई था सुरतसे प्राप्त होती है।

सेंट माणिकचंदनी काशीसे छौटकर आए कि उनको कोल्हा-पुर जानेकी फिकर पड़ी। वहांकी इमारतके कोल्हापुर जैन बोर्डि- छिये आपने २२०००) का निश्चय किया गकी नई इमारतका था तथा उत्तम कारीगर भेनकर अपने पमन्द वास्त्रविधान । किये हुए नक्षशेसे इमारत बंधवाई थी । पत्र-व्यवहार करके निश्चय किया गया कि नई इमारत खोलनेकी क्रिया भी कोल्हापुर महाराजक करकमलोंसे ही कराई नाय । इसके लिये ता. ९ अगम्त १९०५ नियत हुई । इम ममारंभकं लिये इमारतके आगे एक प्रशोभित शामियाना लगाया गया था । बम्बईसे सेठ माणिकचंद, परोपकारी सेठ रामचंद्र गांधी व नवयुवक होनहार ठाकुरदाम भगवानदासको लेकर पहुंचे। शोलापुरसे सेठनीके मित्र सेट हीराचंद् नेमचंद्, बालचंद् रामचंद् तथा अन्य आसपामकं कई नगरोंसे बहुत जैन मंडली उपस्थित हुई । सबेरे ७॥ बजे सब सभा जुड़ गई। राज्यके सरदार आने लगे। ठीक ९ बजे श्रीमन्महाराज छत्रपति सरकार शाह महाराज कर्नल फेरिमके साथ दरबारमें पधारे । प्रथम ही कोल्हापुर विद्या-लयके मंत्री रा. रा. अण्णाप्पा बाबाजी लड्डे एम० ए० ने इंग्रेजीमें भाषण दिया जिसमें महाराज साहबकी कृपाकी अतिशय सराहनाकी कि जिन्होंने समाके शिक्षणफंडमें २०००) नकद, ३००) वार्षिक व प्रत्येक कक्षामें एक फीिशिप तथा बोर्डिंग बांध-नेको जमीन प्रदान की तथा सेठ माणिकचंद पानाचंद जोंहरीके कुटुम्बकी प्रशंसा की और प्रगट किया कि आज यह इमारत उनके पूज्य पिताके नामसे प्रसिद्ध होगी अर्थात् " सेठ हीराचंद गुमानजी विद्या मंदिर " तथा इसके खोलनेके लिये महाराजसे प्रार्थना की तब महाराजकी तरफसे दीवान महब्ब रा० ब० मबनीमने भाषण देते हुए कहा कि—

" प्राचीन कालमें जैन लोग अत्यन्त उन्नतिमें प्राप्त थे। उस " समय उनके महत्व भोगनेके व सुधार करनेके जैन समाजपर अजैन बहुतसे प्रमाण हैं। जैन शास्त्रकारोंने झान-विद्वानकी सम्मति। भंडारको बड़ा करके महत्त सहायता की। " अहिंसा परमा धर्म " के तत्त्रको उन्होंने

बहुत ही उत्तम रीतिसे पाटा । अब भी ये उसी उन्नतिको पहुंचे । इपके लिये अब इन्होंने आलम्य छोड़ा । सेठ माणिकचंद और उनके बंधुओंन जो शिक्षणकी सुगमताके लिये यह भव्य इमारत त्य्यार करा दी है उसको खोलने हुए मुझे बड़ा ही आनंद आता है "। फिर महाराज साहबने इमारतको खोला । सेठ माणिकचंदजीन हारतुरोंसे महाराजको सन्मानित किया । मभ सानन्द विसर्जन हुई। तब महाराज और कर्नल फेरिसने इमारतको अच्छी तरह देखकर यही कहा कि बहुत अच्छी इमारत तथ्यार कराई गई है । उस समय मकानका फोटो भी लिया गया ।

दोषहरको द० म० जैन समाका नैमिक्तिक अधिवेश्वन शोला-

पुरके प्रख्यात सेट वालचंद रामचंद्केसभापति-द० म० जैन सभाका त्वमें हुआ । शिक्षा खातेमें २०००) की नैमिक्तिक अधिवेशन आमद हुई । सेठजीको अभिनंदन देने वाले तार व पत्र दोनों महारक, लल्लुभाई प्रेमानंद व गुरुमुखराय मुखानंद आदिके आए थे सो अध्यक्षने मुनाए । सभाके आध्यमें बेलगांवमें एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित हुई तथा शास्त्री रक्ष्या गया ।

सेट नाथारंगजीवाले सेठ पत्नालालजी मरते समय २५०००)
दान कर गए थे, उसकी व्यवस्थाके लिये ट्रस्ट
र०२५०००)के दान कमेटी नियत हुई जिसमें सेठ माणिककी व्यवस्था। चंदजी व सेठ हीराचंद नेमचंद भी
ट्रष्टी नियत हुए। तय हुआ कि इसके व्याजसे
४०) सैकड़ा धर्निशक्तामं, २२॥) सैकड़ा इंग्रेजी शिक्षामं,
२२॥) रु. सैकड़ा प्राचीन जैन ग्रंथोद्धारमें व शेव जैन अनाथोंकी
मददमें खर्च हो। इम फंडसे पंचाध्यायी, परीक्षामुख, प्रमेयकमलमार्तड, अष्टसहस्त्री आदि कई उपयोगी ग्रंथ मुद्धित हुए हैं व
बहुतसे छात्रोंको सहायता मिल चुकी है।

सेट माणिकचंदने कोल्हापुरसे छौटकर वर्षाकाल शांतिसे व्यतीत करते हुए भादों मासके दशलक्षणी हीराबाग धर्मशाला पर्वमें बम्बईमें धर्मनागृति फैलाई तथा बड़ी (वम्बई)में १२५०००) भारी फिकर यह हुई कि धर्मशाला शीन्न का दान । बन नानी चाहिये। आपने कावसनी पटेल तालाक पास कांदाबाड़ीके नाकेपर एक बहुत ही मौकेकी नगह तनवीन की नो शहरके बिलकुल बीचमें

ट्राम गाइनिकं सामने व नैन मंदिरके पास है। इसीपर प्रवीण का-रीगरोंके द्वारा बड़ी ही सुन्दर धर्मशाला बनवाई, जिसके तीन खन किये। आगंको एक महा पुन्दर लेक्चर हॉल याने व्याख्यान भवन बनवाया जिसके ऊपर गैलेरी रक्खी व सामने प्लेटफार्म बनवाया । इस धर्मशालामें करीब १७०६ चौरस गज़ ज़मीन है, तीन तरफ रास्ता है, पूर्व और उत्तरकी तरफ ब्लाकोंके नीचे दुकानें हैं। पूर्व तरफके ब्लाककं दक्षिण भागमें एक आफिय **रूप है.** उसके पूर्वमें लेक्चर हाल है। उत्तर तरफ ब्लाक मी के मंत्रला उपने भागमें यात्रियोंके ठहरने, रमोई व पाग्वानेकी जगह है। इसके दक्षिणमें खुला चौक है। फिर दक्षिणमें ब्लाक बी है। इमके २ मंझले हैं। हरएकमें रहने, रसोई व पाखाने नलका प्रबन्ध है। इसके तीसरे खनको ट्रप्ट डीडके अनुसार केवल दिगम्बर जैन यात्रियोंके उपयोगके लिये रक्ला गया है। आफिम रूपके उत्तर एक बड़ा कमरा किसी प्रतिष्ठित कुट्रम्बके लिये है । सी इलाकमें १० कोटरी, ६ रसोईवर, बीमें १२ कोटरीं **६ रसोई घर हैं। इनमेंग दो कोउरी दवालानेक लिये हैं। सब** मिलके द्वाखाना सिवाय २६ रूप और १२ रसोईघर हैं, जिनमें ४०० आदमी ठहर सक्ते हैं। मकानके नीचे २१ दुकानें हैं, जि-नका किराया आता है। इस महान धर्मह्यालाके निर्मापणमें एक लाख पचीस हजार १२५०००) की रकम उदार सेठोंने लगाकर ऐसी आराम देनेवाली जगह बना दी है कि बम्बईमें इसके समान दूसरी कोई हिन्दुओंकी धर्मग्राला नहीं है। सेठोंने अपने पूज्य पिताके नामसे इसे प्रसिद्ध किया है, जिससे इसे सेठ हीराचंद गुमानजी धर्मञ्चाला या 'हीराबाग' कहते हैं।

इसके खोलनेकी किया ता. ९ दिसम्बर १९०५को ४ क्ने दिनके की गई। शहरके प्रतिष्ठित जन निवंत्रित किये गए थ । न्यायमूर्ति चंदा-वकर, डा० सर भालचंद्र, आनरेबल गोकुलदास कहानदास पारेख, मजि॰ करमनदास छबीलदास, सर वरीममाई इब्राहीम आदि मंडली उपस्थित थी। प्रथम ही **दोठ माणिकचंदजी**ने कहा ''बम्बईमें हिंदू व जैन यात्रियोंके अधिक आनेके कारण उनको ठहरनेकी बहुत तकलीफ होती थी उनको दर करनेके लिये ऐसी धर्मशाला बांधनेकी इच्छा हमारे बडे भाई पानाचंदको थी पर खेद है उनके सामनं हम तयवार न कर सके । अबइस इमारतको मगसर सुदी १ सं० १९६१ में **शुरू करके म**गसर सुदी १३ सं० १९६२ के दिन हम इसे पूर्ण कर सके हैं। इसके खालनेके लिये हम सर हराकिशनदास नरीत्तमदास नाइटते प्रार्थना करते हैं। " तत्र अध्यक्ष मर हरिकशनदासने कहा कि " इस धर्मशालाके बनानेवाले यहत ही गरीब स्थितिके थे पर पूर्ण परिश्रमसे संपत्ति मिलाकर यही कार्य नहीं इसके पहले अनेक कार्य किये हैं। यह धर्मशाला सर्व हिंदुओं के लाभके लिये बंधवाई गई है इससे इनकी उदारता व सर्व जन हितपना अच्छी तरह झलक रहा है। " इत्यादि कहकर धर्मशालाके दीवानखानेका ताला खोला। मभा सानन्द समाप्त हुई।

सेठ माणिकचंदनीका हरएक काम पक्का होता है। आपनं ता० १०-६-०७ को इसका ट्रष्ट डीड रिजयर करा दिया और जो हीराचंद गुमानजी बो०के ट्रष्टी हैं वे ही इसके नियत किये तथा इसकी एक प्रवन्यकारिणी कमिटी भी रच दी। इसके ट्रष्टमें नियम है कि जो भाड़ेकी आमदनी हो उसमेंसे टैक्स, चालु रिपेर-वीमा वगैरहका खर्च निकालकर जो बचे उसका इस तरह भाग करना—

- ३०) रिजर्व फंडमें (काम पड़नेपर खर्च हो )
- ४०) औषधाल्यमें।
- १०) बम्बई प्रान्तिक समाके प्रबंध खातेमें (जब तक आ-फिस बम्बईमें ग्हे )
- २०) दिगम्बर जैन गरीब छोगोंकी मददमें। १००)

इमके खाम नियम हैं कि यहां महीका तेल न जलाया जाते, कांचके ग्लासमें खोपड़ेका तेल जले। जुआ रमना, मांसभक्षण, मदिरापान, ग्यमिचार, जीवहिंमा, नाच तमाशा आदि नहीं हो सकेगा। एक सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत है उसके पामसे कर्तन, गहे, कुमी, टेब्ल सन मिलता है।

	सन् १२१२	सन् १९१४
दिगस्बर जैन	२५९७	३९३७
े बेताम्बर जैन	८२९	८७३
हिन्दू	७९७५	४९६२
		-
	99009	9ev9

दवाखाना भी झुरूसे है। मन् १९१२ में २३७२६ बीमा-रोंकी हाजरी थी, जिनमें नये बीमार ९९८६ इस प्रकार थे (शेप १७७४० पुराने थे।) दिगम्बर नैन १०४४ धेतांबर नैन ४७० ब्राह्मण १५२१ बनियें ६९१ परचूरण हिन्दू २२६०

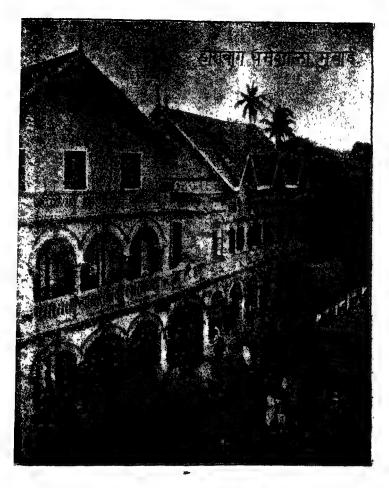
कुल ५९८६

सन् १९१४ में २९५४९ की हानरी थी जिनमें नये बीमार ६२७२ इस प्रकार थे—

दिगंबरी जैन १०७० श्वेतांबरी जैन ६२१ ब्राह्मण ११०८ बनियं ६९० बरचूरण हिन्दू २७८३

द्वाखानमें शोलापुर औपधालयमें पढ़ा हुआ दि० जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्याय हैं, जो बहुत ही योग्य हैं। द्वा करनमें नामांकित हो गया है।

लेक्चर हालमें सन् १९१२ में ८५ व १९१४, १२० भाषण हुए । आफिस रूपमें हीराबाग धर्मशालाको आफिसके सिवाय मा०दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व बम्बई प्रान्तिक सभा व जैनमित्रके आफिसोंको भी उदारतासे स्थान दिया गया । ट्रष्टकी नकल पीछे दी हुई है ।



हीराबाग धर्मशाला बम्बई.

देखो पृष्ठ ४१२)

J. V. P. Surat-

इस धर्मशालाके न होनेके पहले दिगम्बर जैन यात्रियोंको महान ऋष्ट होता था, न तो उन्हें हिन्दू छोग नगहकी कमोसे ठहरने देते न स्वताम्बर लोग ठहरने देते थे। बिचारोंको गलियोंमें मारे मारे फिरना पड़ता था, पर इस घर्मशालाके होनेसे दिगम्बर जैन यात्रि-योंक टहरनेका कप्ट बिलकुल दूर हो गया। हरएक परदेशी जैनी गाड़ी द्वारा व पैदल सीचा धर्मशालामें आकर टहर जाता है और सब तरहसे आराम पाता है।

श्रीमती मगनबाईजीने लखनऊमें श्री पावतीबाईनीका प्रेरित किया था कि व प्रति चौडमको स्त्रियोंको मगनवाईजीके उपदे- उंगदेश किया करे । तदनुमार बाइंजीने एक शका असर । आविका तत्तवोधिनी समा स्थापित की और प्रति चौदसको स्त्रियोंको उपदेश देन लगी । वास्तवमें सच्चे मनसे दिया हुआ उपदेश अवस्य लामकारी व अमरकारक होता है।

मन् १९०५के कड़े दिनोंमें महारनपुर जन समुदायक संनयस प्रफल्लि हो गया। ता० २४ दियम्बरको सहारनपुरमें महासभा रथोत्सव हुआ, जिसमें वैष्णव माई भी और सेटजी सभापति श्रीजीकी मेट चढ़ाते थे व न्यामतसिंहके मजन जैनधर्मकी प्रभावना करनेवाले बंड ही चित्ताकर्षक हुए थे। ता० २५ दिम० को ७। बने सबेरे स्टेशनपर २५० से अधिक प्रतिष्ठित पुरुष महासभाके होनेवाले सभापति बम्बईनिशासी सेठ माणिकचंद हीराचंद जौंहरी के स्वागतार्थ एकत्रित हुए । आप सकुटुम्ब श्रीमती मगनबाई व सेठ हीराचन्द्र नेमचंद्र, सेठ माणिकचंद्र मोतीचंद्र आलंद् और मि॰ ल्हे एम. ए. सहित ठीक समयपर गाड़ीसे उतरे। उसी समय स्वागतार्थ निम्न लिखित ऐड्रेस पड़के सुनाया गया—

## नकल स्दागतपत्र।

श्रीमान् सद्धमंप्रवारक, सत्तीर्थसमुद्धारक, जातिहितसाधक, जिनका-लक्षमंधारकानेकलालागारकारक, विद्योत्रतिप्रिय, दानवीर मुम्बानगर निवासि श्रीष्ठवर्य माणकचन्दजी साहब सभापति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाकी सेवामें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाकी ओरसे स्वागत विषयक अभिनन्दनपत्र।

( पद्धीर छन्द । )

श्री मण्डित निर्मलगुण विशाल । ग्रुम आनन शश् सोह रसाल ॥
निज अखिल अंशुसे हम अताप | कर दूर प्रगट कीनो प्रताप ॥१॥
पद कमल धरत भू मह पवित्र । मानी बहु शोमा लह विचित्र ॥
हम जैनिनके वह भाग्य आज । श्रीमान पधारे गुण समाज ॥२॥
मुख चन्द्र बिलोकत हृदय दुःल । विनशो, ग्रुम पायो बहुत सुक्ल ॥
विश्वावर्दक वृप जैनपाल । आओ स्वागत वर करें हाल ॥३॥
गणजैन करें वाणि विकाश । ताकर जिन वृषके। हो प्रकाश ॥
जय जय जय हो श्रीमान धीर । व्यापि चहुं दिशि कीरति गॅमीर ॥४॥
हैं जैन जातिमें दानवीर । वृषयाचक जनकी हरें पीर ॥
आपिहसे मई इह जाति आज । शोमित, इससे ये सरे काज ॥५॥
विश्वा किन वृष दुःखित निहार । श्रीमान भये अतिही उदार ॥
जई तहँ विश्वाके धाम खोल । परचारी जिनवाणी अमोल ॥६॥
शी तीर्थराजके अप्रवन्ध । सब दूर किये कर सुप्रवन्ध ॥
यह आपिहको अखिल प्रसाद । सुल दियो जैनिनको अगाध ॥७॥

चिरकाल रहे। जय आप नाम । सब जैनिनको बहु मोद धाम ॥
ये ही विनती जिनराज सुर । हम करें चरणमें आश पूर ॥८॥
सोरटा ।

परम शर्म दातार । जैनधर्म जयवन्त हो ॥ मिथ्या मतको टार । मम्यग्प्रगट करो सदा ॥९॥

## र्शन भुनम् ।

फिर हाथीपर विराजमान करके गाजे बाजे सहित नगरमें घूमते हुए बंगलेपर आ उपस्थित हुए । इस दित २ बजेसे जैन यंगरेन्स एसोसियशनका अधिवेशन हुआ। शटजी सभापति हुए। गत वर्ष म्बीकार किये हुए तमग बाँट गए व आगामीके लिये अनुमान ५० के नवीन प्रण हुए, जैसे एक ४०)का तमगा उसे मिले जो २०० आद्मियोंसे मदिरापान छुडावे, व ४०) नकद और ५०)का तमगा मि॰ जैन वैद्य जैपर उसे देवें जो १००० आदमियोंसे **मांसत्याग** करावे । रायसाहब फूलवेर इंजिनियर लखनऊने १००) मामिक उसे देना स्वीकार किया जो २ वर्ष तक जापानमें शिल्प विद्या सीर्खें। बाबू माणिकचंद खंडवाने बी. ए. पाम होनेपर जानेकी इच्छा प्रशट की । इसपर राय फूलचन्दनीको " जैनभूषण " का पद दिया गया था । जहां तक मालूम है अभी तक कोई भी जापान नहीं भेजा गया है। रायसाहनको अपना बचन पूरा करना चाहिये। ता. २६ को फिर एसो०का जल्सा था। मंडप सभाके लिये अलग बना था, स्त्रीपुरुषोंसे छा रहा था। स्त्रियोंके बीचमें खड़े हो श्रीमती सगनबाईजीने स्नीशिक्षापर १ घंटा बहुत ही असरकारक भाषण दिया, जिसपर पं० अर्जुनलाल सेठी बी. ए. को महासमाकी ओरसे ५०) का सुवर्ण पदक दिये जानेका हर्ष प्रगट किया। अध्यापिका ओंको तय्यारीके छिये ४०) मासिक व १४०) नकदका फंड हो गया। सेठ हीराचंद नेमचंदने जेखमें जैनियोंका खाता जुदा रहे ऐसी प्रार्थना सर्कारसे किये जानेका प्रस्ताव किया। बादशाह एडवर्डको घन्यवादके बाद राजकुमार प्रिन्स आफ वेल्स, जो भारतकी सेर कर रहे थे उनको वधाईका तार छल्वनऊ दिया गया।

ता० २७ दिसम्बरको पहले प्रोफेसर जियाराम एम० ए० के समापतित्वमें अनाथालय हिमारने अपील करके २०००) का चंदा एकत्र किया, फिर महासभाका कार्य हुआ । सभापति सेठनीन भवता हिन्दीमें व्याक्यात खूब समझाके सुनाया । इसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीसे शिखरनी आदि तीर्थोंका कैसा सुधारा हुआ है व आगामी रोगा इसके लाभ बनाए, महाविद्यालयके लिये भेपुर स्थान ठीक बताया और कहा कि यहां पंडित टो**डर मल, जयचंट** आदि बड़े विद्वान् परोपकारी हो गये हैं तथा आन पं० अर्जुनलाल सेठी बी॰ ए॰ हैं, जिन्होंन २००) मासिककी आमद छोड़कर महाविद्यालयकी सेवामं अपना जीवन समर्पण कर दिया है। एकताको रखने और धर्मप्रचार निमित्त रुग्योंका बृहत् कोप करनेकी प्रेरणा भी की। महामंत्री डिप्टी चम्पतरायने दशम वर्षकी रिपोर्ट व हिसान सुनाया । मुंशी नाबूलाल एम० ए० एल एउ० बी० मुरादाबादने डेपुटेशन पार्टीकी रिपोर्ट पढ़ी । दिगम्बर जैन मना भावनगर और बाबू देवकुमार आराके सहानुभूति सुचक तार पड़े गए। ता० २८ की बैठकमें प्रस्ताव हुए। जैन कालेजके छिने १०००) नगर्व २०००) से अधिक बादे हुए। ता०

२९ की बैठकमें जैन कालेजके लिये हज़ारोंका चंदा हो गया। इम मक्का जोड़ ३०७५३)\* का है। सबसे बड़ी रकम हैं—

१००००) लाला खूबचंद रईम मेरठवाले हाल महारनपुर ।

५०००) चौधरी खूबचंद्नी

13

२०००) बद्रीटास पार्श्वदास

55

१०००) लाला रूपचंद रईस

,,,

१०००) सेठ द्वारकादास स्ईम, मधुरा ।

१०००) सेठ माणिकचंद पानाचंद जोंहरी, यस्बरें ।

१०००) बाबू अजितप्रसाद खनांची, देहरादृत !

यह चंद्रा महासभाके कार्यकर्ताओं में फूट होनेके कारण सिशाय एक दो स्क्रमोंक अवतक (सन् १९१६ तक ) बसूल नहीं हुन। है । वर्तमान महासभाके कार्याध्यक्षोंको उचित है कि इसे बसूल कराके दातारोंको पाप बंधने मुक्त करें क्योंकि स्वीकार की हुई स्क्रम न देना महा पाप है ।

र।त्रिको स्त्रीसभामें **मगनवाईजी**ने रत्नकरंड श्रावकाचार बांचा। सेट हीराचंद नेमचंदका धर्मकी उत्तमत्तापर विद्वतादुर्ण भाषण डुआ।

हकीम कन्याणसय उपदेशकको महागमार्का ओरसे सुवर्ण-पदक दिया गया । महासभामं प्रस्ताव नं ६ महाविद्यालयको मथुरासे सहारनपुर लानेका हुआ । N. W. रेल्वेका किराया घट जानेसे २००० मनुष्योंकी भीड़ हो गई थी । इस मौकेपर सेठ माणिकचंदको बहुतसे नवयुवकोंसे परिचय हुआ ।

<sup>\*</sup> यह सूची जैनगज़ट अंक २३ ता० १६ जून १९०६में मुदित है ।

बाबू शीतलप्रसाद जो थोड़े ही दिन पहले सेट माणिकचंद-जीस काशीमें या उज्जैनमें मिले थे, इस बाबू शीतलम्मादको अवसरपर भी आए थे और महासभा आदिके सेउ माणिक चन्दसे कामोंमें बहुत ही ख़टपट दौड़ धूप करते दिख-विशेष परिचय । लाई पंडे थे । सेठ माणिकचन्द्जी सभापति थे, उनके पाम प्रम्तावादिकोंके विचारने ब मंडपमें बुलानेके लिये कई ट्रफे जाना हुआ तब सेठजीसे कई द्फे बातचीत हुई । आपनं शीनलप्रसादभीका सर्व हाल मालूप किया । यह भी जाना कि यह ख़ीके देहान्त हो जानेके बादसे उदासचित्त हैं। दफ्तरमें भी ता० १९ आगस्त १९०५ को स्तीफा दे दिया है तथा इच्छा धर्म व जातिकी सेवा करनेकी है। ंब आपने कहा कि मैं मी अपना सब समय इमी समाजसुधारकी न्वरपटमें बिताता हूं और यह चाहता हूं कि आप ऐसे धर्मबुद्धि व परिश्रमीका समागम रहे तो मेरेसे बहुत कुछ काम हो सके, सो आप बम्बई आवें, वहीं इच्छानुसार कुछ धनधा करें व हमें मदद देवें । शीतलप्रसाद्जीके चित्तमें संठ माणिकचन्द्जीका सरलचित्त, धर्मप्रेम, जातिसुधारका परिश्रम व धर्मात्माओंसे हार्दिक प्रेम आदि गुणोंने ऐसा असर किया कि उन्होंने निश्चय कर लिया कि हम ल्खनऊ होकर तुर्त ही बम्बई आवेंगे और आपके साथ रह धर्म क समाजकी सेवा करेंगे। शीतलप्रशादजी लखनऊ आए। अपने दो बड़े भाइयोंसे कहा कि हम बम्बई जाना चाहते हैं। इस बातको मुनकर जवाहरातका काम करनेवाले अनन्तलालजीको बहुत दु:ख हुआ, क्योंकि विद्यायतसे जवाहरातके ज्यापारके काममें ज्यापारियोंके

साथ पत्रव्यवहार करनेका काम सब यही करते थे और जो माल वहां बिकता था उसपर १) सैकडा कमीशन हेते थे। जब शीतल-प्रसादने जानेका हठ नहीं छोड़ा तब अनन्तलालने कहा कि हमारे कामका कोई प्रबन्ध कर जाओ, तब अपनं मित्र पुत्तनलाल अग्रवाल-को नियत करके भीतलधमाद्त्री अपनी आवश्यक प्रस्तकोंको छेकर बम्बई आए । जिस दिन सहारनपुरसे चूमते हुए माणिकचंद बम्बई पहुँचे उसी दिन यह भी पहुँचे। तेउनीको इन्हें देधकर बड़ा भारी हर्ष हुआ। संउजीन अपने चौपाटीके बंगलेवर ही बंड़ सन्मान-के माथ रक्ता, तबसे यह वहीं मित्रके समान रहने छगे। अनन्त-लालजीसे कभी २ माल मंगाकर व बाजारका माल लेकर यह घंटा दो यन्टा दलालीमें घूम छेने थे, शेष समय सेठनीके साथ विताने, उन्हींक साथ २ भोजन करके दोपहरको गाड़ीपर दुकान आना, यहां धर्म सम्बन्धी पत्रव्यवहार करना और शामको व्यास्त्रके समय बंगलेपर आना, बाद सामायिक करके शास्त्र स्वाध्याय व सेठजीसे बार्तीछाप करना । सेट माणिकचद्नी अपन धर्मित्रकी तरह वर्तीव करते थे, किसी प्रकारके सन्मानमें कभी नहीं करते थे।

चम्बई पहुंचतं ही संठजीको दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके बा-र्षिक अधिवेदान स्वतिधिपर जानेकी फिक्र स्तवनिधिषर् सेठ- पड़ गई। यह अधिवंशन पौष प्रदी १४ ता० ९ जनवरी १९०६ से माह वदी १ जीका गमन ता० ११ जनवरी तक होनेवाला था। संठ माणिकचंदजी अपनी सुपुत्री मगनबाई सहित तथा बाबू शीत-लप्रसाद और सेठ छल्छमाई लक्ष्मीचंद चौकसीके साथ कोरुहापुर पधारे । उसी दिन स्टेशनपर मैमूरके श्रीमान् अनंतराज संठ मोतीखनी म्यूनिसिपल कमिश्नर अपने मतीजे वर्द्धमानैया सहित पधारे । आपका स्वागत सेठ माणिकचंद्जी आदिने बड़े हावभाव व गाजे बाजेके साथ किया ।

स्तवनिधि क्षेत्र कोल्हापुर शहरसे २८ मील है। यह स्थान छोटीर पहाडी व टीलोंसे तीन ओर घिरा स्तवनिधि क्षेत्रका हुआ है। इस क्षेत्रका असल नाम तपो-निधि है, क्योंकि यहां जैन मृनि आकर हाल । तप किया करने थे । इस पहाडीपर एक १० फुट लम्बी ३ फुट चौड़ी गुफा है, जिसमें श्री वर्द्धमानस्वामी मुनि बैठकर ध्यान करने थे, उनका इससे ३ वर्ष पहले देहान्त हो गया था। एक बड़ा संदि-रका घेरा है जिसमें ५ छोटे२ जिन मंदिर हैं। प्रथम मंदिरमें श्री पार्श्वनाथजीकी खड्गासन १ गज ऊंची प्रतिविम्न अति वीत्राग स्वरूप है। इमीमें १ क्षेत्रपालका मंदिर है। इमकी मान्यता बहुत होती है तथा पहाइपर भी एक क्षेत्रपालका मंदिर है जिसे बहादेवका मंदिर वहते हैं। ता. ९ जनवरीको समाकी प्रथम बैटक हुई। २००० स्त्रीपुरप एकत्र थे। सभापति अनंतराजय्याने आपन महण किया, पास ही सेठ माणिकचंदनी विराजे। वार्षिक रिपोर्ट मंजूर होते ही लोगोंने रुपया जमा कराना शुरू किया। रात्रिको तात्या केशव चौपड़े भिलौरी निला सांगलीनिवासीने भजन व कीर्तनके साथ अच्छा उपदेश दिया व श्रीपालचरित्रका वर्णन किया। दूसरे दिन फिर समा हुई। समापतिने कनडी भाषामें

अपना व्याख्यान पढा जिसमें कोल्हापुर बोर्डिंग और सेठ माणिक-चंद्जीकी बहुत प्रशंसा की । फिर प्रसाव हुए कि समाकी रजिष्टरी की जाय, जिसका काम सेठ माणिक चंद्रजीके सुपुर्द हुआ । युवरान प्रिन्म और प्रिन्सेम ऑफ वेल्मको भारतवर्षमें पशारनेकी बधाईका, महाराज कोल्हापुर और सेठ माणिकचंदको कोल्हापुर बोर्डिंगकी सहायतार्थ धन्यवादका भी प्रस्ताव हुआ । शिक्षणफंड एकत्र कर-नेके लिये **डेपुटेडान पार्टी**का प्रस्ताव हुआ, जिसका समर्थन शीतलप्रमाद्त्रीने किया । पार्टीमें १० महाशयोंने एक या आधा मास भ्रमण करनेकी स्वीकारता दी। इनमें मुख्य सेठ माणिक-चंदर्जी सबसे पहले तय्यार हुए। रात्रिको फिर सभा हुई, उपमें रावशाहब अंकलेनं बम्बई यूनिवर्सिटीमें जैन ग्रंथ भरती होनेका प्रस्ताव करते हुए कहा कि मदरास यूनिवर्सिटीमें कनारी भाषामें महिनाथपुराण और पम्प रामायण ये दो जैन ग्रंथ पहाए जाते हैं। जैन जातिमें सत्य उपदेशका प्रवार त्यागी जन करें। इस प्रस्तावको त्यागी पार्श्वनाथस्वामीनं पंश किया, जो पहले कनरी-के माष्टर थे और १ वर्षमे घर त्यागा था । आपने अपने अपनी रिपोर्ट बताई कि ४० गांवोंमें दौरा किया जिनमें ३४ मंदिर, ६ धर्मशालाएं, ८७२ पंचम, ६६९ चतुर्थ और ५५ कामार जातिके घर हैं। कुल २१६२ श्रोताओं मेंसे २ने पूर्ण ब्रह्मचर्य, १७ने पर-स्त्री-स्याग, १६ ने रात्रिभोजन-त्याग, २१ ने दर्शन व ८४ ने और त्रत लिये । वास्तवमें त्यागियोंका यही कर्तव्य है कि नहाँ नार्वे सदाचार व धर्मवृद्धि युक्त नियम हर्ष पूर्वक उपदेश देकर करावें। आठवां प्रस्ताव सेठ माणिकचंदजीने पेश किया कि

व्यापारादिमें जो धर्मादाका पैसा छिया जाता है उसको धर्म-मार्गमें लगाया नाय तथा उसमेंसे ।) दृ॰ म॰ जैन सभाको व ॥।) पांजरापोल व अन्य उपयोगी कामोंमें लगाया जावे। आपने एक अच्छा असरकारक भाषण मराठी भाषामें दिया, जिसमें कहा कि-"परिणामोंकी विचित्र गति है जिस ममय दान करना चाहे उसी समय दानके पैसेको अलग कर देना चाहिये । सभामें चंदा लिखका देनेमें टील नहीं करनी चाहिये। भाइयों ! हमको सभामें विश्वास रखना चाहिये और सभाभी आग्हीका विधान रखती है। यदि विद्वास रखकर काम न किया जाय तो जगतमें कोई काम नहीं हो सक्ता; और तो क्या वह अन्न जिपसे हम पेट भरते हैं कदापि पैदा नहीं हो सकता। किसान लोग प्रथ्वीके वि-इवासपर सैकड़ों रूपयेका धान्य पृथ्वीमें देते हैं तव ही उसके कारण उससे घना धान्य पैदा करते हैं। अतः हमें विश्वास रम्बकर परस्पर महायता करना योग्य है और धर्मादेंकं रुपयेसे कृष्ण मर्पकं समान भय करना योग्य है 🗥। इम प्रस्तावके होनेपर निपाणी, ओठे, हलकरणी, वेड, कलमके पंचोंने अपने यहांके धर्मादेका रुपया समानके फंडोंमें देना स्वीकार किया । वास्तवमें जहां धनाडच दातार दान करानेका प्रस्ताव करता है वहां उसका असर अवश्य होता है। ९ वां प्रस्ताव पशुओंपर दयाका तथा १० वां स्वदेशी वस्तु प्रचारका हुआ। इस पर शीतलप्रसादजीने भी समर्थन करते हुए कहा कि खदेश प्रेम हमको बाधित करता है कि हम देशी वस्तुओं की उत्पत्तिको बहावैं तथा आप कष्ट सहकर भी उनको व्यवहारमें लावें। वर्द्धमानैय्या मैपूरने भी इसका समर्थन किया। ता० ११ को तृतीय सभा हुई। कार्यकर्ता नियत हुए। अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष द्वोठ माणिकचंद हीराचंद जौंहरी बम्बई नियत हुए।

मभापति अनंतराजैय्याने चांदीके कास्केटमें एक मानपत्र श्रीमान् शोठ माणिकचंदजीको अर्पत सेट माणिक चंद जीको किया तथा प्रशंसामें कहा कि " इनके पूज्य पिता दोठ हीराचंदजी वास्तवमें हीरके मानपत्र । त्रच्य अद्भृत गुणधारी ये तथा जिनके पुत्र संठ मोतीचंद मोतीक तुल्य, संठ पानाचंद पन्नारत्न तुल्य, सेठ माणिकचंड माणिक्य रत्नेक मनान तथा सेट नवलचंड नीलरत्नके समान शोमनीय हैं। इनका कुट्रम्य निर्मेल रत्नों का भंडार है जिसमें सेट माणिकचंदजीका धर्मकी ओर विशेष राग है तथा इनकी धार्मिक त्रीति सर्व सज्जनोंको राग उपनाती है सो माणि<del>न</del>य रत्नमें रागः होना ही उचित है। इस निर्मेल कुटुम्बका निवास भी बम्बईके रत्नाकर पैलेसमें अधिक शोभनीक है। "

मानपत्रकी नकल इस भांति है-

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभेचें मानपत्र.

श्रीमान टानवीर बोट माणिकचंदजी हिराचंदजी अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा. मु० श्रीक्षेत्र स्तवनिधि यांचे सेवेसी.

श्रेष्ट्रि महाशय !

सहारनपुर येथील महासभेच्या अधिवेशनार्चे अध्यक्षस्थानः

सुशोभित करून व अखिल भारतीय जैन मंडलाचे घन्यवाद संपादन करून आपण येथें आला आहां. अशा प्रसंगीं आपर्ले अपूर्व औदार्थ, अप्रतिम समानप्रेम, अटल धर्मतत्परता इत्यादि मद्भुण पाहून आह्यां दाक्षिणात्य नैनसंघांत नो हर्षोद्रेक होत आहे त्याला आपल्यापुटें आर्ह्यों थोडी वाट करून देत आहों याबहल क्षमा करावी अशी विनंती आहे.

जैन ममानांत आपले म्थान अनिषिक्त रानाचेंच आहे अमं म्हणण्यास आझांस बिलकुल रांका नाहीं. आपल्या समानाविषयीं उण्कंट प्रीति आपल्या अंतःकरणांत प्रन्वलित आहे; व या प्रीतीला हश्य फल कोणत्या उपायांनी मिलेल हें उरविण्यास आपलें मन रात्रंदिवम उद्युक्त अपतें, आपले विचार प्राचीन आचार्यप्रणीत शास्त्राविषयीं अचल भक्तीने युक्त असल्यामुळें जैन शामनाच्या सनातन तत्वांचे पुनरुक्तीवन करण्यास आपण तत्पर आहां. तसेंच परिस्थितीच्या भदामुळे ज्या नवीन सुधारणांची समानास अवश्यकता आहे त्याहि आपण पूर्णपणें जाणत आहां. आणि या सर्व ज्ञानास कृतींत उत्तरविण्यास ज्या साधनांची अवश्यकता असने तीं आपल्यांम पूर्णत्वाने लामलीं आहेत. तात्पर्य कुशाम्र बुद्धी, सद्य अंतःकरण, उदार वासना, यथेच्छ संपत्ती, अखंड कीर्ति इत्यादि सद्धुणामुळें व सामग्रीमुळें आज आमच्या समानांत आपण उच्चतम पदावर स्वभावतःच विराजमान झाला आहां.

आपण समानहितासाठीं आजवर सहासात रुक्ष रुपये खर्चिले आहेत. आणि ते अशा प्रकारें खर्चिले आहेत कीं त्यांचा उपयोग चिरकाल सर्व समाजास उत्तमप्रकारें होत राहील. यामुळें आपले ओदार्य व चातुर्य यांचे मिश्रण 'सोन व सुगंघ' यांच्या मिश्रणात्रमाणे झालें आहे. याबदल आपणा प्रमाणेंच आपले उदार बंधू श्री० शेठ पानाचंद्र, रोठ नवलचंद वगैरेहि आह्यां सर्वीस पूज्य झाले आहेत.

आपली स्तुती कोणतंहि शब्द योजिले तरी जास्त होणार नाहीं. करितां थोडक्यांत आह्मी जिनेश्वरांच्या चरणागदळ एवडीच प्रार्थना करितों कीं आपणांस, आपल्या बंधुवर्गीस व कुटुंबीयांस अशाच प्रकारें समानसेवा करण्यास उदंड आयुष्य, आरोग्य आणि वैभव प्राप्त होवो.

आवला--

) अनंतराज शेटी मोतीखनी। पोष्य १५ शके १८२७ अध्यक्ष दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा।

इस मानपत्रको स्वीकार करते हुए सेठ माणिकचंदजी-न कहा कि ''मैंन व मेरे कुटुम्बने जो कुछ भी धर्म कार्य्य किया है वह कुछ आश्चर्यननक नहीं, केवल अपनी शक्ति अनुसार अपना किंचित् कर्तव्य पालन किया है। जैन जातिके सर्व घनादशों का यही कर्तव्य है कि इस जैन जातिमें विद्याकी कभी हैं उसकी मिटानेंक लिये अपने तन मन धनसे चेष्टा करें। वास्तवमें यह सेटजीके वाक्य बड़े ही अमूल्य हैं । हरएक धनवानको हृदयमें धरकर सेठनीके समान उदार होना चाहिये !

रात्रिको स्त्रियोंकी १ बड़ी सभा हुई । २५०० की संख्या थी। श्रीमती मगनबाईने अध्यक्षस्थान प्रहण किया था। इसमें ८ बाइयोंने थोड़ा २ भाषण दिया । डाक्टरनी कुल्माबाईने १ घंटा शिक्षाकी नरूरत पर खूब विवेचन किया, फिर अध्यक्षाके भाषणसे सारी सभा प्रसन्न हो गई। वार्षिक छात्रवृत्ति व १५०) का चंदा हुआ।

सेठ माणिकचंद्रजीको मंदिरकी भी अच्छी मक्ति थी।

स्तवनिधि क्षेत्रमें अपने स्तवनिधिके सर्व मंदिरोंमें संगर्भमर

संगममरका जड़ाव।

म्बच्छता व शोभा दोनों रहें।

कोन्हापुरसे आकर सेठ माणिकचंद्नीने ममाचारपत्रमें यह पढ़कर बहुत हर्ष प्रगट किया कि क्वंतांकर सेठ माणिकचंदकों जैनी बाबू पन्नालाल जो मरते समय हर्ष। ८ लाग्व रुपया निकाल गए थे उसमें एक बड़ा मकात बनकर १ जेन हाईस्कूल और दवाखाना ता० ९ जनवरी १९०६ को बम्बई गवर्नर लाई लैमिझटन के हाथसे खोला गया। खोलते समय लाई महो द्यने कहा "जैनियोंका इतिहास बना जानने योग्य है। इनका धर्म जीवद्याके सिद्धांतको पालनेवाला है। मैं जैन जातिका बहुत सन्मान रखता हूं। ये लोग उद्योगी तथा उदार दिलके होते हैं। बचोंको मानसिक शिक्षांके साथ २ धर्मशिक्षा अवद्य देनी. योग्य है, क्योंकि धर्मशिक्षा ही से यह लोक तथा परलोक दोनों सुधरते हैं।

उस समय पत्रालालजीके सुपुत्रोंने २९९००) हाई स्कूलके फंडमें दिये।

हीराबाग धर्मशालाको चालु हुए १॥ मास भी नहीं बीता था कि इसमें श्री गिरनारजीकी यात्रा करके हीराबाग धर्मशालाका आनेवाले तीन बढ़े संघ आए । सबसे मुख्य उपयोग, पानीपतका संव ६५० भाई बहर्नोका इच्छाराम कम्प-मंय और वंबईमें नीवाले लाला बद्रीदास रईस पानी-रथोत्सव । पताके साथ था। संवके साथ श्री मंदिरजी व कई विद्वान शास्त्री पंडित व कवि संशी

मगतरायजी थे। बद्रीदासजीके भाई दरबारीलालजी व प्रत्र रूथमी चंदजी सुमेरचंदजी संक्की बैच्यावृतमें लीन थे। दसरा संव २००की संस्थाका श्रीमन्त सेठ पूरणसाह मिवनी छपराके साथमें और तीसरा १५७ की संख्याका दिहलीसे लाला मो-तीलाल जोंहरी और जौंहरीमल खजांचीके माथ आया था । हीरावागने सबको स्थान दान कर दिया था । ता० १९ जन-वरीको श्रीमती मगनवाईने हीरायागके हेक्चर हालमें दिा-क्षाकी उत्तमनापर स्त्रियोंको भाषण देकर धार्मिक प्रतिज्ञाएं कराई थी। पानीपत वालोंके मात्र बम्बर्डमें रथोत्सव करनेके हुए। इस समय राजां दीनद्याल फोटोग्राफरके पुत्र राजा ज्ञानचंदजी बम्बईमें थे। आपके व सेठ माणिकचंदजीके उद्यमसे ता० २१ जनवरीको शोलापुरके मनोज्ञ चित्रित स्थमें श्रीनीकी सवारी गाने बाजे और जुलुमके साथ मुख्य २ बाजारोंमें होती हुई फिर छौटकर हीराबागमें आई । कालबादेवी रोडपर बाजा बजनेकी मनाई थी, पर इस समय वहां भी बाना बजता गया था। जैनी स्त्रीपुरूप २०० ॰ के साथ थे। दर्शकों की भीड़का पार न था। बिना किसी

द्वेषके सर्व कीमें भगवत्के दर्शनसे आनन्दित होती थीं। ता. १६ जनवरीको सेठ माणिक चंदने सर्व गुरूप भाइयोंको छेजाकर सेठ हीरा चंद गुमान जी जैन योडिंगका निरीक्षण कराया तथा वहाँ बोर्डिंगकी ओरसे एक समा हुई। समापित लाला बदीदास पानीपत हुए। पंडिंग मंगतराय व चोर्बेछाल खर्माचीने बोर्डिंग देखकर हर्ष प्रगट किया। सभापितने १०) दस दस रुपये मासिककी एक संस्कृत व १ इंग्रंजी विभागमें ऐसी दो छात्रवृतिए १ वर्षको दी।

बाबू शीतलप्रसाद्नीको स्त्रीशिक्षा प्रचारकी बहुत रुचि थी । यह जैनगज्ञटमें इमकी उत्तेजनाके क्रा-स्त्रीशिक्षाके लिये अ- वर लेख दिया करते थे। इनको विश्वास ध्यापिकाओंका था कि विना स्त्रीशिक्षांक प्रचारके समाज कभी सुधर नहीं सक्ता। लखनऊमें इन्होंने प्रबन्ध । श्रीमती पार्वतीबाईको कुछ विद्याका स-हारा देकर स्त्रीशिक्षाके प्रचारमें उत्तेजित किया था। फिर जबसे मगनबाईनीका समागम हुआ इनको बारबार छेख छिखने, उनको शुद्ध करने, व्याख्यान देने व स्त्रीशिक्षा-प्रचारमें तन पन घन स्नाने-की प्रेरणा की तथा तास्विक दृष्टिके लिये श्री अर्धनकाजिकाजीका स्वाध्याय कराया । नित्य बंगलेपर रहते हुए शीतलप्रसादनीका मग-नबाईजीको यही उपदेश होता था कि अध्यापिकाएं जबतक तयार 🥕 न होंगीं तनतक कन्याशालाएं खुल नहीं सक्तीं। इससे बम्बईमें 📰 एक आश्रम खोछा नाय उसमें विवस व श्राविकाओंको रखकर सिखाया जाय । मगनवाईंजीको यह बात पसंद आग्रई थी , पर व

कैंठ माणिकचंदजीसे मसनवाई वर्णन करती तब सेटजीके ज्यातमें थह बात यकायक नहीं आती थी। एक दिन सबेरे जब मंदिर-नीसे स्वाध्याय करके सेठनी दीवानखानेमें बैठे थे तब शीतलप्रसाद-जीन मगनवाईजीके सामने सेठनीको वन्टाभर खूब समझाके कहा कि आप यदि जैन जातिका उद्धार करना चाहते हों तो जबतुक माताएं घर्मात्मा व सुआचरणी नहीं होंगीं, समानका उद्धार नहीं हो सक्ता; क्योंकि जनतक माताएं अच्छी न होंगी पुत्र योग्य नहीं पैरा हो सके। स्त्रीशिक्षाके लिये अध्यापिकाएं तय्यार करनेका प्रय-त्न कर्ना चाहिये। सेठमीने कहा कि बाहरसे कोई आनेवाली नहीं हैं। तब बहुत जोर देकर शीतलप्रसादजीने कहा कि आप इसका उद्यन तो करें। तब सेठजीने अपने एक मकानमें २, ४ कोठरियां खाली कर दीं और मगनबाईनीको आज्ञा दी कि पढ़नेवालियोंको बुलाओ फिर और प्रबन्ध हो । तत्र मगनबाईजीने ता. १६ फर्वरी १९०६ के जैनगजटमें यह नोटिम प्रसिद्ध किया कि बम्बईमें श्राविकाश्रम खोलनेका प्रबन्ध हुआ है, फार्म मंगाकर श्राविकाएं मर कर भेजें तथा स्वीकारतापर यहाँ आवें। युहां उनके भोजनपान आदि व शिक्षाका कुछ प्रबन्ध किया गया है। धह नोटिस वर्तमानमें चलने वाले आविकाश्रमका बीन मूत है।

मगनबाईजीको यह भी प्रेरणा की गई कि वह पड़ी लिखी स्त्रियोंसे पत्रव्यवहार करे कि वे अपने २ बाहरकी पड़ी लिखी यहां स्त्रीशिक्षाकी उत्तेननामें उद्योग करें स्त्रियोंसे पत्रव्यवहार। इस पत्रव्यवहारके प्रभावसे अभिनती गंगादेवी मुरादाबादने मगनबाईजीको फ-र्करी मासमें लिखा कि मैंने मंदिरजीमें ८ से ९ तक ख्रियोंको पढ़ाना शुरू किया है, 8 स्त्रिकों छह:ढाछा पढ़ती हैं तथा अष्टमी चौदसको उपदेशिका मभा की जायगी। ईडरसे जानकीबाई अध्यापिकाने छिखा कि प्रतिमासकी सुदी १४ को 'स्त्री धर्म प्रका-शिनी सभा' नामकी सभा हुआ करेगी तथा रात्रिको ७ से ८ तक श्रीरत्नकरंडश्रावकाचार स्त्रियोंको सुनाना शुरू कर दिया है।

त. २५ फर्वरी १९०६ को हीराबागमें कविराज घेळामाईकी अपूर्व स्मरणशक्तिका परिचय पानेके लिये कपड़ेके मनोहर एक सभा हुई थी। उसमें सेठ माणिकचंदजीने जूते। एक बिलायती जूतोंका बहुत सुन्दर और मजबूत जोड़ा दिखलाया था जो केवल कप-

हेका बना था, पर बनावट, रंग, तथा पालिशमें विलायती चमड़ेके जातेसे किसी बातमें कम नहीं था। विलायतमें वेनीटेरियन सोसा- यटी है जिसके सम्य बनस्पति मोजी और मदिरा, मांस, चर्नीसे अत्यन्त परहेन करनेवाले हैं। इसीने सेठजीके पास नमूनेके तौरपर मेजाथा। सेटजीने बतलाया कि लंडनमें ५०-६० क्रव मांस वर्जिन मोजनके हं। प्रत्येकमें ४००-५०० मनुष्य भोजन करते हैं। चमड़ेसे भी हिंसा होती है ऐमा समझकर यह जूता तथ्यार कराया गया है। हमारे देशवासी भाइयोंको उचित है कि चमड़ेका ब्यव- हार कम करें।

श्रीमती मगनवाईनीके पत्रव्यवहारसे ग्रेरित हो श्रीमती
लालिताबाई अंक्लेश्वरने जैनगजट अंक
लिलाबाईका कार्च्य। ११ वर्ष ११ ता० १६ मार्च १९०६ में
'जैन भगनियों प्रति उत्तेनना' ऐसा लेख
अगट किया तथा सूचना दी कि वह अपने मांवमें ४ क्रियोंको मा-

में पिदेशिका नामकी संस्कृत ज्याकरण पढ़ाती हैं। ननसे सेउनीने नम्बईमें हीराबाग धर्मशास्त्र बनवाई इनकी दान व उदारताकी प्रसिद्धि आम लोगोंमें सेठ माणिकचंद हीरा- बहुत हुई। सर्कारके यहां जब ऐसे परोप-चंदजीको जे. पी. कारी व जाति व देशहितके काम करनेवार्छो-की पदवी। की खबर पहुंचती है तब वह प्रतिष्ठा देनेका वित्रार करती है। यद्यपि बहुतसे आद्मी प्रतिष्ठा पानेके लिये भिफारिश कराते हैं अथवा अफसरींके द्वारा करार कराते हैं कि हम अमुक रकम अमुक खातेमें देंगे हमें पदबी दिला दी जाय। सेठ माणिकचंदजीको न प्रतिष्ठाकी इच्छा थी न किसी उपाधिकी, स्वतः ही इनको विलक्कल खबर ही नहीं थी। इनके पास सर्कारी पत्र आया जिसकी नकल नीचे हैं कि तुम बम्बई शहरमें जिष्टिका ऑफ दी पीस अर्थात कांतिके न्यायाधीका नियत हुए। इस पद्से नगरमें मिनिष्ट्रेटकासा हक हो जाता है। जिस कागजपर यह दस्तखत कर दें उसे फिर और रजि-

## नकल पत्र सर्कारी।

प्टार या मजिप्ट्रेटसे हस्ताक्षर करानेकी ज़रूरत नहीं है।

Commissioner of the piece for the city of Bombay.

This is to certify that Mr. Manekchand Hirachand was by nomination of Government in the Judicial Department no. 1433 dated the 14th March 1906 appointed under the provisions of section 23 of the Code of Criminal Procedure 1898 to be a Justice of the Peace

within the Limits of the City of Bombey during the pleasure of Government.

By order of His Excellency the Right Honourable the Governor in Council.

Judicial Department Bombay Castle 30th March 1906. (Initial)
Chief Secretary
to Government.

### भावार्ध-

पीस कमिश्नर बम्बई शहरसे यह प्रमाणपत्र दिया जाता है कि मालेक मुआजिम न्याय विभागके १४वीं मार्च सन १९०६ से नियम १४३३ नंबरके सरक्युलरके मुताबिक मि० माणिकचंद हीरा-चन्दको १८९८के किमिनल प्रोसीजर कोड कलम २३के मुताबिक गमनेमेंटकी मर्जीमें आवे वहां तक बम्बई शहरकी सरहहमें जस्टिस आफू दी पीम नियुक्त किये गये।

राइट आ॰ गवेनरे इंटें कोर्सिङके हुनमसे सहीः गवर्नमेंटके चीफ सेकेटरी। न्याय विभाग **बम्बई केस**ल १० मार्च १९०६

बम्बईमें संस्कृत विद्यालयके छात्र पंडित लालारामने इस. सन्मान अर्पणके समाचार जानकर संस्कृतमें एक कविता बनाकर सेट-जीको भेट की सो इस मांति हैं—

#### ॥ श्री॥

श्रुत्वार्षितां मृपवैरेरपाधि माणिक्यचान्द्रीं नरभूपमान्याम् । नद्योदिशोबारिश्वराः सुरम्याः दिक्र्यायिनोजनजनाः प्रहष्टाः ॥ १ ॥ माणिक्यरोचिः स्वयमेव रम्या चन्द्रस्य कान्तिः सुखदा सुशुश्रा । भास्येव ताभ्यामनिशं ततोऽय जैनेर्नृपैर्मान्यतयाधिकस्त्वम् ॥ २ ॥ विद्याप्रदानादिबहुप्रकारे-रूपमहैबोपकृता हि जैनाः।
सर्वेषिकारं परमद्य वीक्ष्य सम्राङ्गि त्वां स्मरति प्रहष्टः ॥ ३॥
कीत्तिस्त्यदीया जगित प्रसिद्धा श्रुता न चेत्कर्जनसपैराजैः।
तथापि तां कर्णसुधाप्रदात्रीं कथं न श्रूयात्समनस्कमिन्टो ॥ ४॥
वदान्यसूरोजिनधर्मनेमिः विद्यार्थिवर्गैकसहायभूतः।
चिरायुषं धर्मपरायणं त्वं धर्मप्रसादेन लभस्व पुत्रम् ॥ ५॥
प्रसृदितो विनीतश्च छालाराम×छात्रः।

फल्टनके दि० जैन भाइयोंने चैत्र मुदी ११ की खास समा-द्वारा एक छपाडुआ मानपत्र मेटमें जे. पी. पदवीके हर्षमें भेजा; रुकडी जिला कोल्हापुरके समस्त सभाएं। श्रावक और मंडलीने ता. २१ मार्च १९०६ को दस्तखर्ता एक सन्मानपत्र छपा डुआ भेजा तथा ता. १५ जुलाईको हीराचंद गुमानजी बोर्डिंगके छात्रोंने भी इसी हर्षमें मानपत्र अर्पित किमा था। इन तीनों मानपत्रकी नक्छें इस मांति हैं—

## नकल मानपत्र (फल्टन ) दानवीर श्रीयुत सेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे० पी० यांचे सेवेडािं:-

सःवद्यमुक्तं विमलं चरित्रं विभाति रत्नत्रयरोचि रस्यम् ॥ लोके यदीयं स च दानवीरो माणिक्यचन्द्रो मणिवचकास्ति ॥९॥ केचिन्निचासरिद्धताः कतिचिन्न्च रोगैराक्षांतदेहलतिकाः कतिचिद्दिद्धाः विद्याजडाः कति च केचन घर्मद्दीना यस्याश्रयाजगतिशांतिमवापुरम्याम्॥२ श्रपाकरस्येव श्वयो न दृष्टो दोषाकरत्वं न च विश्रुतं ते ॥ मिश्रोदये नैव दृषं दृषासि तेले चरिन्यास्त्वमपूर्वचन्द्रः ॥३॥ मुदं दधानो मिषतां जनानां चन्द्रोक्त्यकां मुध्यप्रभां तसीति ॥ घातोश्चेदर्यमकारि सार्थस्त्रेनात्र लोके प्रथितोऽसि चन्द्रः ॥४॥

### श्रेष्ठिवर्यं महादाय!

हल्हीं या शहरांत चालू असलेल्या उत्सवाचे व परिषदेचे अनुरोधाने आफा येथें येण्याची आम्हांवर मेहेरबानी करून आमच्या जैन समाजावर जो अनुग्रह केला आहे, त्या प्रसंगाचा फायदा घेऊन आपल्या समाज विषयक प्रण्यशाली सत्कृत्याबद्दलच्या पूज्यताजनित प्रेमाला शब्दरूप देण्याचा यत्न करण्याची आम्हांस उत्कंटा झाली आहे व ती पूर्ण करून घेण्याची अप्रपण परवानगी द्याल अशी उमेद आहे.

मरतखंडांत जैनधर्माची प्रभा वारंवार उज्ज्वल करावया-साठीं ज्या विभृति आमच्यामध्ये जन्म पावस्या आहेत त्याच्या सन्मान मालिकेत अधिष्ठित करावयासारखे सत्पुरुष आपस्यास्त्याके आमच्या कालांत जन्मले आहेत हें आमच्या समाजाच्या पुण्यो-द्याचेंच हक्षण आहे, असे प्रत्येक जैनास बाटत आहे.

हें उंचस्थान भारतीय जैन समाजाच्या एक मतानें प्राप्त होण्या-सारखीं अनेक सत्कृत्यें आपण केलीं आहेत हें सर्व विश्रुत आहेच. आपल्या अनुपम औदार्यामुळें आमच्या समाजांतील बहुतेक मोठ्या संस्था आज पोशिष्या जात आहेत; इतकेंच नव्हे तर मुंबई, कोल्हापुर, अहमदाबाद, आगरा, वगैरे ठिकाणच्या विद्याप्रहासारख्या उत्तम संस्था या आपल्या थोर दानवीर्यापासूनच जनमल्या आहेत.

मागासलेल्या जैनजातीची उत्तति करणाच्या आप्ल्या-सारस्या आमच्या समामांतील भोडचा विभृतींचे नैनसमाजानर मोठे उपकार आहेत. या प्रयत्नाने छुल्या पडलेल्या भारतीय जैन-समानांत चेतना उत्पन्न होउन त्या योगाने ह्या प्राचीन जैन समानाचा अम्युद्य होईल अशी आम्हांस खात्री आहे. हें लक्षांत बेउनच इतर नातींतील पुरारी आपल्या सत्कृत्याचे अभिनंदन करि-तात, याचें ढळक उदाहरण येथील प्रमु श्रीमान् सरकार हेच होत. त्यांनी केलेल्या आपल्या सत्कारास कारण आपली थोरवी तर आहेच पण ही गोष्ट जैननातीच्या उन्नती विषयींच्या त्यांच्या कळकळीची एक साक्ष आहे याबद्दल आधीं समहत जैनलोक श्रीमंत सरकारचे ऋणी आहोंत.

मुंबई या सूरत सारख्या मोठ्या व्यापार प्रिमिद्ध व जेथे जैन व जैनंतर हिंदू तीर्थवासी यांनां उतरख्याशिवाय गत्यन्तरच नाहीं असे ह्मटलें तरी चालेल, अशा ठिकाणों हिराखारा धर्मशाळेसारख्या भव्य धर्मशाला बांधून उताह लोकाची गैरसोय नाहींशी केली. अशा रीतिनें जैन व जैनंतर समानावर ही अनेक उपकार केले आहेत।

ह्या आवल्या दानशौंडित्वाबह् छच स्पृह्णीय प्रस्याती झाछी आहे, असे नहीं. आवलें सौनन्य. आपन्नी जैनधर्माविषयीं अपार श्रद्धा, जैनसमानाच्या उन्नति विषयीं आपले अन्याहत परिश्रम आणि आवल्या समानांतील अनाथ व गरज् लोकांस मदत करण्याविषयीं आवली निरलस तत्परता इस्यादि अनेक गुणासुळें आवण सर्व समानास पूज्य व प्रिय झालेले आहां.

मुंबई दिगस्बर केन प्रांतिक सम्म, द० मट केन परिषद्, भातरवर्षीय दि केन महासमा इत्यादि समांचे अध्यक्ष, मुंबई शहरातील 'निस्टिस ऑफ दी पीस', तीर्थक्षेत्रप्रबंधकारिणी सभेचे महामंत्री इत्यादि अनेक नवाबदारीचीं, व समानोपयोगीं कामें अंगावर घेऊन इतर कोणासही न करितां येतील अशा उत्तम तन्हेनें व प्रचण्ड स्वार्थत्याग करून आपण तीं बनाविलीं आहेत व त्यामुळें आपण सर्व जैनसमानास कायमचे आपले ऋणी करीत आहां.

आपल्या अंगच्या सद्गुणांचें वर्णन करणें अशक्य जाणून त्या उच्योगास न लागतां शेवरीं आधांस इतकेंच सांगावयाचें आहे कीं आपला कित्ता थोड़ाबहुत : तरी बळविण्याची आमच्यांतील पुढ़ारी लोकांस आपलें तेनस्वी उदाहरण पाहून इच्छा जाहल्यास समानानें आपल्या उपकारांविषयीं थोडी तरी कृतज्ञता दशिवली असे होईल. आपल्या अपार औदार्याचें अनुकरण करण्यासारखी सुस्थिति नरी फारच अपूर्ध असली तरी आपला साधेपणा, निरलसपणा, वगैरे गुणांत आपला कित्ता पुढें ठेवण्याचें काम तरी प्रत्येकानें केलें पहिने.

असा कित्ता आमच्या पुण्योदयाने आम्हांस आज सजीव स्वरूपाचा मिळाला आहे तो असाच आमच्या पुर्टे चिरकाल राहो, अशी आमची प्रमेश्वराजवळ प्रार्थना आहे. आपल्यास व आपल्या कुटुम्बास शुम कर्मजनित सर्व फर्ले अखण्ड प्राप्त होवोत अशी जैनसमाजाची इच्छा पुनरिप प्रदर्शित करून, हें मानपत्र आपल्यास सादर करावयाची परवानगी घेत आहों.

फलटण. एप्रीलं १९०७.

आपहे कृपामिलापी-फलटण दि॰ जैनसमाज तर्फें-१. शेट दोशी माणिकचंद रावजी, २. होचंद माणि-कचंद दोशी वकीक, ३. शा० समचंद हेमचंद (अध्यक्ष स्वा॰ क॰ कडरण ), ४. दोशी इपचंद स्वस्मीचंद, ५. शा॰ रामचंद सुरचंद.

# नकल मानपत्र (रुकडी)

श्रीमत्सकलगुणगणसंपन्न राजमान्य राजच्छी होट माणिकचंद पानाचंद जव्हेरी मुंबई जस्टिस आँफ धी पीस्।

यांचे सेवेसी-हर्इडी गांवचे आम्ही सम्मस्त श्रावक व इतरजन आपर्ले अभिनन्दन करितीं कीं---

आपली धर्मसंबंधी व इतर औदार्याची कीर्ति सरकारचे कानावर जाऊन त्यांनीं आपला थोरपणा मनांत आणुन सरकारांनीं आपल्यास 'नस्टिस ऑफ धी पीस' ही बहु मानाची पद्वी दिली. असे आम्हांस कळल्यावरून आम्हांस फार आनंद झाला व यानबहुल आम्ही सर्व जैन व बाह्मण वगैरे लोक श्रीजीनाचे मंदिरांत जमून आनंद— प्रदर्शक समा भरवून आपल्या थोरपणास उचित असा मान मिळाल्या बहुल आनंद मानला, व सरकारचे आमार मानिले, आणि आपलें असेंच यशस्कर व जनांस सुखकर असे आयुष्य वृद्धिगत होवो ह्मणुन परामेश्वराची प्रार्थना केली.

हा आनंद आपल्यास कळविण्याकरितां हैं अभिनंदनपर पत्र आह्मीं नम्रता पूर्वक आपल्यास लिहून पाठविलें आहे. तें आमचे तर्फें चिरंजींव रा० रा० वावगोंडा आणा पाटील रुकडीकर हे आपणास अर्पण करितील, त्याचा आपण प्रेमानें स्वीकार करावा अशी विनंति आहे. कृषा लोम असावा ही विनंति. ता० २१ मार्च १९०६ आपले—स्कडीकर समस्त श्रावक व इंतर मंडली

# नकल मानपत्र (वम्बई बोर्डिंग)

मेहेरबान सेठजी साहेब,

होठ माणेकचंद हीराचंद झवेरी जे. पी. मानवंता अने सुज्ञ झेठजी साहेब,

विशेष अमो शेठ हिराचंद गुमानजी जैन बोर्डीन्ग स्कुलना विद्यार्थीओ आपणी नामदार मायाळु ब्रिटिश सरकार तरफथी आपने जे. पी. नो मानवंतो खेताब एनायत करवामां आज्यो छे तेनी खुशालीना आवेशमां आप साहेबने आ मानपत्र आपवानी रजा लड्ड छीए.

म जुष्यने धन प्राप्ति थवी ए तो सुलम छे परंतु ते धननो सदु-पयोग करवानी बुद्धि तो कोई विरलाओमांन पूर्वनन्मना सुकर्मना योगे विकाश पामे छे. आप व्यापारी वर्गना होवा छतां विद्या तथा धर्म तरफ आपनी अमिरूची प्रशंसनीय छे.

सरकारी पाठशालाओमां अभ्यास करता जैन विद्यार्थीओने पडती धर्मशिक्षणनी खोट, तेनन परदेशथी अत्रे आवता विद्यार्थी-ओनी अमबडता दूर करवाने आपना स्वर्गस्थ पिताश्रीनी यादगीरीमां शेठ हीराचंद गुमाननी त्रैन बोर्डीन्ग स्कुल स्थापी तेमतुं, आप-साहेबनुं तथा आपना कुटुंबनुं नाम अमर कर्युं छे. आ सिवम्य विद्यानी तथा धर्मनी अमिवृद्धिने माटे मुंबई, अमदाबाद, कोल्हापूर वीगेरे स्थलीए करेली सुखावतो जग जाहेर छे.

आपने बैन तरीके मुकेन्द्रं मान आस्ती सेन कोमने मळचा

बरोबर छे. नामदार मायाञ्च बिठिश सरकार के जेना प्रतापी अने न्यायी अमल नीचे आपणे सर्वे सुलक्षांतिमां रहीए छीए तेनो आपने आ मान आपवा सारू आ प्रसंगे अमे आमार मानीए छीए.

छेत्रटे अमो सर्वे इच्छीए छोए के आ भानवंत पदवी आप लांबा वखत सुधी भोगववाने तथा धर्म अने विद्यानां अनेक उपयोगी कार्यो करी हजु पण मोटा खेताब मेळववाने अने ए रीते सरकार अने प्रनामां वधारे मान प्राप्त करवाने भाग्यशाळी थाओ. तथास्तु । तारदेव मुंबई ता० ६५ जुलाई १९०६.

> ली॰ आपना आज्ञांकित सेवको-मोदी नाथालाल छगनलाल बी. ए. डाक्टर मोहनलाल पोपटलाल बी. ए. पारेख प्रमुखाल वावजी बी. ए. लालाराम जैन पंडीत.

> > बीगेरे !

शेठ हीराचंद् गुपानजी जैन बोर्डीमा स्कुलना विद्यार्थीओ.

क्वीतलप्रसादर्जाने जैनधर्मकी श्राचीनता व कुछ उद्धेयोंको प्रगट करनेवाली एक पुस्तक जिलेन्द्रसल-प्रयागके माधमेलेमें दर्प ण प्रथम भाग रची है उसकी २००० 'सेटजीद्वारा पुस्तक प्रतियां सेट माणिकचंद जीकी ओरसे खुद्धित होकर प्रयागके मात्र मेहेमें बाबू चेतनदासजी वितरण । बी. ए. द्वारा वितरण की गई थीं। सेठ माणिकचंदजीचे वैद्यराज व वैद्यरत्व उपाधि प्राप्त पं० कन्हैयालाल जैनको बुलाकर अपनी वस्त्रईमें औष्<sup>ध</sup>ालय। सहायतासे एक पवित्र जैन औषघालय खु-लवा दिया जिससे अशुद्ध दवाओंसे बनकर जैन व अजैन शुद्ध औषधियें सुगमतासे प्राप्त करें।

सेठ माणिकचंद्जी शीतलप्रसाद्जीके साथ सम्मति किया ही करते थे। एक दिन आपने कहा कि यह **बुन्देलखंडमें बोर्डिंग- बम्बईमें बुन्देलखंडके जो यात्री आते हैं और** की आवश्यका । इस चौपाटी चैत्यालयका दर्शन करनेके बाद मुझसे मिलकर बातचीत करते हैं तब उधर शिक्षाकी बहुत कमी मालुम होती है तथा प्रामोंमें रहनेवालोंके लिये पढ़नेका साधन नहीं है, इससे आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं है, इस लिये ब्देलखंडके टद्धारके लिये कहीं न कहीं बोर्डिंग खोलनेकी आवस्यक्ता है। दोनोंकी सम्मतिमें जबलपुर स्थान ठोक जंचा क्योंकि वह मुख्यनगर है तथा वहां कालेन और स्कूल भी हैं, द्रेनिंग कालिन भी है। जैनियोंकी स्थिति भी अच्छी है। शीत-लप्रसादसे सेउनीने कहा कि वहां बोडिंग स्थापित करानेका सिछ-सिला डालना चाहिये । शीतलप्रसाद्जी महासमाके महाविद्यालयकी डेपुटेशन पार्टीके साथ कुछ ही मास पहले जवलपुर, सिवनी, छिंदवाडा आदिमें दौरा कर चुके थे जिससे वहांके हालातसे परिचित थे। आपने सब स्थानोंके धनाढ़चोंका हाल बताया और यह सम्मति दी " कि श्री कुंडलपुर (दमोह) का मेला जो चेत्रमें होता है उसमें आप पदार और वहां मुख्य २ भाइयोंको बुलानेकी प्रेरणा करें। फिर क्हांसे नक्छपुर चलकर इसका यत्न करें। यह बात निश्चित हो गई

तब शीतलप्रसादनीने जबलपुर, सिवनी, लिन्दवाड़ा, दमोह आदिके भाइयोंको सूचना दी कि शोठ माणिकचंदजी श्री कुंडलपुरकी यात्रार्थ आवेंगे, आप छोग मित्रमंडछीसह पधारें।

सेठ साहन बानू शीतलप्रसाद और श्रीयुत नाथूराम प्रेमीके साथ ता० १५ मार्चकी शामको बम्बईसे चलकर ता० १६ को बीनास्टेशनपर आए। श्री कुंडलपुरकी यहांसे २ मील दूर एक घर्मशालामें ठहरे। यात्रा । यहांसे शहर बीना-इटावा २ मील था।

द्रीनार्थ गए। यहांसे शामको ही चलकर १२ बजे रात्रिको दमोह स्टेशनपर पहुंचे । बाबू गोकुछचंद वकीछ जिनको पहलेसे खबर की गई थी, १०० भाइयोंको लेकर स्वागतार्थ स्टेशनपर आए थे। बड़ी मक्तिसे नगरमें छाए और धर्मशालामें ठहराया । यहाँ १२५ वर परवारोंके हैं, संख्या ४५० है, जिनमंदिरनी ६ हैं। वर्षाके कारण ता० १७ व १८ को यहीं उहरे।ता० १७ की रात्रिको मंदिरजीमें सभा हुई। धर्म विषयपर व्याख्यान हुआ। ता० १८ की शामको बैलगाड़ीमें चढ़कर २० मील चल ता० १९ को सबेरे कुंडलपुर क्षेत्रमें आए। यह क्षेत्र दमोह स्टेशनसे २० व बांदकपुरसे १६ मील है । कुंडलपुर एक रमणीक और मनोहर गांव है, जो पहाड़की तलहरीमें बसा हुआ है। पहाड़का आकार कुंडलके - समान है 🕨 पर्वतपर २२ तथा तलहटीमें २१ जिन मंदिर हैं। पर्वतसे सनसे उंचा उत्तरकी ओर छ: घरियाजीका मंदिर है जिसपर पहुंचनेको नीचेसे ५०० सीढ़ियां ऐसी बनी हैं कि एक बालक मी धुगमतासे चढ़ सक्ता है। पर्वतके मध्य भागमें श्री वर्डमान स्वामीकः

विशार्क पत्थरका बना हुआ मंदिर है मिसमें लाखों रुपयोंकी लागत आई होगी। इसमें श्री **वीर भगवाम**की एक विशाल और दरीनीय पद्मासन योग प्रतिमा है जिसकी ऊंचाई ४॥ गम व चौड़ाई २ गनके अनुमान है । यह प्रतिमा बहुत प्राचीन कालकी है। संवतं नहीं है, दर्शन करते मन तृप्त नहीं होता । मंदिरत्रीके जीणीद्धारका एक शिलालेख संवत १७५७का है जो द्वार पर लगा है। पहाड़ंपर और मंदिरों में जानेके मार्गमें भी पत्थर जड़ा हुआ है इससे सर्व मंदिरोंकी वंदना ३ वंटेमें हो जाती है। सेठ साहबके आगमनको जानकर सिवनीसे श्रीमान् सेट पूरणदाह आनरेरी मिन्द्रेट, खूबचंद्जी, धन्नालालजी, मिद्दन ठालजी, जुगरा नसाहजी; छिन्दबाहासे सिंहई खेमचंद्र आनरेरी मजिष्ट्रेट आदि; जबलपुरसे सिंहई गरीनदासनी, मोलानाथनी आदि बहुतसे भाइयोंको लेकर आए थे। कुल संख्या २००० की होगी। मेलेके प्रबन्धक सेट विन्द्रायनजी दमोह थे। सेठ माणिकचंदनी साहबकी चेटा और प्रेरणासे ता० १९, २०, २१ को दिनमें तीर्थकी सभाएं और रात्रिको उपदेशक समाएं हुई। दिनकी सभाओं में ऋपसे सेठ माणिकचंदनी, सेठ चिंद्रावनजी और सवाई सिंहई खेमचन्दजी संभावति हुए । इनमें ८ प्रस्ताव पास हुए । सेठजी सच्चे तीर्थभक्त व सुधारवें थे। आपकी पूर्ण प्रेरणासे इस क्षेत्रके प्रबन्धार्थ एक कमिटी ७ समासर्दोंकी बनी जिसके सभापति व कोषाध्यक्ष सेट बिन्द्रावन व मंत्री बाबू चक्षेठालजी हुए । पहला प्रस्ताव यही स्वीकार कराया गया । यहां १९ दिन मेला रहा करता था जिससे छोग आते जाते रहते थे-जगते न थे, इससे दूसरा प्रस्ताव

सेंठ बाणिक्तचंदजीने स्वयं किया कि सिर्फ ४ दिन मेहा रहे; तीन दित धर्म, जाति और तीर्थ सुधारके छिये समाएं हों और चौथ दिन यात्रा निक्छे । इसका समर्थन स्वयं सेठ बिन्द्रावनमीने किया । इस क्षेत्रपर छोग विना सलाहके नए मंदिर बनवा दिया करते थे निनके प्रक्रथकी फिक्र प्रक्रवकर्तीपर आ जाती थी। इससे यह प्रस्ताव हुआ कि नया मंदिर प्रबन्धकारिणी समाकी विना आज्ञा न बने। और भी जो कोई काम इस क्षेत्रवर द्रव्य खर्च कर करना हो तो प्र० सभाकी राय हे हेवै। प्रस्ताव नं० ४ कन्याचिक-यके विरुद्ध पास हुआ । इसके समर्थनमें खयं सेठजीने व्याख्यान दिया तथा कहा कि यदि किसी गरीन छड़की वालेके पास रुपया न हो तो बिराद्री प्रबन्ध कर दे, वह छड़केवालेसे न लेवे। इस प्रन्तावको शीतलप्रसादमीने उपस्थित किया था व नाधुराम-जीने भी समर्थन किया था। ५ वां प्रस्ताव था कि वृद्ध व निर्वेल गाय बैल पशुओंको कप्ताईके हाथ न वेचकर पिंजरापील द्वारा रक्षित रक्या जाय । इसको शीतलप्रसादने पेश किया और सेठ माणिकचन्द्रनी, जुगराजशाह आदिने जोरके साथ पुष्ट किया। छठा प्र० सभाओं के स्थापित करने, ७वां विदेशी अशुद्ध चीनी (सकर) न वर्तने, ८वां नैन पद्धतिसे विवाह करानेपर था। इस समय सेठ माणिक चंद जीने प्रगट किया कि विवाह पद्धतिकी पुस्तक छपी हुई हमारे पाससे मंगाली जावै। मेलेमें आए हुए कटनी, जबलपुर आदि पाठशालाके ६९ बालक और १७ बालिकाओंकी परीक्षा बाबा दौलतराम और ब्रह्मचारी बाल्करामके सामने स्री मई। ७५) का इनाम बांटा गया। वैत्र वदी १३ के तीसरे

पहर पालकीपर श्रीजी विराजमान हुए। फूलमालकी बोली १०२५)
में सिंहई डालचंद दमोहने ली। सेठजीको संस्कृत विद्याकी उन्नतिके लिये स्पाद्वाद पाठशाला काशीका बहुत बढ़ा ध्यान था। इसके
लिये २२५) की सहायता स्वीकृत हुई। सेठ साहबसे सर्व ही
छोटे बड़े उनके ठहरनेके स्थानपर मिलने आते थे। सेठजी उनको
विद्या पढ़ने और कुरीति मेटनेका उपदेश देते थे व बोर्डिंगकी
जरूरत है कि नहीं ऐसी सम्मति लेते थे। जबलपुर वार्लेकी
सम्मति देखकर कि यदि बोर्डिंग होर्वे तो सर्वसे श्रेष्ठ बात है,
आप ता० २३ की दोपहरको चलकर ता० २४ मार्चको
जन्नस्तुर आए।

स्टेशन पर भाइयोंकी बहुत भीड़ थी। भिहई डाछचंद नारायणशासनी यहां उदार बुद्धि धर्मात्मा जबलपुरमें बोर्डिंगकी थे। उन्होंने सेठनीको अपनी धर्मशाला स्टपट। लार्डगंनमें टहराया और बहुत ही प्रेम प्रद-शित किया। सेठनीन २, ३ दिन शहरके मुख्य २ भाइयोंसे मिलने व उनको बोर्डिंगके लिये तय्यार होनेके लिये भारी चेष्टा की। सेठनीको आलस्य बिलकुल न था। शीतल-प्रसादके साथ हरएक प्रतिष्ठित भाईके यहां ना नाकर उसे इस कामके लिये मज़बूत किया। आप शहरके प्रतिष्ठित अनैनोंसे मी मिले जिससे जैनियोंको जिन्हे कभी बोर्डिंग ऐसे काम करनेका ढंग नहीं माल्म है मदद मिले। यहां पर रायसाहब मुझालालजी पेन्शन यापता बहुत प्रतिष्ठित व परोपकारी प्ररुष थे उन्होंने सेठनीके विचारकी पूर्ण सराहना की और हर तरह मदद देनेको तय्यार हुए । सिंहई गरीक्दास जो जकछपुर केन किरादरीके मुिस-या हैं व अन्य कई साहबोंने कहा कि यहां पर पाठशाखाएं कई दफे हो होकर टूट गई हैं किसीको शौक नहीं हैं, तब बोर्डिंग कैसे चलेगा ? सेठजीको अनुभव था। आपने कहा कि आप छोग १ वर्ष तक बोर्डिंगको चलाकर देखें, मुझे तो विश्वास है अवश्य चलेगा और आप लोग सब तरहसे समर्थ हैं।

आपके यहां छाला मोलानाथने अपने परलोक गत पुत्र कस्तु-

रचंदके स्मरणार्थ २००००) सर्कारको स्कूछके जवलपुर बोर्डिंगके मकानके लिये दे डाले हैं इसी तरह मैं एक वर्ष-लिये २४००) के लिये ६००) पासिक अर्थात् २४००) बोर्डि-गके लिये देता हूं, आप भी कुछ प्रबन्ध करो। तब का दान। सिंहई गरीक्दासजीने अपनी पंचायत जोड़ी और वादानुवादके वाद टहराव किया कि जनतक बोर्डिंग रहे यह पंचायत ५१) मासिक बराबर देती रहे । इसीका मासिक चंदा लिख लिया गया। तब ता० २७ मार्चकी रात्रिको जैनियोंकी आमसभा हुई। सभापित परोपकारी अजैन रायसाहन मुन्नालालजी हुए। एकमत होकर बोर्डिंग, स्थापनका प्रस्ताव पास किया गया । २१ मेम्बरोंकी प्रबन्धकारिणी कमिटी बनी । सभापति उक्त रायसाहब, कोषाध्यक्ष सिंहई डालचंद नारायणदास और मंत्री बाबू द्यालचंद अकौन्टेन्ट डिवीननल-नन नियत हुए। बोर्डिंग खोलनेका महूर्त बैशास्त्र सुदी इ सं० १९६६ ता. २६ अपैल १९०६ नियंत हुआ।

कुंडडपुरमें सिवनीवार्लीका बहुत अग्रह था कि जबख्पुर होकर आप यहां अवस्य पधारें । सेठजी ता० २८ सिवनीमें स्वामत मार्चकी रात्रिको सिवनी पहुंचे । स्टेशनपर और फूटको श्रीमन्त सेठ पूरणादाह आनरेरी मजि-मिटाना । ष्ट्रेट बहुतसे जैनी व अनेक अनैन प्रतिष्ठित भाइयोंके साथ जे० पो० महाशयके स्वाम-

तार्थ स्टेशनपर आए । गाजेबाजेके साथ अवनी कोठीपर लाकर उहराया । यहाँ विरादरीमें ३ वर्षसे ऐसी फूट पड़ी हुई थी जिससे सारी विरादरीको महान कष्ट था व धर्मके सर्व कार्य बन्द थे। सेठनीने निश्चय किया कि इसको अवस्य मिटाना चाहिये। ता० २९ के दिन और सारी रात इसीका प्रयत्न किया गया । सेटजीने जजकी तरह हरएक बयान शीतलप्रसादजीसे कलम बंद कराए व गवाहियां हीं-नांच की । नो नियने कहा उसको अच्छी तरह सुना और ता० ३० को सबेरे अपना फैसलानामा सुना दिया। सर्व बिरादरीन पहले ही फैसला मंजूर करनेकी स्वीकारता देदी थी। इस फैसलेको सुनकर सर्व विरादरीको हर्ष हुआ, सब गट् गट् वदन हो गए। यहाँ तीन पक्ष थे सो एक हो गए, तब उसी दिन यहांके भाइयोंने सानन्द रथोत्सव किया । श्रीजीके रथको सर्व भाई स्वयं खीं बते थे । बाजारमें गाते बजाते बागमें पहुंचे । वहां २ घंटे अभि-षेक व पूजा करके छौटकर पंचायती मंदिरजीमें आए। फूलमालकी बोली श्रीमन्त सेठ पूरणताहने रु. ७५१) में ली थी। रात्रिको धर्म-शालामें पुनः सभा हुईं, २५०से अधिक मनुष्य जमा थ। सेटजीको समापति किया गया। सर्व निराद्रीने सेठनीको ने० पी० पद मिलनेके कारण व फूट मेटनेमें भारी परिश्रम करनेके कारण एक निम्न लिखित अभिनन्दनक्त्र दिया और बहुत २ घन्यवाद प्रगट किया—

# नकल मानपत्र (सिवनी)।

सबैया तेईसा।

पुन्य प्रताप बढ़ो जगमें यश छाष रहो महि मंडल भारी। खोल दिये चट शाल अनेक रचे धर्मालय हेतु दुखारी ॥ तीर्थनके उद्धारके कारण जैनसमान भर्रे आभारी । धर्मप्रचारक दानी बीर समान न अन्य मयो अवतारी ॥ १ ॥ सिवनी मध जैनसमाज विषे चिरकाल ते द्रोह बड़ो अतिमारी। उपदेशक औ डियुटेशनके श्रवते न हटी यह फूट हत्यारी ॥ यह अवसर मंबई सेठ प्रभाव ते मेल भयो क्षण एक मझारी। माणिकचन्द्र प्रदानिक जसटिस आफ दि पीस महा पद्धारी ॥ २ ॥ ज्ञान विधान महा गुण लान प्रसिद्ध विशुद्ध चरित्र प्रसारी। कीरत बेल बढ़ी जगमें लहके बहु मानन पत्र प्रकारी ॥ जैनसमान एकत्रित सिवनी देत हैं मानहि पत्र पुकारी। ' मानकचन्द्र प्रदानिक 'जसटिस आफ दी पीस' महा पद्चारी ॥ ३ ॥ तीरथ राजके काज रखी तुन लाज कियो पुरुषारथ माई। अकल अरु शोलापुर नवलपुर मुम्बपुरी विद्योन्नति नारी ॥ छात्रनकी सुपरिक्ष्य छये दिये परितोषक तोषक कारी। श्रेम कियो हम पै इत आय जयो जग में तुम सेठ उदारी ।। ४ ॥ ता० ३० मार्च मन् १९०६

द॰ जुगराजसाइ-पन्त्री, प्रकारणी सभा, जैन पंचायत, सितनी । फिर मंदिरजीके सुप्रकन्वार्थ एक प्रकन्वकारिणी सभा और दूसरी जात्युजतिके लिये—जातिके झगड़े तय करनेके लिये सभा स्थापित हुई। सवाई सि॰ खेपचंद लिदवाड़ाके पेश करने और सिंहई जुगराजसाहके समर्थनसे पाठशाला खोलनेका निश्चय किया गया। लोगोंमें बहुत उत्साह था। सभा राश्चिको र बजे समाप्त हुई। यहांसे सेठजी सीधे कम्बई प्यारे।

चैत्र सुदी १४ स० ६२की रात्रिको बम्बई स्थानीयः सभाका एक अधिवेशन मि० छल्छुमाई प्रेमा-सेठजीका बम्बर्ड सभा नन्द एल. सी. ई. की अध्यक्षतामें हुआ। द्वारा हर्ष प्रकाश । बम्बईके सभी मुख्य माई उपस्थित थे। तक शीतलप्रमादजीने सर्कारकी ओरसे जे० पी॰ का पद मिलनेके उपलक्ष्यमें सभाकी ओरसे सेठजीको अपना पूर्ण हर्ष प्रगट किया तथा यह कहा कि " निस दिन आपको यह पद्वी मिली उस ही दिन आप कुंडलपुरकी यात्रा पत्रारे। यात्रामें रात्रि दिन जाति व धर्मकी सेवा करनेवाला एक धनवान सेठनीके समान दूसरा देखनेमें नहीं आया। आपने जबलपुर ऐसे कठिन स्यानमें बोर्डिंग स्थापनका निश्चय कराया व सिवनीकी फूट मेटी, ये दोनों बड़े ही मारी काम किये हैं। आपको सर्कारने नो यह पद दिया है आप उसके भर्वथा योग्य हैं । काशी स्याद्वाद पाठशालाके छात्रोंने संस्कृतमें एक अभिनन्दनशत्र पत्रमें भेजा था सो वैद्या कन्हैयालालजीने बांचकर सुनाया, फिर समापतिने सेठजीके कर-कारलोंमें अपित किया।

स्वीशिक्षाके प्रचारार्थ जो श्रीमती मगनवाई जी पत्रव्यवहार कर रहीं थी उसके फलसे शोलापुरके सेठ मगनवाई जीके उ- हीराचन्द नेमचन्द आनरेरी मजिप्ट्रेटकी घोगका फल । सुप्रजी श्रीमती कंकु वाई भी खीसमामकी सेवामें दत्तचित्त हुई और सप्त तत्त्वपर एक लेख मेजा जो जैनगज़ट अंक १७ ता० १ मई १९०६ में मुद्रित है।

जब सेटनी जनलपुर बोर्डिंगकी बात पक्की करने आए थ उस समय बोर्डिंगके छिये बहुतसे मकानोंको जबलपुरमें बोर्डिंगका तलास किया। जैन बिराद्रीमें सिंहई सद्दूलालजी धर्मातमा व प्रेमी भाई थे। महस । आपने सेठजीको अपना नया बनवाया हुआ मकान दिखलाया । इसमें अभी प्रवेश भी नहीं हुआ था। संटजीको २५ बालकोंके रहने योग्य साफ सुधरा देखकर पसन्द आ गया। तन सिंहईनीने कहा कि एक वर्षके छिये विना किराए छिये नो डिंग-के लिये में यह मकान देता हूं, उसीमें महूत करना निश्चित हो गया था । नरसिंहपुरमें पत्रालाल मास्टर एक धर्मबुद्धि भाई था इसका हाल मुलालाल राजकुमार द्वारा मासूम हुआ था सो इसको सेटजीने बुद्धाकर सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत कर दिया तथा मेन, कुर्सी वर्तन आदि सामान मंगानेकी सर्व सुची कर दी थी तथा शीतल-प्रसादजी द्वारा एक नियमावली भी बनाकर दे दी थी। ताः ११ अप्रैलकी समामें यह नियमावली पास कराली गई थी भौर महर्त्तके िल्ये सर्व प्रक्न्च हो रहा था। कुछ बालक मी बुखाये गए थे। इतनेमें महूर्तका दिन निकट आनेसे सेठ माणिक चंदजी शीतलप्रसादजी और श्रीमती मगनबाई जीके साथ ताः २४ अप्रैलको जबलपुर पधारे और जल्सेका बहुत उत्तम प्रबन्ध कराया। नगस्के प्रतिष्ठित भाइयोंको निमंत्रण भेना व कई जगह आप भी बुलाने गए। राजा गोकुलदासजी रईस-के हाथसे बोर्डिंग खुले ऐसा निश्चय किया।

मिती बैशाख प्रदी ३ अर्थात् अक्षयतृतीयाके दिन ता. २६ अप्रैह० ६ को सबेरे ही श्रीसरस्वती पूजन करके ८ बजे मं-गल कलशको लिये हुए सर्व मंडली गाने बाजेके साथ लार्डगंजकी धर्मशालासे बोर्डिंगके मकानमें पधारी और वहां मंगल कलशा पध-राया । फिर लार्डगंनकी पाठशालाके मकानमें आए । वहां सर्व जैन अजैन १००० मनुष्य एकत्र हुए। नगरके बढ़ेर सभी प्रतिष्ठित पुरुष आए थे। राना गोकुलदासनीने सभापतिका आसन ब्रहण किया। सभापतिने बोर्डिंगकी आवश्यका बताते हुए सेठ माणिकचंदजीकी उत्तेजना और कष्टकी सराहना की । फिर बाबू द्यालचंद मंत्रीन नियमावली, कमेटीके मेम्बर व प्रवेशार्थ आए हुए छात्रोंके प्रामादि बताए। फिर शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगके लामपर एक मनोहर व्याख्यान दिया । इसका समर्थन व्यवहारी रचुवीरप्रसाद्जी, पं० काशीप्रसाद चौधरी, पंडित गिरधारीलाल पेन्दानर तथा रायबहादुर विहा-रीसाल खजांची भागव बेंकने किया। आपने कहा कि भागवीं में ६ बोर्डिंग हैं और सबसे पहले आगरामें खुला था। राय-साहब मुजालाल अकौन्टेन्टने सर्वको धन्यबाद दिया । फिर सर्व मंडली बोर्डिंगके मकानको प्रधारी। राजा साहबने मकानका ताला सोला

तथा मकानकी सुन्दरता व सुपरिन्टेन्डेन्टके ऑफिसको देखकर प्रसन्नता प्रगट की । इस दिन नरसिंहपुर, कंदेली, पिपरिया, भौरसिरके ५ छात्र भरती हुए थे, परन्तु थोड़े ही दिनोंमें २३ छात्र हो गए। २ वर्षीतमें १७ रहे, इनमें ४ संस्कृत, २ हाई स्कूछ शेव ११ मिडिल रकूलकी कक्षाओं में रहे। घार्मिकिशिक्षा धुप० द्वारा निस्य दी जाने लगी और वार्षिक परीक्षा भी होने लगी । यद्यपि सेठनीने केवल २४००) की ही मदद दी थी, पर घर्मके प्रभावसे १ वर्षमें १२५१॥ ≥) १ खर्च होकर रोकड़ १११२।)५ रही। इस तरह यह बोर्डिंग कई वर्ष तक चलता रहा। सेठनी सिंहई नारायणदासको जो कई छाखके धनी थे पर पुत्र नहीं था, बारबार जब वे मिछते थे यही उपदेश करते थे कि आप इस बोर्डिंगको चिरस्थाई कर देवें, द्रव्य इसीमें लगाना सफल है। इस उपदेशके बार२ असरसे सिंहई नारायणदास और उनकी धर्मपस्नीने एक कोठी १५०) मासिककी आमदनीकी दे दी तथा मरते समय २००००) बोर्डिंगका मकान बनानेके छिये बाबू कंछेदीलाल वकील बी. ए. एल एल. बी. आदि ट्षियोंके प्तपुर्व कर गए। सिंहईनीके दो स्त्रियें थीं। दोनों विद्या प्रेमणी थी । बाबू कंछेदीलालने बहुत ही हवादार स्थानमें जमीन लेकर बोर्डिंग बनवाया । इसके बनवानेमें ४००००)लगे सो सब सिंहई-जीके स्टेटसे छगे। यह बोर्डिंग एक दर्शनीय मकान बनगया है। ४० से अधिक छात्र रह सक्ते हैं। वर्तमानमें सेकेटरी बाबू वं छेदीलालमी ही हैं।

श्रीमती मगनवाई जीके व्याख्यान धुननेके छिये यहांके स्त्री व पुरुष बहुत उत्सुक थे सो ता० २७ जनळपुरकी स्त्री स- अप्रैलके सबेरे पाठशालामें स्त्री व पुरुषकी माजमें जागृति । सम्मिलित सभा हुई थी। हानरी ५०० थी। फीमेल ट्रेनिंग कालेनकी लेखी सुप्रि-न्टैन्डन्ट मिस रास्त मी कालेजमें पढ़नेवाली २ जैन स्त्रियोंको हैकर ठीक ७ बजे पथारी और सभापतिके आसनको सुशोभित किया । श्रीमती बाईजीने विद्याकी आवश्यक्ता पर १॥ घंटा बहुत ही असरकारक व्याख्यान दिया । फिर भगवंतीबाई, जमनाबाई, गौरीबाई तथा मुन्नीबाईने भी अपने २ व्याख्यान पढ़े। मिस साहबाने मगनवाईजीके कथनको सहराते हुए कन्याङ्गाला होनेपर षद्दत ज़ोर दिया । उसी समय श्रियां दान करने लगीं । ५) मिस साहबाने भी देने कहे तथा दूसरे दिन एक प्रशंसाजनक पत्रके साथ ५) अपने और १) अन्य छात्रका ऐसे ६) भेन दिये। रात्रि तक मासिक व नकद सब मिलकर १५००) रु० का चंदा हो गया। यह रुपया जबलपुर बोर्डिंग हाउसकी कमेटीके आधीन सेठजीने किया, वह कन्याशाला खुळवावे। रात्रिको भी मगनबाईजीका उपदेश स्त्रियोंमें विनय व शीळवतपर हुआ ।

वैशाल सुदी ६ ता० २९ अप्रैलको श्रीजीकी सवारी बड़े समारोहसे निकली। सिवनीसे सेट पूरणशाह खिन्दवाड़ामें सेटजी- भी आये थे। राजिको सभामें पाठशालाके का भ्रमण। लिये कहा गया तब निश्चय हुआ कि जिस्साई फंडकी जो पट्टी हुई है उसको

जमा खर्च करके पक्का किया जायगा और अध्यापक मिलनेपर काम जारी होगा । सेठ माणिकचंदनीने जबलपुर बोर्डिंगका हाल कहकर सहायताके लिये प्रार्थना की तो उसी समय सेठ पुरणशाहने २५०) प्रदान किये तन औरोंने भी लिखाया।

दूसरे दिन ता० ३० की शामको मगनबाईजीने खियोंके कर्तव्यपर व्याख्यान देकर गाली गवानेका त्याग कराया । रात्रिको यहां एक आम सभा राय मधुरामसाद् वकी इके सभापतिस्वमें हुई । डिस्ट्निट जन आदि नगरके प्रतिष्ठित पुरुष आए थे। शीतल-प्रसाद्जीने घर्मविद्याकी आवश्यकापर १॥ घंटा व्याख्यान दिया । सभापति साहबने इसकी पुष्टताकी व सेठ माणिकचंदजीने सभापतिको धन्यवाद दिया । दूसरे दिन यहांसे सेठजी सिवनी पधारे । रात्रिको शीतलप्रसादजीने तत्त्वज्ञानके ऊपर व्याख्यान दिया और बोर्डिंगके लिये मददको कहा तो बहुतसे माइयोंने सहायता दी। कुछ चंदा सिवनीका ७८३) और छिन्दवाईका ५३१) हो गया। सेठनी शीत-लप्रसादनीके साथ यहांसे गीरीडी (शिखरनी) गए और मगनबाईजी बम्बर्ड आए।

सेठजीका ध्यान चारों तरफ था। गीरीडी जानेकी जरूरत यह थी कि शिखरजीकी उपरैछी बीसपंथी श्री शिखरजी बीसपंथी कोठीका कुछ चार्न रिसीवरके हाथमें -ट्रन्ट उपरैक्षी कोठीका कमेटीके हाथमें लिया जाने। शिखरजी चार्ज । बीमपंथी कोठीका प्रबन्ध हरलाछनीके मरनेके बाद बहुत खराब या । प्रवन्ध भारावार्ळीके हाथ था। बस्बई समाने बारबार चाहा कि आरावाछे एक कमेटी

करके प्रकट करें पर कुछ नहीं हुआ । उधर मेनेनर राघवणी और आरावालोंमें तकरार हो गई तब आरावालोंने अपना कब्जा किया, पर ४००००) पुर्लियाके कोर्टमें था उसको लेनेके लिये आरावाले और राघवजीके मुकदमा चला जिसमें १५ या २० हजार खर्च पड़े । अंतमें राघवजीको हुक्म मिला कि आरावालोंके ऊपर असल दाबा करो, परंतु दृश्य न होनेसे राघवनीने स्वालियरके भटारकको मुकद्दमा लड़नेके लिये खड़ा किया। उसने पुरलिया कोर्टमें दरखास्त दी कि हपे हमें मिलना चाहिये। यह गड़बड़ देखकर सभाकी ओरसे सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद व रामचंद नाया आकलुज आदि मधुवन गए तो मास्रुम किया कि आरावालोंने भट्टारकजीको २००००) देनेका लालच देकर अपने कब्जेमें कर लिया है तक बम्बईबाले मधुवन गए। कोठीके हिसाबकी बहियां आदि मंगीं सो मिली नहीं। कहा गया कि आरा गई हैं। ३ मनके ३२५ चांदीके उपकरण भी भारा गए हैं, उस समय देखा गया तो मंदिरोंमें घीके स्थानमें तेलके दीपक जलते थे। गरीब भिक्षुकोंके नामका पैसा कोठीके नौकर खा जाते थे। ऐसी दुर्ज्यवस्था देख वे तुर्त ग्वालियरके भट्टारक और आरेवालोंसे मिल्ले। ११ मनुष्योंकी कमेटी बनाई। नियमावली भी बनी तथा उसकी रिजण्ट्री करानेका निश्चय किया गया, परंतु आरावार्टोने बहाने कर दिये । इतनेमें पुना कि मट्टा-रकनी व आरेवाले छपरेमें कुछ सलाह कर रहे हैं। इस गड़बड़ीसे विस्वास उठ जानेपर बम्बईवार्टीने पुर्लिया कोर्टमें ४००००)के रक्षणार्थ अर्जी दे दी कि यह दिगम्बर नैन सम्प्रदायद्वारा नियमित कमेटीको मिलका चाहिये, इतनेमें आरावार्कोने महारकजीसे मिलकर एक इकरारनामा रजिष्टरी कराया जिसमें महारकजीको १२०००) नकद और ६००) चार्षिक कोठीसे देना निश्चय किया तथा उसमें यह भी लिखा था कि महारकजी, उनके चेले व अन्य किसी दि॰ जैनीको हमसे पूछनेका अधिकार नहीं है तथा उसी समय ३१००) नकद कोठीके भंडारसे दे भी दिये तथा पुरिष्ठया कोर्टमें दरखास्त दे दी कि ९ •००)भट्टारकजीको, शेष आरावाले प्रवन्धकर्ती शिल्रस्वंदको मिलना चाहिये। ऐसी २ कार्रवाइयोंसे तीर्थक्षेत्र कमेटीको निश्चय हो गया कि विना कोर्ट द्वारा हस्तक्षेप किये कोठीका प्रवन्ध सुधर नहीं सक्ता और न भंडार ही रक्षित रह सक्ता है। तब सेठ माणिकचंदजीने मुकदमा नं० १ सन् १९०३ दायर कर दिया। उस पर कोर्टने तुर्त एक रिसीवर साकरचंद देवचंद जैनी बोरसदनिवासीको नियत करके प्रबन्ध उसके हाथसे कराया। इसपर आरावाले घनड़ाए और नागपुरमें आकर सेठ गुलानशाहजी-के द्वारा बम्बईवालोंसे मुलहकर ली, तब केवल छपरावाले बाबू गुलाबचंदजी तथा ग्वालियरके भट्टारक ही मुद्दालय रहे । बम्बई वालोंने स्वयं जपरा जाकर समझानेका प्रयस्न किया, पर कुछ सफलता नहीं हुई। अंतमें रांचीके जुडिशल कमिशन मि० डक्टू. एच. विन्सेन्टने ता० २९ जून १९०५ को फैसला दिया कि पूराने सन प्रबन्धकर्ती इंटा कर नए नियत हों। ताः २२ दिसम्बरको कुछ नियम नियत करके ७ ट्रष्टी तय कर दिये, जिसकी अंग्रेजी नकलका उल्था नीचे प्रकार है-

उपरैकी कोठीके प्रबन्धके नियम । १—मंदिरमी इस अयदाद नीचे किसे जल ट्रियॉकी कमेटीके आधीन रहेंगी और मंदिर तथा तत्सम्बन्धी सर्व मकानादिकी कार्रवाई यह कमेटी करेंगी।

१--बाब् देवकुमार, आरा.

२--सेठ शिवनारायण, इजारीबाग.

३-- सेठ माणिकचंद हीराचंद, बम्बई.

४—सेठ हीराचंद नेमचंद, सोलापुर

५-वाबू नन्दिकशोरलाल, आरा.

६--सेठ चुन्नीलाल प्रेमानंद, बोरसद.

७-- वेठ नेमीसाइ, नागपुर.

२—ट्रिप्टियोंका यह कर्तव्य होगा कि वह इस बातको देखें कि मंदिरका लहना यथोचित रीति और विचारपूर्वक बसूल होता है, सर्व खर्च सावधानी (होशियारी) से किया जाता है, तथा जो कुछ खर्च किया जाता है वह धार्मिक कार्य्य तथा सर्वसाधारणके परोपकारके अर्थ ही है |

३—इस कमेटीको अधिकार रहेगा कि वह ट्रष्टके उचित प्रवन्थके लिये बहुत ही सन्तोषप्रद और आवश्यक रीतियां काम करनेके लिये परस्पर तय करले और ऐसे नियम अपने सभाके जस्सेके स्थान, समय और कार्य्य प्रणालीके बनावे कि जो आवश्यक माल्म हो—जब सब मेम्बरोंकी किसी प्रस्ताव पर राय न मिले ती वह प्रस्ताव पर राय न मिले ती पक्तोंको अधिकार रहेगा कि वह इस कोर्टमें कोई भी प्रार्थना उस प्रस्तावके विरुद्धमें कर सक्ते हैं।

४-जमा खर्चका हिराव प्रतिवर्ष किसी सुयोग्य परीक्षक (auditor) द्वारा जांचा जायगा और इस कोर्टमें भेजा जायगा और आवश्यकतानुसार ऐसी रीतिसे छपाकर प्रसिद्ध किया जायगा

जैसा कि यह कोर्ट कहेगी और कमेटीकी इच्छा होगी। यह कमेडीकी इच्छापर छोड़ा जाता है कि वह अपना हिसाब तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा अन्य किसी योग्य व्यक्तिले जंचवाए-इस विषयमें कमिटीके ऊपर भार देनेकी आवश्यकता नहीं है।

५--यदि कमेटीका कोई मेम्बर कालग्रस्त होवे व साथमें काम चलानेके अयोग्य हो तो शेष ट्रिट्योंका यह कर्तव्य है कि इस बातकी रिपोर्ट कोर्टको करें उस समय कोर्ट जैसी आजा उ-चित समझेगी देगी अथवा यदि आवश्यक होगी तो नया ट्रप्टी नियत कर देगी।

कमेटीको इतना अधिकार दिया जाता है कि किसी ट्रष्टीका स्थान खाली होनेपर वह नया ट्रष्टीका नाम पंश करें कोर्टको अधिकार है कि वह इस नामको स्वीकार करे व नाहीं कर दे।

६-इस कोर्टको यह अधिकार रहेगा कि वह किसी टच्टीकों विशेष कारणोंके आजाने पर उसको उचित सूचना देने तथा उ-सकी अच्छी तरह जांच किये जानेके पश्चात् उस ट्रष्टीको अधिक काम करनेको अयोग्य समझकर कमेटीले जुदा करदे--कोर्टको यह भी अधिकार है कि वह अपनी आज्ञा तथा कार्यप्रणालीके किसी अंशको न्युनाधिक (कमती बढ़ती) करे और बदल देवे तथा यह भी अधिकार है कि नं. ३ पैरा (वाक्य) के अनुसार प्रार्थना पाने पर कमेटीहारा स्वीकृत विषयोंको बदल सके व काट देवे।

यही विश्वास रखना चाहिये और यह आशा रहनी चाहिये कि कोर्ट कोई ऐसे ही खास मामलोंके सिवाय कार्यके बीचमें दखल नहीं देवेगी।

इस प्रबन्धक नियमावलीका उद्देश्य यही है कि मंदिरका प्रबन्ध एक योग्य और विश्वास योग्य कमेटीहारा होवे और कोर्टको जितना कम मौका दखल देनेका दिया जानै उतना ही अच्छा है। कोर्टने बीचमें दखल देनेकी अपनी शक्ति इसीलिय रक्लो है कि अनावश्यक गड़बड़ न होने पावें। और किसी ट्रष्टीकी ओ-रसे (कारण वशात् कोई आवश्यक्ता होने पर) कोई अयोग्य वर्ताव न हो।

७—किमेटी जब चोहे इस कोर्टसे किसी मामलेमें सलाइ तथा शिक्षा ले सक्ती है |

ता॰ २२ दिसम्बर १९०५.

दब्लू० एच० विन्सेन्ट-ऑफिशियल बुडिशल कमिशनर ।

इस आज्ञाके अनुसार तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सेटजी सिवनीसे सीधे गीरीड़ी आए, और और ट्रष्टियोंको भी बुलाया था सो हज़ारीबागसे सेठ शिवनारायण, भारासे बाकू देवकुमारजी और नंदिकिशोरलाल तथा बोरसदसे चुन्नीलाल प्रेमानंद आए। सेटनीने क्वीतलप्रसादजीके द्वारा एक नियमावलीका महौदा तय्यार कर रक्ला था। गीरी दीकी बीसपंथी धर्मशालामें मिती ज्येष्ठ वदी १ सं० १९६६ ता० ९ मई १९०६ को २॥ बजे दिनके ५ टृष्टि-बॉकी कमेटी हुई । सेठ शिवनारायणजी सभापति हुए । नियमावली पास की गई तथा मंत्री परील चुन्नीबाब प्रेमानंद नियत हुए। इनहीको कोठीका चार्ज देना तय हुआ। समापति बाबू देवकुमारजी, कोषाध्यक्ष सेठ माणिकचंदजी और निरीक्षक बावू नंदिकशोरलाल आरा नियत हुए। यह मी नियम हुआ कि किंसीको नया मंदिर ब भर्मशाला बनवानी हो व नई प्रतिमा विराजमान करनी हो तो कमे-टीसे आज्ञा छेवें । खर्चका वार्षिक बन्ट ९०००) का पास हुआ । इस प्रस्तावके अनुसार सेठ चुंचीलालने रिसीवरसे सर्व सामानका

चार्न ता० १० मईको लिया और द्वासामाई शिव-लालको कोठीका भैनेनर नियत किया। ज्येष्ठ क्दी १ तक सरवाया १०४६(१)॥ का था। इस समय ११८९६-) आसामियोंसे, २५९७६।-) यात्रियोंसे, ४९१९६॥।=) छोटा नागपुर वैंकमें, ३१००) महत्रक सस्येन्द्रभूषणके पास व ३८३६॥=) की रोकड़ थी। क्या २ झामान पाया इसका हाल रिपोर्ट नं० १ छपी १९०७ में, जो उपरेली कोठीसे प्राप्त होगी, दिया हुआ है।

उगरके कथनसे मालूप करेंगे कि बीसपंथी कोठीके उद्धारमें सेठ माणिक बंद जीको कितना परिश्रम करना पड़ा है, तथा वृथाके ममत्वसे कितना धर्मका द्रव्य बर्बाद होता है। इस कोठीके उद्धारके मुक्ट्रमेमें १००००)के अनुमान खर्च हुआ जो शिखरजीके भंडारको ही सहना पड़ा। उपरके फैसलेकी हाईकोर्टमें अपील की गई थी जितसे ४ ट्रूग्टी और बढ़ाए एए थे। सेठ माणिक बंद जीने चार्ज आते ही उद्योग करके पुराने मध्यके मंदिरजीका जीणीद्धार कराया जिसमें २००००) भंडारका खर्च किया तथा धर्मशाला आदि सब ठीक कराई। अब बीसपंथी कोठीका प्रबन्ध पहलेसे बहुत अच्छा हो गया है, यात्रियोंको हर तरहका आराम है।

किसी भी मंदिर या तीर्थके भंडारमें बहुत द्रव्य एकत्र न रखके उसको उपयोगी करमों में लगाते रहना चाहिये । स्थान दुरुतिके सिवाय शास्त्रमंडार बढ़ाने, शास्त्र लिखा कर बांटने, जिस तीर्थ या मंदिरके निर्माह या जीर्णोद्धारके लिये द्रव्यकी जरूरत हो वहां मदद करने, तीर्थपर संस्कृत वार्मिक विद्याका अभ्यास करानेमें द्रव्यको लगाते रहना चाहिये । जो भंडारसे लर्ज होता रहता है तो प्रवन्ध भी

अच्छा होता रहता है, केवल जमा ही करते जाना यह नीति अच्छी नहीं है। पाठकोंको यहांपर यह मी विचारना है कि सेठनी ५५ वर्षके करीब थे। एक पैर जमीनपर जनता न था, लकड़ीके सहारे चलते थे तौभी आलस्य बिलकुल न था। तीव. गर्मीके दिनोंमें मी आप धर्मकार्यके प्रबन्धके लिये बम्बईसे इतनी दूर आए थे।

बम्बई छौटकर चौपाटीके दीवानखानेमें एक रोज़ सेठजी, श्रीमती मगनबाई और शीतछप्रसादजी बैठे सूरतमें मानपत्र और हुए थे। स्त्रीशिक्षाकी वात चली तब यह ५०००)का दान। प्रश्न उठा कि सुरत नगरमें कोई जैन कन्याओंके लिये पढ़नेका साधन रूप कन्या-

शाला नहीं है सो यह बड़े अंचमेकी बात है। तब सेठजीने कहा कि वहांकी मंडलीका शिक्षाकी तरफ बहुत कम ध्यान है, तौभी मैं प्रयत्न करूंगा कि वहां कन्याशाला होने और यह मैं अपनी स्वर्ग प्राप्त पुत्री पुरलकुं वर के नामसे खुलवाऊंगा। कई दिन पीछे ही आप शीतलप्रसादजीको लेकर सुरत प्रधारे। जे. पी. का पद मिलनेके पीछे आप पहेल पहल ही सुरत प्रधारे थे इसिल्ये यहांके दिगम्बरियोंने परस्पर सम्मति करके निश्चय किया कि अपने नगरके बतनीको जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है उसका हमें मान करके एक मानपत्र अर्पण करना चाहिये।

ता० २९ मई १९०६ की रात्रिको नवापुराकी फूलवाड़ीमें सभा मरी। उस समय सेट मूलचंद किसनदासजी कापड़िया आदि कई क्काओंके व्याख्यान हुए। शीतलप्रसादणीने बालक व बाह्रि- काओंकी शिलापर अत्यन्त नोर दिया व सेटनी घर्मकायोंने कितने निरालमी व अपने आरामको बिल देनेवाले व राश्रिके ६ घंटे सिवाय सदा जागृत रह काम करनेवाले हैं ऐसा वर्णन किया। सेठ कालीदास वखतचंदने सुरतकी सर्व दिगम्बर जैन समाजकी तरफसे निम्नलिखित मानपत्र चंदनके कास्केटमें अर्पित किया:-

## नकल मानपत्र (सूरत)

श्रीमात दानवीर होठ माणिकचंद हीराचंद झवेरी जे॰ पी॰ मंबाई.

### महेरबान शाहेब,

आपनां व्यवहारिक तथा घार्मिक कामोनी योग्य कदर बुझीने नामदार कृप।ळु ब्रीटीश सरकार तरफथी आपने 'जस्टीस ऑफ घी पीस' (पुलेहना अमलदार) नी मानवंती पदवी आपवामां आवेली छे के जे पदवी हमारा धाग्वा प्रमाणे आखा हिंदुस्तानना दिगं**वरी जैनो**-मां कोईने नथी ते माटे अत्रेनी आवणी जैन दिगंबरी वांचे गोठ तरफथी अमारा खरा अंतःकरणथी आ मानपत्र आपवानी रजा लड्डए न्नीए.

आपे अत्रेना आपणा दांडीआ गच्छना देशासरनो जीणीद्वार कराव्यो छे तथा सार्वजनिकने माटे चंदावाड़ी नामनी मोटी अने सुंदर धर्मशाळा बनावी छे तथा जैन पाठशाळा आपना तरफयी चाले ले

मुंबई, कोल्हापुर, अपदावाद वीगेरे ठेकाणे आपे बोर्डिंग हा-उसो खोलीने ए नतावी आप्तुं छे के हालना समयमां जैन श्रीमंतीए पोताना पैलानो बहु माग विद्योलतिना काममांन वापरवो योग्य छे.

मुंबईमां खास करीने दिगंबरी यात्रालुओने उतरवातुं महान कष्ट दूर करवाने अने समस्त हिंदुओना आश्रयने माटे आपे स्वर्गपुरी समान हीराबाग नामनी धर्मशाळा सवा लाख रुपीआ खरचीने बनाबी छे.

आपनी योग्यता नोईने आप मुंबई प्रांतिक सभा, दक्षिण महाराष्ट्र नैन सभा अनं स्याद्वाद पाठशाळानी प्रबंधकारिणी सभाना प्रमुख तथा भारतवर्षीय दि॰ नैन तीर्थक्षेत्र कमिटिना महामंत्री निमायहा छो.

आप धर्मोपदेशनी वृद्धि करवा माट आपना तन मन अने धनथी हमेशां निमन्न रहो छो तेमन जैनीओना दरेक मेळामां आप भागेबान भाग लईने सरवे ठेकाण एक संप करीने विद्यानो फेलाबो करो छो.

आपनी आवी उदारता जोईने भारतवर्षीय दिगंबर जैन महा सभाए आपने गया डिसेंबर मासना सहारनपुरना अधिवेशनमां प्रमुख नीमीने उचित पात्रनो उचित सस्कार कर्यो हतो.

आपे आ सित्राय नीनां अनेक धर्म वृद्धिना कार्यो करेलां छे जेनी प्रशंसा करवाने हमो शक्तिवान नथी तोषणे उपरना वाक्योमां हमारा खरा हर्षने प्रकट करीए छीए.

हमो नामदार कृपाळु ब्रिटिश सरकारनो हमारा खरा अंतःक-रणधी आपने आ पदनी आपेछी छे ते माटे उपकार मानीए छीए के सरकारे आपना सारा गुणोनी योग्य कदर बुझी छे. छेबटे हमो हमारा अंत:करणयी एवं इच्छीए छीए के आप बा पदवी छांबो बखत मोगवी एथी बचारे सारी पदवीओ मेळवबाने तथा भारतवर्षनी सर्वे जैन नातिनो तथा बीना भाईओनो उपकार करवाने भाग्यशाळी थाओ.

सूरत ता. २९ में सने १९०इ

ली॰

# **कालीदास वस्ततचंद** सुरतना जैन दिगंबरी पांच गोठना होउ

उस समय सेठजीने अपनी तुच्छता प्रगट करते हुए कहा कि नवापुरामें मेरी पुत्री फुल्कुंबरके नामसे कन्याशाला खुढ़े उसके लिये मैं ५०००) रु० अलग करता हूं। उस समय समाने आपको बहुत २ धन्यबाद दिया।

ता० १९ जुलाई १९०५ को हीराचंद्र गुमाननी जैन बोर्डिंगके

छ।त्रोंने कार्ड बंटबाकर एक भव्य मिलावड़ा

बस्बई बोर्डिंगमें सभा सेठ माणिक बंदनीके सम्मानार्थ महेश्री

ब सेठजीको लखमशी हीरजी बी० ए० एल एल० बी०

मानपत्र । के सभापितत्वमें किया और कई व्याख्यानों में

छात्रोंने व सभापितने वे अपूर्व लाम वर्णन

किये जो सेठजी द्वारा स्थापित बोर्डिंगसे दिगम्बर, स्वेताम्बर,
स्थानकवासी सर्व ही जैन छात्रोंको मिलते हैं और एक बहुत सुन्दर

छपा हुआ मानपत्र बांदीके कास्केटमें अपंग किया गया निपकी

नकल पृष्ठ ४४२ पर दी गई है।

अजमेरके प्रसिद्ध सेठ नेमीचंदजी साहन नम्बई पधारे । आपकी नम्बईमें बहुत ऊंबी और प्रतिष्ठित दूकान हीरावागमें सभा और 'जवारमल मूलचंद ' के नामसे हैं । आपको स्याद्वाद पाठशाला शास्त्रोंका ज्ञान है तथा धार्मिक नित्य काश्चीके लिये नियमोंके पालनेमें इतने सावधान हैं कि यदि १५०००)का शरीर अस्वस्थ न हो तो आप प्रतिदिन श्री संकला । जिनंनद्रकी अष्ट द्रज्यसे पूजा करके व स्वाध्याय करके भोजन करते हैं । यदि परदेशमें भी

जावें और ९, १० मी बन जावें तौ भी वहां मंदिरजीमें पृतन स्वाध्याय करके भोजन करते हैं तथा आप हर एककी जो मिले उससे स्वाख्याय करनेके छिये पूछते हैं। व्याख्यान देनेका भी आपको अभ्यास है । हीराबाग धर्मशालाके लेक्बर हालमें ता० १९ जुलाईकी रात्रिको नोटिप बांटकर परोपकारी मि॰ ए० बी. ल्हे एम॰ ए० के सभाषतित्वमें सभा की गईं, उसमें सेठ नेमीचंदजी सोनीने 'विद्योत्त-ति'पर एक अति प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा संस्कृत विद्याकी नैनियोंमें आवश्यका बताई और नो स्याद्वाद पाठशाला ता० ११ जून १९०५ को काशीमें स्थापित हुई थी उसकी अति प्रशंसा की व काशी ही पंडितोंके पैदा करनेका स्थान है ऐसा कहा और सेठ माणिकचंदजीको इसके स्थापनके लिये धन्यवाद दिया तथा कहा कि उसको चिरस्थाई कर देना चाहिये जिसमें वह सदाको चलती रहे । आपके ज्याख्यानके कुछ वाक्य उपयोगी जानकर नीचे दिये जाते हैं-"यहां तक हम वे खबर हैं कि हम छोग अपने बाछकोंको धर्मविद्या त-कका ज्ञान नहीं कराते हैं इसी कारण देखने में आता है कि छोग न माद

सहित जिनेन्द्रका द्शिन पूजन करते हैं न शास्त्रस्वाध्यायमें मन छ-गाते हैं। छैकिक विद्याकी भी प्राप्ति नहीं करते, जिसमें कोई यंत्र आदि निर्मापण कर व व्यापारको विदेशों में बढाकार लक्षोंका धन एकत्र करें व सर्कारी बड़े २ ओहदे प्राप्त करें जिसमें १०००) व ८००) मासिककी प्राप्ति हो । दान भी हम छोग यथोचित नहीं करते । मेले. प्रतिष्ठाओं में व अपने प्रत्रप्रत्रियों के विवाहों में लाखों हज़ारों खर्च करना ठीक समझते हैं किन्त आवश्यकीय आहार ब विद्यादानमें नहीं । हमारी जैन जातिमें पुराने विद्वान भीरे २ अस्त होते नाते हैं, परंतु हम नए विद्वानोंके उत्पन्न करनेका दिल लगाकर कुछ प्रयत्न नहीं करते । काशीमें यद्यपि स्याद्वाद पाठशाला नियत हो गई है तथापि विना घोँव्य फंडके बालुकी भीतिके। समान है यदि एक मेला करनेकी भांति कोई माई इस पाठशालाको चिरस्थाई कर दं तो कितनी धर्मकी उन्नति हो। छोग पुनर्विवाह करनेके पक्षको पकड़नेको दौड़ते हैं, पर यह पक्ष नहीं करते कि हम अपनी कन्याओं का विवाह १२ वर्षसे कप उन्नमं न करेंगे, न हम लोग अपनी कन्याओंको पढाते हैं। अफसोसकी बात है, क्या हम छोग श्री आदिनाथ भगवानसे भी बढ़ गए ? क्या उनको भालूप नहीं कि श्री आदिनायनीने अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरीको अपने आप पढ़ाया था । सट्विद्या पढनेसे कटापि हानि नहीं हो सक्ती। "

सेठ माणिक चंदजीने सेठ साहबके व्याख्यानकी बहुत प्रश्नंसा की तथा निवेदन किया कि यदि हमारे सेठजी बाहें तो आज यह जिस्त्याई हो जावे। समा सानन्द समाप्त हुई।शत्रिको ही सेठजीने

श्रीतलश्रसादनीके साथ सम्मति की कि यदि एक २ हजार रुपया लोन देवें तो यह पाठशाला सहजमें चिरस्थाई हो जावे । राय उह-री कि कल सेठजीके पास चलना चाहिये और कहना चाहिये कि एक हनार आप देवें तथा १०००) मैं लिखनेको तय्यार हूं। दूसरे दिन दोपहरको भीतलप्रसादनीके साथ सेठ माणिकचंदनी सेठनीकी दुकाक्पर गए और कहा कि मैं एक हजार देता हूं आप भी एक हजार देवें। तब सेठ नेमीचंदजीने कहा कि जबतक आप १९ नाम हजार २ वाले न लिखना लेंगे तनतक मैं रुपया न दंगा। सेंडजीने खीकार किया तथा तय हुआ कि पाटशालामें इस सम्बन्धी एक पाटिया टांगा नावे निसमें ऐसे दातारोंके नाम, सुनहरी अक्तरोंमें क्षिले नार्वे । उसी समय एक कागजपर मसौदा छिला गया तथा शर्त १९०००) की डाली गई कि यदि ये न मेरं तो यह चंदा रइ होगा । प्रथम ही सेठ नेमीचंदने जवारमल मूलचंद (अपनी दुकान)के नामसे १०००) लिखे, फिर दूसरा नाम अपने पूज्य पिता का सेटनीने छिखा, उसी दिनसे सेठनीको फिकर हुई कि शीघ्र १५०००) पूरे करने चाहिये।

बम्बईके प्रसिद्ध कोठीवालोंके पास नई वार जाकर व काशी, कलक्ष्मे, भातकुलीमें चूमकर सेठजीने ता. ३१ दिसम्बर १९०६के लगभग १५ नाम पूरे करलिये। वह नामावली इस मांति है:—

१-सेठ जवारमञ् मूलचंद, बम्बई	१०००)
२ सेंड हीराचंद गुमानजी ,,	१०००)
३-सेठ तिस्रोक्षंद हुक्मचंद् ॥	(000)

महती जातिसमा म्यम भाग ।	[ A.a.
४—सेठ गांधी बाङ्बंद उगरबंद ,,	(000)
५-सेट हरमुखराय अमोलकचंद "	<b>१०००</b> )
६ –गांधी रावजी साकलचंद "	(000)
७सवाई सिंहई रिखमसाह गुलाबसाह, नागपुर	( o o o )
८◆बाबू देवकुमारजी, आरा	१०००)
९ –हाहा रूपचंद रईस, सहारनपुर	2000)
१०-लाला कुंजीलाल बनारसीदास, बनारस	8000)
११—हाला छेदीलालनी ,,	(000)
१२ - लाला हनूमानदास बाबूनंदनजी "	3,000)
१३ - लाला खड़गसैन उद्धराज "	१०००)
१४-बाबू धन्नूलाल एटर्नी, कलकत्ता	१०० <b>०)</b>
१५जौंहरी माणिकचंद हीराचंद जे. पी० बम्बई	१०००)
	14000)

यह फंड बढ़ता रहा यहां तक कि ता. ३१ जुलाई १९१५ तककी रिपोर्टमें रु. २३५००) का हो गया था।

सेठजीका स्वर्गवास हो गया नहीं तो वे इसे ॥) सैकड़ेके व्याजसे ६००) मासिक वर्चके योग्य १। छालका फंड कर देते, परंदु उनके जीवनचरित्रको पड़कर उदारचित्त धनाड़चोंका कर्तव्य है कि इसके फंडको शीघ्र पूरा करा देवें ताकि यह संस्था अमर रहकर सेठ माणिकचंदजीकी स्पृतिको कायम रखनेके सिवाय सेठ नेमीचंदजीकी इच्छानुसार संस्कृत विद्वानोंको उत्पन्न करती रहे।

सेंड माणिक चंदजीने एक दिन शीतलप्रसादजीसे कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटीका मैं महामंत्री हूं तथा वह हीराबागमें तीर्थक्षेत्र कमेटी स्वतंत्रतासे काम करनेको महासंभा कमेटीका दफतर द्वारा स्थापित हुई है पर उसका कोई दफतर कायदेसे नहीं है। उसका काम शिथिलताके होना। साथ बम्बई प्रान्तिक सभाके द्वारा ही चलता है। उसीके द्वारा बीसपंथी कोडी शिखर जीका मुकद्दमा किया गया जिपमें करीन (०००) का कर्जी नम्बई प्रान्तिक सभाका है। पं॰ गोपालदास बरौया महामंत्री प्रान्तिक समाके हिसाबको इसी कारण न पास करते हैं म प्रसिद्ध करते हैं। के कहते हैं कि इम रुपयेको चुकाना चाहिये; सो यदि तुम थोड़ा मरिश्रम हो और दफ्तरकी सार सम्हाह रक्खो तो दफ्तर हीराबागमें ्खोला जाय और मैनेजर नियत करके कायदेके साथ सब काम तीर्थोंके टद्धारका कराया जाय तथा इस रकमका भी जमा खर्च होकर बम्बई प्रान्तिक सभाका हिसाब पास हो तथा हमारी द्कान पर जो तीर्थोंके लेनदेनके बहुतसे खाते हैं वे भी सब यहीं बदल दिये जावें। शीतलप्रसादने सेटजीकी सम्मतिको बहुत ही पसंद की और यथासंभव मदद देनेके लिये कहा, तब सेठ माणिक बदनीने हीरा-नागके दुक्तरवाले हालमें काय्देके साथ ताः ? अगस्त १९०६ को दफ्तर खोलनेका महर्री किया तथा बाबू बुधमल पाटनी जो संस्कृत और इंग्रेजीके जानकार धर्मात्मा भाई ये मैनेजर नियत किया तया सर्व समासदों, तीर्यक्षेत्रके प्रश्नकर्ताओं व अन्य महाज्ञयोंको

नैनमजट, नैनमित्र तथा जिनविनयमें सुचना प्रगट कर दी कि दफ्तर खुला है इस छिये तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी सर्व पन्न व्यवहार व रुपया आदि नीचे लिखे पते पर मजना चाहिये—माणिकचंद हीराजे. पी., महामंत्री, मा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग धर्मशाला, गिरगांव—बम्बई।

उज्जैनकी विमनप्रतिष्ठामें सेठ माणिकचंदजीसे नागड प्रान्तके बहुतसे जैनी भाई मिले ये और निवेदन बागड़ पान्तका दौरा किया था कि हमारे प्रान्तमें उपदेश करावैं, व सेटजीके बचनकी घोर अंधकार है। तबसे सेटजीको ध्यान था कि किसीको भिजवाया जाय। इन दिनोंमें सत्यता । महा सभामें कोई योग्य उपदेशक न था मालवा प्रान्तिक सभाके उपदेशक विभागके मंत्री लाला तव हज़ारीलाल नीमचसे सेटनीका पत्र व्यवहार चल रहाथा कि आप अपने यहांके उपदेशकको अवश्य भेर्ने । मंत्री महाशयने स्वीकार करके मिती आसीन सुदी ११ सं. १९६३से पं० कस्तूर-चंदनी उपदेशकको दाहोद, लेमडी, नालह, रामपुरसे उदयपुर स्टे-शन तक ५० गामोंमें घूमनेका प्रोग्राम देकर भेन दिया निसकी सुचना जैन गजुट अंक ५१ ता० १ नवम्बर ०६ में सुद्रित दीं। वास्तवमें जो बड़े पुरुष होते हैं उनको अपने बचनोंका बड़ा भारी ध्यान रहता है। उपदेशकजी दौरे पर खाना होगए हैं ऐसा नानकर वर्त सेठजीने १००) उपदेशक भंडारकी सहायदार्थ नीमच मेन दिये।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका वार्षिक अधिवेदान ता० ३० सितम्बर १९०६ को अमदाबाद बोर्डिंगमें बड़े समारोहके साथ हुआ । इसमें सेठ मा-णिकचंदजी शीतलप्रसादजीके साथ गए। सभा । ५०० गृहस्थ बाहरसे आए थे। समापतिका आसन मि॰ चित्रुपाई माधवलालने प्रहण किया। आपने शिक्षा सम्बन्धी मनोहर मावण दिया था । मियागांवके भगवानदास हरजी-बनदासने १०००) व धनजीशाह मोतीचंद करमसदने १५१) मदद दी । आमोदवाले सेठ हरजीवन रायचंद भी आए थे । सेठनीको गुनरातके भाइयोंकी स्थिति देखकर बहुत दया भाती थी और . इसके सुधारनेके लिये इनकी समझमें एक गुजराती मासिक-पत्र निकालनेकी लास आवश्यकता दीलती थी, जिसके लिये सम्पादकी करने योग्य आपने सेठ हरजीवन रायचन्दको तजनीज किया था । हरएक वार्षिक सभामें सेटजी इनको प्रेरणा करते थे । इस वर्ष विशेष ज़ोर देकर कहा। साथमें यह भी कह दिया कि आप एक योग्य सवैतनिक कारकुनको रावकर उससे काम होर्वे जिसका बतन मैं अपनी तरफसे देनेको तय्यार हुं। इस बातको सुनकर हरनीबन रायचंदने सेटजीके आश्चर्यकारक नाति प्रेमकी आति प्रशंसा की और यह कहा कि मैं यथाशक्ति इस कामके करनेका यत्न कहंगा। पत्रका नाम दिसम्बर जैन रखना तनबीन हुआ। यद्यपि सेठ हरजीवन रायचंद इस कामके योग्य थे पर प्राममें रहने और बहु-धन्धी होनेके कारण समय न निकाल सके और वह दिगम्बर जैन एक वर्ष तक फिर भी न निकछा !

सेठ हरनीवन रायचंद छिलते हैं कि सेठमीको अपने धनवान-पनेका नरा भी मान न था । योजन और सेठनीका सरस्र शयन भी गुजरातके आनेवाले सर्व भाइयोंके स्वभाव । साथ एक पंक्तिमें ही करते थे, किसी भी तरहका असमान भाव अथवा मोटापन या

जुदाईकी ज़रा भी भावना किसीके मनमें नहीं आने देते थे। बोर्डि-गंक कायदा कानूनकी चर्चा बहुत ही शांतिपूर्वक तथा न्यायसे करते थे। हरएक ग्रामके मुख्य गृहस्थीकी मुलाकात छेकर वहांकी वस्ती, शिक्षा, मंदिरकी स्थिति आदि संबंधी बहुतमा हाल मालूम कर उनको योग्य सम्मति व मदद देते थे। शीतलग्रसादजीने इस वर्ष सेठजीमें यह बात प्रत्यक्ष देखी और इनके सादे मिज़ाज़, सादे ग्वानपान, रहनसहनको व सबके साथ मिलनसारी देखकर बड़ा ही हर्ष माना।

तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरके खुलते ही व मुक्हमेंकी रक्षमका
जमालर्च होते ही बम्बई प्रान्तिक सभाका
श्री गजपंथाजी पर हिसाब व रिपोर्ट तय्यार हो गई तब परोपबम्बई प्रान्तिक कारी सभासदोंने श्री गजपंथाजी पर अधिवेशन
सभा करना निश्चय किया । इसके प्रबन्धार्थ हीराबागमें एक सभा हुई जिसके सभापति सेठ
माणिकचंदजी हुए । अधिवेशनके खर्चके लिये ११००) का
बजट हुआ व २५ महाशयोंकी स्वागत कमिटी बनी । सभापति
सेठ चुन्नीलाल अवेरबंद, मंत्री दोशी पानाचंद रामचंद, सहायक
मंत्री लल्लुमाई प्रेमानंददास तथा पंडित लालाराम, और कोषाध्यक्षः
सेठ मुस्तानंदनी हुए ।

वर्षातके मौसममें सेउनी बम्बई ही में उहरे और तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें अपने दिनका बहुतसा समय देने लगे। मादो मासमें आपने शीतलप्रसादनीके द्वारा गुनराती दि० जैन मंदिरमें सबेरे दशाध्याय सुत्रनीके अर्थ बँचवाये तथा राजिको शास्त्रीद्वारा अनेक प्रकारका उपदेश कराया।

बम्बईमें सेठजीका सम्मान सर्व ही करते थे। इवेताम्बरी
विद्रद मंडली भी बड़े आदरसे देखती थी।
मांगरोल जैन सभाभें यहां श्वेताम्बर जैनियोंकी एक मांगरोल जैन
सेठजी सभापति। सभा है उसका एक अधिवेशन ता. १०
सितम्बर०६के रोज हुआ और सेठमाणिकचंद
हीराचंद जे. पी. को सभापतिका आसन दिया। इस समामें अहमदाबाद निवासी मि० नगीनदाम पुरूषोत्तमदास संघवीने ' आहारशुद्धि १ पर एक मनोहर व्याख्यान दिण था।

सेठ माणिकचंदजीकी दूसरी सुमराज फलटनमें थी इमिलिये फलटन जानेका बहुत अवसर पड़ता था। फलटन सरकारसे मि-वहांके राजासे भी आपकी मित्रता ही मी अता व कन्याविकय थी। सेठजी मकान बनानेके काममें ऐसे निषेध। अनुभवी थे कि अच्छे इंजीनियर जिस बातको नहीं सोच सक्ते वह इनके ध्यानमें आती थी। सेठजीन बोर्डिंग व हीरावाग धर्मशालाके सिवाय बम्बईमें कई बड़े २ आलीशान मकान अपनी बुद्धिसे बनवाए थे जो आज तक मौजूद हैं। चौषाटीका रत्नाकर ५ लेस समुद्रकी सुन्दर पदन छेनेके लिये बम्बईमें एक अनुषम महल है। महाराज फलटन एक दफे

इसी बंगले में ठहरे थे। आपको बहुत ही अराम मिला तथ हीसे मिन्नता हो गई थी। मकान बनवाने के काममें सर्कार फलटन आपसे सम्मति लेती थी व आपके द्वारा बम्बईसे सामान भी मंग-वाती थी। इसी वर्षके मादो मासमें सेठजीका गमन फलटन हुआ तब वहां एक जैनियोंकी सभामें आपने कन्याविकय बंद करनेका ठहराव पास कराया। इसको अमलमें लाने के लिये फलटन दे तीन मुखियोंने वचन दिया। इसकी खटण्ट करने के लिये सेठजीन रु० २५) समाको भेट भी किये।

बरार और मध्य प्रदेश दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा भी कई वर्षसे भीर २ कुछ २ मुधार बरारकी ओर सेंडजी बरार पा० स- कर रही थी जिसके मुख्य कार्यकर्ता रा. रा. भाके सभापति और जयकुमार देवीदास चौरे बी. ए. बी. एछ. वकील अकोला थे। इसका चौथा वार्षि-भ्रमण। कोत्सव मिती कार्तिक बदी ५-६ ता० ६ व ७ नवम्बर १९०६ को भानकुली अतिशव क्षेत्रमें होने-वाला था। यह क्षेत्र अमरावती नगरके पश्चिम १० मीलके अनुमान है। रास्ता बहुत दुश फूटा खराब है। बैल गाड़ी २ घंटेमें नाती है। यहां चतुर्थ कालकी अति मनोज्ञ श्री आदीनाथ स्वामी-की पद्मासन दिगंबर जैन मूर्ति है। आसपास इसकी बहुत महिमा है। इसके लिये सेट माणिकचंदजीकी समापति होनेकी स्वीकारता ले ली गई थी । बम्बईसे सेठ माणिकचंदनी अपनी प्रप्रती मगनवाई नीके साथ तथा शोछापुरके सेठ हीराचद नेमचन्दके पुत्र बाल-चंद तथा बाबू श्रीतळ्ञसादके साथ अवरावती गए । बहांके माहवाँने स्टेशनपर बहुत ही सस्कारके साथ स्कागत किया। यहांसे भातकुरी गए। अमरावतीसे देशमक गणेश कुष्ण स्वापर्ड बी० ए० एड० एड० बी० व डाक्टर मुंजे व रा० रा० दुरानी वकील भी समाद्वारा निमंत्रित हो भातकुली पधारे और सेठजीके निकट ही उहरे। खापर्ड महाशय बड़े ही निरिभमानी वपरोपकारी हैं। जैनि-चौंको उपदेश करनेके लिये आपने इतनी दूर आनेका महान कष्ट उठाया था। अधिवेशनमें शरीक होनेके लिये नागपुरसे गुलाबसाहजी, एलिचपुरसे सेठ नत्थुसाह, अंजनगांवसे सिंहई एसुसिंहई सोनासिंहई, वारोलासे सेठ पीताम्बरदास आदि ५००० स्त्री पुरुष एकत्र हुए थे।

कार्तिक वदी ५ वीर सं० २४३३ ता० ६ नवम्बर १९०६ को समाका प्रथम अधिवेशन हुआ। माननीय खापढें आदि सर्व उपस्थित हुए। समा खवाखव मतुष्योंसे मरी हुई थी। सेटनीने समापितिका आसन एक मारी आनन्द ध्वनिके मध्य प्रहण करके अपना छपा हुआ भाषण खयं खड़े हो बड़ी ही गंभीरता और शांतिसे पढ़ा। इसमें की कुछ उपयोगी बातें यहां दी जाती हैं—"जैन जाति चोर निद्रामें सोई पड़ी है उसके उठानेका प्रयत्न समा ही है। बम्बई प्रान्तिक समाने इसीके द्वारा बहुत कुछ उन्नतिमें कदम बढ़ाया है तथा इस स्वार समाके मुख्य संस्थापक सेठ गुलावर्सिंह जीने ६००००) अख्या निकाछकर. एक कमिटीके आधीन कर दिया है जिसके व्यानसे ६२॥ टका तीथेंकि सुधार व ३७॥ टका विद्योत्तेननमें सक्ष्में हो ऐना नियम किया है। नागपुरमें जैन पाठशाला है तथा बोर्डिंग भी खुला है। समाको शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान देना व्यान्हिये। नैसे बिना महके मुक्त नहीं ठहर सक्ते ऐसे बिना शिक्षा-

के समामकी उन्नति नहीं हो सक्ती है । इसमें सर्वसे पूर्व बालकों-को धर्म ही की शिक्षा देनी चाहिये जिससे उनको यह बिदित हो जाय कि उनको बाल्यावस्थामें ब्रह्माचर्य पाछ विद्यास्थास करना योग्य है। उच्च शिल्प और न्यापारकी योग्यता प्राप्त करानेके छिये हमको बड़े २ नगरों में जैन बोर्डिंग खोलने योग्य है। जब छात्र उच शिल्पादि जान हैं तब उनसे कारखाने खुलवार्वे व न्यापारमें सहायता देवें । जबतक हमारे नित्य कामकी दस्तुएं जैसे कपड़ा, दियासिलाई, छाता आदिक यहां न बनेंगे तबतक हमारे धनकी उन्नति नहीं हो मक्ती । स्त्री शिक्षाकी आवश्यका बताते हुए कहा कि बालकका मन एक प्रकारकी पृथ्वी है जिसमें माता ही उत्तम बीन डालकर कृपकका कार्य कर सकती है। स्त्रीशिक्षांके उत्तेजनार्थ हमको अपने शास्त्रीमेंसे प्राचीन पढ़ी हुई गृहस्य स्त्रियोंके जीवनचरित्र जमाकर पुस्तकाकार प्रगट करना चाहिये। व्यर्थव्यय ब कुरीतिको दूर करनेकी प्रेरणा करके तीर्थक्षेत्रोंके विषयमें कहा कि नये मंदिर बनानेकी अपेक्षा प्राचीनका जीर्णोद्धार करना चाहिये तथा प्रबन्धकर्ताओंको उचित है कि वार्षिक हिसाब प्रगट किया करें। प्राचीन नैन ग्रंथोंके उद्घार, अनाथोंकी रक्षा पर कहके अहि-साके प्रचारपर विशेष जोर दिया । मांसाहार निषेधक प्रस्तकें बांटना चाहिये। आपने कहा कि इंग्रेजीमें good news for the afflicted नामकी पुस्तक है जिसमें मांसाहार विरुद्ध प्रमाण और दृष्टान्त है उसका उर्दू में उल्था करानेके लिये अलीगढ़ कालिनके मुसल्मान छात्रोंको इनाम नियत किया था। ११ ने तर्जुमा लिखा जिसमें सर्वोत्तम ३ को ७९) का इनाम दिया अथा था। सर्वोत्तम उल्या एक बी॰ ए॰ का था जिससे प्रगट होता था कि उसने मांस खाना त्यागा होगा। उसके उर्दू तर्जुमेको इसलामिया हाईस्कूल कम्बईके सेकेटरीको दिखाया। उनके अनुरोधसे १००० उर्दू नकलें ल्रावाई। उस सेकेटरीने उस उर्दू तर्जुमेको पढ़कर मुझसे कहा कि मेरी तिबबत मांस खानसे हट गई है और में धीरे २ छोड़ता जाता हूं। फिर सेठजीन कहा कि एकताके लिये समाएं स्थापित करना चाहिये। खापडें और डा० मुंजेके स्वदेशी वस्तुओंके प्रचारपर बहुत ही असरकारक ज्याम्यान हुए। ता० ७ नवस्वरको महिला परिषद हुई, २४०० स्त्रियां होगी। सौ० गुंजाबाई प्रमुख हुई। श्रीमती मगनबाईने स्त्रियोंके कर्तव्यपर बहुत ही असरकारक भाषण दिया। सौ० सीताबाई आदिने भी कहा। मगनबाईजीने पढ़ी हुई स्त्रियोंको जेन पुम्तकें बांटी। बहुतसे प्रस्ताव पास हुए उनमें धर्मादेका सदुपयोगके प्रस्तावपर सेट माणिकचंदजीने बहुत ज़ोर दिया। कारंजा, अमरावती, अंजनगांव आदिकी पाठशालाओंके छात्रोंकी परीक्षा बाबू शितलप्रसाद आदिने ली।

सेट माणिकचंद्रजीके पाम मिलने प्रायः हरएक गांवके मुखिया लोग आते थे । उनको सेटनी शिक्षा प्रचार, कुरीति निवारणके उपदेश देनमें अपना समय लगाते थे । आपने यहां भी स्याद्वाद पाठशालाके चिरस्थायी करनेके खयालको नहीं मुला था। सेट गुला-बमाहजीको समझाकर एक नाम भराया।

भातकुलीसे अमरावती होकर आप अपनी मंडली सहित श्री

मुक्तागिर जीकी यात्राको पधारे । उस
श्री मुक्तागिर जीकी वक्त ४० मीलका बैलगाड़ीका रास्ता था ।

यात्रा । एल्लिचप्र होते हुए तीर्थपर पहुंचे । यह तीर्थ

सिद्धक्षेत्र है । यहांसे २॥ करोड़ मुनि मोक्ष

पशरे हैं । पहाड़पर ४८ दि॰ जिनमंदिरती हैं जिनमें प्रतिबिम्ब व चरणपादुकाएं हैं। इनमें कई बहुत प्राचीन हैं। यह पर्वत बडा रमणीक है। यहां पहाड़से पानीका झरना बड़ी दूरसे सदा गिरता है जिससे अपूर्व शोभा रहती है । तलहटीमें १ मंदिर व धर्मशाला है । मुनीम बापूजी टक्ष्मण आगरकर मिले । इन्होंने बहुत अच्छी तरह उहराया । इस तीर्थकी यात्रासे सर्वको परमानन्द हुआ। बेतुलके एकप्ट्रा अ० कमिक्षर रायबहादुर बावू हीरालाल बी०ए०के पास इस तीर्थ सम्बन्धी एक ताम्रपट है उससे राजा श्रेणिक (बिम्बसार) व उसके पिता उपश्रेणिकका इस पर्वतसे सम्बन्ध मालूम पहता है। यह श्रेणिक २॥ हजार वर्ष हुए श्रीमहावीर स्वामीके उपदेशका र्मुँक्य श्रोताथा। यहां पर निकट ही जो एखिचपुर नगर **है वह** एक नामके जैनी राजाके नामसे प्रसिद्ध हुआ है जो संवत् १११५ में हुआ था (देखो इम्पीरियल गैज़ेटियर आफ इंडिया वाल्यूब १२) इस पर्वतपर केशरकी वृष्टि कमी २ होती है यह बात सर्वे प्रसिद्ध है। युरुपियन लोग इस तीर्थके द्शीनको आते हैं। उनका यह श्रद्धान है कि जो एक बार भी इस पर्वतका दर्शन कर जाता है उसकी तरस्त्री होती है और धन भी प्राप्त होता है। ता० २४ नवम्बर १९०९ को यहां डिप्टी कमिश्नर दोवारा आए थे तत्र आपने रिमार्क लिखा है-

"I was much struck with the cleanliness of the plain and arrangement made for visitors" अर्थात् में इस क्षेत्रकी निर्मञ्तासे और यात्रियोंके लिये योग्य प्रक्थिसे बहुत प्रसन्न हुआ।

यहां पर ता॰ २७-१२-१९०९ को एव० कैम्पल, बिस

कैरनेन्डर लूसी बरनट ऐसी इंग्रेजोंकी एक पार्टी आई थी उसने बहुन अच्छा रिमार्क किया है—

This charming place due to the charity and munificence of the Jain Community, so full of beauty and interest perched in such commanding surroundings wrought upon us all sorts of spell. One would well believe that the green moss-grown water fall was fashioned, as we were told by our guide, by the fairies. The images of the Gods, their expressive countenances mysterious and brooding, with foreheads that soom to hide within themselves great thoughts withdrawn and unspeakable, the courtyards, the temples and all their beauty, brought great enjoyment to our party.

(Sd). H. CAMPBELL
MISS KIRNANDER
LUCY BURNETT

भावार्थ—हम लोग इम महा रमणीक स्थानको देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। इस स्थानकी इतनी सुन्दरता, जैन समानकी उदारता और दान परायणताके निमित्तसे ही हुई है। जैन देवोंकी मृतियां उनके प्रसन्न सुन्व तथा मस्तक जो कि मानो अकथनीय गंभीर विचारोंको अपन आपमें धार मझ किये हैं। यहांका मैदान, मंदिर और इनकी मनोहरताने हम लोगोंको बहुत ही आनन्द प्रदान किया। इस तीर्थके व्यवस्थापक तानासा राजानी नित्कर एलिक्युर हैं। सेठनीन वहांकी तुटियें मालूम की कि कुएकी जल्दत है व २ मील सड़क बहुत ही खराब है सो एलिचपुर आकर लालासा मोतीसाके वहां उहरे और इन दो कार्मोंके लिये कहा तथा हिसाबादि तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें बराबर मेजे जानेकी प्रेरणा की।

यहांसे अमरावती आकर नागपुर आए। सेठ गुलाबसाह नीके वहां १ दिन ठहरे। उनको ५००००) का ट्रष्ट रिजिप्टरी करनेके लिये मसौदा लिखाया। वहांसे रामटेक यात्रा करने गए।

नागपुरसे २४ मील रामटेक है। एक छोटी लाइन गई है। यहां श्री शांतिनाथ स्वामीकी दिगम्बर जैन रामटेककी यात्रा। खड़गासन मूर्ति १९ फुट ऊंबी अतिशय मनोज्ञ है। चौथं कालकी मालूम होती है। यहांकी यात्रा करके सर्व लोग बम्बई आए।

जैन नातिमें कितना अज्ञान, व्यर्थ व्यय व कुरीतिका प्रचार है इस बातको अपनी इघर उधरकी यात्रासे सेंड माणिकचंद्रजी- व चौपाठीपर दर्शन करने आनेवाले भिन्न २ की धर्मप्रचारकी देशोंके यात्रियोंसे मालूम करके तथा यह चिता। मी शिकायत मालूम करके किकोई उपदेशक आता जाता नहीं है तथा उपदेशकोंका दि० जैन समानमें अभाव देखकर इसकी पृति कैसे हो इसका उपाय सोचते रहते व शीतलप्रसादनीस पूछतं रहते थे। शीतलप्रसादनीन एक दिन यह सलाह दी कि उपदेशकीय परीक्षा कायम की जाव। उसका पठनकम नियत किया जावे तथा इनाम दिया जाय। सेंट-

जीने इस बातको स्वीकार किया, तब शीतलप्रसादनीने एक पठनकप व नियमायली बना दी जिसे सेठजीने बाबू सुरनमान वकीलको कार्रवाईके लिये भेन दी। बाबूनी उस समय मा० दि० जैन महासभाकी ओरसे उपदेशक फंडके मंत्री थे। आपने उसे नैन-मजट वर्ष ११ अंक ४४-४८ में प्रसिद्ध की। इसके तीन विभाग रक्ते-उत्तम, मध्यम, प्रथम।

जो दि॰ जैन परीक्षालयकी पंडित परीक्षा पास हो ने उत्तम, जो संस्कृत सिहत एन्ट्रेम तक योग्यता रखते उपदेशकीय परीक्षा। हों ने मध्यम और जो हिन्दी अच्छी जाने ने प्रथम देवें। प्रत्येक प्ररीक्षामें उत्तीर्ण दो उत्कृष्टको इनाम इस भांति नियत किया—्

नं० १ को नं० २ को उत्तमा परीक्षा १२५) १००) मध्यमा ,, ७५) ६०) प्रथमा ,, ५०) ४०)

प्रत्येक परीक्षामें ४ विषय नियत किये-

उत्तमामें — आप्त परीक्षा, आप्त मीमांसा सार्थ पाठ्य पुस्तककी तस्ह; स्वाध्याय—समयसार आत्मख्याति और मोक्षमार्गप्रकाश । हेख छिलना ८ फुल्किप सफोंपर और २ घंटे तक व्याख्यान देना ।

मध्यमार्मे—पाठच पुस्तक—तत्वार्यसूत्र सार्थ कंठ, द्रव्यसंग्रह सार्थ कंठ, रबकरंड आवकाचारमें सम्यक्त छक्षणके कोक; स्वाध्याय—पश्यप्राण व क्यानंदि वंचविंशतिका; छेख ८ सकेकर व व्याख्यान १॥ वंटे ।

प्रथमार्मे--पाठच पुस्तक-रत्नकरंड, तत्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह तीनों सार्थ कंठ, स्वाध्याय-रत्नकरंड आ० सदासुखनीकृत, बड़ा वद्मपुराण और आदिपुराण, छेख ६ सफं, व्याख्यान ॥ वंटा ।

सन् १९०६ के दिसम्बरमें कलकत्तेमें राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस)की

सेउजीका गमन।

बड़ी घूम थी, इसका २२ वां अधिवेशन था कलकत्तेमें महासभा और देशभक्त परोपकारी वृद्ध मि॰ दादा-और कांग्रेमपर आई नौरोजी कांग्रेसके सभापति होनेवाले थे। साथमें प्रदर्शनी भी थी। ऐसे मौकेपर कलकत्तेके दिगम्बर नैनी भाइयोंने नेन यंगमेन्स एसो ं और भा० दि० जैन महासभाको भी

निमंत्रित किया । संठ माणिकचंद्जीका विचार महाराष्ट्र मभाके अधिवेशनमें शरीक होनेके लिये श्री स्तवनिधिक्षेत्रपर जानेका था, क्योंकि आप उसके सभापति थे, पर शीतलप्रसादनीने जोर दिया कि इस समामें तो आप प्रति वर्ष जाया ही करते हैं। अबके आप कलकत्तेमें चर्ल और वहांकी प्रदर्शनी व कांग्रसको देखें तथा महाम-भामें भी शरीक हों । आपके पधारनेसे महासभाकी बहुत शोभा होगी। तथा छौटते हुए आप काशीमें उस संस्कृत शालाको भी देख आर्देगे जिसे आपने स्थापित किया था व निसकी चिरस्थायि-ताके छिये आपको इतना ध्यान है । सेठजीन इस रायको मंजूर किया तथा बम्बईसे अपनी सुपुत्री मगनबाई व निन कुटुम्ब व पुत्रियों सहित शीतलप्रसादजीके साथ कलकत्ते आए। कांग्रेस देखनेके निमिक्तसे सेठ हीराचंद नेमचंदके पुत्र बालचंदनी भी कई मित्रोंके साथ एक ही डब्बेमें आए। सेठबी सदा ही अपनी प्रतिष्ठा और आरामके

खयालसे सेकन्ड हासमें ही यात्रा करते थे और अपने साथवालोंको भी अपने ही डिब्बेमें बिठाते थे। सेठनीका कहना था कि यदि यात्रामें शरीरको कष्ट हुआ तो जिस कामके लिये अपनी यात्रा होती है वह काम अच्छा न होगा। शीतलप्रसादनीको सेठनी सदा ही अपने साथ बडी प्रतिष्ठासे बिठाते थे और हर तरह डनके <mark>दारीर, प्रकृति, व धर्म सावनकी रक्षा करते थे।</mark> अपनी स्त्रीके देहान्त होनेके बाद शीतलप्रसादनी चारित्रमें अपना अभ्यास बढ़ा रहे थे सो जबसे छखनऊ छोड़कर बम्बई रहने लगे थ तबसे बराबर सबेर और शाम सामायिक कर्ते, अष्टमी व चौद्न-को उपवास करते थे, रात्रिको जलपानका त्याग था, दर्शनपाठ या स्वाध्यायके विना भोजन नहीं करते थे। इन सब बातोंकी स-म्हाल सेठजी पूरी २ रखते थे । प्रायः अष्टमी चौर्म आजानेपर इसी निमित्त उहर जाते थे। कलकत्तेमें पहुंचते ही बाजू धन्नू-लाल अटार्नी सभापति स्वागतकारिणीने बहुतसे सभासदोंके साथ सेठजीका बहुत ही सन्मान पूर्वक स्वागत किया और घरकी मनोहर गाड़ियोंपर लेजाकर धर्मशालामें उहराया । सेठजी जब रेल गाड़ीसे उतरे थे तब देखते क्या हैं कि एक पगड़ी पहने हुए चइमा लगाए हुए युवकने बहुत ही सुककर सेठनीको प्रणाम किया। सेठ-जीके चित्तमें इस महारायकी ऐसी विनयका बहुत ही असर हुआ। यह महाशय वही बाबू धन्नूळाळजी थे जिनके चित्तमें सेठजीकी परोप-कारता व दानवीरताकी कथा अंकित थी। उसी गुणग्राहकताने एक अटार्नीको इतना नम्रीभूत कर दिया था । महासभाके अध्यक्ष . लाला रूपचंदनी सहारनपुर नियत हुए थे। आप ता० २४ दिस-

म्बरको सबेरे पवारे । आपका स्वागत वड़ी घूमसे हुआ । स्टेशनपर बनात बिछाई गई थी, बैंड बाना बना था । बाबू घन्नू छालने अभि-नंदनपत्र पढ़कर अर्पण किया । १०० गाड़ियोंकी कतारके साथ सवारी नगरमें घूमकर स्थानपर आई । कलकत्तेमें नैनियोंकी बड़ी प्रस्थाति हुई । उनके साथ हकीम कल्याणराय उपदेशक भी थे ।

कांग्रेसका मंडप १२००० मनुष्योंके बैठने योग्य व ३००० के खड़े होने योग्य बना था। खचाखच मरा हुआ था, इसके नल्से ता० २६, २७, २८, २९ दिस० को हुए। दादाभाई नौरोजीका व्यारूपान बड़ा प्रभावशास्त्री हुआ । अति महत्त्वके प्रस्ताव बंगमंग-के विरोध, आफ्रिकामें भारतियोंपर अन्यायका प्रतिवाद, प्रारंभिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्ध्य, तथा स्वदेशी आन्दोलनके हुए। कांग्रेसकी प्रदर्शनी २२ एकड जमीनमें थी । प्रदर्शनी इतनी भारी थी कि गलियोंकी लम्बाई ३ मील थी । इसको ता० २१ दिस० को स्वयं बड़े लाट लार्ड मिन्टोने स्वोला था। प्रदर्शनीसे मालुम हुआ कि देशी कारीगरीकी चीर्जे बनानके छिये छोगोंका ध्यान बहु रहा है। चीनी बनानेकी देशी कल देखनेमें आई। वह बहुत ही योग्य थी। एक ही समय ईख डालकर शकर बना ली नाती थी। ता० २४ दिस० को दिनमें और ता० २५ दिस० की रातको जैन यंगमेन्स एमोशियेशनके तथा ता० २५ दिस० के दिनमें व ता० २६ की रातको व ता० २७ के दिन रात्रिमें महासमाके जल्से लाला रूपचंदजीके समापतित्व और बाबू धन्त्रलालजीके उपसभापतित्वमें हुए।

बाबू धन्त्र्लालका स्वागतार्थ न्याल्यान बहुत ही विद्वतापूर्ण,

प्रौढ़ और मनोहर हिन्दी भाषामें था। एसो० में मुख्य दो प्रस्ताव हुए। एक तो मेम्बरों में दर्शन स्वाध्यायके प्रचारकी कोशिश की नावे और उसकी रिपोर्ट हर साल प्रगट हो.। दूसरे एक ट्रैक्ट कमेटी इंग्रेजी पुस्तकों के बनाने व संशोधनके लिये बने। महासभामें मुंशी चम्पतरायजीने रिपोर्ट मुनाई, फिर सेठ माणिक चं-द्रजीने प्रस्ताव किया कि महासभा दिगम्बर जैन हाइरे-कटरी तथ्यार करे उसका कुल खर्च में दूंगा। महासभाने घन्यवाद सहित स्वीकार किया व बावू सूरजभान वकीलको इसका मंत्री नियत किया। यद्यपि इसका कृष्ण सेट ठाकुरदास मगवानदासने पहले ही शुरू कर दिया था पर घूपनेवाले डाइरेक्टर न मिलने व ब्यापारमें सलझ होनेके लिये वह काम कुछ हुवा न था तथा बाबू सूरजभानसे प्राइवेट बात करनेपर सेठजीको यह मालुम हुआ था कि इनके द्वारा यह काम बहुत जलद और बहुत अच्छी तरह होगा।

श्रीमती मगनबाई जीको वह स्वर्णपदक जो सहारनपुरमें देना प्रस्तावित हुआ था महासमाकी
मगनबाई जीको खास बैठकंक समय समाके सामन बुलाकर दिया
स्वर्ण पदक । गया और इनकी सुकीर्त्ति वर्णन की गई।
श्रीमती मगनबाई जीको परदेकी आदत न
श्री और न उन्हें पुरुषोंकी समाके सन्मुख आते संकोच था। आपने
स्वर्णपदक लेवे हुए अपनी मिष्ट ध्वनिसे श्री जिनेन्द्रको नमस्कार
करके अपनी ख्वता प्रगट करते हुए महासभा द्वारा सन्मानित होने
पर अपना अति हर्ष माना और धन्यवाद दिया। समाओंकी

स्थिरताके छिये तय हुआ कि व्याख्यानोंकी छोटी २ पश्चीस प्रसन् के प्रकाशित हों। पं० मेवारामजीका व्याख्यान बहुत प्रमावशाली हुआ था। टाटा रूपचंदजीने १०००) महासभाके महाविद्यालयमें जो सहारनपुरके चंदेमें टिखा था सो प्रदान कर दिया।

सेठ माणिकचंदनीने कलकत्तेके नई धनाडचोंसे स्याद्वाद पाठशालाके लिये हजार २ की एकम मरानेका उद्योग किया, पर मफलता केवल एक बाबू धन्मूलाल अटार्नी पर हुई। आपने एकी दफे कहनेसे स्वीकार कर लिया तथा लाला रूपचंदजीने मी १०००) लिखाए। श्रीमती मगनबाईजीने मंदिरनीमें कई स्त्री-ममाएं करके शिक्षा व धर्मकी जागृतिपर उत्तेजित किया।

द्सी अवमरपर सेटजीन शिलरजीकी उपरैन्नी कोटीकी प्रबन्ध-कारिणी समाका अधिवेशन भी कलकत्तेमें नियत किया था और सर्व मेम्बरोंको खबर की थी। उसींक अनुसार ताः ३० दिसम्बर १९०६ को बैटक हुई, जिसमें बाबू देवकुमारजी, सेटजी, पं० नंदिकशोरजी, छेदीलालजी, शीतलप्रमादजी, सेट नेमीपाह नागपुर व चुन्नीलालके द्वारा कमसे नियुक्त थे। ९॥ मामका हिमाब व रिपोर्ट पास की गई। बड़े मंदिरजीके जीणीद्धारके लिये बम्बईसे मिस्त्री भेजकर रिपोर्ट लेना तय हुआ। आगामी वर्षके लिये बजट पास किया गया। मालूम हुआ कि कोटीके चार्ज लेनेसे अब तक बहुत कुछ प्रबन्च सुधरा है।

कलकत्तेसे चलकर सेठजी सीधे बनारस आए और मैदागिनी धर्मशालामें ठहरे। यहां आप ३, ४ दिन काशीमें सेठजीका ठहरे और उदारचित्त धनाट्य जैनी भाइयोंको आगमन। समझाकर, स्वयं उनके घर तकमें जाकर पाठशालाके चिरस्थाई फंडमें हमार हमारके नाम भरा लिये। लाला कुंजीलाल, बनारसीदास, और बाबू छेदीलालजीसे तो कलकतेमें ही भरा लिये थे, अब बाबू हनुमानदास,
बाबू नंदनजी तथा लाला खड़गसैन उदयराजजीसे भराए। खड़गसैनजीकी दो विधवा क्रियें थीं। इनको समझानेमें मुख्य परिश्रम श्रोमती
मगनबाईजीने किया था। यहां तक १४ नाम हो गये थे और सेठ
नेमीचंदजीसे १५वें नामकी शर्त थी। एक नाम आपने अपना और
मरके १९ नाम पूरे कर दिये और रुपया तहसीलना शुरू करा
दिया। माहस इसीको कहते हैं। यदि एक और धनाल्य
उनके साथ श्रमण करनेमें पूरी २ मदद देना, और सेठजी १० व
२० शहरोंमें चूम लेते तो १०० नाम भराना कोई बात न थी
पर कैन जातिके दुर्भाग्यसे ऐमान हो सका और वह फंड २६०००)
ही पर रुक रहा है।

ता० ७ जनवरीको स्याद्वाद पाठशालाकी प्रबन्धकारिणी सभामें आप सभापति हुए । कई जरूरी प्रबन्धक कार्रवाइयोंके साथ साथ वार्षिक अधिवंशन आगामी फाल्गुण सुदीमें करना निश्चित किया।

जिस पाठशालां के लिये सेठनीको इतना प्रेम था उसकी
गांच मी कराना आप जानते थे निससे
पंडित शिवकुमार खातरी हो कि पाठशालाका काम ठीक होता
शासी द्वारा है या नहीं। आप एक दिन कई विद्यार्थिपरीक्षा। योंको लेकर काशीके प्रसिद्ध विद्वान् पंडित
शिवकुमार शास्त्रीके यहां प्यारे

और प्रार्थना की कि आप इनकी परीक्षा होनें। पंडितवर्य्यने परीक्षा केकर यह सम्मति प्रदान की---

माघ कृष्ण पंचम्यां मत्स्याने स्यादाद पाठशालायाश्कात्राः स्वपरीक्षादानार्थमपरिथताश्च परीक्षादानोत्तरभारकताभ्यासत्त्वेन निर्णीताः।

भावार्थ-माघ कृष्ण पंत्रमीको मेर स्थानपर स्वाद्वाद पाठ-शालाके छात्र आए। परीक्षा ली। अम्यान अच्छा किया है ऐसा निर्णय हुआ।

विद्याप्रेमी सेठ माणिकचंदजीको निवाय अपने परोपकार कामके और कोई शौक किसी तरहका न था। जिस शहरमें जाते थे वहां श्री जिनमंदिर व कोई प्राचीन स्थान तो देखते थे, पर अन्य किसी मेले ठेले तमारो आदिमें जानेकी बिलकुल रुचि न रखते थे। खानपान भी बहुत सादा था। तथा मबेरेसे जब तक कोई काम नहीं कर लेते थे तब तक मध्यानहका भोजन नहीं हचता था। सेटनीकी यह मंशा थी कि मैदागिनीके बगलमें स्थान लेकर एक कायदेका मकान स्याद्वाद पाठशाला व बोर्डिंगके लिये बनवा दें । उस स्थानके लिये आपने बहुत प्रथन किया । पोष्ट-माष्टर लाला रचुनाथ-दामको कई सौ रुपये उसके छिये भेज उन्होंने बयाना भी दिया, पर वह सेठनीके मरणकाल तक ठीक न हुई। इस देफ आपने काशीसे सिंहपुरी व चंद्रपुरीमें भी नाकर दर्शन किये। श्री श्रेवांसनाथका जन्मकल्वाणक सिंहपुरी तथा श्री चंद्रप्रस्नीकी चंद्रपुरी है।

आप बनारससे सकुवाल बम्बई आए। श्री गनपंथानीमें बम्बई प्रान्तिक सभा होनेवाली थी उपकी फिकर हो गई। जाति व धर्मकी सेवामें धनाढ्य लोग धनके खर्चनेवाले तो बहुत मिलेंगे पर धनके दानके साथ दारीर व वचनसे भी दिन-रात मिहनत करनेवाले बहुत कम दीख पड़ेंगे। इसी अद्भुत गुणके कारण जैन जनता सेउजीको बात बातपर याद करती है तथा अब इनके स्थानको पूर्ण करनेवाला कोई दीखता नहीं है।



## ग्यारहवां अध्याय।

## महती जातिसेवा बितीय भाग।

हिंद माणिकचंदनी कलकत्तेके प्रवाससे छौटकर बम्बईमें अपनी नित्य कियामें खबलीन हो गए। इस अव-सेट माणिकचंद जीकी स्थामें भी जब सेटनी बम्बई रहते तब चौपाटी दिनचर्या। चैत्यालयमें स्वयं श्री जिनेन्द्रकी स्फटिक-मणिकी मूर्तियोंका अभिषेक करते थे, णमोकार

मंत्रकी नाप दे शास्त्र स्थाय करके जो मुद्रित पुस्तकें नैत्यालयमें रक्सीं थीं उनको देखते थे तथा बाहरसे बहुतसे स्थानोंकी मांग आती थी उनके लिये पुस्तकोंके छांटनेका काम टाकुरदास मगवान-दासके सुपुर्द था। ठाकुरभाई स्वयं करते व और छोट लड़कोंसे कराते थे, जो बहुया चारों भाइयोंके कुट्रम्बमें कोई न कोई बंगलेमें रहते थे। तथापि सेठजी उनकी जांच रखते व कभी आवश्यक होनेपर स्वयं भी पुस्तकोंको छांटकर अलग २ बिना बंधा बंडल रख लेते थे और उन्हें फिर दुकान जाते हुए ले जाकर भिनवा देते थे। प्रायः जैन पाठशालाओं और खास २ स्वाध्यायके लिये प्रार्थनारूप मांगनेवालोंको आधे मूल्यमें व भेट रूप भी मिजवाते थे। कई हज़ार रुपया इस काममें अटका रखा था। सेठजीके जीवन तक बाहर भेजनेका जितना काम होता था उतना अब नहीं होता है, तथाफि अब भी चौपाटीपर पुस्तकालय है जिसमें सर्वप्रकारकी संस्कृत प्राकृत भाषाकी पुस्तकें रहती हैं। मंदिरजीसे निकलकर कक तक रसोईका

समय होवे तब तक आप गाँड्रीपर बैठकर कभी बोर्डिंग, कभी कोई मकान, कमी किसीसे मिलनेके काममें चले जाते थे । वहांसे आकर रसोई जीमकर सर्वके साथ दूकान जाते थे। रास्तेमें हीरावाग धर्म-शालामें उतर नाते थे। जनतक गाड़ी औरोंको नौंहरी बानार पहुंचाकर न छैट आती तनतक आप शीतलप्रसादनीके साथ धर्मशालामें घूमकर सर्व जांच करते, द्यतरमें आकर सुप० धर्मशालासे हाल मालूप करते, रोज़के फार्मको देखते कि जिनमें यात्रियोंकी आपद लिखी जाती है, फिर तीर्थक्षेत्र कमेटीके मैनेनरके पास बैठकर नरूरी पत्र पढ़ क्या जवाब देना सो समझाकर जब गाड़ी आती तब दूकानपर नाते थे। वहांपर ती-र्थक्षेत्रोंके सिवाय और अनेक तरहके धार्मिक सामाजिक पत्रोंको पढकर उनका उत्तर लिखते व लिखाते थे। अब सेठजीका सम्बन्ध सम्पूर्ण भारत-वर्षसे होगया था। महासभाके सम्बन्धमें भी बहु र लिखा पढी होती थी। सेठनीके सामने ही सेठ नक्लचन्द, चुन्नीलाल, ठाकुरभाई व्यापारका काम करते थे। कोई २ माल खरीदते समय सेठजोसे सलाह हेते थे तथा नो प्राहकगण फुटकल मोती लेने आते वे सेटजीकी सलाहसे लेते और जो दाम यह कहते उसे विना दुलखे दे देते थे। सेठजी बड़े न्यायशील व परोपकारी थे। वे विना कोई अपेक्षा रक्ले ऐसे दाम कहते कि उससे कम कहीं बाज़ारमें उसे न मिल सके जिनसे उनका मन भी प्रसन्न रहे और दूकानवालोंको योग्य लाभ हो । तीर्थक्षेत्र कमेटीके लिखे हुए पत्र ट्रकानपर आते उनको शुद्ध करके हस्ताक्षर करके मेन देते थे। कोई २ आवश्यक तीर्थक्षेत्रके पत्र दूकानपर ही छिलते छिलाते थे। अपना उपयोग सर्व नेन नातिके सुवार सम्बन्धी भावोंमें उल्झाए रखकर शामके

पहले २ जन गाडी आती तन उसीमें सनके साथ बैठकर चौषाटी जाते और शापसे पहले २ व्यालू करके पैदल समुद्र तटपर टहलने जाते थे । वहांसे आकर चैत्यालयके दर्शन व जाप कर व कभी स्वाध्याय कर दीवानखानेमें ऐसी जगह बैठते थे जो जीनेके सामने है जिमसे हरएक द्रवाजेसे आता जाता सेठजीको दिखता था और सेठनी उनको देखते थे । इम मनोहर चौपाटी चैत्यालयके द्शीनको बहुन मनुष्य आने थे, उन सबको सेटजो यदि वे स्वयं न आएं तो बुलाकर कुर्सियोंपर बिटाने थे, उनके धर्मकी, सुख दुः ख़की बात पूछते थे व यदि कोई धार्मिक काम दुआ तो उसमें यथाशक्ति मद्द देनेको तय्यार रहते थे। रात्रिके १० व १०॥ नक इस तरह बिताकर रात्रिको दूग्धपान करके शयनालयमें जाने थे । मबेरे अति ही मबेरे उटकर फिर नित्य कियामें छग जाते थे। आपकी यह इच्छा थी कि नहां २ मुख्य प्रान्तिक कालेन हैं और उनके आप्तपास दि० जैनी हैं वहां एक २ बोर्डिंग अवस्य स्थापित हो जावे जिससे इंग्रेजी पढ़े छात्र धर्मज्ञान व धार्मिक चारित्रसे विमुख न हों। संटजीको यह भी विश्वास था कि यदि कोई ब्रेनुग्ट धर्मको जान नायगा तो वह अपने हितके मिनाय अपने लेख व वचनोंसे बहुतोंका हित कर सकेगा। जबलपुर बोर्डिंगके ्स्थापनके बाद व उनको चलते हुए देखकर आपने यह संकला किया कि लाहीर, अलाहाबाद तथा आगरामें भी बोर्डिंग होना चा-हिये। शीतल्प्रमाद्जी सेठजीके साथ ही दूकानपर बैटते थे और कभी र घंटा दो घंटेके छिये बाजार चल्ले माते थे। सीतलप्रसादनीको मालुम था कि इन बोर्डिगोंके स्थापन करानेके लिये किन र से पत्रव्यवहार किया नाय। लाहौरके निमित्त पहले बाबू चंदूलाल ओवरसियरसे, फिर बाबू रामलालनीसे, आगराके निमित्त लाला गोपीनायनी बनान और बाबू देवीप्रसादनीसे; प्रधागके लिये बाबू ऋषमदास, बच्चूलाल शिवचरणलाल आदिसे पत्रव्यवहार होने लगा। शिवरनीकी बीस-पंथी कोठी सम्बन्धी पत्रव्यवहार प्रायः सेठनी ही को करना पड़ता था। मैनेनर डाह्याभाई शिवलाल हरएक काममें सेठनीकी सम्मित मांगता व आज्ञा लेता था और सेठनी तुर्व जवाब देकर उसका समाधान करते थे।

सिद्धक्षेत्र श्री गनपंथानीपर मिती माध सुदी १३ सं० १९६३ से १५ तारीख २७--२८--२९ गनपंथाजीपर वस्वई जनवरीको बस्बई प्रान्तिक सभाका चतुर्थ प्रा० मभाका अधि- वार्षिक उत्सव होनेवाला था। इस उत्सवका वेशन। सब प्रबन्ध बंट चुका था। मंडप तथा केम्पका प्रबन्ध संठ माणिकचंदजीके

सुपुर्द किया गया था इससे शीघही सेठजीको वहां जानेकी फिकर पड़ी। श्री गजपंथ पर्वत बम्बई प्रान्तके नासिक स्टेशनसे १० मील व नासिक शहरसे ९ मील है, पासमें मसरूल शाम है। यह दिगम्बर जैनि-योंका प्रसिद्ध:सिद्धक्षेत्र है। यहांसे सात बलभद्र और आठ कोड़ मुनीश्वरोंने मोक्ष प्राप्त की है।

पर्वत ४०० फुट ऊंचा है। सीढ़ियां ३२४ बनी हैं। ऊपर दो प्राचीन गुफाओं में खुदे जिन मंदिर हैं जिनमें पर्वतमें उकेरी अति प्राचीन दि॰ जैन प्रतिबिम्ब हैं। दो चरणपादुकाएं हैं। एक बड़ी मूर्ति पार्थनाथ स्वामीकी कुछ २ संडित है। ऊपर व नीचे जलके

कुंड हैं। नीने क्षे मेंद्रकीर्ति भट्टारककी समाधि है। गांव म्हसूरूलमें एक सुन्दर शिलरबंब मंदिरनी है जिसे उक्त महारककी प्रेरणासे शोलापुरके प्रसिद्ध सेठ रावजीके पिता नानचंद फतह चंदजीने सं० १९४२में बनवाया था व सं० १९४३में प्रतिष्ठा कराई थी। मंदिरजीके चारों तरफ कोट है। इसके भीतर दो धर्मशालाएं हैं, जिसमें ३०० मनुष्य उहर सक्ते हैं। उत्तम धर्मशालाओं के बनने की नरूरत है। यहांका हवा पानी बहुत ही अच्छा है। वम्बईके निनी बीमार होनेपर यहीं आते हैं और अच्छे भले चंगे होकर लौट जाते हैं। इम अधिवेशनके सभापति श्रीमान् राजा ज्ञानचंदजी फोटोया-फर हैट्राबाद व बम्बई नियन हुए थे। ता० २६के ७॥ बजे म्थेर दानवीर सेठ माणिकचंदजी, पं॰ धनालालजी, वाबू शोतलप्रपादनी आदि अनेक सज्जनोंके साथ राजासाहब नासिक स्टरानवर पधारे । दिगम्बर जैन प्रान्तिकसभाके पट्टे लगाए हुए बाल-न्टियरोंन माजे बाजेके साथ स्वागन किया । सेठ दीपचंद वीरचंदके बंगलेमें आराम करके मवारी शहरमें घुपते निकाली गई, जगह २ ध्वना पताकाएं टंगी थीं । इस जल्सेमें पं॰ गोपालदासनी, सेठ मुखानन्दनी, सेठ रावनी नानचंद शोलापुर आदि बहुतसे महाशय शरीक थे। देशभक्त पाटनकर और खरे प्रतिदिन सभामें उपस्थित होते थे। ता० २७ को प्रथम बैठक हुई। संठ चुन्नीला इसवेर-चंदजीने स्वागतार्थ भाषण पढ़ा, फिर सेठ माणिकचंदजीके पैरा करने व सेठ रावजी नानचंद और सेठ नेमीलाल नागपुरके समर्थनसे राजा ज्ञानचंदनी सभापति दुए । आपने अपना भाषण पड़ा, इसी तरह दूसरी बैठक ता॰ २८ की रात्रिको, तीसरी ता॰ २९ को हुई। यहां उल्लेख योग्य प्रस्ताव जो समामें पास द्वुए वह ये थे:---

(१) अमीर कावूछको घन्यबादका तार मेना गया नो उन्होंने अपने वास्ते दिहलीके मुसल्यामोंको गाय वधसे मना किया (२) सेठ माणिकचंद हीराचंद जष्टिम आफ दी पीस हुए इस क्रिये समाने हर्ष प्रगट किया (३) स्वदेशी वस्तु प्रचार तथा बाणिन्यबृद्धिका प्रस्ताव पंडित गोपालहासने पेश किया, जिसका समर्थन देशभक्त मि०एन०पी. पाटणकर बी०ए • एलए उ० बी० नं एक प्रभावशास्त्री व्यारूपान देकर किया (४) सखाराम वेणीचंद फल-टणको सेठ बालचंद रामचंद शोलापुरकी ओरसे सुवर्ण पदक इस छिये दिया गया कि कन्याके पिताके न चाहनेपर भी इसने जनतक अपना विवाह जैन पद्धतिसे नहीं हुआ विवाहंके लिये तय्यार न हुआ, नियत महुर्त भी टाल दिया तब दूनरे महुर्तमें नैन विधिसे ही विवाह कराया (५) वैद्यरान और वैद्यरत्न कन्हैयालालनीको सुवर्णपदक प्रदान किया गया (६) सेठ नेमी चंद अजमेरके रायबहाद् होनेपर हर्ष प्रकाश किया गया । आगामी वर्षके कार्ध-ध्यक्षोंमें सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी॰ ही सभा-पति रहे । उपदेशक फंडके मंत्री नौंहरी ढाकुरदास भगवानदास व परीक्षालयके सेठ रावजी सखाराव शोलापुर हुए। सेठ हीराचंद नेमचंद-की मुपुत्री कंकु नाई व श्रीमती मगनबाई ने स्त्रियों में जागृति की। ता॰ २९ की रात्रिको एक खास आप समामें कंकुनाईनीने बहुत ही उत्तम व्याख्यान दिया।

नासि हकी पिनरापोछके छिये चंदा हुआ, जित्तमें सेठ माणिकचंद-जीने १०१) प्रदान किये। प्रान्तिक सभाके छिये अपीछ हुई उसमें भी-सेडजीने २०१) सक्से पहिछे दिये। इस जल्सेमें सूरतको सेठ मूळ्चंद कितनदासजी कापिड्या अकेले हो पहुंचे थे और सब कार्यों में सेठ माणिकचंदजीके साथ रहकर बराबर योग देते थे। आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ़ सिद्धक्षेत्रपर कानेका बडौदेसे सेठ टालचंद कहानदास द्वाराआया हुआ एक पत्र पढ़ा गया, तब सेठ रावजी भाई सखाराम (सोलापुर) ने कहा कि नहीं, आगामी अधिवेशन दहींगांवमें करना चाहिये, इस पर सेठ मूलचंद किननदास कापिड याने रबड़े होकर जोशीली माषामें कहा कि हमारा गुजरात प्रांत बहुत अधकारमें है और वहां कभी ऐसा अधिवेशन नहीं हुआ है इसिलिये वहांगर ही होना चाहिये आदि, जिनसे आगामी अधिवेशन गुजरातमें पावागढ़ तीर्थार करना ही निश्चित हुआ।

पहले कहा गया है कि आगरामें जैन बोर्डिंग खोलनेकी
प्रेरणा सेठनी पत्रद्वाग कर रहे थे उभीके
आगरामें बोर्डिंगके अनरसे दलीपसिंह जैनी डाक्टरने उद्योग करलिये सेठजीका दौरा के फर्वरी मासमें लोगोंको एकत्र करके जो
व प्रयत्न । पत्र सेठमीके लाला गोपीनाथ बजाज और
बाबू देवीप्रमादनीके पाम आए थे उनको
पेश किये और जैन बोर्डिंगकी बड़ीभारी नहरत बताई। सर्व
साहबोंने बोर्डिंग होना ठीक समझ कर इसका प्रबन्ध शुद्ध किया,
पर वह कुछ चलन सका। तब सेठमीसे पत्र द्वारा प्रार्थना की गई कि
यहां २४से ३१ मार्च सने१९०७तक रथोत्सव है उसमें आप पत्रारें तो
सब प्रबन्ध हो जावे। बार २ पत्रोंके आनेसे सेठनी शीतलप्रमादजीके
साथ पंनाब मेलसे रक्षना होकर ता० २६ की शामको आगरा
पहुँचे। लाला गोपीनाथ आदि अनेक माई स्वागतार्थ स्टेशनपर

आएथे और बड़ी भूमधामसे सेठजीको छेजाकर गोपीनाथजीने अपने मकानपर ठहराया। रथोत्सवका मेळा एक बागमें था जहां स्त्री पुरु-र्षोकी बहुत मीड़ थी। दूसरे दिन सबेरे सेठनीने आगरा कालेजोंमें पढ़नेवाले जैन छात्रोंको अपने पास बुलाया । ७, ८ छात्र आए और उनसे सर्व हाल पूजा तो मालूप हुआ कि वे धर्मकी कुछ भी नहीं जानते, न वे दर्शन स्वाध्याय जाप कभी करते, उनका श्रद्धान मूर्ति पूजासे गिरा हुआ था, करीब २ आर्यसमानके से ख्याल हो रहे थे; क्योंकि आगरामें आर्य समानका बहुत जोर है उसके उपदेश पुनः पुनः उनके कार्नोमें पड़े थे इसीसे ऐसा असर हुआ था। सेंटजीने पूछा, आप लोग नैनधर्मको क्यों नहीं जानते ? उत्तर मिला कि लड़कईसे हमारे पिताने हमें कुछ बताया नहीं । हम स्कूलमें इंग्रेजी पढ़त रहे । कभी अनन्त चौदसको दर्शन कर आतं थे । हम तो इतना ही जानते हैं कि हम जैन हैं पर जैनमतका कुछ भी हाए नहीं जानते, क्योंिक न हमें बताया गया और न कोई पुस्तकें पड़नेको भिन्धीं यद्यपि हम कुछ २ हिंदी जानते हैं पर ज्यादा हमें उर्द्का ही अभ्यास है। सेठनीको इनकी वार्तोको सुनकर दिलमें बहुत दया आई तथा इनको बम्बई बोर्डिंगका हाल व धर्मिशिक्षाकी बात कही और मृति पूजा आदि पर शीतलप्रसादजीने समझाया ।

रात्रिको बागमें शास्त्रस्थाके पीछे सभा हुई। सेटजीको समा-आगरामें मानपत्र। पित नियत करके आगराके जैनी माइयोंने निम्नलिखित मानपत्र दिया:—

## अभिनन्दनपत्रमिद्मु ।

दोहा-सज्जन गुणी द्यालुचित, दानबीर कुलचन्द । अहोभाग्य आये यहाँ, श्रेष्ठी माणिकचन्द ॥ श्रीमान् जैनवर्म प्रतिपालक दानवीर सेठ माणिकचन्द्जी जैन मौंहरी जे. पी. ( J. P. ) बम्बई ।

महोदय ! हम समम्त आगरानिवासी जैनी भाई आन परमहर्षको प्राप्त हुए हैं कि जो आपने इतना महान् कष्ट सहन कर यहां ं आगरेमें ) पंचारनेकी ( नैनसमाजकी उन्नतिके लिये ) कृता की है। इससे हम छोग आपके परम घन्यवादी हैं और श्रीमान्की द्यालुना नथा सज्जनता रुवम् धर्मधीतिपर हड्ताका परिचय तो हन लोगोंको आपके म्यापित किये पुस्तकालय, विद्यालय, औपघालय, घर्मशाला, अनाथालय, जैन बोर्डिङ्ग हाउमव जिनसमान एवम् अनेक धर्म कार्योसे तथा ममस्त तीर्थक्षेत्रोंके सुवनन्वसे मिन चका है। श्रीमान्ते हाल ही में अपवित्र वस्तु खांड, केसर आदिके न वर्त नानेका अपने यहां नो प्रबन्ध किया है एवम् और बहुतसे ऐसे धर्म कार्य्य हैं जिनमें आप कटिबद्ध रहते हैं और जो कि आपकी अपने धर्ममें दढ़ विश्वानता तथा अपनी जातिसे अटल प्रमका परिचय देते हैं, आपका यश दसों दिशामें सुगन्वित मग हुआ व्याप्त और प्रफुछित हो रहा है। सो आपकी इन कुपाओं के बदलेमें हमारे पास कोई शब्द नहीं हैं जिसे हम श्रद्रबृद्धि मनुष्य आपकी प्रशंसा कर सर्के । हम आपके इस आगरा नगरीमें साक्षात् द्रीन करके ऐसे प्रकृत्वित और हिंपत एवम् गदगद हुए हैं कि जिह्नाप्रमें कोई स्थान नहीं है कि जिससे एक बात भी आपकी प्रशंसाको मुखसे उचारण कर सर्के, किन्तु हमारे हृद्य अत्यन्त प्रेयसे उमह रहे हैं और आपकी सेवा करनेके लिये चित्त अतिशय उत्कंठित हो रहा है, परन्तु आपको सन्तुष्ट करनेके लिये उपायन्त्रकी अप्राप्तिमें फूल नहीं पंखरी ही सहीकी उक्तिसे यह छोटासा सम्मेटन करके आपके पबित्र कर-कपलोंमें हृद्यके उचित उल्लासको अभिनन्द्नपत्रका स्वरूप देकर अर्पण क्यते हैं।

यद्यपि आप सर्वथा समहिष्ट द्यावान और सच्चे सज्जन, निन धर्महितैषी हैं, स्वयम् ही आपकी हमारे जैनी भाइयों तथा अन्य मतियोंपर भी बड़ी कृपा रहती है, तौभी इस लोग अपने हृदयकी दुर्मलतासे सदैव जैनसभाजपर केवल अधिक कुपा कटाक्ष रखनेकी प्रार्थना करते हैं। आहा है, कि आप हम लोगोंकी दृढ़तापर क्षमा करैंगे । और सवितय निवेदन है कि यह मानपत्र जो आपकी सेवामें अर्पण करते हैं इसे आप सादर सहर्ष स्वीकार करके हम लोगोंको अनुगृहीत करेंगे किमधिकम्।

वीर संबत् २४२३ मिती वित्रामी जैन भाइयोंकी ओरसे— वैत्र सुदी १२ तारीख २७ मार्च हन् १९०७ ईसवी अप्रवास जैन—उपमन्त्री।

फिर शीतलप्रसादनीने धार्मिक शिक्षाकी महिमा बताते हुए आगगमें जैन बोर्डिङ्गकी कितनी आवश्यका है इसको दिखाते हुए नो बातचीत दिनमें कालेनके छात्रोंसे हुई थी उसका माव कहा, जिसको प्रन कर समाके चित्त मर आए । इसका समर्थन डाक्टर द्लीपमिह अप्रवालने किया।

उसी समय सेटजीने आगरा बोर्डिंगके खिये जमीन खरीदने-को ४०००) देना कबूड़ किया, उपस्थित आगरा बो० के लिखे भाईयोंने ९ कमरोंके छिये पांच पांचमी ४०००) का दान। रुपये स्वीकार किये। हाला गोपीनाथजीने ३ हजारका एक मकान व दो कमरे मंजूर

किये। बहुतोंने मासिक चंदा लिखाया व एक मुष्ट रकम भी लिखी गई। थोडी देरमें २००००) बीस हनारसे अधिकका चंरा हो गया। इस जल्सेमें रायबहादुर धमंडीलालजी मुजप्करनगर मी थे । आपने भी २ कमरे बनवाना स्वीकार किये । प्रबन्धार्थ एक कमेटी बनी, जिसके मंत्री राय० व० घमंडीलाल व उपमंत्री डॅं।० दलीप-सिंह हुए। इसरे दिन अंतरंग कमेटीमें नियमावली पास की गई तथा तय हुआ कि मोतीकटरेकी धर्मशालामें इसका महुर्त ता० १ अप्रैल सन्०७ को कर दिया नाय । कुछ छात्रोंने रहना स्वीकार किया था, सो सेठनीके सभापतित्वमें सबेरे मोतीकटरेमें समा हुई। बहुत माई पद्मारे थे । आचार और शिक्षापर बाबू शीतलपपाद और हाला हाड़लीदास हेडमाप्टर नार्भल स्कूलने मनोहर व्याख्यान दिये। सेठनीने बोर्डिंगका एक कक्रा खोला और सबा सानन्द सबास हुई। उस समय समाका फोटो भी लिया गया। सेउनीकी यह रीति यी कि पहले मामूली स्थानपर बोर्डिंग शुरू करना फिर उसके छिये मकान तथ्यार कराना इसीसे यह मुद्धर्त किया गया। पर जिन छात्रोंने आनेका बादा किया था वे भी न आए, इबर उत्साही दर्शिपसिंह आगरासे बड़े गए निससे बोर्डिमकी कार्रवाई बैसी ही रही। फिर पत्रव्यवहार होता रहा तब आगरावार्जीने यही कहा कि

नव तक नया बोर्डिंग न बनेगा तब तक कालेनके छात्र नहीं आ सक्ते। तर सेठनीने बाबू देवीप्रसादनीको नमीन छेनेके छिये कहा। बाबूजीने हरि पर्वत थानेके पास एक बड़ीमारी जमीनका टुकड़ा करीय ३६००) में ठीक किया तब सेठनीने ४०००) मेन दिये। जमीन पक्की लेली गई पर मकान बननेका बहुत दिनों तक कोई भी यस्त न हुआ। पीछे फिर सेठजी एक दफे आगरा आए और बहुत जोर देकर मकान वननेका महुर्त कराकर वले गए। फिर भी कुछ कार्रवाई न हुई। एकद्फे शीतलप्रसादजीने बहुत समझा बुझाकर कमरोंका पहले आचा रुपया बसूल करवाकर कमरे शुरू करवाए। धीरेर आठ कमरे तय्यार हो गए, पर सेठजींके जीवन तक यह बोर्डिंग चालु नहीं हुआ था, परन्तु ता० २१ नवम्बर १६ कं भैरोंसिंह जैनकं पत्रसे विदित हुआ कि बोर्डिंगका काम शुरू हो गया है । आगरेमें लाला गोपीनाय और सेठ माणिकचंद्जीका संयुक्त फोटो भी लिया गया।

आगरासे छौटकर आते ही सेठजीक चित्तको महा दुःखित कर देनेवाला डिप्टी कमिइनर हनारीबागका श्री सम्मेद शिखरपर नोटित ता० २६ मार्च १९०७ का मिला बंगले बननेका निप्तमें लिखा था कि पहाड़पर बंगले बननेके छिये जमीन पट्टेपर देनी है इससे दिगम्बरी बस्ताव । और क्वेताम्बरी मुखिया हमसे ५ मई सन् ०७ के अनुमान मिछें त्रिसमें उनके मंदिरोंको हानि न पहुंचे ऐसा बिचार किया जाय । यह नोटिस देखते ही सेठजी व अन्य बम्बईके जैनी माई अचिम्पत हो गए । क्योंकि सदासे ही यह पर्वत अति पवित्र

रूपमें पुरक्षित चला आता है। यह पर्वतराज है। दिगम्बर जैनियोंके मन्तव्यानुसार भरतक्षेत्रके अनंते तीर्थंकर इसीकी भूमिसे मोक्ष गए हैं व आगामी जावेंगे तथा उनके मध्य अनंते मुनि सम्वूर्ण पर्वतपर ध्वानकर मोक्ष पवारे हैं। इम वर्तमान हुंडावमर्पिणी कालमें काल दो-वसे ह तीर्थकर अन्य स्थानोंसे मोक्ष गए हैं। सेठ माणिकचंदनी तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री थे इसलिये इस पर्वतकी रक्षाका सम्पूर्ण बोझ इनके उत्पर आन पड़ा । अब रात्रिदिन सेठजी इस मारी चिन्तामें फंसे। आपने कमेटीकी तरफसे इस नोटिसकी नकल एक पत्र द्वारा मर्व पंचायतियों और सभाओं में भेनर्दी । तथा यह भी लिखा कि विचारवान भाई जो मिलनेको जार्वे अपने नाम भेजें। ठीक तारीम डाह्यानाई शिक्लाल मैनेनर उपरेली कोठीसे मालूम कर हेर्वे । इसी बीचमें **कानपुरमें** बिम्बप्रतिष्ठा थी जिनमें भा० दि॰ जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन था। १५००० जैनी एकत्र थे । इस खबरको पाते ही महासभाने सभाद्वारा प्रस्ताव करके कि हम होग पहाड़पर ऐसी बस्तीक बिलकुल विरुद्ध हैं, ता० २२ अपैल १९०७ को तार किया और यह भी लिखा कि दो मास समय बढाया जावे । और भी पंचायतियोंसे तार व अर्जिये इसके विरुद्ध भेजी गई।

यहांसे संउनी ता० १ अप्रैनको चल अजमर आए। राय बहादुर सेठ नेमीचंदजीने स्टेशन सेंडजीका दौरा अ- पर मली प्रकार स्वागत किया । दिन भर यहां ठहरे । मुवर्णकी अयोध्या, कैलाश जमेर, उदयपुर, केशरीयाजी। आदि ऋषभदेवके पंचकल्याणककी रचना देखी। फिर सेठजीने शीतस्प्रमादजीके

साथ मेथो कालेन, द्यानंद अनाथालय, हिंदू औषधालय तथा नैन औषवालय देला। द्यानंद अनाथालयमें ६३ कन्या म १३० बालक देले। इनको कपड़ा बुनना सोना, दरी व निमार बनाना, कुर्सी टेबुल बनाना व रंगना आदि सिखाया जाता है। यहां कपड़े के जुते अच्छे बनते हैं जो १।)में आते हैं। द्यानंद प्रेप्त व हाईस्कूल भी हैं। तैयार अनाथ इनमें काम सीखते या पढ़ते हैं। रात्रिको श्री जिन मंदिरजीमें सभा हुई। पं० नरसिंहदासजीन मंगलाचरण किया तब शीतलप्रभादजीने विद्योत्ततिगर भाषण दिया। सेठजीने १०) जैन व १०) हिंदू औषधालयको दिये। ता० २ को चलकर ता० २ अप्रैलको उद्यपुर आए। यहां ५ तक ठहरे। स्टेशनपर नैनियोंने बड़ी धूमधामसे स्वागत किया। प्रतिदिन खंडेलवालोंके मंदिरजीमें शीतलप्रसादजीके व्यास्थान होते थे।

यहां सेठजीकी भावज रूपाबाईजीने दो वर्षसे एक जैन पाठशाला खुजवा दी थी, जिनका कुछ खर्च उदयपुर पाठशाला- बम्बईसे भिजवाती थीं। पाठशालाकी सेठ-को ६०००) जीने परीक्षा लिवाई। काम ठोक देखकर ता० ३ की सभामें सेठजीने सबको ज़ाहर

किया कि रूपाबाईजी प्रेमचन्द्रके स्मरणार्थ इस पाठशालाके लिये ६०००) प्रदान करती हैं। अब इसके व्याजसे इसका खर्च बलेगा। रुपया हीराचन्द गुमानली जैन बोर्डिंगकी ट्रस्ट कमेटीके आधीन रहेगा तथा पाठशालाका नाम "सेठ प्रेमचंद सोतीचंद विगम्बर जैन पाठशाला उद्यपुर " रहेगा। सर्वने सानन्द स्वीकार किया। सेठमीकी रायसे पाठशालाका स्थान

नदला गया व इस नामका पाटिया लगाया गया । प्रश्नन्थार्थ १२ महाशयोंकी १ कमेटी बना दी । सभापति जवारमल मूलचन्दकं मुनीम शाह लोगालाल, मंत्री कालुराम और रंगलालजी नियत हुए। तथा एक जैनवर्मवर्धिनी सभा कायम कराई जो प्रति चौदसको हुआ करे। यहां लह जातियोंके २५६ वर व ४ दि० जैन मंदिर और १ निस्यां है।

यहांसे चलकर ता० ६ को टांगोंके द्वारा ३० मीलपर एक परसाद गांवमें आए। यहां ४०वर दि॰ नैनी थे। १ नैन मंदिर है। शिखर गिर पड़ा था सो फिरसे बन रहा है। मुखिया गौतमचंद बालचंद हैं। सेटजीने सबको जमाकर उपदेश देकर पाटशाला खुल-वान पर राजी किया तथा ५) मासिक मदद देना कबृल की।

ता० ७को मबेरे चलकर धुलेच गांव पोष्ट रिलमदेव आए।
यहां १०० घर दि० जैनियोंक हैं। मुख्य सेठ बच्छरान छगनलाल हैं। गांवमें बाह्मण गोटी यात्रियोंको अपने घर पर ठहरा लेते हैं।
सेठनी हेपचंद गौतपचंद गोटीक घरपर ठहरे और ता० ८ की दोपहर तक रहे। यहां पर श्री ऋष अदेच जीका एक किलेके समान मंदिर है जिममें ६-७ फुट ऊंची पद्माप्तन स्थाम वर्ण श्री ऋषभदेवकी दि० जैन मूर्ति चतुर्थ कालकी है। इसके चारों ओर एक घातु पटमें अन्य दिगम्बर मूर्तियां अंकित हैं। इस मन्य मूर्तिका सबेरे जल और दूधसे न्हवन होता है फिर केशर चढ़ाते हैं व मुल्पोंसे प्रायः दक देते हैं। ७ से १२ तक दर्शन ठीक नहीं होता। पीछे सर्व अंगको शुद्ध करते हैं और केशर हुड़ानी पहती है जिससे चरणकी अंगुलियां किस गई हैं। १ क्लेक अनुमान फिर

नल और दूध चढ़ता है। पीछे सुर्वेण व रत्नोंकी आंगी व मुकुट पहनाया जाता है, प्रष्पादि चढ़ाए जाते हैं। रात्रिको आंगी उतार कर सारे अंगमें गुलाल उडाते हैं। आंगीका चढाना सं० १७०२ से शुरू हुआ ऐसा यहांके श्रावकोंसे मालुन हुआ। दिगम्बर जैन यात्री प्रतिमानीके अभिषेक समय दर्शन व पूना करते हैं। यहां चारों तरफ मंदिरोंमें दि॰ जैन बिम्न हैं जिसके प्रतिष्ठाकारक मुल्संघी व काष्ट्रासंघी भट्टारक हैं। यद्यपि यह सर्व मंदिर दिगम्बर **नैनियों**के हक्षोंके व्ययसे बने हैं पर अब इन सर्वक प्रबन्धका अधिकार उदयपुर राजाके आधीन ८ मेम्बरोंकी एक कमेटी करती है निममें उस समय २ वैष्णव व ६ इवंदाम्बर जैनी मेम्बर थे, दि० कोई नहीं था । मुख्य मेम्बर महेता मनोरसिंहजी, मगनलाल पूजावत्, महेता वखतसिंह हाकिम हैं। एक ही वेदी-में एक ओर क्वेताम्बरी टुमरी ओर दिग० पूजन होती है। गांव घविड़ासे धुलेब तक २ मीलका सस्ता बहुत खराब है। सेटजीने बड़े भावसे दर्शन किये तथा देखा कि यहां केवल एक हिन्दी मदरसा है जिसमें २ अध्यापक हैं, अधिकांश दि० जन छात्र हैं पर धर्म शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं है। सेठजीने वहांके लोगोंको बुलाकर समझाया कि जैन पाठशालाका प्रवन्य करें, उन्हें मासिक सहायता मी दी जायगी। पत्रव्यवहारका पता छगनलाल मेहना दुकान सेठ घनराज रतनचंद पोष्ट रिलमदेव जिला मेवाड छिललिया । यहां ईडरके पंचोंकी बनवाई हुई एक बड़ी धर्मचारला है जिसमें ठहरनेका आराम है। दिगम्बर यात्री बहुत आते हैं। यहांसे चल-कर परसाद गांवमें फिर आए। पाठशालाके लिये उत्तेनन करके

१०) नकद दो मासकं लिये दिये। फिर उद्यपुर आए। तालावके बीचमें राजा साहबका शिव महल देखा, जिसमें कांचकी नकासीका काम अति प्रशंसनीय है। यहां चितेरा पत्रालाल वरूद गोपाल मेबाड़ा सुतार कांनीकी हाटमें रहता है उसीके हाथका यह काम है। यहांके पहाड़ोंमें संगम्भर पाषाणकी खान है। यहां चिक्क्यों द्वारा पत्थरका सिमंट पिपवाकर राजा साहबके काममें आता है। यह बहुत उत्तम होता है। यदि मशीनमें तय्यार हो तो वह बहुत लामदायक हो जावे । रात्रिको सभामें बालविवाह कन्याविकय आदि पर भाषण हुए। शीतल्प्रसादजी और सेठजी दोनोंने बहुत जोर दिया। कई भाइयोंन कन्याका विवाह १२ वर्षसे कममें न करनेका प्रण लिया । औरोंने साध्यायादिके नियम छिये। सेउनी यहां हाकिन वखतसिंहनीसे मिले और कहा कि धुलेब मंदि-रकी प्रबन्धकारिणां कमेटीमें दिगम्बर नैनी भी मेम्बर होना चाहिये तथा सेठनीने प्रार्थना की कि दो मीलकी सड़क ठीक करा दी जावे। उक्त महाशयने कमेटी द्वारा विचार करना स्वीकार किया।

यहांसे सेठनी रतलाम आए और यहांके लोगोंसे मिले व स्कूल आदि देखे। सेठ पानाचंदजीकी रतस्त्रम बोर्डिङ्गकी इच्छा बागड़के हमड़ नातिके बालकोंको शिक्षा प्रदान करनेकी थी। रतलामसे बागइ फिका। करीब है इससे सेठनी रतलाममें एक बोर्डिंग

खोलना चाहते थे । १ दिन उहरकर मुस्त आए ।

अन तक फुलकौर कन्याशाला नहीं खुली थी। सेटनीने तुर्त एक मकान नवापुरामें ढूंटा और एक वृद्ध शिक्षकको तलाश किया: जो सकीरी कन्याशालामें पढ़ा चुका था तथा मईमें महूर्त किया जाय ऐसा निश्चय कर आप बम्बई आ गए।

इतने ही में फछटन स्थानमें मिती चैत्र सुदी ९से बिम्ब प्रतिष्ठा थी तथा बम्बई प्रान्तिक सभा और दक्षिण फल्टनमें बिम्ब प्रतिष्ठा महा० जैनसभाका नैमिक्तिक अधिवेशन था। और मानपत्र । समापति सेठ हीराचंद नेमचंदजी नियत हुए थे। यह सेठजीके मित्र थे तथा सेटजी दोनों समाओंके समापति थे इसके सिशाय भी फलटनसे लात सम्बन्ध था इसिंखें सेंडनी फल्टन जानेका विचार करने छगे। यह प्रतिष्ठा सेंट वस्ताराम पृतारामकी ओरसे हुई थी जो मरते समय १००००) पंचोंके आधीन कर गए ये। सभाका अधिवेशन चैत्र सुदी ११से शुरू हो गया था पर श्रीमान् सेठनी चेत्र सुदी १२को शीतलप्रसादनीके साथ पहुंचे । आपके स्वागतार्थ वस्तीके बाहर सैकड़ों जैनी पहुंच गएथे। मुख्य २ भाई मिल्ले फिर फल्टनवालोंने फूलोंकी माला गलेमें डाली। सेठजी सेठ हीराचंद नेमचंद्के साथ गाड़ीमें बैठे । दि॰ जैन प्रान्तिक और द॰ म॰ जैन सभाके वालन्टियरोंने घोड़ोंको गाड़ीसे हटाकर स्वयं गाड़ी र्खीचना शुरू किया। सेठनीको यह बात पसंद न आई। आप गाड़ीसे उतरने लगे तब वालन्टियरोंने उतरने न दिया और गाड़ीको स्वयं खींचते हुए धीरे २ वैंड वाजेके साथ ५०० से उत्तर भीडके मध्यमें सभामंडपमें लाए। उचासनपर बिराजमान कराके स्वागतकारिणी समाके सभापति सेठ रामचंद् हेमचंद् म्हसबड़ने स्वागतका भाषण किया जिसका समर्थन बलवंत बाबाजी बुक्टे सम्पादक " जिनविजय " ने किया और कहा कि आज आपने जिस व्यक्तिका इतना आदर किया है उसका क्या कारण है ? आप लोग विचारते होंगे सो इस सम्य मूर्त्तिके सन्मानमें इसका विद्यानुराग ही कारण है। आपने सबसे अधिक द्रन्य विद्या हीके छिये अर्पण किया है । नैनियों में अनेक आषसे भी धनाढ्य पढ़े हुए हैं पंरंतु परोपकारी और शिरोमणि आप ही हैं। सभाके अधिवेशन ता० २० अप्रैल तक हुए। जन संख्या ३००० से अधिक थी। ता० २६ अभैलको शीतलप्रसादने शी शिखरजीके दु:खको कहकर प्रस्ताव किया कि सभाकी ओरसे बंगले बननेके विरुद्ध तार जाना चाहिये। इसका समर्थन स्वयं सेठनीने किया और कहा कि अपने पृज्य महापर्वतकी सर्वस्व मूमिको रक्षित रखना हमारे भाइयोंका वर्तज्य है । प्रस्ताव पास होकर दोनों समाओंकी ओरसे तार दिया गया । समामें चंदेकी अपील होनेपर सेटजीने तीर्थक्षेत्र कमेटीको २०१), संयुक्त सभाको ९१) तथा पींनरापोल फल्टनको ५१) इस तरह ३०३) का दान किया। तथा सेठ हीराचंदने भी १०२) संयुक्त सभा व ११) विनरापीलको दिये। कोल्हापुर मर्कारने बन्दर मारनेकी मनाईका हुक्म जारी किया इससे घन्यवाद दिया गया । श्रीयुन नारायण गोविंद की वक मुंसिफ साहबके समापतित्वमें संउजी और सेट हीराचंद नेमचंदको सान-पत्र दिये गए। बास्तवमें इस समय ये ही दोनों वीर जैन समाजका अविद्यारूपी राक्षसकी सेनाको हटानेके लिये रामलक्ष्मणकी तरह उद्योगशील हो रहे थे अथवा सारे मारतकी जैन समा-जमें चंद्र और सूर्यकी मांति प्रकाशमान थे। रात्रिदिन परोपकार-तामें तनमन धन व्यय करना इस वीरोंका कर्तव्य था। इस उत्सवमें श्रीमती मगनबाई तथा वंकुबाईन स्थियोंमें उपदेश देकर ज्ञानमार्गकी वृद्धिकी। ता० २७ अप्रैलको एक महिला परिषद बड़ी घूमधामसे हुई। अध्यक्षस्थान श्रीमती कंकुबाईने प्रहण किया था। कई स्त्रियोंके भाषण हुए। ५०० भाषाप्रवेशकी पुस्तकें बांटी गई। स्त्री शिक्षार्थ कुछ चंदा भी हुआ। फल्टनमें एक धनाढच कुटुम्बके आताओं में नायदाद सम्बन्धी कुछ फूट पड़ी हुई थी। सेटनी और हीराच-न्दनीने दो दिन परिश्रम कर इस फूटको मेटकर ऐसा उम्दा फैस्सला कर दिया जिससे सर्वको समाधानी हुई। निष्टिश आफ धी पीसकी उपाधिको सार्थक किया।

फल्टनसे छोटकर सेठनी बम्बई आए ही थे कि सर्व दिगम्बर जैन संघकी एक सभा ता ० ६ मई १९०७ बम्बईमें सभा और की सोमवारकी रात्रिको दूसरे मोईवाड़ेके सेठकी सभापति । मंदिरनीमें हुई । सेठनीको ही सभापतिका आसन ग्रहण कराया गया । पंडित धन्ना-छाउनीन पर्वतरान श्री शिखरनीपर आनेवाले उपसर्गकी बात सविस्तर सुनाई तथा प्रस्ताव किया कि डिप्टो कमिश्नरको तार किया नावे ब बहांसे ९ महाशय ता० २९ मईके लिये जावें। मि० मालगावे आदिने पृष्टि की । सर्व सम्मतिसे नीचा लिखा तार मेना गया—

"Digambar Jain Community of Bombay protest against granting building leases to Europeans etc. on Parasnath Hill as it will cause extreme dissatisfaction to the entire Jain society. The whole hill being sacred nothing should be done there to hurt the religious feelings of the Jains, as carrying of flesh, wine and

other forbidden things on the hill is totally against Jain views, hence such proposal should entirely be dropped."

भावार्ध-नम्बईका दि॰ नैन संव पहाड़पर मकानोंके लिये प्रतिपयन आदिको पट्टे नमीन देनेके विरुद्ध है, क्योंकि इससे सर्ब नैन नातिको महान असंतोष होगा। पूर्ण पर्वत पवित्र है। मांस मिद्रा व अन्य निषेध्य पदार्थ पर्वतपर ले जाना जैनधमेंसे विरुद्ध है, कोई काम जैनियोंके परिणामोंको दुःखी करनेवाला न होना चाहिये इससे इस विचारको बिलकुल छोड देना चाहिये। यह ममामें प्रगट हुआ कि डिप्टी कमिश्नरके पास चारों ओरसे तार व अनियोंको वर्षा हो रही है। कलकत्ता, शोलापुर, सुरत, भावनगर, अहमदावाद, इन्दौर, मद्राम आदि प्रसिद्ध र स्थानोंसे तार पहुंच गए हैं।

इरनेहीमें डिप्टी किमश्नर हजारीकागका दूसरा नोटिस ता० २९ अप्रैल १९०७का आया कि हम ऐसी डिप्टी किमश्नरका कोई बात नहीं कर सक्ते जिनसे पर्वतके मालिक-दृमरा नोटिस। को हानि पहुंचे। जैनियोंका सिवाय मंदिरोंके पर्वतपर कोई हक नहीं है। यदि अधिक हक मांगा जायगा तो पट्टे देते हुए कोई भी शर्त जैनियोंके लामकी नहीं रख संकेंगे। यदि अदालती कार्रवाई न हो तो डि० क० पर्वतपर नैनियोंकी पूजामें हानि न पहुंचे इस बातका पट्टा देते समय स्मरण रखनेकी आशा कर सक्ते हैं। इस नोटिसको पड़कर सेटजी व अन्य भाई बहुत ही हताश हुए। कमेटीके महामंत्रीकी तरफसे ता० १० मईकी दस्तखती सचना जैनिमेत्र ता० १४ मई १९०७ में प्रमट की निसमें ग्रह भी बताया कि कलकत्तेके अटार्नी बाखू धन्मू-लालने लिप्टी कमिश्नर साहबसे मिलकर समझाना स्वीदार किया है। अन्य जैनी वकील भी ता० २५ को पहुंचे तथा सर्व भाई तन मन धनसे सहायता करनेको तथार हो जावें।

मई पासहीमें सेठजीके आता सेठ नवलचंद्रके सुपुत्र ताराचंद्रका विवाह सुरतमें शाह किसनदास अमीचंद्रकी सेठ नवलचंद्रके पुत्र पुत्री मानकौरसे बड़ी धूमधामसे हुआ। हाथी ताराचंद्रका विवाह। पर बरातका वरत्रोड़ा निकला था। पं० पासू गोपाल शास्त्रीन जन पद्धतिसे विवाह कराया था। सेठजीका सर्व कुटुम्ब सुरत गया था। जातिके कई जीमनवार हुए थे।

इस समयपर ता० २३ मई सन् ०७ को चंदावाड़ीमें सबेरे ९ को सेट हरीभाई देवकरणके प्रयोत्र सेट फुलकोर वान्याशा- हीराचंदनी शोलापुरनिवासीक सभापित्वमें लाकी स्थापना। एक महती सभा हुई। मूलचंद किसनदास कापिकचंद हीराचंदजीकी परलोकवासिनी प्रत्री फुलकोरके स्मरणार्थ कन्याशाला खोली जाती है, निमके लिये उक्त सेटजीने ९०००) एक मुद्दत प्रदान किये व दो वर्ष तक 'जो कमी रहे उसको पूरा करना स्वीकार किया है। इसमें व्यवहारिक शिक्षांके साथ कैनधर्मकी शिक्षा प्रदान की जावंगी। १९ महाशयोंकी एक प्रवन्धकारिणी कमेटी बनाई गई। सेठ चुन्नोलाल झंबरचंद तथा बाबू शीतलप्रसादने बालकोंकी अपेक्षा कन्याओं की शिक्षाकी

बहुत आवश्यका बताई। उसी समय दातारोंने ९८४) का दान किया, जिसमें सेठ नवलचंदने अपने पुत्रके विवाहोत्सवमें २५०) व सेठ माणिकचंद्जीने श्रीमती मगनबाईके नामसे १२५), छोटी पुत्री ताराबाईके नामसे १२५), व फुलकौरकी माताके नामसे १२५) इस तरह २७५) दान किये । फिर मर्व भाई कुंप कलश लेकर नवापुरा आए । शालाके मकानमें सरस्वती पूजन होकर २५ कन्याएं म-रती हुई जिनको णमोकार भंत्रके साथ२ पाठारम्भ कराया गया ।

ता० २५ मईको मधुबनमें सबेरे ७ बजे हनारीबागके डिल क० मि० वेरी माहबसे जैनी लोग मिले। हिप्टी कमिश्नरकी कलकतेसे बाबू धन्तृताल आदि, बम्बईसे लाला प्रमुद्धाल, पानाचंद् रामचंद् आदि, मुळाकात । फीरोज्युरसे छाला देवीसहाय, जैरुरसे सेठ

मर्बह्मखराम आदि व स्वं० लोग राय बद्रीदाम आदि एक माथ मिले । जैनियोंने बहुत कुछ ममझाया पर माहबने यही कहा कि बंगले बनना निश्चित हो गया है। मंदिरोंके पाम थोड़ी २ जगह छोड़ दी जायगी। आपछोग कल पहाड़पर मबेर मिछे। वहां बाबू धन्तूलाल आदि ८ महाराय पहुँचे । साहबने टोंकोके कुछ पाम ही बंगले बनानेकी बात कही। सबके होश दंग हो गए। इन लोगोंने ६ मासकी मोहरत मांगी पर माहबने कहा कि अगस्त महीनेमें छोटे छाट यहां आकर देखेंगे तब पट्टे दिये नायंगे। इनसे दो मानंक भीतर जो जैनियोंको करना हो कर लेवें। इप भयानक स्वयर-की सूचना कमेटीके महामंत्री--सेठनीको की गई। सेठजी महा दुःग्वी हुए। आपने ता० २ जुनको नैनमित्रमें एक सूचना सर्व नैनियोंके लिये प्रकट की कि डि॰ क॰ के पाम ४५० से अधिक तार पहुंचे व लोगोंने समझाया भी तब भी विचार नहीं बदला है। ता॰ २५ जूनके पहले२ भी अर्जियां पंचायतोंसे जावें।

सेठजीके मनमें रात्रिदिन अन शिखरजीकी रक्षाका ही ध्यान था। आपने ता० ९ जूनको बम्बईमें शिखरजीके हीराबागमें एक आमसभा एकत्र की और निमित्त सभा। खुर्जावाले सेट रामस्वरूपनीको सभापति नियत किया। बम्बईसे जो डेप्युटेशन था उमुका हाल दोशी पानाचन्द्र रामचंदने कहा। बड़े हाट व छोटे हाट व स्टेट सेकेटरीको अर्जी भेजनेके लिये और एक डेप्युटेशन जानेके लिये कमेटियां बनीं। इम कमेटीने अर्जी तैय्यार करके तीनों नगह नम्बई सभाकी ओरसे ता. १४ जुनको अर्जी भेजी । सेठजीन जैनमित्रमें प्रगट कराया कि ताः २५ जूनतक और भी पंचायतें ऐसी अर्जियां या तार भेजें। ता. १८ जुनको फिर भी हीराजागमें एक सभा हुई उसकी सम्मितिसे भारतवर्षीय दिगम्बर भैन तीर्थक्षेत्र कमेटीकी तरफसे सेटजीन एक तार बड़े लाट महोदयकी सेवामें भेना, जिसका आज्ञय यही था कि उस पूज्य पर्वतपर मांस मद्य शिकारादि नहीं हो सक्ते इससे छोटे छाट साहबसे सुचना की जावे कि वे इस प्रस्तावको बंद रक्खें।

आरानित्रासी बाबू देवकुमारजी दक्षिणकी यात्रा करके बम्बई आए थे। ताः २० जुनको दूसरे बम्बईमें स्त्री सभा। भोईबाड़ेके जिन मंदिरमें बाबू साहबकी धर्मपत्नी गुलाबदेईकी अध्यक्षतामें एक स्त्रीसमा हुई उसमें श्रीमती मगनबाईनीने धर्मशिक्षा और गृहस्थधर्मपर प्रनावशाली न्यारूयान दिया तथा प्रति मास सभा करनेका निश्चिय किया गया।

सेठ माणिकचंद्जी हर मनय पवित्र पर्वतराजके उपपूर्ग लाट साहेबके आनेकी दूर करनेकी फिकमें ही रहते थे। ताः मुचना। अधिवेशन करना विचार कर सर्व मेम्बरों ब ग्वास २ भाइयोंको बुलानेके लिये खास पत्र लिखे तथा पत्रोंमें प्रगट कराया कि छोटे लाट अगस्त माममें शिखरनी नावेंगे सो पर्व पंचायतोंसे प्रतिनिधि भेजे जाने चाहिये।

सेठ माणिकचंद्त्री बम्बईसे शीतलप्रसादनीको लेकर खुरने जाने वाले थे इसी बीचमें बाबू जबलपुर बोर्डिङ्गका देवकुमार आरानिवासीस मी आपने प्रार्थना-उन्मय और १०००) की कि आप मेरे साथ चर्छ । पहले जवलपुर बोर्डिङ्गके वार्षिकोत्सवमें दारीक हों फिर का दान। खुरना चर्ने। बाबू साहब सकुदुम्ब ये और दक्षिणकी यात्रामें बहुत दिन लगा चुके थे वहां न्नमणकरः मुडबिद्रीके प्राचीन प्रंथ भंडारकी दुरुस्ती कराई । मूड-बिद्दी व कारकलमें संस्कृत पाठशालाका धुर फंड कराया आदि अनेक उत्तमोत्तम कार्य किये तथा बम्बईमें भी एक बड़ा सरस्वती भंडार खोलनंके लिये श्रुपंचमीके दिन समा द्वारा उद्योग किया था, जिसमें नावू साहबने ५ वर्षके लिये २५०) वार्षिक तथा सेट माणिकचंदजीने १२५) वार्षिक स्वीकार किया था। सेटजी श्रीमती मगनबाई ललिताबाई आदिके साथ जबलपुर पधारे । ता०

२५ जून १९०७ को बाबू देवकुमारजीके सभापतित्त्वमें बोर्डिंगके बार्षिकोत्सवकी सभा हुई। रिपोर्ट सुनकर सर्व भाई कार्य्यसे बहुत प्रसन्न हुए और उसी समय २०८५) का चंदा हो गया, जिसमें १०००) सेटजी वं १०००) सिंगई नारायणदासजीने दिये। विदेशी गरीब छात्रोंको वहीं सहायता देनेके लिये १०००) के करीब छात्रवृत्ति फंड हुआ। इसमें भी सेटजीने २५०) और बाबू देवकुमारने ५१) दिये।

बाबू देवकुमार जीके छोटे भाईकी विधवा स्त्री चंदाबाई बैप्णव धर्मसेवी वृन्दावनिवासी माता पिताकी पुत्री जवलपुर में स्त्री होकर भी देव समान धर्मात्मा देवकुमार के मभाएं। कुलके प्रसंगसे व अपने पुज्य पिता बाबू नारायणदास बी. ए. द्वारा दी हुई हिन्दी और संस्कृत विद्यांक ज्ञानबलसे जैनधर्मकी परीक्षा कर उसे ही अपने बीवनका दृद्तासे आभूषण बनाकर जैन स्त्रीसमाजमें ज्ञानप्रचारकी भावना करनेवाली भी मौजूद थीं। ता० २३, २५, २९ को स्त्रीसभाएं बड़े जोर—शोरके साथ हुई जिसमें लिलताबाई मगनबाई व चंदाबाई तथा अन्य जवलपुरकी बाइयोंके व्याख्यान हुए। कन्याशा-लाएं यहां चल रही थीं। परीक्षा लेकर पारितोषिक बांटा गया व २८१॥) का नवीन चंदा भी स्त्रीसमाजने दिया। लेडी सुप० ट्रेनिंग कालेज भी ता० २५ जुनको पधारीं थीं।

बाबू देवकुमारजीके प्रयत्नसे जबलपुरमें शिखरजीके उपसर्ग निवारणार्थ रक बृहत् सभा हुई। एक जबलपुरमें शिखर- कमेटी बनी। सिंगई नारायणदासजीने जीकी सभा। संस्कृतशाला खोलना स्वीकार किया व एक मोजनालय भी खोला, जिससे असमर्थ दिगम्बर जैनी ३ दिन तक मोजन पा सकें। सेठ माणिकचंदनी नक्लपुरसे सीधे खुरना आए। स्टेशनपर श्रीमान् पंडित सेठ मेशाराम-जी बहुतसे माइयोंके साथ उपस्थित थे। सेठनीका बहुत सन्मानसे स्वागत करके एक उम्दा कोठीमें ठहराया। मुख्य २ बहुतसे भाई आए थे। सर्वका रानीबालोंने खान पानादिसे खूब ही सरकार किया।

ता. २८को राय बहाद्र सेठ अमोलकचंद्जीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें शिखरजी रक्षार्थ भारी चंदाके शिक्षरजीके रक्षार्थ करनेकी बात हुई। यह भी तय हुआ कि रुपया १००००)का दान। खर्च करके कुछ पहाइको अपने कक्जेमें कर लिया नाय इसके लिये २८ महाशयोंकी कमेटी बनी और चंदेकी सूची खोली गई। जब सेटनीने सर्वसे निवंदन किया कि आप छोग योग्य रक्तम कहें तब आध घंटे तक कोईने कुल न कहा । लाला देवी सहाय फीरो नपुरबाले दिखरजीकी रक्षार्थ बड़े ही प्रयस्तशील थे। आपने सर्वसे पहले ५१००) कहे तथा अपने साथके लाला डालचंद्नीकी ओरसे ५५००) कहे। तब सेट माणिक-चंद पानाचंद बम्बईकी ओरसे सेठनीने १००००) कहे, तब खुरने वाले सेठ हरमुखराय अमोलकचंदने १५०००) लिखाए। लाला रूपचंद सहारनपुरने ५१००) कहे, लाला मुलतानसिंह दिहलीने ४१००) कहे । लाला ईश्वरीपसाद दिहलीने २५००) कहे । बावू प्यारेलाल वकील दिहलीने १५००) कहे। लाला देवीसहाय सोहनलाल रावलपिंडीने २,५००) कहे । इस प्रमाण चंदा शुरू हो गया । वहांसे सेठजी अजमेर गए । वहां रायमहादुर सेठ नेमीचंदजीन मी १५०००) भरे।

समामें सेठ हुकमचंदनी ईन्दौरसे नहीं आए थे, तब सेठनी इन्दौर गए। वहां रात्रिको बड़े मंदिरनीमें सेठनी इन्दौरमें। समा हुई। शीतलप्रसादनीने सर्व हकीकत सुनाई, तब सेठ हुकमचंदनीने सर्वसे सम्मित करके तुर्त २५०००) का चंदा इन्दौर पंत्रायतीका कर दिया। यहांसे सेठनी बम्बई लौटे। पत्रद्वारा चंदका उद्योग किया, तब शोलापुर पंत्रानने २५०००) व जैपूर पंत्रानने २१०००) के चंदेकी स्वीकारता मेनी। इसी तरह सेठनीके बार बार पत्रव्यव-हारसे बड़ी रकमें और मी स्वीकृत हुई जैसे—

९५२०) पंचान जिला बिजनौर मा० साहु सलेखचंद जुगमं-द्रलाल, नजीबाबाद

५०००) पंचान गया

२५४१) ,, मऊ छावनी

२१००) राना ज्ञानचंद, सिकन्द्राबाद

२०१५।/) पंचान, नसीराबाद

२०००) ,, देहरादून

१५००) श्रीमंत सेठ पूरनसाह, सिवनी

११००) पंचान, बड्नगर

११०१) ,, ललितपुर

१०७३) ,, नीमाङ् प्रांत

१०७१) ,, पंदरपुर

१०३१) ,, अस्रवर

१००१) रा० रा० हरधर घरणप्या, रायचूर

१००१) राजा फूलचंद, लक्कर

१०००) पंचान, बनारस

१२००) ,, सादरा (गुजरात)

२०००) ,, बांसवाड़ा, निला उदेपुर

२५००) ,, ईंडर

२०००) मित्रसेन नंबूपसाद सहारनपुर

२१००) बद्रीदास दरबारीलाल इच्छाराम क० अम्बाला

१०-१५ दिनके भीतर सेठ माणिकचंदने अपनी दानवीरता व उदारताके असरसे करीव दो लाख

मेठजीके उद्योगसे क्षयेका चंदा कर लिया। जो स्वयं े लाखका चंदा। दान करता है वह दुसरोंसे भी दान करा मक्ता है । सेठनीके वननोंको उहांघन करना

महज बात नहीं थो। जिससे जो कहते वह मान लेता था। सेठजी बड़े न्याय चित्त, विचारवान, गंभीर, सहनशील, परिश्रमी तथा धर्म व जातिकी सेवार्थ अपने तनको विदेश भ्रमण आदिके अनेक कष्ट देकर भी न्योछावर करनेवाले थे। यह इन्हींकी दम थी जो बातकी बातमें इतना भारी चंदा हो गया । वृद्ध लोग कहते हैं कि जहां तक हमारा होश है इतना मारी चंदा कभी नहीं हुआ था।

> श्रो तार तीर्थक्षेत्र कमेटीने ता. १८ जूनको बड़े छाट साहबकी भेवामें भेजा था उसका जवाब जी. बी.

बड़े लाटका पत्र । एच. फेल डिग्रटी सेकेटरी गर्वनमेन्ट आफ इन्डियाने अपने पत्र नं० १७४९ ता. १६ जुलाई १९०७ को सेटनीके पास इस आशयका मेना कि " छोटे छाट पुरी नांच करने नांयगे वहां नैनियोंको अपना हाल कहनेका पुरा मौका दिया नायगा, तथा नव तक छोटे लाट नांच न कर लेंगे वंगलोंके लिये पट्टे न दिये नांयगे "-वे कुछ वाक्य ये हैं— (I am to add that no action whatever will be taken towards granting leases on the Hill until the enquiry has been held by His Honor the Lieutenant Governor.)

सेठजीन बातको बढ़ते हुए देखकर बम्बईमें सलाह की कि
यदि राजा पालगंज द्वारा बंगलोंकी इन्कारी
सेठजीका परस्पर हो जाय व द्वंताम्बरी लोग मिलकर उद्योग
निबदानेका प्रयत्न । करें तो शायद शीघ्र यह उपसर्ग दूर हो
इसलिये आपने मिती आषाड़ सुदी ४
ता. १४ जुलाईके दिन बम्बईसे अपने भानजे सेठ खुकीलाल
झावेरचंदको लाला प्रमुद्यालजी, सेठ पदमचंदजी, मि. चुलीलाल बी. ए. सुप० कैन बोर्डिंग बम्बई, आदि भाइयोंके साथ
गिरीडी भेजा। आरासे बाबू देवकुभार व बाबू किरोड़ीचंद भी आए।
बहुत कुछ चेष्टा की। राय बदीदास कलकत्ताकी असम्मतिसे दि० व द्वं० में मेल न हुआ और न राजाही के द्वारा कोई सफलता हुई।

इस समय वहां वर्षात बडीभारों पड़ी थी। पालगंत जाने आनेमें वर्षाकी बाधा इन सब लोगोंने सहन की, क्योंकि बराकर नदीको पार करना पड़ता है जो वर्षातमें बहुत बढ़ जाती है। आबोहवाकी खराबीसे करीब २ सर्व पार्टी बीमार हो गई। सेठ चुनीलाल झवेरचंदको कलकत्तेमें टांगमें ऐसा फोड़ा हो गया निभसे दुःखित हो वे सर्वको छोड़ सीधे बम्बई आए और. बीमार हो गए।

ताः १ अगस्तको फिर पहाइपर कमिश्नर साहब आए। उस वक्त भी तीर्थभक्त बाबू धन्तूलाल अटानीं क मिक्नरसे मुलाकात । सेठ परमेष्टीदास व बम्बईके लोग आदि मिले । सब लोगोंने इन्कार किया कि हम

पर्वतकी पवित्रताकी कुछ भी हानि नहीं महन कर सके।

बमबईके सेठ परमचंद्र व प्रमुद्यालजी भी बीमार होकर होटे व कई मासतक बीमार रहे। चुन्नीलाल सुप० का मगन फिर गया । वे बहुत दिनों तक मेड हाउममें रहे । जब २ जीवोंके तीत्र कर्मका उद्य हो आता है तब तक तप, ध्यान, पूजा कैसा भी वर्म कार्य कर उस उद्यजनित कर्मका फल भोगना ही पड़ता है। बड़े २ मुनियोंको भी तीत्र कर्मीट्यसे उपसर्ग सहना पड़ा है । संटजी चुन्नीछालको बीमार देख बहुत दुःखित हुए तथा योग्यरीतिसे द्वाईमें छग गए । इतनेमें सेठजीको डि. क. हजारीबागसे मूत्रना मिली कि लाटमाहब ता० २८-२९-३० अगस्तको पहाड़ पर आवेंगे । सेटनीन ४ अगस्तको सर्व नैनियोंको प्रतिनिधि भेननेके लिये जैनमित्र ता. ११ अगस्त द्वारा सूचना की ।

सेठ माणिकचंदजीको भी ता० २८ के छिये कई दिन पहलेसे जाना था पर सेठ चुन्नीलालको ऐसी नीमारीकी दशामें छोइकर नाना आपने ठीक नहीं ममझा और चुन्नीछालजीसे अपने न मानेकी बात कही तत्र साहसी तीर्थभक्त चुन्नीछारने कहा-'भामा, मारी फिकर करता ना, तमे शिखरजी जाओ अने पहाड़नो झगडो मटाहो " यह धीरनके शब्द सुनकर सेटनीने जानेका निश्चय किया । सेटजी शीतलप्रसादनी व मैनेनर कमेटीको लेकर शिलरनी आए और यहां आनेवालोंके आरामका प्रबन्ध कराने लगे । सेठ मेबारामजी भी कई दिन पहलेसे आगए ये और खास २ लोगोंको अर्जन्ट तार देकर बुलाया था। ता० २५ से २७ तक २५०० दि॰ जैनी भिन्न २ प्रान्तोंके आगृष् थे। बंगालसे बा. धन्त्रहाल अटानी, सेट परमेष्टीदाम आदि, पंताबसे लाला ईश्वरी-प्रसाद, लाला रामलाल फीरोजपुर आदि, युक्त्रान्तसे बा० जुगमन्धर-दास सहायक महामंत्री महासभा, रायबहादुर नत्थीलाल खुरजा आदि, मालवासे सेट हुकमचंद्र, अमोलकचंद् आदि, राजपुतानासे रायबहाद्र सेठ नेमीचंद्र व रा० व० वमंडीलाल आदि, बम्बईसे सेंडजी व चौगले बी. ए. एलएड. बी. बकील बेलगाम आदि, मध्य प्रदेशसे सेठ पूरणसाह, मुखलालमल, नेमिलाल आदि, दक्षिणसे अनन्त राजय्या मैसूर, महारक छक्ष्मीसेन, राजा ज्ञानचंदजी आदि ।

बम्बईसे सेटजी शिखरजीके लिये रवाना हुए थे कि एक दिन बाद ही मिती श्रावण वदी १ सं० १९६३ सेट चुक्कीलाल झवेर- (गुज०) तारीख़ २४ अगस्तको प्रात:काल चंदका स्वर्गवास । श्रीजिनेन्द्रका व शिखरजीका ध्यान करते सेट चुक्कीलालका आत्मा इस क्षणिक देहको छोड़ स्वर्गवाम पद्यारा। आपने मरते समय ५०००) वर्मादेके निकाले।

यह बड़े भारी तीर्थमक्त थे। इन्होंने तीर्थोंके उद्धारके खिये बहुत कुछ परिश्रम उठाया था। श्री शिलरनी और पानापुरी- जीके दिगम्बर जैन कारखानोंकी व मंडारकी रक्षा आपके बड़े भारी जातीय परिश्रमका फल है। ३० वर्षकी उमरसे आप बराबर नियमसे म्वाध्याय करते थे। सं० १९४२ से १९५५ तक श्री शिखरजी, गोम्मटस्वामी, गिरनारजी, श्रेत्रुंजा, केशिया आदिकी अनेक तीर्थयात्रा करके धर्ममें द्रव्य लगाया। श्री गजपंथांजी और शोलापुरके बम्बई धांतिक सभाके उत्सवींका बहुत ही प्रशंसनीय प्रबन्ध सेट चुन्नीलालने किया था। इनकी बुद्धि बहुत तीक्ष्म थी। व्यापारमें भी बहुत कुशल थे। यह सेठ माणिकचन्दके कुटुम्बके हर काममें दाहने हाथ थे। इनके दो पुत्री हुई थीं, जिनमें इनके मने समय एक पुत्री कीकी बहेन २६ वर्षकी मौजूद थी।

सेट चुन्नीलालकी धर्मपत्नी जड़ावबाईकी धर्ममें विशेष लग्न है। थोड़े दिन हुए इसने २०००) खर्चकर सुरतके शांतिनाधनीके मंदिरजीमें चांदीकी वेदी बनवाई है तथा मांगीतुंगी और पावागढ़में मंदिरों में संगममंर लगवाया है।

यह स्वाध्याय पूजन नित्य करती है व धर्म कार्यों में नित्य थोड़ा बहुत दान करती रहती है । स्त्रीशिक्षाकी उत्तेजनापर मी ध्यान है । सेट चुन्नीलालने केवल ३९ वर्षकी आग्रु पाई । इतनी उम्रमें आपने जैन समाजकी जो सेवा बनाई उससे यह समाज आपका सदा कृतक रहेगा । तीर्थमिक्तमें अपूर्व परिश्रम करने व मरण समय श्री शिखरजी हीका ध्यान करनेसे अवस्य आपको उत्तम गतिका लाभ हुआ होगा

सेंटजी मधुवनमें तीर्थरक्षामें अनुरक्त थे कि ता० २६ को तार पाया कि सेठ चुन्नीलालका देहान्त सेठजीको चुन्नीळाळ- हुआ । सुनते ही आपको यकायक मूर्छा की मृत्युकी आ गईं। जैसे किसीका दाहना हाथ टूटनेसे दुःख होता है ऐसा दुःख सेठजीको हुआ.। खबर ! थोड़ी देरमें सचेत हुए, फिर भी शोकमें बैट गए । आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहने लगी । सेठजीको यह शोक इस कारणसे नहीं हुआ था कि वह इनके भानजे थे, पर शोकका कारण यह था कि तीर्थोंकी रक्षामें व बम्बई प्रान्तिकसभाक कामों में जो अपूर्व सहायता प्राप्त होती थी वह बंद हो गई। शीतल्प्रसादजी पासमें ही थे। सेटजीको अनेक दृष्टांत देकर संसार-की असारता व शरीरकी क्षणभंगुरता समझाई तथा तीर्थभक्तिमें निश्चल टटे रहनेकी प्रेरणा की। सेठजी स्वयं भी विचारशील थे। अंतर्भदूर्त ही क्लेशित परिणामी रहे फिर तुर्त सचेत होकर अपने उसी तीर्थभक्तिके काममें छग गए। किसीसे उस बातका वर्णन न किया, न कोई जान ही सका।

शिखरजीमें ता० २६ को बीसपंथी कोठीमें दिनके एक
सभा लाला सुलतानसिंह दिहर्लीके
शिखरजीपर लोडे सभापतित्वमें हुई जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटीद्वारा
फेज़रका आना। तयार किया हुआ मेमोरियल शीतलप्रसादजीने सुनाकर मंज़ुर कराया और मेम्बरोंके
दस्तखतसे पहाड़पर लाट साहबके पास दूमरे दिन भेजा गया।
फिर लाट साहबसे मिलनेके लिये प्रतिनिधियोंकी एक नामा-

वली लिखी गई। रात्रिको भी मंदिरजीमें सभा हुई। कुल नाम ६५ चुने गए। ता० २७ को सबेरे छाट साहब आए। दिगम्बरी मंदिरबी व धर्मशालाका निरौक्षण कर पर्वतपर एक बंगलेमें गए तथा ता० २८ को सबेरे प्रतिनिधियोंको मिछना था। छाट साहबने थोडे ही आदमी बुलाये थेतब ६५ मेंसे २८ नाम आंटेगए। सबेस होते ही कोई डोलीपर कोई डोली न मिलनेसे पेउल रबाना हो गए। राय **व० घपंडीलाल, लाला ज्ञानचंड, सेउ हुक्तमचंड, बाबू धम्मूलाल अटार्नी,** राय० व० नत्थीलाल, लाला रामलाल आदि १५ दिग० ठीक सम्य पर पहुंचे उनको लेकर लाट साहब पार्धनाथस्वामीकी टॉकसे कुंध-नाथस्वामीकी टोंक तक आए फिर सीतानांल तक आए। खेता-म्बरियोंको भी बुलाया था पर इनमेंसे कोई न पहुंच सका। उन दिन सर्व ही दि ० यात्री घोए हुए घोती इपट्टे पहनकर पूनाको सामग्री लंकर पहाड पर बन्दनार्थ गए थे। लाला साहबके दिलमें चारों ओर नम्न सिर यात्रियोंको पूना करते देखनेसे बढा भारी प्रभाव पड़ा । बहुतोंसे लाट माहबने बात भी की । इमदिन बहुतसे यात्रि-योंने उपवास किया। सेठनी पैरमें चोट होने व डोली न मिलनेसे पर्वतपर न जासके । जैनियोंने अच्छी तरह पर्वतकी पवित्रता समझाई। हाट माहब २ बजे बंगलेपर होटे तब राय बद्रीदास आदि ७-८ क्वे व कुछ दिगम्बरी मिन्ने । इस अवसर पर क्वेताम्बरी करीब १०० के ही कुछ आए थे जब कि दिगम्बरी २५०० के करीब जमा हुए थे। इस समय कोई बल नहीं की। ता० २९ को सबेरे लाट साहब नीचे उतरे । तथा दिगम्बरी मंदिरमें कपड़ेके जुते पहनकर गए। वहांत आ रक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरसे मिले। उन्होंने संस्कृत श्लोक कहकर आशीर्वाद दिया। बहांसे मंडपमें आए निसमें सर्व दिगम्बरी कायदेसे बैठे थे। प्रतिनिधियोंसे परिचित होनेपर लाला पुलतानसिंह रईम देहलीने एड्रेम पड़ा और मनोहर कास्केटमें भेट किया। यह कलकत्तेमें बाबू घन्नूलालजीकी मार्फत तय्यार हुआ था। इसके उत्तरमें लाट साहबने एक स्पीच दी निसमें निनयोंको संतोष नहीं हुआ तथापि आखरी हुकम बंद रक्खा। लाट साहबके जानेपर तीन बजे बड़ी भारी सभा सेट प्रणसाहके सभापतित्त्वमें हुई निसमें वरातकी समामें पर्वत रक्षार्थ चंदेकी उत्तजना दी गई ब पर्वत रक्षार्थ एक कमेटी बनाई गई जिसका मुख्य भार बाबू घन्नूलल और सेट परमेष्टीदासको दिया गया। लाट साहब चलते वक्त दिगम्बरियोंसे बात करनेको दो प्रतिनिधिके नाम मागे गए थे सो इन्हीं दोनोंके नाम सेटजीने भेन दिये तथा कलकत्तेमें पर्वत रक्षाका दफ्तर हुआ जिपमें मौजीलाल क्रकी नो बम्बई प्रान्तिक समामें था उसे नियत कर दिया।

सेटनी शिलरजीसे चलकर गयाजी होते हुए काशी आए।

बहां ता० ३ सितम्बरको प्रथम वार्षिक
काशी स्याद्वाद पाठ- अधिवेशन था। यद्यपि सेठजीको चुन्नीलालशास्त्रके वार्षिकोत्सव जीके वियोगका बहुत दुःख था परंतु आप
में सेठजी। स्याद्वाद पाठशांलाके समापित थे, आपने ही

यह मिती नियत की थी इससे आपको
आना ही हुआ। वास्तवमें सेठजीमें धर्म व जाति प्रेम ऐसा ही
या जिससे वह अपने शोकादि कषायके निमित्तसे कमी धार्मिक
कार्मोको बंद नहीं कर सक्ते थे। इस समय शिखरजीसे छौठते हुए



सेठ चुन्नीलाल जवेरचन्द्र बम्बई.

(देलो एष्ठ ५२३)

J. V. P. Surat.

छाला जुनमन्धरदास ननीबाबाद आदि अनेक सज्जन काशी आ गए थे । पाठशालाके मकानमें ही सभा हुई । बाबू देवकुमारजीके पेश करने और शीतलप्रप्रादनीके अनुषोद्धसे पंडित नागपुरने सभापतिके आसनको ग्रहण किया। पं० माणिकचंद, उदयलाल, कुमारैय्या, निद्धामल, मन्खनलाल आदि छात्रोंक व्यास्त्यान हुए। दो वर्षकी रिपोर्ट सुनकर सर्वको बहुत संतोष हुआ। छात्रवृत्ति फंडको अपील बा० देवकुमारने की। चिरंनीलालजी हिमारने अनुमोदन किया तब उसी समय करीब ५००) के फंड हो गया जिसमें २००) सेठ माणिकचंदजीने व १००) देवकुमार-जीन दिये । फिर अध्यापकोंको भेट व छात्रोंको इनाम दिया गया निममें वर्तमानमें ममाममें काम करनेवाले विद्वानीको उप दिन विद्यार्थीकी अवस्थामें ७) माणिकचंदनी, ६) गणेशप्रसादजी, ३) कुर्मारेया, २) त्रजलाल, २) बद्दीप्रमाद आदिको मिल्ले तथा नागपुरके सेठ नमीसाहने व्याक्यानोंसे प्रमन्न हो माणिकचंदजीको ४), कुमारैव्याको ४), उद्यलालको २), मक्लनलालको २), निद्धामलको २) आदि पारितोपिक दिया । काशीसे सेटनी बम्बई आए । और शेव भादों मास व दशलाक्षणी धर्मस्वनमें विताई।

सेट प्रे॰ मो॰ दि॰ जैन बोर्डिंगका ४ था वार्षिकोत्सव आसीज सुदी १४ ता० २० अक्टूबर अहमदाबाद बोर्डिंग- १९०७ को था। उसमें शामिल होनेके का वार्षिकोत्सव । लिये सेठनी शोतलप्रमादनीके साथ अहम-दाबाद आए। बम्बईसे माता रूपाबाई, छल्लुभाई छक्ष्मीचंइ व परोपकारी मंत्री परीख छल्लुभाई प्रेमानंद एछ० सी० ई० आदि आए थे। और सूरतसे मूलचन्द किसनदाम कापड़िया भी आए थे। श्रोफेसर आनन्दरांकर बापूभाई ध्रुव एम० ए० एहएछ० बी० के प्रमुखत्वमें जल्ला हुआ । गुजरात विभागसे ४०० गृहस्य आए ये । प्रमुख साहत्र व चीतृपाई माघोमाई सी० आई० ई० ने विद्यार्थियोंको बहुत बोधदायक उपदेश दिया । बोर्डि-गके सहायतार्थ ११००) के अनुमान द्रव्य आया । इस समय छात्र ३५ थे।

सेठनीने रात्रिको आमोद्वाले हरजीवन रायचंद्को 'दिगम्बर जैनः पत्र न निकालनेके कारण बहुत कुछ " दिगवंर जैन ?" कहा तब हरजीवनजीने बिलकुल इनकार कर मासिकक लिये दिया। सेठनी उदास हो गए और विचारन लगे कि किसको सम्पादक किया जाय। प्रयत । इतनेमें शीतलप्रशादनीने सुरतनिवासी मृलचंद किसनदास कापिड्याकी तरफ इशारा करके कहा कि यह नवगुवक उत्पाही, धर्मप्रेमी व कुछ शास्त्रका ज्ञाता मालुम होता ह, उसे ही सम्पादक बनाना चाहिये।

पहले तो सेठनीके ध्यानमें यह बात नहीं आई चुप हो रहे, तन शीतलप्रसादजीन अपने अनुभवसे कहा मूलचन्द किसनदास कि यह उत्साही हैं। यदि उद्योग करेंगे तो कापड़ियाको संपा- अवस्य पत्रको चला छेंगे। तब सेठमीने दक होनेकी सेठ- मूलचन्दनीको सम्पादक होनेको कहा, जीकी सूचना। सुनते ही मूहचंदनी चौंक पड़े और बोले कि मैंने आजतक कभी एक लेख भी नहीं लिला है। मुझे इसका अनुभव निलकुल नहीं है। मैं व्यापारमें

फंसा हं। मैं पत्रकी सम्पादकी कैसे कर सकुंगा ! तब सेठनीने समझाया कि तुम साहस करो तथा हरजीवन रायचंद्र नी सहायता करेंगे । छोटेखाल अंकलेखरने भी लेखादिसे मदद देनेका बादा किया फिर भी मूलचंद्जीने इनकार किया तत्र शीतलप्रसादजीने कहा कि साहस करो मासिकपत्र चलाना कोई बात नहीं है हमने तो साप्ता-हिक पत्रको लौकिक बहुतमा काम करते हुए भी चलाया है। बारबार कहनेसे मूळचंद्जीको अंतरंग झान शक्तिन गवाही दी कि त् कर सकेगा। मूलचंद्जीने उस समय चेननसे इन बातको स्वीकार कर कहा कि में मुरत जाकर इसके लिये यथाशक्ति प्रधास करूँगा । शीतलप्रसादजीने पीठ ठोकी । आज उसी मूलचंद्जीने इस दिग-म्बर जैन पत्रको इस मभाके पीछे ही कार्तिक मार्गशीर्पका मम्मिलित अंक निकालकर व बराबर उन्नत रूप व एक समान समय पर प्रगट करने रहकर इस सीमाको पहुंचा दिया है कि दिगम्बर जैन ममानके सर्व पत्रोंके ग्राहकोंसे अधिक ग्राहक इस पत्रके हैं अर्थात अनुमान २००० हैं और इसे साधारण मर्व ही देशक जैनी भी रुचिसे होते हैं। हिन्दी भाषी देशमें भी इसका अच्छा प्रचार है। प्रति वर्ष खास अंक अनेक विद्वानोंके उत्तमोत्तम लेख व अनेक चित्र सहित १५० व २०० सफोंका निकालकर अच्छा सन्मान प्राप्त किया है । जैनियोंके और पत्र हरवर्ष नव प्राटा सहन करते हैं तब यह पत्र ही नका करके उसे धर्मद्रव्य समझ उसे पत्रकी विशेष उन्नति व उपहारकी पुरत्कोंके देनेमें लगाता है। इस बोर्डिंगमें नैत्यालय शुरूसे ही था। यह सेउजीका कायदा रहा है कि जि-तने अत्र बोहिंगमें रहें वे दुर्शन अवश्य करें। यदि मंदिरनी निकट नहीं है तो चैत्यालय अवस्य होना चाहिये। इसी भावसे बम्बई बोर्डिंग व कोल्हापुर बोर्डिंगमें चैत्यालय था वैसा ही यहां हुआ था। इसकी शोभा माता रूपाबाईके द्वारा दिनपर दिन बढ़ती थी। इस वर्ष माताने चांदीका लन्न, कटोरी व नर्मन सिलबरका कलम मेट किया था।

सेठजो यहांसे लल्लुभाई लक्ष्मीचन्द और शीतलप्रसादजी-को लेकर श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र रवा दि० इबे० की फूट ना हुए । साथमें बम्बईके स्वे० भाई रायचन्द की यात्रा। था कि तारंगानीश्र एक कुंड है जिसकी
मोहरीसे दि॰ क्वे॰ किया ना रते हैं।
उस मोहरीको दि॰ कोठोके आदमी हैं किया ना हते थे।
क्वे॰ के आदमियोंन जगहा करके हैं हिंदा श्रीको स्थाप विकास किया है। गई। इसीको परस्पर निवटानेके लिय के जास्त्र था। ताः २१ आकटुबर ०७ को गुजरातके बड़नगर स्टेशने, आए। वहां स्वे० सेठ फतहचन्द्र सांकलचन्द्रजी अनेक' भाउयोंक साथ स्टेशनपर मिलन भाए थे । उस दिन उन्हींके यही ठहरे । उन्हींने ही कचा रसोई बनवाई थी जिसको ३वं० व दि० भाइयोंने अलग २ बैठकर एक साथ खाई थी । यहांसे ११ मील गाडीपर तलहटी आए । वहां कोई आश्रय स्थान नहीं था। पहाड़पर १ मील चढ़नेसे कोठी व धर्मशाला आती है यहां दि० के २ मंदिर हैं। एक बहुत प्राचीन है जिसमें मूलनायक श्री संभवनाथ स्वामीकी बहुत मनोज्ञ संबत रहित प्रतिमा है। दूसरा मंदिर भी आदिनाथ स्वामीका शोलाप्रस्के सेटका बनवाया हुआ है इसीके आसपास ४ बेदियां हैं। हवे॰ का एक बट्टा मंदिर २० लाखकी लागतका कहा जाता है। सेटजीकी खबर पाकर सेट पुनमचंद्र मांकलचंद्र आदि महाशय इंडरके व सुदासण, दांता, पाटवास, खेरालु आदिके दि॰ जैनी ब कई द्वे॰ जैनी भी आए थे। ताः २२ की रात्रिको दोनों एक्प्पदायवालोंकी कमेटी होकर यह तय हुआ कि यह तीर्थ दोनोंका है। जिस आदमीने दि॰ को रोका उसने भूलकी। वह नौकरीसे अलग किया गया तथा दि॰ कोटीबाले बिगचके भीतरके रास्तेसे भी कुंडका पानी ले सकते हैं। दि॰ व द्वं॰ दोनों ही यात्रियोंके आरामके लिये अपने २ प्रकश्वक कार्यको कर मकते हैं, कोई किसीके काममें बाधा न डाले।

मुनीम द्वारा यहं मालूम हुआ कि कोट शिलापर दो दिग-नरी देहरियों को मरम्मत करनेमें स्वंताम्बरी रोकते हैं तब ताः २२ को सबेरे दि० श्वे० भाई सेठनीके साथ उत्तर गएं। सेठमीका पैर एक अशक्त था तौमी आप बड़े साहसके साथ लकड़ीके सहारे पहाडपर बढ़े बले गए। यह १ मील उंबी है। १ देहरी छोड़कर दिगम्बरी देहरी मिली जिसको खांद स्रूरजकी देहरी कहते हैं उसके, भीतर ही यह लेख था——

इसी देहरीकी मरम्मतमें स्वं • रोकते थे सो यह दि • छेख स्वं •

माइयोंको अच्छी तरह वंचाकर उनके मनका समाधान किया गया। आगे दूसरी एक दिगम्बरी देहरी है जिसमें बहुत मनोज्ञ दिग० जैन प्रतिमा पद्मासन विराजमान थी। यहां दिग० लोग पत्थर जड़ाना चाहते थे सो २वं० रोकते थे। इस प्रतिमामें २वं० मूर्तिके चिन्ह को कमरमें कंडोर। व आसनमें लंगोटका चिन्ह होता है सो न थे तौभी २वं० ने हर्ष सहित कबूल नहीं किया। नीचे आकर सेठ फतेहचंद सांकलचंदके सामने तीसरे पहर बात होकर यह तय हुआ—चांद स्ररज्ञकी देहरीको व उसके जानेके मार्गको दि० लोग दुरुस्त करें हमें बेगेडं उत्तर नहीं है। पर दूसरी देहरीका झगड़ा बाकी रक्ता और यह कहा कि हम अवन संत्र व साधुको दिखाकर निर्णय करेंगे, यद्यपि हमें दिगम्बरी मालृम होती है तबतक न इस पर चक्षु चढेंगे न आगीकी रचना होगी। पृजा दोनों करें—मरम्मत उस समय तक कोई न करावे।

यह सिद्धक्षेत्र इस कारणसे है कि यहांसे वरदत्त सागरदत्त आदि मुनीन्द्र व साड़े तीन करोड़ मुनि मुक्ति पथार हैं। सिद्ध-िशाटा दूसरी ओर है। वहां एक गुफा, पास दो स्थानोंपर पुरानी दिगम्बर कैन मूर्तियां हैं। ऊपर जाकर एक दिगम्बर देहरीमें चारों ओर ४ प्रतिमाएं व उनके चारों ओर चरण हैं। दोमें जीर्णोद्धार सम्बत् १६११ और १९२१ है। दिगम्बरी कारखानेका प्रबन्ध इंडरके पंचोंके आधीन था पर व्यवस्था कायदेसे नहीं होती थी, तब ताः ५१ की शामको सब दिगम्बरियोंको समझाकर सेठनीन प्रबन्धकारिणी सभाके छाभ समझाए और तीर्थक्षेत्र कमेटोके आधीन एक प्रबन्धकारिणी कमेटी बना दी जिसके संभापति उक्छुमाई

लक्ष्मीचंद बम्बई, कोषाष्ट्रक्ष मोतीचंद लीलाचंद ईंडर व मंत्री वेणीचंद उगरचंद ईंडर नियत हुए। निथमावली भी बनाकर देदी गई। ताः २४ को चलकर दिग० व स्वे० पार्टी सीरपुर गांवमें आई। यहां स्वे० के ६० व ७० घर हैं।

झगडेका फैसला। रात्रिको उपाश्रयमें सभा हुई। शीतलप्रसा-दनीन एकता, विद्योन्नति, बालविवाह निषेष

पर १॥ घंटा व्याख्यान दिया। डाह्याभाई नगीनदात स्वे० ने ममर्थन किया। फिर सेटजीन बालकोंकी छोटी अवस्थामें मगाई न की जावे इस पर बहुत जोर दिया। यहां ऐसा बुरा कायदा था कि जो जैनी कन्या व पुत्रकी सगाई उसकी ४ वर्षकी उमर तक न करे उसे ४) दंड हो ! इससे बहुतेरे जन्मते ही सगाई कर देते हैं। ऐसी खोटी बंदी करनेका कारण मुसल्मानोंका जोर जुल्म हो सक्ता है।

यहां जैनियों के दो घड़े थे उसके मेटनेका अधिकार सेठजी, शीतल-प्रसादजी, सेठ फतहचंद और डाह्याभाईके आधीन किया गया। सबेरे चलकर बड़मगर आए। सेठ फतहचंदके वहां उहरे। उन्होंने बहुत सन्मान किया तथा सीरपुर गांवका फैसला लिखके दे दिया गया। ता० २६को सूरत आए। फूलकौर कन्याशालाका निरीक्षण किया। उस समय ७२ कन्याएं थीं जिनमें २३ दिग०, १४ इवे० व शेष उच्च हिन्दू बर्णकी थीं। एक अध्यापिका व दो अध्यापक पढ़ाते थे। जैन धर्मकी शिक्षाके साथ व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता था। लारंगीजी पर्वतपर पहले केंगर नामकी छकड़ी होती थी जो जलती व सड़ती नहीं है। अम्मिमें न जलने- ऐसी कुछ छकड़ियां द्वे० मंदिरमें लगी बाली लकही। हुई पाई जाती है। अब भी यह छकड़ी यहांसे थोड़ी दूर ब्रह्माकी खेडक पास धूलिया

बालरण गांवमें होती है।

यहांसे सेठनी बम्बई आए। मिती कार्तिक सुदी १४ ता० १७ नवम्बर ०७को दूसरे भोईवाडेके मंदिरमें वम्बईमें शिखरजी- शिलरजी सम्बन्धी समा हुई। सेठ माणि-कचंद्रजीके पेश करने व हल्छुमाई परीखके की सभा। समर्थनसे सेंड छुखानंदनी सभापति हुए। इसमें शीतलप्रसादनीने पर्वतरक्षा कमेटो जो १२ महाशयोंकी शिख-रभी पर बनी थी उसकी कार्रवाई सुनाई कि बाबू घन्नूलाछजी **डोटे** लाटको समझानेके लिये दारजिलिंग गए व ता० ६ नवम्बरको फिर छोटे छाट शिलरजी आए तब सेठ रमेष्टीदास धन्तू बाबू आदि कई साहब मिले तब छोटे लाटने बहुत केटोर शब्द कहे कि हम पर्वतपर बंगले बनावेंगे, केवल टोंकके चारों तरफ कुल नमीन छोड़ देंगे। इस बातको सुनकर सभाने अदालती कार्रवाई करनेका प्रस्ताव किया व धन्नूबायूको धन्यबाद पत्र भेना जो वह अटानी होनेपर भी शिलरजीकी रक्षामें इतने टट्ट प्रयम्नशील होकर दौड़धूप कर रहे हैं। सेठजीने सभाकी ओरसे खुरजेके सेठ हरमुखराय अमोलक-चंदको खुरनेकी समाकी सफलताके लिये बन्यवाद दिया ।

माता रूपाबाईने सं १९६० में १२३४ उपवासके उद्या-पनमें २५००) बम्बई बोर्डिंग कमेटीको इस बम्बई बोर्डिंगमें लिये सुपूर्व किये थे कि इसके ज्यानसे हर वर्ष कार्तिक मुदी १ ५के दिन बोर्डिंगमें मंडलकी उत्सव । पूजा करके उत्पव किया जावे, उसीके अनु-्सार इस सं० १९६४ में भी हुआ। रात्रिको सभा हुई। अलग्रके पं॰ महाचंद्रजीका संस्कृत विद्याकी आवश्यक्तापर भाषण हुआ। संस्कृत विद्याल के परीक्षोत्तीर्ण छात्रोंको पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिये गए।

इधर जब सेठनी समग्र भारतवर्षके जैनियोंके महा हितकारी कार्यमें छगे हुए थे उधर इनकी दीर्घदर्शिनी, श्रीमती मगनवाई- सुविचारधारणी पुत्री अपनी आत्मोन्नति करने तथा जैन स्त्रीसमानके उद्धार व अपनी जीका आम लेखन व व्याख्यानशक्ति बढानेके प्रयस्नमें व्याख्यान । लगी थीं । अर्थप्रकाशिकाजी अच्छी तरह मनन करके आपने श्री पंचास्तिकायका संस्कृत टीकाके साथ मनन किया तथा बृहत् द्रव्यसंग्रहकी संस्कृत टीका देखी। ऐसे ही संस्कृत ग्रंथोंके देखनेका अभ्यास शीतलप्रसादनीकी संगतिमें होता रहा तथा छेल भी छिलकर इन्होंसे शुद्ध करा छेती थी। सामा-यिक व ध्यानका अभ्यास भी सबरे व शामको अच्छा होने लगा था। बम्बईमें एक हिन्दू यूनियन कृत है उसकी ओरसे हिप् ऋतुमें प्रति शनिवारको अनेक विद्वता पूर्ण व्याख्यान हुआ करते हैं। इस वर्ष वह हेमन्त व्याख्यानमाला सेठनीके मनोहर हीराबागके लेक्चर हॉंडमें हुई।ता: ७ नवम्बर ०७ को श्रीमती मगनवाईने 'आर्थ स्त्र-योंके चरित्र' पर एक बहुत ही प्रमादशाळी व्याख्यान दिया था।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमाका वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष कहां हो इसकी आपको बहुत बड़ी सेंडजीका वार्षिक चिंता थी। मुंशी चम्पतरायजी महामंत्रीसे उत्सवींके लिये व बाबू देवकुमारजीसे व बाबू जुगमन्धरदास उद्योग। नजीवाबादसे पत्र व्यवहार करके कुंडलपुर क्षेत्र (दमोह) में उसके वार्षिक मेलेपर उत्सव करना इस लिये उचित समझा कि सेठजी इस क्षेत्र पर हो गए थ व बुद्छखंडके दिगम्बर नैनियोंकी अवनति दशाको जान चुके थे। यहांके बैनियोंमें उन्नतिका पवन भरे, इसी आकांक्षास निश्चय करके सेठ विदाबनजी दमोहसे छिखा पढ़ी करके समझायाँ। उक्त सेठनीन महासभाको बुलानेके लिये निमंत्रण पत्र दफ्तर महा सभाको मेन दिया, तत्र महा सभाके दफ्तरसे इस नल्सेकी सफलताके लिये तय्यारी होने लगी। इस समय महासभाके ज्वाइन्ट जनरल सेकेटरी बाबू जुगमन्यरदास रईस नजीबाबाद थे जो बहुत दिल लगाकर काम कर रहे थे। महासभाका काम इस समय बहुत जागृति पर था।

सन् १९०७ में स्रतके दिनम्बर मासके अंतिम सप्ताहमें राष्ट्रीय कांग्रेसका अधिवेशन होनेवाला था। स्रतमें कांग्रेस और इसकी स्वागतकारिणी सभामें सेठ माणिक-जैन यंग मेन्स चंदजी भी मेन्बर थे। गुनराती मिती एसोसियेशन। कार्तिक वदी ४ को स्रतमें स्वागतकारिणी कमिटीकी सभा थी। इसमें सेठनी हरजीवन रायचंद आमोद, इल्लुभाई प्रेमानंद आदिको छेकर गए थे। कां-

येसके लिये समापित चुननेके लिये बैठक थी। इसी रात्रिको ७॥ बने चंदावाड़ीमें लल्लुमाई प्रेमानन्द एल० सी० ई० के समापित-त्वमें एक सभा हुई। सेठ हरनीवन रायचंद्रने विद्योत्रितपर मावण दिया तथा "दिगम्बर जैन" पत्र मूलचंद किसनदास कापिड़िया द्वारा शुरू होकर उन्नतिमें आवे ऐसी भावना प्रगट की। फिर सेठ माणिकचंदजी जे० पी० ने इसकी पुष्टता की और सभाजनोंका आमार माना और मूलचंद्रजीको पत्र चलानेमें उत्तेनना दी। सेठजीको मूलचंद्रजीपर अधिक प्रेम इसी कारणमे था कि यह सेठजी द्वारा स्थापित हीराचंद गुमाननी जैन पाठशाला सुरतका फलरूप एक रतन था। इन्होंने व्याकरण साथ चंद्रप्रभु काव्य तक अभ्यास कर लिया था।

सूरतमें जैनियोंकी अच्छी वस्ती है, इसिलये बाबू चेतनदास बीठ ए० जनरल सेकेटरी, एसोसियेशनने वार्षिक जिल्हा सूरतमें करना ठीक समझ कर सेठ माणिकचंदजी बहुत जोर देकर लिखा। सेठजीने मूलचंद किसनदास कापिड्यासे यह बात पत्रद्वारा प्रगट की। मूलचंदजी अभी ताजे ही ताजे जैन जातिके कार्यक्षेत्र— में आए थे। इन्होंने कुछ स्वतांबरी सभासदोंसे वार्तालाप की और अति उत्साहसे सेठजीको लिख दिया कि सर्व प्रबन्ध हो जायगा। तब सेठजीन चेतनदासजीके साथ मूलचंदजीका पत्रज्यवहार कर दिया। ता० २२ नवम्बर १९०७ को चंदाबाड़ीमें सर्व जैनियोंकी एक जाहर सभा नगरसेठ बाबूभाई गुलाबभाईके सभापितस्वमें हुई, जिसमें दि० स्वे० स्थानकवासी जैनियोंमेंसे १९० मेमकरोंकी एक रिसेप्सन कमेटी नियत हुई, इसके समापति , सेठ माणिकचंद हीराचंद जे॰ पी॰ हुए तथा एसोसिएशनके प्रमुख पदको जैपुरनिवासी बाबू गुलाबचंद दहा एम॰ २० ग्रहण करें ऐसा निश्चित हुआ।

पावागढ़ बड़ीदाके पास सिद्धक्षेत्र है। जहांसे श्रीरामचंद्रके प्रत्न छत्र छत्र और ५ तरोड़ मुनि पावागढ़में बम्बई मोक्ष पथारे हैं। यहांपर बम्बई प्रान्तिक मां० सभा। सभाका वार्षिक उत्सव मेलेके समय माह मुदी १२ से १५ तक करनेके प्रबंधार्थ ता० ७ दिसम्बर सन् ०७को हीराबागमें एक सभा हुई। सेठनी भी उपस्थित थे। जलसेका खर्च ११००) का तजवीन हुआ व सेठ लालचंद कहानदास स्वागतकारिणी सभाके सभापति नियत हुए। इस जलसेके लिये सेठ हीराचंद नेमचंद—आनरेरी मजिस्टेट शोलापुर सभापति नियत किये गए थे।

इसी तरह दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका अधिवेशन जो प्रति-वर्ष हुआ करता है उसके प्रकथार्थ ताव द॰ म० जैन सभाका १७-११-०७को चिंचलीमें सभा हुई बार्षिक जल्सा। जिसमें सेठ भूणिकचंदजी स्वागत कमेटीके अध्यक्ष नियत किये गये।

नैन यंगमेन्स एसोसियेशन कि जिसका नाम अब पारत जैन
महामंडल है उसका नवमाँ वार्षिकोत्सव सुरतमें
जैन यंगमेन्स एसो । ता॰ २९-३०-३१ दिस॰को नगीनचंद
सुरतमें। इन्स्टीट्यूट हालमें हुआ। बाबू चेतनदासजी,
बाबू सुरुतानसिंह वकील मेरठ, पं॰ अर्जुनलाल
सेठी नेपुर आदि अनेक दिगम्बरी व अहमदाबाद भावनगर आदिसे
स्वेताबरी स्थानवासी आए थे।

नैयपुरवाले सेठ गुलाबचंदजी दहुाका स्टेशनपर अच्छी तरह स्वागत किया गया। पहली बैठकमें सेठ माणिकचंदजीने स्वागत कमेटीके प्रमुखकी हैसियतसे अपना भाषण पढ़ा तथा धार्मिक, औद्योगिक, स्त्रीशिक्षा, बालविवाह, वेदयानृत्य निषेध, श्री सम्मेदशिखर, तीर्थीक झगड़े, ऐक्यता आदि विषयींपर विवेचन किया।

ऐक्यताके सम्बन्धमें आपने कहा "मैं सर्व जैन प्रतिनिधि-योंसे प्रार्थना करता हूं कि तीर्थोंके सम्बन्धमें नो किसी तरहका खराब माव हो उसको निकाल देवें और परस्परके झगड़ोंको मिटानेके लिये एक सम्मिलित कमेटी बना लेवें। इन्हीं तीर्थोंके लिये कमेंबंध करानेवाले झगड़ोंके कारण हम लोग परस्पर मेल नहीं रख सकते, और इम एकताके अभावमें नैसे सिया और सुन्नी दो मिल र संप्रदायक लोग एक होकर शिक्षा और सुरीतिका प्रवार करते हैं वैसे हम नहीं कर सके। ''

धार्मिक शिक्षापर कहते हुए आपने कहा कि " धार्मिक शिक्षांक छिये शिक्षकोंकी प्राप्तिक छिये संस्कृत पाठशाछाएँ भी खोछनी चाहिए, जिनमें ऐसी पद्धतिकी शिक्षा होनी चाहिये जो हमारे नए जमानेके छोगोंको समझानेमें अत्यन्त उपयोगी होवे।" गुछाबचंदजी ढड्ढाने हिंदीमें भाषण दिया। कुछ प्रस्ताव १३ पास हुए जिनमें स्वास ये थे—

१. शोलापुरके सेठ हीराचंद नेमचंद द्वारा अणाष्या फड्याप्या चौगले बी० ए० एलएल० बी० को सोनेका एक तमगा इसिल्यें दिया जाय कि इन्होंने सर्वार्थिसिडि संस्कृत धार्मिक प्रन्थकी परीक्षामें सफलता प्राप्त की है। वह तमगा भेन दिया गया तथा अन्य भी विद्वान् घार्मिक शिक्षा छेवें ऐसी प्रेरणा की गई। वास्तवमें जब तक इंग्रेनीक ग्रेजुएट छोग धर्मके ऊँचे तात्विक ग्रंथोंको न जानेंगे तब तक जैन तत्वज्ञानका विस्तार नहीं हो सक्ता।

- २. उदेपुर, बङ्गीदा, जामनगर, राघनपुर, गोंडल, मोरबो व अकलकोटके अधिकारियोंने पशुवध बंद किया या घटाया इससे धन्यबाद दिया जाय।
- ३. सेठ माणिकचन्द हीराचंद्रजीने प्रस्ताव किया कि तीर्थक्षे-त्रोंके झगड़ोंको मिटानेके लिये ६ दि० और ६ थे० सज्जनोंकी कमेटी नियत की जावे।
- ४. पं० लालनने प्रस्ताव किया कि जैनियोंके तीनों फिर-कोंमें एकता रहे । इसका समर्थन संठ माणिकचन्दर्भाने भी किया ।
- ५. एक जैन बेंकमें तीर्थ व मंदिरोंके रुपये रोके जांय, इसकी न्यवस्थाके लिये कमेटीमें दि॰ की ओरसे सेठ माणिकचन्द्रजी नियत हुए।
- ६. शिखरजीपर बंगले बंधनेकी विरोध सम्बन्धी प्रस्ताव रांदेरके नगरसेठ छोटालाल नवलचन्दने पेश किया, जिसका समर्थन बाबू शीतलप्रसादजीने भी किया।
- ७. लेजिसलेटिव कौंसिलोंमें जैनियोंका एक २ मेम्बर हो । सेठ माणिकचंदजी और मूलचन्द किसनदास कापिड्या-के प्रयत्नसे बिना किसी अंतरायके ऐसोसियेशनका काम पूर्ण हो गया।

सुरतमें कांग्रेस गर्म और नर्म दलमें विभक्त हो गई। इससे अधिवेशन होते र बन्द हो गया। इसमें श्री सोशल कान्फरन्समें शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव लेना भी स्वीकृत श्रीमती मगनवाई। हुआ था तौ भी गर्मदलकी समामें यह प्रस्ताव पास हुआ कि शिखरजी पर्वतपर बंगले वंधनेका विचार सर्कारको छोड़ देना चाहिये। कांग्रेसके मंडपमें सोशल कान्फरन्सका जल्सा हुआ। उसमें श्रीमती मगनवाई-जीने स्त्री शिक्षा पर एक प्रभावशाली ज्याख्यान दिया था। इम अवसरको देखकर सेट माणिकचंदजीके उत्साहस पुलकौर कन्याशालेकी इनामकी सभा सुरतमें नवापुरामें

फुलकोर कन्याशाला- ता० ३१ दिगम्बरको सबेरे ९ बजे इन्दौर-का उत्सव। बाले सेट झुलालाल मुलालालके सभापतित्वमें हुई। बालिकाओंने गीत गाया। एक वर्षकी रिपोर्ट पड़ी गई। इप समय ७९ कन्याएं थीं, इनमें ४० जैन थीं। लोकिक परीक्षाका फल ८० टका व धार्मिकका ९४ टका आया था। बाबू शीतलप्रमादनीने स्त्रीशिक्षाके लाभ दिखाए। मेरठके बाबू सुलतानसिंह बकीलने मिशनरी कन्याशालाओंमें नानेसे क्या २ गैरलाम हैं सो बताए। फिर ओहनी, पुस्तकें व मिठाई आदि इनाममें दी गई। सभापतिने प्रशंसा करके ५१) दिये, फिर सर्व मंडली गाने बानेके साथ कन्याशालाके मकानमें आई। वहांपर सेटजीने अपनी स्वर्गवासिनो पुत्री फुलकौरकी छिब खोल-नेकी किया की। किसी फोटो या तसवीरका होना उसके गुणोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक दर्गणके समान है। इस समय सेठ माणिकचंदजीने १०१) कन्याशालाको मेट किये। नगह २ दानकी वर्षा करना ही सञ्चा दानवीरपना है, जिस गुणसे सेठजी भलीभांति सज्जित थे।

अजमेरसे श्री गिरनारजीकी यात्राको जाते हुए रास्तेमें आबूरोड (खरेड़ी) स्टेशन है। यहां स्वेता- आबूजीके मंदिरके म्बरियोंकी दो व हिन्दुओंकी १ धर्मशाला है। उद्धारका भयत्न। कुछ परदेशी दिगम्बर जैनी हैं जिन्होंने दो मंजिला एक मंदिर बनवाया है। यहांसे आबू-

पहाडके दिलवाडा स्थान तक २८ मील सडक है। टांगे इके बैछ गाडी जाती हैं। रास्तेमें सिरोही राज्यकी चौकी व कुएं दो दो मीलके फासले पर हैं। दिल्वाड़ामें ५ जैन मंदिर ९०० वर्षके पुराने ३७२७५१८८००) ह. की लागतके हैं जिसकी प्राचीन पत्थरकी शिल्मकला दुनियांमें अद्वितीय है । इन्ही मंदिरोंके मध्यमें एक दिगम्बरी बड़ा प्राचीन मंदिर है, जिसमें २३ बिम्ब हैं । मूलनायक श्री कुंधनाथ स्वामी हैं। इसके सिवाय इन मंदिर समूहके बाहर सरकारी सड़ककी दाहनी ओर दिगम्बरी श्राद्तीका एक बड़ा मंदिर श्री नेमनाथ स्वामीका है इसमें भिन्न २ तीर्थकरोंके १६ विस्व हैं। शिलालेखसे मालून होता है कि इस जिनालयकी प्रतिष्ठा ईडरके मद्वारक द्वारा वि॰ सं॰ १४९४ वैसाख सुदी १३ को हुई थी। इम मंदिरमें प्रायः देव अतिशय हुआ करते हैं, जैसे रात्रिको १२ बजे दीपकोंका उजियाला व बाजोंका बजना । बीचमें कुछ कालसे दिग० ने अपने मंदिरोंकी तरफ बिलकुल बेपरवाही कर रक्सी थी, व्हे**ं कारलानेकी तरफसे साधारण सम्हा**छ रहती थी, पर न पूजनादि

कायदेसे होती न जीर्गोद्धारकी ओर ध्यान दिया गया। जो बाजी वहां नाते उन्हें धर्म साधनमें व ठहरने आदिमें व मंदिरजीकी कुव्य-बस्थाको देखकर बहुत दु:ख होता था। यह सब समाचार सेठनीको नवानी व पत्रद्वारा मालून होते रहते थे, इसलिये इस क्षेत्रका सप्र-बन्ध किस तरह हो यह ही बड़ी भारी चिंता सेठनीको थी। अनमेरके एक जवाहरातके दलाल पनालाल दिगम्बर जैनी थे, जो बहुधा सेटजीको बंबईमें मिला करते थे । एक दुफे इनसे आबूजीका वर्णन आगया, तन पन्नालालजीने कहा कि आबूमें मेरे एक मित्र **याब्** प्रमाचंद कासलीवाल एजन्ट माहबंक दफ्तरमें अकान्टेन्ट हैं यह बड़े धर्नात्मा हैं । मैं इनको आबूजीकी व्यवस्थांक लिये ज़ोर दंकर छिखता हं। आप कमेटी द्वारा पत्रव्यवहार करें। तब सेठजोको बड़ा हर्ष हुआ। दफ्तर द्वारा ता० १ नवस्वर १९०७ का पुरानचंद्रनीको आबू पत्र लिखा तथा दिनंबरी भंदिरोंका प्रबन्ध अपन हाथमें छेनेक लिये पूरा अधिकार दिया। पुनवचन्द्रजी का द्वाव सभपा था । आपने इवंताम्बरियोंसे मिछकर बहुत समाधानाक साथ प्रबन्धको अपने हाथमं लिया । सेटजोने अपनी तरफसे पूनाका सामान वर्तन और शास्त्र भेजे तथा कमेटीस १ प्रवासीको भिज-वाया। ता० ५२१ फर्बरो १९०८ से प्रनारी और अन्य ८ सेवक नियत किये गये और दोनों मंदिरों में शास्त्रानुसार अष्टद्रव्यसे पूजन प्रक्षाल होने लगः। फिर सेटनीनं यात्रियोंके आरामके लिये धम-शालाके बास्ते लिला । उस समय अलग जमीन न मिलती हुई देख-कर पुनमनन्दजीने उस बड़े मंदिरजीके हातेमें ही चारों ओर घर्मशाला बनवाना ठीक समझ(। तब सेठ माणिकबन्दजीने प्रराने बरांडेसें ४

कोठरियां व सामने ४ वरांडा और १ रसोड़ा बनवानेकी परवानगी अपनी ओरसे दी । २, ३ वर्षके भीतर रायबहादुर सेठ नेमीचंद, हरमुखराय अमोटकचंद, विनोदीराम बालचंद, माणकबाई बम्बई, आदिको उपदेश देकर पूनमचंदजीने १५० मन्द्र्योंके ठहरने योग्य स्थान बनवा दिया । हालमें पूनमचंदजी कोटामें हैं । प्रवन्ध आप ही करते हैं । सेठ साहबके तन पन धनके योग देनेसे और पूनमचंदजीके पूर्ण परिश्रमसे श्री आयूनीका प्रवन्ध बहुत अच्छा हो गया है । इन दोनोंको इस क्षेत्रका उद्धारक कह सक्ते हैं ।

द् महाराष्ट्र जैन समाका दशवां वार्षिकोत्मव पौष सुदी १४ से बदी २ तक थाः १७ जनवरीसे द म० जैन समा २० तक श्रीस्तवनिधिक्षेत्रमें बड़े ठाटस व श्राविकाश्रम हुआ। इसमें देशभक्त रा० रा० गोपालकृत्म कोल्हापुर। देवधर एम० ए० व श्रीधर गणेश बी० ए० आदि कई सज्जनोंने भी प्रधारकर शिक्षा

आदिके सम्बन्धमें उपदेश दिया था। इस उत्सवमें सेठ माणिक-चंदजी इस कारणसे नहीं जा सके थे कि वं इसी समय शोलापुर गए हुए थे। आप स्वागत कमेटीके प्रमुख थे। आपने बहुत उदा-सीके साथ तार मेज दिया था। श्रीमती मगनबाई भी नहीं आई थीं, पर उनका मेजा हुआ छेख " श्राविकाश्रमकी आवश्यका " पर ताः १८ की महिटा परिषर्में मुनाण गया। एटाराष्ट्र सभाने पांचवा प्रस्ताव यह किया कि श्रीमती मगनबाई जीकी प्रेरणानुमार कोल्हापुरमें एक श्राविकाश्रम खोला जावे। इसके लिये दान-वीर सेठ माणिकचंदबीने १०) व शबू देवकुमारजी, आरावालोंने भी

१०) मासिक मदद एक २ वर्षको स्वीकार की थो तथा कुछ क्षियोंमें भी फंड हो गया था। सभाने १० वें प्रस्तावमें नादणीके भट्टारकके मठकी व्यवस्थाके लिये एक कमेटी नियत की उसमें सेठजीको भी मेंम्बर किया तथा छठेमें श्री सम्मेट्शिखर रक्षा सम्बन्धी व १५ वें में तीर्थभक्त सेट चुन्नीलाल झवरचंदके वियोग पर शोक प्रगट किया गया । इन सभाके नाम बम्बईके गवर्नर सर जार्ज हार्कका तार भी आया कि जैनियोंमें शिक्षाके प्रचारकी उत्तेननामें मैं सहानुभूति प्रदर्शित करता हूं।

"I cordially wish success to your efforts to encourage education among Jains."

ता० २० जनवरीको कोल्हापुर श्राविकाश्रम खोलनेका महुर्न श्रीमती मगनबाईजीकी अध्यक्षतामें निनसेन भट्टारकके मटमें किया गया । १ वर्षके लिये भट्टारकजीने स्थान दे दिया था। डा० कृष्णाबाई केलबकर एउ० एव० डो० भी हाजि। थीं। मगनवाईजीने अपने छुन्दर भाषणमें-नो उन्होंने पराठीमें कहा था क्योंकि बाईनीको गुनरातीके मित्राय मराठी और हिन्दीमें भी भाषण करनेका अच्छा अभ्याम था-दिखलाया कि केवल कोल्डा पुर प्रान्तमें ५००० जैन विधवाएं हैं तथा दक्षिण महाराष्ट्रमें १५००० हैं जो ज्ञान बिना व्यर्थ जीवन बिना गही हैं, इनके ज्ञान मभादनार्थ हरेएक प्रान्तमें आविकाश्रम खोलने चाहिये। द० म० सभाको इस कार्यके छिये घन्यवाद है। नो आज यह खोला नाता है। श्रीमतीने ६००) की महद भी दी व प्रबन्धार्थ कमेटो

वनी जिसमें अध्यक्षा मगनवाईजी हुईं। १२ श्वियां दाख्छ हुईं जिनमें ४ को छात्रवृत्ति दी गई।

शोलापुर जिलेमें इमड़ोंकी वस्ती प्रामोंमें अधिक है, नहां उनको विद्या प्राप्तिका साधन नहीं है। शेठ सेटजीके अनुकरणसे माणिकचंदजी शोलापुरके धनवानींको एक शोलापुरमें बार्डिंगका बोर्डिंगके लिये बार बार प्रेगणा कर रहे थे। उसका फल यह हुआ कि भैसे पहले विचार । प्रसिद्ध नाधारंगजी आक्लनवालोंक वरानेने २५०००) मंस्कृत प्रयप्तचार व छात्रवृत्ति आदिके लिये निकाले थे बैसे ही उमी कुटुम्बने मटनीकी बातपर ध्यान देकर २५०००) का कंड बोर्डिंगके लिये अलग किया। ता० १५ जनवरीको शोलापुरमें एक सभा सेठ बालचंद्र रामचंदके प्रमुखत्वमें हुई, इमरें सेठ माणिकचंद्जी बाबू शीतलप्रमाद्जीके साथ आए थे। आनवाले फाल्गुण मासमें "सेठ नाथारंगजी दिगम्बर जैन बोर्डिंद्र स्कूल " खोलनेका निः प हुआ। फंडके व्याजसे ४० टका संस्कृत विद्यांके लिये व ६० टका अंग्रेजी व औद्योगिक शिक्षामें खर्च हो । छात्रोंको धर्मशिक्षाके साथ ये विद्याएं पहनी होगीं। गरीबोंको अत्रवृति भी दी जायगी। ६ महाशयोंकी कमेटीमें धर्मीतमा परोपकारी सेठ माणिकचंदजी जे॰ पी॰ भी नियत किये गए। १३ महाशयोंकी मेनेजिंग कमेटी हुई व नियमावली तय्यार हुई । सेठजीने बोर्डिंगके लिये स्थान पसंद किया व सर्व सामान मंगानेका प्रबन्ध बांघ दिया ।

ता० १ फर्वरीको कलकत्तेमें बाबू धन्तूलाल, सेठ परमेष्टीदास, आदि ४ प्रतिनिधियोंसे लाट माहबने मलाकात कलकत्तेमें लाट करके बहुत देर तक वादानुवाद किया। साहबका उत्तर। अंतमें आपने बादा किया कि हम फिर इस विषयमें विचार करेंगे. ऐसा तार पाकर संत-जीकी चिंतामें कुछ कमी अवस्य हुई।

ता. ६ फर्वरी १९०८को बस्बईके माधीवागमें इंवतास्वर जैन बीसा श्रीमाहियोंकी एक सभा हुई थी **उवेताम्बर जैनसभाभें** जिसमें सभावतिका आसन सेठ पाणिक वंदर्जीको ममापति । अर्पण किया था । इस सभामें रोट देवकरण मूलजी संबवीको सौराष्ट्र बीमा श्रीमाली शुभेच्छ्क मंडलकी तरकसे मानपत्र इमलिये भेट किया गया या कि आप कपड़ेके ज्यापरी व मिलके दलाल हैं। आपको १ लाख रुपयेकी परिमहका प्रमाण था। उसमे अधिक बढ़ै तो धर्ममें लगाऊँगा, सो पुण्ययोगसे आपका घर पूर्ण होने पर अब जो पैदा करते हैं सो अपनी जातिक गरीब अनार्थोंको विद्या व आर्जीविका-दानमें लगाते हैं। आपकी पुत्रीका विवाह इसी दिन था, आपने न वेश्यानृत्य होने दिया न आवशवाजी छुडवाई जैसा कि अभी तक रिवाम उस जातिमें था, किन्तु ६५५) का दान इस भांति किया-२०१) मित्र मंडल सभा, १०१) काठियावाड् मंडल, १००) मांगरोल जेन कन्याशाला, १०१) पालीताना बालाश्रम, १०१) निराश्चितं जैनी, ५१) उद्योग वृद्धि । इसके सिवाय जूना-गढ त्रिहेके पुस्तकालयों में कन्याविकय निषेषकी पुस्तके बांटना स्वीकार

किया। सेंडजीने आपकी प्रदांसा करके मानपत्र भेट किया। ऐसे मानपत्रके भेटकी शोभा वास्तवमें ऐसे दानवीर परिग्रह परिमाण ब्रत धारी सेंडके द्वारा ही उचित थी।

पावागहमें मिती माह सुदी १२ से १५ तक बम्बई दि० जैन प्रान्तिक समाका उत्सव बड़ी धूमधामसे पावागहमें बंबई हुआ । गुजरात देशके कई हज़ार जैनी प्रांतिक सभा । एकत्र हो गए थे । सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर जो इस समामें प्रमुख नियत हुए

थे सेट माणिकचंदनी जे० पी०, हल्लुभाई प्रेमानंद व सेट रावजी सखारामके साथ ता० १२ फर्वरोको सबेरे बड़ौदा स्टेशनपर पधारे। उस समय बड़ौदाक पंचींने हारतोड़ा व मानपत्रसे सम्मानित किया। शीतलप्रमाद्त्री यहां १ दिन पहले आ गए थे। फिर यहांसे सब मिलके चांपानेर रेटेशनपर पहुंचे । वहां बालन्टियरोंने गाजे बाजेके साथ सम्मानित किया । यहां कलेवा करके पार्टी गाड़ियों द्वारा पावागढ़ पहुंची । बहां एक जुलुसके साथ स्वागत हुआ । स्वयं-संवर्कोने अपने हायसे गाड़ी खींची। ता० १४ फर्वरीसे सभाकी तीन बैठकें हुई। प्रथम ही हरजीवन रायचंद आमोदके पुत्र शांतिला-लने संस्कृत स्ठोकोंमें मंगलाचरण किया । फिर स्वयंसेवकोंने सेठ माणिकचंद और सेठ हीराचंद, दो धार्मिक परोपकारी भित्रोंके गुणा-नुबाद् वर्णन किये। सेठ लालचंद् कहानदासने स्वागतकर भाषण दिया। फिर सेट माणिकचंदजीके प्रस्ताव व जयसिंहमाईके अनुमोदनसे सेठ हीराचंदजी सभापति हुए। आपने अपना विद्वत्तापूर्ण छपा हुआ भाषण सुनाया फिर रुस्तुमाई प्रेमानंददासजीने रिपोर्ट पढी । पहरी बैठकमें पंचमहालके कलेक्टर और शिवराजपुरकी सोनेकी खानके फोरेस्टर कई इंजिनियरोंके साथ आए थे। समाने बहुत सत्कार किया । क्लेक्टर साहब बहादुरने आभार माना।तब छल्छुभाई प्रेमा-नंदनं कहा कि पावागढ जैनियोंका अतिशय पवित्र स्थान है। आशा है साहबबहादुर उसे अपवित्र होनेसे बचाये रखनेका स्मरण रक्वेंगे । फिर १४ प्रस्ताव पास हुए । जिनमें मुख्य ये थे—

१-सेंठ नाथारंगजीको २५०००) पहले व २५०००) अब शोलापुर बोर्डिंगके लिये निकालनेके अर्थ घन्यवाद । सभापतिने कहा कि उपयोगी विद्यादानमें सेट माणिकचंदजीसे दूसरा नम्बर इनका है।

२-महासभाके सभापति सेठ द्वारकादासजी, मधुरा जिनका मरण ता० २० जनवरी १९०८ को हुआ व सेठ चुन्नीलाल अवेरचंदके मरणपर जीक ।

३—रा० रा० अण्णापा फड्यापा चौगले बी० ए०, एलएल०, बी ०, बेलगांवको सर्वार्थासिन्डि प्रथमें परिक्षोतीर्ण होनेपर सेठ नाथा-रंगजीकी ओरसे एक स्वर्णापदक प्रदान किया जाय। इसको सेठ माणिकचंदजीने पेश करते हुए कहा कि "मि० चौगले न अपनी बम्बई बोर्डिंगमें शिक्षा ही है और बहुत थोड़े समयमें यह विद्वांत होकर नाहर कार्मोमें भाग लेने छगे हैं। अब यह बेलगांबकी म्यूनिसियालिटीके सभाषति तथा दि॰ म॰ नैन सभाके सेकेररी हैं। इन्होंने सबसे कठिन संस्कृतके सर्वार्थसिद्धि प्रथमें बहुत ऊंचे नंबरोंमें परीक्षा पास की है जिससे सेठ नावारंगजीने स्वर्णपदक दिया है। ऐसे पास होनेवाले गृहस्थोंको शिक्षाके उत्तेजनार्थ ऐसे मेडलोंके देनेकी जरूरता है। "

४-उपदेशकों के अवणकी आवश्यका—इसको शीतलप्रसाद-जीने पेश किया व लल्लूमाई प्रेमानंदने समर्थन किया तथा इसी समय अपील करनेपर १२००) का चंदा तुर्व हो गया। इसमें सर्वसे पहले दानवीर सेठ माणिकचंदजीने २०१) व सेठ हीराचंदने १५१) प्रदान किये।

प्र-ता० १ फर्वर्शको कलकत्तमें जो श्रीयुन छोटे लालने शि-खरजी पर्वत मम्बन्धमें पृरा विचार करनेको कहा है, उनको यह प्रान्तिक सभा फिर सृचिन करता है कि सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है इससे वहां बंगले हरगिज़ न बनाए जावें व इसकी नकल छोटे लाटकी सेवामें भेजी गई।

६—पाबागहपर एक अग्रंग कम्पनीन तांवेकी खान नानकर उसके खोड़नेकी परवानगी सर्कारसे मांगी थी, इसका विरोध दिग-म्बर जैनियोंन किया था तब इसकी जांच करनेको बम्बईके द्यालु गवनेर सीखनहेम क्लाकि बड़्रोदाकंपके रेसिडेन्टके साथ ता० २४ जनवरीको ४ बजे पावागद्भावहादपर गए थे। उस समय बड़ीदा, बोरसद, करमसद आदिके बहुतसे दिगम्बर जैनी हाजर थे। सबने योग्य सन्मान किया। फिर दाहोदके वकील जौंहरी कालीदाम जसकरण बी० ए० एलएल. बी. ने खान खोदनेसे जैनियोंके मंदिरोंको कैसी भारी हानि होगी व जैनियोंको धर्म सेवनमें क्या बाधाएँ आएंगी सो एड्रेसके रूपमें समझाई । फिर सेट लालचंद कहानदास प्रबन्धकत्ती तीर्थने हार तोडा पान गुलाबादिसे सत्कार किया। तब गर्बनर साहक्ने आयार मानते हुए कहा कि तुमको जो २ विध्न आ सक्ते हों व जिससे तुम्हारा मन दुखता हो उन्हें में दूर करूंगा । इस उत्तरसे सर्वको सन्तोप हुआ। ता० २५ को गवर्नर साहब और उनकी पुत्रीने पहाड़के दर्शन किये और प्रसन्नता प्रगट की। ता. २६ को नीचंके मंदिरजीके दर्शन करते हुए २०) की मेट दी थी। इस कारण प्रांतिक सभाने गवर्नर साहबको घनवाद दिया जो उन्होंने जैनियोंका भी न दुखानेका बचन दिया है।

ता० १६ की रात्रिको महिला परिषद्का एक बृहत् अधिवेशत हुआ। अध्यक्षस्थान सेठ माणिकचंदकी धर्मपतनी श्री-मती नवीबाईने ग्रहण किया था। श्रीमती कंकुवाई, लिल्साबाई व मगनबाई तीनों विद्यावती बहनोंने अनेक उत्तमीतम विषयों पर ध्याख्यान दिये जिनसे कई ख्रियोंन गाला न गाने व रोने कूटनेका त्याग किया। परोपकारिणी मगनबाई जीने पढ़ी हुई स्त्रियों को श्रा-वकाचार नामकी पुस्तक भेटमें दी।

ता० १७ फर्वरीको गुजरातके सर्व भाइयोने सेठ माणिकचंद-जीकी सेवामें चंदनके काम्केटमें निम्न लिखित **मानपत्र** अपीण किया ।

े नकल मानपन्न (पाचागढ़) झवेरी बेट माणेकचंद हीराचंद जे. पी. नी पवित्रसेवामां. प्यारा धर्म बंधु,

अगाजे अमो श्री गुजरात भागना दिगंबर जैनो आप साहेबनी स्वर्थम अने कंडवणी प्रत्ये अत्यंत प्रीति देखीने आ मानपत्र आपवानी तक हहए छीए ते स्वीकारी आमारी करशो.

श्री शिलरमीना पवित्र पहाड उपर ज्यां बीस तीर्थंकर अने असंख्यात मुनि मोक्ष पाम्या छे त्यां यात्राळुओना सुख माटे पगथीओं करवामां आबतां हतां ते आपणा श्वेतांबरी भाईओए वगर कारणे उखेडी नांख्यां: ते काममां तथा बीसपंथी बड़ी कोठीनो बहीबट सुधारवाना कार्यमां आपे आगेत्रान थई महेनत लईने बधी कोर्टीमां जय मेळज्यो, जेथी आपनामां म्बधर्म वात्सल्य गुण तारीफ करवा लायक छे एम स्वष्ट देखाय छे. श्री जयधवल जेवां प्राचीन ग्रंथीना नीर्णोद्धार करवामां आपे आगेशनी माग लई सर्व माईओनी मदद्यी काम चलान्युं छे जेथी आपनी धर्मशास्त्रज्ञान वृद्धि पाटे अत्यंत उत्कं-टा जणाई आवे छे. आपे सुरत जेवा पौराणिक शहेरमां जैन यात्रा-कुओनी उतरवानी सगवड माटे जैन होल जेवुं चंदावाडी नामनुं मकान बंधायवा अने वधारवा पाछळ रु. २००००)नो खर्च करी जैन कोम उपकार कर्यों छे ते आपनी जैन भाईओ प्रत्येनी उदार लागणी बताबे छे. आपणा जैनीभाईओने स्वधर्म संबंधी, राजकीय, वेद्यकीय, शिल्पशास्त्र, अने इंग्रेजी गुजराती साहित्य वीगेरेनी उँचा दरज्जानी केटबणी प्राप्त करवामां अत्यावशक साधन जे बोर्डिंग कुल छे, ते मुंबई जेवा मोटा शेहेरमां श्वेतांवरी, दिगंबरी शे भिन्न-भाव राख्या विना पोताना आशरे एक छाख रुपीयाने खरचे आपना स्वर्गवासी पिताश्री सेठ हीराचंद गुमानजीना स्मरणार्थे आपे बांधी आपी समस्त जैन कोम ऊपर जे उपकार कर्यों छे ते प्रशंसनीय छे अने ते आपनी धर्म सहित ऊंत्रा घोरणनी इंग्रेजी केळवणी आपवानी अपक्षपात लागणी प्रदर्शित करे छे. तेमन गुनरातमां आपणी दिगंबर जैन कोममां केळश्णीनो बहोळो फेळाबो करवा माटे मोजन अभ्यास बीगेरे बधी सगवडो प्ररी पाडनारी एक बोर्डिंग स्कुछ आपना कैलासवासी भित्रमा रोठ प्रेपचंद मोतीचंदना नामथी असदाचादमां ३४०००) ना खरचे बंधाबी आपी स्वधर्मी भाईओ प्रत्येनी शुद्ध लागणी अने धर्म कृत्यभां भारे उदारता प्रगट करी छे.

मुंबाई जेवी अलबेली नगरीमां कोईपण कोमने उपयोगी थई पड़े तेवी मन्य धर्मशाला (हीराबाग) बांधवा पाछळ दोढ लाख रुपीआ धर्मादा खरच्या छे, जेमां एक धर्मादा स्वदंशी द्वाखातुं पण उवाड्युं छे; ते आपनी गरीबो प्रति द्यावृत्तिनी लागणी प्रगट करे छे. बळी हालना राज्यकर्तानी गया वर्षनी वर्षगांठनी खुशालीमां नामदार ब्रिटिश सरकारे जे मान अने मरतवाथी वगर प्रयत्ने 'नग्टीश ओफ धी पीस (जे. पी.)नो मानवंतो खीताब आपने नवाजेश कर्यो छे ते आपणी दिगंबर जैन कोममां आप पहेल बहेला मेळववा भाग्यशाशाली थया छो, अने सरकारे जे आपनी स्वध्न संवानी योग्य पीछान करी ते माटे अमो मायाळु सरकारनो आ तके उपकार मानवानी अमारी फरज समजीये छीये.

छेवटमां आपनी आ आवी धर्म, दया, स्वधर्मी प्रति उत्तम सेवाओ माटे तथा विद्या अने विद्वान प्रति आपनी सदैव शुभ लाग-णीओ माटे अमो प्रार्थना करीये लिये के आप आवा हजारो खीताबो भोगववाने दीर्घायुषी थाओ, अने परमात्मा आपने आपवां उत्तम कार्यों करवाने सदैव सन्मति आपो, एवं ईच्छी आ मानपन्न आपने अर्पण करीये छीये ते मानपूर्वक स्वीकारी आभारी करशो एवी आशा राखीय छीए. तथास्तु.

नांपानेर (पावागढ) } आपना सद्गुण चाइनारा-

लालचंद कहानदास, बडोद्रा. मोहनलाल विट्टलदास धामी, भावनगर. जेठामाई गोरदनदास, आमोद. नरमीदास गंगादास, इसणात्र. दाीवलाल तुलभीदास, मोरड. गुलाबचंद लालचंद, गांधी जेचंद नाथजी, दाहोद. प्रमचंद हरगोवनदास, सुग्त. दलपतभाई केवलदास, बोरमद्- हरजीवन रायचंद, आमोद्-नगीनलाल शोभाचंद, दाहोद. अमीचंद वस्ता, ईंडर. बीरचंद त्रीकमदाम वडोदग. भाईजी नाथाभाई, बोरसद. गांधी जीवाभाई वहालचंद, सोनामण, कोटारी नानुचंद पुंजीसम ईंडर. गीरघरलाल फूलचंद बहेचर भवानदास, गांधी जीवाभाई उगरचंद,सोनासण.छोटाठाल घेलाभाई गांधी, अंकलेश्वर. हरीभाई मंगलदास. जीवणहाल हर्शोचंद. पदमसी फतेचंद, साणोदा. रामचंद नानचंद. ताराचंद हीराचंद. जमनः छाल परभुदाम. जेठालाल गीरघरलाल. रेवचैद् बहेचरदाम.

बास्तवमें जो निःस्वार्थ बुद्धिसे जगतके उपकारमें अपने तन मन धनका मोग करता है उसका विना चाहे नगत आदर करता है । सेठनीसे कोई कमी अन्नसन्न नहीं होता था। नह छोटे व बड़े सबसे समान व सरल भावसे कपटरहित बात करते थे व अपने बचनोंके बड़े पावन्ट् थे। जिस सत्य वचनके प्रभावसे सेठजीने अपने व्यापारमें उन्नति की उसका हमेशा निवाहनेका उद्योग किया ।

लखनउ निवासी पार्वतीवाईजीको जबसे श्रीमती मगनबाईजी-का समागम हुआ तबसे आपको भी स्त्री समा-श्रीमती मगनवाईके जकी सेवा करनेका बहुत बड़ा ध्यान हो उद्योगका फल । गया था । जनतक आपके पिता लाला दर-बारीलालजी बृद्धावस्थामें सजीवित रहे तबतक बाईजीने उनकी भले प्रकार सेवा की थी। पिताके देहान्त होने पर बाईजीन धीर २ घरका सम्बन्ध छोड़कर एक बाईके माथ मुख्य २ स्थानोंमें अपने ही खर्चसे अमण करना प्रारंग किया और उपदेश देका स्त्रियोंको सुधारा, स्वयं भी शिक्षा दी व कन्याशालाओंके लिये उद्योग किया । लाला जम्मीमलजी देहली ताः ८ मार्च ०८ के जैनगजटमें प्रगट करने हैं कि बाईनीन बागरत, रोहतक तथा मेंग्ठमें दो द्फे जाकर स्त्री समाजका बहुत बड़ा उपकार किया है तथा दिहलीमें आपने कई सभाएँ की जिसमें एक ताः २१ फर्वरीको बड़े समारोहकं साथ की, २०० स्त्रियां हाजिर थीं। इसमें आपने कन्याओंका विवाह जैन पद्धतिके अनुमार करानेपर बहुत जोर दिया । केई स्त्रियोंने इन बातको मानकर प्रतिज्ञा की । मेरठमें आपने कन्याशाला भी स्थापित करा दी है।

इसी तरह जबलपुरमें श्रीमती मगनबाईकी संगतिसे श्रीमती जमनाबाईको भी उपदेशका अभ्यास हुआ। ताः २३ फर्वरी १९०८ को लगाराकी बिम्बप्रतिष्ठाके अवसरपर बाईजीने एक स्त्री सभा की जिसमें १००० स्त्रियां मौजूद थीं। बारों गतिके दुःखोंपर व्याख्यान

दिया । पिंडरईकी कन्याओंकी परीक्षा छे इनाम बंटबाया किर कन्याशालाके लिये चन्दा करके शाला भी खुलवा दी व जैनी अ-ध्यापिका भी नियत करा दी ।

मिती फालगुण सुदी १० गुरुवारको शोलापुरमें "सेठ नाथारंगनी दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल "कं शोलापुरमें बोर्डिंगका स्थापनका मुदूर्त था। बम्बईसे सेठ माणि-मुदूर्त। कचंद्जी पं० धन्नालालनी और शित-लप्रसाद्जीको लेकर १ दिन पहले पहुंच गए थे। शामकी सभामें शीतलप्रसादनीने "प्रभावना अंग" पर व्याख्यान देकर शिलरजीके रक्षार्थ उद्योग करनेपर नोर दिया, इसका समर्थन पं० धन्नालालनीन किया। और फीरोनाबादमें शिलरनीके निमित्त होनेवाली सभाक लिये प्रतिनिधि चुने गर्। सभापति सेठ सखाराम नेमिचंद हुए थे।

दूपरे दिन ७॥ बने सबेरे रावबहादुर केल्कर डिप्टी कलेक्टर के सभापतित्त्वमें सभा हुई। पहले ही कुंभ स्थापन कर सरस्वतीपूनन की गई। किर सेट ही चुंभ स्थापन कर सरस्वतीपूनन की गई। किर सेट ही चुंभ स्थापन कर चंदनीको बोहिंगोंका बीनभून कहकर नियमावली आदि सुनाई। तब सभापतिने बोहिंगका द्वार खोला। पं० पासु गोपाल शास्त्रीने छात्रोंको रत्नकरंडश्रायकाचारका पाट दिया। शीतलप्रमाइनीने विद्याके महत्वपर उपवेश दिया। किर सभापतिने अपने विद्वता पूर्ण भाषणमें कहा कि "हिन्दू लोग जैन धर्मके कारणसे ही मांससे बचे हुए हैं। आनकल भारतमें भारी दान देनकी उत्तम सीत पहले पारसियोंने चलाई, किर उन्हींका अनुकरण जैनियोंने

किया" उपस्थित मंडलीने बोर्डिंगको १६७९) मेट किये। आनकछ यह बोर्डिंग एक तए मकानमें बहुत उन्नतिके साथ चल रहा है। मंत्री सेठ हीराचन्द्र नेमचन्द्र बडे उद्योगी हैं।

पर्वतरक्षाक्रमेटी कलकता श्रीशिखरनीक लिये पूर्ण उद्योग कर रही थी। फीरोनाबादके मेलेका मौका फीरोजाबादभें शिख- नानकर शिखरनीके लिये खास विचार रजीकी सभा। करनेको खास २ महाश्चर्योकी एक सभा बुलाई गई। कलकत्तिसे भी बाबू धन्तूलाल और सेठ परमेष्ठीदारुजी आए थे। इन्दौरसे सेठ हुकपचंदजी, फीरोजपुरसे छाला देवीसहायजी, शोलापुरसे सेठ हीराचंद व सला-राम नेमचंद्र आदि अनेक तीर्थभक्त उपस्थित थे।

बम्बईसे सेट माणिकचंदजीन अपने कुटुम्बको श्रीमती मगन-बाईजीके साथ कुंडलपुर ( दमोह ) में महासभाके उत्सदगर भेन दिया, क्योंकि महासभाका अधिवेशन ता० २८ मार्चसे था और फीरोजाबादमें ता० २४ व २५ मार्चको सभा थी। सेठजीको धर्म कार्यके निमित्त शारीरिक कप्टकी बिलकुल भी परवाह नहीं थी। आपने यही निश्चय किया कि फीरोनाबाद होकर कुंडलपुर चले आवेंगे। शीनरप्रपादनीके साथ आग फीरोनाबाद पहुंचे। वहां सेठ मेत्रारामजी आदि रानीवालोंने सब तरह सर्व भाइयोंका सन्मान किया। पर्वतकी रक्षा तन मन धन लगाकर की जाने, इसमें कोई बात उठा न रक्ली जाय ऐसा निश्चय किया गया। यहांसे सेठनी दमोह स्टेशनको खाना हो गए।

दमोह जिलेमें कुंडलपुर अतिशयक्षेत्र है, जहां प्रति वर्ष चैत्रमें मेला हुआ करता है। इस वर्ष था० दि० कुंडलपुरकी महा- जैन महासभाका बारहंवां अधिवंशन बड़े सभामें सेटजी। समारोहके साथ ता० २८ मार्चसे २१ तक बाबू देवकुमारजी जमीनदार आराके

समापतित्वमें हुआ। आजकल ऐना भारी समारोह किसी जल्सेमें नहीं हुआ था। इस मेलेमें १२००० जैन व २८०० अजैन एकत्र हुए थे। दमोहकी स्वागतकारिणी समाने व उत्साही स्वयंसेवकोंने बहुत ही प्रशंपनीय प्रवन्ध किया था। मंडप भी बहुत बड़ा रचा गया था। प्रायः सर्वे प्रान्तोंकं प्रतिष्ठित दि॰ जैनी उपस्थित थे । सेठ माणिकचंदजी कीरोनाबादसे शोलापुरवाले व शीतल-प्रसादजीके साथ ता० २६ की शामको दमोह आए और उसी समय कुंडलपुरको खाना हुए। बैठक ता० २८ से शुरू हुई। श्री-मान सेट मोहनलाल खुरईने स्वागतका भाषण सभावतिकी हैसियतसे पदा । फिर सेठ माणिकचंदजीके पेश करने और सेठ पूर-णसाह सिवनीके समर्थनसे बाबू देवकुम े सभापति क आसनको प्रहण किया । आपने अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण करके इननी शांतिस प्रस्ताव सब्जेश्ट कमेटीमें ठीक कराके आमसभामें पास किये कि विद्य आनेपर भी कोई अंतराय नहीं पड़ा। वेश्यानृत्य, बालविवाह, वृद्ध-विवाह आदि कुरीति निषेधके प्रस्तावका समर्थन सेठ मा-णिकचंदजी और इनके मित्र धर्मचंदनी मुनीम पाछीतानावाछोंने किया था। उपयोगी अस्तावोंमें एक जाति व धर्मकी सेवा करने-वार्लोको पद दिये जानेका हुआ। दूसरा श्री सम्मेदशिखरजी सम्बन्धी हुआ ।

समामें बाबू देवकुमारजी सभापतिके नाम ए० एच० बी० अंहर सेकेटरी गवर्नमेंट बंगालका पत्र ता० २४ लाट साहबका विरुद्ध मार्चका इस आशयका आया था कि बी-

हत्म और जैन स- चकी टेकरी या रास्ता छोड़ दिया जाय तथा इसे भी जैनी लोग अच्छे ट्राम देकर सदाके माजका जोश।

लिये खरीद हैं या पट्टेंगर है हैं। पश्चिमीय

पहाड़ यूरुपियन और पूर्वीय देशियोंक बंगलोंके लिये दिया जाय तथा नीमियाघाटसे नई बास्ती तक नई खड़क बने । तथ अंतमें लिला था कि यह भारत सर्कारका हुतम है, मर्व जैनियों में । सिद्ध किया जाय तथा और जो कुछ कहना हो वह कोर्ट अफ बाइमसे शीध कहा जाय । इस पत्रको सुनते ही सेठ माणिकचंदजी बहुत ही उदान हो गए तथा हमारों आदमी असंतोषसे घनडा गए । तत्र महात्रभाने प्रम्तात्र नं० १४ इस आ**श**यका पाम किया कि इम हुक्मसे मर्व जैन ज,तिक हृद्यपर बहुत चीट लगी है। सर्कारने इम कार्रवाईसं ज्यर्थ असन्तोष फैलाया है। जो असन्तोष है व होगा उसे महामभा रोक नहीं मक्ती वयोंकि यह पर्वत अनादि कालसे पुज्य और पवित्र है। इनपर ऐसा कृत्य किसी मुमल्मान राजाने भी नहीं किया तथा इस प्रश्तावकी नकल इंडिया गवर्नमेन्ट व स्टेट सेकेटरी छंडनको भेजी गई तथा जैन नातिसे प्रेरणा की गई कि वह जन धन और सहाचुभूतिये पूर्ण उद्योग करे । पंडित गोपालदास व पं. धनालालने इम प्रस्तावका हाल सर्वको समझाकर पास कराया । प्रस्ताव नं. १६ इ वि ।यका हुआ कि महासभाके मंडारमें जैनी मात्रसे प्रति मास एक पैना बसूछ किया जावं। प्र० नं० २० में बाबू देवकुमारजी महासमाके समापति नियत हुए। प्रं० ने० २२ में महाविद्यालय सहारनपुरसे काशी बद्टा गया । श्रीमान् पंडिन गोपालदासजीका पुरुषार्थ पर, देशभक्त खावर्डे महाशयका भारतकी दशा पर बहुत प्रभाव-शाली व्याख्यान हुआ, बुन्देळखड प्रांतिक समाकी स्थानना हुई। श्रीमती पावतीनाई, कंक्कवाई, मगनवाईजी आदि पही हुई बहर्नोन स्त्रियोंको अनेक विषयोंपर उपदेश दिया। मगनबाईजीने २००० भाषाप्रवेशकी पुस्तर्के स्त्रियोंको बांटी और पहनेकी प्रेरणा की। दमोहमें कत्याशालांक लिये २२६) रु० वार्षिकका चंदा कराया । इसी मेलेमें मगनवाई नीको बेसरबाई बडबाहाका परिवय हुआ निमने स्त्रीममानमें विद्याप्रचागर्थ अपनी लक्ष्मीका अच्छा भाग खर्च करना प्रारंभ किया है । यद्यपि इस सभामें कोई भारी चंदा नहीं हो मका तथापि बुंदेलखन्डकं भाइयोंपर अपनी उन्नतिको कमर कमनेके लिये बहुत उत्तेनना हुई। सेठजी भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका जल्मा करना

सेटजी भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका जल्सा करना चाहते थे पर नियमावलीके अनु के एक मेम्बरकी कमी होनेमे जल्मा न हो सका।

कुंडलपुरमें सेटजीके चित्तको श्री सम्मेदशीखरणी सम्बन्धी
सर्कारी आज्ञासे बहुत बड़ा क्ष्ट हुआ।
सेटजीको शांखरजी- यह मर्जारी हुत्म कैते टले और परमपित्र
की चिन्ता। पर्वतकी रक्षा हो इन विचारमें दिन रात लीन हो गए। इन मेलेमें १२००० जैतियोंके
भारी क्षोम और उनके केशित चित्तसे निकले हुए वचनोंको सुनकर

और भी सेठजीको चिन्ता होती थी कि क्या होनेवाला है। कई तो यही कहते थे कि यदि बंगले बनने लगे तो हम पहाड़पर पड़ जांबगे, मार खांबगे, मरेंगे, पर परम पृज्य ध्यानकी भूमिको गृह-स्थियोंका प्रपंचघर व पश् हिंसा, मदिरापान, विषयभोग, विलासका स्थान कभी न बनने देंगे। इस समय भारतमें स्वदेशी आन्दोलन-की बड़ी धूम थी। जैनियोंको भी ज्यास्त्यानोंसे व अखबारोंसे यह मन चर्चा माळूप होती थी। उधर जैसे बंगाल बंगमंगके कारण विक्षिप्त चित्त था और विदेशी माल न ज्यवहार कर मधदेशी कार-खाने, विद्यालय खोलनेमें अनुरक्त था ऐसे ही जैनसमानका चित्त हो गया था । जैन अखबारोंक भिवाय अन्य पत्र भी सर्कारकी इम आज्ञाको बहुत ही अनुचित और निनियोंके पवित्र धर्म व श्रद्धाके बाधक मानकर सम्मादकीय लेख लिखने लगे। जैनमगतमें संदेशी वस्तु प्रःण व शिल्क्नीपर प्राप्त स्वीद्यावर् करनेके प्रसाद होने लगे। सर्व देशीय मभाओंने भी जनियोंक इस दुःखमें महानुभूति दर्शाई । विहार प्रान्तिक कानफरेन्स बांकी-पुरमें यह प्रस्ताव पास किया "सम्मेड्शिखर पर बंगले बनानेकी" आशासे जैन प्रना धुन्य हो उठो है। सरकारको चाहिये कि इस अनुचित कृत्यसे अपना हाथ खींच ले ''।

मुगलहाट जिला रंगपुरके भाइयोंने इस शिलरजीके उपसंगकी सुनकर विलायती नमक बेचना बंद कर दिया, जो वर्षमें रू. २०००) का खपताथा।

परम पवित्र तीर्थरानकी रक्षाकी चिन्तामें भन्न भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिकारी और तीर्थीकी रक्षाके निम्मेट्रार

सेठ माणिकचंद्जीके हार्दिक दुःखका अनुभव करना कठिन है। बम्बई आकर ताः ९ अप्रैल ०८ को हीरा-बगमें एक समा बुलाई। सेठ हरमुखराय अमोलकचंदनीके मुनीम लाला मिश्रीलालनी समापित हुए। सर्व जैनियोंने सर्कारी आज्ञाका विगेध करके वादानुवादके वाद यही निश्चय किया कि अब केवल दो ही उपाय रोष हैं—एक मुकदमा चलाना दूसरा अपन प्राणोंका विसर्जन करके पर्वतकी रक्षा करना। समामें दो प्रस्ताव पाम हुए—एक शोक प्रकाश करने और दूसरा गवर्नमेन्टकी आज्ञा अन्वीकार करनेक विषयमें। दोनोंकी नकल भारत सर्कारको भेन दी गई।

ता. ९ अप्रैडको निम्बगांव (पूना)में दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभाका नैमित्तिक अधिवेदान सेठ सखाराम जिम्बरजीपर बंगले नेमचंद, शोलापुरके सभापितत्वमें हुआ। उसमें बननेका विरोध। शिखरजीपर बंगले बननेका विरोध व स्वदेशी प्रह-ण और विदेशी बाहिष्कारका प्रस्ताव पास हुआ। सेठमाणिकचंद्जीन कमेटी द्वारभ इस सर्कारी धर्मधातक आज्ञाकी खबर सर्व पंचायतियोंको करदी। तब जगहर सभाएं होकर विरोध किया गया। ता. २० अप्रैलको बम्बई प्रान्तिक काँनफरेन्सका जल्सा धूलियामें राव बहादुर जोशीके सभापितत्वमें हुआ उसमें येवलाके दामो-दर बापूने सन् १८५८की घोषणापत्रके विरुद्ध जैनियोंके धर्मधातको होते देख इस सर्कारी आज्ञाका विरोध किया। इसका समर्थन सेठ-वालचंद हीराचंद, मालेगांव, मुंशी गुलाम मुहम्मद (नगर), लोक-मान्य बाल गंगाधर तिलक्तने किया। ता. २९ अप्रैलको बम्बईके

जालबागमें खेताम्बर जैनियोंकी एक विराट समामें इस आज्ञाका पूर्ण विरोध किया गया। अहमद्रनगरकी सर्व देशीय निला कॉन्फरेन्समें भी इसका विरोध हुआ। सेठजीने गुजराती पंचसे जान-कर कि महाराज दर्भगा १ लाख रुपया लगाकर पहाड़ शिलजीपर मैनिटेरियम बनाना चाहते हैं, महाराज दुर्भगाको १ अर्जी ता. ४ मईको लिखी, निप्तका उत्तर ता. १० मईको आया कि यह जान बिलक्ल असत्य है।

जैनियोंकी अति भुड्य अवस्था व विरोधको सुनकर छोटे लाट बंगालने ता. १६ मई १९०८को कलकत्तेमें बंगाल सर्कारका बाव् धन्त्लाल, परमेप्ठीदास, महाराज बहादु-रसिंह, व राय मनीलाल, नाहर बहादुरसे दूसरा पत्र । की और उसी दिन एक पत्र बी० एक। लिन्स

प्राइवेट सेन्नेटरीने राय मनीलालके नाम भेना जिसकी नकल बमनई मेठनीके पास आई। इसमें भी पहली आजाको दद करते हुए उनना आश्वासन दिया गया कि नो कुछ प्रतिनिधियोंन सम्पूर्ण पर्वनको खरीदने व पट्टेपर सदाके लिये लेनेको कहा है, उसके सम्बन्धमें कमिश्नरसे रिपोर्ट करके कहा जायगा। जब तक जमींदार व कोर्ट ऑफ बाइससे जांच न हो मामला योंही रहे। यद्यपि इम पत्रसे कुछ-अधिक संतोब न हुआ पर इतना अवस्य प्रगट हुआ कि अभी बंगला बनना रोक दिया गया है तथा सम्पूर्ण पर्वतको पट्टेपर छेनेका प्रयत्न होना चाहिये । सेठनीने कलकत्ते वार्लोको छिला कि खुलामा आज्ञा निकलना चाहिये कि बंगले न बर्ने तथा पर्वतकी रक्षाका पृणे पयत्न किया जाग्र ।

बम्बई प्रान्तमें इस विषयका विरोध सीमासे बाहर देखकर बम्बई गवर्नरने प्रसिद्ध प्रतिष्ठित जैनियोंसे इसका बम्बई गवर्नरका कारण पूछा तो सबने यही कहा कि लोग सर्कारकी बंगले बननेकी आजासे घषडा गए आश्वामन पत्र । हैं। तब बम्बई गवर्नरने बंगालसकीरसे मालूम करके जुन माम १९०८में एक पत्र वीरचंद दीपचंद सी. आई. ई.को लिखा, सो अखबारोंमें प्रसिद्ध हुआ जिनका यह आराय था कि जब कि आपकी जातिने राजासे कोई ऐसा प्रवस्थ नहीं किया है कि जिससे आप पहाड़ खरीद हेवें या जिमसे राजा असपर बंगले बनवानेका विचार छोड देवे । वर्तमानमें जब तक पैहाड कोर्ट आफ वॉर्ड-सके आधीन है इस प्रश्नको रोक देना ठीक समझा जाता है (The question should be dropped at any rate so long as the property remains under the Court of Wards at present) इससे आप देखेंगे कि सकीर जैन जाति-के घार्मिक विचारोंको हानि पहुंचाना नहीं चाहतो है। यह मामला जमींदार और जैनजातिहा है और रिशा होती है कि परस्पर योग्य फैसला जल्द हो जायगा और जैन जाति सदा राजभक्त होगी निस राज्यके द्वारा उसने उन्नति प्राप्त की है।

इस पत्रको देखकर सेठ माणिकचंद्रजीको कुछ और भी सन्तोष-की मात्रा हुई पर बंगाल गवर्नमेन्टकी कोई आज्ञा न निकलनेसे पूरा भरोसा नहीं हुआ कि बंगले बनेंगे या नहीं। ता० ११ जुलाईको छोटे लाटने जैनियोंके दि॰ और स्वे० प्रतिनिधियोंसे फिर कलक-त्तेमें मुलाकात की। इस समय बम्बईसे शीतलप्रमाद्जी और फिरो जपुरसे देवीसहायनी भी आए थे और धन्त्रुताबू व परमेष्टीदासके साथ लाट साहबसे मिलेथे परंतु बातचीतमें कोई निश्चित बात नहीं कही तथा रात्रिमें फिर बुलाया।

पावागढ पर्वतपर तांबेकी खानके मौकेको देखने बम्बईके गवर्नर ता० २४ जनवरीको आए ये तब दिग० पावागढमें तांबेकी जेनियोंने पर्वतरक्षाकी प्रार्थना की थी, उसके म्वान स्वोदनेकी उत्तरमें विचारनेको कहा था। तीर्थक्षेत्र कमेटीने भी एक बार्थना पत्र मेना था उसका आजा । उत्तर बम्बई गवर्नरके चीफ सेकेटरीने नं० ६२३६ ता० २४ जुनमें लिखा कि सेठ माणिकचंद महामंत्री र्ताः क्षे कमेटीकी अजीता ० २४ मईके उत्तरमं सूचित किया जाता है कि सर्कार पावागढपर खान खोट्नेकी इजानत नहीं देती है (The Government not allowing prospecting or mining operations in the Pawagarh Hill.) सेउनीके आकुलित चित्तको पावागढ सिद्धक्षेत्रकी चिंताकी निवृत्ति होनेसे कुछ शांति हुई ।

परंतु तुरत ही कलकत्तेसे म्वबर आई कि महासभाके सभा-पति आरा निवासी बाबू देवकुमारजी रुग्ण अवस्थामें कई मास रहकर अंतमें एक भारी शोकमें अपने धर्ममित्र ब्रह्मचारी नेमिसागरसे मरणके सेटजी। ६ वंटे पहले समाधिमरण लेकर ता० ५ अगस्त १९०८की रात्रिको ११ बजे स्वर्गधास पधारे। आपकी अवस्था केवल ३२ वर्षकी ही थी। इतनी उम्रमें ही आपने महा- सभाकी व कैन जातिकी बहुत कुछ सेवा की थी। स्थाद्वाद पाठ-शाला काशीको अपनी धर्मशालामें आश्रय दिया व जीवन पर्यत उसकी रक्षा की। दक्षिणयात्रामें ग्रंथोंके बंडार ठीक कराए। सरस्वती भवन खोलनेकी फिकमें थे, किन्तु यह नियम ले लिया था कि जब तक भवन न खोलूं तब तक ब्रह्मचर्य पालूंगा। ऐसे होनहार धनाढ्य और एफ० ए० तक संस्कृत इंग्रेजी पढ़े हुए धर्मश्रेमी देवकुमारका स्वर्गारोहण जानकर सेठजी शोकमागरमें डूच गए। बाबू साहबकी सेठ माणिकचंदमें अनन्य भक्ति थी। अन्तमें वे कह गए कि—

" दानवीर सेठ माणिकचंदजी आदिसे मेरा धर्म स्नेह पूर्वक जुहारु कहना और उनसे सरस्वती भंडार शीघ स्थापित करनेकी प्रार्थना करना। "

पीछे जब सेटजीने सुना कि व अपने एक वसीयतनामें में १००००) नकद व १ गांव ९०००) वार्षिककी लागनका धर्म कार्योंके लिये दे गए हैं, तब आपको कुछ संतोप हुआ। इस दानकी विगत जैनिमत्र अंक २१ ता० २८० आगम्त १९०८ में छपी है। इसमें १५००) वार्षिक सरस्वती मवन, ८००) औषधालय शिक्स की और ५००) छात्रवृत्ति धर्मशिक्षार्थ भी हैं।

ता० ११ अगस्तको सेठ मांणिकचंद्जीके सभापतित्वमें सभा होकर बाबू देवकुमारजीकी मृत्युपर शोक बम्बईमें सभा। प्रगट किया गया। बाबू शीतलप्रसादजीने मरणके थोड़े दिन पहलेकी अपनी मुलाकातका हाल वर्णन किया। जब वह कलकत्ते गए ये कि बाबू साहब एकान्तमें बड़े कमरेमें लेटे थे, शरीर सुख गया था, अपने पास कुटुम्बीक. बेटने नहीं देते थे, धर्मात्मा ब॰ नेमीसागर आदिको बिटाए रखकर धर्मभावकी वृद्धिमें लीन थे।

छोटे छाट सर फ्रेज्ररने शिखरजी सम्बन्धी वात करनेको रांचीमें जैन प्रतिनिधियोंको बुछाया उस रांचीमें शिखरजी समय बम्बईसे सेठ माणिकचंद्जी शीतल-प्रकरण। प्रसादजीको छेकर रांची गए। ता. १६ सितम्बर १९०८को वार्ताछाप हुआ। कुछ पर्वतको पट्टापर देनेकी वार्ते हुई। यहां राजा भी बुछाया गया था। छाट साहबने २ छाल रु० नकद व१९ हजार रु० वार्षिक मांगे। जैनियोंने अपनी सामर्थ्य न समहाकर इनकार किया-मामछा तय न होकर योंही रह गया।

मेट माणिकचंदकी भावन सेठ प्रेमचंद्र मोतीचंदकी माता रूपा-बाई बड़ी ही धर्मात्मा थीं। अपने द्रव्यका माना रूपावाईको निरन्तर सदुपयोग विचारा करती थीं। अह-मानपत्र। मदाबाद बोर्डिंगके चैत्यालयके लिये आपने ४०००) लगाकर एक मनोहर चांदीका भमक्शरण बनवाया था। उसे स्थापित करानेके लिये आप मिती ज्येष्ठ सुदी २ को अहमदाबाद गई थीं। वहां विधिसे पूनन कराई तथा यह ठहराव किया कि प्रति मादों सुदी ५ को श्री सम्मेद-शिलरजीकी पूजा ठाठवाटसे हुआ करे जिसके खर्चको एक रकम अलग कर दी कि इसके व्यानसे हर वर्ष पुना हो। उस समय बोर्डिङ्कके कार्यकर्ता और विद्यार्थियोंने श्रीमती बाईनीको अति प्रतिष्ठांके साथ अपनी कृतज्ञता प्रगट करनेको एक मानपन्न अर्पण किया । वास्तवमें धर्मात्मा स्त्री व पुरुष सर्वके अंतःकरणको प्यारे लगते हैं।

रांचीसे आते हुए सेउनी काशी आए। आपको तीर्थ भक्तिकं स्या॰ महा वि॰ की श्वान रहता था। ता. २० सितम्बरको श्वान रहता था। ता. २० सितम्बरको भवन्यकारिणी मेदागिनी जैन मंदिरमें सभा हुई। बाबू देव-कुमारजीकं वियोग पर शोक प्रगट करके बाबू जैनेंद्रिकशोर मंत्री और टक्ष्मीचंद्रजी उपमंत्री नियत हुए। सभासदोंकी संख्या फिरसे ठीक हुई। महाविद्यालय और स्याद्वाद पाठशालके सम्बन्धका प्रस्ताव हुआ। देशी गणित और इंग्रेजी पढ़ानेका प्रस्ताव हुआ। अध्यापकोंका वेतन बढ़ाया गया। पंडित माणिकचंदने प्रमेयकमलमार्तड और पं० गणेशप्रसादने अष्ट सहस्त्रीमें परीक्षा पास की थी। ये दो प्रंथ जैनियोंमें गंभीर न्याय विषयके हैं। इससे इनको विशेष पारितोषिक देनेका प्रस्ताव हुआ।

यहांसे सेठजी ता० २२ सित्रभ्यस्को प्रयाग आए । आप अलाहबादमें बोर्डिङ्क स्थापित करनेके लिये

अलाहबाट्में जैन बो- पत्रन्यवहार तो कर ही रहे थे। बाबू डिंक्सकी कोशिश । शिवत्ररणलाल रईसको तार कर दिया था। स्टेशनपर उक्त बाबू साहब कई भाइयोंको

लेकर उपस्थित हुए। अति सन्मानसे अपने यहांकी गाड़ियोंपर ले नाकर अपने मकानमें ही ठहराया और बहुत खातिर की। ता॰ २२ की रात्रिको सेठजीकै सन्मानार्थ बाबू साहबके मकानपर

ही सभा हुई । सभापति सेठनीको ही नियत किया । बाबूलालजी प्रयागकी प्रार्थनापर कि शिखरजी व स्याद्वाद पाठशालाका हाल बताया जावे शीतलप्रसादजीने कहा कि हम लोग रांची गए थे। लाट साहब कुछ पर्वतका पट्टा देनेको तयार हैं पर वह २ लाख नकद व १५०००) वार्षिक मांगते हैं। जब कि इधरसे अर्जी दी गई कि सदाके लिये झगडा मिटानेको हम लोग २॥ लाख नकद और ४०००) वार्षिक देना चाहते हैं अभी मामला तय नहीं हुआ है तथा काशी विद्यालयमें २७ छात्र मली प्रकार संस्कृत अध्ययन कर रहे हैं। इतना कह धार्मिक विद्याकी आवश्यकताको बताते हुए नहां कालेज हों वहां जैन बोर्डिङ्गकी जरूरत दिखाई। इसका समर्थन बाबू जुगमन्दरलाल एम० ए० के माई समन्दरलाल और बाबू वच्चूलालने किया । सेटजीने भी इसकी पुष्टि करके सभाको समाप्त किया । दूसरे दिन जैनधर्मशालामें सभा हुई । बावू शिवचरणलालजी मभापति हुए । ज्ञीतलप्रसादजीने ऐकता और प्रेमपर व्याख्यान दिया ! समर्थन पंडित झम्मनलालजी अध्यापक जैन पाठशालाने किया । फिर सेटजीन जैन बोर्डिंगकी आवश्यकतापर कहा । बाबू शिवनरणहालने पुष्टि की और चंदा खर्चका लिखनेको तस्थार हुए पर पृरा होनेकी आशा न देखकर काम बंद रहा । दूसरे दिन सबेरे सेठजी शीतलवसादभी और गनकुमारजी आराको लेकर स्वर्गवासी वाबू सुमेरचंद्नीकी धर्मपत्नीको बोर्डिंगकी आवश्यकता बताने गए तथा यह सुन रक्ता था कि उक्त बाई २५०००) किसी धर्मकार्यमें लगाना चाहती हैं। इनसे समझाया गया कि यहां बोर्डिंग होनेसे कालेनके छात्र जैन धर्मके श्रद्धानसे च्युत न होंगे, बढ़ा भारी उप- कार होवेगा । बाईजीने विचार कर १५ दिन बाद उत्तर देनेको कहा । सेठजीने गनकुमारजीको अच्छी तरह जंबा दिया नो इस चाईके आता हैं व स्टेटकं प्रबन्ध∓र्ता थे। यहांसे चलकर सेठजी बम्बई आए ।

श्रीमती मगनबाई जीकी प्रेरणासे छलनऊ निवासी श्रीमती पार्वतीबाई अप उधर स्वर्ण्वसे भ्रमणकर बहुत उपकार कर रहीं थीं। सर्धना जिला मेरटमें जीका कार्य्य व स्थिपेकारक नामकी सभा स्थापित की जिसकी सभा प्रति चतुर्दशीको होनी निश्चित हुई। वहांकी पाठशालांक प्रक्थको ठीक किया तथा शिखरजींक रक्षार्थ यहां व मुबारकपुर जाकर क० ५००) का चंदा कराया। वहांसे महारनपुर जाकर आदिशन सुदी ८ को किरपीबाई जीके मंदिरजीमें सभा की। स्थिपोंकी ऋतु सम्बन्धी कियापर उपदेश देकर कईने नियम लिया। आश्वित सुदी १० को आप नकूड़ गई। वहां तीन दिन सभा की। वहां विधवाश्रम कायम करनेको उपदेश देकर क० १०२) का चंदा है एया। यहांसे मुजण्फरनगर, खतौली व मेरठ उपदेश देती हुई दिहली पधारीं।

श्री किप्तिन्वापुर श्री पुष्पदन्त स्वामीका जन्मक्षेत्र है।
वहांपर श्री जिनमंदिरजी व उस सम्बन्धी
किष्टिक्धापुरकी रक्षा। जमीन है। इस जमीनको सक्तीर अपने
कब्जेमें करना चाहती थी तथा इसकेलिये नोटिस दिया था। इसकी उजरदारी गोरखपुरके भाईयोंन की
तथा सेटजीको सुचना की। सेटजीने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा छोटे

लाटको अर्जी भेनी। इसका अंतिम उत्तर आया कि सरकारने गोरलपुर जिलेके खुखुंदी स्थान पर ६४ एकड जमीन जैन मंदिर, घर्मशाला, और बागकी अपनी आधीनताईसे निकाल दी है। ऐसी मूचना नं २९९७/३६७ ता० १२ नवम्बर १९०८में प्रगट. की है। बास्तवमें जो शांति व प्रभावके साथ उद्यम किया जाय उसमं अवस्य सफलता होती है।

भादों मास वर्मन्यान सहित पूर्ण होनेपर मिती आसौन सुदी १४ को बम्बईमें सेठ माणिकचंद्नीके सभा-बम्बईमें सभा। पनित्वमें एक सभा हुई जिसमें सम्मेदशिखर सम्बन्धी हकीकत जो रांचीमें हुई थी सो सब वर्णन की गई। तथा फीरोजपुर छावनीके धर्मात्मा दानी लाला गमलालजी ( पिता लाला देवीसहाय ) की मुत्यु पर शोक प्रदर्शित किया गया। आपने शिखरजीकी रक्षामें बहुत मिहनत की थी। आप १००) मासिक जैन अनाथाश्रम हिसारको देते थे। मरनेके पहले १४२०४) रुवका दान कर ताव २ अक्टूबर १९०८ को परलोक सिवार । इसमें १००००) रू० वास्ते धर्मशाला और जैनमंदिर म्टेशन ईसरी शिखरजीके मार्गमें, ५२५) जैन अनाथालय हिसार, २२५) के आटा चावल शिखरजी पर व २२५) हस्तनापुरके दीनोंको, १०१) अयोध्या व १०१) गिरनारके दीनोंको बटे; २५००) स्थ बनानेको, ५२५) जैनमंदिर रिवाङ्गी,५१) पं० रिवाङीकी निसयां व ५१) गौशाला फीरोनपुरमें दिये। सेठ साहबने आपके गुणोंकी सराहना करते सभा विसर्जन की !

जैपुरमें पं अर्जुनलाल सेठी द्वारा स्थापित जैन शिक्षा प्रचारक समितिका वार्षिक अधिवेशन कार्तिक सुदी जैपुरमें श्री ॰ मगनबाई । १को था । सुदी २ को वस्वईसे श्रीमती मगनबाई जी भी जयपुर पद्यारीं । आपके कई व्याख्यान हुए । इनके असरसे गुमानी जीके मंदिरमें पद्मावर्ता कन्या-शाला समितिकी तरफसे खोली गई तथा विधवाश्रमके लिये जोर दिया जिसमें १०) मासिक विधवा फंडसे व ९) रु० मामिक स्वयं मदद देना कहा ।

सेठ माणिकचंदजीको सदासे ही जातिकी बालविवाह आदि क्ररीतियोंके निवारणका खपाछ था। दहीगांव द्हीगांवमें सेठजीका एक अतिशय क्षेत्र शोलापुरके तालुके माड-**भिरसमें दिग्सल स्टेशनसे २२ मील दहीगांव** भ्रमण । है। यहां एक वृहत् श्री महावीरस्वामीका दि॰ जैन मंदिर विशाल, मानस्तंत्र और शिवरोंसे दूर २ तक अपनी प्रेमा चमका रहा है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९१२में फलटनके बालब्रह्मचारी सेठ हीराचंद अमोलक्ष्मे उपदेशसे हुई, जिन्होंने अपने गुरु ब्रह्मचारी महतीसागरके स्मरणमें यह मंदिर निर्माण कराया। यह ब्रह्मचारी बड़े धर्मात्मा तथा तथागी थे। इनके उपदेशसे दक्षि-णमें बहुत सुधार हुआ था। यहां प्रतिवर्ष मगसर वदी २ से अ तक रथोत्नवका मेला भरता है जिपमें वीसाहमड़ भाई अधिक आते हैं। इस वर्ष गांधी नाथारंगजीने कुरीति निवारणका विशेष प्रबन्ध करेंगे ऐसी सुबनाके छपे हुए नोटिस भेजे थे। इसीपरसे सेट माणिकचंदजी सकुटुम्ब शीतलप्रसादनीके साथ मेलेवर पत्रारे। आकरुत्रसे सेठ गंगासम और उत्साही नवयुक्क बापूजी पानाचंद्र नाथा तथा फल्टनसे बाबू चंदूलाल वकील आदि आए थे। मगमर बदी ६ को ब्र० महतीसागरजीके स्मरणार्थ महतीसागर धर्मोद्योतनी नामकी सभा स्थापित हुई। यह प्रतिवर्ष इस क्षेत्रपर होवे और धार्मिक व सामाजिक उक्षति करे। इसका अधिवेशन हुआ। सेठ माणिकचंद्जी सभापति हुए। शिक्षा प्रचार, कत्याविकय निषेध, स्वदेशी वस्तु व्यवहारके प्रस्ताव पास हुए। रात्रिको फिर जल्सा हुआ।

शीतलप्रसादनीन सभाके लाम बताए । फिर क्षेत्रके सुप्रबन्धार्थं अ महाशयों की कमिटी बनी । मंत्री बाबू चंदूलालनी हुए । फिर सेठ वीरचंद कोदरनी फल्टनन कहा कि कल रात्रिको वीसाहुमड़की पंचायतन सेठ माणिकचन्द्रजीकी सम्मतिक अनुसार नीचे लिखा पंचायती ठहराव स्वीकार किया है—

" वीमाहुमड जाति सुश्रीरणी सभा "ऐसा टहराव करती है कि कोई भी वीसाहुमड अपनी लडकीकी सपाई १० वर्षकी कम अवस्थाम न करे।"

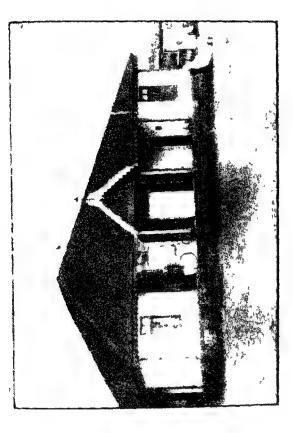
इस पर उपस्थित भाइयों के दम्तखत हुए हैं । रोव हम्ताक्षर कराये जांधगे । मैं मंत्रीका काम करूंगा । कन्याविकय न करेंगे इस पर भी बहुतसे भाइयोंने दम्तखत किये । इस मौकेपर कुरीति निवा-रण पर एक भाषण जो स्वयं सेटजीने लिखकर छपवाया था पड़ा ।

यहां जैनियोंके ७ घर व संख्या २० होने पर भी स्वागत व मोजन सहकारका प्रबन्ध अच्छा था। ८०० जैनी स्त्री पृरुष एकत्र हुए थे।

यहांसे सेठजी फल्टन गए । वहां पाठशाला स्थापित कराई । फिर बम्बई आए ।

सेठ माणिकचंद्जी कभी मौका चुकने वार्ल न थे। श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र दतिया रियामतमें है । बम्बईमें दतिया इम पर्वतसे श्री नंगानंग प्रमृति ५॥ नरेश और करोड़ मृनि मोक्ष प्यारे हैं। बहुतमें मंदिर मानपत्र । हैं पर उपबन्धा बराबर नहीं थीं । इसकी सटनीको बड़ी चिन्ता थी। कारणवश

महाराज द्तिया श्रीमान लोकेन्द्र गोविन्द्सिंह बहादुरज् अम्बर्ड पयारे। तब शीतलप्रमादनीके माथ आप बहुनसी मामग्री भेट लेकर गए। मिलकर नीर्थकी उन्नतिके सम्बन्धमे बान की। फिर तर ३१ अकट्बर १९०८की राजियो हीसबाग लेक्चर हालमें एक महती सभा बुलाकर और राजा माह्बका स्वागत करके तीर्थक्षेत्र कमेटी और वस्वई निवासी दि० केमार्थोको तरफसे एक सुन्दर मुद्रितः अभिनन्द्रमपत्र अर्पित किया गया । पं० घन्नाटाटकी द्वारा ःसुन कर पंडित रचनाथ रावजी प्राईवेट सेक्रटरी महाराजने उत्तर देते हुए कहा कि-महाराजा सःहब अपनी प्रसन्नता प्रगट करते। हैं और चाहते हैं कि १२ और वीम पंथियोंमें ऐक्य हो, जैन समाकी वृद्धि हो और दतिया रिपासतका क्षेत्र सोनागिरि पर्वत व्यापार प्रधान, विद्याकी पीठ और परोपकारकी मुख्य जगह जल्दहे जावै।



श्रीमती चतुरबाई मभाग्रह कोल्हापुर.

(देखो ३ष्ठ ५,८२)

इस सन् १९०८ में सेटनी प्राय: बम्बईमें इसी कारण ठहरे कि आपको शिखरनी पर्वतकी श्री शिखरजी सम्ब- रक्षाकी बड़ी भारी चिन्ता थी तथा उस न्धी चिन्ताका सम्बन्दी पत्र व्यवहार कलकत्ता आदिसे बहुत आवश्यक करना पड़ता था। कलकत्तमें उपशमन । पर्वतरक्षा कमटी रक्षाके पूर्व उद्योगमें लगी थी, लाट माहबमें पूर्ण पर्वनंक पट्टेकी बात चल रही थीं, कि इतनेमें पहले तारमे किर पत्र द्वारा मालुप हुना कि लार माहबने दिगम्बर नैनियोंको पूर्ण पर्वतका पहा देदिया। ५०००० ) नजरानांक नमा कगिलये और १२००० ) प्रतिवर्ष पालगंत स्टेटमें देनेका ठहरात हुआ। भी पट्टे उन बक्त तक थे उनको कायम सबके नो आमदनो हो मो दिगम्बरियोंको मिले । इसकी स्वाकारता एक. डब्छ, टयूक चीफ सेनेटरी बंगाल सर्कारने अपने पत्र नं. ४५०२ ताः ३० नतम्बर १९०८ को बाबू परमेप्टीतान मरावर्गा और धन्नुलाल अग्रवालको दी तथा पत्र ने० ४७०,१ हा ० २०-११-०८ उक्त सेक्रेटरीन मकीरी मोलीसिटरको खिला कि डिप्टो कमिश्चमकी संघमें लिखा **प**ढ़ी करा लेवें।

टम पत्रको पटका सेटजीकी बहुत बड़ी चिन्ता दूर हुई और यह निश्चय हो गया कि अब पृत्य पर्वतपर बंगलोंकी वर्म्ता न बनेगी । दूर मर्श्नेन समाकी वार्षिक बेठक श्र्या स्पत्न निश्चि अत्रपर तार्श्व जनवरी से ८ नतवरी द्रुप जेन सभा तक थी। सेठ माणिकचंद्ञी अपनी और सेटजी। सुपुत्री मगनवाई सहित पर्धार । इन दिनों शीनलप्रमाद्जीका शरीर जनगदिस पीड़िन था इससे यह साथ नहीं गए। सभक्त अध्यक्ष श्रीमंत प्रथ्या ्जक्रपा उर्फ आप्पा साहब देसाई हनगंडीकर हुए। सेठ माणिक-चंद्रजीने इनके अध्यक्ष स्थान छेनेके छिये अनुमोदन दिया। सभामें सेट रामचंद्र नाथा आक्लुज व अनेक अजैन विद्वान् भी थे। इनमेंसे ता० ९ को अध्यक्षके भाषणके पीछे बेलगांवके प्रसिद्ध चकील रा० ग० श्रीपादराव छन्नेनं व्यास्थान हेने हुए कहा कि—

" ऋग्वेदके कालमें जैन मत उच्च दशामें था। ऋग्वेदकार जैन तीर्थकरोंको बहुत पुज्य मानते थे। जैन लोग पाखंड़ी या नास्तिक नहीं है। "

बहुतसे प्रस्तावों में कई उपयोगी हुए जैसे (१) कोल्हापुर बो० के लिये स्थान मुफ्त देनेके उपलक्ष्यमें महागत कोल्हापुरकी धन्यवाद, (६) धन्यवाद सेठ नाथारंगजीको जो दो वपेमें ५४०) प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देते हैं, (६) शिक्तरजीका मामला सेनोपकारक निवटनेके वारण बाबू धन्न्हाल, सेट परमेष्ठोदाम और सेठ माणिक चं-द्रजीका उपकार, (४) हुबलीमें कनड़ी छात्रोंके लिये एक बोहिंग स्थापन हो इनके लिये रा० रा० हुसप्पा तबनप्रवर्ग ५०१) दिये। सभापतिने २०००) दिये कि ज्यामसे राजाराम कालितमें मर्वोच्च जैन छात्रको छात्रवृत्ति दी जाय (६) प्रीड विवाह किया जाय इस प्रस्तावको द्रोठ माणिक चंद हीराचंद जे० पी० नेइन शब्दों में एक जोरदार भाषणके साथ पेश किया।

''बालक और बालिकाओंकी लग्न बड़ी उम्रमें कर्नसे उनकी अकृति अच्छी रहेगी, विद्याभ्यास अच्छी तरह चलेगा, तथा बाल वैभव्यके संकट कम होंगे' । (६) धर्नादे पैसेके उपयोगके प्रस्तावका

अनुमोदन करते हुए सेठजीने कहा कि घर्षा देकी इकट्ठी की हुई रकम मत्कार्यमें लगाना अपना कर्तव्य है, दूनरे काममें नहीं, इतना ही नहीं, उस पैसेको प्रत्येक गांवके व्यापारी पंचायद द्वारा एकत्र करके सत्कार्थमें लगा सकते हैं। बम्बर्ड आदिमें एमी ब्यबस्या भी चाल है। (७) हुबलीमें बोर्डिंग स्थापनके लिये एक कमेटी बनी, (८) मैमुर सर्कारने शालाओं में धार्मिक शिक्षा देनेका जो प्रस्ताव किया है उप्तपर अभिनंदन, (९) कोल्हापुर बोर्डिंगमें अलग जिनमंदिर बांबनेकी स्वीकारता पर भूपाल अप्पाजी जिरगेको धन्यबाद्ध श्रीमती कंकुबाईनीकी अध्यक्षतामें महिला परिपद् हुई जिन्मे आविकाश्रम कोल्हापुरकी बाइयोंने व श्रीमती सगनबाई तीरन भाषण किया । मगनबाईजीने कहा कि भौमे तुम छोग कभी अ अपने पुरुषोंसे गहनोंक वास्ते हट करती हो ऐसे ही विधा सीखनक लिये हठ करो ¦' समामें दो कन्याओंने मगनबाईकीकी स्तति एक लिलितपदमें की वह इस प्रकार है-

[ चाल:—''चंद्रकांत रामाची कन्या मुगुण रूप खणी.'' 📜 धन्य ! धन्य ! तूं सगुणशालिनी अगनवाह भगिनी ॥ भुषविला स्त्रीसमाज आजी जानदान करुनी ॥ धू० ॥ इहलोकी स्वीप्रधां मोठ भूषण ज्ञान असे ॥ भगिनिजनां ते प्राप्त हो कसे तुज चिता विलसे ॥ कलिकालाचा दस्तर फेरा अजाना वितरी॥ त्यायोगे ज्ञानांध जाहले समाज एकसरी ॥ भरतजननिच्या शुभ दैवाने आंगलप्रभ् मिलले ॥ ज्ञानबलें आर्यातें त्यांनी बुद्धियंत केलें ॥ आमुचा बनला जैनसंघ तंब प्रागतीक जगती ॥ हिरे माणकें तयांत रत्ने चकाकती प्रती ॥

ज्ञानार्जिन एहिसंघ पुढे हों स्तीसमाज मागे ॥
उरला देखुनि भिग्निहर्यी चिंता बहु जागे ॥
'अमंभिषिक भूपा' ची कन्या धर्मशील बाला ॥
म्वी उन्नति होण्यास स्थापी आविकाश्रमाला' ॥
त्या आश्रमित्या आम्ही बाला ज्ञानार्जन करूनी ॥
सद्धमें बागोनी जाउं भावोदधी तरूनी ॥
स्त्रमें बागोनी जाउं भावोदधी तरूनी ॥
स्त्रमोजन्मी न हों! तयाचा आम्होंते विसर ॥
अन्भिषिक्त राजा करवा हो! समाजहितकृत्ये ॥
सीउन्नतिष्य कायं होवो! भगिनीत्या हस्ते ॥
भो! जिनवरा जगन्मंगला, ठेव सुखी आमुची ॥
गाजकन्यका मगनवाह ही पित्यासवे साची ॥ १ ॥

संटजी बम्बई आकर तुर्त ही श्री तारंगाजी पर्वतको ग्वाना हुए (यहां भी शीतलप्रसादनी तारंगाजीमें बम्बईपा० शरीरमें रोगके कारण न जा सके) जहां मधा व सेटजी। बम्बई प्रांतिक सभाका छटा वापिकोत्सव मिती मात्र सुदी र से था। इस जलसेके नियत किये हुए अध्यक्ष सेट हीराचंद अमीचंद, शोलापुरनिवासी, श्रीमान् दानवीर सेट माणिकचंद हीराचंद जे० पी० व अन्योंके साथ मात्र सुदी १ प्रातःकाल अहमदाबाद पहुंचे। नैसिंहभाई हरजीवन-दासकी तरफ से बालिट रोंने हारतोरे आदिसे सन्मानित किया। दोपहरको खेरालू स्टेशनपर आए। स्टेशनपर २०० भाइयोंके साथ सेट लल्लुभाई लक्ष्मीचंद अध्यक्ष स्वागत कमेटी उपस्थित थे। स्वागत करके अनेक पताकाओंके साथ गानते बजाते धर्मशालामें गए। यहां शामको दिगम्बर और धराम्बर साइयोंकी सभा हुई। जिसमें श्रे०

ने तारंगाजीपर चलनेवाली तक्तरारको आपसमें निवटानेका बाद। किया। रविवारको सबेरे पर्वतपर पहुंचे। पर्वतपर ठहरानेका सुप्रवन्त्र था । ४००० आदमियोंके बैठने टायक मंद्रप था। राज्ञि-को हमारे सेठनीके सभापतित्त्रमें उपदेशक सभा हुई नितमें संठ मूलचंद किमनदास कापड़िया सम्पादक '' दिगम्बर जैन ''ने समांक लाभ बनाए । सोमवारसं जनसं शुरू हुए । ६००० जैन एवळ थे । अकुर साहब, पृथ्वीसिंह तखतसिंहजी व सर्कारी अमलदार वर्ग उप-स्थित थे । सेठ माणिकचंदजीने सभावतिका प्रस्ताव करते हुए लहा कि हमारे सभापति इंग्रेजी मराठीके विद्वान, धर्मीत्मा तथा एक प्रशिष्ठित पुरुर्हेहें । इनके बड़ोंने इसी तीर्थपर एक शिखरचंद संदिरकी प्रतिष्ठा कराई है । सभामें १३ प्रस्ताव पास हुए, इतमें मुख्य ये ध (१) शिखरजीके निकालपर सेंट माणिकचंद्रजी आदिका आधार (५) मुम्बई समाचार, गुनराती व अन्य पंत्रांगोंमें वीर संवत व दि० जैन त्यों हारकी टोप रहे व इमका प्रबन्ध सेंठ माणिक चंद्नीं क मुपुर्द हुआ। (३) नैनिमित्रके सम्यादक शीतलम्मादकी नियत हुए । तारंगाजीमें समाके उपदेशक म्वांत आदिके लिये करीन १५००) के चंदा हो गया। इसमें सभावति और सेटनी प्रत्येकने २०१) दिये । यहां मंदिरजीके बजा दंड चटाई गई जिसमें ५०००) की उपन हुई।

जैन महिलाओं की एक भारो सभा सेठ होराचंद अमीचंदकी वर्मपरनी नवलबाईकी अध्यक्षतामें हुई। इसमें श्रीमतो मगनबाईनीने अहमदावादमें दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम स्थािवेत होनेकी आवश्यक्ता नताई और स्वयं १०००) देनेका उत्साह बताया । त्व और स्त्रियोंने भी चंदा दिया जो कुछ ४०००)का हो गया । सेउ माणिकचंदजीके पूर्ण उद्योगसे सभाका काम निर्विध हो गया, तब सेठनी बम्बई आये ।

मेटजीका कोल्हापुर जानेका बहुत प्रसंग रहता था। वहां भारी सभा भरनेको कोई सभागृह नहीं था। कोल्हापुरमं चतुरवाई एक दफे आपके चित्तमं आई कि बन जाना मभागृहके लिये चाहिय। इससे जैनियोंके सिवाय सर्व ४०००) सर्च। साधारणको भी लाभ पहुँचेगा। आप इमारत शुक्र करानेक लिये न्युका पत्थर रखनेको सुम्बईसे चलकर ताः ११ मार्चको कोल्हापुर आए और एक भारी सभा करके युवराज राजाराम महाराजके हस्तसे अपनी स्वर्ग प्राप्त धर्मपत्नी चतुरबाईके स्मरणार्थ सभागृह बनानेका पत्थर रखनाया। बहुतसे बाहरके जैनी भी आए थे। इसमें ४०००) खर्चनेका विचार किया।

टम मभारंभके पीछं सेटर्नाने कोल्हापुरके नैन न्यापारियोंके धर्मादे पैसंकी सुन्यवस्थाके लिये कहा, तब धर्मादेके: प्रस्तावकी सबने कबूल करके कुछ भाग नैन बोर्डिंगमें अमली कार्रवाई। देना स्वीकार किया। शाहपुरकी मंडलीने अपने यहांके धर्मादेको एक कर एक जिन मदिर बांधनेका प्रस्ताव किया। बान्तवमें यदि नैन न्यापारी वर्ग मचे दिलसे अपने २ यहांकी धर्मादेकी रक्षमोंको जो पैसा वास्तवमें भवें साधारणके लाभमें ही उपयोग आने लायक है, एक कर एक साथ राय करके सर्च करें तो हर स्थानमें पाठशाला, औषधालय

आदि वर्मके काम सहनमें हो जावें। ऐसा करनेमें सत्यता व नेक नियतीकी जरूरत है। बड़े २ व्यापारी बहुत धर्मादा काढते हैं वे ही देनेसे हिचकते हैं इसीसे योग्य उपयोग नहीं होता। धर्मीदा इन्य हमारा नहीं हैं यह भाव यदि हो तो बड़ा उपकार हो सक्ता है । दूसरे दिन जैन बोर्डिक्नके छात्रोंने सेटजीका बहुत सन्मान किया। मेटनी फौरत बम्बई आए । बड़े ही आनन्द व आश्चर्यकी बात है कि सेटतीको यात्रा करने व देश परदेश जानमें शरीर कष्ट व खर्चिका कुछ भी खपाल नहीं होता था। वान्तवमें जो ऐसे ही निरालसी दातार होते हैं वे ही कुछ कर जाते हैं।

जिसे गृहारंमादिके कामोंमें नाना चिन्ताएं रहती हं इसी

तरह व्यवहार धर्मक साधनमं मो बहुतसी

थीं अंतरीक्षनीमें चिन्ताएं हो नाती हैं। अब सहनीको धम मारामारी और मम्बन्धी ही चिन्ताएं रहा करतीं थीं। सेटजीको भारो श्री शिलुम्नीकी चिन्तासे कुछ मुक्त हुए थे कि यकायक अंतरीक्ष पार्श्वनाथके चिता ।

झगडेसे भारी चिंता हो उठी । बरार प्रान्तमें

अकाला म्टेशनसे ४० मील सीरपुर गांव है वहां श्री अंतरीक्ष पाधनायनीकी भन्य दिगम्बर नैन मूर्तिसे शोभायमान एक जिन मंदिर है । यह अतिशयकारी प्रतिमा है। व्यापारार्थ, आनेवाले स्वेताम्बरी मी दर्शन करने जाने आने लगे ये। बस्बईसे एक संघ यात्राके लिये पन्याम मुनि आनंदमागरजीके साथ वहां गया था। उसने क्वेताम्बरी २ प्रतिमा व १ यंत्र वहां मदाके छिये विराजमान करनेका उद्यव किया तब, वहांके दिगम्बरियोंने मना किया इसपर बोलवाल बढ़ी। देवे० के साथ तलवार बंदूक आदि थी उससे ७ दिगम्बरी घायल किये गए। पुलिस आई। २० देवे० व आनन्द्सागरजीके उपर मुक्ट्सा चलाया। इस सम्बन्धी विचारके लिये हीराबागमें फाल्गुन पुदी ८ को दिगम्बरियोंकी एक आम सभा गजा झान्चंद्के सभापतित्वमें हुई। सेट माणिकचंद्जी और पं० धन्नालालनं मर्व हकीकत वर्णन की। मर्व सभासद इसके लिये योग्य प्रबन्ध करें ऐसी प्रार्थना सेटजीने की। यह मुक्ट्सा बहुत दिन चला इपमें सेटजीने तीर्थक्षेत्र कसेट से रूप-योंकी बहुत मदद दी।

जातिसेवाके लिये कमर वसे हुए सेटजी शीटलप्रभावजी लेकर ता० २५ मार्च ०९ को मवेरे बंबईसे सेटजीका हुनली बेलगांच स्टेशन पहुंचे। उत्तन प्रधारमें बोर्डिंगके लिये स्वागत हुआ। शामको जेन लोगोंकी तरफसं भ्रमण। सेटजीके सन्मानार्थ सभा हुई। उसमें शीत-लप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण देते हुए जैन बोर्डिंगके लाम वर्णन किये। रा० ग० चौगलेने समर्थन किया व बेलगांवमें भी ऐसे बोर्डिंगकी आवश्यकता बताई। बेलगांवके अजैन वकील रा० रा० लेकेने शीतलप्रसादजीके ज्याख्यानकी प्रशंसा पूर्वक अनुमोदना की। अंतमें सेट माणिकचंदजीने कहा कि लोगोंकी इच्छा प्रमाण यहां भी बोर्डिंगकी जरूरत है पर यह काम एकदम नहीं हो सकता। स्थापनांक पहले बहुत परिश्रमकी आवश्यकता है।

रात्रिको यहांसे बहुतसे महाशय हुवली सबेरे सेठनीके साथ पथारे । नैन बोर्डिंग खोलनेका मुहुत्ते चैत्र पुरी ६ ता०

२७ मार्चको होगा ऐसी मुचना पाकर बहुतसे भाई परदेशसे ँ आए थे जैसे मैसुरसे श्रीग्रुत अनंतराजय्या, बर्धमानैय्या, दानणगिरीसं ब्रह्मपा आणा तवनप्पा आदि। ता० २७ को सबेरे कुंभ ले र बोर्डिङ्गके स्थानपर जाकर सरस्वती पूजन हुई। व बोर्डिङ्गमें प्रवेश होनेवाले छात्रोंको रत्नकरंड आवकाचारका पाउ दिया गयः। श्री पायशागर स्वामी विद्रेने स्थापन विधि की । शामको ५ बजे मंडपमें एक मारी सभा की गई जिममें नगरके प्रतिष्ठित पुरुष भी आए। अध्यक्ष स्थान धारवाङ् निलेके वलेक्टर मि॰ हडसन साहबने ग्रहण किया। रा० रा० चौगले बी० ए० एटएए० बी० वकील बेलगामने इंग्रेनीमें द० म० जैन सभा व बोर्डिङ्ग गोलनेका उद्देश्य बताया व साहब बहादुग्को प्रार्थना की कि बोडिङ खोलें। अध्यक्ष महोद्यंत 'बाडिंग खोला गणा' एवा भाहर करके वहा कि " जैन लोग प्राचीन कायदेके अनुभार विद्याकी तरफ जो ध्यान दे गहे हैं सो स्तुत्य है। विद्यामें जैन लोग आगे बढ़े ऐसी मेरी उत्कट इच्छा है।'' कई भाषण हुए। शीतस्त्रमाद्जीने नैनियोंकी प्राचीन गुरुकुल प्रद्धातेको ममझण्या तथा बोर्डि**ङ** उसीका कुछ अनुकरण है ऐसा बताया। बेलगांवके घरणप्पा सेठीने कलेक्टरका आभार माना । बादशाह एडवर्डकी तीन जय बोलकर मभा भमाप्त हुई।

रात्रिको पायसागर स्वामी विदरेक सभावतित्वमें सभा हुई तब शीतलप्रमाद्जीने श्रावक्रके पर्कर्मपर सेंडर्जाका १०००) कहते हुए धर्म शिक्षणकी आवस्यकता कालेनक दान हुनली बो० । छात्रोंके लिये बतलाई तथा इम बोर्डिंगरूपी वृक्षको द्रव्यरूपी पानीसे सींचनको कहा। रा० सा० चौगले व अन्यके समर्थन होनेपर उदारचित्त भाइयोंने इस भांति दान किया।

१०००) दानवीर सेठ माणिकचंदजी ।

५०१) तबनव्या आव्यण्या लेंगडे, शाहपुर ।

५०१) धर्मराव सूभेदार, बेलगांव।

५०१) चंदाच्या भीमराव देमाई,

कुछ रकम फुटकर भी आई।

रात्रिको पायसागर विदेशकं सभापतित्वमं फिर सभा हुई । ऐलक त्यागी पन्नाटाटनी महाराजकं साथ जैनबिदी जाते हुए पं० पासू गोपाल शास्त्रीका दान पर भाषण हुआ । श्रीयुत यहाप्पा मेटगणी कर मास्तरने स्त्री शिक्षा पर कहा । श्रीयुनं बुरसेनं हुनलीके शिक्षण फंडमें १२००) दिये। सेठजीकं प्रश्तनसे वोर्डिङ्गके प्रबन्ध व धर्मीदा रकमकी व्यवस्थाके लिये १३ महादायोंकी स्थानीय कमेटी बनी। सेकेटरी श्रीयुत कृष्णराव वृग्से हुए तथा यह टहराव हुआ कि धर्मादेकी रकम कोपाध्यक्ष जमा करक बोर्डिङ्ग, पाठशाला व जिन मंदिरक लिये वर्च बर्रे ।

यहांके परदेशी इवेताम्बरी लोगोंने एक प्राचीन दिगम्बर मंदिरको ठीक कराकर अपनी प्रतिमाएं विराजमान की हैं जिसमें दिगम्बर प्रतिमा भी हैं । इनकी ओरसे पाठशाला व कन्याशाला चल रही है। सेठजी व शीतलप्रसाद्जीन परीक्षा ली। फल अच्छा ही रहा। दुवलीसे सीधे बम्बई आए।

हुबली कर्णीटक भाषी देश है। मर्व स्त्री पुरुष कनड़ी भाषा बो 2तं व लिखते हैं। यह भाषा हिन्दीसे कर्नाटक देशमें हिन्दी गुजराती व मराठीकी अपेक्षा अनमिछ है तौ भी यह देखनेमें आया कि हिन्दी भाषा भी भाषा । यहां वाले समझ लेते हैं व हिन्दी बोलनेवाले से हिन्दीमें बात कर छेते हैं। यह दशा देखकर भारतमें जो एक राष्ट्रीय भाषा करना चाहते हैं उनका अवस्य यह निश्चय होना चाहिये कि हिन्दी ही इस सन्मानके योग्य है।

गुनरातकी दिगम्बर जैन कौम शिक्षामें बहुत पीछे पड़ी हुई थी, इसको विद्याकी ओर उत्तेनना लल्ट्रभाई परीखके देनवाले दानवीर सेठ माणिकचंदजी गुणकी कद्र। ये। बोरमद निवामी मेवाड़ा जातिके परीख लल्लुभाई प्रेमानंददाम एउ० सी॰

इं॰ मेटनीके धार्मिक कामों में पूर्ण मददगार थे और अब भी हैं। बम्बई प्रान्तिक समाके सहायक महामंत्रीके सिवाय अहमदाबाद बोर्डिंगके मंत्रित्वका काम बहुत ही दिल्ह्से करने थे । आप इन्क्रमटैक्स ऑफिसमें अच्छे पदपर थे । सर्कोरने इस ममय इनको काम चलाऊ डिप्टी कलेक्टरका पर दिया तब सेठनीने इनके परिश्रम व उन्नतिका दृष्टान्त और गुनराती बालक लेवें इमिलये बैशान बदी ३ ता० ८ अप्रैल १९०९ को हीराबागमें एक आम मभा आनंर-बल मि॰ गोकुलदास कहानदास पारेग्वके सभागतित्वमें की । इसमें जैन अजैन बहुतसे विद्वान् व प्रतिष्ठित पुरुष शामिल हुए । **सेठ हीराचंद नेमचंद** शोळापुरने इनके जीवनका हाल कहते हुए वर्णन किया कि सन् १९०२ में यह एल० सी० इं०की परीक्षामें पास हुए तथा अपने परिश्रम और योग्यतासे केवल ५ वर्षमें ही ऐसे उंचे पढ़को प्राप्त हुए हैं। फिर दोठ माणिक-चंदजीने कहा कि इस उच्च पद्पर पहुंचनेका इनकी प्रमाणिकता और सत्यता है इनको बहुत ही नोम्बनदारीके काम मिले पर यह आज तक प्रमाणिक वनेसे चलते आए हैं । हमारे और बंधुओं को इनका अनुकरण करना चाहिये। तब प्रमुखने कहा कि जैन कौम व्यापारमें घनी कुशल और बुद्धिशाली होती है ऐसे ही विद्यामें भी कुशल होनेका यत्न करना चाहिये। तब ल्लुमाईन कहा कि में इस मानके योग्य नहीं हूं। कौमकी संवा करना हर एकका फर्न हैं। सम्पूर्ण गुजरातमें हमारे दिगम्बर भाइयों को विद्यामें अग्रमर करनेवाले हमारी कौमके दानवीर सेठ माणिकचंद जी हैं, और मैं जिम मान पानेका भाग्यशाली आंज हुआ हुं वह दानवीर सेठके प्रतापसे ही है। मैं सेटनीका अंवःकरणमें आभारी हूं।

ता० ३ मईको श्री महाराज प्याजीगव गायकवाड़ बड़ीदानं कोल्हापुर जैन बोर्डिंग और श्राविकाश्रमका महाराज बड़ोदा और निरीक्षण किया। जैन कीमने बहुत सन्मान मेठजी। दिया। प्रेंफेमर लट्टेने बोर्डिंग व श्राविकाश्रमका हाल सुनाया, तब महाराजने अपने भाषणमें स्त्रीिशक्षाकी बड़ी आवश्यकता दिखाई व कहा कि जैनियोंको ज्ञान प्रसारार्थ यह चालु रखना चाहिये। मैं अपनी प्रजाको शक्तिकं अनुमार जो शिक्षण दे रहा हूं उससे मुझे समाधान नहीं वह और बढ़ना चाहिये। जैसे सेठ माणिकचंद पानाचंदजीने इस इमारतको बंधवा दिया है ऐसे ही प्रत्येकको ऐसे कार्योमें मदद करना चाहिये।

बम्बईमें त्यागी ऐलक पनालालजी महाराम जो केवल एक लंगोटी मात्र परिग्रह रखते हैं, भिक्षावृत्तिसे बंबईमें त्यागी पन्नाला- एक देफ आहार करते हैं, शीत उष्ण पवनकी लजीका केशलोंच। परीपह सहते हैं, रात्रिको गमन नहीं करते हैं, ध्वान स्वाध्यायमें छीन रहते हैं, पधारे । आपके केशोंको अपने ही हाथसे छाँच करनेका समय आ गया, तक बंबईवालोंने स्थोत्सव किया व माघोबागमें पृत्तन व समाएं हुई। बाहरसे भी बहुत लोग आए । मिती बैशाख सुदी १५ बुधवार ता. ७ मई १९०९को सबेर ८ बजे हजारों नरनारियोंक मध्यमें अपने हाथसे अपने मस्तक, डाड़ी और मूँछकं वार्लीको आघ घंटेमें पद्मासन बैठकर बड़ी शांतिसे उपाद दाला । सर्व जन आश्चर्यमें भर गए उस ममय सबके मनमें वैशस्य आ गणा, बहुतीने पस्त्री त्याग आदिकं नियम लिये । त्यागीजीने धोडामा उपदेश केशलींच करनेक पहले किया था । उनके ब इम हर्स्यक प्रभावसे उपस्थित मंडली व ग्वासकर संठ माणिक वंदनीके भाव चह आए। उसी समय औषधालयके लियं ८०००) का चंदा हुआ, जिसमें सेठ माणिकचंद् पानाचन्द्जीनं भी ५०१) दिये । संटजीकी कुटुम्बकी क्षियोंने १०१) ह. देकर ख़ियोंमें २००) का चंदा कराया। श्रीमती मगनवर्इजीकी घेरणासे श्रीमती वेसरवाई यड्वाहा ने ११००) श्राविकाश्रमकं लिये दिये। सेठ माणिकचंदनीने अपने हीराबागके देशी ओषधालयका नाम बद्लकर ऐलक पन्नालाल औषघालय रख दिया और वह रकम इसी काममें खर्च होने लगी। यह द्वाखाना वंबईमें बहुत प्रसिद्ध हो। गया है। वैद्य एक

नैनी शोलापुरका पढ़ा हुआ बहुत योग्य है।इससे सैकड़ों गरीबोंको स्थाम पहुंच रहा है!

वर्णतमें प्राय: सेटनी वम्बई ही में ठहरे और धर्मन्यानमें लीन रहे । इस वर्ष शीतलप्रमादनीने दशलाक्षणीपर्व बोरमद प्राममें सेट चुन्नीलाल प्रेमानंद मंत्री उपरैली कोडी शिखरनी बीम पंथी कोठीकी प्रेरणासे विताया था और वहां १० दिन तक शास्त्र-सभामें मूत्रजीके अर्थके माथ २ धर्मीपदेश दिया था ।

भादोंके कुछ दिन पीछे ही सेठती कोल्हापुर गण्। वहां ताः ५ सितम्बर ०९ को श्रीमती चत्रबाई कोल्हापुरभें सेंटजीका हालमें दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाकी प्रवन्य कारिणी सभाकी बैटक सेटजीके सभापतित्वमे गमन । हुई, निश्चय हुआ कि कार्तिक अष्टान्हिकामें कोल्हापुरमें वार्षिक परिषद् की जायब उसके साथ कलाकोशल्य और खेतीकी प्रदर्शनी दिखाई जाय । सभापतिके लिये श्रीयुन ब्रह्मप्ता आण्णा तवनपावर नियत हुए। सर्व मेम्बरोंने अनेक कार्य बांट लिये । इसी अवसरपर श्री अनंत जिनकी पंचकल्याणक पूजा व नवीन मंदिरकी प्रतिष्ठा करना भी निश्चय हुना जो सेठ भूपाल जिरगेने बोर्डिंगके छात्रोंके लाभके लिये निर्मापण कराया था। संट भूपालने २०००) से अधिक मंदिर निर्मापणमें लगाए व २०००) की कीमतकी जमीन मंदिर खातेको दी जिससे १००) वार्षिककी उत्पन्न हो ।

आश्विन बदी १३ ता > १२ अक्ट्रबर ०९को हीराबाग धर्मशालामें सभा हुई। सेठ शामलाल चांद्वड सभापति हीराबागमें सभा व हुए। लेठ माणिकचंदजी व अन्य अनेक सेटर्जाके अनुकरणमें भाई नासिक निष्ठेके मौजुद थे। बम्बई २०००)का दान। प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवेशन श्री मांगीतुंगीमें मिती कार्तिक मुदी १२, १३

और १५ ता० २४-२५ और २६ नवस्त्रर ०९ को करना निश्चित हुआ था । उसके लिये सभावति हरीमाई देवकरणवाले सेठ हीराचंद रामचंद निश्चित हुए। म्वागतकारिणी कंमेटीक सभापति सेंठ गुलावचंद्नी हीरालालनी धूलिया - व मंत्री सेठ शामलाल चांदवड़ नियत हुए । हमारे सेटजीको उम बातका खयाल था जो बेलगांवके लोगोंन हुबली बोर्डिंगकी स्थापनाके लिये जाते हुए सेठनीसे कहा था कि यहां बोर्डिंग होना चाहिये! आपने इस कार्यको कराने लायक शाहपुर वेलगांवनिवासी धर्मप्पा सूबेदारको पक्का किया जो कि जवाहरातके व्यापारी थे और बहुव! बम्बई आया जाया करते थे। मेठजीन २००००) बीम हजार रुपयेकी स्वीका-रता करा हो। वह भी इस सभामें मौजूद थे। सेटजीने घेग्णा करके

ाति सुवेदार माहत्र कोई हर्पका समाचार पगट करना चाहरे '🚜 । तन मुनेदार साहन उठे और प्रगट किया कि वेलगांवमें नोर्डिंग-की बहुत बड़ी जरूरत है अतएव उनके लिये मैं अभी २००००) बीस हजारका संकल्प करता हुं व आवश्यका होनेपर दस पांच -हजार और भी लगाउँगा । '' इस समाचारको छुनके सभा<mark>को बड़ा</mark> आनन्द हुआ।

जब भारतमें यह क नून पास हुआ कि हिन्दू और मुसल्मानोंके प्रतिनिधियोंके सिवाय (सिक्स और जैनी ऐसी)

सर्कारी कौनिसलोंमें आवश्यक जातियोंके मी प्रतिनिधि स्हेंगे, तब जैन प्रतिनिधि । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभावी ओरसे लार्ड मिन्टोकी संवामें कलकत्ते जो

अर्जी सेठनीने भेजी थी कि जैनियोंकी तरफसे भी प्रतिनिधि लिया जाय, वह अर्जी नीचे प्रगट की जाती है। उसका जवाब ता० ६ अक्टूब्रका नं० ६८४३ में आया कि बम्बई जबाबके लिये भेजी गई है तथा बम्बईसे नं० ६४०३ ताब १५ अक्टूबर १९०९ के पत्रपें जो जवाब आया वह यह है कि अल्प संख्यक जातियोंके प्रतिनिधियोंके लिये कुछ जगहें संरक्षित रक्षी गई हैं उनको देते हुए उन्योगी जैन जातिकी मांगका पृरा खयाल किया जायगा। ये दोनों जवाब भी इंग्रेजीके प्रगट किये जाते हैं। क्योंकि अभी तक इनकी अमली कार्याई नहीं हुई है अतएव जैनियोंको उचित्र है कि सर्कारको अपने पत्रमें किये हुए बादेकी याद दिखार्वे तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

To, (1)

His Excellency the Earl of Minto,
P. C., G. C. M. G., G. M. S. I, G. M. I. I.
Vicercy & Governor General of India,
CALCUTTA.

May it please Your Excellency, The Humble Memorial of the Bharat Varshiy Digamber Jain Maha Sabha, Most respectfully showeth :-

That in the matter of popular representation in Council the Government having recognised the principle of the representation of "Important minorities" the Jain Community of India hegs leave to approach your Excellency with its humble claim for special recognition as an "Important minority.

- 2. That the Jain Community does constitute an "Important Minority" and should not be neglected in this matter, has been admitted in the Despatch of the Government of India dated the 1st October 1908.
- 3. That as regards literary the Jain Community holds the second place throughout India, the first place of honor being held by the Parsees.
- 4. That in the Departments of Agriculture, Trade and Commerce, also the Jain Community of India is fairly advanced to claim recognition.
- or That the importance of this comparatively speaking small community and its conspicuously humble, peaceful, lawabiding, quiet and no—agitating character must have come to the prominent notice of your Excell ney's Government in the recent matter of the Parashnath Hill.
- 6. That the separated widely in matters of religious belief social custom, and way of living, from the other religious communities of India

which group themselves as "Hindus" as the Jain Community of India is, it has no reasonable hope of success in the matter of obtaining representation in Council if it is left to take its chance with the general "Hindu" community.

7. That the Jain Community of India fervently hopes and feels confident that your Excellency will be most graciously pleased to reserve one seat in your Excellency's Legislative Council for a member of the Jain Community of India.

And Your Excellency's Humble Petitioner as in duty bound will ever pray.

I have the honor to remain, Your Excellency's most obedient servant.

i. e. Maneckehand Hirachand J. P. Bombay. Offg. President, Bharat Varshiya Digambar Jain Maha Sabha.

## Office :--

Khurai, Dist. Saugor C. P. Dated the 2nd September 1909.

Copy of the reply from the Home Department received under letter No. 3843 dated 6th.

October 1909.

The undersigned is directed to inform Mr. Maneckchand Hirachand that his letter dated the 2nd September 1909 regarding the representation of the Jain Community on the Legis-

lative Council has been transferred to the Government of Bombay for diaposal.

Sd. H. C. STAKE.

Deputy Secretary to the Government.

(3)

No. 5403 of 1909

General Department.

Bombay castle, 15 the October 1909, To

Maneekehand Hirachand Esquire offg. president, Bharat Varshiya, Digambar Jain Mahasabha.

Sir,

With reference to your memorial to His Excllency the Viceroy and Governer General of India, dated the 2nd September 1929, praying that a seat in the Imperial Legis Lative council may be reserved for a member of the Jain Community, I am directed to inform you that a Number of seats have been reserved for the representativn of minorities by nomination and that in allotting them the claims of the important Jain Community will receive full consideration.

I have the honour to be, Sir

Your most obodient servant

 $Sd_{i}$ -

for Secretary to Government.

सेठ माणि ..चंद्जी अहमदावाद्में प्रे-नचंद्र मोतीचंद् दि० जैन बोर्डिंगका वार्षिक कोत्सव करने ब अमदाबाद बोर्डिंगका श्राविकाश्रम स्थापन करनेके सानवां वार्षिकोत्मव । शीतलप्रसादजीके साथ आए । बाहरसे बहुतसे भाई आए थे। आसोन छुदी १० को संबेर एक भारी सभा जुड़ी। नगरके प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद य । सेठ माणिक बंटजी हीराचंदजीके प्रस्ताव करने और संउ जैसिंहभाई गुलाबचंदके समर्थनसे ट्रेनिंग कालेजके प्रिन्सपछ र. सा. कमलादांकर प्राणदांकर त्रिवेदी बी. ए. ने सभापतिका आसन प्रहण किया। सेकेटरी छल्लु पाईने रिपोर्ट पड़ी फिर शीतलप्रसादजीने बोर्डिंगका कार्य्य संतोपकारक है एमा कहकर शुद्ध आहारके लाभ व अशुद्ध आहारके अलाभ बताते हुए हड्डीके मसर्गसं बनी हुई परदेशी शकरके निषेधपर कहकर धार्मिक शिक्षाकी उपयोगिया नताई। सेठ हरजीवन रायचंद्र अमोदवालेन समर्थन किया फिर सभापतिन अपने भाषणमें कहा कि सेठ माणिकचंद्जीका ध्यान शिक्षाप्रचार पर है, इससे मुझे बड़ा आनन्द है, तथा बोर्डिंगकी सस्थासे रीति भांति सुधाती व मनमे एकात्रता आती है। रात्रिको बिज्रिटर्स कमेटीकी बैटक इसणाववाले सेठ नरसी गंगादामके सभापतित्वमें हुई। पाछीनानावाले मुनीम धरमचंद्जी हरजीवनने मनोहर कविता पढ़ी। पाविकाश्रम खोले जानेकी सूचना हरजी न रायचंदने की। छोटेलाल बेलामाई अं लेश्वरने श्राविका अमके लिये प्रवन्धकारिणी कमेटीके नाम सुनाए । समापति सेठ माणि ध्चंदनी व मंत्री छोटेलाल घेलापाई हुए । नारायणदास मोतीलालनं ५५०) बोर्डिंगमें दिये । शीतलप्रसादजीने

कहा कि धर्मशिक्षामें बालकोंको विशेष ध्यानकी जरूरत है। सम्पादक दि॰ जैनने बोर्डिंगके छात्रोंको जैनपर्मकी माहिती और नियम पोथी भेटमें दी।

आसीन मुदी ११ ता० २५ अन्द्रबर १९०९ सोमवारको ७॥ बजे बोर्डिंगके सामने एक मकानमें दिगम् भर जैन श्राविकाश्रमकी स्थापनाका श्राविकाश्रमकी महुत्ते बम्बहंकी परोपकारिणी सार्वजनिक स्थापना । कामों में भाग लेनवाली जमनाबाई भी मकाईकी अध्यक्षतामें बड़ी धूमधामसे हुआ । तारंगाजीपर पास हुए प्रस्तावके अनुपार अध्यापिका व उपरेशिका तय्यार करनेके छिये यह आश्रम खुळा । इनमें घर्मशिक्षांक साथ उद्योग घंदा व छिप्तनः वांचना सिख्छाया जावेगा ऐमा विवेचन श्रीमती हिलेताबाईने किया। प्रमुखाने आश्रम खोलते हुए कहा कि धर्म और नीतिकी झाता पवित्र माता बनानसे ही इस आर्यभूमिमें धर्मिष्ट और परोपकारी प्रना रत्न उत्पन्न होंगे। अज्ञान माताकी अज्ञान प्रना देशको अधम बनावेंगी । श्रीमती जमनाबाईजीन अजैन होनेपर भी २१) मेट किये । श्रीमती मगनवाईजीने सर्वका आभार माना । यद्यपि बम्बईमें सेंठ माणिकचंद्नीने कुछ पकान अलग करके श्राविकाओंको परदेशमे आनेके लिये फ्लोंमें नोटिन सन् १९०६ में ही दिलाया था परन्तु उससे सिवाय एक इन्दौरकी आनंदीबाईनीके और कोई नहीं आ सकी । इस बाईको मगनबाईजीने अपने ही साथ रक्खा व छ: टान्डा आदिका ज्ञान कराया । तब यह सछाह करके कि आंश्रम ऐसे स्थानपर हो जहांसे विधवाएं सुगमतासे अपने देश मी ना सकें व गुनरातका विशेष हित हो, सेठजीने अहमदाबादमें खो हनेका प्रबन्ध करा दिया। अब मगनबाई व हिलताबाई वहीं रहने हगीं और जिक्षादानमें मन वचन कायमें हीन हो गई। रात्रिकी सभामें ३००) का फंड आश्रमकं हिये हुआ।

यह आश्रम अब बंबई आगया है। इससे बहुत लाम हुआ है। जिस समय स्थापित हुआ केवल ४ बाइयें ही मरती हुई थीं। एर १ वर्षके भीतर २२ श्र विकाएं हो गई जिनमें कन्याएं ७. सधवाएं ६ व विधवाएं १२ थीं, जो आमोद, छाणी, बड़ौदा, बसो, शाहपुर, अंकलेश्वर, कलोल. सोजिया, जंबूपर आदि प्रामोंकी निवासिनी थीं। इनमेंसे श्रीमतीव्हेन तबनप्पा तय्यार होकर अब बड़वाया जिला नीमाइकी कन्याशालामें शिक्षा दे रही हैं। प्रभावतीब्हेन शीतलमा शिक्षिकाका अभ्याम अहमदाबाद देनिंग कालेनमें कर रही हैं।

श्रीगिरनारजी सिद्धक्षेत्र जूनागढ़ रियासतसे ४ मीड्यर बहुत ही मनोज ऊंचा व रमणीक अनेक प्रकार सेठजीका काठिया- जंगलोंसे पुशोधिन प्रसिद्ध पर्वत है इसको गाड़में भ्रमण। उज्जयंतगिरि मीकहते हैं। यहांसे श्रीकृष्णके चचेरे थाई जैनियोंके बाईसवें तीर्थकर श्री नेमीनाथ व वरदतादि ७२ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। पर्वत पर व नीचे दिगम्बर जैन मंदिर हैं, जूनागढ़में कारखाना है। यद्यपि इस तीर्थकी बहुत बड़ी सेवा परतापगढ़ जिला मालवाके दिगम्बर जैनियोंन की थी तथापि जबसे बड़ी मन्नालालजी प्रकथ-कर्ती हुए, अन्धेर बहुत होने लगा। यात्रियोंको कप्ट-जिसकी

शिकायेतीं चिद्रियां सेठ माणिकचंदजीके पास बराबर आती रहीं। हिसाब व भंडारका भी कुछ पता नहीं । तीर्थक्षेत्र कमेटीन फार्म वार २ मेजे । सेठ चुन्नीलालंन बहुत लिखा पढी की पर फार्म हिमाबका भरकर नहीं पहुंचा । वहां सब जगह इवेशंबर जैन पुजारी रक्ले हुए व सुनीम ब्राह्मम था । कटनीके संबकी ताकीदसे कमेटीने जब दिगम्बर जैन सुनीम भैता तब उपसे फौतदारी होगई। पर मेंटजीने मुनीमको बराबर वहीं ठहरने दिया तथा उसको दूर कराकर परतापगढवालोंको बार २ लिखा गया कि ऐसी प्रबन्धका-रिणी कमिटो बनाओ जिसमें बाहरके भी प्रतिष्ठित पुरुष हों व हिमान बरावर प्रगट करो । कुछ भी सुनाई न होनेपर सेठनीने अप्रैल १९०९ में माहर दीपचंदनी उपदेशकको भेना। यह १५-- र० दिन टहरे, बहुत समझाया पर सफलता न हुई। पत्रोंके द्वारा बहुत धमकी देनेपर वहांसे शाह जवाहरलाल गुमानजी बम्बई एक नियमावली बनाकर लाये । इसको सहायक महामंत्री लाला प्रभूद्यालने ठीक कराई और कहा कि यही छपे व इसी तरह कार्रवाई हो, परंतु ऐमा न हुआ। उन्होंने मनमानी नियमावली र्छपदा दी व बाहरके सेम्बर प्रबन्धकारिणीसे हटाकर जनरल सभामें कर दिये तथा ८ वर्षका एक हिपान भी संक्त १९५७ से १९६५ तकके जैनगजर ता० ८-९-०९ में प्रगट कर दिया। सेठजीन इन दोनोंको ठीक न समझा और परताबगढ्यालोंको छिला कि आप गिरनारजी आवें मैं भी आता हूं। वहां हम आप मिलके प्रबन्ध करें। सेटनीने आसौन मुदी १५ ता० २८ अन्द्रुवर ०९ मिती कायम करके २२ दिन पहले परतानगढ, मावनगर आदिके भाइयोंको आनेके लिये सूचना की। इसी कारण अहमदाबादसे सेठजी आसीज सुदी १२ को शीतलप्रसादनी और धर्मचंदजी हरजीवनके साथ खाना हुए।

इन्हीं दिनों राजकोटमें गुजराती साहित्य परिषद थी।
अबक्र परिषद्के कार्यकर्ताओंने प्रगट किया
राजकोटमें गुजराती था कि प्राचीन प्रंथों व शिलालेखोंकी
साहित्य परिषद प्रदर्शनी भी कि जायगी। सेटजीको भी
निमंत्रण आया था। आपने क्वीतलप्रमादजीसे

राय करके अपनी चौपाटीके चैत्यालयमें विराजित प्राचीन लिखित **गोमह**सार, आ**दि**उराण, अष्टसहस्त्री, द्विसंघानकाव्य, उत्तरपुराण आदि २५-३० प्रंथोंको और कुछ माडवाडी दि० जेन मंदिरसे लेकर राजकोट खाना कर दिये थे। इनमें संबत् १५०० व १४०० तककी लिपिके ग्रंथ थे। तथा भावनगरके दिगम्बर जैन भंडारसं भी सेटनीने ग्रंथ भिनवाए थे। वहांसे एक ग्रंथ अनुमान १६०० संवत्का लिवा आया था। सेठजी ताः २७ अक्टूबर १९०९ को सबेरे राजकोट पहुंचे । जिस सेकन्ड ऋसमें सेठजी गए थे उमीमं इस परिषद्के प्रमुख दीवान बहादुर अम्बाह्यह भाकरलाह एम. ए. एलएल. बी. आदि भी थे। राजकोट स्टेशन पर स्वागत कर्ताओंन सेटजीका भी बहुत सन्मान किया और एक अच्छे मकानमें ठहराया। प्रदर्शनीका समय १० वजे तक ही था। इससे सबेरे ही देखनेको पद्रिनीमें आए । एक बड़े कमरेमें चारों और शीशेके कपार्टोमें ब टेबुलों में प्रन्थ व शिलालेख देखनेमें आए । हरएकका अंतिम पत्र। खुला था ताकि प्रशस्तिको पढकर दरीक उसके कर्ता व लिपिके

समयका ज्ञान करसके । अनेक प्राचीन ग्रंथ गुजराती भाषाके भी देखनेमें आए परंतु उनकी लिपि हिन्दी ही थी। इमसे प्रगट होता है कि पत्ले हिन्दी अक्षरोंमें ही गुजराती भाषा लिखनेका महत्त्व था। यहां २०० वर्षकं पुराने गुजराती भाषाके पर हिन्दी लिपिके दस्तावेन भी मौजूद थ ।

राजकोट दिन भर ठहरकर रात्रिको चलकर ताः २८ को सबेंग जुनागढ आये। कमेटीके लिये यही दिन नियत था । अपनी धर्मशाला बहुत ही मरम्मत गिरनारजीका तलव व टहरनंके अयोग्य थी। तब सेटजी निर्गक्षण । एक भाटियेकी धर्मशालामें उहरे । इन्दौर,

अनमेर रतलामादि भी पत्र दिये थे पर मिबाय भावनगरके शा. नारायणहास नरोत्तमदास, शा. हीराचंद्र गीगाभाई, शा. अमृतलाल विञ्चलदामके और कोई नहीं आए। सेठनीने इन्हीं उपस्थित छ: महाशयोंकी कमेटी नियमानुमार करके रिपोर्ट तय्यार की उसमें वस्वईमें दुरुहत की हुई नियमावली व अपकर प्रसिद्ध की हुई नियमावलीके फर्क बताए व उन्न नियमावली तथा बाहरके मेम्बरींको प्रबन्धेकारिणीमें रखनेको लिखा । ८ वर्षका हिमात्र योग्य ऑडिटरोंके द्वारा नांचा नावे तथा पृत्राके उपकरण, पोथी व कहां २ क्या २ मरम्मतकी जरूरत है सो सर्व रिपोर्ट लिख दी व मुनीम अमृत्रलालजी उस समय जैनी था उसको सर्व समझाया व वही खाता छिखनेकी रीति बताई तथा कमेटीके भेजे हुए मुनीम भगवानदासको-जो वहां ठहरा हुआ था-सब मेम्बरोंने एक छिखित सूचनापत्र यात्रियोंके दिखानेके छिये दिया कि जब

तक योग्य प्रबन्ध हो और नियमावली दुरुस्त न की जावै तब तक कोई यात्री श्री गिरना। जीक भंडारमें द्रव्य न देव किन्तु तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें मेन कर रसीद मंगा लेवें। सेठजीने बड़े आनन्दके साथ ता. २९को पर्वतकी यात्राकी। श्री नेमनाथ स्वामीके चरणोंके वहां एक दिग्रस्वर जैन प्रतिमा कोरी हुई परम शांतताको लिये हुए है दर्शन कर शीतलप्रमादजीने उसी ममय मक्ति रससे पूर्ण हो एक मजन बनाकर गाया। लीटते हुए सहश्राम्न वनमें आए। यहांसे नीचे जानेको रास्ता बहुत विकट है। यदि और जगहोंकी मांति यहांसे नीचे तककी भी सीड़ियां बन जावें तो बहुत उपकार हो। ता. ३० को जुनागढ़ लीट कर सर्व देखमाल की। सेठजी कई सर्कारों अफसरोंसे मिले।

यहांसे चलकर ताः २१ को पालीताना आए। नवीन
दि० जैन मंदिरके रमणीक समामंडपमें
सिन्देन पात्रा व रात्रिको एक आम सभा इवे० नगरसेठके
सभापतित्वमें हुई। पहले शीतलप्रपादजीने
धर्मीवितिप व्याख्यान दिया फिर नगरसेठने सर्व उम्मियत नगरवासी
भाइयोंकी तरफसे सेठजीको सन्मानसुचक अभिनंदनपत्र दिया व
पदकर सुनाया और सेठजीको सर्व जैनियोंके साथ इस समान दृष्टिकी
बहुत २ प्रशंसाकी कि " वह अपनं बम्बई की बोर्डिंगमें दिग० इवे०
स्था० तीनोंके विद्यार्थियोंको रख कर एकसा वर्ताव करते हैं।
धर्मचंद्नीने मनन गाकर मंडलीको प्रमन्न किया। ताः १ नवम्बरको
सेठजीने सबके साथ बढ़े आनन्द्रसे यात्रा की। यद्यपि सेठजी नीचेसे
डोली पर गए थे पर उत्रर आदिनाथ मंदिरके बाहर ही डोली छोड़

केवल लक्षडीकं सहारे उत्तर गए, यात्रा की और छौटे-सेटजीका माहम देखकर आश्चर्य होता था।

ताः १ को चलकर फिर सेठनी अहमदाबाद आए और अपने श्राविकाश्रमको देखकर उसकी व्यवस्था ठीक कराई तथा इस निमित्त कि कोई बाई मर्कारी स्त्रीशिक्षकशालामें पढ़ने मेनी जाने लक्ष्मीबाई कीमेल ट्रेनिंग कालेज व उसके बोर्डिंगको देखा। इसमें ५० बाइयें हैं। यहां मांसाहार किसीको नहीं दिया जाना है।

यहांसे ता० २ की रात्रिको चलकर ता० ३को टाहोद आए।

यहांबाल बहुत दिनोंसे सेठनीको बुला रहे

दाहोदमें पाटशालाके थे। स्टेशनपर गाजेबाजे महित बहुत भाई

लिये फंड व मौजूर थे। यहां १०० वर हुनड़ दि०

मेठजीको जैनियोंके व दो निनमंदिर हैं। माधर

मानपत्र। दहुलालकी अध्यापकी १ में वर्षसे पाटशाला
चल रही थी। सेठजीने परीक्षा लिबाई।

रात्रिको सभा हुई। शीतलप्रमाद्जीन धर्मपर ज्याख्यान दंते हुए। पाटशालाको चिरम्याई करनेके लिये जोर दिया। तुर्त दानवीर सेटजीन १०१) दिये, बातकी बातमें २५००)का धौज्य व ३५०) का चालु फंड हो गया। दूसरे दिन सबेर मि० प्लेनकेन यूरुपियन डिप्टी कलेक्टरके मभापतित्त्वमें छात्रों व छात्राओंको इनाम बांटनेके लिये एक भारी सभा हुई। शीतलप्रमादन धर्मका स्वरूप कहा। सेटनीन बाबू बनारसीदास एम० ए० रचित जैन इतिहास सेरीज़ नं० १ इंग्रेजीमें बलेक्टर साहबको मेट की। पाटकोंको यह मालूम ही

है कि सेटनी यात्राके समय अपने बाहरके एक पैकेटमें बांटनेके लिये जैनधर्म व जीविहेंसा मांसाहार रोकनेवाली पुस्तकें हमेशा रक्ते रहते थे और नहां जिसको जब जो देनेका अवसर होता था हर्षसे देते थे व जवानी भी समझाते थे। बहुतसे इंग्रेन सेकन्ड हासमें आपसे पुस्तक प्राप्ति करते थे। सभापितने इनाम बांटकर अपने भाषणमें कहा कि '' विद्यार्थियोंको अन्य शिक्षाके साथ धार्मिक शिक्षा अवस्य दी जानी बाहिये, तथा यदि कन्या-आंको योग्य सुशिक्षिता माता बनाया जावे तो तीन पीढ़ीमें यह भारत अपनी प्राचीन उन्नतिको प्राप्त कर ले। "

इमी समय दाहोदके भाइयोंने सेठनीके मन्मानार्थ निम्नलिम्बन मानपत्र अर्पण किया—

## नकल मानपत्र (दाहोद)। मङ्गलाचरण।

तज्ञयति परंज्योतिः, समं समस्तैरनन्तपर्यायैः। दपंणतल इव सकलाः, प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥१॥ दोहा ।

धन्य दिवस तिथि आजकी, धन संवत्सर वार । सभ्य कुमुद विकशित किरण, सभा चांदनी सार ॥ १ ॥

## परम हर्ष ? परम हर्ष ? ? परम हर्ष ? ? ?

भारतवर्षके विरुवात सूरत नगरमें एक अतिष्ठित नररत्न श्रीयुत् सेठ गुमानजीके सुवृत्र हीराचन्दजीके चार पुत्रम्त्नों (मोतीचंदजी, पानाचंदजी, माणिकचन्द्रजी, नवलचन्द्रजी) की उत्पत्ति हुई। पश्चात

मोतीचंद्रजीके पुत्र प्रेमचन्द्रजी, पानाचन्द्रजीके पुत्र स्त्यचन्द्रजी, माणिक्रचन्द्रजीके पुत्री मगनब्हेन, नवलचन्द्रजीके पुत्र ताराचन्द्रजी हुए। स्वकीय नामकरणोंको अपने गुर्णोसे विभूषित किया—"यथा नाम तथा गुणः " इस कहावतको चरितार्थ किया । प्रथम ही तो बम्बईमें हीराचन्द्रजी गुमानजीके नामसे बोर्डिंग स्थापित किया, इन्हीं नर-रत्नोंने हीशबागका बृहद्भन यात्रीगणोंके विश्रान्तिके छिये बनाया और आपहीके वरानमे अहमदाबाद, कोल्हापुर, जक्छपुर इत्यादि स्थानोंमें दिगम्बर नैन बोर्डिंग स्थापित किये हैं, घार्मिक विद्यांक प्रचारार्थ उदैपुरमे एक पाठशाला म्यापित की है और स्याद्वाद पाटशाला कार्शः. तथा अन्यान्य पाटशाला तथा धर्मे सम्बन्धी कार्योमें तन धन धनसे सहायता करते रहतं हैं और भारत-वर्षीय धर्मसंः क्षिणी दिगम्बर जैन महासभाक वार्षिकोत्सक ( तंबूखामीके मेर्छ ) पर श्रीमान् परम द्यासु गुणज्ञ राजा त्रक्षमणदामनी सीट आई० ई० ने भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटीका कार्य सम्पादन करनेके लिये आप ही को महामंत्री नियत किया या, सो आपने सहर्ष स्वीकार करके सपरिश्रम तन मन धन द्वारा म्बकीय धर्मिनिष्टासे दिगम्बर जैन तीथीं हा सचा महदुरकार किया। और सम्मेदशिखरः गिरनारजी, शत्रुंजय, अन्तरीक्ष पार्धनाय, तारंगा, मांगीतुंगी आदि दीर्थक्षेत्रोंपर कितनी विषत्तियां थीं सो सर्व आपकी पूर्ण सहातुभृतिसे सहन ही में दूर हो गई और मारतवर्षीय दिग-म्बर जैन महासभाकं अधिवेशन ( सहारनपुर ) में सभायतिके आसनको सुशोभित करके आपने जैन नातिकी भरसक सेवा की थी । आप ९ वर्षसे दिगम्बर जैन प्रांतिक समा बम्बईकी तन मन 'वनसे सेवा कर रहे हैं। हमारी न्यायशीला मारत गवर्नमेन्टनं भी आपको जे॰ पी॰ ( Justice of the Peace ) की पदवीसे विभूषित किया है; और आज श्री वात्मल्यादि गुण मंडित दानवीर महानुभाव माननीयका शुभागमन हुआ है। आपके मुखारविंदके दर्शनसे हम सर्व लोगोंको असीम हर्ष हो रहा है। आपने संपूर्ण जैन जातिपर जितनं उपकार किये हैं उनके प्रत्युपकार करनेके लिये हमा अशक्य हैं। अतः आपकी सेवामें यह तुच्छ अर्पणपत्रिका समर्पण करते हैं। और आशा रखते हैं कि आप इसे सहर्प स्वीकार करेंगे और मर्व सभा शुद्धान्तः करणसे कोटिशः धन्यवाद देती हुई परम पृज्य श्री सर्वज्ञदेवमे प्रार्थना करती हैं कि चारों तरफ जैसी आपकी कीर्ति विस्तृत है उसमें दिन दृनी रात्रि चतुर्गुणी वृद्धि होवे और आपको सहकुटुंव चिरायु करें। अलमिति विस्तृरेंग। अन्शान्तः शान्तः शान्यः शान्तः शायुष्य शान्तः शान्यः शान्तः शान

कार्तिक वदी ७ दाहोद् ( पंचमहाल ) बीर सं० २४३५ की समस्त पंचानकी तरफसं—

> मेट चुनीलाल हंसराज, गांधी जैचंद नाथजी, गेबीलाल सुंदरलालजी वंगरे,

रात्रिकी सभामें शीतलप्रसादनीने निश्चय और व्यवहार धर्मपर इसलिये कहा कि यहां कई भाई मनसुख दादा दंव के उपदेशसे केवल निश्चायावलंबी हो रहे थे | उनको निश्चय साध्य व व्यवहार परम्पराय साधक है ऐसा बताया । फिर सेठनीके बम्बई बोर्डिक्नमें रह कर एलएल. बी. पास करनेवाले शा. चंदूलाल मेहता इंतराम्बरी बकीलने धर्म और ख्रीशिक्षापर असरकारक च्याख्यान दिया। यहांसे सेटजी ता. ४ को चलकर सूरत होते हुए ता. ६ नवम्बरको बम्बई आए।

इतनेमें कार्तिककी अष्टान्हिका निकट आगई मांगीतुंगीमें प्रां सभा अम्बई प्रान्तिक समाका अधिवंशन व सेठ नवलचंदजी। मांगीतुंगीपर है और द० म० सभाका कोल्हापुरमें है तथा दोनोंका में स्थाई सभापति हूं, दोनोंमं मुझे कहां जाना चाहिये इन विषयमें सेठजीने शीतलप्रसादजीस सम्पति की, तब यही राय रहरी कि कोल्हापुरमें प्रदर्शनी व पंच-करुभणकोत्भव है तथा जिप मंदिरकी प्रतिष्ठा है। उसे सेठ। भूपाल जिरगंन सेटजोकी घेरणासं ही निर्भाषण कराया है इसमे कोल्हापुर ही जाना टीक है। तब शीनलप्रमादजीन कहा कि श्री मांगीतुंगी उत्पवकी शोभा आपके विना कुछ न होगी। तत्र आपने कहा कि हम अपने भाई नवल्बंद्जी व श्रीमती मगन्बाईको मांगीतुंगी मेजेंगे व आप भी मांगीतुंगी जार्वे जिससे जल्सा सफलतासे हो। कोल्हापुरमें आपके न जानेसे कुछ क्षति न पड़ेगी । इसी भांति तय हुआ । सेठजीन नवलचंदनीको बहुत समझाकर मांगातुंगी नानेको सुरत लिखा और आप कोल्हापुर गए। सेठ नवलचंद जी सुरतसे मूलचन्द किसनदास कापड़ियाको साथ लेकर मांगीतुंगी गये। मांगीतुंगी नासिक जिलेमें २॥ मैल ऊँचा जँगलोंके बीचमें एक पर्वत है, यहाँसे श्रीरामचंद्र हनुमाननी, नील, महानील आदि ९९ करोड़ मुनि मोक्ष पर्वारे हैं। इस पर्वतके दो भाग हैं। एकको मांगी दूसरेको तुंगी कहते हैं। बहुत ही प्राचीन कालके तीन र मंदिर हरएक पर हैं, जिनमें दिगमार

जैन प्रतिमाएं कोरी हुई हैं। एक नगह पर पद्माप्तन मूर्तिकी पीठकी पूना होती है। यह खल्छिआद्भ बळदेव मुनिकी कही नाती है, जो पांचवें स्वर्ग गए हैं। मांगीतुंगी नाते हुए बीचकं पर्वतकी मांगपर एक दग्धस्थान है। कहते हैं कि श्री क्रण्णनीके शारीरकी दग्ध किया यहां ही हुई थी। नीचे १ मंदिर सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुरवाळोंसे सं० १९१७ में प्रतिप्ठित, दूसरा बार्सीबाले एक सेठका है, तीमरा अधूरा पड़ा था जिनको पूरा बनानेमें सेठ प्रणनाह सिवनीन द्रव्यकी मदद की है। सेठ नवल-चंदनी एक वर्ष पहले भी यहां हो गए थे तब आपने बार्सीबाले मंदिरमें परथर जड़वाया था।

यहां कार्तिक छुदी ११ से १५ ता० २४ नवम्बरसं २८ तक वम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभाका सातवां वार्षिकोत्सव था। मनमाइ स्टेशनसं ३२ मील होने पर भी २००० से अधिक संख्या आ गई थी। शोलापुरसं सेठ हीराचंद रामचंद व कई भाई आए थे। सेठ नवलचंदकी तिबयत कुछ अस्वस्थ थी तौभी आप गए और वहां सभाके कार्यों में मन लगाकर उद्योग किया। सभाके लिये भिन्न मंदप बना था, प्लेटकामें उन्ना था। गुदी १२ को २ बजेसे कार्रबाई शुरू हुई। शीतल्यसादकीने मंगलाचरण किया, तब सेठ गुलाबचंद हीराचंदके प्रस्ताव व स्तनचंद मुमावलके समर्थनसे सेठ हीराचंद रामचंदने प्रमुखपद ग्रहण करके अपना व्याख्यान सुनाया। दूसरे दिन मूलचंद किसनदास कापड़िया, सम्पादक दि० जैनने गत वर्षकी रिपोर्ट सुनाई, जिमका अच्छा प्रभाव पड़ा। मार्गशिष वदी

१ तक सभाकी बैठकों में १५ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे— (१) प्रत्र प्रत्रियोंको धार्मिक व व्यवहारिक शिक्षा दी नावे। इसको शीतलप्रसादनीने पेश करके बम्बई प्रान्तके जैनियोंकी शिक्षाकी शोचनीय दशा बताई कि २८०००० प्ररुषोंमें केवल ७१४०० पढ़े हुए व २५६०० स्त्रियोंमेंसे ३५८४ ही पड़ी हैं (२ उपदेशकोंकी आवश्यकता है। हरएक भाषाके ज्ञाता तय्यार हों। इसको मूलचंद किसनदासने पेश किया व सीतलप्रसादनीने समर्थन किया (३) जैन संस्कार विधिका प्रचार—इसको भी शीतलप्रसादनीने एक व्याख्यान द्वारा स्पष्ट किया।

(४) दिगम्बर जैन धर्मानुयायी सर्व जातिया परस्पर खानपान करें। (५) जातीय सभाएं स्थापित हों (६) औद्योगिक उन्नतिके लिये स्वदेशकी वस्तुएं काममें ली नावें। इसको सेठ रावनी-भाई नेमचंद शोलापुरने पेश किया व शीतलप्रसादनी, मूल-चंदनी आदि कई भाइयोंने समर्थन किया । (७) मांगीतुंगी तीर्थ प्रबन्धकारिणी समा तीर्थका हिमाब प्रगट करें व हर वर्ष करती रहे इसको शीतलप्रसादनीन पेश किया और सेठ नवलचंदनीन समर्थन किया।

श्रीमती मगनबाई जीके प्रयत्नसे स्त्रियों में भी उपदेश अच्छा हुआ। बदी १की रात्रिको भारी महिला परिषद सभापितकी धर्मपत्नी जीवूबाईके सभापितत्वमें हुई। मगनबाई जीव कस्तूरीबाई जीके व्याख्यान हुए। जैन नियमपोथी और गीतावली पढ़ी हुई बहनोंको बांटी गई। स्त्रीशिक्षा प्रचारार्थ १६५॥ 🖹 )। का फंड हुआ।

कार्तिक सुदी १४ को प्रायः सर्व स्त्री प्ररुष यात्रार्थ पर्वतपर ३९ गए। सेठ नवलचंदजी भी गए। दोनों पहाड़ोंपर अभिषेक पूना हुई। करीन ६००) की उपन हुई। मांगीसे तुंगी जाते हुए बीचमें एक ऐसी जोखमकी जगह आती है जहां केवल १ आदमी कठिनतासे चल सकता है। इस स्थानपर दोनों ओर पकड़कर जानेके लिये बुद्धिमान सेठ नवलचंद हीराचंदने ५ वर्ष हुए लोहेके सीकचे व तार लगवा दिये थे, इससे किसीके गिरनेकी जोखम नहीं रही थी। इस प्वतकी ऐसी महिना है कि इस दिन एक स्त्री रजन्वला थी तो उसके चारों ओर अमरोंन घेर लिया और ऐसा काटा कि वह बेहोश हो गई और डोलीसे नीचे लाई गई।

सुदी १५ को यहां रथ उठता है, अजैन हजारों आंत हैं, अबके ८००० आदमी आए जो पहले पर्वतपर जा बलभद्रकी पीठकी पूजा करते नारियल चढ़ाते फिर नीचे आकर मंदिरोंके दर्शन करते हैं। एक हाथीपर अंबाडी रखकर श्रीजीको विराजमान किया गया था। सभापित प्रतिमाजीका सिंहासन लेके आगे बैठे, पीछे महावतके स्थानपर सेठ गुलावचंद हीरालाल धूलिया, दो छड़ी लेकर दोनों ओर सेठ पीताम्बरदास पारोला ब बार० नेमचंद कस्तूरचंद सूरत तथा दो सुवर्णके चपर लेके दोनों ओर सेठ नवलचंद हीराचंदजी और चिमनलाल जैसिंगमाई अहमदाबाद बैठे। इस सर्वकी ७००) की बोली हुई। सबेरे दोनों मंदिरोंमें अमिषेकके समय भी २००) की उपन हुई। १०००० से अधिक जनसमूहके साथ सवारी बागमें गई।वहां अमिषेक हुआ जिसमें ८००) की उपन हुई। इस मीड़में मराठाओंको मदिरा त्यागका उपदेश दैनेपर २०० ने नियम लिया।

सेठ छाडमा मीखासा मालेगांवने हरएक नियम हेनेवालेको एक २ नारियल दिया ।

सभामें अपील करनेका अवसर न आनेपर जब तीर्थका मंडार मगतर वदी १ को लिखा जाने लगा तब सभाके लामार्थ सेठ नवल-चंदजी मूलचंदजी और उपदेशक दीपचंदनीके साथ कई घंटेतक वहां बैठकर सभामें भी लोगोंसे द्रज्य भराते गये । इस उद्योगसे ४०००) जब भंडारमें भरे तब १०००), सभाके खातेमें भी आए । जिसमें सभापतिने २५१) सेठ माणिकचंद पानाचंदने १०१) प्रदान किये । हर वर्ष यहां ५००) की उपन होती थी पर अबके प्रान्तिक सभा व सेठ नवलचंदजीके परिश्रमसे अच्छी उपन हुई।

ता. २० नवम्बरसे २४ तक दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाकी
१२ वीं परिषद कोल्हापुरमें बड़े आनन्द्रसे
कोल्हापुरमें द० म० हुई। चारों ओरसे १०००० जैनी स्त्री
जैन सभा और सेठ- पुरुष एकत्र हुए। दानवीर सेठ माणिकचंद्र
जीका १००००)का हीराचंद जे० पी०, सेठ हीराचंद नमीचंद
दान। दोशी, रावजी सखाराम, पंडित दोर्बल्य शास्त्री
श्रवण बेलगोला आदि परोपकारी सज्जन

भी पधारे थे । पहले दिन सभाके अध्यक्ष श्रीयुत ब्रह्मप्पा मह्यापा तबनप्पत्तर स्टेशन पर पधारे। स्वागत भले प्रकार किया गया । सभा २॥ बजेसे एक मंडपमें शुरू हुई । स्वागत कमेटीके प्रमुखका मावण होने पर सभापतिने कनड़ीमें व्याख्यान पड़ा । फिर बोर्डिक्क स्थानमें नवीन मंदिर बंधवानेवाले श्रीयुत भूपालराव आप्पाजी जिरगेकी आइल पेईन्टिंग तसवीरके खोलनेकी किया अध्यक्ष द्वारा

की गई। ता; २४ तक ५ बैठकें हुई जिनमें २१ प्रस्ताव पास हुए उनमें उल्लेख योग्य ये हुए:-(१) अहमदाबादमें बांम्बके हमलेसे बचनेके कारण बडे छार्ड मिन्टोके लिये आनन्द प्रदर्शन करके तार भेजा गया (२) प्राथमिक शिक्षणका प्रसार हो, (३) नवीन कायदे कौन्सिलमें जैन प्रतिनिधि रखनेका बम्बई सर्कारने जो वचन दिया है इसके लिये सर्कारका आभार माना गया, (४) धर्मशिक्षणके प्रचारकी जरूरत। इसको पेश करते हुए सेट हीराचंद नेमचंदन कहा कि इस महाराष्ट्र देशमें जब १०० में २५ धर्मको जानते, तन उत्तर हिन्दुस्तानमें १००में ७५ हैं, (५) खेती व व्यापार ये नैनियोंके मुख्य धंदे हैं इस लिये इनमें पाश्चात्य विद्याकी सहायतासे नवीन सुधारणा करनेका प्रयत्न जैन लोगोंको करना चाहिये। इसका समर्थन करते हुए सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. ने कहा कि कच्छी और माड़वाड़ी छोग अपने देशसे फक्त डोरी और छोटा लेकर आते हैं और इस देशमें आकर थो**ड़े** ही वर्षीमें धनवान बन जाते हैं । इस उदाहरणको मनमें लेओ । उन लोगोंको अपने घरमें छूटपनमें ही व्यापारी शिक्षण मिलता है इसी तरह तुमलोग भी पद्धतिसे उद्योग करोगे तो संपन्न हो जाओगे। " वास्तवमें सेटजीके वचन बहुत उपयोगी हैं कारण जो बालकोंको बड़े होने तक भी व्यापार करना नहीं सिखाते हैं वे व्यापार करने छायक नहीं बनते हैं। ज्यापार करना भी [एक शिक्षा है। जैसे और कला चतुराई शिक्षा विना नहीं आती ऐसे ही व्यापार करना नहीं आसक्ता है। (६) उपाध्यायोंको शास्त्रानुसार रीतियां नानकर म्रंस्कार किया आदि व उपदेशादि क्रियाएं

करनी चाहिये। (७) स्त्री शिक्षा प्रचारार्थ श्राविकाश्रम कोल्हापुरको समान आश्रय देवै इस प्रस्तावके समर्थनमें सौभाग्य-वती गोद्वाई उपाध्येने प्लेटफार्भपर आकर भाषण दिया। (८) सभाके कार्यों में द्रव्यकी सहायता की नावे इसका अनुमोदन सेठ माणिकचंदनीने किया और कहा कि जब तुम सभाको द्रव्य न दोंगे उन्नति नहीं हो सकती। तब सभापति महोद्यने ५०१) दिये, औरोंने भी दिया। इस वक्त समामें शाहपुर बेलगांवके धर्मराव आप्पाजी सुबेदारकी बहुत प्रशंसा की गई जिन्होंने बेलगांव बोर्डिंगके **छिये २००००) देनेका बचन दिया था। पांचवे दिन समामें** पोलिटिकल एजन्ट व दीवानसाहब रचनाथ व्यंकाजी सबनिस आदि आए। सभामें धन्यवाद देनेका काम चल रहा था। तब सेठ माणि-चंद्रजीने दीवानमाहबको चार शब्द बोलनेके लिये विनती की। तत्र दीवान साहत्रने कहा कि कोल्हापुरमें जैनी बहुत हैं पर बहुत सुरत हैं। अब इप परिषद्के अविश्रांत खटपट व सेठ माणिक चं-द्जीके उदार कृत्यसे, इन लोगोंका लक्ष्य उन्नतिकी तरफ झका है। हिंसा न करके प्रत्येक उत्तम काम मन बचन कायसे करो ऐसा अपना जैन धर्म कहता है। यह सर्व धर्मापंक्षा विदोष है। "पृथ्वीके सर्वे धर्मोंमें ऐसा कहनेवाला कि हिंसासे निवृत्त हो, यदि कोई धर्म है तो वह एक जैन धर्म ही है। " इतनेमें महाराज सर्कारकी सवारी सभामें आ पहुंची। सेठ हीराचंद नेमचंदने एक प्रशंसनीय भाषणसे महाराजका स्वागत किया । फिर सेठ माणिकचंद्जीने महाराजको प्रव्यहारादिसे सन्मा-नित किया । महाराज विदा हो गए । तब सेठ माणिकचंदजीने

समापतिको धन्यवाद दिया । आगामी वर्षके लिये श्रीयुत राघोबा आनन्दराव खाडेने अध्यक्ष स्थान स्वीकार किया । इस समामें इसी साहकारने इस बोर्डिंगमें एक व्यायामशाला बनवानेको ५०१) दिये ब ५०१) शाहपुरके तवनप्पा आण्णा लेंगडेने होनेवाले बेलगांव बोर्डिंग व्यायामशालाके लिये दिये। ताः २४ को पहली जैन महिलापरिपद सौ० फूलबाई भ्र० रावजी नानचंद गांधी शोलापुरकी अध्यक्षतामें हुई । अनेक जैन व अजेन स्त्रियोंने भाषण कहे। ताः २५ की शामको लेडी मूर मेकेन्झीके सन्मानार्थ सभा हुई। लेडी साहबाने अपने भाषणमें स्त्री शिक्षाकी उत्तेजना दी, कहा कि बालकके 🕺 माता पिता यदि सुशिक्षित होंगे तव ही बालककी मानसिक शक्ति प्रदृह रह सकेगी । इस समारं भमें प्रदर्शनी भी सभाने अच्छी सजाई थी जिसके खोडनेका महूर्त बम्बई सरकारके मुख्य कौन्सडर सर जान मूर मेकेन्झी द्वारा ताः २५ नवम्बर ०९ को बड़े ठाठके साथ हुई। जैन बोर्डिंगके हातेमें मंदिरकी पंच कल्याण पूजापूर्वक प्रतिष्ठा महोत्सवकी विधि कार्तिक मुदी ५ से १२ तक दौर्वल्य शास्त्री द्वारा पूर्ण की गई । इस उत्सवमें सभाको जैनयोंमें जागृत्ति पैदा करनेका अच्छा मौका मिला। सेठ माणिकचंद और प्रोफेसर लहेके दढ़ प्रयतन-से काम निर्विद्य समाप्त हुआ । इसी वर्ष सेठजीने अपनी जिन्दगीके १००००) वीमेकी रकम प्रसन्न हो द० म० जैन सभाको प्रदान कर दी। फिर सेठनी बम्बई आए।

इन दिनों ऐलक पत्राळालनी इसी तरफ थे। शोलापुर वार्लोकी इच्छानुसार आपने अपना केशलोंच श्रीतलप्रसादजीके मिती मगसर सुदी १ वीर सं० २४३६ ब्रह्मचारी होनेका ताः १३ दिसम्बर १९०९ नियत किया था। कारण। अतः शोलापुरमें बडी तैय्यारिय्यां हो रहीं थी। शीतलप्रसादजी मांगीतंगीजीसे बम्बई

आकर एक दिन एकांतमें विचारने छगे कि हे आत्मन् ! अब तेरी स्थिति कैसी है ? तुझे क्या कर्तव्य है ? तुझे इस शरीरमें रहते हुए अनुमान ३१ वर्ष हो चुके । तेरा बड़ा भाई अनन्तलाल ८ मास हुए करीत्र ३८ वर्षकी आग्रुमें ही यकायक चलबसे । यदि तुममी थोड़ी ही उम्रमें चल दोगेतो तुमसे कोई भी विशेष लाम नहीं हुआ। तुम्हारा यह अमूरुय जीवन वृथा ही गया ऐसा होगा। इससे तुम्हें कुछ विशेष काम करना चाहिये । इस समय शीतलप्रसा-जीको अध्यात्मिक ज्ञानका मनन रहता था । जिसका कारण यह था कि चौपाटीके संस्कृत ग्रन्थोंमें श्री कुंद्कुंदाचार्य महाराजकृत समयसार यंथकी ताल्पर्यवृत्ति टीका बहुत सुगम थी। उसे एक दफे स्वयं समझकर दुवारा श्रीमती मगनवाईजीको बंचवाई व बृहद् , द्रव्यसंप्रह और पंचास्तिकायकी संस्कृत टीकाका मी भाषाकी सहा-यतासे मगनबाईनीके साथ स्वाध्याय किया था व गोम्मद्रसार जीव-कांडकी संस्कृत टीका नो चौपाटीपर थी उसका भी विचार किया था । इससे परिणामों में शुद्ध आत्म मननकी कुछ रुचि हुई थी । उस रुचिके ही कारण अनुभवानंद नामका लेख जैनमित्रमें निकलने लगा था । सन् १९०९में कर्मयोगसे शीतलप्रसादजीको

ज्बरकी ऐसी बाधा रही कि बम्बईमें बहुत दवाई करनेपर भी वह दूर न हुई इससे यह छखनऊ गए। वहां १५ दिनमें ही ठीक हो गए। उसी बीचमें इनके मंझले भाई जो कलकत्तेमें थे व जिन्होंने अपने उद्योगसे अनुमान एक रुक्ष रुपये जवाहरातके काममें पैदा किया था सो छल्नऊ आए। शीतलप्रसाद उनसे मिलकर बम्बईको छोटे। रास्तेमें इनकी इच्छा अध्यात्मप्रेमी बीरसेन स्वामीसे कारंना नाकर मिलनेकी हुई। यह अंक्ले मुसावलसे कारंजा गये । वहां गंगादास देवीदास चौरे व प्रद्युम्नकुमारसे आत्मिक चर्चा करके बहुत आनन्द पाया। यहां स्वामी न थे। मालुम हुआ कि सिरपुर ( अंतरील ) के पास मालेगांवमें हैं । तुर्त वहां गए। तब ही अंतरीक्ष पार्श्वनाथजीके दर्शन किये। वहांसे स्वामी अकोलाकी तरफ चल दियें थे तब यह उसी तरफको आए। वहां मालूम हुआ कि बनारसको खाना हो गए। तब यह निराश हो अकोलासे बम्बई आएं। यहां बंगलेपर जाते ही लखनऊका तार मिछा जो यहां पहले ही आ गया था कि अनन्तलालका बोल बंद हो गया जल्द आओ । विश्वास न होनेपर फिर तार किया। जवाब ताकीदीसे बुलानेका आया। फिर यह लखनऊ छोटे। जब यह पहुँचे अनन्तलालका आत्मा वहां न था। वह अन्यत्र जा चुका था शरीर मी स्मशानमें दग्ध हो चुका था।

उदास मन उनकी स्त्री और एक छोटीसी कन्या सजीवित थी। मारुम हुआ कि छक्तवा यकायक गिरनेसे बोछना बंद हो गया। हाथ कांपता था इससे न तो कुछ बोछ सकते और न छिल सकते थे। मनमें हच्छा होती थी कि कुछ नायदादके विषयमें कहें व कुछ

धर्ममें छगावें पर वचन और काय दोनोंकी किया मानसिक भावको प्रगट करनेसे लाचार हो गई थी । अंतमें तडफ़ २ कर सिर पटक २ कर बहुत दु:खसे ६ दिन ही बीमार रहकर प्राण त्याग दिये थे। धन होनेपर भी एक पैसेका भी दान न कर सके । इस असमय वियोग व अनित्य संसारकी घटनाने शीतलप्रसादके चित्तमें बहुत बड़ा असर जमा दिया और इनको अपने आपकी फिकर पडने लगी। सर्वसे बड़े भाई संतलालजी सकुटुम्ब थे। उन्होंने बहुत चाहा कि शीतलप्रसाद सब कारवार सम्हाले और गृह जंजालमें फंसे पर शीतलप्रसादका मन जो ८ दिनमें माता, स्त्री व छचु भ्राताके वियोगसे पहले ही उदास था, अब इम दृश्यके होनेपर कैसे जम सकता था। १५ व २० दिन बाद शीतलप्रसाद बंबई आगए। और अमृतचंद्र महारानकृत समयसार कल्लोंका अर्थ श्रीमती मगनबाईके साथ विवारने लगे। इत श्लोकोंमें अद्भुत रस है। इनका मनन चित्तको बहुत शान्ति देने लगा। इस दिन ये ही सब बातें याद आने लगीं। मनने कहा कि तून तो गृही है न त्यागी-यह बीचकी अवस्था अच्छी नहीं। एक तरफ होजाना चाहिये, तुर्त ही श्री महावीर स्वामीका जीवन-चरित्र हृद्यके सामने आ उपस्थित हुआ कि प्रमुने ३० वर्षकी भायुमें गृहवास छोड़ दिया था इसी लिये कि आत्माके भीतर भरे हुए रत्नत्रय मंडारको प्रकाशमें लाया जाय। तू तो ३१ वर्षका हो चुका । आयुकायका कोई भरोसा नहीं। यह अवसर चुकेगा तो फिर मेद विज्ञान द्वारा आत्मोन्नति करनेका अवसर हाथ आना अति कठिन हो जायगा । ऐसा विचार त्यागकी ओर वृत्ति जमी

फिर श्रावकाचारका स्वरूप ध्यानमें छे व देशकालको विचार यही निश्चय किया कि श्रावककी सातवीं प्रतिमा तकके नियमोंका अभ्यास करना चाहिये और उदासीन ब्रह्मचारी होजाना चाहिये। इस समय ऐलक पत्रालालजी सुरतमें ठहरे हुए थे। शीतलप्रसादनी दूपरे दिन सुरत गये । एकांतमें मिलके अपना हाल कहा व जो २ नियम धारने थे उनको महाराजके सामने छिल छिया—वस्त्र ब्वेत व छाछ चाहे जैसे उदासीन पहनो, प्रमाणकर द्रव्य रक्लो, तीन काल सामायिक करो, अष्टमी व चतुर्द्शिको प्रोषघोषवास करो इत्यादि भोजन पान सम्बन्धी सर्व नियम ठीक कर छिये। उस समय भी शरीर कुछ अस्वस्थ था। ऐलकनीने आज्ञाकी कि ब्रह्मचारी होकर शुद्ध मोजन करनेसे तुम्हारा शरीर बिलकुल अच्छा रहेगा। तुम कुछ चिन्ता न करो । शोलापुरके केशलोंचके समय तुम प्रगट रूपसे नियम धार लेना। इस तरह सर्व तरह चित्तकी समाधानी करके शीतलप्रसादजी बम्बई आए और अपना इरादा केवल एक श्रीमती मगनबाईजीसे बताया। बाईनी सदाहीसे चीतलप्रसादके परिणामोंको आत्महितमें स्थिर करती रहती थीं। इस वक्त भी आपने कोई भी अंतरायकी वात नहीं की किन्तु यही कहा कि यदि तुम निर्वाह सको तो इससे बढकर दूसरा काम नहीं है। फिर बाईनीने ही उदासीन वस्त्रोंका नया सामान तयार कर दिया। इस बातकी खबर सेठ माणकचंदजीको भी नहीं हुई।

सोलापुरमें उत्सवका दिन निकट आगया। इस उत्सवमें सेटजी नहीं गए थे। मगनवाईजी आदि २ सोलापुरमें त्यागी दिन पहले पहुंच गये थे। मिती मगसर पनालालजीका वदी १५ की रातको मेलमें शीतलप्रसादनी केशलोंच। माता रूपाबाईके साथ एक ही डब्बेमें शोलापुर स्वाना हुए। इस रात्रिको बहुत भीड़

थी सो बैठे बैठे ही जाना हुआ। करीब तीन बजेके जब रात्रि हुई तब सर्व डब्बेबाले करीब करीब उंच गये या मुस्त हो गए थे तब शीतलप्रशादनी कुछ गाने लगे—चित्तमें कुछ बैराग्यकी तरंगे उठ आई जिससे १२ भावनाओं का १ मजबून सबेरे शोलापुर पहुंचने तक बनाकर पेन्सिलसे नोट बुकमें लिख लिया। वे १२ भावनाएं ये हैं--

### बारह भावना।

### (१) अनित्य भावना ।

है नित्य न कोई वस्तु जान संसारी ॥ याके श्रममें नित फसे ग्हें व्यवहारी ॥ तन धन कुटुम्ब ब्रह क्षेत्र क्षणकमें बिनसे ॥ भाषो अनित्य यह भाव आत्म चिक्त पग्से ॥ १ ॥

### (२) अशरण भावना ।

कोई न शरण त्रैलोक्य माहिं तुम जानो ॥ नर नारकदेत्र तिर्येश्व, काल गति मानो ॥ रे आतम, शरणा गहो पत्रित्रातमकी । निर्भय पद लहके तजो फिरन गतिगतिकी ॥ २ ॥

(२) संसार भावना । चउ गति दुखकारी जीव सुक्ख नहिं पावे । गयो काल अनन्ता बीत छोर नहिं आवे ॥ जिनवरके धर्म विन अहे सुमग न रुखावे ॥ सुख समुद्र है जिन धर्म, भव्य नित न्हावे ॥ ३ ॥

- (४) एकत्व भावना । इकले ही जन्मे मरे कर्म फल भोगे इकलो गेवे दु:ख लहे पापके जोगे ॥ जब मरे छोड़ सब साथ एकलो जावे ॥ एकाकी आतम सत्य सुधी मन भ्यावे !। ४॥
- (५) अन्यत्व भावना ।

  हें स्वारथके सब सगे पुत्र तिय जननी ॥

  बिन टके न पुछे कोय नार मित सजनी ॥

  हे अन्य अन्य सब जीव-अणु पुद्रलका ॥

  पर मोह छोड लेले तू आसरा निजका ॥ ५ ॥
- (६) अशुचित्व भावना ।
  हे देह अपावन जगको अपावन करनी ॥
  मलसं बनकर नवद्वारोसे मल खबती ॥
  जिन कीनी यासे प्रीति टमे जाते हैं ॥
  जिन जाना पावन आप मुक्ति पाने हैं ॥ ६ ॥
- (9) आश्रव भावना ।

  मन बचन कायका हलन चलन दुखकारी ॥

  कर्माश्रव होंने वंने पीजरा भारी ॥

  कोई पाप टेर कोई पुण्य टेर जोडे हैं ॥

  करे दोनों जो बकचूर स्वफल तोड़े हैं ॥ ७ ॥
- (८) संवर भावना ।

  सवर सुवीरने संजम शब्ध उठाया ॥

  आश्रव चीरोंका गृह प्रवेश रुकवाया ॥

  समिति गृप्ति दश धर्मके ताले तमाये

  संतीपसे घरमें बैठ सु आनंद पाये ॥

#### महती जातिस्वा द्वितीय भाग । [६२१

(९) निर्जरा भाषना । प्रह देख कमें मल देर भगंकर भारी ॥ ध्यानारिन मूल एकाइश तप हितकारी ॥ त मेल्हके ध्यान समाधि अग्नि प्रगटार्व ॥ थग धगसे बलै सब कर्म निर्जरा छाउँ ॥

(१०) लोक भावना। है पुरुषाकार अकृत्रिम लोक अनादि ॥ षट द्रव्य दिखावै रूप करे बरवादी ॥ चित रज नभ धर्म अधर्म काल आबादि ॥ तृ सिद्ध लोकको <mark>स्रोज रहित</mark> दुख व्याधि ॥ १० ॥ (११) बोधि दुर्छभ भावना ॥ चड असी लाख कोठोंमे फिर फिर आया ॥ पर रत्नत्रयका पता कही नहि पाया ॥ अति दलर्भ है, निज हृदय वक्सका खुलना ॥ सम्यक्त तालिसे ख्ले बोधित्रय मिलना ॥ ११ ॥

(१२) धर्म भावना । है धर्म आपका रूप उसे नहीं जोवें ॥ पर स्पोमे निज धर्म जान पत खोव ॥ दश धर्म दो संजम तीन रत है तारक ॥ भावों भावो निज धर्म आत्म उद्धारक ॥ १२ ॥

#### भावना फल।

बाग्ह भावोंको भाव नित्य संसारी ॥ ज्यो रात मिथ्यातम मिटे प्रभा हो जारी ॥ आतम सूरजका भेद ही ज्ञान उजियाला ॥ जिसके प्रगटेते पीवे अमृत प्याला ॥ १३ ॥ ज्यों ज्यों स्वतुप्तता बढ़ै विषय सुख भूले ॥ चारित्र नाग तिस घरके द्वारपर श्रुले ॥

चढ़चले सुगम पद धरे मोक्ष वस्तीको ॥
पहुंचे शिव तियको मिले तजे हस्तीको ॥ १४ ॥
यह छन्द अघहन दो चौ त्रय छैमें गाये ॥
बदि पंदरस परथम सांज मगमे उपजाये ॥
मन वचन शुचिकरि जो नरनारी गावे ॥
सुखोदधिमें हुब सब चित्त विकार मिटावे॥

सबेरे शोलापुर पहुंचे । सेठ हीराचंद नेमचंदके मकानपर ठहरे। यहां श्रीमती कंकु गईजीको ही पहले यह खबर हुई थी और शोलापुरमें किसीने नहीं जाना ।

मगसर वदी १के दिन शहरके बाहर एक बड़ा भारी मंडप बनाया गया तथा श्री मिनेन्द्रदेवकी प्रतिबिम्ब रथद्वारा लाकर अलग मंडपमें विराजमान की गई थी। ८ बजे सबेरे ही १५००० नर नारी अपने स्थानपर बैठ गए थें। इनके बिठाने व शांत करनेको शोलापुरके संठोंके पुत्र नवयुवक वालन्टियर होकर चारोंओर खंड थे। जिससे सब चुप और शांत थे प्रबन्ध बहुत अच्छा था। ऐछकजी महाराज उच्च आसनपर एक पत्थरशिला पर पद्मासन विराजमान हुए । प्रथम भनन हुए, फिर शोछापुर पाठशाछाके एक विद्यार्थीन पंडित सदासुखजी कृत सोल्ह कारण भावनामेंसे शक्तिस्तर नामकी भावनाको मराठीमें बडी ही शांतितासे सुनाया । सेठ जीवराज गौतमने केशलोंचकी महिमा सूचक लगा पत्रपढ़ा, जो वितीर्ण किया गया था । सेत हीराचंद नेमचंदजीने ११ प्रतिमाओंका स्वस्त्य, केशलोंचकी महिमा और विद्यादानकी सर्वोत्कृष्टता बताई। फिर ऐलक महाराजने मनुष्यजन्मकी दुर्छमता बताते हुए शीस्त्रत धारने व दान धर्म करनेका उपदेश दिया । तब बहुतोंने परस्त्री त्याग त्रत छिया व

पर्वोके दिनोंमें पूर्ण शीलवत ग्रहण किया । तब एक भाईने कहा कि आज इस नगरके हिन्दू मुसल्रमान सनने पशुवध करना बंद किया है तथा धीवरोंने ३ दिन तक मछली पकडना बंद रक्खी है। किर शीतलप्रसादजीने त्यागीजीके व्याख्यानको दुहराते हुए दानार्थ भेरणा की तथा प्रगट किया कि सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुर श्राविकाश्रनके लिये ७०००) प्रदान करते हैं उसी तरह यहांकी पाठशाला यदि ऐलकजीके नामसे हो जावे तो महाराजकी स्मृति रहे। इसमें आपलोग सहायता कर प्रवन्ध करें।

इसका समर्थन कोल्हापुरके बुगटे महाशयने किया तथा किसीने हजार किसीने ५००) इस तरह बातकी बातमें १२०००)का चंदा दि० जैन पाठशास्त्राके स्त्रिये होगया। एक अजैन मिस्नके मालिकने भी हिष्ति हो ५००) रु० दिये। यह दानका प्रवाह रात्रि तक जारी रहा । इस अवसरपर सेठ नाथारंगजी गांधीने जो ५००००) का उपयोगी दान पहले कर चुके थे ९०००) और जैन बोर्डिंग शोलापुरमें अर्पण किये । तथा धाराशिवके *शेठ* नेमचंद वालचंदने प्राचीन जैन ग्रंथोंके जीर्णोद्धारके लिये ७०००) दान किये। ७५०) अमरावती जैन बोर्डिंगके लिये हुए व २००) के करीब बोधगांवके भाइयोंको दिये गए।

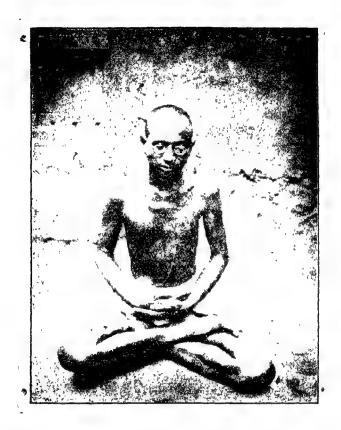
दानकी अनुमोदना करके शीतलप्रसादजीन ऐलक महाराजके सामने अपना प्रतिज्ञापत्र रक्ला तथा प्रार्थना की कि मैं ब्रह्मचर्च शीतलप्रमादजी प्रतिमाके नियम धारना चाहता है। ब्रह्मचारी ऐलकनीने आज्ञा दी । तब शीतलप्रमादनी हुए। मंडपसे बाहर गए । इवर ऐडकजीने करीब ९॥ के केशलोंच शुरू किया । इसी बीचमें शीतलप्रसादनी, जो पहिले बाबूके लिवासमें थे अब गेरुए रंगका मुरेटा, घोती, चादर व रूपाल लेकर ऐलकजीके प्लेटफार्म पर आकर बैठ गए।

पौन घंटेमें केशलोंच समाप्त हुआ। सर्व लोग इस दश्यसे वैराग्यमें मर आए। इसी समय सेठ रावजी नानचंदने ९ लाल रु. के परिश्रहका नियम लिया। शोलापुरमें बड़ी मारी धर्म प्रभावना हुई। उसी दिन लियोंकी सभामें श्रीमती रखाबाई, कंकुबाई तथा मगनबाईजीके धर्मीपदेशसे ९००) का चंदा पाठशालाके लिये हुआ। शोलापुरमें यह पाठशाला श्रीमान ऐलकजीके प्रतापसे ९००००) से अधिक फंडको रखनेवाली बहुन उत्तम प्रकारसे चल रही है। ऐलकजीने शोलापुर जिलेमें धूमकर पाठशालाके फंडके लिये द्रव्य एकत्र करानमें बहुत परिश्रम उठाया।

शोलापुरके लोगोंको शीतलप्रसादजीके ऐसे यकायक परिवर्त-नसे आश्चर्यके साथ आनंद भी हुआ ।

अब शीतलप्रसादनी नियमित रूपसे सामायिक आदि क्रिया करने लगे, एक दफे शुद्ध भोजन लेकर संतुष्ट रहने लगे। ऐलकजी-की संगतिमें दो दिन टहरे। फिर आज्ञा लेकर बम्बई आए।

अब यह चौपाटी बंगलेमें न उहर कर हीराबाग धर्मशालामें उहरें। सेंड माणिकचंदनी मुनते ही धर्मशालामें आए। और देख कर कायदेसे वन्दना की, हाथ जोड़े और आंखोंमें आंसु लाकर कहने लगे कि आपने मुझे कुछ लबर नहीं की नहीं तो हम बड़ा उत्सव करते। आपने जो यह बत प्रहण किया है सो मुझे बड़ा आनन्द है। आप अच्छी तरह इसे पालिये पर मुझे जो आप



श्रीमान् जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलपसादनी ब्रह्मचर्यवस्थामें.

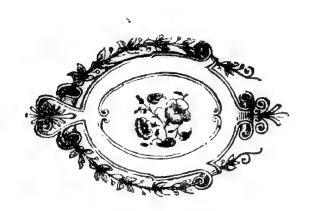


सहायता देते थे उसमें कभी कभी न काजिये मेरा काम सब धर्मका ही काम है। मुझे आपने धार्मिक कामों में बहुत मदद दी है पर जब तक मैं जीवित हूं तब तक मुझे आप मदद करेंगे तो मैं छुछ भी धर्म व जातिकी सेवामें अपने मन, बचन, कायको छगा सकूंगा। शीतलप्रसादजीने कहा कि मेरे इन नियमों के धारनेसे आपके काममं किसी प्रकारकी वाधा नहीं पड़ेगी। आप निश्चित्त हो जैसे धर्मकार्य करते थे वैसे ही करें। मुझसे जहाँतक बनेगा आपकी सहायताको तैय्यार रहूंगा। आपका जो काम है सो मेरा ही है। इस तरह कहनेसे सेठजीको बहुत सन्तोप हुआ।

वास्तवमें जनतक बाह्यमें निवृत्ति मार्गको घारण नहीं किया जाता है तनतक चित्तके संकल्य विकल्प नहीं मिटते। तथा जनतक नियमोंकी प्रतिज्ञा नहीं होती तनतक मन नन्दर व इन्द्रियें कावूमें नहीं आतीं। और जनतक मन और इन्द्रियें स्थिर न हों तनतक ध्यान स्वाध्याय यथेष्ठ नहीं हो सकता। और जनतक ध्यान स्वाध्याय विश्व नहीं हो सकता। और जनतक ध्यान स्वाध्याय नहीं हो तनतक आत्मोन्नित नहीं हो सकती। इस आत्मोन्नितिकी तरफ लक्ष्य धरना यही सर्वसे पवित्र काम मनुष्यके जीवनका है। इसके पथपर चलना और इसके विराधक काम, कोथ, लोभ, मोह, रात्रुओंको विजय करते जाना यही वीरता व वीर पुरुषका कार्य है। आत्माकी उन्नति केवल बार्ते बनानेसे व अपनेको ज्ञानी व अकर्ता मान लेनेसे नहीं होती। ज्ञानपूर्वक रागद्वेषादि विकारोंको जब हटाया

जायगा तब ही आत्मध्यान होगा । आत्मध्यान है मो ही आत्मो-न्नतिका सोपान है। कहा है—

तव सुद वद वञ्चेदा झाण रह धुरन्थरो इवे जहाा।
तम्हा तित्तय णिरदो तल्लद्धीए सदा होह।। (द्रव्यसंग्रह)
भावार्थ-नो तप करं, शास्त्र जाने, त्रत घारे सो ही ध्यान
ह्रपी रथकी धुरीको घर सकता है। अतएव ध्यानकी सिद्धिके लिये
इन तीनोंमें अर्थात् तप, शास्त्र और व्रतोंमें सदा लीन रहो।



# १२ कां अध्याय।

#### -333%EEE-

### महती जातिसेवा तृतिय भाग।

श्चरिमान् सेठ माणिकचंदनी ऐसे पुरुषोंने नहीं थे कि जैसे प्रायः वे ज़मीदार लोग होते हैं जो तिकयेके सहारे पड़े हुए अपना अमूल्य जीवन बिताते हैं और जिनके गावोंकी बंधी हुई आमदनी चली आती है, अथवा जैसे वे पेन्शन यापना होते हैं जो सकीरसे माहबारी छेकर घरमें पड़े हुए बर्चचोंको खिडाया करते, चौसर सत-रंग खेला करते व आलस्यमें पड़े हुए इधर उधर करवट बदला करते हैं। सेटजी एक कर्मवीर महान् आत्मा थे। जिनको अपने जागनेके ममयसे रात्रिके दायनके समय पर्धत जाति-हित, देशहिन, जगतहितका ध्यान था। जिन दिन सेटजी सबेरे कुछ न कुछ जातिसंवा सम्बन्धी विचार, खटण्ट न दौड़धूप नहीं कर होते, थे तबतक उनको रोटी खाना अच्छा नहीं मालूम होता था। इन समय सेठजीकी अवस्था अनुमान ९८ वर्ष की थी। पैरमें चोटथी ही, तौभी साहस व उत्साह २५ वर्षके युवानके समान था। ठंडकमें पर देर तक रहनेसे आपके सांधेमें दर्द हो जाया करता था तौमी कभी उसके पीछ पड नहीं रहते थे। अपने समयको उथा न खोकर उपयोगमें लगाए रखना सेठजीके जीवन का मुख्य उद्देश्य था।

बहुत दिनोंसे सेठनी इस चिन्तामें थे कि प्रयाग, छाहौर, और आगरा काछेज़ोंमें अपने दिगम्बर नैन सेठजीका पंजाबमें छात्र बहुतायतसे पढ़ते हैं। ये धर्ममें स्थिर गमन । रहें। छाला छाजपतरायके समान नैन कुलमें जन्म लेकर भी नैनधर्मको न जानकर श्रष्ट

न होर्ने इसीलिये इन तीनों स्थानोंमें आपका उद्योग जारी था। आगरा और प्रयाग तो एक दफे आप दौरा भी कर आए थे, पर लाहौर नहीं गए थे। लाहौरमें बाबू रामलाल सब-डिबीजनर ॲफसरसे बहुत दिनोंसे पत्रव्यवहार चल रहा था। सन् १९०९ दिसम्बरमें हाहौरमें राष्ट्रीय कांग्रेस होना निश्चित हुआ तथा इसी समय जैन यंगमेन्स एसोसियेशनका वार्षिकोत्सवभी निश्चित हुआ त्र बाब् रामहालने सेंडजीको हिला कि यदि ऐसं समयपर आ यहां पर्वारं तो शायद बोर्डिंगका कुछ प्रवस्थ हो सके। सेठनीं शीतलप्रमाद्जीको यह बात बयानकी । शीतलप्रमाद्जीन सेठजीक प्रष्ट किया कि आप अवस्य चेंछ । आपके प्यारनेसे अवस्य का की सफलता होगी। शोलापुरसे छौटनेको एक सप्ताह ही बीत था कि शीतलप्रसादनीको लेकर सेटजी लाहौरको खाना हुए साथमें प्रोफेसर ए० बी० हट्टे एम०ए० को भी लिया। ता० २ दिसम्बरको मेहसे चलकर ताः २४ को लालितपुर आए शीतलप्रसादजीके निमित्तसे एकदम नहीं जा सकते थे। पहले त कर दिया था सो सेठ मशुरादास टड़ैयाने भन्ने प्रकार स्वा किया । शहरसे बाहर क्षेत्रपाल स्थानपर उहरे । यहांका ि मंदिर बहुत रमणीक है। थोड़े दिन हुए महोनेमें कुंछ प्राच

व्रतिमाएं मिली थीं जो सर्कारके कब्जेमें थीं। राजाराम बांदाकी वेरणासे तीर्थक्षेत्र कमेटी और भारतवर्षीय दि॰ जैन महासभाने छिखा पढी करके छोटे छाट युक्तप्रान्तकी आज्ञासे उन प्रतिमा-औंको प्राप्त किया । उनमेंसे श्रीअभितन्दनताथकी करीन १२०० के सम्वत् की बहुतही ध्यानाकार २॥ हाथ ऊंवी पद्मा-सन प्रतिपाको सेठ मथुरादासनीने लाकर यहां विरानमान की। शेष बांदामें रहीं। रात्रिको पाठशालाकी परीक्षा ली। यहां इस समय स्याद्वाद पाठशाला काशीसे विशासद परीक्षोत्तीर्ण पं० वनलाल हो मासते अध्यापक थे। सेंड माणिकवंड्नीते सेंड मंगुरादासनीको बहुत उपदेश किया कि आप यहां एक छात्राख्य खोहें, उसमें बुदेलखंडीय छात्रोंको रखकर संस्क्रापदि पदवावें । शहरके लड्के विशेष नहीं पहते । उतका विद्वान् बनना कठिन है । शास्त्रसभामें कुछ भाइयोंने स्वाध्यायका नियम लिया ।

यहांसे ताः २५ को चटकर सीधे ताः २६ को लाहीर आए । मावडा गलीके दिगम्बर जेन मंदिरके लाहीर दि॰ जैन निकट एक मकानमें लाहीरवालोंने बडे वोर्डिंगका प्रबन्ध मन्मानके साथ ले जाकर सेठजीको ठहराया। ताः २६ और २७ को एसोमियेशनकं

अधिवेशन हुए । इनमें एक दिन शीतलप्रसाद्जीने आवक धर्म, प्रोफेसर छड़ेने जैनधर्मका महत्व और पं॰ अर्जुनलाल सेटी बो॰ ए॰ने कर्म सिद्धान्तपर व्यारुयान दिये। सेठजीने बहुतसे इंग्रेजी पहे नैनियोंको स्वाध्यायका उपदेश देकर छ: ढाला दौलतरामऋत याद करने-को कहा तथा जिसने स्वीकार किया उनको इसकी प्रतिये व जैन

नियमपोथी बांटीं । पहलीका उल्या शीतलप्रसादनीने श्री गनपंथा-जीमें अपनी बीमारीकी हाछतमें वीर सं० २४३५ मार्गसीर्ष सुदीमें किया था व नियमपोथी श्रीमती मगनबाईजीकी प्रेरणासे रची थी, ताकि जैनियोंमें निधमोंके ग्रहणका प्रचार हो । इन दोनोंको मुफ्त बांटनेके लिये सेठजीने छपवा लिया था। ताः २७ की शत्रिको दिगम्बर नैनियोंकी खास बैठक हुई इसमें दिगम्बर जैन ग्रेजुएट एसोसियेशन स्थापित होनेका प्रस्ताव हुआ । खे-ताम्बरी नैनियोंमें ऐसा एक इवं० जैन प्रेजुएट एसो० है जिसके द्वारा इतं । समानका बहुत कल्याण होता है । अपने दिगम्बर स-मानकी सेवामें मुख्यतासे दिग० जैन पढ़ हुए ध्यान देवें इपिछिये सेंडजीके पूर्ण प्रयत्नसे इसका प्रस्ताव हुआ व प्रोफेनर छड्डे मंत्री नियत द्वए । ग्वेद है कि इसकी अवतक कोई अपली कार्रवाई न हुई । इसी समय सेटजीन पंजाबमें बोर्डिंगकी आवश्यक्ता प्रगट की । सर्वनं पसन्द किया तथा तय हुआ कि एक वर्षका चंदा लाहौरवाले जमाकर बोर्डिंग चलावें, फिर पंजाबके सर्व स्थानोंसे चंदाका खास प्रब-न्ध किया जावे । उसी समय सेठ माणिक चंदजीने १ वर्षके लिये २५) मासिक दिया, ऐसा ही २५) मासिक लाला नियालाल खनांची बंगाल बेंकने दिये, यही मैनेजिंग कमेटीके सभापति और कोपाध्यक्ष नियत हुए । उसी समय १४०) मासिकका प्रबन्ध हो गया। मंत्री बाबू रामचंद्र एम० ए० व उपमंत्री बाबू शामचंद बी० ए० बी० एस० सी० मास्टर सेन्ट्रेज ट्रेनिंग कॅ।लेन नियत हुए।

ता० ३१ दिसम्बरको मेनेजिंग कमेटीकी बैठक हुई जिसमें मुख्य दो नियम रक्खे गए-कि सर्व छात्रोंको धार्मिक शिक्षा लेनी होगी व बोर्डिंगमें कैत्यालय रक्खा जाय ताकि सर्व छात्र नित्य दर्शन करें। छात्रोंको धार्मिक व्याख्यानोंको देनेका काम लाला प्र-भूलाल और मुरारीलालजीने लिया। सेठजीन शहरमें घूमकर कई मकान देखकर बोर्डिंगके लिये छाटे और खोलनेक लिये १ मासका समय दिया गया।

यहांसे ताः १ को चलकर अमृतसर आए । लाला उमैद्सिंह

मुसहीलालने उहरानेका प्रबन्ध किया था। यहां

अमृतसरमें सेठजीका १४ घर दि० जैनियोंके हैं । कई लक्षपित मारप्रयास । वाड़ी हैं जैसे रामलाल, गनपतराय, परन्तु धर्मसे
प्रेम नहीं है । एक जैन मंदिर है, उसमें दि०
जैन प्रतिमाएं हैं परन्तु लोग दर्शन नहीं करते । अलग मंदिरके लिये
चंदा ४५००) हो चुका है पर बना नहीं है । सेठजीने बहुत
प्रेरणा की । ताः २ को गुनराती मित्र मंडल लाइबेरीके मेम्बरों और
स्थानकवासी जैनियोंने सेठजीके सन्धानार्थ सभा की । धर्मीक्रतिपर
प्रो० लट्टे और शीतलप्रसादजीने ज्याख्यान दिया । यहां स्थानकवासी
जैन पाठशालाको सेठजीने १०) की मदद दी व लाइबेरीमें पुस्तकें
भेजना स्वीकार किया । यहां सेठजीने नानक शाही सुनहरी मंदिर
देखा ।

ता० ६ जनवरीको दिहली आए पहाड़ी पर लाला जिंदहलीमें जैन हाई स्कू- जग्गीमलजीके कमरेपर ठहरे। यहांकी लक्ती मेरणा। व लाजाओंका निरीक्षण कर सेठजीने लाज की। शामको शहरकी कन्याशाला देखी। ५) का इनाम दिया। ता०

8 की रात्रिको पहाड़ी घीरनमें आम सभा हुई, जिसमें प्रो॰ लहे और शीतलप्रसादनीने घमपर व्याख्यान दिया। ता॰ ५ की रात्रिको शहरमें लाला मगुनचंद्रके मंदिरनीमें सभा हुई। इसमें उक्त दोनों महाशयोंने मिथ्यात्व, अन्याय और अमक्ष्य त्यागरर उपदेश दिया। बहुतसे भाइयोंने वेश्यानृत्य न करानेका व पर स्त्रीत्यागका नियम लिया। सेठ माणिकचंद्रनीने विद्योन्नतिपर कहते हुए दिहलीमें नेन हाईस्कूल और बोर्डिङ्गकी आवस्यक्ता बताई।

यहांसे चलकर ताः ६ को आगरा आए। ताः ७ को मोती कटरेके बड़े संदिरजीमें आम सभा आगरा बोर्डिंगका हुई। शीतलप्रनादजीने बोर्डिंगकी आदश्यका प्रबंध। बताई। इपका समर्थन सा० दि० जैन महा-समाके महामंत्री मुशी चम्पाराय, प्रोफेसर

ल्डे और सेठ माणिकचंदजीन किया। सेठजीन ४०००) भेजनर हरिपर्वतके पाम जमीन पहले ही ले दी थी। रायवहादुर घमंडीला-लंने कहा कि आगामी पौष सुदी ६ को चौधरी मोतीलालके हाथमे मुहूर्त बोर्डिंग मकान बनानेका करा दिया जायगा। बमेटीके उप-मंत्री बाबू अमृतलाल बी० ए० नियत हुए। चंदा देनेकी प्रेरणा करके सेठजी यहांसे बम्बई आगए।

श्रीमान् सेठजीकी धर्मपत्नी नवीबाईजीको कई मास पहलेसे गर्भ था। सेठजीको निराशा ही थी कि पुत्र-सेठजीको पुत्रका का लाम होना कठिन है। आपकी निरा-लाभ। शाका बहुत बड़ा उदाहरण यह है कि एक दिन शीतलप्रसादजीसे आपने कहा कि मैंन अपनी स्त्रीके लिये बहुत कुछ जायदाद अलग करली है, पुत्रका लाम तो मुझे होना ही नहीं है। मेरे तो बोर्डिंगके छात्र हैं सो ही मेरे पुत्र हैं। मगनवाई व ताराबाईको बीस २ हमारकी नायदादके मकान दे चुका हूं। ऐना ही बड़ी कन्याको दिया है। यद्यपि वह मर गई है परन्तु उनकी पुत्री कमला है। अब मुझे कुछ और दान करना है । जुन्छीनागमें ११००) मासिकके माहे की आमदनी है इसको मैं अपने जीतेजी रजिप्ट्री करके पकाकर दूं। यह बात होकर आपने किसर महेमें देना सो खूब सोच बि-चारकर वकीलसं ट्रन्टका भमौदा ठीक करा शीतलगमादनीके माथ रजिप्टारके यहां जा रिजेष्टरी करा दिया था। पुण्य योगते मिती पौप सुदी १ सं० १५६६ व बीर सं०२५**२६ ता० १**२ जनव**री** १९१० के दिन सेठानीने एक पुत्ररस्तको जन्म दिया । सेठनीको कुछ आनन्द तो हुआ पर उनके जीवनकी आशा नहीं इसते कोई विशेष न किया । क्योंकि एक प्रत्र थोड़े ही दिन पहले प्राणान हो चुका था पर सेटजीका पुण्य तीव था कि आपने अपने मरण ममय तक इस पुत्रको सनीवित खेळता हुआ देखा । यह पुत्र जीवनचंद अब अपनी माताकी रक्षामें शिक्षा पारहा है।

संठनी मांमाहार रोकनेके छिये अच्छी २ विहायनकी छपी पुस्तकोंको बांटा करते थे। कलकत्तानिवासी सेठजीके द्वारा महान् अबू रज्जुलाल जैनी अब यात्रा करते हुए वम्बई आए तब उनको उत्साही व उद्योगी लाभ । नानकर (Uric acid) यूरिक एसिड नामकी प्रस्तक दी थी । उक्त रज्जू ठालने वह प्रस्तक बेचू ठाल चैरीटेबल बिस्पेन्सरीके डाक्टर आशुतोष बनर्जी एछ. एम. एस. को पढ़नेको

दी । डाक्टर साहबको अब तक मांस व मत्स्यका त्याग न था, पुस्तक पढ़नेसे ऐसी घृणा हुई कि डाक्टर साहब और उनकी पत्नी दोनोंने मांस मत्स्यका खाना त्याग दिया । इन अमक्ष्योंके छोड़नेसे डाक्टर साहबकी कई बीमारियां जाती रहीं । सेठनीने छनकर बड़ा आनन्द माना ।

मिती पौष शुरुक १४ वीर सं० २४३६ को वम्बई मारवाड़ी
मंदिरमें सभा हुई। उममें दक्षिणकी यात्रासे
वम्बईमें आप सभा। छौटकर आए हुए अछीगड़िनवासी पंडित
श्रीछाछजीका ज्याख्यान धर्मकी महिमापर
हुआ। इसीदिन मारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके वार्षिकोत्सवके
छिये जो श्रीसम्मेद शिखरजीपर मात्र छुदी १ से ५ तक
होनेवाला था, वम्बई दि० जैन पंचायतकी तरफसे सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी, बह्मचारी शीतलप्रसादजी, पं० धन्नालालजी,
लाला प्रमुद्यालजी आदि प्रतिनिधि चुने गए। मात्र कृण्ण २ को
हीराबागमें बिलसन कॅलिनके संस्कृत प्राफसर श्रीयुत हरि महादेव
भड़कमकर बी० ए० के समापतित्वमें सेठजीने सभा करवाई।
इसमें पंडित श्रीलालजीने जैनधमें ही जीवका कल्याणकारी धर्म
हो सकता है—ऐमा सिद्ध किया।

श्रीमनत सेठ पूरणसाह सिवनी छपारा मध्यप्रदेशने श्री शिख-रजीको तेरापंथी कोठीमें एक नवीन जिन सम्मेद शिखरजीमें मंदिर तैयार कराकर उसकी विम्वपिछा महासभा । कराई थी। इसकी बड़ी घूम हुई । मेहेमें ३०००० से अधिक मनुष्य आए थे। वि-द्धवर पंडित नरसिंहदासजीके द्वारा विम्वपतिष्ठाका समारम्भ एक बेड़े

भारी मंडपमें विधिपूर्वक हुआ। सभी प्रान्तोंके धनवान, विद्वान् व परोपकारी आगए थे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका १४ वां वार्षिकोत्सव मात्र सुदी १ ता० १० फर्वेरी १९१० से प्रा-रम्भ दुआ। इस जल्सेके लिये श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी इन्दौरनिवासी सभापति नियत हुए थे सो मात्र वदी ३० ता० ९ फर्बरीको गाजेबाजेके साथ अपने पुत्र हीरालालके साथ १ हाथीपर विराजमान हो आए । सर्व भाइयोंने स्वागत करके मनोज्ञ डेरेमें टहराया। बम्बईसे सेठ माणिकचंदजी, ब० शीतलप्रमादजी, मूलचंद किसनदास कापड़िया—सम्पादक दि॰ जैन भी आए थे। २॥ बजे दिनको जल्सा शुरू हुआ । पहले ही श्रीमान्पंडित गोपालदासजीन मंगलाचरण किया । फिर महामंत्री मुंशी चम्पतरायजीने समापति होनेके लिये सेठ हुकमचंद्रजीका प्रस्ताव किया। इसका समर्थन श्रीमन्त में मोहनलाल खुरई और श्रीमान् सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. ने किया । संठनीने अपना भाषण पहकर १००००) महासभाके प्रबन्ध खातेमें दिये। कुछ बैठकोंमें १९ प्रस्ताव पास हुए, जिनमें मुख्य येथे—(१) सर्कारसे प्रार्थना—िक बड़े लाटकी धारा सभामें जैन जातिका प्रतिनिधि नियत किया जावे जैसा कि ता० १९-१०-०९ के पत्रमें आशा दिलाई गई है। व इसका तार मेना नावे, (२) ११ प्रतिमाघारी ऐलक पन्नालाल और ब्रह्मचारी शीत-लप्रसादके साहसपर हर्ष, (३) जैन बैंक खोला जावे, (४) वाइसरायसे प्रार्थना की जाय कि मादों सुदी ५ और १४ को जो दिगम्बरियोंके महान पवित्र दिवस हैं, तमाम भारतमें जाहर छुट्टी मनाई नावे, (५) सभापति—दानवीर सेठ माणिकचंदजी व महामंत्री सेठ हुकमचंदजी और कोषाध्यक्ष मुंशी चम्पतरायजी हुए। इनको महामंत्रीके पदसे १ वर्षको छुट्टी दी गई, (६) इवेताम्बर दिगम्बरोंके परस्परके तीर्थ सबंग्धी झगड़ोंको तय करनेके लिये यदि इवेताम्बर जैन कार्न्फ्रेंस पंच नियत करके मेन दे तो महासभा भी अपनी तरफसे पंच नियत कर देगी।

बसंत पंचमीक दिनकी बैठकमें प्रस्ताव हुआ कि सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी० के अद्भुत कार्यकी कदर सेठजीको दानवीर जैन करके 'दानवीर जैनकुलभूषण 'का कुलभूषणका पद। पद अपण किया आवं य मुंशी चम्पतरायन १४ वर्ष तक जो समाजसेवा की है उसके उपलक्ष्यमें "जैन जातिभूषण" का पद दिशा जाव। पंडित गोपालदामने आशीबीद सूचक शहर कह कर नारियल और निम्नलिग्वित मानपञ्च दोनों परोपकारियोंकी सेवामें भेट किया।

# नकल मानपत्र ( महासभा )

श्री वीतगगाय नमः।

स्थान श्री समेदशिषरजी, पञ्चन पो० पारसनाथ (हजारीबाग)

श्री वीर निर्वाण संवत् २४३६. मिती माघ शुक्ला ५. १४ फेब्रुवरी १९१०. सन्मानपत्र ।

मारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभाकी तरफसे श्रीमान् दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंद ने॰ पी॰ जौंहरी बम्बईनिवासीकी श्रीयुत मान्यवर महोद्य, सेवामें अर्पित । आपने इस दिगंबर जैन जाति और पवित्र जैनधर्मकी उन्नति करनेमें जो अपना तन, मन और धन छगाकर असीम परिश्रम उठाया है तथा अब भी उठा रहे हैं इससे समस्त दिगंबर नैन समूह आपका अंत:करणसे कृतज्ञ है। आपने अपने बुद्धिबल और अट्टर परिश्रमके द्वारा न्यायपूर्वक व्यापार करके जो प्रचुर सम्मति उपार्जन की तथा उसमेंसे कई लक्ष रुपयोंसे पमत्व छोड़ उसको मुख्यतया छात्र।लयोंके द्वारा विद्यादान और धर्मशालादिके द्वारा अभयदानमें व्यय किया तथा धर्मायतन, तीर्थक्षेत्र और जैन मंदिरोंके रक्षार्थ अकथनीय परिश्रम उठाया तथा द्रव्य खर्च किया इत्यादि अने ह शुभ कृत्य करके आपने शास्त्रोक्त गृहस्थ धर्मका पालन किया है। यह बात सब जन समूहके लिये अनुकरणीय है। आपने लक्ष्मी उपार्जन करके भी कभी अपने घामिक नित्य नियमको नहीं छोड़ा तथा स्वयं शास्त्राम्यासी रहकर अपनी सन्तानको भी प्रसिद्ध सद्विद्या रत्नसे विभृषित कर अपने रत्नम्वामित्वको सार्थक किया है। आपके इन्हीं स्ट्कृत्योंपर मोहित होकर गवर्नमेंटने जे० पी० (Justice of Ревее ) की तथा श्री दक्षिण महागष्ट् जैन пभाने दानवीरकी पद्विएं प्रदान की हैं, और यह भारतवर्षीय दिगंबर भेग महासभा आपके उपकारकी ओर अपनी भक्ति प्रकट करनेक लिये आपको उन पद्विओंसे भी विशेष " जैन कुलभूषण " की सुपद्वीसे सम्मानित कर अपना हार्दिक प्रेम पुष्प अर्पण करती है। आशा है आप इसे स्वीकार कर जैनसमानको कृतार्थ करेंगे।

> द. **हुकमचंद्** सभापति भारतवर्षीय दि० जैन महासमा ।

सेठ माणिकचंदनीने अपनी छबुना प्रगट करते हुए उपरोक्त मानपत्र स्वीकार करके ५०१) महासभाके प्रबन्ध खाते, १०१) जयपुर जैन शिक्षाप्रचारक समिति व १०१) महासभाकी लाइफ मेम्बरीको दिया । डिप्टी चम्पतरायजीने भी अपनी आधीनता बताई और ५००) की छात्रवृत्तियां उन छात्रोंको देनेको कहा जो पंडित गोपालदासमीकं पास धर्मशास्त्र पहेंगे। प्रक्रम खातेमें और भी मदद आई (बाबू किरोड़ीचंदनी आराने एक चित्र द्वारा शास्त्रोंके भंडारोंकी दुर्दशा दिग्वाई व सरम्वती भवनकी आवश्यक्ता बताई। उसी समय अपीछ करनेसे ७००) वार्षिक उपजके बादे १० वर्ष तकके लिये हो गए। कई उपदेशक सभाएं हुई। माह सुदी ३ को शिक्षाप्रचारक समिति जयपुरका जल्सा हुआ। उसमें ब्रह्मचर्या-अमकी आवश्यक्ता बताई गई। इसके छिये बाबू गेंदनलालजीन १०००) नकद् प्रदान कर दिये। तम समय कुछ फंड २०००) का हुआ । अनायालय हिमारको भी ८००) का फंड हुआ । सेटनीने अपनी ओग्से कटनीनिवासी भाई मन्तूलालको एक सोनेका चांद अर्पण किया, वर्योकि महासभाके काममें उसने समासद आदि बढ़ानेमें बहुत परिश्रम किया था।

माह सुदी ३ की रात्रिको भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कंमटीका बड़ा प्रभावशाली अधिवेनन सेट जल्सा तीर्थक्षेत्र कमेटी। हुकमचंद्जीके समापितत्वमें हुआ, जिसमें महामंत्री सेटजीने अपनी रिपोर्ट सुनाई, जिसका बड़ा प्रभाव हुआ। बंडी मजालाल गिरनार तीर्थके प्रबन्धक आए थे। सेठ हुकमचंदजीके समझानेसे उन्होंने दूमरी कमेटी ठीक की जिसमें बाहरवाले भी मेम्बर हुए।

रिपोर्टका सारांश कहते हुए सेठ माणिकचंदजीने प्रबन्ध खातेमें द्रव्यकी नरूरत बताई तथा १०००) आपने दान किये। तब सेठ हुकभचंद्रजीने ५०१) दिये इस तरह ३११२) हा चंदा हो गया । सोनागिरजी व तेरापंथी कोठीके लिये कमेटियां बनाई गईं । शिलरजी पर्वत रक्षाके छिए द्रव्य एकत्र करनेको भाई नियत हुए। श्रीमती मगनवाई, जानकीबाई, लिखनाबाई, पार्वतीबाई,

लानवंतीबाई, चंदाबाई आदि पढ़ी हुई धर्मकी भा. दि. जैन महिला जानकर बहर्नोंके उद्योगसे छह स्त्रीसभाएं हुई।

परिवदका स्थापन । अनेक प्रकारके उपदेश हुए। ६०)की मुद्रित पुस्तकें पढ़ो बहनोंको बांटी गई और स्त्री-

शिक्षाके लिये ५५०)के अनुपान फंड हुआ तथा महासमाके समान सार भारतको जगानेके छियं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् स्थापन हुई। इसकी प्रवेषकारिणी सभामें श्रीमती मगनवाईजी मंत्री व पार्वतीवाईजी प्रमुखा नियत हुई।

मंदिर प्रतिष्ठामें भंडारके जो २००००)के अनुमान आए सो पर्वतरक्षा फंडमें शामिल होनेको सेठ परमेष्ठीदास कलकत्ताको दिये गए।

सेठनीन टपरैली कोठीके बड़े मंदिरनीके जीर्णोद्धारमें भंडारसे २५०००) खर्चकर एक बड़ा रीन-कटार भव्य मंदिर कर दिया था, उसीपर उपरेली कोठीमें ध्वजा चढानेका कार्य्य वसंत पंचमीके प्रातः कलश व ≱वजा-काल हुआ। कलश चढ़ानेकी बोली सेठ रोपणोत्सव । मुखडाँँजनी हजारीलाल छिन्द्वाड़ाने ५५००)

में, ध्वजा चढ़ानेकी सुरतके नयचंद हीराचंद तासवालेकी विषवा कंक-

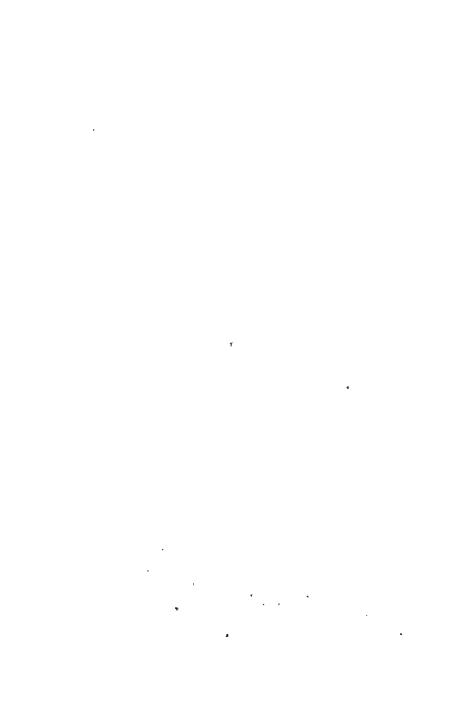
बाईने १०००) में छी। सेठजीने मंदिर जीर्णोद्धार करनेवाले मिस्त्री जनेरदास व कोठीके सर्व कर्मचारियोंको मुदिका, कंठी, शाल दुशाले आदि इनाममें दिये। उपरैली कोठीके ट्रष्टियोंकी मीटिंग हुई। सभापित बाबू देवकुमारके स्थानमें बाबू गुलाबचंद अनरेरी मिल्ट्रेट छपरा तथा मंत्री सेठ हरसुखदास हजारीबाग हुए। कोषाध्यक्ष सेठजी ही रहे। सेठ माणिकचंदजीके ध्यान देनेसे ही उपरैली कोठीके द्रव्यकी केवल रक्षा ही नहीं हुई, किन्तु मंदिर धर्मशाला आदि सुधार होकर द्रव्यका सदुपयोग भी हुआ।

शिखरत्रीकी यात्रा भले प्रकार करके सेठ माणिकचंदनी, शीतलप्रसाद्त्री, मूलचंद किसनदासनी सेठजीका दौरा। कापिइदा व श्रीमती मगनवाइंजीके साथ ईसरी स्टेशनसे चल ता० १९ फर्वरीको गयाजी आए। यहां बुद्ध-गयाका मंदिर देखा। यहां बुद्धकी मूर्ति बैठे आसन दो गज ऊंची है। एक हाथ गोदमें व एक हाथ लटकाए हैं। मंदिरका शिखर १८२ फुट छंचा है। इम मंदिरके पीछे पीपल बुक्ष है। कहते हैं दहां बुद्धको ज्ञान हुआ।

यहांसे चलकर शेटनी ताः २० को काशी आए ो उसी
दिन पाठशालाका वार्षिकोत्म शाला भगवाकाशी स्याद्वाद पाठ- नदास एम. ए. अग्रवालके सभाशन समें हुआ।
श्वालाका वार्षिकोत्सव १८ विद्यार्थियोंको १०० के काली इनाम
दिया गया। विद्याप्रेमी पार्सी नमशेदजी
नौरोनी उनवाला भी आए थे। सभापति साहबने एक विद्वता पूर्ण
माषणमें कहा कि न्याय (तर्क) विद्या सत्य बात निर्णयके छिये



सेठजी ५० वर्षकी अवस्थामें.



हैं न कि जलप और वितंडाबादके लिये । संस्कृत विद्याके बिना धार्मिक विद्यामें प्रवेश नहीं हो सक्ता । राजमापा भी संस्कृतवालोंको सीखना चाहिये । सेठ माणिकचंदजीने सभापतिको धन्यवाद देते हुए कहा कि " जैसे हिन्दू कॅलिनमें स्वार्थ त्यागी जीवन अपण करने-वाले विद्वान् काम करते हैं ऐसे हमको मिलें तो बहुत उत्तम काम हो । हमारे भाईयोंको ५० वर्ष तक खूब परिश्रम करके धनोत्पत्ति करके फिर शेष जीवन परोपकारमें बिताना चाहिये । " सेठजीने १०१) दिये । बाबू छेट्रोलालने भी १०१) दिये । सब मिलके ५००) की उपन हुई ।

यहांसे चल ता० २८ को श्री अयोध्याजी आए। जहां इम चतुर्थ कालमें श्री ऋषभदेव, अजिनागथ, अभिनन्दननाथ, सुमितिनाथ और अनन्तनाथ स्वामीका जन्म हुआ था। यहां पांचीं स्थानोंके दर्शन किये। इस क्षेत्रके सम्बन्धमें ऐसी मान्यता है कि सदा ही भरतक्षेत्रके सर्व ही तीर्थकर यहां जन्मते और श्री सम्मेद शिखरजीसे मोक्ष प्राप्त करते हैं। हुंडावमिंगी कालके दोषसे गत चौथ कालमें फरफार हुआ। यहां केवल एक प्रनारी था। सुनीम नहीं था न प्रवन्धकारिणी कमेटी न रसीदवही न वहीखाते थे। संठजीने यहां वम्बईसे एक घड़ी मेजनेको कहा।

यहांसे रात्रिको चल सबेरे ता० २३ को लखनऊ आए। स्टेशनपर मुख्य जैनी भाईयोंने मले प्रकार खागत किया। यहां दो शास्त्र सभा व दो उपदेशक सभा हुई। सेठनीको निम्नलिखित मानपत्र अर्पण हुआ—

# नकल मानपत्र (लखनऊ)

ૐ

#### श्रीमहावीगय नमः।

दोहा ।

"श्वीत्रल" देखत शिथिल भये, सर्व कमैके फन्द | भाग हमारे उदय भये. आये माणिकचन्द ॥ १ ॥

इस समय हम अपने परम पृज्य श्री वीतराग परमेश्वरको नमस्कार करते हुए, अङ्गमें फुछे नहीं समाते हैं कि आज कैया सु अवसर है, कि जिस महानुभादकी कीत्ति हम सब बहुत काल्से श्रवण करके अपने कर्णौंको तृप्त किया करने थे, आज वही शानित छवि, अपने चन्द्रसम मुख कमलके द्रीत देकर हमारी नेत्ररूपी कम-लिनीको प्रफुल्डिन कर रही है व यों कहिये कि जिस प्रकाशमान चन्द्रमाके देखनेके वास्ते हमारे चितचकोर बहुत कालमे तृषित थे, आन वही शुभ चन्द्र खच्छ एकटिक शोभाविरिजरिज श्री श्रेष्ठि "माणिकचंद" अपने पूर्ण रूपसे द्रीन देकर अपनी सौम्य चित्तहारी दृष्टिरूपी किरणोंसे हमारे हृद्यको शान्ति और आनन्द उत्पन्न कर रहे हैं। महाराय ! हम आपकी प्रशंसा (स्तुति) कर-नेके लिये असमर्थ हैं क्योंकि सम्पूर्ण भारतवर्षमें जैन समाजमें ऐसा कौन जन होगा जिलके मुलसे आपका सुयश, कीर्ति, गुणगान व नाम न लिया गया हो ! जैन समाज व हम सकल लखनऊ निवासी श्रीमान्के परम आभारी हैं, कि आपने अपने सुकृत्यसे सिश्चित किये हुए धनको अपनी मान बडाईके लिये व्यर्थ व्यय न कर जैन धर्म व जैन जातिके परमोपकारक मार्गमें छगाया । आपने विद्यावृद्धिके लिये यत्र तत्र नैन बोर्डिङ्गहाउस नियत किये, पाठशालायें स्थापित कराई, यात्रियोंके सुभीतेके लिये तीर्थक्षेत्रोंका सुवार किया, धर्मशालायें निर्माण करवाई, आपको इस पतित पावन जैन धर्म व धर्मात्माओंसे अत्यन्त प्रीति है। आपके इस सुक्रतव्यके छिये हम सम्पूर्ण जन व जैन मतावलम्बी आपको शुद्ध अन्तःकरणसं कोटिशः धन्यवाद देते हैं और ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि आप निसे चर्मात्माओंको सदा दीर्घाय बनावं।

भागगयो मनको तिमिर, भयो परम आनन्द। पुण्य उदय दर्शन भये, शीतल माणिकचन्द्र ॥ २ ॥ आपका क्रुनामिलापी-

माय ज्ञाङ्का १५ सं. १९६६ दामोदरदास मंत्री, जैनधर्मप्रवर्धिनी सभा, लखनऊ

यहांकी पाटशाला व औषवालयको देखकर सेटनीन प्रमन्नता प्रकट की । तथा इन कार्योंके प्रबन्धार्थ एक नियमावली व प्रबन्ध-कारिणी सभा बनवा दी तथा अयोध्या, रत्नपुरी और सहंठ महेठके प्रबन्धार्थ कमेटी बनानेकी प्रेरणा की । भाईयोंने चैत्रमें होनेवाली रथयात्रामें बनाना स्वीकार किया।

यहां जैनसभाके मंत्री छाला दामोद्रदासजी शास्त्रज्ञाता, प-रोपकारी धर्मात्मा हैं । श्रीमती मगनबाईने कन्याशालाके लिये २०) मासिकका चंदा कराया । मूलचन्द् किसनदासजीने वेश्यानृत्य, बाल-छम्न आदि कुरीति निवारण पर उपदेश दिया । भाईयोंने आगामी प्रबन्ध करना स्वीकार किया । वास्तवमें सेटजी ऐसे परोपकारीकी सुपत्री ऐसी शिक्षा प्रचारिका जैन स्त्री समानके सुवारमें उत्तिता थीं कि जहां पर्धारे वहां अवस्य मुधार हो । है। यहांसे ता० २५ को चल २६ फर्वरीको बम्बई आए।

जिम बातको चाहते हो यदि वह हो जावं तो चित्तकी आ-कुलता मिटती है। और आकुलताके मिटनेसे लाहोर बोर्डिककी ही सुखका अनुभव होता है। कई वर्षीसे स्थापना और सेटजी पंजाबमें बोर्डिंग हाउस स्थापित क-सेटजीको हर्ष। राजा चाहते थे सो ता० ३० जनवरी १९१० के दिन लाहोरके दिगम्बर जैन पंजानने अ-

पनी प्रतिज्ञाके अनुसार बोर्डिंग खोल दिया । उस दिन १० छात्र भरती हुए । सेटजीके पास जब पत्रद्वारा खबर आई, आप बड़े ही आनन्दित हुए । यह बोर्डिंग अभी तक उन्नतिरूपमें चल रहा है । १ वर्षमें ही २३ छात्र हो गए थे अर्थात् ला कालेन (कानृन) के ५, बी० ए०के २, एक० ए०के ७, इज्रीनियरिंग ४, मैट्कुलेशन २ और मिहिलके दो ।

धर्मिशा छः डाला दौलतरामकृत पहाया गया व लिख्ति उ-त्तरों से परीक्षा ली गई। फल अच्छा रहा। पारितोषिक भी दिया गया। आगे वर्षोमें द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसुत्र तककी पड़ाई होती रही है। बोर्डिंग जब खुला तब ही लाला देवी सहाय फीरोज़पुर छावनी और लाला लक्ष्मीचंद् इच्छाराम कम्पनीवालोंने देखा और उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर २५१) और २००) की कमसे सहायता दी।

वर्तमानमें करीब ४०के छात्र हैं। मकान अभी किरायेका ही है पर जमीन बहुत मौकेसे मिल गई है। कोई धर्मात्मा सेठ

माणिकचन्द्रजीके जीवनका यदि अनुकरण करके दैवोर्डिंग बना दें तथा खर्च नो कि कठिनतास चलता है उसके लिये कुछ धीन्य फंड दे दें जिसके ज्यात्रसे काम चले तो पंत्रावमें जैनधर्मका झंडा गाड-नेके समान महान पुण्य बंब हो । मंत्री छाला रामलाछजी व उपमंत्री बाबू शामचंद्रनी बी० ए० व सभापति लाला नियालाल खनांची इस संस्थाकी उन्नतिमं दिनरात दत्तचित्त रहते हैं। लाहौरमं १०० जनी छात्र कालिजोंक पहनेवाले हैं। स्थान विना चाहे नहां रहकर धार्मिक ज्ञान व आचरणसं भ्रष्ट हो रहे हैं। यहां पर पहले छात्रोंके खयाल आर्य समानी थे पर अब सब जैन धर्मके गौरवको समझ गए हैं और अपने अनेकान्त मई तत्वके सामने एकांत तत्वोंको तजने योग्य ही जान रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि इस छात्राश्रमसे लाम लेकर आजीविका पर लगे हुए परमानंद एम० ए० सियालकोटसे अपने ता० २१ सितम्बर १५ के पत्रमें लाटा रामळाळ मंत्री बोर्डिंगको लिखंत हैं कि मैंने यहां तीन वर्ष रहकर उन अमूल्य जैन धर्मके रत्नोंको जाना है जिनको मैं बिटकुल भूल रहा था। अब मुझे बमंड है कि मैं जैन धर्ममें पदा हुआ। मैं छात्राश्रमके उपकारको कभी भी भृत नहीं मक्ता । आपके इंग्रेनीके कुछ वाक्य ये हैं:--

> Ram Kaur Lane SIALKOTE PATY. 21-9-15.

my dear....

I have lived for full three years at the Lahore Jain Boarding House. Unless I am to be ungrateful and thankless, I cannot possibly forget it. I have no hesitation in adding that the institution shall always be near and dear to me. The Jain Boarding House has afforded me an invaluable opportunity for realising what Jems are embedded in the jain religion and how miserably I was neglecting them. I come out of the Boarding House as a Jain, proud of Jainism and its brilliant heritage. I shall always look upon the institution as one which has been a means of providing me with an eyeopener in the matter of religion. May to Jainedra that my interest in Jainism may be ever-increasing.

I am, Yours very Sincorely, PARAMANAND ( M. A. )

पाटकगण । इससे समझेंगे कि पंनाबमें जैनधर्मकी जड़ इस छात्राश्रमन जमादी है। सेठ माणिकचंदजीकी दीर्घटिकी प्रशंसा सहस्र मुखसे भी नहीं हो सक्ती । कॅ।छिजोंके साथ जैन बोर्डिंगका होना ही विद्वान् छात्रोंको जैन धर्मका प्रेमी बना सक्ता है । अन्यथा एकान्त मतके रंगोमें रंग जाना नव युवकोंका बहुत सुगम है । धनवानोंको जिनमंदिरसे भी अधिक पुण्य श्रद्धानको हह करानेवाले उपायोंके छिये द्व्य खरचनेमें होता है । ऐसा जान इन पंजाब बोर्डिंगको पका कर देना एक अमृल्य धर्मका अंग होगा । क्या सेठ माणिकचंदजीके समान धनबान देहली, पानीपत, फीरोजपुर, अम्बाह्म आदिमें नहीं हैं ? अवस्य हैं। केवल उदार बुद्धि व परोपकार दृष्टिकी आवस्यक्ता है। जिन सेठ माणिकचंजीदने अनेक बोर्डिंग स्थापित किये तो क्या पंजाबके धनाट्य मिलकरके भी एक बोर्डिंग गको भी पक्का नहीं कर सक्ते ?

सेठ माणिकचंदजी सदा ही गुणप्राही और गुणवानोंका मान करते रहे हैं। सहारनपुर निवासी बाबू सेठजीका विद्यापेम। जुगमिन्इरलाल एम० ए० हैं। यह पहले अलाहाबादमें थे, जब ही से इंग्रेजी 'जैन गजट की सम्पादकी करनी शुरू की। फिर आप बैरिप्टरी आदि कई परीक्षाओं को पाम करने के लिये विलायत गये। वहां करीत्र चार वर्ष रहे। जब शिखरजी पर बंगलं बांधनेकी आपत्ति आई तब सेठजीन आपको विलायत लिखा था। आपने अपने ता० ६ अक्टोबर १९०७ के पत्रमें लिखा कि यह सम्पूर्ण पर्वत पवित्र है। मैंने ४ दफे शिक्तरजीकी यात्रा की है और कुल पर्वतकी प्रदक्षिणा दी है। यदि उसके कहीं पास भी शराब मांसका संसर्ग होगा तो यह बड़ी आपत्ति होगी।

कुछ वाक्य यह हैं:---

It will be indeed a sad sight that after so many centuries meat and wine may be sold and taken, and perhaps even prepared in the near vicinity of Sikharji, it is tragic....... I have myself made this round four times my Pilgrimage to Sikharji......

आपने वहां इंग्रेनोंमें बहुत उद्योग किया और पार्लियामेन्ट तक यह बात पहुंचाई । बाजू माहबको जैन धर्मका प्रेम बाल्यावस्थासे ही था। आप बड़े घार्मिक थे। इसी संस्कारसे आपने विद्यायतमें भी जैन धर्मका उपदेश जब जिससे अवसर बात करनेको मिला उसको दिया तथा सन् १९०२ में वहां एक जैन छिटरेचर सोमा-यटी कायम कराई जिसके मंत्री मि० हवेट वारन (नं ८४, शेल गेट रोड, लंडन एस० डक्टू०) नियत किये नो बाबू माहबकी संगतिसं जैनधर्मके पक्के श्रद्धालु हुए। इममें हमारे सेटजी भी १ पाउन्ड भेजकर मेम्बर हुए। आप ता० ११ मार्च १९१० को जहाज़से बम्बई उतरे, उम समय संठ माणिकचंदनी दाकपर आपको छेने गए और सन्मान पूर्वक अपने ही चौपाटीके रत्नाकर पैछेनमें उतारा । आपने एकान्तमें उक्त बाबू साहबको लेजाकरके बातचीत की जिससे आपको निश्चय हो गया कि जगमन्दिरलालजीन अपना खानपान श्रष्ट नहीं किया है । सेटजीन स्नानादि कराया और अपन साथ चैत्यालयमें ले गए। उम्र समय बाबू माहबन बड़े भावसे श्री चंद्रप्रमुखामीकी ध्यानाकार प्रतिबिम्बके दर्शन किये और नमस्कार किया। फिर थोड़ी देर मामायिक की। उक्त बाबू साहब विद्यायतमें भी नित्य मामायिक करते थे । यह आपकी नित्यकी किया है। जब सेठजी चौकेमें भोजन करने गए अपने साथ हे गए और एक ही पंक्तिमें बैठ भिन्न २ थालों में संउनी व दूसरों के साथ बावू साहबने मोजन किया । सेठजीके इस धार्मिक प्रेमसं बाबू साहबके चित्तपर बहुत बड़ा असर हुआ।

इसी अवसरपर खुरजेवाले पंडित सेठ मेवारामनी दक्षिणकी यात्रासे छौटकर बम्बई आए थे और इसी पंडित मेवारामजीका तारीख़की रात्रिको आपका व्याख्यान नियत हुआ था। जिसके छपे नोटिस वितरण हो व्याख्यान । चुके थे। सेटनी रात्रिको हीराबाग हैकचर

हालमें उक्त बाबू साहबको हे गए। मभामें जैन अजैन अनेक प्रतिष्टित भाई थे। प्रथम ही ब्र॰ शीतलप्रसाद्जीने मंगलाचरण करके सभाका हेतु कहकर कहा कि आन पंडित मेबारामजी " नगत्कर्ता इंश्वर नहीं है '' इम विषयपर भाषण दंगे। सभाको बाबू जुगमन्दिरछालका परिचय कराया और कहा कि आप ४ वर्ष विलायत रह बेरिस्टरी पास करके आज ही अम्बई प्यारे हैं । दानवीर जैनकुलभूषण सेट माणिकचंद्नी जे० पी० की प्रार्थनासे एलफिस्टन हाईम्कूलके संस्कृत प्रोफेनर मगनलाल इत्पनराम शास्त्री एम० ए०ने सभापतिका आसन ब्रहण किया। सभापतिके बैठनेपर पंडिनजीने अपना व्याख्यान बहुत हो विद्वन्तापृर्ण दिया जिसको सुनकर पंडित लालने उठकर कहा कि इस अपूर्व विद्वत्तापूर्ण ज्याम्ब्यानको सुनकर मैं इतना सुग्ध हो गया हूं कि जी चाहता है कि पंडितजीका साथ निरंतर करूं। बाजू जगमन्दिरछालन भी ज्याम्याताको धन्यवाद दिया और कहा कि में आज इनके युक्तिपृर्ण व्यारूयानको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। सभावतिजीने कहा कि आजके व्याख्याता एक बड़े अच्छे पंडित हैं। मेरा जैनधर्मसे जो परिचय हुआ है उससे मैं कह सक्ता हूं कि इसके बहुतसे अंश वैष्णव वर्मसे साम्यता रखते हैं। यदि जैन और वैप्णव धर्मके आचार्य मिछकर एक विश्व धर्म निर्मापण करें तो भारत क्या बल्कि जगत्का उद्य हो जाय।

सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगकी लिटरेरी सोसायटीकी तरफसे ताः १४ मार्च सन् १९१० को बैरिष्टर जुगमन्दिरस्ता- हीराबागमें सेठ गुलाबचंदनी ढहू। एम. ए. के लजीका व्याख्यान । समापतित्वमे एक बृहत् समाका अधिवेशन हुआ। सभापतिने आमन छेनं वक्त यह कहा कि आनके व्याख्याता इतनी डिगरी प्राप्त करनेपर भी अपने धर्ममें इह रहे हैं। फिर व्याख्याता जुगमन्दिरलालजीन विद्यार्थियोंके कर्तव्यपर अपना विद्वत्ता पूर्ण भाषण कहा उसमें यह बातें भी कहीं कि भारतवर्षकी प्राचीन कालकी शिक्षामें तीन बातें थीं-सादगी, सस्तापन और धीमापन-प्रादा भोजन, सादा आपन, सादी शय्या रहती थी । गुरुओंको फीस नहीं देती पडती थी सुगम-तासे गुरुओंके पास विद्यार्थी हर समय प्रश्न कर सका था। एक ही विषय बहुत धैर्यके साथ पड़ा जाता था। आजकलकी भारतीय शिक्षामें तीनोंका अभाव है। विलायतकी ·और यहांकी पढ़ाईमें बहुत अंतर है । वहां शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों विषयोंमें पूरी २ शिक्षा दी जाती है। विलायत जानेसे जैन धर्म टूट जाता है ऐसा कहना ठीक नहीं है। विद्यायतमें आप जैन धर्म अच्छी तरहसे पाळन कर सक्ते हैं। भक्ष्याभक्ष्यका विचार भी रख सक्ते हैं । मैं चार वर्ष विला-यतमें रहा लेकिन मांसके एक अणुने भी मेरे उदरमें प्रवेश नहीं किया । वहांपर शाक भोजी सोसायटी बढ़ती जाती है। सेठजी को आपके व्याख्यानको सुनकर बड़ा ही हर्ष हुआ । बम्बईमें बाबू साहब सेठनीके पास ही उहरे रहे । इंस वक्त सेठजी श्री गोम्मट स्वामी (जैनविदी) जानेकी तैयारी कर रहे थे क्योंकि वहां श्री बाहु बिल स्वामीकी मूर्तिका मस्तकामिषेक समारंभके साथ र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका नेमित्तिक अधिवेशन था जिसके लिये हमारे सेठजी ही सभापति निर्वाचित हुए थे। मस्तामिषेककी मिती चैत वदी ५ से ४ ताः २६ मार्चसे २९ तक नियत था। सेठजीने बाबू साहबको कहा कि इम समय आप हमारे साथ दक्षिणकी यात्रा करिये और जैनविदी सरीखे अति प्राचीन स्थलके दर्शन कीजिये, जहांसे श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवलीने समाधिनरण प्राप्त किया व जहां श्री बाहुबलि स्वामीकी अति मनोज्ञ ध्यानाकार ५६ फुट ऊँची प्रतिबिम्ब विराजमान है। सेठजीने बाबू साहबके चित्तको ऐमा आकर्षित कर लिया था कि आपने तुर्त ही अपनी स्वीकारता दे दी। अब सेठजी सक्डटम्ब र-

श्री बाहुबली मस्तका- वाना हुए । साथमें ब्रह्मवारी शीतलप्रपादनी भिषेक और और बाबू जुगमन्दिरलालनी थे। एक ही सेकंड महासभा । क्वासमें बैठकर मदरास मेलसे सब लोग बेलगाम हुबली होते हुए टिपटूर स्टेशन प-

हुंचे । वहांपर अनेक नैनी जन स्वागतार्थ खड़े थे । सेठनीको बड़े सम्मानके माथ स्टेशनसे ३० मीटके करीब श्रवणबेटगोला नगरसे एक मील इस तरफ ले जाकर ठहराया । इतनेमें हज़ारों भाई नाना-प्रकारकी पगड़ी व वस्त्र पहरे एक पालकी लेकर आए। सेठ वर्धमानैय्या मैमूरने सेठजीके गलेमें हार क्षेपण किया । दूसरोंने सेठजीपर पुष्पें-

की वर्षा की । पाटकी रह बिठाया और गाजेबाजे के साथ नगरमें है गए । इयर रिशान के मुशाफिक लोग राम्तेमें नारंगी, नारियल आदि फलोंकी भेट चड़ाते हुए नमस्कार करते थे। सेटनीकी सवा-री शहरमें फिरी । एक स्थानपर फोटो लिया गया । एक ग्वाम तंतूमें सेटजीको टहराया था । इम बक्त सेट नवलवन्द्रजी भी स-कुटुम्ब पधारे थे ।

इस समय अनुमान ४०००० स्त्री पृथ्य आगण् थे। बाबू अजितप्रमाद बकील, पं० अर्जुन्लाल सेठी आदि अनेक जन उत्तर भारतसे आए थे। यहां पंचकल्याणकोत्सव भी हुआ था। जिसका प्रारम्भ फालगुण सुदी ३से हुआ था।

फाल्गुण सुदी १३को जननकर्याणकमें १००८ कल्झोंसे द्रीतीय अभिषेक हुआ था। उसी दिन तपकल्याणक, सुदी १४को केवल्झानकल्याणक और सुदी १२को मोक्षकल्याणककी अपूर्व रचना हुई थी। इस समय जैनिबिट्री सहा आनन्द्रपागरमें निमग्न थी। चहुंओर स्त्री पुरुष दोनों पर्वतींपर मंदिरोंके द्रीत पुलन करते दिखाई देने थे। श्री बाहुबल्डि स्वामीकी शांति मूर्तिकी पूलन करते हुए चरणोंका अभिषेक करते हुए हज़ारों स्त्री पुरुष परमानन्दमें निमग्न दृष्टिगोचर होते थे। स्वागतकारिणी सभाके समापति अनन्तराजैय्या व मंत्री सेठ वर्षवानैय्या थे।

महामभाकी बैठकें चैत्र वदी १ ता० २६ मार्चकी दुपहरसे प्रारम्भ हुई। सभामंडा बहुत बड़ा बना था। इसमें अद्वारक और ब्रह्मचारियोंके बैठनेको भिन्न उच्च स्थान नियत था। कांची, सूड़बिद्री, कारकल, कोल्हापुर आदिके भट्टारक ब्रह्मचारी सब

२४ व २५ आर्थिकाएं मेलेमें उपस्थित थीं। सेठनीको डेरेसे गाने बाजेके साथ मंडपमें हे गए। दौर्बल्य जिनदास शास्त्रीन मंगडाचरण किया। सेठ अनन्तराजैध्यानं स्वागतका भाषण कनडीमें पढा निप्तका हिन्दी उल्टा बाबू जगमन्दिरलालने सुनाया । सभामें दोनों भाषाओंमें हरएक काम होता था। हिन्दीको सिवाय इधरके ग्रामवासियोंके और सब समझते ये उनके छिये कनड़ीकी ज़रूरत होती थी। आपके भाषणमें यह कहा गया कि " श्री बाहुबलीकी प्रतिबिम्ब बहुत प्राचीन है। राजा रामचंद्र और रावणने भी इनकी पृजन की थी । चामुंडरायके पीछे मैसूरके महाराना यहांके जीर्णोद्धार करानेवाले हुए हैं। यह इवंत सरोवर मैमूर महाराजसे बनवाया गया है। " जी० के० ९ अर। जैय्याके प्रस्ताद व बाबू किरोड़ी चंद् आरा व हीराचंद नेमचंदके समर्थनसे सेटजीने श्री महावीर स्वामीकी जयध्यनिके मध्यमें प्रमुखके आमनको प्रहण किया । और अपना भाषण हिन्दीमें पढ़ा जिसका करडी उल्या दणीं नेमीसागरजीने सुनाया । समापतिनीके अंतिन वाक्य थे---

" विना स्वार्थ त्याग किये कभी जैन समाजकी उन्नति नहीं हो सकती। विद्वानोको अपना जीवन और धनाट्योंको लाखों रुपया विद्याप्रचारमं प्रदान करना चाहिये । खास करके जो व्यापारी बहुत समय तक व्यापार करके धन कमा चुके और अपने पुत्रींको सामर्थ्यवान बना चुके है तथा जो सर्कारी नौकरी करके पेंशन पाते हैं उन्हें अपना शेष जीवन जैनधर्म और जैन जातिकी उन्नति तथा आत्मकल्याणमें विताना चाहिये। "

बैठकोंमें १२ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुख्य ये थे:---(१) मैसूर प्रांतके २००० सादर जातिके घरोंको जो धर्ममें अब शिथिल हैं धर्ममें स्थिर करनेके लिये ११ महाशयोंकी कमेटी बनी। (२) श्रवण बेलगोलामें एक बात्राश्रम खोला जावे व कोल्हापुर, हुबली और मंगलौरके छ।त्रालयोंकी मदद की जावे। वहांके छात्राश्रमके लिये एक कमेटी बनी। (३) धर्मादेका सद्वयोग हो । (४) मैसूर दिगम्बर जैन प्रांतिक सभा स्थापित की गई । (५) खिरासतके कानून ठीक करानेके लिये कमेटी बनी । यही मलावार प्रान्तमें जारी आलिया संतानके कान्यनको भी ठीक कर जिससं पुत्र जायदादका मालिक न होकर भानजा होता है नहीं तो माल सरकारमें ज़प्त हो जाता है। (६) श्री बाहुबलि खामीकी मूर्तिकी रक्षाके लिये एक फंट स्थापित हो इसमें महा मस्तकाभिषेक सम्बन्धी आमदनी शामिल हो । इसकी ज्यवस्था एक क्रमेटी करे तथा । यही इस तीर्थके सुप्रकथको भी करें।

इस कमेटीके अध्यक्ष-पंडिताचार्य भट्टारक श्रवण बेलगोला व मंत्री जी० के० पद्मराजैय्या वेहगोहा हुए। ता० २७ मार्चको श्रवण बेलगोला छात्राश्रमके लिये ८७५०) व कोल्हापुर आदि ३ बोर्ङिंगके लिये २२००)का चंद्र । हुआ । इनमें दानवीर सेट माणिकचंद्ने दोनों फंडमें ५०१), ५०१) प्रदान किये। ता० २९के दिन श्री बाहुबिल स्वामीकी प्रतिमाजीपर क्रमशः कलसोंके न्हवनकी बोली हुई। जो पहली बोली ले वह पहला कलदा चढ़ावे ऐसा सेठ माणिक-चंदर्जाने टहराव किया । आज तक यहां कभी ऐसा हुआ नहीं था । सेटजीने इस मज्य मूर्तिके रक्षार्थ एक मारी चंदा हो जाय इस निमित्त सर्वको राजी करके यह रीति निकाली। यद्यपि बहांके उपाध्याय इस बातसे कुछ विरुद्ध भी रहे, पर सेठनीकी वातको खंडन करनेका किसीका हौंतला नहीं पड़ता था। १ हनार रुपयेके उपरकी बोलिके ७ कलश हुए जो यहां इस बातके जाननेको दिये नातें हैं कि लोगों में अभिषेक करने का कितना उत्साह था। नं० कलश

१-नल-सेठ विनोदीराम बालचंद झालरापाटन । 4808) २-दूध-सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद ईन्दौर। (5095 ३--दही--सेट नंदराम लक्ष्मणलाल पांडचा बम्बई । (808) ४—घृत—सेठ दौलतराम कुःदनलाल वृंदीवाला ,, ११०१) ५-इक्षुरस—सेठ जीवनराम लुगकरणजी पांडचा झालरापाटन १५०१) ६-सवैषिध-सेठ ओंकारजी कस्तरचंद इन्दौर 3002) ७-ईशानकोण-बाबू रामलाल पत्नालाल धर्मपुरी (9099

कुछ २०० कछशोंकी बोर्ला हुई-४०१)से छेकर १०) तक २५००२) की बोली हुई। यह सर्व सेटनीके उद्योगका फल था।

इसी दिन सभामें जब कलशोंकी बोलियां हो रहीं थी महा-राज मैसुरके कौन्मलर व डिप्टी कमिइनर आदि स-भामें पर्धार । बाबू अजितप्रसादनीने इंग्रेजीमें मैसूर राज्यका धन्य-वाद माना तब कौन्महर साहबने कहा कि-

" मैसूर गवर्नमेन्टको यह देखकर परम अभिमान होता हैं कि उसके प्रान्तमें जैनियोंका एक ऐसा उत्कृष्ट तीर्थस्थान है जहां पर जैनी आकर अपना आत्मकल्याण और धर्मीन्नतिका विचार करते हैं। मैसूर महाराजको जैनजाति अति प्रिय है। मैसूर सरकार यह जानती है कि यह जैन जाति दानवीर, उदार, दयामय और सहनशील है।

चैत्र वदी ५ ता० ३० मार्चको मस्तकाभिषंकका दिन था। कई सौ रुपया खर्चकर प्रवीण कारीगर द्वारा सीढ़ी उत्तर जानेको बनाई गई थी जिसपर एउंडे होकर मस्तक पर धारा डाली जावे। तीन बजेसे अभिषेक प्रारंभ हुआ। जिस जिसका जो कलशा था वह नम्बरवार ऊपर नाकर चढ़ाता था । दर्शक लोग चारों ओर म्बडे बैठे थे। पहले ही सेठ माणिकचंद्र पाटनवालोंन जल कलशकी धारा दी । वह धारा प्रमुकं मस्तक परसे नीचे पग तक आती हुई महा शोभाको विस्तारती थी । फिर सेठ कस्तूरचंद्ने दूधका बड़ा बड़ा लेकर धारा छोड़ी। दूधके कई घड़े छोड़ने पर वह प्रतिमा इवेतवर्ण निर्मेल प्रति भासती हुई उस समय दर्शकोंको जो आनन्द आया वह कथनसे बाहर है। प्रतिमाजीका द्रीन कोसोंसे होना था। बम देखनेवाले दूर २ बेठे हुए अभिषंकका आनन्द ले रहे थे-भीड बहुत बड़ी थी-सेठ माणिकचंद और नवलचंद दोनों हरएक प्रबन्धमं लब्लीन थे कि सानन्द अभिषेक हो। जाय । रात्रिके २ बजे तक अभिषेकका कार्य पूर्ण हुआ। यह अभिषेक २ र वर्षके पीछे हुआ था।

दूसरे दिन सेठनीन पर्वतींपर क्या २ मरम्मत व सुधारकी नरूरत है सो बहांके लोगोंको दिखाई और कहा कि हम मिस्री भेनेंगे, आप सर्व ठीक करालेंबें व इस फंडसे तीर्थकी उन्नति करें। अब यहांसे सेठजी बम्बई लौट गए। बर्ट शीतलप्रसादनी, बाबू किरो- इनिंद आदि आरावालोंके संघके साथ मूंड विद्रीकी यात्राको चले गए। वहां श्री जयधवल महा धवलादि संथोंके दर्शन भी किये व उनकी बालबोध लिपिको पड़कर भी आनन्द लिया। बाबू जुगमन्दिरलाल



(रेखो एष ६६१) जैन शिक्षाप्त चारिक समिति जयपुरकी तरफ्से सेठजीको मानपृत्रः

•		
	•	

श्री गोभटेशकी पूजासे महा आनन्द लाम लेकर अपने देश सहारन-पुरको खाना हए।

यहां श्रीमती कंकुबाई व मगनबाईजी पार्वतीबाईके व आरा निवासिनी चंदाबाईजीके परिश्रमसे स्त्रियोंमें भी भारतवर्षीय दि० जैन बहुत उपदेश हुआ। ताः ३१ मार्चकी रात्रिको महिला परिषद । महासभाके मंडनमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्की बैठक बड़े ठाउसे हुई। सेठ हीराचंद नेमचंदकी धर्मपत्नी सौ० सखुबाईने अध्यक्षस्थान धारण किया । अनेक प्रकार उपदेश हुए । यहां कन्याशालाकी आवश्यकता बताकर उसके लिये ५००)का चंदा हुआ।

सूरतमें शा. कीकाभाई किसनदासका पुत्र कीकाभाई ( गुलाबशाह ) अनुमान २० वर्षका व्यापार सेंडजीकी पुत्री नारा- कुराल व साधारण सौम्य प्रकृतिका था। उसीकें साथ सेठनीने अपनी तृतीय पुत्री तारामतीका मतीका विवाह शुभ रुप्त मिती वैशाख सुदी १० के दि<del>न</del> जैन पद्धति अनुसार कर दिया । इस समय ताराकी उम्र १४ वर्ष-की थी । छोटालाल छेलामाई अंकलेश्वर वालेने जैन विधि कराई थी। इस विवाहमें दोनों ओर वेश्या त्य नहीं हुआ। केवल साधारण गीतोंके दो जल्से हुए थे। स्त्रियोंने खोटे गीत बिडकुड नहीं गाए तथा सर्व मिठाई स्वदेशी खांड़की बनी। सेठजीने १०००) रु. के करीन खर्च कर बम्बई प्रसिद्ध चित्रकारसे पापकर्म और उसके फल्ल-नर्कके कष्ट इनको दिखानेवाले चित्र तैयार कराकराके विता सहित 'नर्केदु:खिचत्रादर्शः पुस्तक छगवाली थी। इस अवसर पर सेठजीने यह पुस्तक तथा एक गीतावली अपनी बिरादरीमें बांटी व खास २ व्यक्तियोंको दी। मानी बाटनेकी अपेक्षा पुस्तकोंकी मेट बहुत लामदायक है तथा फूलकुंबर कन्याशालाकी बालिकाओंको इनाम बितरण करनेकी समा चंदावाड़ीमें बैशाख सुदी १२को सेठ तुलसीदाम त्रिमुबनदासके प्रमुखत्वमें करके इनाम बटबाया तथा तारामतीके लग्नके हर्पमें ५०० कन्याशालाको मेट किया। तथा स्याद्वाद पाठशाला आदि मंस्याओंको दम २के हिमाबसे ११०) रु. का दान किया। इम प्रमंग पर सेठ नवलचंद हीराचंव नीके पुत्र रत्नचंदकी सगाई मूरतमें ही पक्की हुई जिमके हर्षमें लघु अभिषेककी पुस्तक वितरण की। पुरुकोंकी भेट सर्व मेटोंसे श्रेष्ठ भेट है।

जेटसे भादों तक सेटजी शांतिसे बम्बई रहकर यथा साध्य धर्म साधन करने रहे व तीर्थक्षेत्र कमेटीके कार्योंमें विशेष छक्ष्य दिया शिष्यरजी पर्वतके पड़ेपर देनेकी स्वीकारता बंगाल गुवनेमेस्टने

ल पहुपर प्राप्तास्यासारकाष्याच्याच्यानस्या करदीथीव ५००००) जमाभीकरादिये

शिखरजीकी फिर थे। डिप्टी किमइनर हज़ारीबामकी आज्ञारे चिता। पहाड़की माप आदि होने लगी इसीमें बहु तसा समय वीता। पक्षी लिखा पढ़ी ह

तसा समय वाता। पक्का छिला पढ़ा ह नहीं पाई थी कि यकायक गवर्नमंन्ट बंगालके सेकेटरी डक्टु. आर गोरलेका पत्र नं० १२८० टी. आर. ताः ६ सितम्बर १९१ का मार्गन एंड कम्पनीके नाम आया जो दिगम्बरियोंकी तरफ सोलिसिटर नियत थे, जिसका आशय यह था कि स्वेताम्बरी सम्भ दायके हकको ज्यादा पसन्दगी देकर जो पट्टा ता॰ २६ नवम्ब १२०८को हुआ था उसे भारत सर्कार न्याय रूप नहीं समझह इससे वह रह हो गया, रुपया ५००००) ४) फी सदी व्याजसे स्रोटा दिया जावे।

इस पत्रको सुनकर सेटजीको आध्यर्यके साथ बड़ा शोक हुआ और यही ख़याल आया कि यह कार्रवाई अवस्य इवेताम्बरियोंके खान प्रयत्नका फल **जोकसागर** में सेठजी। है। यद्यपि पट्टा दिगम्बरियोंको मिलनेसे इवेताम्बर समानके पर्वत सम्बन्धी हकमें

किसी प्रकारकी वाधा नहीं थी और इसीलिये पट्टा तय होते वक्त इवेताम्बरियोंने परवाह नहीं की और दिगम्बरियोंको छेने दिया पर इवे० भाइयोंको अपनी हानि न होते हुए भी यह बात न रुची और वे अवश्य इसके रद्द करानेकी चेष्टामें लग गए और अन्तमें वे भारत मकीर द्वारा कृतकार्य हुए । तब सेटजीन धेर्य प्रकट कर मर्व बड़े २ स्थानोंमें खबर भिजवाई और कमेटीक ओरसे ता० १९ सितम्बरको भारत सर्कारको तार भेना कि दिगम्बरी छोगोंका पर्वत पर हक इंवताम्बरियोंस अधिक है तथा छोटे छाटका फैसटा आख़री है अतएव पहला बन्दोबस्त रद्द न किया जाय। ऐसे ही तार कलकत्ता, खुरई, फीरोजपुर, मुजफ्फरनगर, झालरापाटन आदिसे भी गए व बम्बई सभाने भी तार किया था, इस तारका जवाब भारत सर्कारके उपमंत्री बौसन साहबरे दिया कि आपकी प्रार्थनाको बंगाल सर्कारके पास कार्रवाईके लिये भेन दिया है। उब दिहलीमें भारतके मुखिया भाइयोंकी एक सभा करनेका निश्चय ता० २६-१०-१० के रोज किया गया इसके छिये सेटजीने मर्व स्थानोंमें सूचनाएं भेन दीं और आप बम्बईसे अहमदाबाद होते हुए स्वाना हुए।

अहमदावादके सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका ८ वां वार्षिक उत्सव आसौन सुदी अहमदाबाद बोर्डिङ्ग-१३ ता० १६ अक्टूबरको सबेरे रमणभाई का वार्षिकोत्सव । महिपतराम नीलकंठ बी० ए० एलएल० बी०के सभापतित्वमें हुआ। सेठ माणिक

चन्द्रजी आ गए थे। आप ही ने प्रमुखकी प्रस्तावना की थी। लल्लु भाई लक्ष्मीचन्द्र चौकसीने रिपोर्ट सुनाई इसमें कहा कि दिगम्बर जैन सुमबई परीक्षालयमें २२ विद्यार्थियोंने परीक्षा दी थी, २० पास हुए हैं व इस बोर्डिंगकी कमेटी तरफसे प्रगट होनेबाले "दिगम्बर जैन" पत्रने बहुत कुछ जागृति जैन समाजमें फैलाई है इमसे श्रीयृत मूलचंद किसनदाम कापिड्रिया धन्यबादके पात्र हैं। फिर नानचंद एंजाभाई बी० ए० व मूलचन्द किसनदासजी आदिने भाषण कहे। प्रमुखने अपने भाषणमें सेट माणिकचन्द्रजीको धन्यवाद देते हुए कहा कि एमे बोर्डिंगोसे तुर्त फायदा नहीं मालूम होता है लेकिन २५ वर्ष पीछ एक आध्यर्यकारक फायदा आप देख स-केंगे। मेंने इसी मकानमें इंग्रेजी पहली पुस्तक पढ़ी थी जहां में अब प्रमुख हुआ हूँ।

दोपहरको अहमदावाद श्राविकाश्रमका प्रथम वार्षिकोत्सव उक्त प्रमुखकी पत्नी सौमाग्यवती विद्यागौरी श्राविकाश्रमका बी० ए०के सभापतित्वमें बहुत घूमसे हुआ। वार्षिकोत्सव। रिपोर्टके सुनाने बाद जीवकोरबाई आदिके माषण हुए। परीक्षामें १५ में १४ पास हुई थीं। उनको इनाम दिया गया। शा० हरजीवन रायचंदने भक्तामरस्तोत्र बांटे । सेट माणिकचन्दजीकी तरफसे एक स्त्रीको सोनेके रंगकी १ पेन्सिल भेट की गई। फिर मदद फंडके लिये कहते ही ४८४) रु० भर गए जिसमें हरगोविंददास प्रभुदास करमसद्ने १०१) व हरजीवन लालचंद बडीधाने १०१) दिये। प्रमुखके भाषणके पीछे श्रीमती मगनबाईने सर्वका आपार माना । रात्रिको सेठनीके सभापतित्वमें सभा हुई जिसमें सेठनीने प्रगट किया कि हमारी भावन रूपाबाईने बोर्डिंगके स्थानमें धर्मशालाके लिये दो कमरे बनवानकी इच्छा दर्शाई है। सेठजीने यहां बहरे गुगोंकी शाला देखी कि उन्हें कैसे शिक्षण दिया जाता है।

सेटनी मुलचंद किसनदास कापडियाके साथ ता० १८ क्टूबरको अजमेर पहुँच । सेठ नेमीचन्दजीने अजमेरमें सेटजी बहुत सत्कार किया। रात्रिको जैनमंदिरमें और सभा। सभा हुई और १५ प्रतिनिधि दिलीके लिये चने गए।

ता. २० को जैपुर आए । स्टेशनपर १०० भाई हानिर थे। सेट बालमुकन्द बनकी इवेलीमें उतरे। यहां जैपुरभे प्रवास व सेट- पर बहाचारी शीतलप्रसाद चातुर्भासक प्रारंभ-जीको मानपत्र। से ठहरे हुए थे। ठोलियोंके मंदिरमें तेरह-द्वीप विधान पूना बहुत ठाउसे हो रही थी। रात्रिको भनन व कीर्तन होते थे। ता. २१ की दोपहरको वर्ष्ट-मान जैन विद्यालयमें जिसको पं० अर्जुनलाल सेठीने अपने खास प्रयत्नसे स्यापित किया था जैन शिक्षा प्रचारक समिति-की तरफसे ठाकुर कुंबर योजराजसिंहके प्रमुखत्वमें एक मानपत्र भर्षण किया गया। सेठजीने उत्तरमें कहा कि-

"मैंने कुछ नहीं किया है। मेरे समान ओरोंकी भी तारीफ होय तो मैं बहुत खुक्की होऊं। जैपुरभे ५००० घरोमेंसे १८०० रह गए इसका कारण कुरीतियोंका प्रचार माळूम होता है। इस कलंकसे जैपुरको दूर करो।"

ब॰ शीतलप्रसाद्जीने मरण पीछे जीमनके खर्चकी घटानेको कहा । सेठजीने समितिको १०१) प्रदान किया अन्तमें । सभाका फोटू लिया गया जो अन्यत्र मुद्रित है । रात्रिको ठोलि-योंके मंदिरमें बड़ी उपदेशक सभा हुई जिपमें ब॰ शीतलप्रसाद, अर्जुनलाल सेठी व मूलचंद्जीकं भावणोंकं पीछे सेठनीने विद्यापर बहुत बहुत उत्तेजना दी। ता. २२ को मुख्य भाइयोंकी सभासे २० प्रतिनिधि दिल्लीके लिये चुने ग्रए। ता. २३ को सांगानेरके अद्भुः त जिन मंदिरोंके दुर्शन किये । दो पहरको ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ २८ वर्षसे स्थापित जैन महा पाठशालाका निरीक्षण किया। पाठशालामें एक सभा हुई । सेठनीको मानपत्र दिया गया । सेठ-जीने कहा कि जैपुर जो एक वर्षके लिये भी जोमनोंको बंद करके उस रुपयेको महा पाठशालामें देदें तो एक मोटा फंड हो जावे । आपने १०१) पाठशालामें दिये । फिर् समितिके बोर्डिंग व दफ्तरको देखकर इसी रात्रिको चल ता. २४को दिल्ली आए। ता. २६ अकटूबरको छक्ष्मीनारायणकी धर्मशालामें सभा हुई।

२०० भाई हनारीबाग, कलकत्ता, इन्दौर, देहर्लामें शिखरजी लखनउ आदि स्थानोंसे आए थे। सब विषयक सभा। १००० दि. जैनी जमा थे। सेठ माणक-चंदजीके प्रस्ताव व रा० ब० वमंडीलालजी-

के समर्थनसे लाला ईश्वरीप्रसाद्जी रईस म्यूनिसिवल कमि-

भर व गव० ट्रेज़रर दिल्ली सभापति व बाबू घन्नुलाल अटार्नी उपसभापति हुए। बहुत विचारके बाद सेठ माणिकचंदजीके प्रस्ताव करने व बाबू धन्नूलाल और अर्जुनलाल बी. ए. के समर्थनसे यह प्रस्ताव हुआ कि-

दिगम्बरियोंको पैरवीका कोई समय न दिया जाकर पट्टा रद किया गया इससे यह सभा क्षोभ प्रगट करती है तथा पुन: विचारके लिये निवेदन करती है। इसकी नकल तारा द्वारा भारत सर्कारको भेनी गई। फिर सेठ हुकमचंदनीके प्रस्ताव व बा० सुह-तानसिंह मेरठके समर्थनसे बडे लाटको मेमोरियल भेजना निर्ध्विय हुआ । इसकी एक सत्र कमेटी बनी । तीसरा प्रस्ताव डेप्युटेशन भेजे जानेका हुआ । व तीर्थक्षेत्र कमेटीको पत्रव्यवहारकी सत्ता दी गई। यहांसे ता० २७ को चलकर ता० २९को सेठजी बम्बई आ गए।

अहमदाबादसे श्राविकाश्रमका प्रचार करनेके लिये श्रीमती मगनबाई और छिलाबाई ता० २६ अक्टू-श्रीमती मगनवाईजी- बरको चलकर अजमर आए। रात्रिको सभा

करके मिथ्यात्वका त्याग कराया। ता० २८ की यात्रा। मीको जैपुर गए। यहां पर कई सभाएं

करके स्त्रीशिक्षाका प्रचार किया।

नं० १-ता० २९-१०-१०को पाटोदी मंदिरमें " स्त्रियोंका अज्ञान कैसे मिटे '' इस विषयपर ।

२-ता० १-११-१०को महाबीर स्वामी मंदिरमें " ज्ञानकी महिमा " के उपर।

३-ना० २-११-१०को शास्त्र समाद्वारा नियमादि दिलाए

व सरस्वती कन्याशाला देखी जो समितिके आधीन चलती थी। इसमें अनुभवके साथ ज्ञान दिया जाता था।

ता० ३-११-१०को सांगानेरमें जाकर दर्शन किये व उपदेश दिया।

ता० ४-११को आमेरमें नाकर प्राचीन मंदिरोंके द्र्यान किये, पूजन की।

ता० ६को सार्वजनिक खास सभा करके शीलवनकी महिमा कही । अनुमान २००ने नियम लिया । ता० ७ को रत्नत्रय धर्म पर व्याख्यान दिया।

ता० १२ को दारोगाजीके मंदिरमें सभा हुई। आश्रमके छिये २३०)का फंड हुआ। समितिके आधीन तीन कन्याशाला व बोर्डिंगके छात्रोंको मिराई बांटी व इनामके छिये २९) दिये।

इन बाइयोंके उपदेशसे जैपुरकी स्त्रीसमान स्त्रिशिक्षा में जो कुछ बुराई समझती थी उसे दूर कर कन्याओंके पढ़ानेमें रुचि करनेवाली हुई व पढ़नेकी निन्दा त्यागती हुई।

वास्तवमें जैसे सेटजी बालकोंके उद्धारमें कपर कसे हुए थे ऐसे ही उनके यशको विस्तृत करनेवाली उनकी सुपुत्री मगनवाईजी स्त्री समाजके उद्धारमें हृद प्रयत्नशील थीं।

इव वर्ष ऐलक पन्नालालजीन अपना चातुर्मास शोलापुरमें
किया था। वहांसे त्यागीजी मगसर वदी
बारामतीमें २ को बारामती पहुंचे। सेठ माणिकचन्दजी
सेठजी। बम्बईसे और श्रीमती मगनबाईजी सीधी
जैपुरसे यहां आगई थीं। मगसर वदी ४
को त्यागीजीका केशलोंच हुआ। इस अवसरपर सेठ हीरांचन्द

नेमचंदने 'दान ' पर व्याख्यान दिया, उसी समय ३०००) का फंड बारामती पाठशालाके लिये हुआ। १००००) का पहले था। इसका नाम " ऐछक पन्नालालनों पाठशाला रक्ला गया । अर्जुन-लाल सेटी भी आये थे। समितिके लिये ७००) का व अहमदा-वाद श्राविकाश्रमके लिये १२५) का चंदा हुआ । यहांसे सेठजी

नातेपुते गए। वहां मगसर वदी ८ को नातेपूतेमें इनाम पाठशालाकी परीक्षा लेकर इनाम बांटा। यहांसे आप दहीगाम आए। २ वर्ष हुए बांटा । तब ब्र॰ शीतलप्रसादजीके साथ यहां हो

गए थे। उस वक्त हूंमड़ ज्ञाति सुधारक कमेटी नियत हुई थी। उसके मंत्री बापुभाई पानाचंदने २ वर्षकी रिपोर्ट छुनाई जिससे मालूम हुआ कि १० वर्षसे नीचे उड़कीकी सगाई न करना ऐमी प्रतिज्ञा जिन्होंने लीथी उन्होंने अच्छी तरह पाली। जिन्होंने सही नहीं भी की थी उन्होंने पाली। तथा जिन्होंने कन्याविकय न करनेकी प्रतिज्ञा ली थी वे भी दृढ़ रहे । सेटजीको इससे बहुत संतोप हुआ । सभामें कितनेक भाईयोंके मुंहसे सेठजीने सुना कि जो ५ वर्ष तक ऐसा ही नियम चला तो कन्याविकय आपसे आप बंद हो जायगा । इस अवसरपर सेटजीने मराठीमें क्ररीति निवारण पर भाषण भी कहा । सेठजी मराठी, गुजराती, हिंदी तीनों भाषाएं अच्छी तरह बोल लेते थे।

सेठ नवलचंदजी जब गोनटस्वामीके मस्तकाभिषेक पर मुडविद्रीकी तरफ गए थे तब आप कार्कछ कार्कलमें सेट नवल- भी पधारे । वहां पर संस्कृत पाठशाला तो चंदजीका दान। चल रही थी पर परदेशी छात्रोंके लिये बोर्डिङ्गकी बड़ी आवश्यकता थी। तब उस समय वहां सेठ ओंकारजी कस्तूरचंदजी भी थे। सेठ नवलचंदजीकी

प्रेरणासे ४०१) कस्तूरचंदजीने, ५५१) सेठ हीराचंद गुमानजी व ५१) तीर्थभक्त स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलालकी धर्मपत्नी जड़ावबाईने दिये थे। वास्तवमें सेठजीका घरानामर ही उदारचित्त धारी है।

फतहपुर (सीकर) निवासी सेठ गुरुमुखराय मुखानंदकी कोठी बम्बईमें बहुत प्रसिद्ध है। आप दिगम्बर महाराज सीकरको जैन समाजमें अग्रगामी उदारचित्त धर्मप्रेमी हीराबागमें सज्जन हैं। किसी कारणवश सीकर महाराज मानपत्र। आपसे अति प्रमन्न हुए तब आपसे कहा कि जो कोई हमारे लायक काम हो सो कहो

तत्र दयालुचित्त सेटनं अपनं स्त्राथको त्यागकर यह अभयदान मांगा कि सीकर, लक्षमनगढ़, फतहपुर, और रामगढ़में भादों प्रदी ९ से १४ तक १० दिन दशलाक्षणों और हर मामकी चौद्मकों कोई जीय हिंसा न हो—कसाईखाने बंद रहें। महाराजने यह स्वीकार करके सेट सुखानंदजीको पत्र मिती मगमर बदी १३ संवत १९६७ को लिख दिया और राज्यमें घोषणा करनेकी प्रतिज्ञा की। इस दयालुनाको देखकर बम्बई दिगम्बर जैन प्रांत्रिमानं ता० ३ दिसम्बरको हीराबाग लेकचर हालमें श्रीमान् महाराजके सन्मानार्थ सभा की। श्रीयुत् खेमराज श्रीकृष्णदास ' वेंकटेश्वर ' पत्रके स्वामी, सेट ओंकारजी कस्तूरचंद आदि ५०० से अधिक भाई सभा भवनमें विराजित थे। श्रीयुत १०८ श्री माधवितहजी महाराजकी सवारी मोटर द्वारा ७ बजे रात्रिको पधारी। स्वागतके लिये सेट माणिकचंदजी आदि कई माई द्वारपर खड़े थे। उनके साथ पहले आप दफ्तर तीर्थक्षेत्र कमेटीमें आकर बिराजे और सेट माणिकचंदजी से

धर्मशाला आदिके सम्बन्धमें बहुत वाक्तीलाप की । फिर हॅालमें विराजमान होनेपर मंगञाचरण आदिके पीछे श्रीमान् सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी० और सेठ गुरुमुखराय सुखानन्द्रजीने दिगम्बर जैन सभाकी ओरसे एक मनोहर कासकेटमें अभिनन्दन पत्र अर्पण किया । इसका उत्तर महाराजकी ओरसे कहा गया कि मैंने जो कुछ किया है इपमें सिर्फ अपना फर्ज अदा किया है।

इस वर्ष अलाहाबादमें बड़े दिनोंमें कांग्रेसका अधिवेशन था तथा प्रद्शिनीकी बड़ी धूम थी। एसे अव-अलाहाबादमें बोर्डिंग- सरपर सेठनी भी श्रीमती मगननाईनीको का निश्चय व सेटजीका लेकर प्रयाग आए। ब्र॰ शीतलप्रसादनी, कुंबर दिग्विनयसिंह, पं० अर्जुनहालनी सेठी, गमन 🕩 सेठ हकपचन्द्जी, पंडित गणेशप्रसाद्जी सा-गर, मुंशी चम्पतरायजी आदि अनेक परदंशी जैनी आए थे। इस वक्त सेठनीके आगमनका उद्देश्य प्रवाग बोर्डिंगका निश्चय करना था । सेठनी और मगनबाईनीने धर्मपतनी लाला स्वमेर-चंदजीसे मिलकर अच्छी तरह समझाया कि आप अपनी इस पचीस हजारकी रकमको अपने पतिके नामसे बोर्डिंग कायम करनेके छिये ही अर्पण करके पुण्य और यशका लाभ लेवें। ब**० शीत**ल-प्रसादनीने भी समझाया कि यह सर्व धर्मका काम है। धार्मिक शिक्षा छेनेसे कॅ। छेनके छात्रों का बहुत कल्याण होवेगा। दूसरी तरफ सेठजीने प्रयागके भाईयोंको राज़ी किया कि वे इस काममें मन वचन कायसे मदद देवें। ता० २८ और २९ दिसम्बर १०को जैनधर्मशालामें दानवीर सेठजीके सभापतित्वमें दो सभाएं हुई जिनमें ब्र॰ शीतलप्रसादनी और पंडित अर्जुनलाल सेठीके बोर्डिंगकी आ-वस्यकता पर व्याख्यान हुए । ता० २९की समामें प्रकट किया गया कि प्रयागनिवासी लाला सुमेरचंदकी धर्भवत्नी '' सुमेरचंद दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग हाउस " स्थापित करनेके छिये २५०००) पचीस हजार प्रदान करती हैं। इस बातके सुनते ही सर्व सभानं कोटिशः धन्यवाद् दिया । उसी समय १९ महाशयोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई जिसके सभापति दानवीर सेठ माणिकचन्द्जी, उपसभापति लाला शिवचरणलालजी, कोपाध्यक्ष लाला मूलचन्द्जी, मंत्री बावू जगमिन्द्रलाल, उपमंत्री बाबू बच्चूलाल व धर्मीपरेशक बाबू ऋषभदासजी नियत हुए तथा तय हुआ कि कोई बंगला शीघ्र तलाश कर बोर्डिंग खोलनेका प्रचन्ध किया जायगा। सेठनीने सब बात पक्की कर दी । फिर आप बंगलोंको देखनेके लिये निकले। एक बंगला ठीक भी किया पर उसको खाली होनसे विऌ∓ब था ।

यहां ३ सभाओं में जैन विद्वानोंके भिन्न २ विषयोंकं व्या-रूयान हुए तथा सेठजीने प्रदर्शनी और राष्ट्रीय सभाके अधिवेशन भी देखे । जमना तटपर प्रदर्शनीका अद्भुत ठाठ था । यहांपर एक अंग्रेन हवाई विमान लाया था जिसपर लोगोंको बिठाकर आकारामें दूरतक फिराता था। फिर सुगमतासे उतार लाता था। एक दिन सेठ हुकमचंदजीने १२५) दिये और जहाजपर बैटकर आकाशकी सेर की । प्रयागमें श्रीमती मगनबाईजीने स्त्रियोंको उपदेश दिया व श्राविकाश्रमके लिये १५०) का चंदा किया ।

सेठजी श्रीमती मगनवाईजी और सेठ हरीमाई देवकरणजी-बाले जीवराज बालचंदके साथ काशी ता० सेठजीका दौरा काशी १-११-११ को आए। बर्क शीतछ-और जबलपुर । प्रसादनी भी सेठनीके साथ थे। स्याद्वाद महाविद्यालयका प्रबन्ध संतोपजनक पाया। दिहलीके बाबू नंदिनशोरजी ३ मास पहलेसे आकर प्रबन्धकी देखभाल रखते हुए यहां विद्याध्ययन करते थे। प्रश्नवसे प्रसन्न हो जीवराजने २५०) प्रदान किये तथा सेठ करवाणमल इन्दौर न प्रयागसे १००) की सहायताका वचन सेटनीको दिया था।

यहांसे सेटजी जवलपुर आए । इस समय सिंघई नारायणदा-सजी बीमार थे । शरीर बहुत अस्वस्थ था। जबलपुर बोर्डिंगको सेटजीने लक्ष्मीका उपयोग बोर्डिक्रके निमित २००००) नकद करनेके लिये उपदेश दिया उसी समय और एक वंगला- आपने एक बंगला जिसकी आमद करीब का दान। १५०)के मासिक है तथा २००००) नकद बोर्डिंग और धर्मशाला बांधनेको निकाल दिये जिसका प्रबन्ध सेठजी व अन्य चार जबलपुरके भाइयोंकी दृष्टीमें सौंप दिया। वार वार उपदेश कभी न कभी अवश्य अपना फल दिखलाता है। सिंबई नारायणदासनीसे जब कमी सेठनी मिलते ये लक्ष्मीके सदूप-योगका उपदेश दिया करते थे।

पावागृह सिद्धक्षेत्रके पर्वतपर कई जिन मंदिर जीर्ण पड़े हुए हैं इनमेंसे एक मंदिरका जीर्णोद्धार सेठ पावागढ़में वस्बई दि. माणिकचंदजीके मानजे सेठ चुन्नीछाल हेम-जैन पा॰ सभा और चंद जरीवाले बम्बई और दूपरेका बेड्च मगनवाईजीका निवासी जीवामाई काशीदासकी विववा इच्छा-बाईने कराया । तथा इसीके साथ बिम्ब उद्योग । प्रतिष्ठाका उत्सव भी किया गया था। माह सुदी ७से टाईद्वीपका पाठ प्रारंभ हुआ व अंकुरारोपण विधान हुआ। प्रतिष्ठाकारक भट्टारक श्री गुणचंद्रजी थे। इसी अवसर पर बम्बई दिगम्बर जन प्रान्तिक सभाका वार्षिक अधिवंशन प्रसिद्ध दानी नाथारंगनी गांधीवाले सेठ्रामचंद् नाथाके सभापतित्वमें हुआ। स्वागनकारिणी समाके समापति सेठ चुन्नीलाल हेमचंद् थे। जरुसा बहुत सफलतासे हुआ । श्री शिखरजी सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुआ । पंडित गोपालदासजीको ' स्वाद्वादवारिधि' का पद प्रदान किया गया तथा तीर्थके प्रबन्धके लिये एक कमेटी बनी जिसके सभापति सेठ चुन्नीलाल व कोषाध्यक्ष व मंत्री लालचंद कहानदास बड़ौधा हुए। इस सभाके अवसर पर सेठ माणिकचंद्जी दक्षिण महाराष्ट्र फैन सभाके अधिवेशनपर सांगली गए हुए थे इपसे वे जल्सेमें नहीं आ सके थे। उनकी सुपुत्री श्रीमती मगनवाईं जी आई थीं जिन्होंके उद्योगसे माह सुदी ११ ता० १०-२-११की रात्रिको चुन्नीलाल हेमचंदकी धर्मपत्नी नंदकोरबाईके सभापतित्वमें

समा हुई। १५०० श्रियां थी। श्राविकाश्रमकी बाईयोंने उपदेश दिया । अहमदावाद श्राविकाश्रमके छिये २५०) का चंदा हुआ जिसमें प्रमुखाने १००) दिये । दूसरी स्त्रीसभा माह सुदी १३ को प्रतिष्ठा मंडपमें हुई। इसमें १००० स्त्रियां थीं। मगनवाईजीने स्त्री-धर्म और आचारपर व्याख्यान दिया जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रान्तिक सभाके उपदेशक फंडके लिये २५००)रु.का चंदा हुआ। पर्वत पर कल्हा म्थापनादिकी उपन ३२००) की हुई। बाबू माणिकचंदनी बैनाड़ा प्रान्तिक सभाके महामंत्री और सेठ माणिकचंद पानाचंद जौहरी कोपाध्यक्ष नियत हुए । त्यागी ऐलक पनालालजीके पंचारनेसे बहुत ही प्रभावना हुई । ब्रह्मनारी शीतलप्रसादनी भी आगए थे। पँ० अर्जुनलाल सेठी बी० ए० व सेठ नवलचंद हीराचंदजी भी आए थे। समिति जपुरके लिये २००) की उपज हुई। भंडारमें कुछ आमद ७०००) हुई। जन संख्या ६००० थी। सेठ मूलचंद किसनदास कापड़िया मेंपादक " दिगम्बर जैन ए ने इस महोत्सवके छिये बहुत परिश्रम उठाया था । सेठ माणिकचंदनीन सांगळीसे सहानुभृति सुबक तार व सभापतिपद्से स्तीफा भेना। समान स्तीफा अखीकार किया और सेठनी जैसे इस समाकी रक्षा अब तक करते रहे हैं वैसे करते रहें ऐसी सर्व सभाने इच्छा प्रकट की।

बेलगांवके निकट सांगली एक राज है। यहां माघ सुदी ७ ता० ५ फर्वरीसे ११से माघ सुदी १२ सांगलीमें द० म० ता० १० फर्वरी तक बिम्ब प्रतिष्ठा व रथो-जैन सभा और त्सव था। तथा इसी अवसर पर दक्षिण सेटजी। महाराष्ट्र जैन समाका तेरहवां वार्षिक अधि-वंशन था। इस उत्सवमें हमारे प्रसिद्ध

दानवीर सेंड माणिचंद्जी पवारे थे। सभागति सेंठ हीराचंद्

अमीचंद शाह शोलापुर हुए थे। इसके साथ सेठ हीराचंद नेमचंदनी भी आए थे। पं० अर्जुनलालनी सेठी भी मौजूद थे। कुल २६ प्रस्ताव पास हुए इसमें मुख्य २ प्रस्ताव ये थे—

(१) बादशाह सातवे एडवर्डकी मृत्यु पर शोक, (२) बादशाह पंचम जोर्जके सिंहासनारूढ़ होने पर अभिनंदन, (३) जीवहिंगा
बन्द की जाय। कई रजवाड़ोंने हिंसा कम की है, बादशाह जार्ज
भी द्याका विस्तार करें। इस प्रस्तावको सेठ माणिकचंद्जीने
प्रस्तावित किया था (४) सभाके शिक्षण सम्बन्धी फंड वसूल करनेको
हेपुटेशन हुआ जिसमें सेठ माणिकचंद हीराचंदजी भी
समासद नियत हुए। सांगली सरकार श्रीमंत आपा साहबने विद्याको
ओर बहुत रुचि दिखलाई। सेंठ माणिकचंदजीने यहांके छात्रोंको
विद्यासम्पादनार्थ उद्यम करके एक दिगम्यर जैन योर्डिंग कायम करानेका प्रबन्ध कराया जिसमें वहांके निवासियोंने अपना
धमादा देना स्वीकार किया। प्रबन्धार्थ स्थानिक कमेटी बनाई
जिसके अध्यक्ष श्री बाबाजीराव शांतप्या औरबाड़े, मंत्री श्रीयुत बालपा
चंद्रपा धावते हुए। इस बोर्डिंगको खोलना जून मासमें निश्चय हुआ।

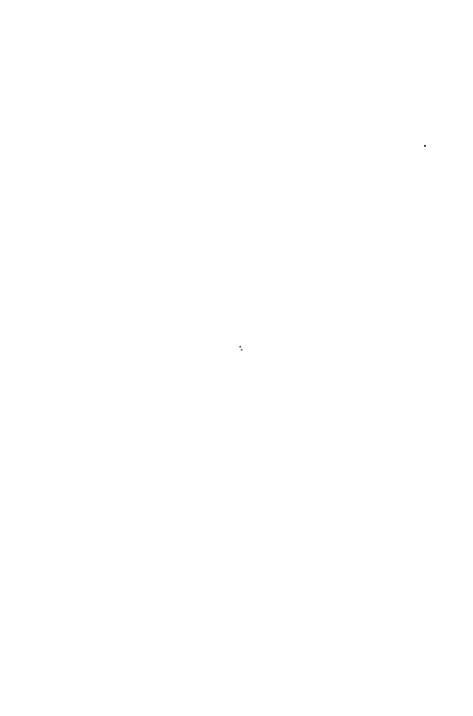
जनलपुर दि॰ जैन बोर्डिंगमें अपना द्रव्य सेठ माणिकचन्द्रजीकी
प्रेरणासे लगाकर सिंघई नारायणदासची फासिंघई नारायणदास- गुण वदी ८ को अपनी दो पितनयोंको
जीका परलोक । निःसन्तान छोड़ इस दारीरको त्याग गए।
इस समाचारसे सेठजीको कुछ द्योक हुआ
पर धर्मात्ना सेठजी इस बातमें सन्तोष मानते हुए जो थोड़े ही दिन



सेठजीके पुत्र चिरंजीव जीवनचंद.

J. V. P. Surat.

(देखो पृष्ठ ६३२)



पहले सेटनीकी मुलाकातसे उन्होंने २००००) बोर्डिंगका मकान बनाने व एक बंगला खर्च चलानेको अर्पण कर दिया था।

सेठ मःणिकचन्दनीके पत्रव्यवहारकी प्रेरणासे पंजाब दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव ता० २६ फर्वरी पंजाब दिगम्बर जैन ११को हुआ। सेटजीने ब्रह्मवारी शीतछ-बोर्डिंगका बार्षिको- प्रसादजीको भेज दिया था, आप अति दूरीके कारण नहीं जा सके। यह बोर्डिंग ६४) त्सव । मासिकके किराये पर एक मकानमें स्था-पित था। इसीके हातेमें दिनको ११ बजेसे लाला रामानंद रईम फीरोज़पुर शहरके समापतित्वमें वार्षिकोत्सव हुआ। रामलालनी मंत्रीने रिवोर्ट पड़ी, पीछे लाला कूड़ामल छा-त्रको एक चांदीक। तमगा इनाम दिया गया कि उसने १२२) बोर्डिंगके छिये एकत्र किये व महावीरसिंहको धर्मशास्त्र दिये गये क्योंकि उसने ९९) जमा किये थे। ब्र॰ शीतल-प्रसादजीने बोर्डिंगसे धर्मकी स्थिरता व चारित्रकी शद्धता होती है ऐसा कहकर दानकी प्रेरणा की तव उसो समय २०००) से अधिक चंदा हो गया । मंत्री रामलालनीने बोर्डिंग मकानके एक कमरेके छिये ५००) देनेका प्रण किया। दो दिन तक धार्मिक व्याख्यानोंका अच्छा आनन्द रहा । आम समामें अन्य-मतियोंने भी लाभ लिया । सेटजी जल्सेकी सफलता जानकर हिंबत दुए।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महा सभाका, जिसके सेठ माणिकचंद्रजी सभापित थे, १९वां वार्षिकोत्सव
भा० दि० जैन महा मुजफ्फरनगरमें रायसाह्य द्वारकासभा मुजफ्फर- प्रसाद्जी सब इंजीनियर कलकत्ताके
नगरमें। सभापितत्वमें सानन्द हुआ। तथा भारतजैन महामंडलका मी, जिसका पूर्व नाम
जैन यंग मेन्स एसोसिएशन था, वार्षिक जलसा बाबू जुगमिन्दरलाल
जैनी एम. ए. बैरिष्टरके सभापितत्वमें हुआ। सेठजी नहीं आसके।
श्रीमती मगनवाईजी, चंदाबाईजी, गंगाबाईजी आदि महिलाएँ परिवद्के लिये आई थीं। ब० शीतलप्रसादजी, व कुंबर दिग्विजयसिंहजी भी आए थे, जिनके ज्यास्वानोंका अच्छा प्रभाव पड़ा।
कुंवर दिग्विजयसिंहजी पहले क्षत्री ठाकुर आर्यसमाजके
अनुयायी थे पर पं प्रतूलाल इटावाकी संगतिसे जैन धर्मको श्रेष्ठ जान
पहले जैनी हुए। अब वे इह्यतारीकी ७ प्रतिमाक नियम पालते

हैं। अपने तीन पुत्र व स्त्री होते हुए भी घरसे स्नेह हटा दिया है। चैत्र सुदी २ ता. २ अप्रैल १९१२को महासभाके मंडपमें ही मारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परि-

महिला परिषद्का २ षदका, जो शिलरजीमें स्थापित हुई थी, रा:जिल्सा व मगन- दूसरा अधिनेशन बड़े प्रमावसे हुआ। ३००० बाईका उद्योग। स्त्री संख्या थी। शहरकी प्रतिष्ठित अजैन महिलाएं मी आई थी। श्रीमती चमेलीबाई

लाला अनितप्रसाद खज़ाञ्चीकी धर्मपत्नीने, जो बहुत उदार-चित्त हैं, समापतिका आसन ग्रहण किया था। जैसे

महासभाके जल्से होते हैं-एक प्रस्ताव करता है दूसरा समर्थन करता है इसी तरह यह परिषद भी हुई। प्रस्ताव नं० १ में नियमावली पास हुई। ता० ३ अप्रेलको दानका स्वरूप श्रीमती चंदाबाईने कहा जिससे प्रमुखा चमेळीबाईने २५०) सरस्वती भवन आरा व २५०) महिला परिषदके स्त्रीशिक्षा फंडमें दिये और स्त्रियोंने ६२६॥।≡)॥। मेट किये। ४ अप्रैलको करीब ६० पर-देशी वालिकाओंकी परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। पुस्तकें व द्स्तकारीकी चीनें श्राविकाश्रमकी बनी हुई दी गई। मुजप्करनगरकी कन्याशालाको ५०) मगनबाईनीने स्त्रीशिक्षा फंडसे दिये। फिर ८ अस्ताव और पास हुए निनमें मुख्य दो (१) श्रोमती जानकी बाई-जी पहले ईंडरकी कन्याशाला फिर आराकी शालामें अध्यापिका थी, धर्ममें बहुत दृढ़ व परोपकारिणी थीं, उनकी मृत्यु पर शोक तथा उनके स्मरणमें 'गृहस्य स्त्री धर्मपर' सर्वोत्तव छेल छिले उसे ९) ৩) ব ५) का इनाम दिया जाय, (२) श्रीमती मगनबाई एक मासिक पत्र हिन्दी छिपिमें निकार्छे । इसी प्रस्तावके अनुभार सेट माणिकचंदनीकी सम्मितिसे अलग पत्र न निकाल २ पेन जैनमित्रमें महिला परिषद्के ब्हाए गए, (३) अहमदावाद श्राविकाश्रमका लाभ सर्व हेर्वे, (४) स्त्री समाज देशकी बनी चीर्जे पहने व देशी कारी-गरीकी उत्तेनना देवें। इस जल्सेकी नियमित कार्रवाई देखकर और शांततासे सर्व कार्यका होना जानकर स्त्रियोंकी व खास कर मगनबाई-जीकी कार्यकुरालता पर सबको आश्चर्य होता था। इसके पहले श्रीमती मगनबाईं जी करहलके मेलेमें गई थी वहां ता० २४ मार्चिसे २९ तक रथोत्सव था। दो दिन स्त्रियोंको उपदेश करनेसे

बाईयोंने अपनी पुत्रियोंके बालविवाह न करनेका नियम लिया। तथा ९) मासिक चंदा कन्याशालाके लिये हुआ था।

सेठ माणिकचंद्जीको मगनबाईजी पुत्रके समान थीं। जबसे श्राविकाश्रम अहमदाबादमें खोला गया श्राविकाश्रमका तबसे बाईजीका बम्बईमें जाना कचिद् ही बम्बईमें आना। होता था इससे सेठजीको धार्मिक कार्मोमें सम्मति करनेका बिलकुल मौका न मिलता था। तथा पूर्व सम्बन्ध भी कुछ ऐसा था कि मगनबाईजीके विना बम्बईनिवास सेउजीको फीका लगता या तब आपने यही विचार किया कि श्राविकाश्रमको बम्बई ही में स्थापित किया जाय। एक त्रुटि अहमदाबादमें यह भी थी कि द्रव्यकी मदद भी नहीं होती थी। बम्बईमें परदेशी बहुत आते हैं इससे द्रव्यकी मदद भी हो सकेगी इत्यादि विचार कर सेठनीने अपने जुबळी बागंके बीचके बंगलेको, जिसका किराया अनुमान ८०) मासिकके आता था खाली कराया तथा कुछ कोटरियां उसके पीछे खाली कराईं और निश्चय कर लिया कि वैशास सुदी २ वीर सं० २४२७ अक्षय तृतीयाके दिन आश्रम बम्बर्डमें खोला नावें।

तारदेवके सेठ हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगमें छात्रोंके द्रीनार्थ एक कोठरीमें चैत्यालय था पर वम्बईमें नवीन मंदि- ट्रष्ट फंडमें मंदिरजीके लिये कुछ रकम निका-रकी प्रतिष्ठा। लनेका नियम था इससे कुछ हज़ार रुपये जमा होनेपर एक छोटासा मंदिर बोर्डिंगके हातेमें बनवाया तथा उसका शिखर बनानेको सेठ गुरुमुखराय

मुखानंदजीने ५००) से ऊपर रुपया दिया । मंदिर तैय्यार होनेपर उसकी प्रतिष्ठा श्रीयुत गनपति उपाध्यायने वैशाख बदी १४ ता० २७ अप्रैल ११से वैशाख सुदी ३ ता० १ मई तक की। पहला रथोत्सव पहले दिन दूसरा अंतिम दिनको हुआ । चैत्र बंदी १४ की रात्रिकी सभामें सेठ माणिकचन्दजीने यह प्रस्ताव मंजूर कराया कि जो कासार, पंचम, सेतवाल आदि बम्बईमें व्यापार व नौकरीके लिये आते हैं उनको मोजनका कष्ट रेहता है इससे एक जैन रसोई**घर खो**ळा जाय । वैशाल सुदी १ की सभामें श्रीयुत् गमपति उपाध्यायने श्री जयधवल महाधवल प्रन्थोंके लिखनेमें जो कष्ट पड़े थे उनका वर्णन किया तथा कहा कि अगमेरवाले सेठ नेमीचन्दजीने जयवरलादि प्रन्थोंकी एक प्रति हेनेको भट्टारकजीको १००००) देने कहे पर प्रन्थ न दिये गये । सेठ माणिकचंद और हीराचंद नेमचंदका ही प्रयत्न था जिशसे उनकी कनडी और हिन्दी भाझामें लिपि मेरे द्वारा हो सकी। सं० १२५३से मैंने नकल शुरू की नब तक पहले कनडी फिर बालबोध लिपि पूरी करके मैं यहां आया हूँ । एक राखान्त प्रन्थ ३००००) श्लोकॉका और नक्छ होनेके योग्य है।

अक्षयतृतीयाके सबेरे मंदिरजीकी प्रतिष्ठाका कार्य पूर्ण हुआ उस समय अच्छी उपन हुई ।

प्रतिष्ठाके पीछे ही सब स्त्री पुरुष पाप्त ही जुबली बागके बंगलेमें गए । वहां सेठ हीराचंद् बम्बईमें श्राविका- नेमचंद्जीके द्वारा आश्रमका मकान श्रमका स्थापन । विधि सहित खोला गया । रिपोर्ट सुनी गई व आश्रमके लामार्थ व्याख्यान हुए । अहमदा-

बादमें यह आश्रम आसीज सुदी ११ ता० २५ अक्टूबर १९०९ को स्थापित हुआ था। १॥ वर्ष तक वहां अपना काम निर्विध्न चलाकर यह बम्बई आया। अब यह बम्बईमें बहुत उन्नति पर है। श्राविका-ओंको धर्मका ज्ञान देनेमें शुरूसे अन तक श्रीमती ललिताबाई परिश्रमशील हैं। आश्रमकी ओरसे कई श्राविकाएं पूना कर्वेंके विधवाश्रममें उच शिक्षा हे रही हैं। एक बाई अहमदावाद ट्रेनिंग कॅं। लिनमें शिक्षिकाका कम सीख रही हैं। सेठ माणिकचंदजी दूसरे तीसरे दिन आश्रममें जाकर घंटा दो घंटा सेटजीकी श्राविकाश्रम सर्व देखते य व मगनबाईनीको सुप्रबन्धार्थ पर महती कृपा। सम्मित् देते व लेते थे। कुछ दिनोंमें आपने ७०) मासिक करीबके कई कभरे और खाली कराके आश्रमके सुपुर्द किये जिसमें छात्राएं खुव अच्छी हवादार जगहमें रहें तथा वहीं एक कोठरीमें वैत्यालय भी कर दिया कि नित्य धार्मिक कियाको दूर न जाना पड़े । कोई २ बाईएं नलका पानी नहीं पीती थीं उनके लिये एक कुआं भी खुद्वा दिया व बंगलेके आगे व बगलमें खूब वृक्षोंकी बहार व पानीका फंबारा चलने लगा जिससे श्राविकाओंको वृक्ष स्पर्शित सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त पवनका लाम हो । इस समय आश्रम इसी स्थानपर है । खेद है सेठजी

यकायक मृत्युवश हुए नहीं तो वे इसको भी चिरस्थाई कर नाते. जैसे उनकी आदत थी कि जो काम अपने हाथसे खोछना उसे सदाके छिये पक्का कर देना, जिसमें दीर्घकाछ रहकर वह काम अपना छाम बता सके। जिस दिन श्राविकाश्रम नम्नई आया उसी दिन हस्तनापुरमें एंडक पन्नालालनीके करकमलोंसे वह मुन्य ब्रह्मचर्याश्रम- ऋषम ब्रह्मचर्याश्रम भी खुला जिसके लिये का स्थापन। लाला गेंदनलालनीने अपनी १००) मासिककी नौकरी छोड़ी व जिसमें १०००) नकदके सिवाय अपना जीवन अर्पण किया व १ प्रत्रको भी दाखल कराया। लाला भगवानदीनजीने भी अपनी स्त्रीको त्यागकर केवल एक लोटे पुत्र और अपनी बहनके पुत्रको आश्रममें दाखल कराकर आश्रमके लिये अपना सर्वस्व दान किया। बाबा भागीरथजीने इसके लिये बहुत प्रयत्न किया। सेठजी इस बातको जानकर बहुत ही हिष्ठत बुए। शीतलप्रसादनी इस समय हस्तनापुरमें थे।

पाठकोंको यह बात माछूम ही है कि सेठनी प्रवास करनेमें बिछकुछ आछसी न थे। जिसदिन किसी भी धर्म कार्यको जाना होता था तुरत ही चछ देते थे। हरएक यात्राका खर्च अपने पाससे ही करते थे।

ताः १४ मई को आप सितारा गए। वहां जैनियों के १०० घरका सार जातिके हैं पर वहां सितारामें जैन मंदिर जिन मंदिर न होनेसे व जैन धर्म क्या है स्थापनमें सेठजीका ऐसा न जाननेसे ये छोग कालिका देवीके मंदि-प्रयत्न। र ही में जाते थे जब कि इनके जो सम्बन्धी कोल्हापुर और पूनामें हैं वे जिन मंदिरजी जाते हैं वे भी अपनेको जैन कहते हैं। सेठजीने मराठीमें उपदेश देकर जैन धर्मका ज्यवहारिक ज्ञान कराया व जिनेन्द्रविम्ब दर्शनका

महत्त्व बताया। तब छोगोंने प्रतिमाजीकी स्थापना होनेपर दर्शन करना कबूछ किया। सेठजीने कैत्यालयके लिये सुरत व अन्यत्रसे जिनबिम्ब भेजना स्वीकार किया। धन्य सेठजीका धर्म प्रेम व श्रद्धा!

जेष्ठ सुदी ५ अर्थात् श्रुत पंचमी वीर सं. २४२७की बहुत नामांकित हुई कि उस दिन ता० १ जून श्रुत पंचमीमें बेलगांव १९११को एक काम तो यह हुआ कि जिसकी दि जैन बोर्डिंगका कामनाको हृद्यमें रखते हुए आरा निशासी स्थापन व सेठजीका बाबू देवकुमारजी स्वर्गधाम पधारे थे अथीत ब्रह्मवारी नेमीसागर और बाबू कीरोड़ोचंद गमन । आराके इद्योगसे बहुतसे ताड़पत्रके ग्रंथ एकत्र करके बहे ठाठमें जैन सिद्धान्त भवनकी स्थापना हुई जिसमें ब॰ शीतल्प्रमाद्त्री भी शरीक हुए थे तथा सठजीने सहा-नुभूति प्रदर्शक तार भेना था । इसी दिन बेलगाममें श्रीयुत धर्मराव सूबेदारकं २००००) रु. के दानका कार्य अर्थात् ५० छात्रोंके लायक एक भाडेके मकानमें दिग्र नेन बोर्डिंगकी स्थापना-का जल्सा हुआ। हमारे सेटजी व अन्य आसपासके भाई पर्धारे थे। कुंमोत्सव होकर गाजेवाजेसे स्थानपर नाकर सरस्वती पूजन हुई। फिर सेठ हीराचंद नेमचंद शोलापुर मनापति नियत हुए। फिर ए० बी० छ्हे आदिके भाषण हुए। नियमावली व १७ मेम्बरोंकी कमेटी ठीक की गई। समापति ए॰ पी॰ चौगले वकील व मंत्री वालपा सुनपा मिरजी हुए । सुबेदार साहबने कहा कि बह रकम ट्रियोंके सुपुर्द की गई। १४०१) व्यान प्रति वर्ष आवेगा सो एक वर्षका मैं अभी देता हूं तथा फरनीचर वर्तन आदि अलगसे खरीद दिया गया है। सर्वने दातारको धन्यवाद दिया। सेठजी मानो बोर्डिंगके मक्त थे। इस बोर्डिंगके खुलनेसे आपको बहुत ही आनन्द हुआ।

सांगलीके गत उत्तवके समय सांगलीके भाईयोंने अपनी

पंचायती धर्मा देकी रकमसे दिगम्बर जैन सांगळी दिगम्बरजैन बोर्डिंग स्थापनका विचार परमोपकारी सेठ बोर्डिंगका स्थापन माणिकचन्द्रजीके उपदेशमें किया था, उसीके व सेंडजीका १०१) स्थापनका महूर्त जेंड सुदी १२ वीर सं० का दान । २४३७ ता० ८ जून १९११को प्रात:काल बड़े ठाठवाटसे परमोपकारी दानवीर **जैनक्कलभूषण सेठ माणकचंदजी जे० पी०** के द्वारा हुआ । कुंम स्थापन व सरस्वती पृत्तनके बाद हो सेठनीकी प्रमुखतामें समा हुई । सेठजीके उपकारमें श्रीयुन वालचंदजीने विस्तार पूर्वक विवेचन किया कि उन्होंके प्रतापसे यहां के घंगीदेकी रकम सार्थक हुई । फिर राज्यमें प्रतिष्ठित न्यायाधीका रावबहादुर पाट-करने अनैन होने पर भी कहा कि " कितने समयसे नैनी छोग विद्यामें बहुत पीछे थे परंतु अब सेठनीके महान प्रयाससे शिक्षाके साधन बनते जाते हैं इससे मैं सेठजीका अति आभार मानता हं "। फिर सभापति सेठजीने कहा कि " आपने जो आज मुझे मान दिया हैं उसके लिये में योग्य नहीं हूं कारणिक अपनी मनुष्य जातिका यह कर्तन्य ही है कि दूसरोंका उपकार करना ही चाहिये। भौर उसीके अनुसार मैं केवल अपना कर्तव्य बनाता हूं इसमें मैं

कुछ विशेष नहीं करता हूं। "

फिर बोर्डिंगका मकान सेठनीने खोछा। ८ छात्रोंको रत्नकरंड श्रावकाचारका पाठ दिया गया। सेठनीने १०१)का दान दिया उसी समय अनुमान ९००) रुपयेकी आमदनी हो गई।

सेठजीको इस नवीन बोर्डिंगके स्थापनसे और भी आनन्द हुआ। वास्तवमें आत्म समाधि नव परमानन्द प्रदायक है तब उनके मुकावछेमें शुमोपयोगमें चित्तका आल्हाद होना भी आनन्ददायक और पुण्यवर्धक है। जो केवछ इन्द्रियोंके विषयोंसे मुख मानते हैं उन्हें इन शुभ कार्योंसे पैदा होनेवाछे स्वामाविक आनन्दोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिये। जब कि विषय मुखोंमें आत्मिक व शारी-रिक शक्तिका क्षीण करना है तब इस स्वामाविक आनन्दमें दोनों शक्तियोंको बढ़ाना है।

सेठजी तीथेंकि प्रधारके भी अनन्य भक्त थे। आप श्री गिरनारजीके प्रधारमें छगे हुए थे। श्रीशिखरजी
श्री गिरनार क्षेत्रके पर सेठ हुकमचंदजीके उद्योगसे प्रकन्धकर्ताः
सुधारके छिये पर- बंड़ी मन्नाछाछजीने नियमावछी व योग्य
तापगढ गमन। रीतिसे कमेटी करना व योग्य प्रकन्ध करना
स्वीकार कर छिया था, परन्तु उसके
अनुसार कोई कार्रवाई जब नहीं हुई तब ता० ५-६-१०
को तीर्थक्षेत्र कमेटीने अपने समासदोंसे प्रस्ताव पास करा छिया
कि अदाछती कार्रवाई की जावे तौ भी पत्र व्यवहार
होता रहा कि किसी तरह समझ जावें चूंकि अदाछतमें बहुत
परेशानी व खर्च पड़ता है।सेठजीन एक दफे यही विचारा कि हम
स्वयं परतापगढ़ जाकर निकटारा करें, यदि काम सीधा न हो तब

अदालतसे निक्टा जाय। अतएव आप मूलचन्द किसनदास कापड़िया सम्पादक "दिगम्बर जैन " को छेकर रतलाम दोपहरको ताः ३० जून ११को पहुंचे।यहां सेठजी बोर्डिंग खोलना चाहते थे सो चूमकर मकानोंको तलाश किया। फिर लौटकर आनेका निश्चय कर आप सांझको ही चल कर रात्रिको इन्दौर पहुंचे। सेठ हुकमचंदनीने मले प्रकार स्वागत किया। ताः ? जुलाईको ६ मंदि-रोंके दर्शन करके सेठ हुकपचंद बोर्डिंग देखी । १७ छात्र माष्टर द्यीवसिंह सोंधियाकी सम्हालमें थे। इस छात्राश्रममें प्रति छात्रको ६) मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी। हरएक अपने हाथसे रसोई करता था। रात्रिको १०की गाड़ीसे सेठ हुकमचंदजी और लाला हजारीलालजीको हेकर ताः २ जुलाईको सबेरे मंदसोर पहुंचे। वहां रु. १५०००) खर्च कर जो मनीराम गोरधनवाळेने नई धर्मशाला बनवाई थी उसमें ठहरे । यहां अच्छा स्वागत हुआ । यहांसे मंदसोरके तीन मुख्य माईयोंको छेकर २० मीज परतापगढ़ दोपहर को १ बजे पहुंचे। सेठ कस्तूरचंद तलेटी के यहां ठहरे। बंडी मनाठाठजी आदिसे मिले। रात्रिको ८ बजे कमेटी हुई जिसमें यहांके खास २ भाई बुलाए गए। वादविवादके पीछे जो नियमावली छपी थी उसमें नियम ठीक किये गये और वह नियमावली छपानेके लिये मूलचन्दजीको सौंप दी गई। इस नियमावलीके नवीन कार्यकर्ताओंने प्रबन्ध करना स्वीकार किया । सभापति सेठ गुमानजी और बंडी मन्नालालजी, कोषाध्यक्ष और उपसमापित सेठ करतूरचंद तलहरी, मंत्री शाह कपूरचंद अमृतलाल खासगीवाले व उपमंत्री शाह गुमानजी जवाहरलाल हुए । नियमावलीमें नियम हुआ कि १०००)

कोषाध्यक्ष रक्कें वाकी सेठ हुकमचन्द्जीके पास भेजें। वे अपने, कोषाध्यक्ष और सेठ नेमीचंदजी, ऐसे तीन नामोंसे योग्य स्थानपर जमा करावें । हिसाब प्रतिवर्ष प्रगट करना व कमेटीके दफ्तरमें भेजना निश्चित हुआ । उपमंत्रीको आज्ञा की गई कि एक मासके भीतर शिलक व हिसान कस्तूरचन्दजीके सुपुर्द किया जाय। बंडी मन्नालाल-ने भी स्वीकार किया।

यह सब बातें रात्रि ८ से २ बजे तक तय हुई । फिर ३॥ वजे तक गिरनार तीर्थके एक मकानका झगड़ा सुलझानेमें सेठजी लगे, इतनेमें सेठ हुकपचंदजी तांगे र बैठ मंदसोर आ इन्दौर रवाना हो आए । सेंडजीने दूमरे दिन मंदिरोंके द्शेन कर रात्रिको नवीन मंदिरमें समा की । १००० उपस्थिति थी । सभाने सेटजीको सभापति नियत किया। मूलचंदजीनं 'अपनी स्थिति और उन्नतिके उपायों<sup>1</sup>पर अनुमान १० वजे तक भाषण दिवा । फिर् छरीति निवारणके लिये अग्रगामी व उद्योगी सेठनीने अपने रात्रिके जागरणकी कुछ परवाह न करके **वीसा हुंमडुकी** पंचायत जोड़ी और इस विषयका छिखित प्रस्ताव करानकी वेष्टा की कि १० वर्षसे पहले कन्याकी सगाई नहीं करनी । उस समय सफलता न हुई, आगे प्रतिज्ञा करेंगे ऐसा कबूल किया। ता ४ को सबेरे ही चलकर मंद्सीर होते हुए शामको ५ वजे रतलाम आए।

रतलाममें रात्रिको दीवानसाहबसे मिलकर बोर्डिंग खोलनेकी नात व ही । दीवान साहनने मदद करना रतलाम बोर्डिंगके स्वीकार किया । ता. ५ जुलाईको दोपरह लिये प्रबन्ध । तक मकान तलाश किये । शामको महाराज सर सज्जनसिंहजी बहादृरंजीसे

मिले। रानासाहबने १ घंटा वात की व बोर्डिंग खोलना जानकर सेठनीको घन्यवाद दिया तथा बोर्डिंगके लिये ज़मीन मुफा व और भी मदद देनी कबूल की। फिर सूरत निवासी यहांके सर न्यायाधीश मि. मगनलाल आत्माराम कानीसे मिले। इस दिन घूमकर बांदनीचौकमें एक मकान पसन्द किया और आगःमी आसौनमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय किया। यहांके हाईस्कूलके हेडमास्टर मि. कान्तीलाल के. नानावटी एम. ए. से मिले। हेडमाएर साहबने लात्रोंको फी दाखल करनेकी इच्छा दर्शाई। यहां सेट गंगाराम गुलाबचंदने बहुत मदद दी।

शामको चलकर ८ वने रात्रिको दाहोद आए। ७ जुला-ईको सबेरे ग जे वाजेसे अष्टान्हिकाकी पूजन हुई। १० से १२ तक समा हुई। मूलचँदजीने उन्नति पर भाषण दिया। पाटशाला जो बंद हो गई थी चाल करने, समा स्थापित करने आदि पर कहा। सेठनीने उपदेश देकर लगभग ४० दशाहूमड़ भाई योंके हस्ताक्षर एक प्रतिज्ञापत्र पर लिये कि हम कन्याकी सगाई १० चर्षसे कम में न करेंग, औरोंसे कराना स्वीकार किया। यहांसे रात्रिको चलकर सेठनी ता. ८ जुलाई १९११को बम्बई आए।

सेठ माणिकचंदनी जैसे प्रत्येक प्रांतमें बोर्डिंग स्थापनमें लीत थे वैसे ही उनकी एक विद्वान् सत्पुत्रके समान मगनबाईजीके अस- परम यशस्विनी मगनबाई जी प्रति प्रान्तमें रसे मरादाबादमें श्राविकाश्रम स्थापित कराना चाहती थीं। अम। मुज़फ्फरनगरमें श्रीमती मगनबाई और चंदाबाई जी आराने (जो प्रसिद्ध बाबू देवकुमारके छोटे भाई धर्म कुमारकी विधवा स्नी वैष्णव कुछमें जन्म छेने पर भी जैन धर्मके मर्मसे भछे प्रकार विज्ञ हैं ) श्रीमती गंगादेवीको आश्रमके छिये दृढ़ किया व चमेलीबाई देहरा-दूनसे मिलकर मासिक चंदा करा दिया । मुरादाबादकी स्त्रियोंने भी सहायता करके कुछ चंदा ५०) मासिकका हो गया । तब गंगादेवीन आश्रमका महूर्त आषाढ़ चदी ११ वीर सं० २४३७ को छोहागड़वाले मंदिरकी धर्मशालामें करके स्वयं पढ़ाना व रहना स्वीकार किया । ८ पुरुषोंकी निरीक्षक व ९ स्त्रियोंकी कार्य-कारिणी कमेटी बनी । यह आश्रम अब तक कायम है । इसमें परदेशी सात विश्वाएं हैं । श्र यहांसे निकलकर फीरोजपुर, अम्बाला, रोहतक आदि स्थानों में काम कर रही हैं । श्रीमती गंगादेवी मुकुन्दरामकी पुत्री हैं जो जैनजातिमें कालेन कायम करने लिये सबसे पहले पं० चुनीलालके साथ दौरा करने गए ये व अच्छे विद्वान थे । इनके पुत्र लाला संतलाल मुरादाबादके रईस हैं ।

सेठ माणिक वं अनि षोडराकारण भावना व उसके आसपासके दिन सुखशांतिसे बिताए तौ भी शिखरजी

दिन सुखशातिसे बिताए तो भी शिखरजी

रतलाम बोर्डिङ्गका पर्वतकी चिंता मनमें सदा ही बनी रहती थी।

रतलाम नरेश भादों बाद आपने रतलाम बोर्डिङ्ग खोलनेके

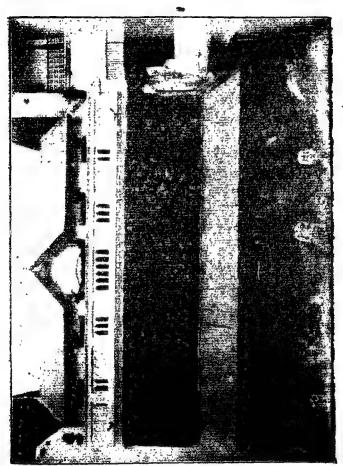
द्वारा स्थापन । लिये विचार किया । वागड़ प्रान्तमें शिक्षाका
बहुत ही अमाव है इस बातको आपने पं०

कस्तू ग्वंर उपदेशक द्वारा सं० १९६३ में अच्छी तरह जान छिया था । उनके दौरेकी रिपोर्टसे माळूम हुआ था कि ४२ . ग्रामों में केवल एक ग्राममें ही जैन पाठशाला है तथा ५७०० जैनियों में सिर्फ १५० पुरुष और ७ स्त्रियां ही स्वाघ्याय करनेके योग्य हैं। बस आपने वागड़ प्रान्तको सुशिक्षित बनानेके लिये वागड़के नाके रतलाम नगरमें बोर्डिंग खोलनेका निश्चय करके उसमें नियम रक्खा कि ८ वर्षसे उत्पक्ते छड़के वागड़ व उसके आसपासके मुख्यतासे इमड़ भरती हों। मिती आश्विन सुदी १२ गुरुवार ता० ५ अक्टूबर १९११ को मृहूर्त नियत करके बाहरसे बहुत छोर्गोको बुछाया। मंदसोर, दाहौद, उज्जैन, इन्दौर आदि स्थानोंके माई आए। आमोद वाले सेठ हरजीवन रायचंदको आपने खास तौरसे आनेको लिखा सो सेंडजीसे ट्रेनमें मिल गये, एक साथ रतलाम पहुंचे। सभाके लिये एक बड़ा मंडप बांधा गया था। सबेरे ही १००० स्त्री पुरुष हाजिर हो गए थे। पहले कुंभ स्थान और सरस्वती पूनन हुई उस रूमय प्रभावनामें नवीन सामायिकपाठ बांटा गया था । दीवान साहब आदि राज्यकारवारी आनेके बाद ठीक ९ बजे रतलाम नरेश मोटरमें आएा तुर्त कार्रवाई शुरू हुई। मास्टर दीपचंद उपदेशकने मंगलाचरण किया । फिर सेठजीने एक सुन्दर मानपत्र बड़े सन्मानसे भेट किया जिसको पंडित कस्तूरचंद उपदेशक मालवा प्रान्तिक सभाने पढ़कर सुनाया ।

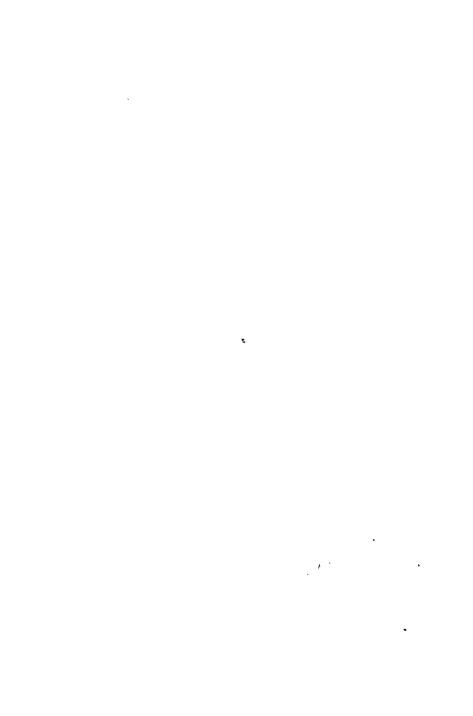
सेठ मूलचंन्द किसनदासजी कापड़ियाने बोर्डिक्नका हेतु व नियमावली बताई और कहा कि इस बोर्डिंग २५०००) नकद् व के निमित्त सेठ माणकचन्दजीके कुटुम्बर्योंके १२५) मासिककी तरकसे २५०००) नकद व करीब १२५) मिलकतका दान। मासिककी मिलकत प्रदान की जाती है। सेठ हरजी वन रायचन्द्र व सेठ कस्तूरचन्द्रके

भाषण हुए, इन सबका उत्तर देते हुए महाराजने अपने व्याख्यानमें बहुत उपयोगी बातें कहीं ''अर्थात् बचपनकी उम्र गीली मिट्टी या हरी उकड़ीके समान होती है। गीछी मिट्टीसे जैसी मूर्ति चाहो वैसी बना सकते हैं। हरी छकड़ी जिधर चाहो मोड़ सक्ते हो। छु॰ छुआ-चरणी होना चाहिये। शारिरीक उन्नति भी करानी चाहिये। जिस लड़केका शरीर अच्छा और निरोग है उसका दिमाग भी तन्दुरस्त होना चाहिये और वह काम भी अच्छा कर सक्ता है। तव दीवान साहबने प्रगट किया कि राजा साहब १५०) वार्षिक आश्रम जब तक कायम रहे तब तक देनेकी कृपा दशीते हैं । फिर महाराज साहबने बोर्डिंगका मकान खोला तथा फिरकर देखा । फिर आसन ग्रहण करनेपर सेठ माणिकचन्द्नीने ननराना दिया और राजा साहबका बहुत उपवार माना । पुष्पादिके सन्मानके पीछे १०॥ बजे समाप्त हुआ । दिनको उपदेशक समा हुई । आसौन मुदी १४को १० महाशयोंकी स्थानीय प्रबन्धकारिणी कमेटी नियत हुई। सभापति सेठ कस्तूरचन्द् व सेकेटरी मि० कांतीलाल नाणावटी एम. ए. हुए।

रतलामका काम समाप्त करके सर्व मंडली अहमदावाद आई।
और आसौज सुदी १९ को सबेरे मि०
अहमदावाद बोर्डिंग- जीवनलाल ब्रजराय देशाई बैरिण्टरके समार्क्त का वार्षिकोत्सव। पतित्वमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूलका नवमा वार्षिकोत्सव हुआ। लल्लुमाई लक्ष्मीचंद मंत्रीने रिपार्ट सुनाई। फिर मूलचंद किसनदासजीने परीख लल्लुमाई प्रेमानन्द एल. सी. ई. को मानपत्र



केर पालिक बर्ग पा तर्ना दिंग् केन मारित हाउस-तिग्रित



अर्पग करनेकी दरस्वासा की और कहा कि यह ७ वर्षसे इस छात्रा-श्रमके मंत्री रहे हैं। मेगाड़ा कौममें यह माननीय ओहदेदार हैं। हालमें यह नर्मनीके प्रशाससे छौट कर आए हैं नहा यह व्यापारके छिये गए थे। परीख छल्लूभाई आने भाई मन्तूलालके साथ ता. १३ अगस्त १९०८ शनिवारको बम्बईसे इनिस

परीख लल्लूभाई नामके जहाज पर बेठे। उनमें २९ और भी भेमानंदका हिन्दुस्तानी थे। ये अपने साथ पृरी, मिउाई, मानपत्र। और फलादि ले गए थे। उन ही को रास्तमें खाते थे। यह जहाज अरेविशन समुद्रमें

चलता हुना बुग्वार तक पानी ही पानीका दिखाव करता था। झों-कोंसे मस्तक फि'ता था व मोजनकी रुचि कम होती थी। ५ दिन बाद गुरुवारकी सांझको ४ को जहाज़ एडन शहरके पास पहुँचा। यहां २ घटे ठहरा। फिर रेड सीमं जाने लगा। यहां हवा अच्छी थी। से मशरको १० बजे सवेंर जहान

विलायतकी यात्रा। मुएज़की नहरमें चलने लगा। बंबईसे एडन १६०० मील व एडनसे मुएज़ १४००

मील था। सुएज़से पोर्ट सेड तक १०० मीलकी नहर खोदी हुई है। सुएज़ एक गांव आफ्रिकाके इनिप्त राज्यके आधीन है। देश ऊनड़ मालूम होता था। नहरके दोनों तरफ रेतीके समूह देख पड़ते थे। यहां ३ घंटे ठहर कर जहाज़ २॥ बने पोर्टसोड़में पहुंचा यहां १२ घंटे तक स्टीमर ठहरा। यह पोर्टसेड इनिप्त राज्यके आधीन है। अरबोंकी वस्ती है जो मांसाहारी हैं। शहर कुछ शोभनीक है। खबरोंकी ट्रामगाड़ी है। खियां परदा करती हैं।

बुरका पहनती हैं। ता० २३-८-१० मंगलवारकी सांझको ४ बने जहान सुएज नहरके उत्तर मुखको छोड़ कर भूमध्य-सागरमें चलने लगा। ता॰ २५-८-१० के दोपहरको मसीनाकी खाड़ीमें पहुंचा। यहां तरपर ऐमा मालृम होता था कि पहले कोई मोटा शहर होगा। आगे चलकर एटनाका ज्वालामुखी पर्वत दीख़ना था जहांसे धुआं व पदार्थ निकल कर एक तरफ गिरते थे। ता० २८-८-१० को स्टीमर फ्रेचोंके आधीन मार्सेन्स बंदरमें पहुंचा । यह शहर व्यापारी है । कारखान हैं । फेंच भाषा है, फ्रान्क सिक्केका चल्न है जो ॥≈) का होता है। यहां पर जहाज़ से उतर रेखके द्वारा ३० वंटे चलकर दुसरे दिन पेरिस आए । राम्ते नें हरेएक गांवमें गिरनाघर देख पड़ता था। खेतोंमें वयारियां कायदंसे थीं। टंडी पड़ती थी । रेखवेमें सफाई नहीं; चेरी व जैव काटे जानेका भय था । पेरिम एक सुन्दर नगर है। ३० लाखकी वस्ती है। मकानोंकी कतारें सीधी थीं। बड़े रास्ते पर ४ खनसे नीचेके मकान नहीं हैं। शहरमें ज़मी के नीवे मोटरोपोलीटन नामकी विजलीकी रेलवे चलती है। हरए पांचर मिनटमें आती है। ब्यापारी श-हर है। ये छोग अपने एक भहचनिवासी देशी मित्रके यहां जी-मते व होटलमें ठहरे थे। यहां हरएक बालक बालिकाको ६ वर्षसे १४ वर्ष तक पाना ही का है। नीच जातिकी स्त्रियां भी पदना छिखा भारती हैं। फूल बेचनेवाली, व गाड़ीवाला, व कू-ड़ेको दोनेवाला भी समाचारपत्र वांचता है। यहां हरए ह पुरुषको १९ या २० वर्षकी उन्नके पीछे २ वर्ष तक लशकरी खातेमें

आनरेरी नौकरी करनी पड़ती है। ये लोग २ दिन पेरिसमें रहे। फिर ३० घंटेरेलमें चलकर जर्मनीके **हेम्बर्ग** नगरमें ता० १-९-१०को सबेरे पहुंचे। यहांके छोग प्रेमी व उद्यमी ये। यह जर्मनीका द्वितीय भारी नगर व दुनियांके ज्यापारी नगरोंमें चौथे नम्बरपर है। यहां व्यापार बहुत भारी है। रंग, व कपड़ोंके बड़े २ कारख ने हैं। यहां एक सचैं ज ऑफिसमें ?॥। बजे दिनसे २॥ तकमें ७००० ज्याप।री और दलाल एक होकर सौदा कर लेते हैं। रोप काम टेलीफोन और पत्रसे होता है। दारदी बहुत है। ॥) आनेवाला मार्क सिका चलता है। यहांक लोग विवेकी व साफ मनके हैं। ९ लाखकी वस्ती है। कुउ शौधीन भी हैं। अरहरकी दाल विना सब वस्तुएं दूव, शाक आदि मुम्बईके सनान भिलता है। यी वैसा सरा नहीं भिलता है। ठंडीके सबब हरएक घरमें अभिकी अंगीठी जलती है या विमलीसे हवा गर्म की जाती है। ये लोग व्यापारके लिये गए थे सो वहां १ मकान भाड़े लेकर दूकान खोल दो । कुछ दिन व्यापार किया, पर योग्य लाभ न देखकर लौट आये थे।

बोर्डिंगकी तरफसे ठल्लूमाई प्रेमानन्दको प्रमुखके हाथसे मानपत्र अर्थण किया गया। इसका जवाब देते हुए परीख ठल्लू-भाईने कहा कि " मैं इस मानके लायक नहीं हूं पर इस मान-के योग्य सेठ माणिक चंदजी हैं, जिनकी सूचना और सलाहसे मैं कोई भी सेवा बना सका हूं। प्रमुखने अपने भाषणमें कहा कि " विद्यार्थियोंको नौकरीकी आशा न रखके स्वतंत्र व्यापारके योग्य हों ऐसी शिक्षा लेनी योग्य है। दोपहरकी सभामें माता स्वपाबाई- को धर्मशाला बांधनेके लिये घन्यवाद दिया गया । मास्टर दीप-चन्दनीके उपदेशसे चैत्यालयमें विद्यार्थियोंने हररोज अष्ट द्रव्यसे पूजनका नियम लिया व ५ वर्ष तक पूजाके द्रव्यका खर्च अहमदा-बादके महासुखभाई दामोदरदासने देना स्वीकार किया।

श्रीमती मगनबाईजी भी अपने पिताके समान अपने वचनोंकी पावन्दी व वर्तव्य पालनमें इह हैं। इसी इस्ताबकी पाबन्दी। सुटेंबके कारण अपने मुज़क्फरनगरमें होने-वाली महिला परियदकी तरफसे २ पेन ''जैनमित्र'' में वीर संबत् २४३८ के प्रारंभये बढ़वा दिये और उसमें स्त्रियोंके लेख स्त्रियोगी प्रकट होने लंगे।

सेठ माणिकचंद्रजीको सेठ नाथारंगजीके कुटुम्बके एक होनहार परोक्तारी रत्न बा उचंद पानाचंद्रका एक समाजनेत्री होन- वियोग मिती आसौज वदी १९ सं १९६७ हार रत्नका के दिन २७ वर्षकी आयुमें ही सुनकर वियोग। चित्तको बहुत उदासीनता हुई। दहीगांव क्षेत्रमें वीसाह्रमड़ सभा व महतीसागर उद्योतनी सभा सं० १९६९ में स्थापित कर उसके मंत्रीपनका काम बहुत योग्यतासे किया था। सेठजी इसीके उत्साहके कारण दो दफे दहीगांव गए व शिखरजीमें जब पहाड़पर छाट साहब आए ये तब भी आप सेठजीके साथ गए थे। सेठजीके इस उपाय पर कि १० वर्षसे कमकी कन्याकी सगाई कोई न करे, आपने बहुतसे वीसा हूमड़ोंके दस्तखत छिये ये व दक्षिणके वीसा हूमड़ोंकी

डाइरेक्टरी तैयार की थी। धर्मशिक्षाके असरसे मरते समय १००००) शोजापुरमें बोर्डिंगकी इमारत ११५००) का बनाने व १०००) जेनियोंमें ज्ञान वृद्धि व दान। ५००) बम्बई प्रान्तके गरीब अनाय किशानोंके लिये दान किया और शांतिसे

णमोकारमंत्र जपने हुए प्राण छोड़ा । वास्तवमें यह दानवीरता दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ही संमर्गसे प्रादुर्भूत हुई थी ।

मिती कार्तिक सुदी १४ वीर सं० २४३८ ता० ६ नवस्वर १९११ को श्रीमती मगनवाई जीते श्राविका-मुम्बई श्राविकाश्रम- श्रमका वार्षिकोत्सव गोंडलकी युवराज्ञी श्री का वार्षिकोत्मव। राजकुंवरबाई के सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ किया था। लिखताबाई जीने रिपोर्ट मुनाई। आश्रमकी श्राविकाओंने पद व मजन, स्होक कहे। इनाम बांटा गया। प्रमुखाने कहा—" द्या धर्मके कारण जैन धर्म प्रसिद्ध है इससे वह स्त्रियों व विशेषकर विध्वाओं के दुःखोंकी तरफ दुर्लक्ष

रक्खेगा यह बात संभा नहीं है। उनको शिक्षा देना यही उनके

साथ दया करना है। "

मिती कार्तिक सुदी १४ को ही काशी स्याद्वाद महाविद्यालय-का वार्षिकोत्व नेननातिभूषण डिप्टी स्याद्वाद महाविद्याल- चम्पतरा यजीके सभापतित्वमें बड़े समा-यका वार्षिकोत्सव रोहके साथ हुआ। उसमें दानवीर जैन-व सेठजीका चित्र कुलभूषण सेठ माणिकचंद हीरा-उद्घाटन। चंद जे. पी. का अति मनोहर विश्वाल चित्रपटका उद्घाटनमहोत्सव उक्त सभापति- जीने किया उस समम आपने कहा:---

"नैन जातिमें लोग सिंघई, सवाई सिंघई, श्रीमन्त आदिकी पद-वियां पाने के लिये केवल स्थयात्रा और जातिको जिमाने में लाखों रुपया खर्च किया करते थे और अब भी करते हैं। जिससे वास्तविक अज्ञान्नांधकारको मेटनेवाली प्रभावना नहीं हो सकती है। घ्रम्य है जाति शिरोमणि सेठ माणकचंद्रजीको कि जिसने विद्याकी बृद्धिमें छह लाखके अनुमान द्रव्य खर्चकर चिरकालके लिये ज्ञान बृद्धिका पथ स्थापित कर दिया है। ऐसे शिरोमणिका सन्मान यह जाति करनेसे असमर्थ है। इस विद्यालयोग स्थापकों और पोपणकर्ताओं आप मुख्य हैं। इसलिये ऐसे महानुभावका चित्र विद्यालयके छात्रोको उदाहरण बतलानेके लिये अत्यन्त आवस्यक है। '

सेठजीन कई वर्ष पहलेसे उपदेशकोंकी नरूरत देखकर उप-देशकीय परीक्षाका पठनकम व नियम ठीक सेठजीका उदाहरण करके उपदेशक भंडार महासभाके मंत्री वाबू व धर्मप्रचारका सूरजभानके सुपुर्द किया था पर उसमें कोई गाढ़ प्रेम। भी कार्य हुआ न जानकर आपने स्वयं नो-टिस निक्तल्याकर ब्रह्मचारी शीतल्प्रसादजीके

द्वारा वीर सं. २४३७मं परीक्षा लिनाई । मध्यमामें कुंवर दिग्वि-जयसिंहजीने परीक्षा देकर २२) पारितोषिकके पाए । जवन्यमें हीराचंद सखाराम कोठारी आलंद और पीताम्बरदास बांसाने उत्ती-णीता प्राप्त की । प्रथमको १८) तथा द्वितीयको १०) इनामके मिले । इन तीनोंसे ही धर्मोपदेशका अच्छा उपकार हो रहा है । पीताम्बरदासजी बम्बई प्रान्तिक समाके उपदेशक हैं और समाधान-कारक कार्य कर रहे हैं । अब यह परीक्षा बंद है । यदि "पारि- तोषिककी उत्तेजना देकर यह परीक्षा जारी रक्खी जावे तो जैनि-योंमें जो उपदेशकोंकी भारी कमी हो रही है सो दूर होजावे।

भारतमें विलायतके बादशाहोंमें सबसे पहले ही आगमन महाराज पंचम जार्जका ता. २ दिसम्बर

बाद्शाह जार्जका १९११को हुआ तथा ता. १२ दिसम्बरको भारत आगमन व दिहलीमं एक बड़ा स्मरणीय द्वीर हुआ था। बम्बडमें सभा। उसमें महाराजनं भारतीयोंके लिये ये आनन्द वचन भी कहे कि " हमार बड़ोंन

तुम्हारे हकोंको कायम रम्बने तथा तुम्हारी मलाई व सुख शांतिके लिये जो विस्वासपात्र ववन दिये हैं उन्हींको फिरसे ताजा कर-नेका अवसर मुझे आज मिला है, उसके लिये मैं अपना हर्ष प्रकट करता हूं।" दरवारमें बहुतसे जैनी भाई गए थे, पर हमारे सेठजी नहीं जासके थे। आपने इसी ता. १२ की शामको दूसरे भोई-वांड़के जिन मंदिरजीमें लाला छज्जूमल अलीगढ़ निवासीके सभाप-तित्वमें सभा की और महाराजको सुख शांति रहे ऐसा तार भिजवाया। संबरे यहां व चौपाटीके जिन मंदिरजीमें श्री जिनेन्द्र देवकी पूजा की गई व राज दम्यतिके कल्याणकी भावना भाई गई। इसी दिन भूखोंको अन्न भी बांटा गया।

श्री सम्मेदशिखरजी पर्वतकी रक्षाके लिये जो पट्टा दिगम्ब-रियोंको हुआ था उसको रह होनेका हुकम पर्वतरक्षार्थ सेठजी वाईसरायका जबसे आया था तबसे उसकी कलकत्तेमें। एक भारी चिंता सेठजीके चित्तमें थी। कलक त्तेमें बाबू धन्नूलाल अटार्नी और सेठ परमे- ष्ठीदासनीको प्रेरणा करके आप उद्योग कराते रहे। इन लोगोंने बंगाल सर्कारसे लिखापढ़ी की तथा ता. २८-दिसम्बर १९.११के दिन कलकत्तेमें मुख्य २ भाईयोंकी एक कमेटी नियत की। सेठजी सेठ बालचंद रामचंद और बालचन्द्र नेमचन्द्र शोलापुरवालोंके साथ कलकत्ते पहुंचे और ता. २८को विचार किया गया। बाबू धन्त्र-लालने मरोमा दिया कि बंगाल सर्कारसे बातचीत हो रही है, आप चिंता न करें। सेठजी यहां २ दिन ठहरे और खंताम्बरी भाईयोंमे मिलापकी भी चेष्ठा की परंतु कोई मफलता न हुई। ता. २०की रात्रिको कि जब महाराज पंचम जार्ज और महारानी मेरी कलकत्ते पथारे थे, नए दि० जैन मंदिरमें सेठ बालचंद रामचंदके सभापतित्वमें सभा हुई। सेठजीने हरीभाई देवकरणके घरानेकी बहुत प्रशंक्षा की। इस सभामें बादशाहकी सुख शांतिका प्रस्ताव पास हुआ। ब्रह्मचारी शीतलप्रमादजीनं " जैन धमकी महिमा" पर व्याख्यान दिया।

इस वर्ष यद्यपि सेठनी आवश्यक कार्यवश बाहर नाते थे पर

पहलेकी अपेक्षा शारीरकी स्थिति बहुत सेठजीके शरीरकी निर्वल हो गई थी जिससे आप बहुधा घंटा

स्थिति व रुचि । दो दो घंटा सवेरे मंदिरनीसे आकर कौचपर हेट जाते थे व रात्रिको भी दीवानखानेमें

थोड़ा बैठकर लेट जाया करते थे। परंतु अपने नित्यकर्मको छोड़ा नहीं या। चौपाटी चैत्यालयमें प्रक्षाल पूजा व स्वाध्याय करना तथा हीराबाग धर्मशाला व दूकानपर जाना बिलकुल बंद नहीं किया था।

आपको अपने आघीन घर्मकार्योंके सम्हालकी बहुत बड़ी चिंता थी, अतएव अपने परोपकारी मित्रोंको अपना हाल लिखा करते थे। आमोटके सेठ हरजीवन रायचंदको आपने एक दफे लिखा-

" इवे मारूं शरीर सारूं रहेतुं नथी अने मारी शारीरिक शक्ति घटती जाय छे, तेथी जे खातांओं अने हिलचाली हाल चाले छे तेनो भार हवे तमारा जवाए उपाइवानी जहर छे इत्यादि. "

पाठक देखेंगे कि सेटजीको भविष्यके सुप्रकथकी कितनी भारी चिन्ता थी ।

लेटे लेटे भी आप कभी सुस्त नहीं रहते थे, पुस्तके पढ़ा करते थे । इन दिनों आपके हाथमें भारत और विलायतके प्रवासकी पुस्तर्के गुजराती भाषामें पहनमें आई जिससे कभी २ मनमें तरंग उठती थी कि जो स्थान हमने रहीं देखा है उसे अवस्य देखलेना चाहिये। आपने ब्रह्मदेश ही नहीं देखा था। संगृनसे यद्यपि आपका पत्र व्यवहार था तथा अग्नं आइतियेको प्रेरणा करते थे कि बौद्ध लोगोंसे मांसका आहार छुड़ानेका यत्न करें। प्रस्तकें भी बटवांत थे तथा वहां एक फलाहारी होटल खल्वाना चाहते थे कि जिससे मांसाहारियोंको भोज्य पदार्थ खिलाकर उनकी रुचि स्वादिष्ट और उत्तम मांसवर्जित भोजन पर आकर्षित की जाव । इसके लिये आप लिग्वापढ़ी कर रहे थे।

अब आपने अपना पक्का विचार जानेका कर लिया था और कलकत्तेकी कमेटी करके आप ता० ३० ब्रह्मदेशकी यात्रा । दिसम्बरको रंगून खाना हो गए और वहां सेर करके कलकत्ते ताः १५ जनवरीको आएं। वहांसे श्री शिखरजीकी यात्रा करते हुए आप ता० २० मनवरीको माह सुदी १ के दिन पीछे बम्बई आए। आपने अपनी यात्राका हाल अपने हाथसे लिखकर " दिगम्बर-जैन " पत्र फाल्गुण सं० १९६८ अंक ६ में प्रकाशित कराया है सो नीचे प्रमाण है—

## ब्रह्मदेशनो प्रवासः

व्हान्या बंधुओ ! गत मासमां अमोए रंगुन (ब्रह्मदेश)नी मुसाफरी करी हती, जेमांनी केटलीक जाणवा लायक हकीकत अंगे प्रकट करवानुं योग्य धारीए छीए केमके एथी ब्रह्मदेशनी स्थिति अने देखावनुं भान बांचकोने मळी शकशे.

प्रथम हमो ता. २६ -१२-११ (पोस सुद ६) ने दिने सुंबईथी नीकळी ता. २८मीए सांज हावरा (कलकत्ता) म्टेशन पहोंच्या, ज्यांथी हेरीसन रोडपर आवंछी हरकीसनदास वाबूनी दिगंबर जैन धर्मशाळामां उतर्या, जे पछी ता. ३१-१२-११नी सवारे रंगुन जती मेळ स्टीमरमां जवाने रंमघाट उपर आव्या, के ने घाट एटना गार्डननी सामे चांदपाल घाट नजीक आवंछो छे. त्यां सामे एलेनकोरा स्टीमर आवंछी हती तेमां जईने अमारी जग्याए बेटा. ए स्टीमरनी टिकिट त्रण वर्गनी होय छं, तेमां पहेला वर्गना रु. ६५), बीजा वर्गना रु. ४५) अने त्रीजा वर्गना रु. १०) होय छं. अने टिकिट स्टीमरना उपद्याना मुकरर दिवस पहेलां पण मळी शके छे. आवी रीते अठवाडीआमां त्रण स्टीमरो कुलकत्तेथी रंगुन जाय छे.

हवे स्टीमर कलाक ७-१० मीनीटे बारा उपरथी उपडी.

आ स्टीमर वराळयंत्रथी चाले छे. ए स्टीमरमां छ माळ हता, तेमां अडघा माळ पाणीमां रहे छे, तेमां नीचला त्रण मालना आगळना अडधा भाग सुधीमां सांचा रहे छे अने वळी अडधा भाग सुधीमां हरोजनो सामान भराय है, तेमज चोथा माळना थर्ड कन्नासना (त्रीजा वर्गना), पांचमां माळमां सेकन्ड कलासना अने छहा माळमां फर्स्ट कलासना पंसन्तरो वंसे छे. अमो सेकन्ड कलासमां बेटा हता, जेनुं वर्णन नीचे मुनब छे—सेकन्ड कलासना पेसेन्जरो मांट एक **केबीन** (ओरडी) होय छे, जे ओरडी आ**रारे** आठ चोरम फुट होय छे, तेमां त्रण पेसेन्जरोनी सगवड करेली होय छे, जेमने मांट बीछानुं, क्वाट, दीवो तथा ओरडी दीट एक मर्वेट (नोकर) होय छे. फर्स्टकलासमां आथी पण घणी सारी सगवड होय छे, स्टीमरमां अनेक देशोना पेसेन्जरो होय छे, तथी तेमनी भाषानी माहिति तेमन व्यापार उद्योगने सारो फायदो थाय छे. म्टीमरमां फ़ुट मेवो वगेर जे कांई जोइए ते पण मळी राके छे. अने त्यां हिंदू होटल पण होय छे, तेथी आपण जेम घरमां बेठा होईए तेमन लागे छे.

हवे आ स्टीमर ता॰ ३-१-१२नी सवारे सात वागते रंगुनना बारा उपर आवी अने अमो मीनापुल घाट उपर उत्तर्या अने त्यांथी मोगलस्ट्रीट नं॰ १४मां आवेली सूरजमल लल्लुभाई झवेरीनी पंढीमां उत्तर्या. एन दिने अमो शहेर नोवाने गया, त्यां चव (अपासरा) तेमन रोयल लेक (तळाव) के ने बहुन विशाल छे, ते नोई त्यांथी सुलेडोंगफयो (बाँब धर्मनुं देवल) नोवाने गया के ने रोयल लेक उपर आवेलुं छे. आ देवल बौद्धोनुं मोटामां मोटुं देवल (मंदिर) छे, जेमां आशरे १९ फुट ऊंची आरसपहाणनी प्रतिमाओं छे. आ चौदसने। दिवस होवाधी त्यां घणा कुंगी (साधु)ओनं स्वाध्याय करता जोया. आ लोको धर्म उपर घणान श्रद्धालु तेमन मायालु होय छे. तंओना आचरण तेमन देवल अंदरनी रचना नोई अमोनं अत्यंत आनन्द थयो. जेम बावन जंनाली देवल होय छे, तेमन आ देवल पण हतुं. तेमां एक देवलनुं खर्च रू० १२००००) थएलुं छे. आ देवल नोया पत्री अमो भेमोरीयल गार्डन तथा केन्टोमेन्ट गार्डना (बगीचाओ) नोवा गया. आ गार्डनो (बगीचाओ) सारा छे. ए पत्री कोलेन, होस्पीटल अनं अनं सुलेफयो पेगोडा (बौद्ध धमेनुं देवल) जोतां केमीन डाइनमां गया के ज्यां धातुनी प्रतिमाओ सारी वनं छे

आ शहेरमां इलेक्ट्रीक (बीजलीक) ट्राम, टेलीफोन (तार) तथा बीजी दरक व्यवस्था मुंब ईना जेबीज छे. अने हिंदुस्ताननी वस्ती पोणो भाग अने बाकीनी ब्रह्मी लोकोनी वस्ती छे. आ शहेरनी वस्ती आशोर वे लाखनी छे. अने आशोर ५० जेनी व्यापारार्थे रहेला छे अने आपणुं मंदिर पण छे. अहीं मुख्य पेदाश चोख्यानी छे अने हीरानो व्यापार सारो छे.

अत्रेथी ता. ५-१-१२ने दीने उपडी ट्रेनमां बेसी ता. ६ ठी ए मांडले गया अने शा. जमनादास उदेचंदने मुकामे उतर्या अने तेज दिने अमो राजा थीबोनो मेहेल जोवा गया. आ मेहेल बहुज पुरातन छे अने एनी बांघणी लाकडानी छे. मेहेलनी आसपास एकेक माइल फरतो कोट छे, जे जोई अमो मांडला हील जोवाने गया. आ हील (टेकरी) उपर जवाने पगथीआं

बंधावेलां छे. सौधी उंचे फयो (देवल ) छे, ते फयामां आशरे २५ फुट उंची कायोत्सर्ग प्रतिमा छे. अत्रेथी शहेरनोः देखाव रमणीय नजरे पडे छे. ए पछी नीचे उतरीने अमो मांडलानी पासे सांजी गाम छे त्यां ट्राममां बेसीने फयो ( देवल ) जीवाने गया. आ फयानी अंटरनी व्यवस्था वणीन रमणीय छै. ए पछी बीजे दिन **केरोसीन ओडल मील** ( ग्यासंतेलनो मील ) जोवाने लांच ( नानी होडी )मां बेसीन गया, के जे भीलभां रंग्रननी खाड़ी ओळगीने जवाय है. त्यां प्रथम ४० कोस उपर **गया**-सतेलना क्रवा होय है, त्यांथी स्टीमरमां भरीनं कचरावाळुं ग्यामंतल लावे हे, जेमांथी पड़ी मीलमां प्रयोगो करीने प्रथम चोल्खुं ग्यासतेल जुदुं पाडे छे, जेमांथी पेट्रोल कांढ छे अन बाकी रहेला कचरामांथी मीणवत्ती बनावे छे अने तेयी कचरो मीलमां बाळवाना उपयोधमां ले है. अने तथी बाकीनों भाग सडक उपर छांटवाना उपयोगमां ले छे आबी रीते दरेक चीज उपयोगमां हे है, आ मील जोया पछी अमे मांइहेनी पासे भामी नामनुं गाम छे ते जीवा गया. ज्यां एक मोटी घंट छ के जेना जेवडो मोटो वंट आखी दुनिआमां नथी. मांडलामां हिंदस्ताननी वस्ती पा भाग अने बाकीनी ब्रह्मी लोकोनी मालम पडे छे. आ देशनी हवा बहु सारी छे. आ शहेर ब्रह्मदेशनी राजधानीनुं शहेर छे. अत्र दरेक जातनुं अनाज पण सारुं पाके छे. तेमज हीरा, पानां अने माणेकनो व्यापार सारो चाले छे, शहेरनी अने बजारनी बांधणी बहुज सारी छे.

ए पछी ता० ८-१-१२ ने दिने गोकटेक जवाने नि-

कळ्या. अहीं ट्रेन डुंगर उपर थईने जाय छे. आ डुंगर साडात्रण हजार फुट ऊंचो छे. ऊंचागमां मेमीयो शहेर छे. त्यांनी हवा बहुज सारी छे. त्यांथी नीचाणमां जतां गोकटेक स्टेशन आवे छे. त्यां अमो ता० ९ भीए उत्यां अने तेज दिन गोकटेकनी खीण जोवाने गया के जे खीग पुल्थी ८७६ फीट नीचाणमां छे. आ खीणमां २५० फुटनुं बोगदुं मालम पडे छे. आ बोगदुं कुदरती छे. त्यां लांबेथी पाणीनो घोघ जबरो आवे छे. आ पाणीना घोषनुं उंडाण आशरे ५० फुट हो. बोगदा उपर ३०० फीट ऊंचो डुंगर छे अने तेना उपर ३२६ फुट उंचो पुल छे अने ते पुल डुंगरनी ऊंचाईथी ४०० फीटथी वधार नीचाणमां हशे.

ता० १०मीए आ खीण नोहंने पाछा फरी ता० ११मीनी सांजे अमी रंगुत पहोंच्या. अत्र लामडाना कामनी मील सारी चाले छे, ते जोईने अमी ता० १२-१-१२ ने दिने कलकत्ते जवाने उपड्या अने एलीफंटा स्टीमरमां ता० १९ मीए कलकत्ते आवी पहोंच्या अने तेन दिने त्यांथी समेद्शिग्यरजी जई यात्रा करीने पाछा कलकत्ते आव्या. ज्यांथी अमी कालीघाट स्टे-रानथी बे माइल दूर आवेला टाटा आयने कुंपनी (टाटानुं लोखंडनुं कारवानुं) जोवाने गया. अत्रे पासेनी लोखंडनी खाण-मांथी माटी लावे छे अने ते माटीने पहेलां हाइड्रोजन ग्यास वती गाळे छे अने पत्री जेवुं जोईए तेवा आकारनुं लोखंडकाम बनावे छे. हालमां आ मीलमां १०००० माणसो काम करे छे, जेमने रहेवाने माटे कंपनी तरफथी मकानी बंधावी आपवामां आवे छे एटले त्यां एक नानुं गाम जेवुं थई पड्युं छे. आ कंपनी

हालमां सारुं काम करे छे अने हजु वधुं काम चालु छे, जे बे मासमां पुरुं थवे आ कंपनी घणुंन सारुं बीझनेस वरी शकशे एम स्पष्ट जणाय छे.

आ कंपनी जाया पछी बीजेज दिने एउछेता. १७-१-१२ नी मांजे त्यांथी उपडी अमो ता. २०-१-१२( माहा सुद् १) नी सवारे पाछा मुंबाई आवी पहोंच्या.

ता. ५-२-१२.

जाति सेवक-

## माणे कचंद हीराचंद जे. थी. मुंबाई.

यद्यपि आप रंगृनमें फळाहार होटल स्थापित करना चाहते थे परंतु व्यवस्थाके लिये कोई प्रबन्धक न मिलनेसे आपने अपने विचारको बंद रक्का।

सेटजी वस्वई आए तब यह चर्चा चली कि दिगस्बर, इंबतास्बर और स्थानकवासी तीनों आसायों के बादशाह पंचय जार्ज- जैनी भाई मिलकर अपनी २ महासभाके की सेवामें मुख्य कार्यकर्तीके हस्ताक्षरसे एक सिम्मिलित मानपत्र। मानपत्र श्रीमान् महाराज पंचयजार्ज और महाराणी मेरीकी सेवामें अपना करें। यह मानपत्र बम्बई कलेक्टरके द्वारा ता० २० जनवरी १९१२ को महाराजकी सेवामें मेज दिया गया। इसमें सेटजीन भा० दि० जैन महासभाके सथापतिकी हैसियतसे, सेट कल्याणमल सौभागचंदने जैन इवेताम्बर कान्फ्रेन्सकी हैसियतसे और राय सेट चांद्मलजीने जैन स्थानकवासी कानफरेन्सकी हैसियतसे हस्ताक्षर किये थे।

ताः १ मार्च १२ से ६ मार्च तक बेलगांवमें पंचकल्याणकोत्सवके समय दक्षिण महाराष्ट्र दि० जैन
दक्षिण म० जैन सभाका चौदहवां वार्षिकोत्सव श्रीमान् स्याद्वादसभाका १४ वां वारिषि पं० गोपालदास न्यायवाचवार्षिकोत्सव और स्यत्तिके सभापतित्वमें बड़े समारोहके सथ सेठजी। हुआ। उत्तर हिंदुस्तानके केवल दिग्विजयसिंह आदि अनेक महादाय पवारे थे।
श्रीमान् सेठजी साहच भी ता० २ री मार्चको पहुंच गए थे जिनका
यथायोग्य सत्कार किया गया था।
कुल प्रस्ताव २१ पास हुए थे जिनमें उद्धित योग्य ये थे:—

- (१) श्रीमान् सेट माणिकचंद्र पानाचन्द्रजीको २५०००) नकद् व १५०) मामिक रतलाम बोर्डिंगके लिये देने पर धन्यवाद ।
- (२) बाललग्न निषेधके प्रस्तावको मराठी, हिन्दी, कनड़ी, गुजराती, संस्कृत व वंगाली ऐमी लः भाषाओं में विवेचन किया गया। इस समय सभाका फोटो लिया गया था।
- (३) डेपुटेशन शिक्षण फंड वसूल करनेको बाहर निकले— इसको सेठ माणिकचंदजीने स्वयं पेश किया था ।
- (४) बेलगाममें बोर्डिंग खोलनंके सम्बन्धमें सेठ धर्मराव सूबेदारका आभार मानना ।
- (५) धम 🛚 द्रज्यका सदुपयोग ।

इस सभामें कोल्हापुर निवासी मि० कलाप्पा सावडेंकरको चित्रकला सीखनेको इटाली भेजनेके लिये ११९४) का फंड कर दिया गया । इसने मेउ माणिकचन्दजीने बहुत परिश्रम उठाया ।

ता० ४ मार्चको जिलेके किमश्चर मि. शेपर्ड साहबका स्वा-गत सभामें हुआ। उस समय साहबने अपने भाषणमें कहा " जैन कौमका वर्तन बहुत सरल, उद्योगी और कर्नथ्य दक्षताका होता है, जैनधर्म पृथ्वीके अत्यंत पवित्र और शुद्ध धर्मों मेंसे एक धर्म है। इनके अनुयायी शांतताप्रिय और सुधारणाशील होते हैं, ऐसा मुझे मालूम होता है। ''

श्रीमती मगनवाई कंकुबाई आदि परोपकारिणी स्त्रियोंके उ-द्योगसे ता० ४ और ९ मार्चको भारतवर्शीय दिगम्बर जैन महिला परिषदकी दो बैठकें मेउ हीराचन्द् नेमचन्दकी धर्मपत्नी सौ० सकुबाईके सभापतित्त्वमें हुई । ४ प्रस्ताव पाम हुए । स्त्रीशिक्षा फंडमें २००) नकद आए । ४००० स्त्रियोंको उपदेश मिलनेसे स्त्री समाजमें अच्छी जागृति हुई थी ।

बेलगांवमें मि. ए० पी० नौगले बी० ए० एल एल० बी० ने १०००) खर्च कर एक सुशोभित मंदिरजी बंनवाया था उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा लक्ष्मीसेन भट्टारक कोल्हापुरके द्वारा फाल्गुण सुदी १२ से बदी ३ तक हुई थी।

सेठ माणिकचन्दनी लिलतपुरके सेठ मथुरादास टड़ैया और पन्नालालनीको वार वार यह उपदेश किया स्रिलतपुरमें बोर्डिंग करते ये कि लिलतपुरमें आप प्रामीण बा-स्थापन । लकोंको विद्या पढ़ानेके हेतुसे बोर्डिंग खोर्डे। उपदेशका असर कभी न कभी होता ही है।

वीर सं० २४३८ में क्षेत्रपालपर बोर्डिंग सहित संस्कृत एंग्लो पाठशाला ग्वल गई और १५ छात्र बोर्डिंगमें रहने लगे।

ग्वामगाम जिला वरारमें नवीन जिन मंदिर व विम्ब प्रतिष्ठाका उत्सव वैशाख सुदी ३ मं १५ खांमगाममें सभा तक हुआ था। इसी बीचमें ताः २६ और सेटजी। अप्रैल १९११ से ३० अप्रैल तक बंबई दि. जैन प्रान्तिक सभाका नवम वार्षिकोत्मव

रानीवाले सेठ पट्मराज फूलचंट कलकत्तानिवासीके सभापतित्वमें बड़े समारोहमें हो गया। सेट माणिक चंदजी भी पधारे थे। कुल १२ प्रस्ताव पास हुए, जिनमें उक्लेख योग्य प्रस्ताव ७ शिखरजी व चंपापुरकी नेरापंथी कोठीके सुधारके विषयमें व नं. १२ बरार प्रांतमें छात्रवृत्ति देनेके लिये था। इम आखरी प्रस्तावका समर्थन हमारे सेटजीने किया था । सेटजीकी प्रेरणास रा. रा. देवीदास चौरे भी. ए. एल एल. भी. वकील अकोलाने एक बोर्डिङ १६-६-१९१०को अकोलामें खोल दिया था: पर उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। सेठजीके इशारा करनेसे तर्त ११००)का चंदा बरार शिक्षाप्रचारक खातेमें होगया तथा समाके खातोंमें भी ४५० आए। बाबू करोड़ीचंद आराके उद्यो-गते सरस्वती भवन आराके लिये भी ४००) हो गए। भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिने आरा भवनको १५१) नकद व १ प्रति संस्कृत शोमद्रमारकी मेट की।

जब सेठजी ब्रह्मदेशकी यात्रा सहीमलामतीसे जहाज़ व रेल द्वारा पूर्ण करके लौट आए तब आपके भाव सेठजीके विलायत विलायत यात्राके भी हुए। आपकी इच्ला थी जानेकी इच्छा। कि लंडनमें एक जैन बोर्डिङ्क हाउस स्थापित करा दिया जाय जिससे जैनी छात्र व न्या

पारी अपने धर्म व खानपान आचारकी रक्षा करने हुए छौकिक लाभ उटा सकें। यह विचार अप्रैल मास १९१२में पक्का भी हो गया यहां तक कि ताः २८ अप्रेल १९१२ के 'प्रगति आणि जिनविजय' में यह प्रसिद्ध भी होगया कि सेठ वालचंद हीराचंद व २-३ गृहस्थों के साथ सेठजी जूनके आरंभमें विलायत जानेवाले हैं। परंतु दारीर-अस्वस्थताके कारण आप जा नहीं सके। विलायत जानेकी उत्कंठा-से आपने कई मास पहलेसे एक माध्यके द्वारा बंगलेपर इंग्रेजी पहना भी शुरू कर दिया था।

आपका यह विचार कितना पुग्वता था इसके प्रमाणमें पाठकोंको एक कार्डकी नकल बताई जाती है जो सेठजीन ताः २१ मई १९१२में बाबू सुमतिचाल बनारमको लिखा था।

"Your kind letter of 24th instant to hand and I am very glad to read it. For a long time I am intending of opening a vegetarism or Jain Boarding House at England and still having that intention, I am now thinking over its scheme and will let you know soon in the subject."

अर्थात्-आपका २४ तारीलका पत्र पढ्कर हर्ष हुआ। में बहुत दिनोंसे इंग्लैंडमें एक जैन वोर्डिङ्ग खोलनेका इरादा कर

रहा हूं और अब भी वहीं विचार है। मैं उसका उपाय सोच रहा हूं और आपको शीध इस विषयपर लिख्गा।

पाठको ! सेटजीका स्वर्गवास थोड़े ही काल पीछ हो गया । यदि उनका जीवन दो चार वर्ष और रहता तो संभव था कि विलायतमें एक जैन बोर्डिंग खुल जाता। अब उनके पीछेके धनवा-नोंका कर्तव्य है कि इस आवश्यकताको पूरी करें।

जिस बोर्डिङ्गकं खोलनेके लिये सेटनी बहुत ही उत्सुक थे व जिसके लिये आपने २५०००) का दान अलाहाबाद दि० जैन कराया था उस बोर्डिंगके खोलनेका सुहूर्त बोर्डिंगका स्थापन। आषाइ बदी २ ता० १ जुलाई १९१२ को पार्क रोडपर एक किरायेके बंगलेमं बाबू

विषयरणलाल बी० ए० एलएल० बी० रईम-म्यूनिसियल किमरनर प्रयागके द्वारा बड़े मनारोहसे सरस्वती पृतनके माथ हो गया। बम्बईसे मेउजी स्वयं नहीं आ मके थे पर अपनी सुप्रती मगनबाईनी व श्रीमती कंकुवाईनीको भिनवा दिया था व ब्रह्मचारी शितलप्रसादनीको भो काशीसे वहां बुलवाया था। धर्मपत्नी ला० सुमेरचंदनीने सर्व प्रवन्त्र योग्य रीतिसे कराया था। मास्टर दीपचंदनी उपदेशक बम्बई प्रान्तिक ममाको सेठनीने यहांकी सुपरिन्टेन्डेन्टीके लिये मेना था। प्रारंभमें ५ ही छात्र भरती हुए। किर बढ़ते २ ता० ३१ जुलाई १९१४ तक १५ छात्र बी० ए०, बी० एस० सी०, एम० ए० आदि कॉलेनकी पढ़ाईके अनमेर, सीतापुर, मेरठ, विजनौर आदिके हो गए। ये सब गोमहसारसे लेकर तत्त्वार्थ सूत्र छहताला तक धर्मशिक्षा लेने हंगे। तथा इसके लिये मेयो कॉलेनके

पास ही पीली कोटो नामकी एक हवादार इमारत ९०००) के अनुमानमें खरीद ली गई है तथाइम २५०००) की रकमका टूष्टडीड भी हो गया है। मास्टर दीपचंदके उद्योगमे इव बोर्डिंगका काम अब बहुत पका हो गया है। बाबू बच्चुलाल मंत्रीका काम बहुत विचारसे करते हैं। स्थापनाके ममय सेटजीने अपनी पुत्रीद्वारा २००) फंडमें दिये, तत्र मभापति शिवचरणचालने २५०) इस तरह ९६२) का चंदा हो गया। इस बोर्डिंग्से भी बहुत बड़ा लाभ हो रहा है । छात्रों में जैनधर्मसे प्रेम बढ़ रहा है । वास्तवमें सेठनीको Will power ( आत्मिक दृदता ) वड़ी प्रबल थी। यह इसीका ही प्रताप था कि जो वह चाहने थे उस कार्यको कभी न कभी प्रा कराके ही छोडते थे।

पृज्य पिताश्रीकी आज्ञा लेकर परीपकारी सुपुत्रके समान कार्यकुराला श्रीमती मगनबाईजीने श्रीमती श्रीमती मगनबाई जीका कंकुवाई शोलापुर और श्रीमती चंदाबाई पंजाब भ्रमण । आराके माथ ताः २९ मई १९१२ से २ ज्लाई तक पंजाबमें भ्रमण करके अपने धर्मीपरेशमे स्त्रियोंमें उत्तेजना दी तथा श्राविकाश्रम बम्बईका प्रचार किया । आवके भ्रमणका संक्षेप हाल यह है:-

ताः १ जूनको मथुरासे मेरठ होती हुई हस्तिनापुरमें पहुंचकर ताः २से ८ तक ठहरीं। ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमका निरीक्षण किया। बाई नीने ५१) व चंदाबाईने ५१) व ३०)के कपड़े, व कंकुबाई जीने ५) आश्रमको भेट किये। बहसूमा श्राममें दर्शन करके सभा की। यहांसे चलकर मेरठ शहरमें आई। वहां रत्नत्रयपर व्याख्यान देकर आश्रम बम्बईके लिये २२९) का चंदा किया। सदरमें भी लीमभा की व कन्याओं की परीक्षा लेकर इनाम बांटा। ता० ११ जूनको जालंधर गई। यहां उपदेश होकर २२९) सरम्वती भवन आरा व २४) आश्रमको प्राप्त हुए। कन्या महाविद्यालय देखा। वहां ३०० कन्याएं रहकर पढ़ती हैं। २०००) मासिकका खर्च है। २१ श्रिणियां हैं। ता० १२ जूनको असृतसर जाकर यहां सिक्खोंका मंदिर देखा। ता० १४ जूनको लाहौर गई, बोर्डिंग देखा व स्वियोंको श्राविकाचार समझाया। ताः १६ को देहरादृन आई। यहां धर्मात्मा चमेलीबार्डिंन १००) वम्बई व १०० मुरादाबाद आश्रमको दिये। कुल ३२४) का चन्दा हुआ। तीनों बाल्योंके व्यास्थानोंसे धर्मकी जाएति हुई। यहां १० अनेन बाह्योंने पानी छातकर पीने व रात्रिमें भोजन न करने व मद्य मांस त्यामका नियम किया।

ता. १८ जूनको हरिहार जाकर कांगड़ी गुरुकुल देखा फिर ता॰ २०को सुरादाबाद आई। वहां श्राविकाश्रमको देखा व जैनधर्म पर उपदेश किया। ता. २४ जूनको देहली आई। पहाड़ी धीरज-शाला देखी व शिक्षाप्रचार, मद्विद्या व रत्नत्रयकी दुर्लभतापर तीनों बाइयोंके उपदेश हुए। दूमरे दिन शहरकी शाला देखी व सभामें षट्कर्म व ब्रह्मचयपर उपदेश दिया। ता. २६ जूनको प्रयाग आकर बोर्डिंगका मुद्दूर्न करके ता. २ जुलाईको बन्बई आ गई तथा श्रीमती चंदाबाई देहलीसे वृन्दावन रवाना हुई। सेटजीने सर्व हाल प्रवासका जानकर इनके कार्यपर सन्तोष प्रकट किया।

श्री शिखरजीकी तेरापंथी कोठीका प्रबन्ध बहुत दिनोंसे

खराब था जिसकी छिखित व जबानी शिका-शिखरजीकी तेरापंथी यतें सेटजीके पास वर्षोंसे आती थीं। जब कोटीका व चंपापुर- लाट साहब शिखरजीपर आए थे तब सेट जीका उद्धार। हुकमचंद्र आदिने इसके प्रबन्धार्थएक कमेटी

बना दी थी जिसके मंत्री बाबू धन्नूलालनी व कोपाध्यक्ष सेठ परमेष्ठीदासजी नियत हुए थे। इन्होंने उपाय किया पर काम हाथमें नहीं आया । तब सन् १९१०में शिखरजी पर तीर्थक्षेत्र कमेटीके अधिवेशनके समयपर यह प्रस्ताव कमेटीने पास किया कि वह कमेटी एक माहके भीतर प्रवन्य हाथमें ले ले नहीं तो अदालती कार्रवाई की जावे। इस कमेटीने फिर्भी शिथिल्या की । यकायक बाबू छन्द्रलाल जोंहरी-प्रवन्धकर्ग तरापंथी कोटीका देहान्त हो गया। तत्र मेठजीने उमका प्रतन्ध अति शीघ होना उचित समझकर इन्सपेक्टर बाबू बंशीधरको कलकंत भेजा । वहांपर यह एक मास उहरे। तब ता. ३ जुलाई १९१२को कलक-त्ताकं दिगम्बर नैनियोंकी एक पंचायत हुई, जिसमें १५ महाशय कलकंत्तकं प्रबन्धार्थ नियत किये । तब बावू धन्त्रलालनं वंशीधरजी-को लिखित पत्र देकर तरापंथी कोठी शिखरजी और चंपापुरीका चार्न लेनेको भेना । बर्शाधरजीने ता. ९ व १० जुलाईको चंपापुरी-जीका चार्ज लिया। फिर ७ जुलाईसे २० तक शिवरजीकी कोठी-का अधिकार हाथमें लिया, तबसे प्रबन्ध दोनों स्थानोंका ठीक चल रहा है । चंपापुरी नीका प्रबन्ध सेठ हरनारायण भागलपुर तथा तेरापंथी कोठीमें बाबू बशीधर मैनेनर हैं। हिसाब आदि अब ठीक रहता है । इन दोनों कोठियोंके उद्धारमें सेठनी और उनके सहा-यक लाला प्रमुदयालनीन बहुत उद्योग किया।

भागलपुरमे १६ कोस मंदार हिल नामके स्टेशनसे १ मील मंदारगिरि नामका पर्वत है। यहींसे श्री वासपूज्य मंदारगिरि सेत्रका स्वामीकी मुक्ति हुई है, नरण पादुकाएं हैं उद्धार व ५००) कुछ दिनोंसे जैनियोंने जाना आना बंद की मदद। कर दिया था। बाबू देवकुमारजी आरानिवासीकी खास प्रेरणासे सेटजीने इस क्षेत्रका सुप्रवन्ध करानेको बाबू बंशीधर इन्सपेक्टरको भेजा। बंशीधर-जीने सेट हरनारायणजीके हद प्रयत्नमे इसका प्रवन्ध हाथमें लिया और बालचंद मुनीमको ना० १६ दिसम्बर १६ को नियन कर कोटी कायम कर दी। जबसे इसका प्रवन्ध बराबर चला आरहा है। सेठ हरनारायणजी प्रेरन्धकर्ना हैं। बारामनीनिवासी सेठ तलकचंद कस्तूरचंदकी ओरसे पहाड़के मंदिरके जीणीद्धारका काम हो रहा है। सेटजीके जीवनमें इस सिद्धक्षेत्रका उद्धार होना भी एक महा प्रण्यदायक बात हुई है।

शोलापुर निलेके दिगम्बर जैनी वास्तवमें उदारचित्त हैं।
श्रीमान् सेठ गुलाबचंद रेवचंदगुंजेटी वालोंने
चतुरबाई श्राविका अपनी पूज्य माता चतुरबाई के स्मरणार्थ
विद्यालय शोलापुर ११०००) दान करके श्राविकाओंके लाभार्थ
उद्घाटन। एक श्राविका विद्यालय खोलनेका निश्चय
किया व जिसका मुदूर्त श्रावण सुदी
र गुरुवार ता० १९ अगस्त १९१२ को ठीक करके
दानवीर सेठ माणिकचंदजी और उनकी मुपुत्री मगनबाईज़ीको
निमंत्रित किया। श्रीमान् सेठनी अपनी मुपुत्री व श्राविकाश्रमकी

सुपरिन्टेन्डेन्ट बाई यशोदाको साथ लेकर शोलापुर पहुंचे। नियत स्थानमें पं० पासू गोपाल शास्त्रीद्वारा सरस्वती पूजन होकर सभाक्षा कार्य पं० वंशीवरजीके मंगलाचरण पूर्वक प्रारंभ किया। ऊपर लिखित ११०००) के सिवाय सेठ देवचंद हीराचंदकी पत्नी राजूबाईन भी १००००) देना मंजूर किये। इस २१०००) ५ के दृष्टि नियत हुए। प्रबन्धकारिणी कमेटीमें मंत्री रावजी सखाराम हुए। सेट माणिकचंदजीन स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकता बताते हुए श्राविका विद्यालयका बोर्ड खोला। उस समय उपस्थित मंडलीने २६९७) की भेट की, जिममें १०००) झुमाबाई भर्तार गौतमचंद नेमचंदन ५००), नवलबाई भर्तार परमचंद रामचन्द, १०१) सेट माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी., १०१) सेट हीराचन्द नेमचन्द, १०१) सेट माणिकचन्द लालंद आलंद आदि। श्रीमती स्थामाबाई जेन और राधाबाई हेड मिण्ट्रेम शिक्षकाएं नियत हुई। इसका काम भी भले प्रकार चल रहा है।

यद्यपि सेटजीका शारीर अस्वस्थ्यतास थका हुआ रहता था तौभी आपको आवश्यक कामोंके लिये काशी विद्यालयमें जाने आनेमें जरा भी आलस्य नथा। सेटजीका गमन शोलापुरसे लौटकर आए थे कि बनारससे पत्र आने लगे कि यहांपर आकर प्रबन्ध टीक करें। वहां विद्यालयसे ७ छात्र एकाकर चले गयेथे, उनके समझानेका प्रयत्न था। सेटजीकी इच्छा वहां जानेकी बिल्कुल न थी, पर तार व पत्रोंके आनेसे तथा अपनी सभापतिकी जिम्मेदारीको समझ कर अप इच्छा न रहते भी काशी पधारे और ता॰ २५ अगस्त १२ को कमेटी करके प्रबन्धमें सब समाधानी की ।

सेठ माणिकचन्दनीकी चलाई हुई बोर्डिंगकी पृथाने बहुतसे स्थानके भाईयोंको इस कामके लिये उत्त-वर्धामें दिगंबर जैन जित कर दिया । उन स्थानोंमें एक मध्य बोर्डिंग। प्रान्तका वर्घा म्यान भी है। यहां नैनि-योंके ७० घर हैं। आसपास भी जैनी हैं। यहांके भाई प्रति वर्ष रथोत्मव भादों पीछे करते हैं। बीर मंः २४२८में इन्होंने बोर्डिंग खोलनेका निश्चय करके वस्वईसे बोर्डिंगके जन्मदाता सेठ माणिकचन्दजीको निमंत्रित किया । नि-रालसी सेंठजी अपनी सुपुत्री मगनबाई और श्रीमती कंकुबाईकै साथ वर्षा पवारे । आसोजै वदी ५को रथोत्सवका समारम्भ होने पर दुसरे दिन ता० २ अक्टूबर १९१२ को मबेरे ८ बजे बोर्डिंग ग्वुलनेका मुहूर्त हुआ। सरस्वती पृजन पं० हीराह्यात्र नागपुरने कराई। फिर सभा हुई । तत्र सेठनी सभापति नियत हुए। जयकुमार देवीदास चौबरे वकीलने ' विद्यादान ' पर मनोहर भाषण दिया । उसके प्रभाव व सेटनीके गुप्त प्रयत्नसे तुर्त १५०००) का चंदा हो गया, निसमें २१००) सेठ पत्रालाल, २०००) सेट वकाराम वाइकाजी व १०००) सेठ मानमल पुलगांव इस तरह उदारचित्तोंने दान किया। सेठजीने बोर्डिंग भाड़के मकानमें खोला तथा मकान बनवानेका भाईयोंने प्रण किया। ता० ३ को श्रीमती मगन-बाई और कंकुबाईजीका 'स्त्रीशिक्षा 'पर भाषण होकर १००) बम्बई श्राविकाश्रमके लिये एकत्र होगए । इस बोर्डिंगमें १ वर्षमें ही २४ की संख्या छात्रोंकी होगई, इनमें ५ बोर्डिंगके खर्चसे

रहनेवाले थे । अब इसका काम अच्छी तरहसे चल रहा है । सन् १९१५-१६ की परीक्षामें रत्नकरंड श्रावकाचारमें ८-१० हात्रोंने परीक्षा दी । जिममें प्राय: सबने अच्छे नम्बर पाये । मगनबाई और कंकबाईजीन ता० ३की रात्रिको एक मार्वजनिक समा की "जिसमें स्त्रियोंक कर्तव्य " पर व्याप्व्यान देकर गाली गाना व होली खेलनेका त्याग कराया। यहां एक महेश्री रईम सेठ जमनालाल हैं जिन्होंने मारवाड़ी विद्यालय व बोर्डिङ्गको चला रक्तवा है, ४०००० में उत्तर अपनी रक्तम प्रदान की है। इनकी घर्मपतनीने १०१) मदद श्राविकाश्रम बम्बर्डको दी ।

ता. १५ अगम्बको वस्बर्धसे कोल्हापुरनिवासी श्रीयुव कहापा बाबाजी सावर्डेकर और श्रीयत वंबर्डमें परदेशगमनमं चितामणि नागेन्द्र पत्रावली ऐसे दो दि० जैन विद्यार्थी बम्बर्ड जे जे आर्ट स्कूलमें चि-सभा । त्रकडाका पठनक्रम समाप्त करके विशेष शिक्षण लेनेके लिये साडिनी स्टीमर द्वारा इटाली देशके फ्लारेन्स शहरके लिये खाना हुए। उस मभय हीराचंद गुमानजी जैन बोडिंगके छात्रोंने अभिनन्डन किया ब ता. १४ को इनके सन्मान-में १ दावत दी व रात्रिको ऌल्लुभाई प्रमानंद परीखके सभापतित्वमें मभा करके सन्मान किया । तत्र प्रमुखने दोनों छात्रोंको श्री रतन-करंड श्रावकाचार ग्रंथ भेट किया और कहा कि परदेशमें जिन धर्मपर पूर्ण श्रद्धा रखना । इनके भेजनेमें दक्षिण महाराष्ट्र सभासे वलगाममें जो फंड हुआ था उसके सिवाय सेठ माणिकचंदजी और सेठ नाथारंगजीने भी छात्रवृक्तियें दीं।

सेठ माणिकचंद्जी जैन नातिमें हरएक विद्योत्तिते काममें अग्रगामी रहते थे । शोलापुरकी मंडलीने गायन वर्ग आसोज सुदी १०के दिन एक जैन गायन प्रारंभ । समाज वर्ग स्थापित किया उसका समारंभ दानवीर सेठजीके द्वारा बंड समारंभसे

## हुआ था।

शोलापुरसे आकर सेटजी रतलाम पथारे। अपने स्थापित बोर्डिङ्गका प्रथम वार्षिकोत्मव मिती आसोज रतलाम बोर्डिगका सुदी १४ को सबेरे ९ बजे एक भव्य मंड-मथम बार्षि- पमें यहांके दीवान रायबहादुर पं० वृजमोहन कोत्सव । बी. ए. एल एल. बी. के प्रमुख्यत्वमें बड़े समारोहके साथ हुआ। सेटजीने सभापतिका

प्रस्ताव किया। संकेटरी लल्लुभाई प्रमानंदने वार्षिक रिपोर्ट पड़ी. जिसमें बताया कि अब १९ हमड़, १ खंडेलवाल, १ बंघरवाल ऐसे २९ छात्र दाहोद गड़ी, कुशलगढ़ आदिके हैं जो धर्मशिक्षा सिवाय चौथी इंग्रेजी हास तक के हैं। पं कस्तूरचन्द्रजी व मूलचन्द किसनदामजीके भाषणके पीछे दीवान साहबने अपन भाषणमें बहुतसी उपयोगी बातोंमें यह भी कहा कि जैनियोंमें जीवन वगैरहमें बहुत द्रव्य उड़ाते हैं तथा सुना गया है कि यहांकी ६ जातियोंमें जो ज्योनार होनेवाली है उसमें २ लाख रुपया खर्च हो जायगा, इस रकमको विद्यादानमें खर्चना जरूरी है। वापदादोंके रिवाज़ फेरनेके लिये हिम्मतकी जरूर है। इसका ताजा दृष्टांत यह है कि महाराज रतलामके

यहां प्रति वर्ष श्राद्ध होता था जिसमें २०००) ब्राह्मणींके जिमानेमें खर्च होते थे, महाराजने इन म्बर्चकी बन्द करनेकी १५०) मासिकके खर्नमें ब्राह्मणोंके लिये एक बोर्डिंग खोले जानेका हुतम किया है। व्यापारमें धर्मादा जो कटे सो विद्यामें छगाना नाहिये तथा इस बोर्डिंगके मकानके लिये रजपूत बोर्डिंग जो बंधवानी है उसके लिये भी महाराजा साहब मुफ्त ज़मीन दे संकेंगे।

सेठजीन सभापतिका हार तोरा आदिसे सन्मान किया। यहां विजिटर कमेटी बनी जिसमें ३० मेम्बर हुए।इनको 'दिगम्बरनेत पत्र मुफ्त दिया जाना अहमदाबाद वोर्डिंगका निश्चय हुआ । विद्यार्थियोंकी धार्मिक शिक्षामें वार्षिकोत्सव ।

परीक्षा लेकर इनाम दिया गया। उद्योगशील सेठजी रतलाममें अपनी लक्ष्मीके सद्पयोग-

को देखकर अहमदावाद पधारे । कार्तिक ददी २ को सबेर अनैक परदेशी व शहरके जैन व अजैन प्रतिष्ठित पुरुषोंकी सभामें परीग्व ळ्ळूभाईके प्रम्ताव करने व सेठ मांणिकचन्दजीके समर्थनम आनेररी मजिस्ट्रेट रायबहादुर जीवनलाल प्राणजीवनदास लाखिया मभापति हुए । ल्ल्स्याई लक्ष्मीचन्द सेक्रेटरीने रिपोर्ट सुनाई-इममें कहा कि धर्म शिक्षामें ३१ में २९ पास हुए हैं व श्रीमती रूपाबाईने १२००) में नवीन धर्मशाला बनवा दी है। फिर स्वयं सेठ माणिकचंदजीने रा० व० छाछशङ्कर उमियाशङ्करकी मृत्युके छिये शोक 'प्रदर्शक प्रस्ताव पेश किया । पं० कस्तूरचंद आदिके व्याख्यानींके पीछे प्रमुखने अपने भाषणमें कहा कि सेठ माणिकचन्द्जीने अनेक स्थानोंमें बोर्डिङ्ग खोलके तुम्हारी कौमके ऊपर भारी उपकार किया है। तुम श्रीमानोंको इनका अनुकरण करना चाहिये। " रात्रिको समामें अंकलेश्वरके वीसा मेवाइ। दिगम्बर जैन पंचोंको निम्न लि-खित जातीय प्रस्ताव करनेके उपलक्ष्यमें चन्यवाद दिया गया।

" कन्याकी उम्र १० वर्ष हुए विना सगाई या लग्न करना नहीं तथा कन्यासे वस्की उम्र छ वर्ष बडी होना चाहिये जो इस प्रस्तायका भंग करे तो दोनो पक्षको ५०१) रु. दंड देना पड़ेगा "

विद्यार्थियोंको इनाम दिया गया व बोर्डिङ्गके लिये करीब ३००) के फंड हुआ।

यह बड़े आनन्द्रकी बात देखने में आती थी कि श्रीमती

मगनवाई नीन जिए कामको अपने हाथमें
भा० दि० जैन महि- लिया उसको व बरावर नियमित रूपसे
ला परिषद्का तृतीय करती चली आती थीं। जो भारतवर्षीय
बार्षिकोत्सव। दिगम्बर जैन महिन्छा परिषद सन् १९१०में
श्री शिखरजीपर स्थापित हुई थी उसका
तीसरा बार्षिकोत्सव श्री जम्बूस्वामीके मेलंपर मथुरामें ता. १ नवस्बरसे ६ तक स्वर्गवासी राजा मेट लक्ष्मणदासकी धर्मपत्नी चांदबाईके
सभापतित्वमें बड़ी मफलतासे हुआ। कायदेके अनुमार
प्रमुखाजीका भाषण होनेके पीछे श्रीमतो मगनवाई जी संचालिकाने
रिपोर्ट सुनाई। ६ प्रस्ताव पास हुए। गंगादेवी सुरादाबाद, व
लड़तीबाई इटावा आदिके व्याख्यान हुए। अध्यक्षाने श्राविकाशम
बस्बईको १०) मासिककी सहायता दी व स्त्री शिक्षा फंडमें १००)
का चंदा हुआ।

सेठजीके पाम जबलपुरसे पत्र आया कि जिस बोर्डिंगके बनानेके लिये सिंघई नारायणदासजी सेठजीको हर्षके २००००) दे गये थे उसके मकान बननेका समाचार । मृहूर्त आश्विन बदी ५ को दीवान बहादुर सेठ बहुभदासजीके द्वारा बड़े समारोहके साथ

हुआ। शहरके प्रतिष्ठित जन पर्यार थे तथा उस समय धर्मपत्नी नारायणदासजीने कई सौ रुपये दान भी किया। जैन मंदिर व मंम्याओंके सिवाय १००० हितकारिणी हाईस्कूल ५०) अंजुमन (मुम्नल्मान) हाईस्कूल व ५० मिशन हाईस्कूलको, भी दिये। संउजी इस पत्रको पड्कर बहुत ही आनन्दित हुए क्योंकि जिम बातकी आपकी भावना थी वह बात अपनी सफलताके निकट आने लगी।

वीर मं० २४३९ मिती पौप कृष्ण ३ से ९ मी तक ता० २६ दिसम्बर १९१२ से १ जनवरी १९१३ वस्बईमें रथोत्मव तक बस्बईमें रथोत्मवका समारंभ व मुम्बई तथा प्रान्तिक सभाका दि० जैन प्रान्तिक सभाका बारहवां अधिवे-१२ वां शन बड़े समारोहके साथ छ्यत्नऊ निवासी वार्षिकोत्सव। बाबू अजितप्रसादनी एम. ए. एछएछ. बी. के सभापतित्वमें हुआ। इसके प्रबन्धमें सेट माणिकचंदजीने खास तौरसे उद्योग किया। इस सभामें श्रीमान् न्यायवाच्यस्पित पं० गोपाछदास, पं० अर्जुनछाछ सेठी, कुंवर दिग्विजयसिंह, बाबू जुगमन्दिरछाछ एम० ए०, ब्रह्मचारी शीतल्प्रसादजी आदि पधारे

ये जिससे धर्मोपदेशका अच्छा समागम रहा था । कुल ९ प्रस्ताव

पास हुए। जिनमें मुख्यये थे। (१) ता० २३ दिसम्बर १९१२को जो उपसर्ग दिहलीमें बड़े लाट वाइसरायको हुआ उसपर खेद प्रकाश व उससे रक्षित रहनेपर हर्ष (२) आगामी अधिवेशत पालीताना सिद्धक्षेत्र पर हो। श्रीमान् पंडित गोपालदासनीको स्याद्धाद्धारिधिके पदका अभिनन्दन पत्र व न्यायवाचम्पतिके पदका संस्कृत मानपत्र जो कलकत्तेकी विद्वज्ञत समाजसे आया था सो अपण किया गया। यहां रथोत्सवकी बोली २५००) की हुई जिसमें सेठ माणिकचन्द पानाचन्दने खवासीकी बोली २०१) रु. में ली।

श्रीमती मगनवाईजीन भी इस मौकेपर ता. २८ और ३१ दिस-म्बरको दो स्त्री सभाएं कीं । एकमें श्रीमती नानीवाई गज्जर (अजैन) वनिताविश्रामकी संवालिका और दूसरीमें सेठ मुखानंदकी धर्मपत्नी प्रमुखा हुई । अनेक उत्तम व्याख्यान हुए । श्राविकाश्रम बम्बईको ३६७) का लाभ हुआ इस सभामें प्रान्तिक सभाको कोई फंड नहीं हुआ इसका कारण यह हुआ था कि बाबू अनितप्रसादजीने अपना विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानमें यह बताया था कि जैनियोंको परस्पर खान पनके साथ परस्पर सम्बन्ध भी करना चाहिये ऐसा ही प्राचीन शास्त्रीय नियम था । इस वातको सुनकर यहांके मारवाड़ी लोग भड़क उठे थे । इसीसे धनवानोंको हाथ सकोड़नेका मौका लग गया । . ......

( Par 28 uza )



काइमीरका प्रवास.

J. V. P. Surat,

काइमीरके प्रवासमें सेठजी.



J. V. P. Surat.



जनसे वाइसराय लार्ड मिन्टोने श्री शिवरनी पर्वतके पट्टेके बंगाल गवर्नमेन्टके हुक्मको रह किया तबसे सेठ माणिकचंदजीकी सेठजीको बहुत बड़ी चिंता थी तथा आप चिंतामें दृद्धि और उस पंटेंके पुनः स्थिर करानेके उद्योगमें थे। शिखरजीके लिये चूंकि उस पंटेंके लिये ५००००)का बयाना दिया जा चुका था उससे वह रद्द नहीं होना प्रयत्न । चाहिये था । इमलिये बाबू धन्नूलालजीने ता. १६ मार्च १९११ को अटालती नोटिस भी बंगाल गर्वनमेन्ट-को दिया था तथा ता. १६ अक्टूबर १९१२को कमेटीके मभासदों द्वारा यह प्रस्ताव भी स्वीकार करा लिया कि गवर्नमेन्टपर मुकहमा नलाया जाय ।

उधर जो पहाड्का सरवे हुआ था उसमें यह लिखा गया था कि पहाड़के मंदिर और धर्मशालाओंमें सर्व जैनियोंको तिना किमीकी इजाजुतके जान व प्रजन करने व ठहरनेका हक है। इस बातकी उजरदारीमें स्वेतांवरी लोगोंने नाः ७ मार्च १९३२ को मुकद्दमा नं० २८८ दायर कर दिया कि दिगम्बरियोंको देवतांब-रोंकी इनाज़तसे पूजनेका हक है, सो भी उनकी ही आस्नायके अनुमार । इस मुकद्दमेंसे सेठनीको और भी भारी चिंता हो गई। तंब लाला प्रमुद्यालकी सलाहसे एक मुख्य सभामदोंकी कमेटी कानपुरमें ता॰ ८ और ९ फर्वरी १९१३ को बुलाई गई, जिसमें सेठनी भी पधारे व कलकत्तेसे घन्न, बाबू व ब्रह्मचारी शीतलप्रसादनी भी आए थे। सहारनपुरसे जम्बूप्रसार्जी आदि १८ मेम्बर खास २ कानपुरवालोंने उत्तम स्वागतका प्रबन्ध किया था ।

छाला सुलतानसिंह रईम देहलीके समापितत्वमें प्रस्ताव ३ पास हुए (१) जो शिखरजीकी प्रतिष्ठामें रुपया आया था वह पर्वतरक्षा फंडमें मिलाया जाय (२) मुक्दमा नं. २८८ चलाया जाय तथा इसका खरचा आचा २ तेरापंथी व बीसपन्थी कोठीसे लिया जाय (३) मुक्दमेंके प्रवन्धके लिये १९ महाशयोंकी कमेटी बनाई जाय जिहके मंत्री और खनान्ची सेठ हरसुखदास हजारीबाग हों।

यहांसे सेटजी बम्बई आए कि आपको दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाके पंद्रहवें वार्षिक अधिवेशनमें जानेकी फिक हुई। यद्यपि सेटजीका शरीर बहुत अस्वस्थ था। अब थोड़ासा भी परिश्रम करने व चलनेसे जिस पगमें चौट थी उसमें दर्द हो उठता था तौभी जाति प्रेम इस कदर था कि आप इधर उधर जाने आनंसे यबड़ाते नहीं थे। दूसरे द० म० सभा पर आपका अधिक प्रेम इमल्चिये था कि इस सभाके कार्यकर्ता सेटजीकी आज्ञानुसार काम करते व बहुत ही दिल्च(पी दिखलाते थे। अतएव सेठजी कानपुरसे लौटते ही दक्षिणको खाना हो गए। इस वर्ष सभाका पंद्रहवां वार्षिकोत्सव श्री

स्तवनिधि क्षेत्रपर सेठ रामचंद् नाथा द०म० जैन समाका गांधीके समापतित्त्वमें हुआ। हमारे सेठजीन १५वां वार्षिकोत्सव समापतिके प्रस्तावका अनुमोदन किया। स्तवनिधि। समामें २१ प्रस्ताव पास हुए जिनमें मुक्ष ये थे (१) छार्ड हार्डिंगके उपसर्गसे बचनेपर हर्ष। इसका अनुमोदन सेठजीने किया

उपसगस बचनपर हुए । इसका अनुमादन सठजान किया (२) कोल्हापुर बोर्डिंगकी जमीनपर धर्मशाला व यि

आश्रम बांधनेके छिपे श्रीयुत भूगल आप्तानी निरगेने जो २३००) समाको दिये हैं व मंदिरके खर्चके लिये १००) वार्षिकका उत्पन्न देनेका वि गर किया है इसके छिपे आभार माना जावे (३) छाहौरके छाला रामचंद एम. ए. सबसे पहले जैनियोंमें सिविछ सरविशकी परीक्षामें उत्तीर्ण पर आनन्द प्रकाश (४) जैनियोंकी संख्याकी कमीके कारणोंकी जाँच कीनावे (५) सच्चे धर्मीपदेशकोंके अपणका प्रवन्ध करायाः जावं (६) व्यापारमें एकात्रित धर्मादेकी रकम धार्मिक कामोंमें लगाई जावे। इस प्रस्तावको स्वयं सेटनीन पश किया। यह सेठनीका खास अमली प्रमाव था। इसके बदौलत आपने बहुतसा रुग्या इधरके लोगोंकी ना यातो खाली नमा रहता व ऐसे वैसे काममें जाता उसे शिक्षा प्रचार आदि उपयोगी कामों में खर्च करादिया यहां तक कि सांगलीकी बोर्डिंग इसी रक्तनसे ही खुल गया। खेती सम्बन्धी बस्तुओंकी प्रदर्शनो भो एकत्र की गई थी जिसको स्वयं सेठजीने अपने हाथसे खोला ।

वास्तवमें दक्षिण महाराष्ट्र सभाके कार्य अतिशव श्रुवनीय हुए हैं।

जिस समय यह पंद्रहवी बैठक हुई थी उस समय इस सभा द्वारा कार्योंकी स्थिति निम्न प्रकार थी:—

(१) नैन बोर्डिंग कोल्हापुरमे ६० विद्यार्थी कॅालेन व हाईस्कूलका शिक्षण धर्म शिक्षाके साथ लेते थे। ३२०००) की इमारत विद्यार्थीगृह, चतुरबाई सभागृह, श्री अनंतनाथ मंदिर वगैरह लेकर बंधी हुई थी।

- (२) सांगळी विद्यार्थीगृहमें १५ छात्र छात्रवृत्ति लेकर सीरक रहे थे।
- (३) सूभेदार विद्यार्थीगृह बेलगांवमें २००००) के फंडसे जो स्थापित हुआ था । १८ विद्यार्थी थे।
- (४) हुनली बोर्डिंगमें १८ छात्र थे। इमारतके लिये ६०००) जमा थे तथा ४०००) की ज़मीन एक गृहस्थन दे रक्सी थी।
- (५) 'जिनविजय' कन्ड़ीमें मासिक व सामाहिक मराठी '' प्रगति आणि जिनविजय '' ऐसे दो पत्र जारी थे क श्रीयुत चौपड़े कीर्तनके साथ उ।देश करते हुए अमण करने थे।
- (६) स्त्रीशिक्षाके लिये छात्रवृत्तिये देकर अध्यापिकाण् तैयार कराई का रहीं थीं।
- (७) स्तवनिधि क्षेत्रमें सड़क, तालाव आदि ठीक करानेमें हगारों रुपये खरचे थे।

सेठ माणिक नंद जी एक दक्षिण शान्तमें ४ बोर्डिगोंके द्वारा बैनियों में शिक्षाका प्रचार होते हुए देख कर बहुत ही हिषित थे। आप स्तवनिधिसे छौटते हुए सांगली गए। वहांके कामको ठीक होते हुए देखकर आपके चित्तमें वहां इमारत बांधनेकी आ गई क्योंकि सेठ जीको मक्तान बनवानेका व अच्छे हवादार, रोशनीबाले मकानों में छात्रोंको रहते हुए देखनेका शौक था। आप अपने समान अपने छात्रोंको भी समझते थे। जैसे आप थोग्य महलमें रहते थे ऐसे ही छात्रोंके लिये भी चाहते थे। आप सेठ रापचंद नाथाके साथ सांगलीके महाराजसे मिले । महाराजने इमारतके लिये जमीन ट्रेनेका व अन्य प्रकारसे सहायता करनेका वचन दिया। वास्तवमें उद्योग इसको कहते हैं । सेठनी बम्बई आ गए।

विकप संस्वत् १९६९ जेष्ठ मासमें सेठ माणिकचन्द्जीने शोलापुर निवासी सेठ वालचन्द हीराचन्द काइमीरका प्रवास । दोशी, सेठ जीवराज गौतमचन्द गांधी और सेंड जीवराज वालचन्द्र गांधीके साथ ६ मास तक काइमीरमें भ्रमण किया। इमका विवश्ण बहुत कोशिस करने पर हमें नहीं मिल मका परन्तु जो बहुत ही संक्षिप्त हाल जाना गया-नीचे प्रकट करते हैं। चम्बईसे रवाना होकर आगरा पहुंचे और बोर्डिंगकी व्यवस्था ठीक कराई। यहांसे दिल्ली होकर मेरठ पहुंचे और यहांकी बोर्डिंगका निरीक्षण किया। यहांसे हिस्तिनापुरके दर्शन करके देहरादृत और मसूरी पहाड़ हो कर शिपला पहुंचे और यहां मिन्डर स्थाननके छिये प्रेरणा की और दान भी दिया। यहांसे अमृतपर पहुंचे । यहां मोनेका नानकसाई देखा । यहांसे छाहौर जाकर अपनी बोर्डिंगका निरीक्षण किया। यहांसे साम्भरहेक जाकर सैन्धवको देखा । यहांसे जम्बू और रावछपिन्डी होते हुए फ्रिटन व तांगेमें बैठकर काश्मीर पहुंचे। यहां १२ दिन टहरे। यहां जेलम नदी, बाग, बड़ी मसज़िंद आदि देखे और केशरके खेत देखकर केशर लरीट की । यहांसे रावलपिन्ही, पंशावर, मुल्तान, करांची, जोधपुरमें जा कर २ या ३ दिन तक ठहरे और जोधपुरसे सीधे श्रावण मासमें बम्बई आ पहुंचे । इस अनणमें दो स्थानगर युर फोटो छिये गये थे भी अन्यत्र मुद्रित हैं।

बस्बई नगरमें पुराना गुजराती दिगम्बर जैन मंदिर है। यहां
पर माणिकचंद लामचंद नामकी जैन पाठशाला
बस्बई गुजराती दि० चालू की गई थी। उस मंदिरके मुख्य प्रवजैन मंदिर। नवक नेमचंदने इसका विरोध किया जिसपर
पंचोंमें परस्पर झगड़ा हुआ। मामला अदालत तक पहुंचा। इसमें सेठजीको उल्झकर कोशिस करनी पड़ी।
इससे मंदिरका छः या ७ हजारका भंडार खर्च हो गया तथा जिन
प्रतिपक्षियोंके पास भंडार न था उनका जातीय रुपया खर्च हुआ।
अंतमें आपसमें समाधानी हुई। कोर्टने कुछ नियम बनाके पांच ट्रष्टी
नियत कर दिये जिनमें सेठ माणिकचंदजी भी एक हुए।

जब सेठ पानाचंद्रजीका देहान्त हुआ त्व आपके अंतिम विवाहसे अर्थात् रुक्मणीबाईसे तीन संतान सेठ पानाचंद्रजीकी सजीवित थीं, उनमेंसे छीछावतीका संतान। विवाह परोपकारी, विद्याप्रेमी व उद्योगी जोंहरी ठाकुरदास मगवानदासके साथ हो गया जिनके संयोगसे वर्तमानमें एक पुत्री है। सं. १९६९में छीछावती १७ वर्षकी थी। इसी समय दूसरी कन्या रतनबाई जो सं० १९६९में १५ वर्षकी थी व पढ़नेमें बहुत ही चतुर थी, जिसने ६ वी श्रेणी तक चंदाराम गर्छ हाईस्कूछमें इंग्रेजी शिक्षण प्राप्त किया था सो यकायक बहुत सख्त बीमार होकर सुरतमें जा

ता. ३ मार्च १९१३को इस संसारसे चल बसी । इसको शिक्षाका बहुत प्रेम था । मरनेके पहले इसने अपनी

एक कन्याका इच्छासे ही १५०८०) का दान स्त्री शिक्षा-१५०००)का दान । के छिये किया और मातासे कह गई कि

इस स्क्रमसे दि० जैन सपानमें स्त्री शिक्षा का प्रचार किया जाय। वास्तवमें दानियोंकी संतान भी दानी होती है। इसके वियोगसे इसकी माता रुक्मणीबाईको तो शोक हुआ ही पर सेठनीको भी भारी दुःख हुआ क्योंकि ऐसी शिक्षित सुशीछ कन्यासे सेठनी भविष्यमें जैन जातिकी उन्नतिकी बहुत कुछ आशा रखते थे। रुक्मणीबाईको अपनी तीसरी संतानपु—न्न टाकुरभाईको देखकर संतोष हो जाता था। सं० १९६९में यह १३ वर्षका था और नित्य स्कूछमें पढ़ने जाता था। इसका चित्त सरछ व कुछ धर्म-परायण है। संठ पानाचंदकी कीर्तिको यह विस्तृत करेगा ऐसी आशा रुक्मणीबाई व अन्य कुटुम्बी जनोंको है।

पिताके समान आलस्य रहित श्रीमती मगनबाईजीन इन्दौर छावनीमें सेठ गेंदनलाल और भूरीबाई द्वारा श्रीमती मगनबाईजी- निर्मापत नवीन जिन मंदिर बिम्न प्रतिका उद्योग। प्रोत्सव पर जाकर ८ दिन तक कई स्त्री सभाएं करके मिश्र्यास्वत्याग, शीलत्रत आदि पर व्याख्यान देकर सैकड़ों स्त्रियोंसे नियम कराए। श्रीमती पार्वतीबाई, गुलाबबाई, हंगामीबाई आदि पढ़ी हुई बहनोंके साथ ज्ञान चर्चा करके बहुत लाम प्राप्त किया, फिर ता. २८-२-१३ को बम्बई लौट आई।

हम ज्यों २ सेठजीके कृत्योंका विचार करते हैं त्यों २ सेठजीके निरालस्य और शिक्षाश्रेमी स्वभाव-सेठजीका विद्यार्थियोंसे की कोमलता देखकर आश्चर्य होता है। प्रेम और कोल्हापुर कोल्हापुर बोर्डिंगके विद्यार्थियोंने एक विद्यार्थी सम्मेळन स्थापित कर रक्ला था जिसका गमन । उत्सव ता० २१ अप्रैल १९१२ को बड़े समारोहसे करना विचार कर मांगली, हुवली, शोलापुर व बेलगांव बोर्डिगोंके छात्रोंको व अन्य गांवोंकी करीव ४०० नैन मंडलीको एकत्रित किया। मि० ए० पी० चौगले, रा० रा० हट्टे तथा विद्यार्थियों के सच्चे पिता सेठ माणिकचंदजीको भी बुलाया था। ध्वना पताकाओंसे मुशोभित करके एक मंडर बांधा गया था । सबेरे ही दुरीन प्रनादि नित्य कर्मके पीछे सर्वका दूघ चायसे सत्कार किया गया। फिर सर्व विद्यार्थियोंका फोटो लिया गया। सेठनीने अलाड़ेका द्वार खोला। कुस्तियोंकी कप्तरतके पाथ २ पटा खेलना, दौड़ना, गेंद् फेंकना आदि खेल दिखलाए गए। हरएक खेलमें सर्वोत्तम तीनको इनाम दिये गए। १०॥ वजे प्रोफेसर शिदेका जादका खेल हुआ। फिर सर्व मंडलीका विद्यार्थियोंने पकान्न मिठाई आदिसे खूब भीजन सत्कार किया। फिर ४ बजे सभा प्रारंभ हुई। अजैन विद्वान् भी पधारे थे। सभापतिका आसन हमारे दानवीर सेठजीको प्रदान किया गया। गानकं बाद श्रीयुत् हाल सेठीने रिपोर्ट मुनाई। उसके भीतर कहा कि द० म० नैन समाके स्थापनके पहले इस प्रांतमें शिक्षा प्रचारका प्रयत्न रा० रा० चौगले, हंने, लहे, आवटेने किया था। फिर सभा स्थापित

हुई और सेठ माणिकचंदजीका समागम मिला जिससे यह बोर्डिंग व उस सम्बन्धी अनेक समाएं हुईं। इस बोर्डिंगसे आज तक १५० छात्र पढ़कर चले गए हैं और अब मी ६० पढ़ रहे हैं। फिर छःत्रोंके इंग्रेजी व मराठीमें भाषण होनेपर रावसाहब जाट्वरावने विद्यार्थियोंको उपदेश किया उसमें कहा कि "सत्य बोलो, कर्तन्य कर्म करो तथा अपनी शिक्षामें प्रमाद न करो-यह उपदेश पूर्वके गुरु देते थे, उसीको ग्रहण कर सबको चलना चाहिये। रा० रा० डोंगरे, व लहेके भाषणके पीछे अध्यक्ष सेठजीने कहा कि " यहां विद्यार्थियोंका सम्मेलन देखकर मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है। विद्यार्थी अपना २ काम अच्छी तरह करते हैं, यह बात भले प्रकार देखी जाती है। बम्बई बोर्डिंगकी अपेक्षा कोल्हापुर बोर्डिंगकी व्यवस्था अच्छी नजर आती है। इसका कारण रा० रा० लंडेका नित्य निरीक्षण है।" फिर रा० रा० डोंगरेने अच्छे निवन्ध लिखनेपर दो छ।त्रोंको १०) व ५) इनामके दिये। पहलेने १०) बोर्डिंगकी होटलके इमारत फंडमें अर्पण कर दिये।

रात्रिको ८ बजे पूनाका बृहत् सभारंभ हुआ । इस तरफ रात्रिको पूजन करनेका खाम कर समारंभके अवसरपर बहुत बड़ा रिवाज है। पूजनके पीछे रा. रा.चौगलेके समापतित्वमें मि. बुगटेने नैनवर्मपर व्यास्त्रान दिया । दूसंग दिन कोल्हापुर और वेलगांवके विद्यार्थियोंका मैच हुआ, जिसमें कोल्हापुरके विद्यार्थी जीते । सेट माणिकचंदजी इन छात्रोंकी कार्रवाईको देखकर व अपने तन, मन, धनके उपयोगकी सफलताको जानकर अतिशय आनन्दमें लीन हो गए।

सेठ नवलचंदके तीन संतान हैं। इनमें पुत्र ताराचंदका लग्न

सं. १९६३ में सुरतमें हुआ था उससे
अक्षय तृतीयामें व्यव- ताराचंदको १ प्रतीका लाभ चैत्र वदी १४
हारिक कार्य और सं. १९६९ को हुआ था पर वह वैशाल सुदी
सेठ नवलचंदजीकी ७ को संसारसे कूच कर गई। फिर आषाढ़
संतान। सुदी १२ सं. १९६७ को निर्मला
नामकी कन्याका जन्म हुआ जो अब
आनन्दसे बालकीड़ामें लवलीन है। इस वीर संवत् २४३९में पुत्री
माणिकबाईकी अवस्था १५ वर्षकी हो गई थी। वैशाल सुदी ३ के
शुभ दिनमें सेठ नवलचंदजीने अपनी इस पुत्रीका पाणिगप्रहण
पूता निवासी सेठ जैचंद माबचन्दके सुपुत्र हीरालालके साथ बड़े
उत्साहसे जैन विधिके अनुसार बम्बई एलक पत्रालाल देशी दवालानेके
जैन वैद्य भरमण्णा बम्मण्णा उपाध्यायसे कराया। यथायोग्य संस्थाओं

अहमदाबादमें सेठ प्रेमचन्द मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंगके हातेमें थोड़े ही दिन हुए सेठ माणिकचन्दनीकी अहमदावादमें माता भाबी रूपाबाईजीने एक धर्मशाला बनवा दी रूपाबाई द्वारा थी। एक दिन आपके चित्तमें आई कि १५००० का विद्यार्थियों व अन्य नगरनिवासियोंको औषधा स्य। शुद्ध देशी द्वाओंका दान हो तो बड़ा उपकार हो। ऐसा विचार कर माताजीने

आदिको दान भी किया गया।

अपने मनका अभिप्राय सेठ माणिकचन्द्रनीको कहा । सेठजी ऐसे कामोंके छिये सदा ही अग्रगामी रहते थे। आप तुर्त ही अहमदाबाद गए और वहां एक वैद्यको तलाशकर श्रुत पंचमी अर्थात् जेष्ठ सुदी ५ वीर सं. २४३९ व विक्रम सं. १९७० (माखाडी) ता. ९ जून १९१२के दिन प्रसिद्ध वैद्य जटाशंकर छीलाधरके सभापतित्वमें सभा करके घर्मार्थ औषधालयकी स्थापना करा दी । माता रूपानाईने इसके लिये १५०००) हीराचंद्र गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूल वम्बईके ट्रष्ट कमेटीके आधीन कर दिये हैं।

मिती आवाद बदी ४ ता. २२ जून १९१३ को सेंड माणिकचंदजीने सुरतमें फूलकौर कन्याशालाका फूलकोर कन्याञ्चालामें दूमरा वार्षित अधिवेशन सरदा सेठ ईश्वरदास जगजीवनदाय स्टोरके समापतिस्वमें किया । सेठर्जा । मूलचन्द्र किपनदासनीने रिपोर्ट सुनाई। बालि हाओं से धर्म सम्बन्धी शहोक व म्होत्र सुननेके पीछे वार्षिक परीक्षाके उपलक्षमें कन्याओं को पुस्तक व वस्ता दिकका इनाम दिया गया। ''पुत्रीन मातानी शिखामण'' और ''नारी दुर्वणमां नीति बाक्यों' पुस्तकें बांटी गई। इस समय ९२ बालिकाएं थीं जिनमें २४ दिग० व २१ श्वे॰ जैन थीं। सेठजीने सर्वका आभार मानव कन्याओंको चतुर देख अपनी हक्ष्मीके सद्दुपयोगसे परभ हर्ष माना।

श्रीमती मगनबाई अपने श्राविकाश्रम द्वारा योग्य कार्य्य होनेमें कभी चुकती नहीं थीं। श्रीमान् श्राविकाश्रम बम्बईमें छार्ड हार्डिंग महोदयके वर्षगांउके दिन ता. २० जून १३को श्राचिकाश्रपमें धर्मपत्नी सभा । सेठ हरनारायणदास रामनारायणदासके समा-पतित्वमें सभा हुई, जिसमें लंडि हार्डिंगकी दीर्घायु होनेका गीद गाया गया मिष्टान विश्रण हुए तथा शिक्षा विभागसे नो लाई और छेडी महोद्यके फोटो प्राप्त हुए थे सो बांटे गए। इस समय श्रीमती पार्वतीबाईने ५०) आश्रमको दिये। और भी १००) से ऊपरका फंड हुआ। श्रीमान् सेठ जमनालाल वर्षाको धर्मपत्नीने लाई महोद्यके फोटोपर व प्रमुखाको हार पहनाया। मगनबाईजीने सबका आभार मान समा विसर्जन की।

दानवीर सेठजीके भानजे स्वर्गवासी सेठ चुन्नीलाल झवेरचंद्की विवाहिना प्रत्री कीकीव्हेन स्त्री शिक्षामें ५०००) उर्फ परसनवाईका मरण ता. २५ जुन १९१३ को हो गया । इस बाईको भी धर्मका अनुराग था सो मरणके पहिले ५०००) स्त्री शिक्षा प्रचार व ५००) अन्य धर्म कार्थमें दान किये। इपकी माता जड़ाववाईको इसके वियोगसे बहुत कष्ट हुआ, क्योंकि जड़ाववाईके दो प्रत्रियां थीं—एक तो पहले ही चल बसी थी दूपरी अब चल दी। सेठ मा-णिकचंदजी और मगनवाइजीक समझानेसे जड़ाववाईनीको सन्तोप हुआ और यह अपने जोवनको धर्मकार्थमें लोन करने लगीं।

सेठभीको यह नानकर बहुत हर्ष हुआ कि विद्यायतमें वेरि
हर नगमिन्द्रखालनीके प्रयत्नसे ता. १४—

महावीर बदरहुड ८—१३को महावीर ब्रद्रहुड स्थास्थापन। पित हुई, नित्तके समापित मि. हर्बर्ट वारन,

उपसभापित जुगमिन्दरलाल नैनी और मंत्री

अलेक्ज़ैन्डर गॉर्डन और उपमंत्री उनकी स्त्री मिस गॉर्डन

है नो नैनध्मे धारण करते हैं वे इसके सभासद होते हैं।

सेठ हीराचन्द्र गुपानजी जैन बोर्डिंग बम्बईमें ता० २ सितम्बर १९१३ को मणीलाल होकमचंद उदाणी हीर। चन्द गुमानजी एम० ए० एलएल० बी० ( जो इसी बोर्डिंगमें सभा। बोर्डिंगके छात्र थे ) के सभापतित्वमें सभा हुई, जिसमें सेठनी भी उपस्थित थे। उस समय ब्रह्मचारी शीतलप्रसादमीने जैन समाजोन्नतिके विषयमें व्याख्यान दिया । प्रमुखके विवेचनके पीछे सेठजीने सर्वको धन्यवाट दे सभा विभन्नेन की । इस समय इस बोर्डिंगके छात्र सेटनीको बडी ही मिक्तिसे देख रहे थे, नयोंकि जिस बम्बई स्थानमें ठहरनेको जगह नहीं मिलती थी वहां अनेकों छ:त्रोंने इस स्थानमें सुखसे रहकर विद्याका लाभ किया था, इसी उपकारकी स्मृति छात्रोंकी भक्ति सेठजीपर कराती थी।

वर्धा दिगम्बर जैन बोर्डिंगका वार्षिकोत्सव मिती आसोन बदी ५ सं० २४३९ ता० २१ सितम्बर वर्धा दि० जैन बोर्डिंग १६ को बहुत धूमधामसे हुआ। वहांके माइयोंके प्रेपसे आकर्षित होकर सेठनी भी व सेठजी। पचारे थे। वहांके कार्य्थका निरीक्षण कर आप संतोषित हुए ।

मिती कार्तिक बढ़ी १ ता० १६ अक्ट्रवर १३ की रात्रिको हीराबाग लेक्चर हॅालमें सेठ कस्तूरचंद इंदौर-राजवहादुरको सन्मान निवासीको सर्कारसे रायवहादुरका पद मिलनेके उपलक्षमें सेठ माणिकचंदजीके समा-और २५००) पतित्वमें बम्बईके दिगम्बर जैनोंकी सभाहरी। का दान।

ब्रह्मचारी शीतलपसादमी भी मौजूद थे। बांदीके

कास्केटमें एक सुन्दर मानपत्र सेठ कस्तूरचंद्रजीको अर्पित किया गया । सेठजीने इस अवसरपर २५००) स्याद्वाद महाविद्यालय बनारसके ध्रुवफंडमें प्रदान किये । हज़ारोंके दानकी प्रथा बलानेमें सेठ माणिकचंद्रजीकी उदारता ही कारण है ।

गनपंथाजी तीर्थका प्रबन्ध केवल सेठ रावजी नानचंद शोलापुरके ही आधीन था जिससे प्रायः शिकायतें
श्री गजपंथाजी रहा करती थीं । सेठजीने हीरावाग धर्मशातीर्थके लिये लामें ता० २७ अक्टूबर १९१६ को रावजी
प्रवन्धकारिणी नानचंद, ब्रह्मचारी शीतलप्रसादनी और वालचंद
सभा। रामचंद द्वोशीसे सम्मति करकेएक नियमावली
व ११ महाशयोंकी सर्व प्रान्तीय प्रवन्धकारिणी कमेटी बनाई, जिसके मंत्री शाह हीराचंद अमीचंद और
सभापति सेठ रावजी नानचंद नियत किये। जबसे तीर्थका काम
यह कमेटी सन्तोपकारक कर रही है।

इन्दौरके विद्याप्रेमी सेठ तिलोक चंद कल्याणमलने २ लाख राया विद्याप्रचारके लिये निकालकर विद्वानों-सेठजी इन्दौरमें और की सम्मति छी थी कि किम काममें २ लाखका दान । लगावें तथा इसीलिये कार्तिक सुदी ८ वीर संवत २४४० ता. ६ नवम्बर १९१३ गुरुवारको आपने खास २ माइयोंको निमंत्रण कर बुलाया । बम्बई-से सेठजी भी पहुंचे थे।पं० गोपालदासजी, पं० अर्जुनलालजी सेठी, ब्रह्म-चारी शीतलप्रसादजी आदि भी आए थे। बहु सम्मतिसे " निल्हों-कचंद जैन हाईस्कूल " का खोलना निश्चय हुआ व मैने जिंगा कमेटी बनी । इस सभामें सेठ हुकमचंदनी सभापति हुए थे जिनके नियत होनेके प्रस्तावका समर्थन दानवीर सेठनीने किया था । सेठ माणिकचंदनीकी ओर विशेष छक्ष्य होनेसे उसीके अनुभार ही हाई स्कूछ खोछनेका इड़ विचार हो गया। यह दान व ऐसा विचार यह सब सेठजीकी दानवीरताका अनुकरण है।

सेट माणिक चंद्रजी जिस काममें रुपया लगाते थे उस कामको इतना पक्का कर देते थे कि उस कार्य्यकी सेटजीके कार्योंकी नींव कभी भी न बिगड़े। आपने बम्बई, हढ़ता। अहमदाबाद, रतलाम बोर्डिंग व हीराबाग धर्मशालाके फंडोंको एक रजिप्टरी हुई ट्रष्ट कमटीके सुपूर्द कर दिया था कि जिसमें कोई भी उस रकमको सिवाय उस नियत कामके और किसी काममें कोई खर्च न कर सके व यदि कभी किसी ट्रष्टीकी नियत खराब हो तो बह सर्कार सी दंखित हो मके।

कोल्हापुर वे डिंगके लिये राजा साहवसे ज्मीन मुफ्त लेनमें व इमास्त बांधनेमें सेठजीने बहुत परिश्रम कोल्हापुर बोर्डिंगकी टटाया था। आपने ता. १४ जुलाई १९१३ दृष्ट डीड। के रोज ६ ट्रप्टी नियत कर कोल्हापुर बोर्डिंगकी ट्रप्ट डीड रिजिप्टरी कराके बोर्डिंग-की जमीन व इमारतकी अनुमान ५००००) की मिल्लियत उनके सुपुर्द कर दी। ५ प्रटी ये हुए—(१) स्वयं सेटजी (२) आप्पा साहब देसाई परगणतेर दाल टांगे हनगंडी (३) चौगले वकील (४) रा. रा. लहे एम. ए. (५) भूपाल आप्पाजी जिस्गे कोल्हापुर ६

ट्रष्ट डीडमें नियत किया कि इस रकमका उपयोग दिगम्बर जैन विद्यार्थियों के विद्याप्रचार ही में हो तथा जमीनपर विद्यार्थियों के लाभार्थ व धर्म सम्बन्धी इमारतके सिवाय और कोई इमारत न बने तथा सब छ।त्रोंको दिगम्बर जैनधर्मका शिक्षण अवइय लेना पड़ेगा । यह ट्रष्ट डीड सेठ माणि कचंद हीराचंदके हस्ताक्षरसे ''प्रगति आणि जिनविजय'' पत्र ता. ९ नवम्बर १९१३में प्रगट हो गया है । धन्य है सेठनीकी दूरदर्शिता ।

ता. १५ नवम्बर १९१३को सम्पूर्ण जैनसमानके सबसे प्रथम I. C. S. कलेक्टरकी परीक्षामें सेंडजी द्वारा विद्वान्- उत्तीर्ण होकर होहौर निवासी छाला का सन्मान मनोहरलाल दिगम्बर नैतके सुप्त बाबू रामलाल डक्ल एप.ए. विलायतसे जहाजपर बम्बई बंदरपर पत्रारे । सेठनी विद्याधेनके वहा होकर उनके पिता व अन्य महारायोंके साथ बंदरपर गए । हार तोरासे भन्ने प्रकार स्वागक करके रामचन्द्रजीको गुजालवाड़ीके दिगम्बर जैन मंदिरजीके दर्शन कराकर हीराबाग धर्मशालामें लाकर भले प्रकार ठहराया व सन्मान किया । विद्यार्थियोंसे संठनीका प्रम स्वामाविक होता था ।

सांगलीनिवासी सेठ देवचंद सांकलचंदन ५०००) मृत्युके पहले धर्मार्थ दिये व यहींके एक जैन ज्यापारी सैठजीके दानका रा. रा. बालगौंडा नवगौंडा पाटीलने सांगलीके बोर्डिंगको अपने १०००) की बीमेकी अनुकरण । रकम दे डाली तथा शोलापुरके प्रसिद्ध सेठ हरीमाई देक्करण बाले सेठ बालचन्द रामचन्दकी पाता श्रीपती



वाई रूपामाजी,-मातुश्री प्रेमचन्द मोतीचन्दजी.

(देखो हड १००)

J. V. P.;Surat-

.

ę

मैनाबाई ७२ वर्षको आयुमें ता० ३ नवम्बर १२१३ को स्वर्गधाम पधारी । उनकी स्मृतिमें उनके सुपुत्रोंने १५०००) रु० विद्यादानके अर्थ निकाले।

नए वर्ष अर्थात् १९१४ के प्रारंभसे सेठनीका शरीर यद्यपि नाहरसे किसी प्रकारके रोगोंसे पीड़ित नहीं सेटजीकी शरीर हुआ था पर अंतरगमें आपको बहुत निर्वेछता स्थितिमें अशक्तता। माछ्य होती थी-किसी भी बातका बहुत विचार करनेसे आपको चक्कर आ जाया करता था । इस समय आउके चित्तमें बड़ी मारी चिंता श्री सम्मेद-शिखर पर्वतरक्षाकी मौजुद थी। हाहा प्रभूद्वाहकी प्रेरणा ब तीर्थक्षेत्र कमेटीके परोक्ष प्रस्माव नं० २ ता० १६-१०-१२ के अतुमार ता. ५ सितम्बर १९१३को हजारीबाग कोर्टमें पर्वतका पट्टा कायम रक्षा जावे यः उमका हर्जा २ लाख रुपया मिले। ऐसा मुक्दमा बाबू धन्नूलाल और लेड परमेष्ठीदासजीकी ओरसे राजा रणक्हादुरसिंह पालगंज और बाबू कृष्णचंद्र घोष मैनेजर कोर्ट ऑफ वाईनपर दायर कर दिया स्या । एक मुकद्दमा जो श्वेताम्बरियोंने दिगम्बरियोंको स्वतंत्र पुजनके हक न होनंका किया था, कोर्टमें अटका पड़ा हुआ था। इन्हीकी परवी अच्छी तरह हो कि जिसमें परम पूज्य पर्वतकी रक्षा रहे और दिगम्बर जैनियोंकी भक्तिमें कभी कोई अन्तराय न पड़े ऐमी सेठजीको चिन्ता रहती थी और कमे-टीके दफ्तरमें आपको पत्रोंके उत्तर देने पड़ते थे। यद्यपि शरीर अशक्त था, पैरोंमें विशेष दर्द होचला था, तौभी आप नियमके अनुसार ही सब काम करते थे। समय पर ही हीराबाग व द्कान

पर जाते व समयपर ही छौटकर आतं, सर्वसे बातचीत करते व समयपर ही रात्रिको शयन करते थे।

इस वर्ष श्री स्याद्वार महाविद्यालय काशीके संचालकांने बना-रसमें नवम वार्षिकोत्सव ता. २३ से २९-स्याद्वाद महा विद्यालय १२-१९१३ तक बढ़ी धूमधामसे टौनहालमें काशीका नवम मनाया था। सेठ माणिकचंदजी इस संस्थाके वार्षिकोत्मव। सभापति थे। आपको पधारनेकं लिये प्रेरणा भी बहुत हुई तथा आना भी चाहत थे पर शरीरकी अशक्तता काशी आनेके लिये गवाही नहीं देती थी इससे आप नहीं आए पर समानके अच्छे २ व्यक्ति पं. गोपालदासनी, पं. अर्जुनलालंजी, जुगमन्दिरलालजी एम. ए., अजित प्रसादजी एम. ए. आदि उपस्थित थे। जर्मनीके प्रोफेसर हमन जैकोबी भारतमें आए थे। इनका स्वागत भले प्रकार करके सभापित बनाये गये थे। सर्व दिगम्बरियोंकी ओरसे आपको मानपत्र अर्पण किया गया था। ता. २५ दिमम्बरको मिस ऐनी बिसेन्टने सभापतिका आसन ब्रहण किया था उस समय भारत जैन महामंडलकी ओरसे श्रीमती मगनबाईकी स्त्री शिक्षा

मगनबाईको जैनमहि- प्रचारकी सेवाको ध्यानमें छेकर उनको जैन-छारत्नका पद महिला रत्नका पद प्रदान किया गया और एक मनोहर कविताके साथ मेजा

गया। बाई जी जल्सेमें आ नहीं सकी थी।

ता. २६ को सभापति पंडित गोपालदासजी हुए थे। ता. २७ को महामहोपाध्याय डा. सतीशचंद्र विद्याभूषण एम.ए. पी.

एन. डी. प्रन्सिपल संस्कृत कॅालेन कलकत्ता सभापति हुए।तब डा. ैनेकोत्रीको मानपत्र दिया गया व भारत नैन महामंडलकी ओरसे " जैनदर्शनदिवाकर " की उपाधि डा. नैकोबीको प्रदान की गई। २८ को हर्मन जैकोबी सभापति हुए तब डाँ० सतीशचंद्र-को ' सिद्धांतमहोदधि 'का पद दिया गया। ता. २९, को प्रोफेसर डाक्टर ओ० स्ट्रास कलकत्ता सभापति हुए तब हर्मन जैकोवीन अपना ज्याख्यान पट्टा उसमें द्विन्नलाया कि — (Jainism is independent of Budhism, Jainism is even older than Budhism, Budhists Borrowed from Jains the technical term Ashrava."; जैन धर्म बौद्ध धर्मसे स्वतंत्र है, जैन धर्म बौद्धसे भी बहुत पुराना है, बौद्धोंने आश्रव का विशेष शब्द नैनियोंसे लिया है। इसी दिन भारत जैन महामंडल की ओरसे सेठ कल्याणमलनी इन्दौरको "दानवीर" ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीको ' जैनधर्मभूषण ' व प्रयाग बोर्डिंगके लिये २५०००) दान करनेवाली सुमेरचंद्नी-की धर्मपत्नीको ' विद्याप्रेमिणी 'का पद दिया गया। आमद २०००)की हुई। बाबू देवेन्द्रकुमार, और बाबू नंदिकशोरने बहुत परिश्रम उठाया । तथा बाबू चेतनदास बी. ए. महामंत्री महामंडलने अपने मेम्बरोंको भी बुला लिया था जिससे उसका भी जल्सा साथमें ही हो गया था। सेठजीके पास सर्व रिपोर्ट गई। आपने पढ़कर हर्ष माना कि अपने निमित्तसे खुलनेवाला स्वाद्वाद् महाविद्यालय प्रसिद्धिमें आ रहा है।

नकल कविता उपाधि जैनमहिलारत्न । श्री मगनबाई देवि !, जय जयि जिन-पद-सेवि ।

तुम धन्य है सु-प्रयत्न, हो जैन-महिला-रत्न ॥ १ ॥ तुम्हारो सबै स्वच्छन्द, स्त्रागत करें सानन्द । तुम किये बहु ग्रुम कृत्य, है चुकी तुम कृतकृत्य ॥ २॥ महिला रहीं जो अज्ञ, तुम्हारी मई सु कृतज्ञ। "शिक्षा" प्रचार प्रशस्त, तुम कियो घृमि समस्त ॥ ३ ॥ दै "धर्म"को उपदेश, पूरण कियो उदेश। मृदु मधुर बानी बोलि, शुभ "श्रादिकाश्रम" खोलि ॥४॥ "छात्रालयन" खुलवाय, "विधवाश्रमन" बनवाय । करि सके नरन प्रवीन, वह काम तुम करि दीन ॥ ५ ॥-सत् दानवीर अमंद, श्रीसेट माणिकचंद। बढ़ि पुत्र सी तुम काज, कीन्ह्यीं सुता है आज ॥ ७ ॥ ''जैनी-महिला-परिषद ''का संस्थापन करने वाली ! करें कहाँ तक. देवि, प्रशंसा, तुम हो नारि निराली ! ॥८॥ भारत-जैन-प्रहामण्डल यह, आदर की आगधि। "जैनी-प्रहिलारनन" नाम की, अर्पण करै उपाधि ॥९॥ आहार है, निज जनन को, यह सादर उपहार । उत्सवक आनन्द महँ, है है अङ्गोकार ॥ १०॥ कुपार देवेन्द्रपसाद जैन-काशी ।

वीर सं० २४४० में मार्गशीर्ष सुदी ३ के दिन श्रीमती मगनबाईजीने अपनी एक मात्र कन्या केशर मगनबाईजीकी पुत्रीका मती की लग्न सूरतमें जाकर पूना निवासी विवाह। जेचंद्र मानचंदके पुत्र चंदूलालके साथ बड़े समारोहके साथ जैन पद्धतिके अनुसार की। उस समय सूरतकी फुलकुंवर कन्याशालाकी कन्याओंसे गायन गरबा आदि गवाया व कन्याओं को मिठाई सहित प्याले व अध्यापकोंको भी इनाम दिया। ८५) जैन संस्थाओं वे बाँटे। केशरमतीको गुनराती, हिन्दीकी शिक्षा होकर इंग्रेनीकी शिक्षा हो रही थी, संस्कृतमें मार्गीपदेशिका चल रही थी। अपनी पुत्रीके पढ़ानेमें माता मगनबाईने कोई कप्तर नहीं रक्तवी थी । तथा इसके वर चंद्रलाल भी धर्मप्रेमी व कॅालेजकी पटाई पटनेवाले हैं जिनकी ब्रितीय भाषा संस्कृत है। अब ये दोनों दम्पति सम्बस्ने बम्बईमें ही निवास करते हैं।

श्रीमती मगनवाईजीका चित्त भी समाजसेवा करनेसे कभी उकताता नहीं था । आप पुत्रीके लग्नसे वडवानीके मेलेमें छुट्टी पाकर वस्बर्ड आश्री बड़वानी सिद्धक्षेत्र-के मेलेमें उपदेशार्थ पशारीं । यह नीमाइ मगनवाईजी। जिलेमें मऊकी छावनीसे ८० मील एक

देशी रियामत है। वहीं श्री चूलगिरि पर्वत है नहांसे प्रसिद्ध रावणके पुत्र इंद्रजीत और कुंभकरणने मुक्ति प्राप्त की है। पर्वतपर ८४ फुट ऊंची श्री ऋषभद्वकी अति शाचीन द्रीनीय मूर्ति है जिसको बावन गजाजी कहने हैं। इसकी बड़ी महिमा है । यहां माछवा प्रान्तिक समाका वार्षिक जल्सा था । सेटजीको बहुत आवह करके बुलाया गया पर मेठनी न आ सके। ब्रह्मचारी शीतलप्रसादनी आए थे। मेला पौष सुदी ८ से १५ तक था। दानवीर सेउ हुकमचंदजी आए थे। माघ सुदी १३, १४, १५ को जल्से हुए। खास बात बादनगजाजीके जीर्णोद्धारके छिये ११४१२) का चंदा हुआ। जिसमें सेठ हुकमचंद्जीने २१००) व रोड़मल मेघराज सुसारीने १००१) दिये। वड़वानी वोर्डिंग कमेटी बनी तथा सुदी १५ को दीवान स्थापन। साहब कुंवर भारतिसंह द्वारा दिगम्बर जैन बोर्डिंग खोला गया जिसमें श्रीमती मगनबाईजीने १०१) दिये व श्रीमती मगनबाईके व्याख्यानोंको राज्य वर्गने भी सुना। स्त्रियोंमें आपके जानेसे बहुत जागृति फैली। २०० श्राविकाश्रमके लिये चंदा भी हुआ। बहुतसी स्त्रियोंसे अनेक नियम लिवाये।

श्री सेत्रंज्ञय तीर्थ पालीतानामें बम्बई प्रान्तिक सभाका वार्षिकोत्मव मिती मात्र सुदी ३ से ६ तारीख पालितानामें प्रांतिक २९ जनवरीसे १ फर्वरी तक था। सेट सभाका जल्मा। माणिकचंदजीको जानेकी बहुत बड़ी आवश्यक्ता थी पर आपने दारीरकी अद्यक्ताको कारण जाना उचित नहीं समझा पर आपके छोटे भाई सेठ नवल-चंदजीको भेज दिया। सभापति श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी हुए थे। आपने अपने ज्याक्यानको पढ़ते हुए विद्या-

४ लाखका दान । प्रचारादि कार्योके लिये ३ लाखका दान व अपनी धर्मपत्नी कंचनबाईके ओरसे १ लाखका दान किया । १३ प्रस्ताव मामूली पास हुए । सभाके लिये जनरल फंडकी अपीलमें १००१) दानवीर सेठ हुकचंद्जीने दिये । कुल फंड करीब १७००) का हुआ । इस समय यात्री ४०००) के अनुमान आया था । सेठ नवलचंद्जी और मूलचन्द्जी कापड़ियाने 'निर्विध सर्वका स्वागत, पूजा व सभाका प्रबन्ध आदि करनेमें खूब परिश्रम लिया ।

श्रीमती कंकुबाई, लिलताबाई व कई श्राविकाश्रमकी बाईयोंके पधारनेसे खियोंमें भी खूब उपदेश हुआ। शरीरकी बीमारीके कारण श्रीमती मगनबाईजीका आगमन नहीं हुआ था।

भारत दि० जैन महिला परीषद्की चौथी वार्षिक सभा शोला-पुर निवासी सेट जीवराज गौतमचंद्की महिला परिषद्का धर्मपत्नी रतनबाईके सभापतित्वमें हुआ। चौथा वार्षिक २ बैठकें हुई। चार प्रस्ताव पास हुए। उत्सव। श्राविकाश्रमके लिये २५०) का फंड हुआ जिसमें श्रीमती लिलताबाईने स्वयं १०१)

दिये। यह बाईनी ऑनरेरी रूपसे श्राविकाश्रम खुलनेकी मितीसे बराबर काम कर रही हैं। अपनी शाइवेट कुछ मम्पत्ति है उसमेंसे यह रकम दानमें लगादी है।

शोलापुरमें सेउ नाथारगंजी गांधीन २६०००) ग्वर्च करके एक मनोज्ञ मकान बोर्डिंगके लिये बनवाया शोलापुरमें बोर्डिंगके था तथा सेठ हीराचंद नेमचंद मंत्रीने एलक मकानका खुलना। पन्नालालजी जैन पाठशालाके लिये भी एक मकान उसी हातेमें बनवा दिया था। इसीके उद्घाटनकी किया फाल्गुण सुदी २ को इन्दौर निवासी रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजीके सभापतित्त्वमें हुई। शरीर ठीक न रहनेपर भी दानवीर श्रीमान् सेठजी बोर्डिंगके प्रेमवश पं० चन्नालालजी आदिके साथ बम्बईसे पहुंच गए थे। उत्सव सानन्द हुआ तब

प्रमुखने १०००) पाठशाला व ७००) बोर्डिंगके फंडमें दिये व १ वर्षतक दो छात्रोंके लिये मासिक वृत्तिये नियत की । सेठजी मकानको देखकर बहुत प्रमन्न हुए क्योंकि इनको मकान बनवानेका बहुत शौक था तथा इस फंदमें एक अच्छे इंजीनियरसे भी अञ्छी सलाह दे सकते थे।

सेठनीको बम्बई छौटकर यह मुनकर और भी हर्ष हुआ कि बड़वाहा जिटा नीमाड़में भी श्रीमती भागा-बड़वाहामें बोर्डिंग । बाईने १००००) दानकर अपने पतिके नामसे "प्यारचन्द्ञा दिगम्बर जन बोर्डिङ्ग "रायबहादुर सेठ तिलोकचन्द कल्याणमल्लके हाथसे

बोडिङ्ग 'रायबहातुर सेठ तिलोकचन्द कल्याणमल्लके हाथसे मिती फाल्गुण सुदी २ ता० २६ क्वरी १४को खुलवा दिया। बम्बईमें सेठ माणिकचंद्जीकी भावज सेठ मोतीचन्द हीरा-राचंदकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपाबाईका शरीर

धर्मातमा रूपाबाईजीका बृद्धावस्थाके कारण अशक्त हो गया। परस्रोक। खाना पीना कम हो गया। अवस्था भी इस समय ५८ वर्षकी थी। आपने मिनी

फालगुण सुदी ३ सं० १९७०के दिन अपने होशमें णमोकार-मंत्रका जाप जपते व श्री चंदाशमु स्वामीका ध्यान करते हुए अप-ने इस नाशवन्त देहको छोड़का स्वर्गमें विहार किया। संठनीके कुटुम्बमें माता रूपाबाईके समान धमबुद्धि, वात्सल्यगुणधारी, वैयावृत्यमें सावधान, दान धम तप करनेमें छवछीन दूसरी स्त्री नहीं हुई। २२ वर्षकी उम्रमें ही आपको वैधव्य प्राप्त हुआ तंबसे बाईजीने अपने धमको परम श्रद्धांके साथ आजन्म निवाहा।

आपने अपने नीवनमें उद्यापन महित जितने वत उपवास सहित किये उनकी गिनती इस प्रकार है—

- (१) १२३४के उपवास सं० १९५१ से ६० तक।
- (२) कवलाहार व्रत्।
- (३) कर्मदहनके १७५ उपवास ।
- ( ४ ) भक्तामर स्तोत्रके ५१ उपवास ।
- ( ५ ) महस्रनाम स्तोत्रके १३ उपवास ।
- (६) तत्वार्थम्त्रकं १३
- (७) मुक्तावली त्रत ९ वर्ष तक।
- (८) चौवीम तीर्थकरोंके २४ उपवास ।
- ( ९ ) अष्टान्हिका वृत ८ वर्ष तक ।
- (१०) स्विवार् वत ९ वर्षे तक।
- (११) फल्ट्झमी ब्रत १० दर्ष तक ।
- (१२) चांद्रायण त्रत ६ वर्षतक।
- (१३) निर्वाण तेला ३ द्फे ।
- (१४) फूलवरा
- (१५) दीपक वत ।
- (१६) फल्बन।
- (१७) द्रब्यत्रन ।
- (१८) देवव्रत ।

इतने व्रतोंके सिवाय आपने श्री सम्मेद्शिखरजी, चंपापुरजी, पावापुरजी व राजगृही आदिकी यात्रा सं. १९५८ और सं. १९५६ में दान धर्म सहित की।

इस महान् यात्राके सिनाय नीचे लिखीं यात्राएं और भी की। श्री गोम्मटस्वामीकी यात्रा दो दफे सं. १९४१ और १९६६।

श्री केशिरया, पालीताना, गिरनार सं. १९४३में। श्री गजपंथाजी सं. १९३६ और १९५६ में। कुंथलगिरिजीकी दो दफे। तारंगाजी।

पावागढजी ।

मक्सीजी आदि ।

तथा आपने अपने परिणामोंसे पौना लाखसे अधिकदान अति उपयोगी कामोंमें इस भांति किया—

३५०००) अहमदावादमें प्रेमचंद मोतीचंद बोर्डिङ्गके लिये।

५०००) १२३४ त्रतके उद्यापनमें ।

२५००) बोर्डिंग बम्बईमें कार्तिक सुदी १५को वार्षिक पूजोत्सवार्थ।

६०००) उद्यपुरमें दि॰ जैन पाठशालाके लिये।

१५०००) अहमदावाद बोर्डिंगमें देशी औषधालयके लिये।

४८००) ,, , में धर्मशालाके लिये।

२२००) ,, ,, में चांदीके समवदारणके लिये।

११००) ,, ,, दशलाक्षणीमें पूजनके लिये।

३५००) मुडेटी (गुजरात) में ध्वजादंड उत्सवके लिये।

५५००) मरते सन्य भिन्न २ वार्मिक कार्योंके छिये।

कुल ८१७०० )रुपय ।

इनमें छोटे दान नहीं गिने गए हैं । उन सबको जोड़ा जाय तो १ लाखसे अधिक रकम हो जायगी। एक विधवा द्वारा उपयोगी कामोंके दानका किया जाना एक बडा भारी उदाहरण अन्य विधवा बहनोंके लिये है।

प्रेमचंद् पुत्रके वियोगके पीछे १५ वर्षकी **चंपाँबाई** विश्ववाको आपने नित्य विद्या पढने, ज्ञास्त्र स्वाध्याय करने, व्रत उपनाममें लीन रहनेमें उपयुक्त कर दिया और उसकी गोदमें एक सुशील पुत्र **रतनचंद** बिठा दिया जिससे प्रेमचंदका वंश सजीवित रहे और चंपाबाईको कष्ट न हो।

अब चंपाबाई भी रूपाबाईकं ममान दान धर्ममें लीन हैं, निरंतर रतनचंदके पढ़ानेमें दत्तचित्त हैं, रतनचन्दका विवाह भी कर दिया है और अपनी मुर्कार्तिको विस्तारती हुई चौपाटी बंगलको सुशोभित कर रही है।

माता रूपाबाईकी स्मृतिको कायम करनेके छिये अहमदाबाद बोर्डिंगमें ता० २८ फर्वरीको एक स्मृति फंड माता रूपाबाईका कायम हुआ जिसमें छात्रों व सुपरिन्टेन्डेन्टने ७३।=) उमी ममय जमा कर लिये। स्मारक। " दिगम्बर जैन " के ब्राहकोंको बाईनीके

स्मरणार्थ श्रीपालचरित्र भेट किया गया था।

श्रीमन्त सेठ मोहनलालजी, भा॰ दि॰ जैन महासभाके सहायक महामंत्री व बुंदेलखंड दि॰ जैन प्रान्तिक बम्बईमें जैन सभा। सभाके सभापति यात्रा करते हुए बम्बई: पधारे । श्रीमान् सेठ माणिकचंदजीने आपका

बहुत मन्मान किया और मिती चैत्र वदी ६ ता० १८ मार्च १९१४ की रात्रिको हीराबाग धर्मशालामें आपके सभापतित्वमें सभा हुई, जिसमें शामलालजी उपदेशकका 'जीवनके कर्तव्य'पर व्याख्यान हुआ। सेटजीन हार तोरा आदिसे मन्मान करके सभा विसर्जन की ।

इन्दौरमें रायवहादुर सेठ तिलोकचंद कल्याणमलनीकी मातान तक्क्यंजमें एक नवीन जिन मंदिर निर्मापण इन्दौरभें धार्मिक कराया था जिसकी प्रतिष्ठा पं० बालावक्स-कार्य। जीके द्वारा चैत्र सुदी ६ से १२ व ता० ३१ मार्चसे ६ अप्रैल तक बड़े समारोहके साथ हुई। सेठ माणिकचंद्जीको बुलाया गया पर आप दारीर अस्त्रस्थ्यताके कारण तथा इन्दौरमें आवश्यक काम न होनेके कारण नहीं आए थे। मुपुत्री सगनवाई जीको भेताथा। माठवा प्रान्तिक मभा नमित्तिक अधिवेदान शोलापुरके परोपकारी सेठ हीराचंद नेमचंदके सभापतित्त्वमें बड़ी सफलताके साथ हुआ। २०००के अनुमान भाई पधारे थे। पं० गोपालदासूजी भी आये थे। तिलोकचंद हाई स्कूल खुलनेका मुहूर्त भी इन्ही दिनोंमें था पर अचानक स्कूलके अधिष्ठाता पं० अर्जुनलाल सेठी नयपुर निवासी पर आप-**त्ति** आ गई कि उनको **संदेह** पर सर्कारने गिरफ्दार कर लिया और नज़रबन्द कर दिया इस कारण वह कार्य तो बन्द रहा। जन संख्या ३००० हो गई थी। माख्वा सभाके जनरल फन्डमें ५००) का चंदा हुआ। ११११)के ११ यावन्नीव सभासद हुए । इन्दौरमें उदासीनाश्रम खोलना निश्चय होकर सेठ

हुकमचंद, कल्याणमल व कस्तूरचन्द तीनों भाईयोंने दस दस हज़ार याने २०००) व २०००) फुटकल ऐसे २२०००) का फन्ड हुआ । मोरेना विद्यालयको सेठ हुकमचन्दने १००००) व रोड-मल मेघराज सुसारीने १०००) कुछ १३०००) का भ्रुव फन्ड हुआ । सेठ कल्याणमलजीकी माताने २५०००) कन्याशालाके लिये दिये जिसका मुहूर्त ता० ६ अप्रैलको हुआ। मुनीम धर्मत्रंदनीने पालीताना धर्मशालाके लिये कहा-तो तुर्त ही १०००) का चंदा हो गया । श्रीमती मगनवाई, कंकुवाई आदि विद्यावती बहर्नोंके पधारनेसे बहुतमी स्त्री मभाएं हुई। स्त्री शिक्षा फंडमें ८००) का. चंदा हो गया।

श्राविकाश्रम बम्बईमें जंबूसर जिला भडोच निवासिनी श्रीमती जीवकोरबाई कई वर्षतक एक श्राविकाका वियो- रहकर अर्थ प्रकाशिका आदि प्रंथोंकी जान-ग व मगनवाईभीको कार हो गई थी व उससे बहुत कुछ आशा थी सो बीमार हो गई और वैशाख वदी ३ ब्रोक । मोमवार ता० १३ अप्रैलको समाधिमरण सहित २५ वर्षकी आयुमें स्वर्गधाम पद्मारी । मरण पहिले अपनी १५०००) की ज़ायदादमें से २०००) धर्मार्थ दान कर दिये जिसकी विगत अति उपयोगी जानकर यहां प्रकट की जाती है।

- १००१) श्राविकाश्रम बम्बई ।
  - ५००) अथप्रकाशिका छपानेको ।
  - ५००) नंबूसरमें संस्कृत पाउशाला ।
  - १००) धर्म पुस्तकें रखनेकी ४ अलमारीके लिये।

- १००) शास्त्रदानके लिये श्रावकविता बोधनीका गुजराती भाषांतर '' दिगम्बरजैन '' के श्राहकोंको देनेके लिये
- २०१) पावागह तीर्थमें ।
- १००) गरीबोंको औषधिदान।
- १४७) परचूरन भंडार, मंदिर व तीर्थ।
  - ५०) जैन धर्मकी पुस्तकें मंदिरमें रखनेको ।
  - ५०) ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर।
  - ५०) श्राविकाश्रम बम्बई, कपड़ा और भोजनके लिये ।
  - २५) सोजित्रा नन पाटशाला ।
  - २५) करमसद ౣ ,
  - १५) जयपुर शिक्षा प्रचारक समिति।
  - १५) बनारम स्याद्वाद महाविद्यालय ।
  - १५) फुलकोर कन्याशाला, सूरत ।
  - १५) जैन सिद्धान्त पाठशाला, मोरेना ।
  - १५) अहमदावाद दि॰ जैन बोर्डिंग।
  - १५) रतलाम दि॰ जैन बोर्डिङ।
  - १५) वनिताविश्राम, सूरत ।

श्रीमती मगनवाईजीको इस वियोगसे महान् कष्ट हुआ।
सेठ माणिकचंदजीको रूपाबाई ऐसी धर्मात्मा
सेठजीको शोक। भावजके वियोगसे भी शोक हुआ था।
इतनेमें आपने मालूम किया कि महासमा
महामंत्री जैनजातिभूषण मुंशी चम्पतरायजी वैशाख मुदी १३ ता

१८ मई १९१४ को स्वर्गधाम पधारे । आप महासभाके आजन्म गक्षक रहे थे। इस खबरसे सेठजीका चित्त और भी उदास हो गया।

सेट माणिकचन्द्जीके चित्तमें जो बात बहुत कालसे जमी थी कि दिगम्बर नैनियोंकी दिगम्बर् जैन डायरेक्ट- व अवस्थाकी दिखलानेवाली कोई प्रस्तक रीका छपकर तैयार तैयार हो वह कामना इस सन् १९१४ में हाना व १५०००) पूर्ण हो गई। बाबू सुरजभानजीने इस विषयमें कार्य प्रारम्भ नहीं किया । तब इसको स्वयं का व्यय सेठजीने बम्बईमें अपने ही भानजेके भानजे सेठ

ठाकुरदास भगवानदास जौहरीके अधीन किया। ठाकुरदामने ता. १५ नवस्त्रर १९०७से इसका कार्य उत्साह पूर्वक करना प्रारंभ किया और ७ वर्षांके लगाकर परिश्रमसे अब इसकी १ बडी पुस्तकको जिसमें १४२३ मफे हैं छपाकर प्रमिद्ध कर दिया निसका मूल्य ८) स्वस्वा इस् । कार्यमें दौरा करनेवाले डिरेक्टरोंने फार्म भरवाए जिनके छांटनेका काम हीराबाग धर्मशालाके सुपरिन्टेन्ट माणिकचन्द् रावजी और भाछचन्द्र महादेव द्वारा तथा हार्क कुन्दनलाल और गुलावचन्द छहाडचा द्वारा हुआ। मुख्य डाइरेक्टरोंने इम तरह प्रांतवार संस्था ली:---

मध्यप्रदेश राजपृताना और मालवा—फतहपुर जिला दमोह निवासी खुबचंद जैन ।

संयुक्तप्रांत बंगाल और पंजाब, जुगमन्धरदास जैन बाराबंकी बम्बई हाता और मैसूर प्रांत बारसीवाले तात्या नेमिनाथ पांगल व अन्य दो कर्मचारी।

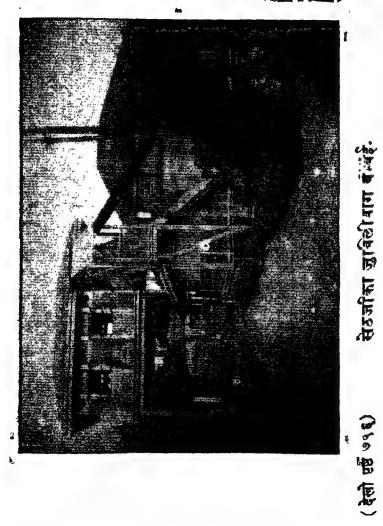
कर्नाटक और मद्रासप्रांत कुंभकोणम निवासी एस जयराम।
इस प्रस्तकमें मुख्य २ शहर व स्थानोंके इतिहास भी दिये हुए हैं।
ऐसी प्रस्तककी तैयारीके सेट माणिकचंद पानाचंद नौहरीके
१५०००)से अधिक खर्च पड़े। सेटजी अपनी आंखोंसे तैयार
सिनल्द प्रस्तकको देखकर अतिशय आनिन्दत हुए। और अंतःकरणमें
भाई ठाकुरदासके परिश्रमको खूब ही मराहा यह। डयरेक्टरी ८)में
दिगंबर जैन प्रस्तकालय सूरतसे मिल सकती है।

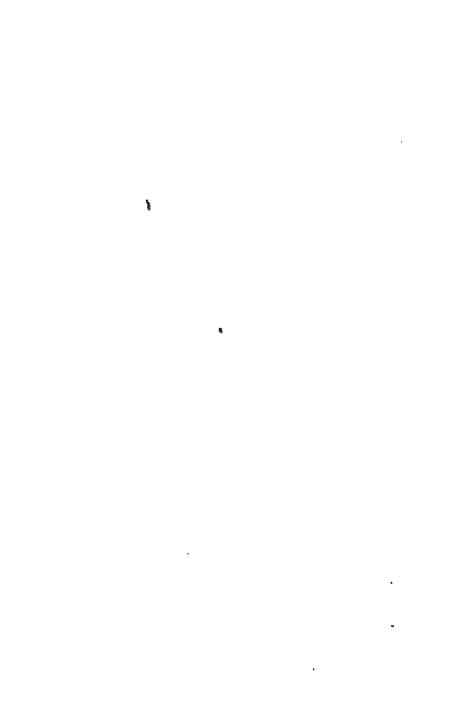
जिस बोर्डिंगका मकान बनवानेके लिये सिंहई नारायणदासनी

मरनेके ममय २००० ) देगये थे। उस मकान
डालचंद नारायणदास को बृहुत ही उम्दा करीब ९० छात्रोंकेरहने
दि० जैन बोर्डिंग लायक तय्यार करानेमें मंत्री बाबू कंछेदी-

जबलपुर । लाल बी. ए. एड एल. बी. ने बहुत परिश्रम उठाया तथा भवनकी तैयारीमें ४००००)

रु. लगे उसको सिंहईजीकी धर्म पित्नयोंन स्वीकार किया। इस भवनके तैयार होनंपर इसके खोलनेका मुहूर्त्त ता. ३ जुलाई १९१४ को किमक्तर साहब बहादुरके द्वारा अनेक प्रतिष्ठित महादायोंके समक्ष्य किया। इस भवनका नाम डालचन्द नारायणदास दि. जैन स्कूल जब-लपुर रक्खा गया तथा १५ मेम्बरोंकी एक ट्रष्ट कमेटी बनगई। सेठ माणिकचन्दजीके हार्दिक उपदेशसे सिंहईजीका द्वन्य एक उपयोगी काममें न्यय हुआ। इस भवन बननेके सिवाय ३५०००) की एक कोठी भी आपकी स्टेटसे बोर्डिंगके आधीन हुई थी। जिसका किराया १५०) मासिक आता है। सेठ माणिकचन्दजी द्वाराकी अस्वस्थ-तासे स्वयं नहीं आएथे पर पत्र द्वारा जानकर बहुतई हिर्षत हुए।





श्रीमान् सेठ माणिकचंदनीके चित्तको इस समय एक ऐसा घका लग गया था कि जिसके कारण आपका रूपेशीवैंकका दिवाला जातीय द्रव्य बहुतसा हानिमें जानेके सिवाय और सेटजीके निन २ संस्थाओंके द्रव्यकी व्यवस्था आपके चित्तको धका। द्वारा होती थी, उसमेंसे प्रायः सर्वको हानि उठानी पड़ी। उपका कारण यह हुआ कि निम स्पेक्तीबैंक पर बम्बईवालोंका बहुत बड़ा विश्वास था उसका दिवाला निकल गया । स्पेशीबैंकके शंपर बहुतसे सेठजीने दलालोंके कहनेमें आकर खरीदिछिये थे। इस मारी कई छाखकी हानिसे आपके चित्तको इस समय एक बडा घका लगा था। जिससे श्री शिखरजीकी चिन्ताके सिवाय यह चिंता और भी आपके चित्त-

पर बैठ गई। इन्हींके कारण आपका देह और भी भीतर २ अशक्त हो गया, यद्यपि बाहरसे आपको अन्तिम दिनतक कोई

मिती श्रावण वदी ९ बीर सं. २४४० व ता. १६ जलाई १९१४ को सबेरे सदाकी तरह सेठनीने सेंडजीका स्वर्गवास प्रात:काल उठकर श्री निनन्द चंद्रप्रमु भगवान्-और एक सूर्यका का अभिषेक व पूजन अपने चौपाटीके चैत्त्वालयमें किया, फिर जाप, पाठ और द्धप्त होना । स्वाध्याय करके प्रतिदिनके समान भाजन करके हीराबाग आए और तीर्थक्षेत्र कमेटीके दफ्तरमें शामको ६ बजे तक काम करते रहे। इसदिन आप बम्बई श्राविकाश्रम व हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगका निरीक्षण करते हुए हीराबाग पहुंचे थे।

बीमारी नहीं आई।

वहां बहुतसे पत्र लिखवाए, १ पत्र दि० नैनक्षेत्र आबूनीके प्रबन्ध-कर्ता बाबू प्रमचंद कास्छीवारको कोटा रिवासतमें भी लिखा जिसकी नकल आपके हस्ताक्षर सहित कमेटीकी कापी बुकमें मौजूद है। शामको माननके पीछे आप नियमानुसार समुद्र तटपर कुछ टहल कर लोगोंसे बातें करते रहे व ऱ्रात्रिको ९॥ बजे तक श्री मगनबाईजीसे अनेक धर्म व जात्युत्रति सम्बन्धी वार्तीलाप की। नव वह श्राविकाशमको रवाना होगई तब आप चैत्यालयमें गये, दर्शन करके १ बंदे तक साम यि रू करते रहे । चैत्यालयसे लौट रूर आप शयनालयमें आए और अपनी धर्मपत्नीसे सम्मति ही कि यह चिरंजीव बाबू (जीवनचंद्) ४ वर्षका हो गया है। इसे कुछ अक्षर ज्ञान कराना चाहिये। आन गुरवारका शुभ दिवस है। कल शुक्रवार पड़ जायगा। आप रात्रिको ही करीव ११ बजे पुत्रको अक्षर पढाने और छिलाने छगे, मानों उस बालकको अपने अंतिम समय पर यह शिक्षा देगए कि जानकी प्राप्तिसे ही तू अपना सचा हित समझना । विद्यांके प्रेमीने विद्याका संस्कार अपने पुत्रमें कर दिया। इतनेमें आपके उद्रमें कुछ दर्द हुआ, आप बाधा निवारणार्थ शौचको गए। छौटकर आये फिर भी शान्ति नहीं हुई। आप फिर गए छौटकर उदरमें अधिक पीड़ा होनेके कारण आप शांत चित्तसे कौच पर लेट गए और अपने भाई नवलचंदजीको बुलाकर कहा कि उद्रमें कुछ शूल मालूम होती है। माईने बाहरी उपचार किया और वैद्य बुलानेको गाड़ी भेजी। इतनेहीमें आप अईत, सिद्ध जपते २ वैद्योंके आनंके पहले ही इस जीर्ण शारीरको छोडकर स्वर्गधाममें पंधार गए। वैद्य आया । उधर भतीना ताराचंद आया पर सबने परम प्रकाश रहित नड़िपंनरको ही पाया। वह आत्मा जो इस पर्यायमें सेठ माणिकचन्द कहलाता था नहीं रहा । आपकी श्चम भावना इंग्लैंडमें एक जैन बोर्डिंगस्थापित करनेकी थी। निसके लिये आपने मरणके दिनको भी बोर्डिंगमें देखते हुए मि. उदाणी एम. ए. से कहा था । यह आपकी भावना पृर्ण नहीं हो सकी ।

सेठजीको धामिक कार्योका कितना बड़ा ध्यान था इस सम्बन्धमें आपके छिखे सन् १९-१२-१३के पत्रकी नकछ यहां प्रकट की जाती है जो उन्होंने सेट रोडमल मेघराजजी सुसारीको भेजाथा।

### पत्र नकल सेठ राडमल मेघराजजी। श्रीमान् सेठ रोड़मलजी मेघराजजी सुसारी। मान्यवर महाशय,

धर्म स्नेहपूर्वक जुहारु। अपरंच आपका पत्र नं० ११४ ता० १४-१२-१३ ई॰ का मिला। बांचकर हर्ष हुआ कि आप छोगोंने समानकी उन्नतिका भार अपने उत्तर लिया है। सिर्फ अफसोस इतना ही है कि उस उन्नतिके भारमें मैं आप छोगोंका सहायक नहीं हो सकुंगा । तथापि आशा है कि नन आप सरीखे महानुमाव, उत्साही, उद्यमी, धनाड्य, समानसेवाके लिये तन, मन, धनसे कटिबद्ध हो गये हैं, अवश्य ही समाज अपनी उन्नति कर लेगी इसमें शक नहीं। यह भी आशा है कि आप मुझे इसके छिये क्षमा करेंगे।

बावनगनाजीकी मूर्तिका जीणीद्धार, तीर्थक्षेत्र बड़वानीनीका सप्रवन्य तथा बोर्डिंग हाउसका स्थापन ये तीनों ही कार्य अत्यन्त आवश्यक हैं। मेरी श्रीजीसे यही प्रार्थना है इनके सम्पादनमें आप

महाशयों को बल प्राप्त हो। इस समय मुझे पूग विश्वास है कि आप लोग इन तीनों कायों को पूरा कर देंगे। इसकी सूचना पानेकी में प्रतीक्षा करता रहुंगा। ता. १९—१२—१३

### आपका कृपाकांक्षी, माणिकचंद हीराचंद।

आपने अपने सर्व स्टेटकी लिखा पढ़ी दो वर्ष पहले ही कर रक्षी थीव करीब टाई लाखकी मिलकियतका २५००००) का जुबली बाग ११००) मासिक किरायेका अंतिम दान । धूर्मार्थ दान कर पहले ही उसकी रिज्यिश करा दी थी । मरणके पीछे इसका प्रकाश हुआ और जिसने सुना उसने सेठजीकी इस उदारताका घन्यवाद दिया । सचे दानवीरने अंतसमय तक दानसे अपनी जातिकी महती सेवा करके एक अपूर्व उदाहरण जगत्के अनुकरणके लिखे स्थापित कर दिया ।



# अध्याय तेरहवाँ।

## दानवीरका स्वर्गवास ।

गुनराती आपाइ बदी ९ (पारवाड़ी श्रावण बदी ९) वीर सं० २४४० विक्रम संवत् १९७० ता० श्रावण बदी ९ की १६ जुजाई १९१४ बृहम्यतिवारकी राजि भयानक गात्रि। बड़ी भयानक थी कि जब चौपाटीका जीता जागता बंगला महान् दीपकके बुझ जानेसे

परम अंकारमय हो गया! देखते देखते किना किसीके दिल्में पहलेसे इस बातका खयाल भी आए हुए और बिना किसी महान् कछके सेठ माणिकचंद्जीका चेतन स्वस्ता आत्मा ६२ वर्ष तक औदारिक शरीरकी शोंग्ड्रीमें रहकर अपने मुक्कतमयी जीवनमें महा शुभ कर्मवर्गणाओंका बंधकर तैजस और कार्माण शरीरको लिये हुए किसी बैकियक शुभ शरीरमें प्राप्त होकर अपने तन, मन, धनके निःस्वार्थपने दान करनेके महान् फल स्वस्त्र मनको सातादायक शुभ सामग्रीका लाभ लेता हुआ उस शरीरमें अमररूप या दीर्धकाल स्थायी हो गया। यह नियम है कि जैसा भाव अंत समयमें होता है वैसा ही पर्यायमें जाता है। नर्क और तिर्धचगितमें ले जानेवाला रौद्र और आर्तध्यान होता है। नर्क और तिर्धचगितमें ले जानेवाला रौद्र और आर्तध्यान होता है नो हिंसानंद, मृपानंद, चौर्यानंद, परिग्रहानन्द तथा इष्ट वियोगन, अनिष्ट संयोगन, पीड़ा चिन्तवन, व निदान रूप होता है। तो यह कोई ध्यान सेट माणिकचन्द्रजीको न था। परोपकारता, धर्म व जातिकी अवस्था की उन्नति, छात्रोंका

कल्याण, उनको धर्म विद्याका लाम, श्री शिखरजी पर्वतकी रक्षा व पशुओंकी दया इत्यादिमेंसे कोई न कोई भाव होगा जिसमें सेटजीका मन अटक रहा हो व केवल पंच परमेप्टी या श्री अरहंतके स्वरूपमें लगा हो यही संभव हो सकता है। यह सब धर्मध्यान है । सेटजीको जैन घर्मका पक्का श्रद्धान था । श्रद्धाकी नीवपर नमा हुआ धर्म ध्यान शुभ लेक्याका होता है और नियमसं देव पर्यायमें पहंचाता है। जैन सिद्धान्तानुसार सेठजीकी अंतिम चेष्टा अवस्य इम बातका विश्वास दिखाती है कि दानवीरका आतमा स्वर्गमें पथार कर उत्तम द्व हुआ हो । वास्तवमें ऐसे महान् पुरुष जो परके कल्याण निमित्त अपने आपको बलिदान करते हैं और जगतके अज्ञान और अधर्म मेटनेका उद्यम करते हैं, परम्पराय तीर्थकर ऐसे महान् पदके अधिकारी होतं हैं। सिद्धान्त कहता है कि इस पंचमकालके जन्मे १२३ मनुष्य इस क्षेत्रसं सीथे विदेह क्षेत्रमें जन्म प्राप्त करके उसी भरसे मोक्षको प्राप्त करेंगे। यह पंचमकाल या दुखमाकाल २१००० वर्षका है। इसके तीन २ हजारके ७ भाग किये जावे सो पहले २००० वर्षके काल विभागमें ६४, दूसरेमें ६२, तीसरेमें १२, चौंथमें ८, पांचवेंमें ४, छठेमें २ तथा अंतिम ७ वें तीन हजारमें एक मनुष्य इस भरतक्षेत्रसे सीधे विदेहमें जन्म हे कर्म काट परमानन्दमई सिद्ध होवेंगे । वर्तमानमें अभी यहां पहला भाग ही वर्त्त रहा है। अब श्री महावीरस्वामी मोश पधारे थे तब चौथ दु:लमा सुन्तमा कालके तीन वर्ष साढ़े आठ महीने बाकी रहे थे। वीर सं. २४४०में २४३६ वर्ष साह तीन महीने ही पंचमकालको वीते थे यह ६४ जीव वास्तवमें सेठ माणिकचन्द्जी ऐसे धर्मातमा और परोपकारी तथा जगत्के हितमें उद्यमी ही लेसकते हैं। इससे यह भी अनुमान किया जामकता है कि सेठ जीका आतमा इस ६४ जीवों मेंसे एक हो और अब वह विदेह क्षेत्रमें उत्तम मनुष्यकी वज्रक्षपमनाराच संहनन (वज्रके समान हड़ वेस्टनके जाल, कीले व हड़ीवाली) रूपी देहमें विराजमान हो बालपनेकी कीड़ा कर रही हो। सिवाय उत्तम मनुष्य या देव पर्यायके और किसी भी पर्यायमें सेठजी ऐसे महान् शुभ भाव धारक आतमाका गमन नहीं हो सकता।

सेटनीके मर्व चेत-यपनेकी चेटाम रहित मृतक शरीरको देख देखकर चौपाटी बंगलेके नरनारियोंको शोकने घर लिया और रात्रिभर सबने महाशोक रुद्दन व उदासीमें विताई! सेटनीकी पत्नी-जीवनचन्दकी माता सिर पटक व लाती कूटकर समय समय पर रो उठती थी जिसकी आर्त्तनादको सुनकर कठोर मन भी पिघल जाता था। मगनबाईजी रात्रिको ही तारदेव श्राविकाश्रमसे आईं और जिस अपने पृज्य पिताकी शरणको अपना स्वसुर गृहका ममत्त्व त्यागकर आलम्बन कर रक्खा था उस शरणका इस तरह अकरमात् निराकरण देख कर महान् आर्त्तच्यानमें मग्न हो गई। वार वार पिताके उस अनबोल कलेवरको, जिसने घंटे पहले अच्छी तरह बर्तालाप की थी अब चेतनता रहित देखकर मगनबाई जीका चित्त परम अशरण मावको प्राप्त होगया। धर्मज्ञानके कारण इस बाईको मनकभी आर्त्तच्यानमें व कमी वैराग्यमई धर्मच्यानमें कछोलें मार रहा था। सेठ नवलचंदको मी अपने जाति प्रसिद्ध नामांकित भाई-

के वियोगसे परम निरावारता प्रकट हुई । रात्रिभर सर्वने उदासीमें विताई, सवेरा होते ही यह खबर विजलीकी झड़पके समान बम्बईमें फैल गई, जिसने सुना वही रोता, उदास होता हुआ चौपाटी बंगलेपर आ पहुंचा। बातकी बातमें सैकड़ों जैन और अजैन जमा हो गए। दानवीर सेठ हुकमचन्दजी भी बम्बईमें थे। यह भी तुर्त आए । सेठ मुखानन्दजी भी आए । प्रसिद्ध २ मारवाड़ी व गुजराती कोई भी जैनी ऐसा न था जो इस समय न आया हो। पुण्यात्मा नरके प्रेतको एक बड़ी भारी भीड़के साथ स्मज्ञानमें ले गए और चन्दन।दि सुगन्ध वस्तु तथा उत्तम काष्टमें प्रेनको विराजित कर अगिसंस्कार किया गया । उस समय मर्व भाइयोंने " सेठ माणिकचन्द्जीकी जय " ऐसे शब्द किये थे। हरएक सेठजीके साधारण व मिलनसार मिज़ाजको विचार २ कर व इनके कृत्योंको याद करके इनके ऐसे पुरुष नैनियोंमें अब नहीं हैं, यह एक अपूर्व पुरुष थे, अब इनके स्थानको कोई पूर्ति करनेवाला नहीं है, यही परस्पर चर्चा होती थी।

वास्तवमें सेटनीका जीवन एक श्रद्धावान, कर्मवीर, निरालसी, सत्यवादी, स्वावलम्बनधारी जैन गृहस्थीका जीवन था। जिसने अपने तन मनके उपयोगसे अपनी आर्थिक स्थितिको एक साधारण मज़दूरसे लक्षोंके स्वामित्वमें पहुंचा दिया था। बम्बईमें चारों ओर वीसों बंगले और मकान आलीशान सेटजीके हाथसे बनवाए हुए शोमाको दे रहे हैं। आर्थिक उन्नति करनेमें सेटनीने अन्याय और असत्यको अपना हथियार नहीं बनाया था। किन्तु सत्य और न्यायसे द्रन्य उपार्वन किया था। यह इसीकी महिमा थी जो

उस धनको दिल खोलकर उत्तम कामों में खर्च किया और अपने पीले महान मंडार लोड़ गए। आनके दिन भी सेठनी द्वारा स्था-पित 'माणिकचन्द पानाचन्द 'नामका फर्म नौहरियों में सर्वसे अधिक महत्त्व व नामांकितताको धारण कर रहा है जिसका ताजा प्रमाण यह है कि इसी सन् १९१६ में स्पेशी बेंकके मोतीके स्टाकको एक मुष्ट १५ लाखमें खरीद कर लिया। बम्बईमें और किसी नौहरीकी हिम्मत नहीं हुई जो ऐसे भारी विकट यूरोपियन युद्धके समय इतनी रकमके सौदेको एक माथ कर सके। यह स्थिति न्यायोपाजित धन ही की होती है। जो धन अन्यायसे दुनरोंको कष्ट देकर पैदा किया जाता है वह प्रायः बहुतकाल नहीं टिकता है।

नीतिकारोंने कहा है:---

अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवपीणि तिष्ठति | प्राप्ते त्वेकादशे वर्षे समुखं च विनस्यति॥ १ ॥

अर्थात् अन्यायसे पैदा किया हुआ धन १० वर्ष तक रहता है और ग्यारहवां वर्ष प्राप्त होने पर वह मूळ रहित नष्ट हो जाता है। बहुतसी कोठिणं कई २ दंफ दिवाला निकालकर फिर फिर स्थापित होती हैं। पर सेठ माणिकचंद पानाचंदके फर्मको संवत् १९२७ से आजतक व्यापार करते हुए कमी भी इस कलंकके लगनेका अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

सेठ माणिकचन्द्रजी वास्तवमें सोती हुई दिगम्बर जैन समानको जागृत करनेके छिये एक महान् पुरुष ही जन्मे थे। उत्साही और उद्योगी सेटजीने जैनियोंको निम्निखिलित उन्नतियोंके मार्गमें डाछ कर चिरम्मरणीय उपकार कर दिया है:—

- (१) धार्मिक विद्याके साथ २ इंग्रेनी आदि लौकिक विद्याओंका अभ्यास करना और इसीलिये आपके जीवनमें इतने स्थानोंमें छात्राश्रम खुल गए। जैसे—बभ्बई, अहमदाबाद, रतलाम, इन्दौर, बड़वाया, बड़वानी, जबलपुर, लिलतपुर, वर्षा, अकोला, नागपुर, करनी, अलाहाबाद, विजनौर, मेरठ, आगरा, लाहौर, कोल्हापुर, हुबली, सांगली, बेलगांव, मैसूर, कारकल, मंगलोर तथा सारे भारतके जैनला-त्रोंको स्कालर्रिशप देकर उनका पढ़ना आगे जारी करना।
- (२) संस्कृत दिगम्बर जैन साहित्यका प्रचार करना। इसके छिये आपने बम्बई तथा काशीमें संस्कृत विद्यालय खुलवाया व प्रेथोंके मुद्रणमें पं. पनालालकी, नायुरामनी आदिको सहायता दी व इनके द्वारा पुण्याश्रव कथाकोश आदि प्रंथोंको प्रकाश कराया व स्वयं पुस्तकालय रख कर अर्थ मूल्यमें व भेट रूप पुस्तकोंका प्रचार किया।
- (३) तीर्थोंका उद्धार व सुप्रकृष्य कराना । सेठजीके प्रयत्नके पूर्व तीर्थोंकर बहुत अन्धर था । यात्रियोंको बहुत कष्ट होता था । हिसाबादि ठीक नहीं रहता था, सेठजीके प्रभावसे प्रायः सर्व ही तीर्थोंका प्रकृष्य ठीक हो गया व उनकी उन्नति भी हुई । जगह २ धर्मशालाएं बनी । हिसाब वार्षिक प्रकट होने लगा। तीर्थोंक सुधारमें आपके जैसा परिश्रमी विरला ही होगा।

मुख्यतासे पालीताना, तारंगा, आवू, गिरनार, राज-

गृही, पावापुर, कुन्डलपुर, गुनावा, श्री शिखरजी तथा मन्दारगिरिका उद्घार हुआ। सोनागिरजीके उ-द्धारके लिये आपनं बहुत परिश्रम उटाया। एक मुनीम वहांपर रक्खा जो अब भी मौजूद है पर इसका सुधार आप अपने जीवनमें पूरा न कर सके।

(४) धर्मोपदेशका प्रचार करानेके लिये व जाति सुधारके आन्दोलनके लिये सभाओं व कमेटीयोंके स्थापित कराने-में उद्योग करना । इसीलिये आप बहुतसी सभाओंके सभापति और कोषाध्यक्ष थे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभा, व द० महाराष्ट्र जैन सभाके सदा तक सभापति रहकर बहुत कुछ उन्नतिका मार्ग शोधा ।

- (५) कुरीतिनिवारणमें पृर्ण चेष्टित होना-बुहुतसा बालविवाह का रुकता आपके उपदेशसे हुआ। हुमड़ जातिके सुधार-का आपको बहुत वड़ा ध्यान था। आप यह भी चाहते थे कि हुमड़ जातिके दसा और वीसा दोनों मिल जावें क्योंकि इनमें कोई फर्क नहीं है दोनों ही श्रीजिनेन्द्र देवकी पूजा प्रशाल करते व साथ २ खात पीते हैं और दोनोंके गोत्र एकसे हैं परन्तु इसकी सफलता नहीं हुई। आप इस बातके भी पश्चपाती थे कि वे सर्व दिगम्बर जातियां जो साथ खा पी सकतीं हैं परस्वर सम्बन्ध भी कर सकतीं हैं।
- (६) स्त्रीशिक्षाके प्रचारमें पूर्ण उत्साही होना । मगनबाईजी

द्वारा भारतमें स्त्रीशिक्षाकी जागृति फैलना आप ही की अंतरंग इच्छाका प्रमाद था।

- (७) जीवद्या प्रचार व मांसाहार त्याग करानेमें पूर्ण खटपट करना। इसके लिये आप पुस्तकें बांटने, इनाम देते, द्या प्रचारक संस्थाओंको मदद दंने रहते थे। आपने बम्बईमें दो वर्ष तक इस बातकी पृगी २ खटपट की कि जो भैंसे व गाएं दूघ देना बन्द करें व फिर दूध देने लायक जब तक न हों तब तक उनको पालनेका एक का खाना खोलना और उनको कमाइयोंके हाथ विकी होनेसे बचाना। आपने जो स्कीम बनाई थी वह ज्यापारके दंग पर थी कि जिन दामोंमें खाले लोग पशुओंको कसाइ-योंके हाथ वेचते हैं उन दामोंमें खरीद लेना व गामिन न होनेपर अच्छे दामोंमें बेचना। इससे नफा भी दिखलाया। इसकी कार्रवाई रवादांकर जगजीवन आदिके सम्बंधमें कुल दिन चली भी, पर सचा व ईमानदार कार्यकर्ताके विना यह काम नहीं हो सका।
- (८) जैन ग्रन्थोंको मुद्रित कराना । आपने अपने पुस्तकालयके साथ २ जैन नियम पोथी, नर्क दुःख चित्राद्दी, छःढाला, दिवालीपूजन, न्यायदीपिका, आदि ग्रन्थ मुद्रित किये थे और उनका बहुत अल्प मूल्यमें प्रचार किया था।

आपके विचारे हुए काम अपूर्ण व अधूरे जो रह गए हैं उनमें रंगूनमें मांसरहित भोजनालय स्थापित होना, तथा झंलैंडमें जैन बोर्डिंगका होना मुख्य है। और सर्वसे बड़ा काम जिसको आप कराना चाहत ये वह जयधवल, महाधवल प्रंथोंका प्रकाश होना है। यद्यपि आपके व सेठ हीराचन्द्रजीके उद्योगसे इनकी बाढबोध लिपियें हो गई हैं पर इनका प्रचार नहीं हुआ था। एक यह काम बड़ा भारी अधूरा रह गया है।

इसके सिराय आप यह मी चाहते थे कि दिगम्बर् जैक धर्मका विद्वता पूर्ण उपदेश सारे भारतमें ब जुबीली वागका विदेशों में भी हो। यह कार्य भी होना दान। बाकी है। जिन २ कार्योसे आपको बहुत प्रम था उनको सहायता देनेके लिये आपने अपने जुबली बागका दान कर दिया था और उसकी आमदको नीचे प्रमाण खर्च किये जानेके लिये नियम बांध दिया था।

११००) मासिक किरायेकी आमद्नीसे ५०) मासि हमकानकी रक्षाके लिये बचाकर शेषमेंसे—

- (१) १४) सैकड़ा हीराचन्द गुमानजीकी सर्व संस्थाओंके निरीक्षणके लिये एक योग्य सुपरिन्टेन्डेन्ट नियत करनेमें।
- (२) ७) सैकड़ा-बम्बई प्रान्तिक समाके परीक्षालयमें ।
- (३) ७) ,, बम्बई दि॰ नैन तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बईके दफ्तर खर्चमें !
- (४) १२) सैकड़ा दिगम्बर जैन धर्मके उपदेशके प्रचारमें ।
- (५) ५०) ,, छात्रवृत्ति देनेमें, जिसमेंसे ३३) सैकड़ा वागड़ प्रान्तवारोंके छिये, ३०) सैकड़ा मध्य प्रान्तवालोंके छिये और ३७) सैकड़ा सर्व प्रकारके छात्रोंके छिये ।

(६) १०) सैकड़ा ऊपरके किसी भी खातेमें कमी हो तो पूरी करनेमें।

200)

तथा इस ट्रप्ट डीडके ट्रस्टी ५ हैं—(१) सेठ नवलचंद हीराचंद, (२) सेठ ताराचंद नवलचंद, (३) सेठ हीराचंद नेमचंद, शोलापुर (४) सेठ लल्ल्यूभाई प्रेमानंददास, (५) सेठ ठाकुरदास मगवानदाम जौहरी मंत्री।

इसीसे प्रकट है कि आप अपनी धर्म व नातिके कैसे प्रेमी थे। आपके हाथसे ८ व १० लाखका दान हुआ है। पर जो अति प्रसिद्ध २ काममें आपने ट्रान किया है वह नीचे गिनाया जाता है:—

#### दानाविल ।

संवत्	नाम काम	रकम दान
१९३९	सूरत मंदिर प्रतिष्ठा	(000)
1980	गोमटस्वामी सीढ़ी बनवाना	(000)
१९४८	सूरत चंदावाड़ी घर्मशाला	२५०००)
१९५१	पालीताना मंदिर व धर्मशाला	3(00)
१९५५	बम्बई बोर्डिंग	(0000)
१९५६	गुजरात दुष्काल	9000)
१९५७	बम्बई महा विद्यालय	२०००)
१९५१	कोल्हापुर बोर्डिंग का मकान	२२०००)
3668	अहमदाबाद बोर्डिंगके स्थापनेमें	80000)
१९६१	नम्बईमें हीराबाग घर्मशाला	१२५०००)

	दानवीरका स्वर्गवास ।	€ફ્ર€ ]
१९६२	काशी स्याद्वाद पाठशाला	२०००)
१९६२	जबलपुर बोर्डिंग	8000)
१९६२	उद्यपुर पाठशाला	€000)
१९६४	शिवरजी रक्षाफंड	(0000)
१९६४	सूरतमें फुलकौर कन्याशाला	9000)
१९६४	सं. १९७० तक दि० नेन डायरेक्टरी बनना	( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( ( (
१९६५	हुवली बोर्डिंग	(000)
१९६५	आएरा बोर्डिंगके लिये जमीन	8000)
१९६५	वस्बई श्राविकाश्रम	२०००)
१९६५	कोल्हापुर चतुरबाई हैक्चरहाल	8000)
१९६५	द. महाराप्ट्र जैन सभाको जिन्द्गीका वीम	1 (0000)
१९६८	रतलाम बोर्डिंग	99000)
१९५९	अहमदाबाद् देशी द्वाखाना	29000
१९७०	नुवेलीका बृहत् दान	२५००००)
		अनुमान

जोड़ ६९४१००)

सेउनी वास्तवमें दिगम्बर जैन कौममें एक राजाके समान थे। आपके स्वर्गवासकी खबर सारे भारतमें पहुंच गई। जगह २ शोक मनाया गया व सभाएँ हुई।

ता० १२ जुलाई रिववारको दिनके १ बजे हीराबाग छे-वचर हालमें एक बड़ी भारी सभा हुई बम्बईमें शोक सभा । जिसमें दिगम्बरी जैनी भाइयों के सिवाय स्वेताम्बरी जैनी तथा वैष्णव भी पधारे थे ।

सर्वे हॉल उपरसे नीचे तक खचाखच भर गया था। ब्रह्मचारी शीतलप्रमाद्जी जो इस समय काशीमें थे सभाके समय तार जानेसे आनके दिन आ गएथे। प्रथम ही पं० खुबचन्द्रजीने सेठजीं कं आत्माकी शांतिके छिये श्री शांतनाथ स्वामीकी स्तुति की फिर परोख छल्छुभाई एछ० सी० ई० के पेश करने व माणिकचंद बैताड़ा महामंत्री, बम्बई प्रान्तिक सभाके समर्थनसे दानवीर सेठ हुकमचंदजीनं सभापतिका आसन ब्रहण किया ।

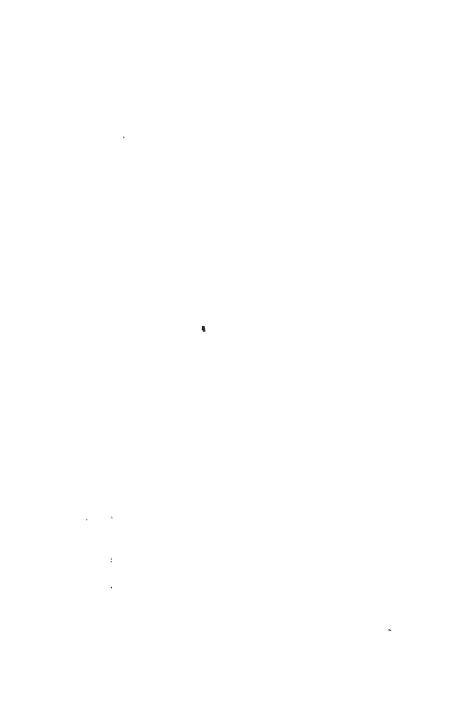
सेठ हीराचंद नेमचंद शोलाप्रने सेठनीके गुण गाए और ये वाक्य भी कहें '' सेठजीकी मृत्युसे दि० जैन समाजन एक शांत महान् दानवीर रत्न खोदिया.....सेठजी विल्कुल निरिममानी, सादे स्वमाव, परमार्थके काममें अतिशय भाग छेनेवाछे और अनेक सभा मोसाइटियोंके आधारभूत ये......वे महा पुरुष थे इस लियं अब अपनेको जो उनकी यादगारीमें करनेका है वह यह है कि उनके द्वारा कीं हुई अधूरी योजनाओं को पृष कीं नावें और उनके सद्गुणोंका शक्त यतुसार अनुकरण किया नावे।

फिर ब्रह्मचारी शीतल्प्रसाद्जीने सेउनीकी महिमा वर्णन की निसमें यह भी कहा कि " स्वर्गीय सेठ साहब अपने जीवनमें एक उच और उम्दा जीवनका आदर्श जैन और जैनेतरोंके लिये छोड़ गए हैं। वास्तवमें जैन कौमका पथप्रदर्शक छुप्त हो गया है। उनके गुणका उत्तम रक्षण विद्याकी रुचि है.....। "

फिरं (स्वे॰) पंडित फतहचंद कपूरचंद लालनने कहा "उनके जीवनका उद्देश्य ज्ञान और द्या था। और उन्होंने इनको पूर्ण किया है। उनकी मृत्युसे दिगम्बरियोंको ही नहीं परंत क्वेताम्बर और



सोलापुर व्यायामशालामें सेठजी.



स्थानकवासी कौमको भी बड़ा भारी आघात पहुंचा है। उनके हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंगसे हरएक जैन छाम ले सकता है।

फिर जीवद्या ज्ञान प्रसारक फंडके मंत्री (श्वे०) मि० छल्छुमाई गुलाबचंदने कहा—''स्वर्गीय सेठ साहबके। जीवद्यासे बहुत प्रेम था। इस कार्यमें अच्छी सलाह और मदद दिया करते थे.......जो हनारों मांसाहारी वनस्पत्याहारी बने हैं, उनके पुण्यमें उनका भी हिस्सा है। "

द्वे० संघपित सेट रतनचंद तलकचंदनं कहा—" धनाढ्य लोग बहुत द्वय दान करते हैं परन्तु दानके अंतिमसे अंतिम इंगकी शुरू आत सेट माणिकचंद्रजी ही ने की थी। उनका दान शिक्षाके लिये ही होता था"। मि० उदानी एम०ए० ने कहा—" सेट साहक्की इच्छाएँ बहुत उची थीं। उनका विचार बम्बईमें मांसाहारियोंके सुभीतके वास्त एक वेजीटेरियन रसोड़ा और लंडनमें बोर्डिंग स्थापन करनेका था। वे तो गए परन्तु उनकी कमी प्रत्येक जैनको मालुम हुए विना न रहेगी।"

फिर पं० नाथूराम प्रमीन कहा—"सेटजी साहबने १५ वर्षके मीतर जैन समाजमें एक नया ग्रुग खड़ा कर दिया है। वे नित्य शामको मोनन करनेके बाद अपने दीवानखानेमें बैठते थे और उस वक्त उनसे मिछने या सलाह लेने जो कोई मी छोटेसे बड़ा, गरीबसे अमीर तक आता था उसे सन्मान पूर्वक बिठाते, उसका हाछ सुनते और उसको योग्य सलाह देते थे। परदेशी जैनियोंसे आप बड़े प्रमसे बिठाकर उनके देशका, उनके गांवका हाल पुंजते थे कि आपके गांवमें कितने घर नैनियोंके हैं? पाठशाला स्कूल है या

नहीं ? कितने छड़के छड़की पढ़ने योग्य हैं, फिर आप वहां पाट-शाला क्यों नहीं स्थापित करते आदि बार्ते पूंजते और उन्हें सामानिक और धार्मिक कार्योंके लिये उत्साहित करते थे ।.......सेटनी एक महात्मा थे। विद्यार्थियोंके छिये तो आप कल्पवृक्ष थे। अंतमें सभापति सेठ हुकमचंदजीने जोशदार भाषणमें वहा कि हमारी दिगम्बर जैन कौममें सेठ माणिकचंदजीकी मृत्युसे हुई **क्षतिको पू**रा करनेको कोई पुरुष नहीं **है**। हमारी कौमको बड़ा आवात पहुंत्रा है और उससे हमको बहुत नुक्यान हुआ है। सेठ साहरका स्मारक अवस्य स्थापित करना चाहिये। "फिर समापति साहबने उनके कुटुंबियों पर सहातुभूतिसूचक पत्र भेत-नेका व स्मारक स्थापनका प्रस्ताव पास कराया । और कहा कि सेठ साहबकी म्मृतिमें मैं निसर्ग इन्दौरकी धर्मशालामं ५०००) की कोठरियां सेठ माणिकचंद्रजीके नाममें बनवाऊंगा व १००१) स्मृतिफंडमें यहां प्रदान करता हूं। इस समय ५०१) सेट गुरुमुखराय मुखानंद, २५१) गुरुमुखराय निहाहचंद, २५१) नाषारंगजी गांघी बम्बई, २०१) जौहरी अनूपचंद माणकचंद सम्बई, २०१) खेमचंद मोतीचंद, १०१) हीराचंद नेमचंद शोलापुर, १०१) देवचंद धनजी गुंजौटीवाले, १०१) कीकाभाई कसनदास झवेरी, १०१) सुरनमल लल्लुभाई, इम तरह ३८७२) का चंदा उस वक्त हुआ।

छल्लुभाई प्रेमानंदमे आमार मान श्री महावीर स्वामीकी जय बोलका सभा विसर्जन की।

बम्बई स्मारक फंडके प्रबन्धके छिये नीचे लिखे ११ महाशर्यो-

1)

13

की कमेटी नियत है। इस फंडसे संस्कृत प्राकृत दिगम्बर जैन यंथोंको ही प्रकाशित करना व मूल्य लागत मात्र रखना तय हुआ है। कमेटो कभी कोई देश भाषाका महत्वपूर्ण प्रंथ भी प्रकाशित कर सकेगी । इसने अब तक ये ग्रंथ प्रकट किये हैं-

१ स्वीयस्त्रवादि संप्रह—इममें भट्टाकरूंक देवकृत स्वीयस्त्रवादि संग्रह मटीक, आचार्य अनंतकीर्तिकृत रुपु सर्वज्ञसिद्धि और बृहत् मर्वज्ञसिद्धि तथा अक्तलंकदेव कृत स्वरूप संबोधन मुल्य (=) २-सागारधर्ममृत सटीक-पंडित आशाधरकृत (=) ३-विकांतकौरवीय नाटक-श्री हस्तिमलकृत 1=) ४-पार्धनाथ चरित्र-वादिरान सूरिकृत H) ५-मैथिली कल्याण नाटक-कवि श्री हस्तिमल्का I) ६-आराधनामार मटी १-मूल गाथा श्री देवसेनाचार्यकृत और संस्कृत टीका 1)11 ७-जिनदत्त चरित्र-आचार्य गुणभद्र कृत I)II ८-पद्यम्न चरित्र-आचार्य महासेनकृत II) 33 ९-चारित्रसार--श्री चामुंडराय विरचित 1=) 33 १०-प्रमाणनिर्णय-श्री वादिराजस्रिकृत

#### कमेटीके मेम्बर।

१-रायबहादुर सेट स्वरूपचंद हुकमचंद्। तिलोकचंद कल्याणमल । ऑकारजी कस्तूरचंद। ४-सेट गुरुमुखराय सुखानंद बम्बई ५-,, हीराचंद नेमचंद आनरेरी मिश्वट्टेट शोलापुर ६-मि॰ छल्लुभाई प्रेमानंद परीख एछ॰ सी॰ ई॰

७-सेठ ठाकुरदास भगवानदास जौहरी

८-ब्रह्मचारी शीतलप्रशादजी

९-पंडित धन्नालाहजी

१०-पं० खूबचंदजी

११-पं० नाथूराम प्रेमी (मंत्री)

सम्पादक "दिगम्बर जैन " ने भी एक स्मारक फंड स्थापित किया और अपने प्राह्कोंके द्वारा १३९१।—) एकत्र किया है और उसमें सेठजीके कुटुंबियोंने ५००) की सहायता की है। इससे यह सुन्दर जीदनकरित्र और अन्य उपयोगी दि० जैन साहित्य प्रकट किया जायगा।

सेटर्नाकी खबर पाते ही बहुतसे नगरोंमें सभाएं हुई, कहीं बाजार बंद रहे और सेवड़ों सहानुभृति सूचक तार व पत्र आए।

## कोष्टक बाबत सभा।

१- तारीख सभाकी	स्थान	सभापति ।
66-0-68	बैम्धई	दानवीर रायनहादुर सेठ
२. <b>१९-</b> ७-१४	सूँग्त	हुकमचन्दनी इन्दौर । समापतिके स्थानपर सेटनीका फोटू रक्ला गया ।

करीब ४०००) स्मारक फंड हुआ और ५०००) रुपयेसे इन्दौर बोर्डिक्समें चेठजीके नामका एक मकान बनानेकी सभाप-पतिने इच्छा प्रकट की जो बन चुका है।

२. 'दि॰ जैन' द्वारा स्मारक फंड चाल हुआ उसीवक्त करीब २००) र. मरे गये।

तारीख सभाकी	स्थान	सभापति ।
इ. २१-७-१४	अ <mark>ंकलेश्वर</mark>	
8. 78-9-88	<b>ॅंड़</b> ौदा	सेठ लालचन्द कानदासनी
<i>५. २२–७–१8</i>	<b>व्या</b> रा	
<b>६. २२-७-</b> १४	अलाहाबाद	श्रीयुन जगन्नायनसाद शुक्त
		मार्फन निखिल भारतवर्षीय
		वैद्य सम्मेलन ।
w. १९-८-१8	बेलगांव	एस. एम. अं≆ले ।
<. ₹ <del>₹-७</del> -१४	मस्ट	
e. 78-5-88	अलाहाबाद	लाला होशियारसिंह <b>जी जैन</b>
		मुजपकरनगर ।
१०.२१-७-१४	आलम्द	अध्यक्ष माणिऋचन्द्र मोती-
		चन्द्ञी ।
११. २९-७-१४	झालरापाटन	
	सिटी	
१२. २९-७-१४	रगास्म	सेठ पुनमचन्द साकलचन्द्ञी
१३. १९-७-१४	बोधगांव	
१४. १९-७-१8	रतला <b>म</b>	
89-0-0-18	अहमदाबाद	सेठ ह्याचन्द्रजी मुनीन गोर्धन-
		मिल्स, मन्द्रसीर।

३. ८२।) स्मारक फंड़में भरे गये ।

४. ४००) स्मारक फंडमें हुए।

५. ५४॥) स्मारक फंडमें हुए।

तारीख सभाकी १६. ३०-७-१४	स्थान बैम्बई	सभापति । स्या. वा. न्या. पं. गोपाछदा- सजी बरैया ।
१७. २३-७-१8	हस्तिनापुर	अधिष्ठाता ऋषभब्रह्मचर्याश्रम ।
१८. २३-७ <b>-</b> १४	झाबुआ	
१९. २१-७-१8	वऌकत्ता	श्रीमान् बाब् घन्त्रहालनी जैन
20. 27-6-68	दिली	सेठ जग्गीमलजी जैन
२१. २१-७-१8	फतह <b>पु</b> र	मेहता मणिकचन्द्र छगनहासजी
77.7<-6-8	मुखतान	
73. 78-0-88	, बड़वानी	बाबू देवीसहायजी स्टेट एका०

इसके सिवाय प्रान्तिन, पावागढ़, पादरा, सोनिन्ना, बोरसद, सोनासण, आमोद, बाकरोल, सायमा, शोलापुर, कोल्हापुर, दाहोद, मावनगर, ईडर, मांड्वी, करममद, वेड्न, वलासण, डवका, मिलआव, इन्दौर, नांदगांव, महुआ, मधुवन, मालावाड़ा, वसो, खंडवा, रणासण, गोंटगांव, होसूर, राणापुर, बनारम, लाकरोड़ा, जवलपुर, बोधेगांव, वायन, कुशलगढ़, लाहौर, ओरण, सतना, गया, अनमेर, मैसुर, सिवनी, बिजनौर, बड़ौत, ललितपुर, फल्टन, भागलपुर, बड़नगर, वर्धी, शाहपुरा, वेलगांव, नासिक, बाराबकी, मुखाड़ा इत्यादि अनेक शहरों और गामोंमें शोकसभाएं हुई थीं और कई स्थानोंपर तो एक दिनके लिये व्यापारधन्दा बन्द कर दिया था और मन्दिरोंमें पुजन की गई थी।

६. सेटबीके अन्तिम ढाई लाखके दानके लिये कुटुम्बियोंको धन्यवाद ।

#### कोष्टक सहानुभूतिसूचकपत्र जो आये। तारीख संख्या नामावली स्थान १. १७-७-१४ सेउ मूलचंद किसनदास का १ डिया-सरत २, २६-७-१४ रा० रा० दोशी दलुचंद जैन कुंभारगांच ३. २८-७-१४ दिगम्बर जैन पंच घायन ४. २४-७-१४ रोडवल्जी मेचरानजी सुसारी ५. २६-७-१४ सेठ भीमचन्द्र टोडरमङ्जी उदयपुर €. २७-७-२४ Ugrasen Jain मेरठ U .P. ७. २०-७-१४ रेवचन्द्र छगनछालनी जैन रंगुन ८. २८-७-१४ समस्त प्रयागस्य जैन पंच मा. दीपचन्द परवार सुपरिन्टेन्डेन्ट अहाहाबाद ९. २५-७-१४ रामलाल मुगरीलाल जैन । छावनी नालंबर १०. २५-७-१४ श्रीमती राघा ंछावनी जालंधर ११. २५-७-१४ दयाचंद गोयलीय, वैरूशीखंदक, लखनऊ १२. २१-७-१४ हीराचन्द्र सखाराम कोठारी सु० आलंद १३. २५-७-१४ बाब् धूलचंद्र धनरा ननी महेता कुरालगढ़ १४. २२-७-१४ देवीदास दांभुराम जैन मुखतान सिटी १५. २५-७-१४ दिगम्बर जैन सभा झालरापाटन सिटी १६. २७-७-१४ दिगम्बर जैन पंच मालाबाह्य १७, २९-७-१४ प्रमचंद सांकलचंद रणासण १८. ३-८-१४ दगइसा सेक्कदास सामोडा १९. ९-८-१४ वासीराम परवार दि० जैन पावापूरी

## ७७६ ] अध्याय तेरहवां।

संख्या	तारीख	नामावछि	स्थान
₹०.	८-८ <b>-</b> १8	गोविन्द नरसिंह सिखेर(अजैन)	कोल्हापुर
२१.	6-<-68	प्रबन्धकर्ता स्या. महाविद्यालय	बनारस सिटी
२२.	१-८-१8	छोटालाल बाबरदाम	करमसद
२३.	<-<- i 8	श्रीमती लाजवन्तीबाई	सरघना
₹8.	88-5-88	दशाह्यड़ दिगम्बर जैन पंच	पाटनाकु भा
२५.	१२-८-१8	दिगम्बर जैन पंच	बुहारी
<b>₹</b> ६.	<b>メー</b> くー 8	किननदाम ईश्वरदाम	<b>ज</b> लालपु <i>ग</i>
		बल्बन्त बापुराव क्षीरमागर	बोधेगांव
२८.	१२-८ <del>-</del> १४	मंत्री जैन सभा	कालका
		दिगम्बर जैन पंच	हरदा
		सृरजमल जैन	हरदा
		दिगम्बर जैन पंच	बारसी
३२. १	3<- 8	बाबू मुधारसीलाल जैन	≥.लीगऱ्
३३. ः	89-0-0	भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी	सोजित्रा
३४. ३	89-0-19	दिगम्बर जैन पंच	वत्रासण
३५. ३	13-6-18	नाथालाल सोभागचन्द	ईंडर
•	-	दिगम्बर जैन पंच	बहू
		दिगम्बर जैन पंच	महुआ
	_	बारुचन्द्र सखाराम आदि	मोहोल
	89-0-95		अंक्लेश्वर
		मैनाबाई जैन पाठशाला	ईडर
<b>४१.</b> ३	89-0-58	नाथीत्राई	करमसद

<del>~~~</del> संख्या	तारीख	नामाविल	स्थान
४२.	89-6-55	अप्याराव वरूर	विरापुर
४३.	<b>२</b> २-७-१3	पं० माणिकचन्द जैन सु.	
		जन <b>बोर्डिंग</b>	विजनौर
88.	89-0-77	सेठ हरजीवन रायचन्द	आमोद
89.	२१-७-१8	ई३वरलाल ठोलिया	नगपुर
४६.	89-0-97	मंगप्पा महापा अंक्ले	वेलगांव
80.	₹₹-७-१8	र्वभ्यन्द्र कोट्स्मी	फलटण
87.	8 3-0-5 9	रायबहादुर सेठ कम्तूरचन्द्रनी	इन्दौर
86"	२३-७-१४	सक्छ जैन पंच	नांदगांव
90,	27-6-68	ब्रह्मचारी हैमसागरनी	करमसद
<b>५</b> १.	89-0-88	वळीभद्र तुकाराम पानगांवः	पूना
		कर (अजैन)	
۹٦.	२४-७-१४	पानाचंद कुवेरदाम	वेड्च
٩٩.	89-6-68	बावृ सुन्द्रग्लाल बेनाड़ा आ	उरापाटन सिटी
8.8	89-6-78	मोहनलाल हेमचन्द्र (धे०)	अहमदाबाद
99.	87-6-58	छोटालाल घेलाभाई गांधी	अंकलेश्वर
٧Ę.	,,	वीमा मेवाङ्ग पंच ममस्त	77
٩ <i>७</i> .	89-6-23	परीख चुन्नीलाल प्रेमानन्ददाम	बोरमद
۹८.	17	परीख जेठालाल प्रमानन्ददास	17
५९.	89-6-59	रतलाम मा. पा. दिगम्बर जै	रे र
		बोर्डिक्नके मु. और विद्यार्थीगण	। रतलाम
€0.	89-6-58	समस्त दिगम्बर जैन पंच	<b>र</b> तलाम

संस्था तारीख मामाविछ स्थ ६१. , मैनेजिङ्ग कमेटी मा. पा. दिगम्बर जैन बोर्डिंग रतला ६२. १८-७-१४ केशावलाल डाह्यामाई बी. ए. अहमद ६३. १८-७-१४ कालीदान नसकरण जवेरी बी. ए. एलएल. बी (धे०) अहमदाब ६४. १८-७-१४ मनसुख न्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद्र साहित्य मंदिर अहमदाब ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत ६६. १९-७-१४ जैन हितेच्लु मण्डल करमस	म स्वद्
दिगम्बर जैन बोर्डिंग रतला ६२. १८-७-१४ केश्वराग्छाल डाह्यामाई बी. ए. अहमद ६२. १८-७-१४ कालीदान नसकरण जवेरी बी. ए. एलएल. बी (धे०) अहमदाब ६४. १८-७-१४ मनसुख न्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर अहमदाब ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	ासद् ाद
६२. १८-७-१४ केशवलाल डाह्यामाई बी. ए. अहमद ६३. १८-७-१४ कालीदान जसकरण जवेरी बी. ए. एलएल. बी (धि०) अहमदाब ६४. १८-७-१४ मनसुख स्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर अहमदाब ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	ासद् ाद
६२. १८-७-१४ कालीदान जसकरण जवेरी  बी. ए. एलएल. बी (धे०) अहमदाब ६४. १८-७-१४ मनसुख स्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर अहमदाब ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	ाद
बी. ए. एडएड. बी (श्व०) अहमदाब ६४. १८-७-१४ मनसुख स्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर अहमदाब ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	
६४. १८-७-१४ मनसुख स्वजीभाई म्हेता मा. रायचंद साहित्य मंदिर अहमदाव ६४. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	
रायचंद्र साहित्य मंदिर अहमदाव ६५. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	गद
६५. १८-७-१४ गोरधनदास सुरजराम सुरत	गद
_	
६६, १९-७-१४ जैत हितेच्छ मारल कामम	
11, 11 , 1 d . 11 16/13 11.24 11.24	द
६७. ,, सेंट लालचन्द् कानदास बड़ीत	(T
६८. ,, दिगम्बर् जैन पंत्र व्यास	
<b>६९ १८-७-१</b> 8 K. N. and A. S.	
Framjee की ओरसे	
गुम्ताद्जी सोराबजी भरूचा बम्बई	
७०. ३०७-१४ गुलावनन्द्र हीरालाल धूलिय	ίτ
७१. १९-७-१४ माणिकवाई दिगम्बर जैन	
पाठशास्त्रकी ओरसे गांघी	
पुनमचन्द्र सांकलचन्द्र ईंड	₹
७२. २०-७-१४ जगमोहनदास वरजीवनदास	
(अजैन) पूना	
७३. १२-७-१४ चिमनछा जयसिंहमाई अहमदाब	
७४. , कीकाबाई वस्ततचन्द्र सुरत	ाद

संख्या	तारीख	नामादिल	स्थान
७९.	88-6-38	रामचन्द्रं उद्यचनद्	स्रोह
७६.	89-0-59	भृखणदास हरजीवनदास	सुरत
<i>99.</i>	१९-७-१8	सेठ हीराचन्द्र वेणीलाल तासवार	हा सुरत
७८.	,,	महेतानी परमानन्द इच्छाराम	
•		( अजैन )	,,
હર.	88-e-38	सेंड विनोदीसम बाल्चन्द्र	झालरापाटन
<o.< th=""><th>89-6-58</th><th>जयचन्द्रभाई जीवनचन्द्र (धे.)</th><th>भोयणी</th></o.<>	89-6-58	जयचन्द्रभाई जीवनचन्द्र (धे.)	भोयणी
< ₹.	3 *	दिगम्बर जैन पंच	पाद्रा
८२.	71	छोटालाल बेचस्दास	बोरसद
८३.	89-6-28	वोहरा लीलाचन्द हरिचन्द्र	पूना केम्प
28.	**	शाह भगवानदास शोभाराम	19
۲٩.	89-0-88	सेठ भगवान छगन	भावनगर
८६.	80-0-63	दोशी तलकचन्द कस्त्र्यंद	बारामती
८७.	१९-७-१8	नरोत्तपदाम भीखाभाई	भावनगर
		गांधी नाथारंगजी	आऋलुन
८९.	66-0-63	दोशी पदमशी जोयतादःस	ईंडर
९०.	77	गांधी हरिमाई देवकरण	शोलापुर
९१.	"	गांधी रावजीभाई नानचंद	19
९२.	77	वालचंद गुलाबचंद वागडया	भावनगर
९३.	99	तवनपा अणपा र्लेगड़े	शाहपुर
९४.	२०-७-१४	दिगम्बर जैन पाठशाला	बड़ोदरा
९४.	,,	<b>ल्लुभाई करमचंद द्छा</b> छ	बी नापुर

संख्य	IT	तारीख	नामाविछ	स्थान
			मनसुख अनुषचंद शाह (श्वे.)	अहमदावाद
९७.	8	९-७-१४	दोमाड़ा बाबूमाई देवचंद	टेम्भुरणी
९८.	२	o-6-68	नाना तवनप्पा कावलकीया	शाहपुर
९९.	3	0-6-68	नरसिंहपुरा दिगम्बर जैन पंच	नरोड़ा
800.	3	89-6-0	अहमदावाद प्रे० मो० दि०	•
			जैन बोर्डिङ	अहमदाबाद
इ०१-		"	उमैद्वंड कंकुवंद	वीज।पुर
१०२.	२	5-0-68	गोर्धन हरचंद	मखी आव
१०३.	२	३−७−१•४	मणीटाल जीवराम	विसनगर्
१०४.	२	२-७-१४	दोशी अमूलक जयचन्द	देशोत्तर
१०५.		33	समस्त दिगम्बर जैन पंच	दाहोद
१०६.	3	81-0-68	बःव् नवलकिशोर मा. बार लार	बिरी कानपुर
<b>१</b> ०७.	3	87-6-8	दिगम्बर जैन पंच	<b>म</b> खीआव
११८.	8	89-0-8	डाह्याभाई शिवलाल मैने नर	
		•	बीमपंथी कोठी	गिरीड़ी
१०९.	₹.	89-e-5	कालिदास सांकलचन्द	उनड़िया
११०.	?	१-७-१४	नीवण जेठीराम	दहीवडी
१११-	7	89-6-0	माणिकचन्द्र मोतीचन्द्र	भावनगर
११२.	३	89-6-0	गांधी माणिकचन्द	आरा
११३.	3	89-6-	विचित्रशोध रत्नाकर् का.	सागर
११४.		21	जीवण रावभी	म्राह
११५.	8,	4-6-68	सन्तुमलजी	लवनऊ

***			
संख्या	तारीख	मामाविल	स्थान
११६.	39-0-88	४ फूलचन्द् छगनलाल	मगरोळ
११७.	₹0-0-18	सामन्तराम सेवाराम	उज्जन
११८.	9,7	राय ब॰ सेठवमंडीलालनी	मु नफरनगर
११९.	39-0-9	3 भारतीय नैन सिद्धांत प्रका-	
		शिनी संस्थाके संचालक	
		पं. पनालालनी बाकलीवाल,	•
		पं. श्रीलाल, पं. गनाधरलाल,	
		र्ष. मुन्नालाल, पं. वृजभूपण-	
		लालनी, आदि	बनार्स
१२०.	२२-७-१8	. पं. फतेहचन्द् कपुरचन्द्र लालन	देवलाखी
१२१.	२१-७-१४	माणिकवाई लायंत्ररीके प्रमुख	बोरसद
१२२.	₹0 <b>-</b> ७-१8	बुधमछ पाटनी	इन्दौर
१२३.	२०-७-१3	दिगम्बर जैन पंच	शाहपुर
१२४.	89-6-58	दिगम्बर जैन पंत्र काणीसा	खम्भाद
१२५.	<b>२१-७-</b> १३	घीया कुन्दनभी कपुरचंद	परताबगढ़
१२६.	89-0-83	सुरजमळ ळल्छुभाईकी कंपनी	रंगुन
१२७.	१८-७-१४	जीवद्या ज्ञान प्र० फंड	वमबई
१२८.	₹-<-१४	J. L. Jaini M. A. S	Stockport
		Bar-at-law.	(England)
		मा० महावीर बदरहुड-रुण्डन	

१२९, २५-७-१४ पण्डिताचार्य महारक श्री चा-स्कीर्तिजी महारान श्रवणवेलगुङ

000 111		(A 101 (A 000) 400 A 00 A 10 A 11 12A 0	AA44 500 0 5
संख्या	तारीख	नामावलि	स्यान
१३०.	२-८-१8	मोतीलाल वकील जैन ओफी	<b>ন</b>
		मा०	दिही
१३१.	२६-७-१४	बेचरदास भाईदान (अजैन)	रानकोट
१३२.	38-1-18	मेहरचन्द्र पुत्र हा. धवहकिशोर	
		( रईम )	सहारनपुर
१३३.	<del>२</del> ५-७-१४	मद्रमोहन जैन	झालराषाटन
<b>१</b> ३४. १	89 <del>-</del> e-	दिगम्बर जैन पंच	सायना
739.	89-0-88	काशीवाई	पाटग
१३६. व	2x-9-18	हीराबाई	साद्रा
१३७.	१८-७-१8	श्री निद्धावाई	अःरा
<b>१</b> ३८.	,,	इयामाबाई अनन्त मुरूरो	को रह'पुर
१३९.		दिनम्य जैन पंच	ट <b>ड़ौ</b> द्रा
₹80.	89-е	बी० ए० ५.टील	सिराल
१४१.	<b>२</b> २-७-१४	दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग	हुक्ली
१४२.	१४-७-१४	विजकोरबाई	वलसाङ्
१४३.	89-e-95	दलपतभाई केवलभाई शाह	12
१८४. ३	89-0-95	सेंड गुलामहुसेन कासमभाई	जुनागढ़
	-	रावसाहब गुलाबचन्द्रजी	छपरा
₹84.	89-e-98	पं॰ गोपालदास बर्या, समा-	_
		पति दि० नैन सभा	बम् <b>ब</b> ई
-		ला० जग्गीमलनी	दिखी
₹85.	₹8-0-₹ <b>8</b>	दीवान् व. अम्बालाल साकर-	
		खा <b>छ देशाई एम० ए</b> ०	अहमदानाद

संस्था	तारीख	नामाविल	स्थान
१४९.	२०-७-१४	सेठ हरनारायण जैन	भागतवुर
१९०.	3 1-0-18	भगवानदीनजी अधिष्ठाता	
		ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम	हस्तिनापुर
१५१.	89-e-55	देवीसहायजी जैन	फिरोजपुर
१९२.	24-6-18	पीताम्बरदास उपदेशक	ईडर
१५३.	89-6-59	बाबू ऋषभदास वकील	मिरत
9,48.	28-0-18	नानवन्द्र पदमसिंह मुनीम	तारङ्गानी
१५५.	89-0-99	बच्चूलाल जैन	आरा
१९६.	89-0-98	मोदी अम्माशी जेठामाई	जुनागढ़
१९७.	77-0-18	ज्योति।सादजी सं० जैन	
		पदी <b>र</b>	देवबन्द
१९८.	27-0-18	दि. मालवा प्रः महा सभा	
		के मगापितकी ओरसे सेठ	
		वालचन्द् <b>जी</b>	इन्दौर
१५९.	89-e-\$9	दिएम्बर जैन पंत्र	डनका
१६०.	२२-७-१8	फुलचन्द् रुवनाथदास	पटलाद
१६१.	89-6-68	सर्वसुखदास खनांची	नयपुर
१६२.	79-6-18	घनस्यामदास छल्लूमाई गु-	
		ड्य क्लार्क (भनेत)	सूरत
१६३.	२३-७-१४	धन्नूलाल अग्रवाल, समापति	
-		दि. नै । पंचायती	कड़ कता
१६४.	₹₹ <b>-</b> 9 <b>-</b> ₹8	मंगवानदास झवेरदास	सोजित्रा

			~~~~~
संस्था	तारीख	नामाविष्ठ	स्थान
१६५.	२५-७-१8	दोशी हिराचंद नीळुचंद	कुंभारगांव
१६६.	२३-७-१8	दिगम्बर जैन सभा	पहाङ्गीधीरन
<b>१</b> ६ ७.	,,	चुनीञाल उगरचन्द	फलहपुर
186.	29-0-18	दि. जैन पंच	<u> असुवा</u>
१६९.	२५-७-१४	नयसिंहभाई गुलाबचंद	श्र <b>मा</b> सपाटण
<b>१</b> ७०.	29-6-68	सेठ मीखामाई वेचरदास	वांच
<b>₹</b> ७१.	<b>२</b> २-७-१8	दिगंबर जैन पंच	बेडच
207.	89-0-08	चौथमलजी	मुख्तान
१७३.	8.5-6-68	तासवाळा वेणीळाळ केशुरदास	सूरत
१७४.	81-0-58	ए. बी. टड्ड एम० ए०	कोल्हापुर
१७५,	89-0-88	चुन्नील।ल एम० कापड़िया	ब्मबई
१७६.	77	नगीनदास हरजीवनदास,	
		नानावटी (अजैन)	सुरत
<b>?</b> ७७. १	89-0-58	ताराचंद मगनलाल	बड़ौदरा
१७८. ३	89-6-0	मोहनलाल कालीदास शाह	मुं <b>च</b> ई
१७९.	89-0->	दुलीचंद ओंकारदास	खामगांव
<b>१८०</b> १	389-0-0	सदार सेठ ईश्वरदास नगनी-	
		वनदास स्टोर (अजैन)	सूरत
१८१. १	89-6-58	कांतिलाल नाणावटी एम. ए.	
		हेडमास्तर दरबार, स्कूल	
		( अजैन )	रतलाम
१८२. १	<b>e</b> -0-88	छोटाछाछ घेछामाई गांधी	अंक <i>ले</i> श्वर



सेठजी ६० वर्षकी अवस्थामें.



नंबर	तारीख	नामाविल	श्र(म
<b>₹</b> < ₹.	89-6-68	सौ० गिरनाबाई	सोलापुर
ζ<8∗	89-6-68	प्रमुदास हेपचन्द्र	मूरत
•		त्रिभुवनदास विजनाल	, 33
१८६.	89-0-68	नवलचंद्र सौभागवंद	**
१८७.	89-6-68	अमरचंद उर्फ कीकामाई	
		अभे चंद	,,
१८८.	89-0-8	प्रेयचंद हरगोवनदास	
		मोतीरूपावाले	3 5
१८९.	89-0-18	दलीचंद्र गणपत भिर्वा	
		(अभैन )	"
१९०.	₹0-4-18	रुराम सिपोडि ॥ फोटोब्राफा	बम्बई
१९१.	30-0-18	मोतीलाल दिर्छा ३:ले	मंसूरी
१९२.	30-(-18	सं. बन्दे जिनवरम्	निय णी
१९३.	₹0-0-18	राजवैद्य पं० बाबूलाल जैन	सहडोल
१९४.	२९-७-१8	दि॰ जै। पंत्र	राणापुर
		ৰাণুভান্ত কালা	इन्दौर
१९६.	38-0-83	मेहता हुवमीवन्द मगनछाछ	भींडर
		चिरनीलाल बड़नात्या मा०	
		दि. जैन पंवान	वर्घा
१९८.	२८-७-१४	दिगम्बर जैन सभा	मुलतान
१९९.	8 1-0-58	मोहनढाळ चुन्नी ग्रल	पारण
		इक्मीनाराण <del>जी</del>	(गुनावा)
	la a		

28	]	अध्याय तेरहवां ।	
नंबर	तारीख	नामाविष्ठ	म्राम
२०१.	२३-७-१3	नानारावजी पेड़ेकर मन्त्री	
	•	शिलण प्रसारक संस्था	दुधगांव
२०२.	१८-७-१8	मोतीबाब त्रिकमदास माहवी	बाकरोल
२०३.	89-6-2	मूलचन्द्र सर्राफ	बर् आम्।गर
₹08.	१८-७-१३	हरजीवन रायचन्द्र शाह	आमोद
२०५.	89-6->3	.T. C. फिलिप्म, प्रबन्धक,	
		किलिक निकशनकी कंपनी	ब्∓बई
२०६.	१८-७-१8	रूपमी जैन श्राविकाशासा	ब्र∓बई
२०७.	83-0-68	मा. गंगाशंकर छु० प्रे० मो०	
		दिगम्बर जैन बोर्डिंग	अहमदाबाद्
२०८.	<b>१९-</b> ७-१8	समस्त दिगम्बर जैन पंच	मूरत
२०९.	, ,,	समस्त दि० जैन पंच, बोबा	
		और मावनगर	भावनगर
२१०	- ,,	वीसामेबाड़ा जैन पंच मनस्त	बोरमद
		बी. पी. प टी <b>छ</b>	होमुर
२१२.	. १८–७ <b>–</b> १४	दिगम्बा जैन पंच	वनारम्
२१३.	. १९,-७-१४	दिगम्बर जैन काराना	पाळीता <b>णा</b>
२१४.	89-0-05	द्वीमहाः जी स्टेट अकांउंस्ट	बड़वानी
<b>ર</b> ૧૫,	89-6-63	टाकोग्डाम नवलचन्द्र सबनन	सूरत
<b>२</b> १६	. १७-७-१४	हेमचन्द् जैन	सुरत
२१७,	. <i>७-</i> ८ <b>-</b> १४	भगवानदास दुछभदास	बम्बई
<b>२</b> १८	. <-<-१४	नयवन्ती गौरा अस्पताल	रायबरली

	दान	वीरका स्वर्धवास ।	<b>e</b> Se ]
नंबर	तारीख	नामावि	ग्राम
२१९.	२८-७-१8	महामन्त्री सेठ झुत्रालावजी	इन्दौर
२२०.	9-(-88	हीरालाल महामन्त्री	राघोगढ़
२२१.	3-1-18	श्रीमती	मेरठ
		समस्त जैन पंच	आर्वी
२२३.	\$ ? <b>-</b> <- ₹ 8	सुलदेव वर्मा, मंत्री, जैन	
		कुमार सभा	<u> मुलतान</u>
२२४.	<b>₹</b> -<- { 8	सकल जैन पंच	क् <b>हौदरा</b>
२२४.	77-6-88	जुगमन्दिरदास (रई०)	नजीबाबाद्
२२६.	? 9-9-? 8	नगन्नाथप्रमाद् शुक्त (अनैन)	त्रयाग
२२७.	73-6-83	Kalidas K. Pater	
		मंत्री आर्यसमान मनिक	ं वर वई
२२८.	1-<-18	S. M. Anklo	देलगांव
२२९.	१९-5-66	सबस्त दि० जैन पंच	बर बई
२२०.	₹0-9-₹8	प्राणशंकर लल्लुभाई देशाई	भहम <b>दाबाद्</b>
२३१.	20-9-99	श्री ० कमनाबाई नगीनदास सु	इ वालकेधर
२३२.	86-0-83	श्रीनान् श्रीमन्त सेठ पूरन <b>स</b> ः	जी सिरनी
२३३.	88-8-88	झवरी उन्छमाई रायचनः	अहमद्। बाद्

## कितनेक शोकजनक पत्र।

श्रीयुत सेठ नवलचन्दजी हीराचन्द जीहरी, बम्बई,

स्वर्गीय स्वनाम धन्य दानवीर सेठ माणिकचन्द्रजीके असमय वियोगका जो असह्य शोक आप पर और आपके परिवारपर आकर पड़ा है वह ऐसा नहीं है कि शब्दोंके द्वारा प्रकट किया जा सके। हमको सूझ नहीं पड़ता कि हम आप लोगोंके शोक सन्दस हृदयको किन शब्दोंसे शान्त करें, और आपको धीरज बंधांवें।

इस शोकका आपके ही समान प्रत्येक सहृदय जैनी अपने हृद्यमें अतिशयताकं साथ अनुभन कर रही है। क्योंकि स्वर्गीय सेठजीने अपने कृत्योंसे प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें सदाके लिये स्थान बना लिया है। उन्होंने जैन समाजपर जो २ उपकार किये हैं व बहुत बड़े और चिरस्थाई हैं। जैन समाज उनके उपकारोंके एक अंशका बद्ला द्नेको भी समर्थ नहीं है । इस्रिक्टिये उनके वियोगका श्रोक होना हम लोगोंके लिये भी बिल्कुल स्वामाविक है। हमें नहीं समझ पड़ता कि हम आपके प्रति सहानुभूति प्रकट करें या अपने शोक प्रति औरोंकी सहानुभूतिकी आशा करें। इसलिये संट जीके दुःखमें हम और आप समदुःखी हैं। इस समय इस शोकसे मुक्त होनेका इसके मित्रा और कोई उपाय नहीं है कि हम संसारके स्वरूपका चिंतवन करें। इसका यह नियम ही है कि जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती। "मरण:प्रकृति शारीरिणाम्" मृत्यु होना प्राणी मात्रके लिये स्वामाविक है। इसका विचार करके **आ**प होग शोकका परित्याग करें और सेटनी जो कीर्त्तिका मार्ग बना गये हैं उसपरसे उन्हीं के पर्विन्हों प्रसे आप आपकी संतानके सिहत चर्छे जिससे आपके परिवारमें ख० सेटजीं ही समान अनेक दानवीर सेटजी पाकर हम छोग भी इम शोकको मूछ जावें। श्री जीकी क्रिपासे सेटजीकी आत्माको शान्ति छाम हो। और आप छोग भी इम शोकसे मुक्त होनेकी शक्ति प्राप्त करें। विद्येष्वछमति विस्तरेण।

हीराबाग-बम्बई । समस्त दिगम्बर जैन समानकी ओरसे ता. १९-७-१४. सरूपचंद हुकमचंद (समापति)

London, 2nd August 1914.

Dearest Sister Maganbai,

My soul is strocked to silence at the loss of my beloved Sethji. He was a friend, leader and colleague and to me almost like a father. Your loss is very great, but our sympathy and loyalty to you and your family, to your little brother and our beloved Sethani will never fail. Now a few things have to be done.

- (1) A Committee must be formed of 5 or 3 members to prepare an authoritative life of Sethji. A fund must be set apart for this.
- (2) One good memorial must be raised to Sethji. He was the pioneer lover and founder of Jaina Boarding Houses. His unimost ambition was to establish a Jaina Home in England. We should try and open a "Manekchand Jain

Home "in London. For this, dear Maganbai, you should devote your splendid talents and in one or two year's time we can have a big Jaina Home in London. But a beginning can be made with ven one lac of Rupeess.—Allow me to assure you of my loyalty and service to you and the family. Consult my friends Br. Sital Pershadji and Seth Hirachand Nemehand of Sholapur on this.

In mourning,
Yours Sincerely,
, J. L. Jaini Bar-at-Law.

श्रीमान् सेठ नवलचद हीराचंद, आदि मुकुटुम्ब सेठ माणिकचंद पानाचंद प्रति ।

समन्त दिगम्बर जैन पंचान् बम्बईकी ओरसे विदित हो कि ता. २०--७-१४को हीराबागमें एक वृहत् सभा हुई। उसमें जो प्रस्ताव म्बीकृत हुआ सो आपकी सेवामें प्रेपित किया जाता है।

"स्वर्गवासी श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचन्द जे. पी. ने जो अपना अंतिम दान ढाई लक्ष रुपयेका किया है व जिसके लिये जुक्ली बागका मकान ट्रष्ट कर दिया है और उसकी आमदको परीक्ष लय, उपदेश फंड, तीर्थरक्षा व विद्या-पियोंको लालवृत्ति देनेके प्रशंनीय कार्योमें खर्च करना निश्चय किया है उसके लिये बम्बईका समस्त दिगम्बर जैन समाज उक्त सेठजी व उनके सर्व कुटुम्बका अतिशय कृतज्ञ है और आशा करता है कि जिम भांति स्वर्गवासी सेठजीका लक्ष अपनी समाज व धर्मकी उन्नति पर था उसी तरह उनके उदार और माननीय कुटुम्बी जनोंका भी पृरा २ ध्वान इस पवित्र जिन धर्म और समाजकी उन्न-तिमें कटिवद्ध रहेगा। ''

> आपका हितकांक्षी-गोपालद्वास वरैया, सभापति।

श्रीमती मगनवाईजी,

श्री० सेठ जै० माणिकचंद्जीका स्वर्गवास सुन सारी समाजमें शोकरूपी मेवाच्छादित हो गया । हृद्य कम्प होकर वेदना अनुभव होने छगा ।

हा ! समाजका इन्दु कालरूपी केतुस द्व गया ।

इस समय हमारे यहांके मर्व नरनारी शोकातुर हैं—आपके प्रति तथा मातुश्री आदि सर्व कुटुम्बियों प्रति समवेदना प्रकट करते हैं। अन्तमें यह मनोकामना है कि पृज्य संटजीके पवित्र आत्माको शानित मिन्ने और आप लोग भी बारह भावना भावें।

दुः व इदया-चंदाबाई, आरा।

श्रीमती पंडिता मगनवाईजी, मुबई.

जैन समाजाचे पिते—सत्रधार—आधारस्तभ-एक अमूल्य रत्न—असे आपले वडील व आमचे पितृसदृश्य दा॰ जै॰ कु॰ शेठ माणिकचंद याच्या आकिसमक मग्णाची वार्ता काल रोजी येथ पमरली. मी हल्ली थोडासा शीक (अमांशाच्या विकागने) असल्या मुळे घरीच असतो. कालगेजी आमच्या एका मित्राने सदर बातमी मला घरी येउन सांग-तांच एकदम् विद्युत्पात झाल्या सारखे वाटलें! फाग्च दु:ख झाले. माझ्या-वर तग त्यांची फारच प्रीती. उपाय नाही. कर्मच्छेपुढें कोणाचें काय

चालणार ? आएण सृज्ञच आहां. त्यांच्या मरणाने जैन समाजाची किती नुकसानी जाली आहे हे लक्षांत आणृन ह्यांतल्या ह्यांत समाधान पानाल अशो आशा आहे. जैनसमाजाचा एक आधार व चालक नाहींसा झाला. आज जैनसमाज लंगडा-पंग्र झाला असे म्हटलें; तरी चालेल. आपले चंधु चि॰ बाब्स दीर्घकाल आयुरारोग्य प्राप्त होनो व आपल्या विड-लांचा कित्ता वरोबर गिग्वो अशी श्रीजिनेश्वरचरणी प्रार्थना कहन हे दुःल-वट्यांचे पत्र सपवितो. कलावे ही विनंती. ता० १९-७-१४.

आपला एक बंधु---

#### भरमप्पा पदमप्पा पाटील, होसूर।

#### मान्यवर महोदयजी !

गह हृत्यविदासक दु:समाचार पटका अन्यन्त शोक हुआ है कि जैन जातिक चिरस्थाई सभापित जैनकुलभूषण दानवीर सेट माणिकचन्द्रजी जे. पी. बम्बईका अक्रसमान् स्वर्गवास हो गया है। हाय! बड़ा अनर्थ हुआ। यह समाचार मैंन सभामें सुनाया। सभामें जितने जन उपस्थित थे सब हीके चित्त शोकातुर होने छगे और इस असार संसारकी छिन भंगुर अवस्थापर विचार करने छगे और कहने छगे किहाय काल! तू बड़ा अन्यायी है। योग्यायोग्यका रंच मात्र भी विचार नहीं करता। अपनी गतिमें अरोक गमन करता रहता है। (विचार पूर्वक) वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है। जिसका संयोग है उसका वियोग अवस्य होता है। यथा—

#### गाथ:--

जं किचिण उपण्णे तस्त विणासो हवई णियमेण। परिणामसस्वेण वि किंविविसायं अत्थि॥ ऐसा विचार कर धैर्य्यका अवलंबन करना उचित है। इस प्रकार यह जैन सभा कालका शोकातुर होती हुई मी अंतमें श्रीमान् सेठजीके कुटंबी जनोंसे प्रार्थना करती है कि इस संमारके स्वमानको विचार करके संतोपावलंबन करें। दोहे—

काल बड़ा विकगल है सोचे नांही नेक।
अज्ञानी निर्देशी कुटिल गखे अपनी टेंक ॥ १ ॥
अरं ! दृष्ट पापात्मा करुणा हीन कठोर।
जन जातिके सनको हा ! हा ! कीन विछोग॥ २ ॥

हा ! हा ! दिनेश छिप गयो भयो घोर अँधियार।

हीरा कीसी ज्योति थी सोकित गई सिघार ॥ ३॥ हा : हा ! माणिक ज्योति सम हा ! जडगनमें चंद।

हम छोड़ तुम कित गए है! प्रफुहित अँग ॥ ४ ॥ ज्ञानी धनी स्कोल वर लीन सो पर उपकार ।

तुम विन इत हम सबनको कोन कर उद्घार ॥ ५ ॥ सागरवत गंभीर हृदय कल्पवृक्ष सुख देन ।

तुम विन इबत जातिकी को शुध ले दिन रन ॥ ६ ॥ जैनोन्नतिकी आशको ले गयो माम अषाह ।

कृष्णा नवसीके दिना जाति भई अनाथ ॥ ७ ॥ हाय देव ! यह क्या कियो मुनत ही भये अर्धार ।

हृदय शोक बाढ़ो अवे वहता नयनो नीर ॥ ८ ॥

चाहत हूं उन दर्शको पर नहिं पार वमात । देख कालकी चालको काँपत हैं निज गात ॥ ९ ॥

काहे हृदय अधीर हो वस्तु स्वरूप विचार। सनमे अत्र धीरज धरों यह संसार असार॥१०॥

श्री अरहंतसे वीनती करूं जौर युगपान।

श्रीमन्जीकी आत्मा वसे शांत मुख्याम॥१९॥

होय कुटंबी जननके हृदयशांतको वास । जैनजाति जिनधर्मसे नितप्रति प्रेम व्यवहार ॥१२॥ जैनन दीन विलोकिके करो सनाथ हे नाथ।

यह सुबुद्धि अब दीजिये करे निज पर उद्धार ॥१३॥
जैन सभा कालिकातनी सुनहु बीनती ऐस।

करों कृपा इस जातिमें जासो बाढ़े. प्रेम ॥१४॥
स्वजनन प्रति यह बीनती करहु हृदय धर धीर।
अधिर चरित संसार लखि धर संतोषि चितवीर ॥१५॥

### बनारसीदास जैन,

मत्री, जैन समा, कालका ।

सुप्रसिद्ध धार्मिक सिरोमणि श्रीमान् माणिकचन्द्रजीकु अक-स्मात् स्वर्गवास हुआ कर्के वृत्त पत्रसे मालुम हुवा—इस्से ऐसा धार्मिक सिरोस्त्नका वियोग हूये सो हं लोकके सहस साधु लोककुं मी व्या-कुलता संपादक है तुम लोककु कहना क्या है, तथापि आप लोक व्याकुलतासे निवृत्त होकर सेष्टिजीक सहस परोपकार कार्यमें व्यापृत होकर ऐहिकामुप्पिक सुखपद धर्म कार्यमें निस्त होना चाहिये।

> भ० चारूकीित पंडिताचार्य, श्रवण बेलगुल (सही कर्णाटकी भाषामें)

श्रीयुत्र मान्यवर सेट नवलचंदनी हीराचंदनी, जुहारू ।

दानवीर जैनकुल्रभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंद जे० पी० के अचानक स्वर्गवाससे आन हमें अतिशय दुःख है। सेठनीके स्वर्गवास-के कारण जैन समानको एक मच्चे मित्र और रक्षककी असह्य हानि उठानो पड़ी है। श्रीमान् सेठनी न केवल आपके ही बंधु थे किन्तु वे दक्ष दक्ष जैन धर्मियोंके माई थे और उन एकके मरणसे आज लाखों जैनी अपने अपने भाईके खोजानेके समान दुखी हैं। तो भी संसारकी स्थितिको देखकर हृदय संतोषित करना पड़ता है। हम आपके दु:खसे सहानुभृति प्रकट करते हैं और निवेदन करते हैं कि आपको भी संसारके स्वरूपका ध्यान मनमें संतोष रखनेके साथ स्वर्गीय सेटजीके पदानुसारी होनेका प्रयत्न करना चाहिये।

शोकाकुल-

# सूरजमल जैन, हरदा।

महोद्यजी !

आनदिन इस शोक मानारको प्रकट करते छेखनी थर्ग रही है। विवश छिखना पड़ता है कि ऐमा विषय कभी न छिखना पड़े। श्रीयुक्त माणिकवन्द हीगवन्द जे. पी. के मृत्युपर बड़ा ही दु:ख-दायी आयात पहुंचा है। आपके योगसे वैद्य शास्त्रीय हर एक प्रकारको समुक्तिकी आशा ही थी इतना ही नहीं आपने हीरावणमें धर्मार्थ औषधालय अपना अमर नामरक्षक नियत कर दिया है। ऐसे रनरत्नकं न रहनेसे आजआयुर्वेदके शुभिचन्तक सभी सुजनोंकी बड़ी भारी हानि हुई है। आपकी आत्माको स्वर्गशास हो।

मुझे श्रा. सुदी १ के कमेटीमें इस समाचार पर " निम्बल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन ' की स्थायी समितिन आपलोगोंसे (सेठनीकी बाई और पुत्र आदि कुटुम्बी) समवेदना प्रकट करनेकी आज्ञा दी है। तदनुभार मैं इस महा बोर दु:खप्रद समाचारको लिये सम दु:खी होते हुए आपलोगोंको बज्ज हृदय कर धैय धार-

णके लिये दृहता दिलाता हुआ कहता हूं कि आप भविष्यमें सेठ-जीके आयुर्वेद प्रेमको अटल सिद्धान्तपर रेखायुक्त करते हुए अपने कर्तव्य पथपर आरूट रहेंगे।

भवदीय--

### जगन्नाथप्रसाद् शुक्र, १याग ।

व्हाला व्हेन गं० स्व० मगनवहेन माणेकचद.

दिगम्बर जैन कोमना अभेसर धुरधर दानवीर-तमारा पूज्य पिता-भाई माणेकचंद हीराचंदना एकाएक दिलगीरी भरेका मृत्यु समाचारथी हुं घणीज दिलगीर थुई छुं।

जैन कोममां अने देशना सार्वजनिक कामोंमां पोतानी जात महे-नतथी प्रमाणिकपणे वेणरमां संम्पादन कीयेली लाखोनी दोलतनो दिलनी उदार लागणीथी सद्पयोग करनार महुंम भाई माणेकचंद हीराचंदना मृत्युथी-खंरखर जैन कोमे तेमज देशनां केटलांक सार्वजनिक खातांओए एक महान दानवीर नरने पोतानी वर्ण्येथी गुमाब्यो है

तमारा कुटुम्ब उपर आ अणधोरली श्रावी पहेली श्राफतमां हुं घणीज दिलगीर थई हुं—दु:ख सहन करवा इश्वर शांति आपो......

जुभेच्छक **बंहेन**-

## जमनाबाई नगीनदास सक्कई, वालकेश्वरः

क्रेटनी,

श्रीमान शेठ माणेकचदजीना अकस्मात देवलोक थवाना समाचार सांभळीने घणोज खेद कुदरती रीते थयो छे. आपना कुटुंबने तो एमनी पूरी खोट लागेज परंतु आखी जैन जनसमाज साथे देशना मोटा भागने तेमनी खोट थई पडी, एवा दानवीर पुरुषो क्यां छे के आ खोट पूरी पडे.....

कदमलाल केशवराम नाणावटी, रतलाम-

आत्मस्नेही ब्हेन मगनब्हेन,

ना तनदुरस्तीए देवलाजी हतो. "जामे जमशेद " पत्रमां जे समान् चार वांचवामां आव्या तेथी हृदयना उड़ा भागमां जे शोक थाय छे तेनो पार नथी. तमारी रथीतीने त्यारे केवी आघात थयो होवी जोईए. तंओ तमारी साथे जैन कोमना पिता हता, तेमा पण त्रणे सम्प्रदायना अभेद भावे विद्यार्थी, दुःखी जैनोना, अवस्य हता, पण च्हेन, आपणा पुण्यनी अवधि होय छे, आ अवधिनी पर रहेता आत्मामां रही आत्मबळ संपादन करी पिनुश्रीने पमले चालवामां तेओश्रीना आत्माने शांति अने भाषणनु कल्याण छे शासन देवो तमारा कुटुंबने आ असह्य आ-घातमां रक्षण करें.

तमारो शोकातुर, वीरवाळ पं० लालनः

मान्यवरा श्रीमती मगनवाईजी।

यह धुन कर कि श्रीमान दा बीर जैनकुलमूषण सेठ मान-कबन्दजी अकाल मृत्युकं ग्राप्त हो गए अत्यंत शोक हुआ। न जाने इस जातिका कैया दुर्भाग्य है कि प्रथम तो इसमें नररत्नोंकी उत्पत्ति ही नहीं, यदि एक दो की उत्पत्ति होती है तो उन्हें मृत्यु अपना ग्राप्त बनालेती है। सेठजीकी इस अकाल मृत्युसे जो दुःख आपको तथा आपके कुटुम्बी जनोंको हुआ है उससे कई गुणा अधिक हम लोगोंको हुआ है जिसका हम शब्दों द्वारा प्रकाश करनेमें असमर्थ हैं। बाईजी, आप स्वयं विदुषी हैं। आप संसारकी अवस्थाको महोमांति जानतनी हैं, इसमें जो जन्म लेता है वह अवश्य एकदिन विनाशको प्राप्त होता है। इस पृथ्वीपर कितने बल्देव, कामदेव, नारायण, प्रति नारायण हुए परन्तु सबके सब कालके प्राप्त हुए, अतएव यह संसार असार ह अशरण है, वह जान कर आप शोकको त्याग कर और धैर्य धारण करें और सर्वज्ञ देवसे प्रार्थना करें कि सेटजीकी आत्माको भव २ में शांति मिले।....

> आपके दुःखका साथी-दयाचन्द गोयलीय, बैह्नी खंदक-लम्बन्छ।

परम रेनही परम विवेकी शेठ नवलचंद हीराचंद जीग-

आजे सवारे एकदम ओचिता शेट माणेकचंदजीना स्वर्भवास थवाना समाचार तार द्वारा सांभळी अजायबी अने दिलगीरीनी पार रह्यो नथी के ओचितुं आ शं थई गयुं ! काईपण मांदा वगर आम ओचितु मृत्य थवाना समाचार सांभळी हैयं भराई आवे छे ने हुं लखदुं ते समज पडती नथी. आथी दिगंबर जैन कीम उपर हेमां आपना कुएंब उपर आ फटका जेवा तेवा लाखा नभी अने आ या करी महाय एम नथी. आम ओचिंत थवाथी घणी घणी बाबतोना खुलासाओ करवाना आपने रही गया हरो तेम अमारा पण मनना उमेद मनमां रही गया केमके घणी वाबताना खुलासा अमने करवाना हता. शेठजी ! आ गमगीन बनावयो आपना कृदंब उपर में कवस्पतन् अने ओचिंद्रं दुःख आधी पड्युं छे तेमां अमी अंत:करमधी भाग छीए छिए. आवतुं 'दिगंबर जैन ' आ शोक समाचार सहित बहार पाडवुं पडशे, माटे शेटे जे पाता पाछळ वापरवानी ध्यवस्था माटेनं विल करेलं छ तेनी नकल अमने वीडी आपमी तथा येटजीना प्तनं नाम हां छे अने उमर ठं छं ते जणावशे. मेरेग्यानी करी विगतवार समाचार लखती ों। उपकार भगे, एवं कामकान छखशो.

अते आजे चंदावाधीमां स्नान मंडाया हता. रडवा कुटवानुं बंध राखवामां आव्यं हतुं ने धर्मनां गीतो गवायां हतां....

आपनो आज्ञाकारी-मूळचंद किसनदास कापडिया-सूरत.

#### गंगास्वरूप व्हेन मगनव्हेन,

आपना पूज्य शिरछत्र पिताना अचानक मृत्युना समाचार वांचीने अमा वणा दिलगीर थया छीए. जैन कोमनी उन्नति माटे तेओश्रीए जे मोग आप्यो छे, तेवो मोग जैन कोमना श्रीमंतोमांथी आज पर्यत कोईए पण अनिल नथी. तेओश्रीना कार्योथी तेमना देहनोज आपणने वियोग थयेल छे, बाकी तेओ जीवताज छे एम मानवामां अमो भूल करता नथी. तेमना वियोगथी आपने असह्य दुःख थतुं इरो अने याय तो तेमां नवाई नथी, पण तुष्ट काळ कोईने छोडतो नथी, एम धारीने तेमना जेवा उच्च कार्यो करवा एज आ मनुष्य भवनी सार्थकता छे. तेमना समरणार्थे आप बनतुं करशो एवी अमारी नम्न विनंति छे.

## मेघर्जा हीरजी-मुंबाई.

सेट नवलचंदभाई तथा बहेन मगन बहेन,

पृ० श्री माणेकचंदभाईना देह त्यागना अत्यंत दुःखदायक ग्यवर आणी बहुन दिलगीरी थई. तेओना जेवा सुंदर आत्माओ विरलज होय छे. तेओन, जवाथी आप तो कुटुम्बरत्न गुमान्युं छे पण अमारा जेवा मेबंधीओए एक पवित्र स्नेही गुमावेल छे अने आखी जैन गमाजे एक प्रांपकारी पुरुष गुमान्यों हे.

तेओना चवाथी आपना गुरुंग्व उपर एक थापेज कारी घा वाग्यों हे: पण देहनी स्थितिज अनित्य होवायी आपणे ज्ञान हिष्टए ओ खेद विचारी बदवी एंट्र हे.

# मनसुखळाळ रवजीभाई महेता—अमदाबाद.

श्रीमती बिदुषी जैनगुणभूषण मगनबाई प्रति जग्गीमलका धर्मस्नेह पूर्वक जयनिनेन्द्र!

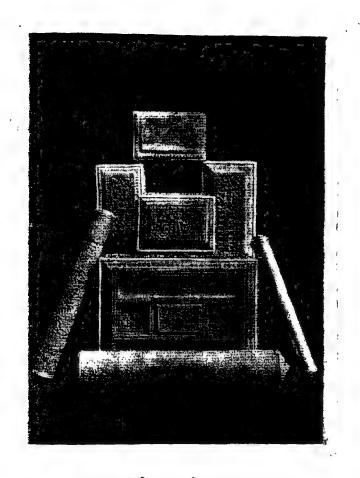
कलके रोज हमने अति हृ यिवदारक महान् शोककारक यह अपने भाईयों द्वारा मालूम हुआ कि सेठ माणिकचन्द्रजीका अचानक देवलोक हो गया। अश्रुषारा वह चली, कलेजा काँप उठा, हे विकराल काल! तूने यह क्या किया? वास्तवमें सेठजी जैन सम्प्रदायमें एक अपूर्व पुरुष थे। इनके गुणानुवाद करना, इनकी कीर्तिको गाना, जैन सम्प्रदायको जो २ लाभ हुए हैं उसका वर्णन करना, मेरी लेखिनीसे बाहर है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आ-पको और आपकी मातादिको अतिशोकदायक बात है मगर आप तत्ववेत्ता हो। संपारकी दशा कैसी निःसार है आप जानो हो इसलिये सब कुटम्बी जनोंको समझाकर संतोषित करें और आप-स्वयं भी संतोष प्राप्त करें।

आपका कृषाभिवाषी, जरगीमल जैन ।

परमस्नेही परमविवेकी श्रीमती मगनब्हेन,

सप्रेम सविनय जयजिनेंद्र.

आजे सवारे एकदम ओचिता आपना बापाजीना स्वर्गवास थ-बाना समाचार सांमळी आश्चर्य अने दिलगीरीमां गरकाव थई गया छिए के आ ओचितुं हुं थई गयुं! वे दिवसपर तो एमनो कागळ आव्यो हतो ने एकदम हुं मांदगी थई ने ओचितुं आ हुं थई र्स्यु! आ गमखार बनावयी आपना कुटुंब ऊपर तेम आखा दिगम्बर जैन कोम ऊपर जबरदस्त फटको लाग्यो छे. अमे तो एम कहीए छिए आखी दिगम्बरी कोम रंडाई छे. आपने मेलाप थयो हतो के नहि के श्राविका-



मानवत्रों के कास्केटका ग्रूप.

रनविजय ' प्रेस-सुरतः



असमां इता ! आपना काकी तथा कीको हाल मुंबाईज छे केनी ? शुं मांद्री अने छुं बनाव ! कंई समज पडती नथी. छुं शब्दोमां आपने आ दीलगीरी भरेलो पत्र लखवो ते समज पडती नथी. कालनी गति अति विचित्र छे! आजे छुं छे अने काले छुं यशे तेनी खबर नथी. आ संसार अनित्य छे माटे आवे समये धैर्य धारण करवा सिवाय छुटको तो नथी, पण आथी तमारो जे एक आसरो इतो ते विलय थई गयो छे. शं करीए! भावी बळवान छे. आपने पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया हुंगे ने अमारे पण केटलाक खुलासा करवाना रही गया छे......

मूलचन्द कसनदास कापाडेया, सूरतः

गंगास्वरुप मगनबहेन,

तमने अने महरे ६व६ मळवानो प्रसंग पड़िया नथी पण आपना स्वर्गस्थ थिताना साथ माहरे घणो प्रसंग पड़ियों छे अने मारी विद्यार्थी अवस्थामां आपना पिताए जे कोमना हितार्थे कार्यों करलां तेमांना जैन बोर्डांगनो लाम पण लीधेलो छे एटले हुं तेमना उपकार तळे छुं.

आजना '' दोम्बे कोनीकल ''मां आपना पिताना एक।एक स्वर्गस्य थयाना समाचार जाणी वणो खेद थयो. मनुष्य कमीधीन छ ए तमारा जेवा मुझ बेहेनने जणाववा जरूर नथी. आपना पिताना मरणथी आपना कुट्रकने जे भारे खोट पड़ी छे तेनुं वर्णन करी दाकुं तेम नथी एटलुंज नही पण तेमना मरणथी आखी जैन कोम अने मुख्यत्वे करीने दिगम्बर जैन कोम दुःखी थई छे. जे कोम आपना पिता जेवा नर पेदा करेला ते कोममां बीजा एवाज नर पेदा थशे एमां शंका लाववानी नथी, पण अत्यारे तो आवा सखी दिलोनी खोट जैन कोमने घणी भारे थई छे.

आपना पिताए जैन कोमना त्रणे फिरकाओना हित माटे दि० ५१ जैन बोरडींग विगेरे योजनाओं करी आपी तेवी योजना करी आपनार विरला नर हालना जमानामां योडा मळे छे.

आ सिवाय पण आपना पिताए घणीज रीते हिन्दुस्तानना जैनो-नु भट्ठं करवा अथाग मेहेनत करी छे. अने अमारा पालणपुरने पण तेमनाथी बने तेटली मदद आपी छे एटले ते नरने विसरवो घणी मु-इकेली भरेलुं छे.

धार्मिक लागणी साथे पाश्चात्य विचारोने उत्तेजन आपवानुं आ-पना पितानुं कार्य घणुंज स्तुतिपात्र हतुं. आ साथे तमो बेहेने दुःखी विधवाओंने मदद करवानुं जे कार्य माथे लीधुं छे तेने माटे धन्यवाद घटे छे.

छेवटे आपना कुंटुंबने माथे पडेल दुःखनी अंदर हुं भाग लेउं छुं अने आपने बधांने विनती करूँ छुं के हवे गयाने संभारी खेद निहं करतां तेमना पगले पगले चालवाथी घणोज फायदों छे एम मानी ते प्रमाणे चालवा आपनो प्रयास चालु राखशो, ते साथे मारी प्रार्थना छे के तेमना आत्माने शांन्ति मळो।

कालीदास जरुकरण झवेरी, अमदावाद.

गं, स्वरूप ब्हेन मगनब्हेन,

आपना परमपूज्य पिताजी, आ शाळाना खरा शुभेच्छक अने दरेक सारां अने जैन समाजना हितनां कामना प्रेरक शेठजी माणे-कचंद हीराचंदना अचानक अने अकाल स्वर्गवासना समाचार वांचतांज स्वाभाविक खेद थयो हतो. आ शाळा उपर एओना उपकारों अपिरामित हता. एओओनी प्रेरणाथींज स्वर्गस्थ रा. रा. लालशंकरमाईए आ शाळा उपस्थित करवानुं बीहुं झडप्युं हतुं एटले के एओओ आ शाळाना मूळ उत्पादक हता एम कहेवामां आतश्योक्ति नथी. आ वस्तुस्थितिमां आ दुःखद समाचार जाणवाथी अमने वधांने स्वामाविक खेद थाय एमां कोई नवाई नथी.

आपनी न्यातनां बाळकोने विद्यादान आपी तेमने जन्म जन्मांतरने माटे मुखी करवाने हिंदुस्थानमां ठेक ठेकाणे एओए बोर्डिगो
स्थाप्यां छे. एओ आपणी समीपथी स्थृल रूपे गया छतां आ
संस्थाओना रूपमां एओ जाधुने माटे जनसमाजनी समझ रहेवानाज.
जे वलते आपने, आपना कुटुबने, आपनी कोमने अने दुःखी
जनसमाजने एमना समीपनी, गुद्ध भावथी भरपुर बोधनी अने
हरेक प्रकारनी मददनी जरूर इती ते बखते देवे एमना अमृत्य
आत्माने आपणी पासेथी झंटाबी लीघो छे. एओना अकाल स्वर्गवासयी आपने अने आपना कुटुबने जे मोटी खोट पड़ी छे ते पूराय
तम नथी. आपना पिताजीए शक्र करेलां गुम कार्योंने खीलववाने
जोईए तेटलं मनोबळ अने अनुकुलना ए दयाळु विभू आपने
तथा आपना खुटुबी जनोने हमेशां आपो एची मारी एमने नम्म
प्रार्थना छे. स्वर्गस्थ होठजीनो। आत्मा अखंड गांति भोगवो ए
शुभेच्छाथी आ लांबो कागळ अटोपुं छुं.

ली० धुभेच्छक, माणदांकर स्टस्टुभाई देशाई । ब्हेरां मुगानी शाला, अमदावाद

मे. दोठजी साहेब, नवलचंद हीराचंद जोग,

आपना जेष्ठ बंधु मे. शेटजी साहेब शेट माणेकचंद हीराचंदे स्वर्गवास कर्याना एकाएक कमकमाट उपजाने. तेवा दुःखदायक समाचार वर्तमानपत्रीथी ओचींता सांमळीने आ फंडने जे लागणी यह छे ते तदन अवर्णनीय छे. महुम शेठश्री आ फंडना एक खरा शुभेच्छक अने एक सलाहकार होवाथी तेओए करेला स्वर्गवासथी फंडे एक महोटामां महोटो वगदार सलाहकार गुमाव्यो छे अने आखी जैन प्रजा बल्के मुंबई हलाकार एक महान दानवीद

दयालू नर गुमावेलो छे ते माटे आ फंड़ बेटली दिलगीरी दर्शावे तेटली ओछीज छे. ते सहत शेठ साहेबे पोताना निखालस अने मलतावडा उत्तम निर्मामानी स्वभाव वडे समग्र प्रजानी प्रीति संपादन करी इती ते जगजाहर होवाथी ते महान परोपकारी सज-ननो दु:स्वदायक वियोग असह्य यई पड़े ए देखीतुं छै, पण जे काळे जे मांडयुं होय ते कदी पण मिथ्या थतुं नथी एटले जे बाबतनी लगाम परमात्माना हाथमां छे ते बाबतमां आपणे तहन निरुपाय छईए माटे जे सुखदु:ख माथे आवी पडे ते शांत पणे सहन करवुं अने मग्नारना आत्माने अखंड शांति इच्छवी एज आपणं कर्तव्य छे.

> मर्हुम शेठ श्रीना वियोगथी खेदयुक्त थयेला 'श्री जीवदया-ज्ञान प्रसारक फंड' (मुंबई) तरफथी हुं छुं

> > आपनो नम्र सेवक, लल्लुभाई गुळाबचंद झवेरी.

# कोष्टक सहानभति सचक तार को आए।

नं॰ भेजनेवाला	स्थान
१. दिगंबर जैन पंचान	गोटेगांव (सी. पी.)
२. आवनीस दीवान कोल्हापुर	कोल्हापुर
३. महाराजा साहब कोल्हापुर	3,9
<ol> <li>शंतपा सेठी</li> </ol>	मंगलोर
५. सभापति, दि० जैन बोर्डिंग	छाहौर
६. कंछेदीलालजी जैन	जबस्पुर
७. सोहनलाल मा० जैन वंचान	देहली

नं.	भेजनेवाला	स्थान
۷.	अनंतराजय्या मा० जैन पंचान	म्हैसुर
٩.	भट्टारक श्री जिनसेनजी स्वामी नांदणी	मेंगलोर
₹ 0.	अि. इप्रमाद्नी एम. ए. एलएल. बी.	<b>छ</b> खनऊ
११.	रा० व० दानवीर सेठ कल्याणमलजी	इन्दौर
१२.	सेठ बालचंद रामचंद मा० जैन पंचान	मोलापुर
१३.	महाराजा साहब फल्टन	फलटन
१8.	बाबू धन्नूलाल अटर्नी	कलकता
१४.	रा० व० सेट नेमीचंद्जी आ० मॉनेस्ट्रेट	अनमेर
٩٤.	धूमसिंह जैन मा०	मुजपकरनगर
१७.	मंत्री, नेनाथ लायबेरी	आ <b>थनी</b>
१८.	विद्यार्थींगण, जैन बोर्डिंग	कोल्हापुर
१९.	मोजीलाल वंशीधर क्षर्क तीर्थक्षेत्र कमेटी	कलकता
२०.	दि० जैन पंचान	प्रान्तिज
२१.	विद्यार्थीगण, सुमेरचंद दि॰ जैन बोर्डिंग	अलाहाबाद्
२२.	दि० जैन पंचान	सतना
	हरनारायण जैन	भागलपुर सिटी
२४.	कुमार देवेन्द्रप्रसाद और मा० दीपचंदनी	अलाहाबाद
२५.	सेठ बालचंद्नी अजमेरा	इन्दौर
२६.	रिखबचंद केशरीमल	गया
-	शाह गोरधन हरचंद	मखिआब
	बादू सुन्दर्शल बैनाडा	झालरापाट <b>न</b>
२९.	सभापति दि० जैन समा	- अनमेर

नं.	भेजनेवाला	स्थान
₹0.	कालूरामं परवार छु०, मा० पा० दि० जैन बोर्डिंग	<b>र</b> तछा <b>म</b>
	दिगंबर जैन पंचान	खंडवा
37.	डाह्याभाई शिवलाल मैनेनर, वीसपंथी उपरेली कोर्ट	Ì
·	शिखरनी	मधुवन
₹₹.	सेठ मथुरादासनी टड़ैया	<b>ल्लितपुर</b>
३४.	बाबू जुगमंद्रदास सभापति दि॰ जैन बोर्डिंग	विजनौर
	प्रो० ए० बी० ल्हे एम० ए०	कोल्हापुर
३६.	सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया	सुरत
	पं॰ घनालालजी कामलीवाल	इन्दौर
₹८.	. छालः देवीदासजी, सभापति दि॰ जैन सभा	<b>ल्लनऊ</b> ,
३९.	मोरालीटी (Morality)	रंगून
	. प्रमेस चुत्रीहाल प्रमानंददास	बोरसद
88	. दिगंबर जैन पंच	बोरसद्
	. जैन मंडली	वीनापुर
	. दिगंबर जैन पंचान	आक्लुन
88	. सेठ हीराचंद नेमचंद दोशी ओ० मजिस्ट्रेट	सोछापुर
४५	. रेवचंद छगनलाल शाह	रंगून
	. हक्ष्मीचंद वेछचंद	रंगून
४७	. सेठ माणिक्रचंद मोतीचंद सभापति दि॰ जैन पंचा	न सांगली
8 <	. शा. हाथीचन्द माणेकचन्द दलाल मा० दि० जै	<b>ा</b> न
	पंचान	सोनासण
86	बी. वी. जाधव, समापति जैन समा	कोल्हापुर

नं.	भेजनेवाला	स्थान
٧o.	सेठ दालचन्द्भी, सभापति, मालवा नीमाइ प्रान्तिव	ह सभा, इन्दौर
٩१.	दिगंबर जैन पंचान	लाकरोडा
५२.	मुगीलाल पाटनी मंत्री, नैनधर्म प्र. सभा	इन्दौर
٩٤.	दिगंबर जैन पंचान	अमद्वाद्
98.	सेठ झुत्रीलाल मुत्रालाल मा० मालवा नीमाइ प्र	। <b>न्तिक</b>
	समा	इन्दौर
۹٩.	पं॰ पीताम्बरदासमी उपदेशक दि॰ जैन प्रान्ति	कसभा ईंडर
ધ્રઃક્	मिसिस बापुजी (अजैन)	पूना
	बापुलाल काला मा० रा० च० सेठ ओं हारजी कर	तूरचंद इन्दौर
94.	नगीनदास मोतीचंद शाह	मांडवी
५९.	सेठ गुलाबचंद हीरालाल, सभापति जैन पंतान	<b>भू</b> छिया
€∘.	सेठ कस्तूरचंद कल्याणमञ्	इन्दौर
•	सेट लुगकरण मदनमोहनजी	उङ्गैन
<b>६</b> २.	रायबहादुर सेठ कस्तूरचंद्जी	उज्ञैन
€ ₹.	सेठ विनोदीराम बालचन्दनी	उज्जैन
€8.	৭০ ধন্নান্তান্তনী	इन्दौर
६५.	नरसिंगपुरा दि. जैन पंचान	कलोछ
ξξ.	समस्त दि. जैन पंचान घोघा और भावनगर	भावनगर
Ę 9.	हुमड़ पंच समस्त	ईंडर
€<.	श्रीयुत अण्णाप्पा लेंगडे	शाहपुर
દ્દ.	समस्त छात्रगण आदि, स्याद्वाद महाविद्यालय	बनारस
90.	श्रीमंत सेठ मोहनलालजी	खुरई

नं	. भेजनेवाला	स्थान
	१. रेवचंद मगनलाल महेता	वसई
	. श्रीमान् श्रीमंत सेठ पुरनसावजी	सिवनी
	. बापीची ( Bappiche )	पेरिस (फ्रान्स)
		<b>आ</b> लरापाटन सिटी.
७५	. समस्त जैन पंचान	वर्घा गंज
७ફ	. समस्त जैन पंचान	बडौत
<b>७</b> ७	. बाबू देवीसहायजी हेड एकाउन्टंट	बडवानी
96	. जैन समाज	झांसी
७९	. नेमचन्द खबन्द मंत्री, दि० जैन हितवर्धः	कसमा ईंडर
<0	. मंत्री, मालश प्रांतिक दि० जैन सभा	बडनगर
	. सिंबई नाधुरामनी मा० दि० जन पंत्रान	नरसिंगपुर
८२.	समस्त जैन पंचान	कानपुर
८३.	सेठ येसुसिंबई सोनासिंगई	अंजनगांव
<8	. चौतर कत्रनम सेठी	मूडिबद्री
۲٩.	जैन पंचान, बेलगाम, शाहपुर और होसूर	शाहपुर
< ξ.	जैन फ्री लायबेरी	मांडवी
	मुलामचन्द् जैन मार जैन कुपार सभा	गोंटगांव
<<.	जैन कुमार समा और हितोपदेशिनी समा	वीना
	सिंगई फतेहलालजी, समापति, जैन पंचान	मुखाड़ा
	दि० जैन मंडली	क.पडवं न
68	ूसेठ जुगराजसाव कुंबरसाव	सिवनी
९ २.	नैन सिद्धांन्त प्रचारिणी समा	मोरना

# कितनेक शोकजनक तार।

Sorry Shethaji died. My sincere condolence with your family. May Jineshwar bless noble soul of Shethaii.

#### JINSEN BHATTARAK Swami Nandni, Kolhapur,

Sorry to learn Maneekchand's death. Convey my sincere condolence to Nabibai on the sad bereavement.

CHIEF OF PHALTAN (फलटणके महाराजा)

Pandita Maganbai,

Offer sincere sympathy for your father's death whom I always admired for his public charity and philanthrophy.

#### MAHARAJAH of KOLHAPUR

Offer hearty condolences for death of Manik Shet, who was a great benefactor of Jains of India.

### ABNIS DIVAN of Kolhapur.

Dhannoolal, Parmestidass, Dayachand, Padamraj, Durgaprasad, Baldeodass, Birdhichand and others much shocked and aggrieved at sad news of Danbir Manakchand's death which caused irrepareable loss to Digamber Jain community and offer sincere condolences to his generous widow, noble, daughter son and family members.

#### DHANOOLAL-Calcutta.

Extreamly sorry for sudden death of Sheth Manekchandji. By this Digamber Jain community has become without leader.

MOOLCHAND KASONDAS KAPADIA, Surat.

Deepest condolences of myself and Jains of Southern Maratha Country in your sad bereavement.

### A. B. LATHE M. A., Kolhapur.

Jain Community of Dhulia have heard with deep sorrow the death of Danavir Sheth Maneckchand Hirachand. In him we have lost a prominent leader and sincere worker of Jain Digamber Community. We offer our sincere condolence and sympathy to you and all family for sad death of Sheth Maneckchand.

GULABCHAND HIRALAL, Dhulia.

On behalf of Sangli Jain Community I beg to offer our most respectful and heartfelt-sympathy on the sad and untimely death of Sheth Manickchand and pray that God may give you and your family strength and fortitude to bear this irrecoverable loss I shall ever remember the great services benevolently endured by Shett to the Jains.

### MANICKCHAND MOTICHAND, Sangli.

Jains in Mysore assembled at special meeting learnt with profound sorrow the demise of Sheth Manickehand, offer their heart-felt condolence to his family in their sad hereavement.

ANANTRAJAIYA, Mysore.

I mourn deeply Maneckchand Sheths death post dignified phillanthrophist.

REVCHAND CHHAGANLAL, Rangoon.

Deeply grieved at the suddun death of Shethji an irrepairable loss to jain community. HARNARAIN JAIN, Bhagalpur City.

# शोकजनक कविताएँ।

रंज ! दात् रंज !! सहस्र रंज !!!

मर गये नगमें मनुत्य, नो मर गये अपने लिये।

पर वं अमर जगमें हुए, नो मर गये जगके लिये ॥ १॥

नो उपनता सो विनशता, यह तो जगत् व्यवहार है।

पर देश, जाती, धर्महित, मरना यही नग सार है ॥ २॥

श्रीमान् अरु धीमान् राज्यऽरु लोकमान अनेक हैं।

पर सेठ माणिकचंद सा, दिखता मुझे नहीं एक है ॥ ३॥

बह सेठ माणिकचंद हीराचंद जे. पी. है नहीं। वह बीर दानी जैन कुछभूषण कहीं दिखता नहीं ॥ ४॥ चववीससो चालीस श्रावण ऋष्ण नवमी दुःखमई। जिस रैन माणिकचद विद्धुड़े हा ! दियो क्या दुःख दई ॥ ५ ॥ वह अंधकी थी लाकड़ी अरु रंककी पृंती हुती। धर्म जाती उन्नतीके कुछुनकी कुंनी हुती ॥ ६॥ घाटा अरब दीनारका श्रीमान कुछ गिनते नहीं। पर एक कौड़ी रंक खोकर द:ख सह सक्ते नहीं ॥ ७ ॥ वे शिर उठा देखें जहां दिखता बही अंधवार है। अंध खोई डाकड़ी हा ! दु:खका क्या पार है ॥ ८ ॥ शोक भू फटती नहीं जाते समा उसमें कहीं। दुर्देव प्रेरित नर्नो अब आश्रय दिखना नहीं ॥ ९ ॥ आश्रय जिमका नहां जब दीन जैनोंने लिया। तम काल निर्दर्याने वहां ही आनकर पीछः किया ॥ १० ॥ उन्नती जात्यऽह धर्मके कुछ कार्य जिसको सौंपकर सो रहे थे जैन सारे हिन्दके हो बेफिकर॥ १९॥ तब काछ रक्षक प्रहमको छे गया इकला प्रयक्तर । सोते हुए ये छुट गये हे नाथ ! इनहिं महाय कर ॥ १२ ॥ यह बजरात हुआ अचानक हाय प्रमु अब क्या करें। मचा हितेषी रतन खोकर किप तरह धीरन धरें॥ १३॥ पर रुके नहीं होनी कभी होत अन होनी नहीं। यह जानकर धीरन धरो जो उपजता विनशे वही ॥१४॥ अरु शोक क्या है सेठका वे सुख शांति पायँगे।

यस्यरिक हम हो जांयगे कहो कौन हमिह नगायंगे ॥१५॥ क्या मर गये हैं सेठनी ? निह वे अमर सूपर भये । अदृश्य उनको देखकर ही छोग कहते मर गये ॥१६॥ मिहमा उन्होंके दान पुण्यऽह शांति सरछ स्वभावकी । घरघरमें गायी जा रही है उन्नतीके चावकी ॥१७॥ ये सभा बोर्डिंग आश्रम चटशाछ जो हैं दिख रहे । सो सब उन्होंकी सौम्य दृष्टिसे अनदुं छहरा रहे ॥१८॥ अब नाथ! ऐसे नरतनके आत्माको शांति दे । अकै कर सनाथहमहिं प्रभो! उत्साह अह सद्बुद्धि दे । ॥१९॥ दुःखित कुटुम्बी जनों अह जैनोंको हे प्रमु! धैर्य दे । दिप शांतिः दे प्रमुः! नित शांति दे, नित शांति दे ॥२०॥ शोकप्रसित—

मास्टर दीपचंदजी परवार, नगर्सहपुर (C. P.)

दोठ माणेकचंद्जीना विरह्नी वेद्ना।
अरर दवर, आ ते शुं बन्धुं, माणेकचंदनुं मृत्यु तो थयुं;
जैन कोमनुं भूषण तो गयुं, रत्न एवुं कां खरे ना रह्यं, १ हिंदनो दीवो अस्त तो थयो, तिमिर कोममां व्यापीन रह्यो; अखिल कोमनां हृदय फाटीयां, नेत्रसरीतथी अश्रु तो झर्थो. २ मेघ ब्रितिए, दृष्टि तो करी, एना शक्षरे मौक्तियी खरी; स्वर्गलोकमां वास तो कर्यों, संसार त्यागीने मुख्यी रह्यो. ३ तुन विरह तो, ना खमायरे, एकवार तुं हृष्टि फेंकरे, अंतः प्रार्थना, एटलीज हवे, प्रमु तिमने शांति आपजे. ४

अनव कोप दैवे आ कीघो रतन जैन लीधुं हारी; धर्मी प्राणीना प्राण हवी छे, घा दीघो तें बहु कारी. र अखील कोम आ रुदन करे छे, नर बच्चांने कारणरे; धन्य धन्य माणेकचंद तुं ने, धन्य छे तुन माताने. २ गरीब विचारां बाळकने तो, सहाय करीने छुल दीधां; विद्यारूपी दानन दीधुं, पुत्र रूप मानीन लीधा. ६ बाळको ते रुदन करे छे, अम सहायक ते शीद गयो; माणेकचंदे विश्वन मुक्युं, फानी ने ते स्वर्ग गयो. ४

## शोकोदगार।

अहा देव ! तुं छेकज़ निर्देश, केर कारमी गनव कर्यी; झपट मारीने झड़पी लीघो, लेश नहिंतुं हृदय डर्यो॥ हतो हीरलो नायक नुससम, तेर लक्ष जैनोमां जे। खोळी खोळीने लीघो खुंचवी, जड्यो नहिं ह्यं बीनो के ! दिगंबरीमां दीपक सरखो, हतो बीर ए माणेकचंद । कोम डुबेळी तारी छाववा, धार्यो हृदये रुडो छंद्।। केळवर्णा दई कंडक तारब्या, बांधी बोर्डिंगो बेस कर्यु । द्या छावीने दिछमां अनहद, दीन दु:खी दु:ख दूर कर्यु; विधवा अवला बालक केरां, कष्ट निहाली कांप्यो जे: तेवा परदःस्वभंजन नरने, जतो मुक्यो ना जमड़ा ते. दानवीर हिंमतपुरण जे, काळ खरे तें कर्यो गुलाम: काळ सुणी कंपे अम दिल्हां, श्रुं सरीयुं यम तारुं काम ? पण एमां शुं वांक ताहरो, खुटयुं तेल दीप अस्त थयो, गयो गयो पण रही सुकीर्तिः जीवन प्रयश झलकावी गयो. जीवणलाल कसनदास कापडिया-सूरत-

# शेठ माणेकचंदजीनो विरह.

शादुलिकीडीत छंद.

आ संसार असार म्हांय भरती ने ओट दीठा घणा; जेण हर्ष विषादने सम गण्या गर्वे न जेने हण्या. सादा शांत दयाळ दान गुणथी दीप्या बधा देशमां; ते पंथी माणेकचंद चंद्र अथम्यो हा हा थयो हेशमां.

\* \* \* \*

( बेडो बाई बुडतो तारो रे अंबे आई पार उतारोरे-ए राग. ) गयो वीररत्न स्वधामे रे, शठ माणेकचंदभाई नामेरे. विक्रम संवत ओगणीशेंने, सीत्तेर वेरी साल: अषाड वदी नोमने दीने, शेठ गया करी काळ-गयो 9 तारथी माठी खबर ज्यां पहोंची, गाम सुरत शहेर; हाहाकार पड़ी हड़तालों, वरतायों बहु केर—गयो लोक कहे गयो गरीवनो वेली, निराधार आधार: धर्मनो धोरी गयो अहींथी, हा रूटचो कीरतार-गया 3 शांत सरळ सादा सोभागी, गंभीर निर्मळचंद: विद्या विनय विरेकी थही कोइ, विरला माणेकचंद-गयो 8 सत्य क्षमा शील सत्वथी शोभीत, काया कंचनवानः लक्षण लक्षीत अंग सुकोमळ, लेश नहि अभिपान-गयो ¥ मुंगळ सम कर डींचण सुधी, रेखा युक्त विशाळ; शरद शशिसम मूखनी शोभा, तेजे तपे शुभ माळ-गयो Ę नाशिका कर्ण ने नेत्र अनीपम, कोमळ हृद्य विशाळ; भाग्यशाळीनां चिन्ह हतां सौ, सफळ थयां तत्काळ-गयो

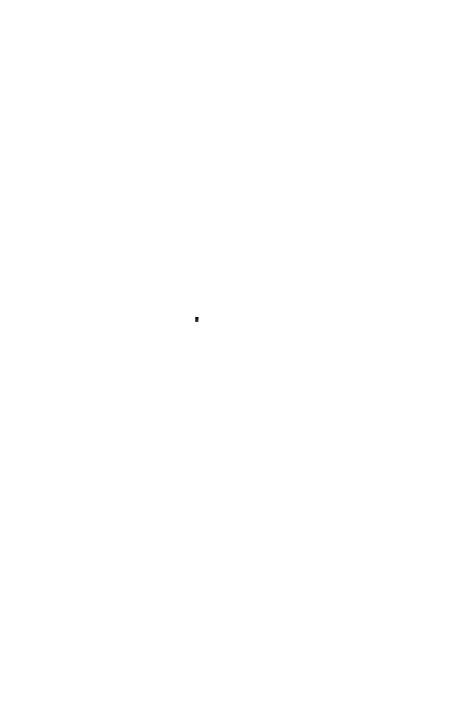
गजगित गेले चाल हती जस, वाणी अमीरस पुर; बदन मरोवरथी फूल खरतां, बोलता बोल मधुर-गयो ८ गरिव कुटुंबमां सुरत गामे जन्म्या हता महाभाग्यः; पडती ने चढ़ती दीठी आभवमां, घिरन न करी त्याग-गये। ९ माग्य उदयथी वधी संपत्ति, ६६यो क्षमा पर भाव सजनन संगधी हर्ष शोकमां, रह्यो सदा समभाव-गयो १० राज्य प्रजानो मित्र शुभेच्छक, देश स्वजातिनो मित्र; वयां गयो जैन जवाहीरमांथी, हीरो अमुख्य पवित्र-गयो ११ अकस्मात् ए पुरुषना भरणे, वरत्यो बधे हा-हा-कारः स्वजन ने परजन रुदन करे बहु, क्यां गयो दीनदातार-गयो १२

### ललीत छंद्र.

अरर देव तें, कोर जो कर्यो, गरिस्नो खरो आज्ञरो हर्योः सकल संवतो मित्र क्यां गयो, अरर चंद्र तुं चालतो थयो. १ विकट आ समे क्यां गयो और, परम भित्र तुं प्राण संहरे: धरम धामनां काम क्यां थहो, तीरथ वाळवा कोण दोडहो. २ विरह ताहरो ना खमायरे, तुन वियोगंथी खेद थायरे; पलक एकमां प्राण जायरे, घरम ध्यानमां मौन थायरे. ३ अमर आतमा क्रेषथी शस्यो, शरीर धर्मथी मिन्नय रस्यो; नियम कालनो ना कदी फरे, जनमनार ते प्राणीयो मरे. ४ सफल जन्म तो तेहनो खरो, मुक्कत पंथमां जेह संचर्यो; जगतमां रह्यो जीवतो खरे. विजय वावटो विश्वमां फरे. ५ 25.22



सेठजीके लघु भ्राता सेठ नवलचंद हीराचंदजी



### शोक सप्तकम्।

न्यपतिकम् हारानिर्गिरीशे चपला स्फटिकमंदिरेऽमले वा । अथवा हिमसंहतिर्विकाले फलसंपाइकभूतलेऽनुकुले जनतारामतोषकोऽमृतांशुर्यदि वार्कस्तिमिरापहा गृहीतः। नियतोऽदयराहुणा यमेन प्रहतो माणिकचंद्र एष मेशः ॥ २ ॥ निहता यमनाथ भूरिबोधाः श्रुभसंपन्निधयः पुरा प्रभूताः । अतुपन्न तथापि रे खलेयं विहिता जातिरपि त्वयाद्य दीना ॥ ३ ॥ प्रचुरानववोधभौरभासा चिरसंतापित एष जैनलोकः । परिशांतिभियाय यत्य मूळे क्षितिनं त्वां परिलोचयामहे क ? ॥ ४ ॥ गुणमाल ! विनम्रभालनातिनं हि नक्रे परिभूषणं परं त्वां। गुणमानद्भारतीयराज्यं पद जे० पि० प्रतिदानतोऽपि भूयः॥ ५ ॥ ममतोषि सुदर्शनं यदीयं विविधेहाकुलितेक्षणान्मनुष्यान् । गुणपत्रविलंबिबाह्यामं शुभकल्पद्रममाप्तुषः कुतस्त्वाम् ॥ ६॥ धनविग्रहमानसंपु केचिद्धवि जाता विकलेन कार्यकाः प्राक् । सकड़ेन बलेन किंतु धीमन्नजनि त्वां परिलोचयामहे क 🐔 ॥ ७ ॥ अनिवसंपन्निधनाकुलं त्वत्कयंचनाबोधिमनः परत्र । त्वमेहि शांति तव यांतु वंदयाः शुभाभिवृद्धि ननु कामना नः ॥

### काशीस्थ विद्यार्थिसप्तक ।

भावार्थ-हाय ! क्या यह पर्वतपर बज्ज गिरा ? या निर्भल स्पः-टिक-मन्दिरपर विजली गिरी ? अथवा बृक्षोके फलनेका अनुकृल समय भानेपर जनपर हिम समूहने गिरकर उन्हें जला दिया ? ॥१॥

जैसे मिलनात्मा राहुने लोगोको सुख-शान्ति देनेवाले चन्द्रमाको या अन्धकार नष्ट करनेवाले सूयको प्रसा हो, उसी तरह सेठ माणिक-चन्द्रजी निर्देय काल द्वारा प्रसे गये॥२॥

पापीकाल ! त पहले बड़े बड़े ज्ञानी और बुद्धिमानोको अपना ब्रास बना चका हैं, तब भी तुझे सन्तोष नहीं हुआ, जो आज तुने सेट माणिकचन्द्रजीको हरका सारी जातिको १भखारिणी बना दिया ? ॥३॥

जैनसंसार बहुत समयम अज्ञानरूपी भयंकर गर्मीस संतप्त हो रहा था। भाग्यहीसे उसे सठ माणिकचन्द्रजी सरीखे शीतल-बक्षके नीचे आकर शान्ति मिली थी। हाय! उसे अब हम कहाँ देखेंगे ? ॥४॥

हे गुणाकर ! इस विनीत जातिहीने आपको अपना भूषण नही बनाया, पर गुणियोका आदर करनेवाली भारत सरकारने भी जे० पी० का पद प्रदान कर आपका उचित सम्मान किया ! ॥५॥

अनेक प्रकारकी वस्तुओंको देखनेकी इच्छामे असन्तुष्ट नेत्रोको जिसका सन्दर दर्शन सन्तष्ट करता था, उस श्रेष्ठ कल्पनक्षको अब हम कहाँ प्राप्त करेंगे ? जिसके पत्रकी जगह तो आपके गुण थे और उँगलियोकी जगह हाथ ॥६॥

सेठ साहब! ऐसे तो बहत लोग हो चुके है, जो किसीन धनको, किसीन शरीरको और किसीन मनको समाजके हित लगाया, पर उन सबमें आप एक ही हुए जो आपने अपना तन, मन और धन सनाजके लिये अपंण किया। हाय! आए जैसे पुरुष रत्नकी अब हम कहाँ देख पायँगे ? मजा

हे इयासागर ! आपकी मृत्युमे हमारे अशान्त मनको किसी तरह समझाना ही पड़ेगा। (क्योंकि उसके लिये सिवा इसके कुछ गति ही नहीं है )। अन्तमें हम चाहते है कि आपका पवित्र आत्मा ज्ञानि स्त्रभ करे और आपका कुटुम्बवर्ग भी सुखी हो।

काशीके सात विद्यार्थी ।

### शेठ माणेकचंद्जी यांचा निधनजन्य विलाप (चाल-चन्द्रकांत राजांची)

खानिजोद्भिज (ज) तिर्यञ्च-मनुज हें कोटि-चतुष्टय कीं। अने तयां सकलांत श्रेष्ठ परि मानव इइलोकी॥ ध दुर्लभ ही मानव-तनु लाधे पुण्यबलें जांबां। कांत. सदय, अव्यंग असा नरदेह सौख्य-ठेवा ॥ टच वस्तु न्यूनःव पावती नीच वहत जगतीं। मनुज, रतन, गुण, धर्म असो सकलांचि हीच रीति । अखिल जीवसृष्टीस अभयकर श्रेष्ठ दयाधर्म। उच्चस्थानी तया ठाव जा धम मूर्त-रामे ॥ सत्य सनातन अनुपम सुंदर परम धर्म ऐसा। असे अहिंसा प्रमुख जयामधि जैन धर्म खासा॥ प्रसिद्ध श्रावक विशुद्ध विलंखे मुवनी इंडुपरी। निपजे " नर्-माणिक्य " तयामधि वर्णवे न धेरी प लक्ष्मीचें चिगनिवास-स्थानाचे **मुंत्रापुरि** नगरी। भरतभूमि भूषण इइलोकी मानव-इंद्रपुरी॥ पूनित केली सुरत भूभिका जनमा येवोनी । विराजिती भूंबापुरिमाजी माणिक गुणखाणी॥ दानवीर महरूर असी। माणिक्यचन्द्र शेष्ठी। औदार्य शुंगारिलि अक्षय कखिल जैन-सृष्टि ॥ दिघली पुष्टी धर्म तरूते धनवल भाक्त जलें। द्यांतिवायुने आंग्छर। जिय तो स्वातंत्र्ये डीले ॥ अतिशय भिडक्षेत्रं तीर्थं तदीय शक्तीने। विराजिती वहरांत फुललि की धर्म-द्रम-सुमर्ने ॥ ठायी ठायी विद्यासदनें जैनाशिशुस्तव तीं। स्थापुनि केली सकल भारतीं जिनविद्योन्नति ती ॥ चिरशिवदायक, भेषजमंदिर, विद्यार्थी-सदनें। रुग्गमंदिर, चैत्य उठविके, मूर्तिमंत पुण्ये ॥ अखिल हिंदु पांथस्थां मुंदर धार्भिक नव शाला। स्थापियल्या बहु प्रमुख शोभते 'हिराबाग ' अतुला ॥

व्याख्यानालय, सभामंडपा, जिनकन्याशाला ।

**श्राविकाश्रमा** स्थापुनि केल्या संस्कृत जिनवाला ॥

विद्यार्जनार्थसाह्य देउनी तुष्टविर्छे छात्रां ।

भाविक सुजनां सर्वे घेउनी भूषविल्या यात्रां ॥

निखिल भारत जैन जनपद परिचय-प्रथाला ।

अमुनी केलें पूर्ण 'दिगंबर जैन डिरक्टरिला '॥ स्थापियलें त्या विद्वद-कविता काशिपुरिमाजी ।

\*स्याद्वाद महाविद्यालय ' जिनवाणो ती गाजी ॥ प्रामाणिक माणिक आणिक या लोकि न नर कोणी ।

जे. पी. पदवी अपि तयातें अवनिपाल वाणी ॥

शांत, सरल, अतिप्रेमस्ट सर्वेषिय नच लव मानी ।

आप्त, जाति, साधर्मि, देशजन स्वकीय स्वच मानी ॥

करनी खोलति, जात्युनति, धर्मोन्नति देशाची ।

सेवा कहनी मेवा मिळवी ठेवाच पुण्याची ॥

यापरि वेंचुनि कायावाचामनें धनें आयु ।

विद्याहाराभयभेषजदानें हो चिर-आयु ॥

झाले सुरवर माणिक स्वर्गी गेले वां मोर्झी ।

शांत जाइला तदीय आत्मा सुकूर्वे तीं साक्षी ॥१॥ ( चाल-आजि अक्रर हा )

अजि अवचित हा जैनसुकृतनिधि सरला।

माणिक्यचेद्र मावळला ॥ घु० ॥

ती प्रेमाची धर्मचंद्रिका साची।

जाहली नष्ट की अमुची॥

जिनवाणीचा मेघांच बोघसुघेचा ।

विदुळला जैनहंदाचा || चाल ||

भरविल धर्मसभा कणि आतां।

होइल इवण तयांचा नेता।

खुलविल धर्मविभव तें आतां॥ मालाकाराचि तो धर्मतरूचा गेला। जिं हाहा:कारचि पुंडलां ॥ २ ॥ शोकविकल-गणपत सोमाजी काळे-चिनावलकर.

### विरद्द विलाप।

( गग मग्शिओ )

रेहाय! केम, आज स्हेदो जैनो आ रंडापो । स्हेशे, जेनो आ रंडाया.

प्रभु शान्ति साणकने आपो-रेहाय॰ १ मानवता मंबाईमां गणाय, शहेर सुरतना वतनी जणाय; कहेनां उठं छे अंतरमां ल्हाय-रेहाय॰ २

अज्ञाड कक्ष नवमी केरी रात्रे, बार उपर एक कलाक जात;

वार गुरु सीनेरनी राने-रेहाय॰ कीधो शान्तिथी स्वर्गे जई वाम, पडचो भारतमां भार आ त्राश;

काळे कीघो कोहीन्र नाश-रेहाय॰ ४

आश्रम, शाळाजनो दृःवी भारी, सुणी चोंत्रया छोडी देई वारी;

त्राहे त्राहे करे नर नारी-रेहाय० ५

मित्रो संबंधी कुटुंब रवे, आंख चोधारा आंमूल चुवे; जेन ज्ञाती सुखे नव सुवे **रेहाय ६** 

पाछळ पुत्र जीवणचंद मेली, पृत्री मगन, तारा दूर ठेली;

जैन ज्ञातीनो कोण हवे बेही-रेहाय० ७

जैन संघना स्थं अरूप स्वामी, शिक्षण संस्था पिता शीरनामी; भारत प्रना वियोगे दु:स्व पामी-रेहाय० ८ नैन शासन शान्ति सदा आपो, आवी आफत दीळाशाथी कापो; करो दूर प्रभु परितापा-रेहायः ६ हार्थाचंद्रनुं हृद्य बळे छे,स्मारक फंडनी अपील करे छे, भावी बनवा काळ बने छे. रेहाय केम आज स्हेदो जैनो आ रंडापो॰ १० वियोगी-हाथीचंद माणेचंद-सोनासण।

## निर्देय काळने ठपको। गझल-कवाली.

अरे न गुणा! अरे निर्दय! अदेखा काळ शुं की छुं? अमे भृख्या तणुं भाणुं, भरेतुं तें रुई छीधुं.—अरे० १ साम्बी-बार दई बासेठने, लेवा बेठो हाल: पाटुं मारी पतितन, जरी न आवी व्हाल. रतन आ रंकना करथी, अचानक छीनवी लीधुं-अंरे॰ २ सार्ग्या-अभागीओ आ देश छे, अभागणी आकोम: हीरो हस्त थकी गयो, उकळे रोमे रोम. हता मगरूर ने नरथी; उडी गई ते बधी आशा-अरे॰ ३ सार्ग्वी-खीलतां पहेल डोलर कळी, पवन झपाटा साथ; दळी पडी पृथ्वी परे, दुई न शकयो को हाथ. हवे ए पुष्पनी सुरभी, मळे क्यांथी अमोने ते-अरे ॰ ४

साखी-पुनर्जन्म लईने अहीं, करजो पूरण आशः

ज्यां हो त्यां मुख पामजो, व्हाला माणेकचंद् हती ए रत्ननी प्यासा, पड्या अवळा बधा पामा-अरे० ५ मोतीलाल त्री० मालवी-बाकरोल.

### दानवीरनो स्वर्गवासः (काळने ठपको.)

ओचींती आफत शुं!आ, स्वप्नमांक शुद्धिमां छुं? मांघेरं " माणेक " मारूं, गयुं केम हायथी ? काळ विकराळ तनं, लज्जा नरी आवी नहिः; हिंदना हीरानो तन, झाल्या केम झडपथी ? संवत सीतेर ओगणीश, केरी सालमां शुं ? अपाद अंवारी नवमीए, केम आवीओ ? जैन कुल जाति कुल, दानवीर जे. थी. हरी; दीपक बुझान्यो जैन कोम रडती करी. (यक्षदेवे कहेली आगाही.) चैत्रमां चळाव्युं में नमांघरो माणेक पिता, पर्युपण प्हेलां नई, स्वर्गमां सीधावरो ! पण में तो मान्युं नहि, खोटो आ आभास थाय; आवं याद लावी शाने, दीलने द:खाववं ? बीजीबार की घी वात, जाणी गई नहि रात; पत्र ते लखाय केम ? ध्रुजे तन तापथी, भाद्रवे भूलावी वात, प्रीतिमांही कीधो त्रात; दैव यक्षराज तीथि, आपवामां क्रं डर्यो ?

### (सुप्रसिद्ध कार्यो )

बोर्डिंग ने हीराबाग, मुंबाइमां भावे कर्यो, जुनेली, मंदीर, श्राविकाश्रम ज्यां शोभतां; चंदावाड़ी सुरतमां, कन्याशाळा, पाठशाळा, कोल्हापुर, काञ्ची, उदेपूर मांही ओपतां; '' राजनगर '' बोर्डिंगने, दवाशाळा, धर्मशाळा, पक्षपात वीण नरनारी, बहु शोभतां; कथे हाथीचंद्र जैन, जातिना सुगटमणी, हदन करे छे हिंद, वियोगना तापथी. 3 कंकर समान द्रव्यं, लक्ष्य दक्षा दीधा दाने, हिंदना हाकेमोमां, प्रसिद्धी बहु पामीयाः मारवाड, मेवाड ने गुर्ज्जर, दक्षिण देशे, कोन्फरन्स सभामांही, जाणे झट आवीआ: पाटशाळा, ज्ञानशाळा, भूवन ने आश्रमोमां, लक्ष्मिनुं दुई दान, सज्जनोने भावीआ; क्ये हाथीचंद्र मारा, तुरंगोनं आपी मान, हठीसंत्र कही मने, प्रेमयी बोहाबता. नैनोना प्रमुख प्यारा, बोर्डिगोना पिता व्हाला, कमिटी मीटींग मांहे, क्यांर हवे आवशो ? कुधाराओ तोडवाने, सुधाराओ जोडवाने, केशरी समान फरी, क्यारे शीख आपशो; धर्म, अर्थ, काम माट, धारी कर्या घाटठाठ, स्वर्गे सीघाव्या नाथ, असार संसारथी:

8

कथे हाथीचंद्र मारा, शीरोमणी शाणा शेठ, दीननी उच्चारी वात, क्यारे दीले लाक्शो ? हीरानाग चेठकमां, मीटींग भरेली रहे, देश ने विदेशना, भावे पधारे भेटवा; रीज्रिमां कुवेर सम, दान कर्णराय सम, युद्धिमां अभयकुमार, प्रेमथी पधारता; पंडितोनो सुणी पाठ, प्रश्न पूछो प्रेमे करी, समाधान थाए पछी, शान्तिए सीधावता; कथे हाथीचंद्र मने, बताबो माणेक पिता, जैन जाति उन्नतिना, रमना बनावता. ६ शान्ति सम द्याशन, दुकाळमां दीघां दान ठामटाम गामगाम, घास धन मोकल्यां; कमीटी सभाओं स्थापी, देशोंदेश ज्ञान आपी, उंचथी जगाडी कोम, झाली रुडा हाथथी; श्रीमंतीने स्थान आप्यां,पंडिताने मान आप्यां, दृरिद्रनां दुःख काष्यां, खरी घरी खतथी; क्ये हाथीनंद्र थयुं, वियोगे विशेष दु:ख, मेळाप थयो न मने, पूरवना पापथी. e मंदिरनी अंदरमां, भावे जिनराज भनो, पास आवे तेने बहु, प्यारथी बोलावता; देईने सुपात्र दान, मनुष्य मात्र देई मान, वाणिज्य विद्या तणेरी, नीतिने बतावता: युनित्रष्टि जैन ग्रंथ, प्रीते त्यां पढावा पंथ.

नैनना त्हेवार माटे, प्रयत्न कर्यो प्रेमथी; डिरेक्टरी, धवलनय, धार्मिक नैतिक ग्रंथ, भंडारो खुलावीने, छपाव्या रुड़ी छापथी. उंनी डीग्री आपवाने, बाळ दु:ख कापवाने, स्कोलरकीप स्थापवाने, कोण व्हारे आवशे ? ग्रेज्युएट गणवामां, विदेशे चढाववामां, हाम दाम काम आपी, कोण दुःखो कापशे ? तीर्थीना तोफान बुरां, आप विना कोण पुरां, हाल रह्यां जे अधुरां, सल्लाह कोण स्थापशे ? क्यं हाथीचंद्र सदा, शान्ति, अविनाशी सुख, प्रेमे परम आनंद, जिनराज बहु आपरो. समेद, पावन, चंपा, पावा, गज, तारंगाने, तुंगी, मांगी, बद्रीजैन, आदिनेक भेटीआ; दान तणुं देई दान, तिथींना सुधार्यी स्थान, आपी मान खोली कान, वेगे व्हेला आवीआ; ज्ञान रुडुं आपवाने, तिमिरने कापवाने, उपदेशको घेर घेर, संते बहु फरव्या; मासिक, ने पाक्षिक, पत्रो कढावीया, स्वर्गे सीधावी बहु, शान्ति जई पामीआ. १० लगुभात, नव्लभाई, के पुत्र नीवणचंद्र, तारा, रत्न, ठाकोरने शान्ति सदा आपनो; व्हेन मग्न, तारा व्हेन, केशर के शेठाणीने, दिलासो देईने प्रमु, दु:ख पड्युं कापनो;

इशिरोमणी शेठतणी, अंतरमां थाय याद, परमेष्टी उच्चोरे पंच एवी बृद्धि आपनो. क्षे हाथीचंद्र बंध, "स्मारक खोळी फंड, " नामना अमर करी, कीर्तिने दीपावजी, ११ वियोगी-हाथीचंद माणेकचंद-सानामण.

### शोकजनक अवसानः

अमूल्य हीरा रतनने, माणकना भंडार, माणेकचंद्र उड़ी गया, नम छायो अधार!

### गुणानुवाद.

पानानी न्वाणमांथी, माणक उत्पन्न थयाः माणेकना यत्ने, बहु रत्नो उभरान्यां छे, पूर्वजनां नामोने, तार्यो धन धामोनः पृण्यमय कामो, पृथ्वीमां पथराञ्यां छे. धर्म ध्वजा फरके छे, यश कीर्ति चळके छे; रंक मुख चातक, रसदानं मलकाव्यां छे, तप्तित टार्यो, बहु दुम्बीयां उगार्यो न; निर्धननां द्वारो, धन धान्ये छलकाव्यां छे, अनाथालयो, देवालयो अन विद्यालयो: आनंदारोग्यालयो, बांधनार क्यां गयो ? जनसेवा, देवमेवा, राज्य अनं देशसेवा, सेवाना मेबा चखाडनार क्यां गयो ? सभाओ गजावनार, शानित रेलावनार,

संपना सीतारनो ए सांधनार क्यां गयो ? धर्मवृत्ति धारनार, दया प्रेम पळनार, अधर्मने कापनार असिधार क्यां गयो ? स्वभाव परिचयः

किल काल करालनी जाळ महिं, भय व्याकुळ भारत व्यस्त थयो; सूर्य वह्यो अस्ताचळ त्यां, शशीने निरखी मन मस्त थयो. ए ताप प्रताप जतां हजीयं, सद्भागी दाशीनो दस्त ग्ह्यो; मणि माणक मन्दिर शून्य करी, श्री माणेकचंद्र शुं अस्त थयो ? वीर हता वीर <mark>शासनना, अति धीर गंभीर स</mark>ुधीर हता; नरवीर उदार पवित्र छतां, अभिमानी न लेश लगीर हता, स्वार्थ त्यजी, परमार्थ त्यजी, निज मार्गने कोण सुधारी शके 🗸 अहिं माणेकचंद्र जतां जिन शासन, आसन आशा न घारी शके त इनता दु:ख दु:खना आग विष, हती एकन आश तुं शासनने: ल्ड्रे पामती धर्म प्रवृत्ति टकावी, शिखावी द्या जिन सज्जनने. करी कार्य अनेक प्रजा हितना, नहीं प्यारा गण्यां तन के धनने: जन्म्या जगमां ते भले जन्म्या, कर्यु सार्थक उन्नत जीवननं.

### शान्तिर्वाचन.

गुमाब्युं श्रेष्ठ धन आजे, हमारूं रतन रोळायुं, राशी परलोकमां राजे, सुधानुं जाम डोळायुं; गयो नग्वीर ए शूरो, द्या धर्मे हतो पूरो, करी दु:ख दर्दनो चुरो, जीवननुं सत्व चोळायुं ? ! पताका कीर्तिनी राजे, जगत्मां नामना गाजे, मुखेथी स्वर्गमां साजे, सुधा सर्वस्व घोळायुं;

8

थयो तुं देवमां आदि, पडावी इन्द्रनी गादी, नमी तुंन धर्मनी डांडी, हरो ज्यां पुण्य तोळायुं ! निवेदक: **द्योक निमग्न सरैया** (स्रत)

शेठ माणेकचंदजीनो विरहः

हरिगोत.

गंभीर दरियामां डुबातुं व्हाण " दिगम्बर " हतुं पण दैवयोगेथी बची खडको महिं सग्डायुं'तुं: रस्तं च्हडावी तारवानो यत्न व्हें कीधो खरो, पण व्हाण भरदस्ये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गर्यो 🕹 नामाक्षरो जेनी ध्वनाना नष्टप्राय थया हता. अंगो शीथील धइ अने जे भागवा मांडया हता: ऐक्य तहें करी गगनमां सोनेरी ध्वन चोंडचो खरो, पण इहाण भरद्रिये मुकी तुं चतुर नाविक वयां गयो ? त्हें मुक्त करवा व्हाणने फरी डुबवाना भय थकी, कराळ नाविको बनावा संस्था स्थापी पणीः आ कार्य कुराळता वड़े बहु त्हारो यश वाध्यो खरो, पण व्हाण भरदिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो? विकट मार्गोमां कसोटी छे खरी नाविक तणी, ते मार्गमांथी डाघ विण त्हें चालवा हिंमत धरी; छे धन्य त्हारा धैर्यने पण मार्ग पुरो ना कर्यो, तो व्हाण भर दरिये मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयो ? तुं मध्यद्रिये एकलां चाल्यो गयो अमने मुकी, लाग्युं सहं ते तें कर्यु पण उर विषे न द्या घरी;

तहें तास्वा तहारी पछी कप्तान खुराळ ना मुक्त्यों, तो व्हाण भरदिर्य मुकी तुं चतुर नाविक क्यां गयों ? हे व्हाणना माणेक नाविक रतन अरज उरे घरों, शाश्वत सुखों बहु भोगवों शान्ति सदा तुंप रहों; अम उर विषे उत्साह आदि सद्गुणों भरपुर भरों, आ वहाण पार उतारवा अदृश्य रही स्हायी बनों.

Shah. P. C.

## शोकदर्शक संदेशोः

( रचनारः — जेठालाल भाईलाल शाह, पादरा. गग सदानो )

माणेक तुं स्वर्गे सिधाव्योरे! दया निह दीलमां लाव्योरे,
चौद लक्ष तारा साथीन छोडी, गयो प्रभु केरे द्वार;
तेथी रुवे तारा साथी सर्वे, नोई तुन गुण अपार—माणेक. १
माणेक तुं खरे माणेक हतुं, तुन वीन शून्याकार;
जैन कोमे एक रत्न गुमाव्युं, तेथी थयो अधकार—माणेक. २
एकाएक काळ बळे आवी, ऊंचकी छीधो झट वार;
जुलम वर्ताव्यो नगमांही, कीधा सर्वे निराश—माणेक. ३
धर्म कार्य अने विद्या मार्गे, धन खरचे अपार;
धर्म मार्गमां पाछी पानी, कांढे नव तुं लगार—माणेक. ४
समां सहोदर साथीने छोडी, गयो तुं स्वर्ग मोझार;
हाय! हाय! थयो भूतळ विषे, देखी दीनकर अस्त—माणेक. ५
सने ओगणी चौदनी साले, जुलाई छे मास;

तारीख सोडनी काळी रात्रे, **हीरो** गयो प्रसू पास-माणेक. व याचे **जेठाला**ल प्रसू पासे, आप सुगति तत्काल दीर्घायुषी कर पृत्र तेनाने करवाने धर्म काज-माणेक. प

### विलाप।

कुलभूषण दूषणरहित, हरन जाति संताप । दानवीर अति धीरचित, गये हाय! कित आप ।।

छन्द राधिका (२२ मात्रा)
कित गमन कियो हे! जैनजाति उपकारी!
महसभा भई है आज, बिना सहकारी ॥
व्याकुल बिछोहसे भये, सकल नर नारी।
हग टपटप टपकत नीर, प्रकट दुग्व भारी ॥ २ ॥
तिज निज विलामना आप, स्वार्थ पर कीना।
अह त्याग रमासे मोह; दान बहु दीना॥
आहार औषधी अभय, शास्त्र परचारी।
अब कियो गमन कित 'दानवीर' पदधारी ॥ ३ ॥
जैन जातीसे।

पुनि कीना बहु उपकार, विविध भांतीसे॥
अब त्याग तामुकी बांह, छोड़ मझधारी।
किस कारणसे हुए देव, देव-पुर-चारी ॥ ४ ॥
जब यह अनुशासन प्रकट, हुआ सरकारी!
सम्मेद्शिखरपर बर्ने, भवन सुखकारी॥
वह आमिष भक्षण करें, केलि विस्तारें।
तब होय धर्मकी नि, जीव बहु मारें ॥ ५ ॥

यह विपत परी अति आन, धर्मपर भारी। सब रुद्दन करत थे जैन, अजैन दुखारी ॥ तब धारि हृदय सन्तोष, शान्ति विस्तारी । कर अमित परिश्रम आप, विपत निरवारी ॥ ६ ॥ तुम सत् विद्या परचार, हेतु श्रम कीना । चंचल लक्ष्मीसे नेह, त्याग तुम दीना ॥ तम धन्य धन्य नररत्न, दीन दुख हर्ता । निज करनीके वहा सुयहा, जगत विस्तर्ता ॥ ७ ॥ वह हीरासाँ उद्यान, लगत है सूना। हिय आवत ताकी याद, होय दुख दूना ॥ बहु सभा सुसैटी स्यादवाद चटशाला। बिन तेर विधवा हुई, हाय ! तव बाला ॥ ८ ॥ सद्विद्या प्रेमी छात्र -बृन्द् बहु तरे ॥ होगये सकल असहाय, हाय! बिन तेरे ॥ इक तुम्हरे ही अवलम्ब, रही जिन जाती। अब तव विछोहसे रुदन, करत दिन राती ॥ ९ ॥ तम् डूबत दति मंझवार, शरण तुम दीनी । अब त्याग ताससे नेह, स्वर्ग गति छीनी ॥ नहिं धारी किंचित दया, मार्ग गह छीना । हा ! शोक जलिधमें डुबो, कहां चल दीना ॥ १० ॥ इस आर्य भूमिपर उपजे, पुरुष घनेरे । पर बिरले ही नररत्न, हुए सम तेरे ॥

<sup>🤋</sup> द्दीराबाग धर्मशाला.





मर जाय मनुजपर नहीं, पुयश मरता है। दिन दिन दूना निश चतुर-गुणित बढ़ता है ॥ १९ ।। तेरे बिछोहसे हाय ! हृदय जलता है। पर बाउ बळीपर किसका, बल चलता है। जो उपनत है जग मांहि, अवशि मरता है। हो पूर्ण आयु फिर नहीं, समय टरता है ॥ १२ ॥ वह इन्द्र चन्द्र अवनीन्द्र, आदि पदशारी । परि गाल कालके हुए, मृत्यु-मग चारी ॥ यह है अशरण संसार, मरणकी बेरा । नहीं मेट मकत है कोई, कालका फरा ॥ १२ ॥ गुरु साधु मिद्ध अरहंन, आदि उपकारी । हैं जिन शामनमें शरण, बाह्य वितहारी ॥ वर निश्चयनयसे शरण आप अपना है। यह जानि सोक्रके ताप, नहीं तपना है ॥ १४ ॥ ये द:म्व शोक आताप, प्रगट दुसकारी । अति करत असातः बंध, सुगति सुख टारी ॥ इमि जान शोकका तजन, करी सन भाई। नित प्रति जिनवरका भगन, करौ मुखदाई ॥ १५ ॥ हे दीनबंधु सर्वज्ञ, जगत हितकारी । हों श्रेष्ठ श्रेष्ठ अवनीन्द्र विदेह मंहारी।। तिन सकल परिग्रह सर्व, महात्रत धारें। धरि धरम शुक्छ मुनि छपक, मोह निखारें ॥ १६ ॥ हनि चार वातिया कर्म, वर्म विस्तॉर ।

पृति गह अयोग गुनठान, कर्म बसु टारें॥
वे केवल्ज्ञान उपाय, तस्त्र परकारों।
हों मुक्ति बधूके कंत अमण भव नारों॥ १७॥
तसु रोष सकल परिशर, बंधु सुत नारी।
लहि रोकि सिंधुसे पार, वैर्थ्य दृढ़ भारी॥
किर किर तिनको अनुकरण, करणसे दानी।
बिन बिनकें होवें 'मृलचन्द' सुख खानी॥ १८॥
मृलचन्द बढ़कुर जैन, दभोह।

# "दिगंवरजैन" के कितनेक शोकजनक लेख। —\*%%%-

# दिगंबरीनो दीवो बुझाई गयो!

आ परिवर्तनशील संक्षारमां नीवनु अनं मरनुं सदनी साथे लागेलुं छे. जे मेरे छे ते पुनर्जनम ले छे अने जे जन्मे छे ते निश्चय एक दिवस मरशोग, पण जे पुरुषना जन्मथी देश, धर्म, जाति अने कुछनी उन्नति थाय तेवान पुरुषनुं जीवनुं सार्थक छे अने तेन पुरुष इतिहासमां अमर नाम वरी जाय छे.

### दिगंबरीना राजा।

आ दानवीर सेठथी आखा हिंदनो एक पण जैन अजाण्यो निह हो ७, कंमके एमनी दानवीरता अने आखा हिंदना जैनो प्रत्येनी एकसरखी प्रिय लागणीथी शेठ माणेकचंदजीनुं नाम सर्व स्थळे घरमधुन हतुं. दिगंबरीमां एमना करतां विद्या अने समृद्धिमां चीना वगाए पुरुषो छे, पण शेउ माणेकचंदनी स्वभाव, उदारता अने जातिमोगादिने छीघे आला हिंदना दिगंबर जैनोना एक राजा याने वायसराय नेवा हता, केमके ए जे कहेता, ते हवें मान्य करता हता, तेम भारतवर्षीय दिगवर जैन महासभाना प्रमुख पण आ महान पुरुषन हता, तथी दि. जैनोना राजा कहेश ए योग्यन लागे छे. एमणे निद्गी दरम्यान दानपृष्यनां शुं शुं महान कार्यो करेटां है ते आ अंक्रमां आपेटा जीवनचरित्रमांथी बांचकोने रळी आवरोज, पण एटछं तो अत्रे जल बीर छिर के आ महान नरना वियोगयी दिगंबर जेन कोम एक महान संवालक गुपाव्यो छ अने तेनी खोट कदी पण पुराई शकवानी नथी. गुनरात, मंबाईमां दिगंबरी कोण, ए कोई नाहेरमां नाणतुं नहोतुं अने नैनो ते मात्र श्रे० जेनोन छे एम भासतुं इतु, पण *ल*गभग २५ **वर्ष** थयां गुजरातनां अने आखा हिंगां जे धर्मजागृति आ रोठे फेलाबी छे, तथी जैनोमां दिगंदरी जैनो पण एक मोटो विमाग छे, एवं जगनाहेर थई गयुं छे.

### तन, मन अने धननी भौगः

कोई तनथी कार्य करे छे, कोई मनथी कार्य करे छे अने कोई घनथी कार्य करे छे पण तन, मन अने घन त्रणेने एक सरस्वी रीते रोकनार जो कोई वीरनर जैनोमां थयो होय तो ते आ शेठ माणकचंदजीन हता, के जेओ दश पंदर वर्ष थयां ज्यापार घंनाथी फारेग थई रात्रिदिन पोतानो समय जैन कोमनी उन्नित थाय एवा धार्मिक कार्योमांज जातिमोग आपीने रोकता हता; अने छगमग ६२ वर्षनी उनर थवा छतां एक युवान माणसनी माफक दरेक कार्य

उमंगयी करता हता. मकानो बांधवा संबंधीनी माहिती अने अनुभव एमनो एटलो विशाळ हतो के कंईपण संस्था के मकान बांधवाना प्लान माटे सेंकडो लोको एमनी सलाह लेता. ए रोठ तीर्थक्षेत्र कमीटीना महामंत्री तेम अनेक सभा, बोर्डिगो, पाठशालाओ वगेरेना प्रमुख तथा ट्राटी हता तथी ते दुग्त खाताने एपना अणधारेला ओचिंता स्वर्गवाहथी घणीज अगवडो पडदो अने ते खोट पुरावी सुरकेलन है. मईमने कुंट्रंब सबंधी अनेक आफतो स्हेबी पडी हती, इतां पण धर्मकार्थमां पाछा न हठतां वधु ने वधु धार्मिक कार्यो ठेठ सुधी करता हता. एमना भत्रिना शेठ प्रेमचंद मोतीचंद तथा भागन रोउ चुनीलाल इवेरचंद्ना अकाल वियोगधी तेमने असहा आफत पडेली अने आ वे पुरुषो एवा विरला हता के तेओ जो आजे होत, तो दानवीर शेठ माणंकचंद्रजीनुं द्रेक कार्य महेलाईथी उपाडी लेत. आ होउने बीजी आफत पोतानी एक मोटी अने मोळी पुत्री फूलकोर मृत्यु पामवानी अने बीजी पुत्री मगनब्हेनने २० वर्षनी वयमां वेधव्य प्राप्त थवानी हती, पण जेवुं पुरुषोमां माणकचंद रोठे नाम मेळायुं छे, तेबुंन नाम हिंदना तमाम स्त्री वर्गमां श्रीमती मगनव्हेन मेळव्या भाग्यशाळी थया छ, तेना प्रताप तेमना पुण्यशाळी पितान हता. वळी आ अल्पज सेवक उपर शेठ माणेकचंदनी एक पुत्र करतां पण चधु स्नेह राखता हता अने आजे अमी समाजनी जे कंई अल्प सेवा बजावी रह्या छिए, तेनुं मूळ कारण तेमज " **दिगंबर जैन** " पत्र शरू थवानो मूळ षायो आ शेठथीन रचायो हतो. घणां घणां स्थळोए समाओमां, मेळ:वडा वगेरेमां अमो आ रोठ साथे जता, जेथी अमने घणुंन नाणवानुं अने जोवानुं मळयुं छे, ने पाड कदि पण विप्तरी नवाय तेवो नथी.

## विद्यादाननो महान पाट.

चार प्रकारना दानो पैकी मुख्यत्वे करीने दानवीर शेठ माणेक-चंद्रजी विद्यादान माटेनां जे महान कार्यो करी गया छे तेनो पाठ दरेक व्यक्तिए शीखवानो छे. जे पारसी कोम आजे बेएक छाखनी संख्यामां छे ते केळाणीने छीधेन हिंद्मां अग्रमण्य गणाय गणाय छे; तेवी रीते शेठ माणे रुचंद्रजी केळाणीना जे महान कार्योनो आरंभ एवी युक्ति प्रश्नार करी गया छे के ते जो प्रसं थशे तो एक समय एवी आवशे के जैन कोम पण केळाणीनी बाबतमां अग्रमण्य गणाशे.

## तीर्थोंनी संभाळ अने डिरंक्टरी.

महूँग रोड माणे कचंदजीए दिगंगर जैन तीर्थक्षेत्रो, सिद्धक्षेत्रो, अतिशयक्षेत्रो तथा अनेक मंदिरांनी एटळी बधी सारसंभाळ अने सुन्यवस्था नातिमोग अपीन करी छे के ले माटे जैन इतिहासमां आ बीरनरनुं नाम सोनेरी अक्षरे कांतराय छुं रहेशेन; तेमन आखा हिंदना दिगंगर जैनोनो अने तीर्थोंनो पूर्ण इतिहास, अथाग परिश्रम अने खर्चथी तैयार करावी जे " दिगंगर जैन डिस्क्टरी " आ शेठ प्रकट करावी गया छे, तेथी आखा हिंदना दिगंगर जैनोनी माहीति सर्वेन चेर बेटां इन्छी शके एम छे अने ए उपकार कई जेवो तेवो नथी.

## हीराबाग धर्मशाळा.

मुनाईनां एक सार्वजनिक महान कार्य जो दानवीर शेठ माणेक्रचंदनी करी गया होय तो ते 'हीरानाग श्याने 'हीराचंद गुमाननी धर्मशाळाग्न छे, जे रूप्या सना छाखना खरचे एवी तो उत्तम सगवड अने व्यवस्थावाळी बंधावी छे के दरेक यात्रीने तेमां घर करतां पण बधु सगवड मळे छे, तेम तेमां छेक्चर हाछ बांधेछो होवाथी व्यत्स्थानभूवन माटे पण आ हीराबाग जगनाहेर थई गयो छे. आखी हिंदु कोम माटेनी आ सखावत कंई जेवी तेवी नथी अने तेनुं अनुकरण बीजा श्रीमानोण करवानुं छे.

#### कुल संखावतः

दानवीर रोठ माणे क चंद्रजीए विद्यादान. आहाग्दान, अभय-दान अने औषधदान माटे करेली सम्बावतोनी आंकडो रु. ८ थी १० लाखनो थवा नाय ले के जेवं महान गंजावर दान समग्र जैनोमां आज सुधीमां कोईए कर्युं होय, तो ते आ होठज करी गया ले अने तेनो घडो आखी जैन कोमें लेवानो ले. लाखोपतिओ अने वरोडपतिओनो जैनोमां टोटो नथी, पण आवा महान दानीओ-नोज टोटो ले, ते ज्यारे पुराय त्यारे एक समय एवो आवे के जैन कोम दुनीयाना बधा धर्मीनां सर्वोग्री गणाय.

#### स्मारक फंडनी स्थापनाः

दुनियामां ज्यारे कोई वीरनग्नो वियोग थाय छे त्यारे तेनुं नाम अने कीर्ति अमर राखवाने तेना नामना स्मारक फंडो थाय छे एउछे के ते महान नरनी यादगीरी हंमेश कायम राखवाने एक फंड (मोटी टीप) भराववामां आवे छे अने पछी जे॰ रकम थाय ते स्थायी राखी तेनी उपनमांथी ते वीरनरना नामनी एक अथवा वधु संस्थाओ खोलवामां आवे छे, तेमन तेना गुणो अहर्निश याद आवे ते माटे ते पुरुषना बावलांओं स्थळे स्थळे उभा करवामां आवे छे, ते प्रमाणे दानवीर शेठ माणेकचंद्रजीनी यादगीरी हरहंमेश कायम रहेवाने स्मारक फंड खोलवानी जरूर छे, जेथी मुंबाईमां एक स्मारक फंड खोलवामां आव्युं छे, तेम अन्ने (सुरतमां) पण एक 'दानवीर शेठ माणेकचंद हीराचंद स्मारक फंड 'खोलवामां आव्युं छे अने तेमां दिनपर दिन रकमो भराती जाय छे अने आवतो नाय छे, तेथी आ फंड गंजावर थवानी आशा बंबाय छे, मांट 'दिगंबर जेन,' ना बहाला बावको ! माणेकचंद शेठे आपणे मांटे घणुंक क्युं छे, तेनो बदलो आपवा कोई पण समर्थ नथी, छतां पण 'फुल नहि अने फूलनी पांलडी' नी उक्ति मुगब तेमणे करेलां कार्योना बदला तरीके आ स्मारक फंडमां कंडे ने वई रकम भरीने तरतन अने (मनीओई श्री) मोकलो, केमके ''तरत दान महा कलपाण '' छे अने आवा नार्यमां उपराणी! करवानुं के उवार! राखवानुं होयज नहि.

#### जीवनचरित्रनी जरूरः

दानवीर रोठ माणेकचंदजी लग वर्ष थयां अमने कहेता हता के मारुं जीवनचरिल तमें मारी ह्यातीमां बहार पाडो, पण अमारे पारावार दिलगीरी साथ जणाववुं पढ़े छे के अभी ए दानवीर रोठनी आ सूचना अमलमां लावी शक्या नथी, पण हवे एमतुं गंजावर जीवनचरिल २५ थी ५० चित्रोसहित जन्मथी म्वर्गवास सुधीना लंबाण इतिहास साथे बहार पाडवानो प्रयास करवानो अमारो इरादो छे अने ते फिळभून करवा अमो भाग्यशाळी थईए एन अमारी आंतरिक इच्छा छे!

मूलचन्द किसनदास कापड़िया (संपादक) ('दिगम्बर जैन' वर्ष ७ अंक १०)

## विनोद-बाण।

भाईओ ! गया मासनों गंडेरीना ककडा नवो अने वळी बेहद काळा लीटा खेंचेलो " दिगं-बर जैन " नो अंक जोई हूं तो आध-चितामणी रतन र्यमांत्र गोथां खावा लाग्यो के आ वळी शी गयं! आफत! काळा लीशोटा तो शोकटशिक

मणाय, तो ' दिगंबर जैन ' ने एवो शुं जबरो शो ह पड़ी गयो हरों के ठाम ठाम लीशोटान लीशोटा ! खेंबी मार्थ छे, पण उपर छपेटेळी दानना सागर माणकचंदजीनी छबो जोई बंदी व्हेमायो के आ मोटी छत्री बळी शुंकाम ? विचार थयो के अंदर बांचु तो खरो, शी भथंर खबर छें? वांचुं शुं मारू वयळ! पहेले पानेन " दिगंबरीनो दीवो बुझाई गया " झगझगवा हीगत्ल्य बीरपुत्र माणेकचंदनुं नादुई रीते मरण! हाय! हां ते बखतनी मारा हृदयनी स्थिति ! त्रीपानीयुं पण हत्यमांथी पडी गयुं. एक पछी एक अनेक तर्कवितक दोडी आवे के हाय, हाय! आ ह्युं स्वप्तुं के साची बात, पण खोटुं ह्युं होय? आपणा दिगंबरीओनां नशीवज टूंकां त्यां काळनो शुं वांक ? गयुं ! गयुं ! चिन्तामणी रतन हाथथी गर्स !!!

जे नरबचाए पोतानी कोमने माटे दश लाख रुपिया कांकरा माफक खरची विद्यादाननो अमुल्य स्तंभ स्मारक फुंड माटे रोप्यो ! ऊंवती दिगंबरी कोममां नागृति स्वार्थत्यागनी जहूर पेदा करी, असंख्य अभण बाळकोने विद्वान बनाज्या, अनेक अनहद दु:खी विश्ववाओंने सुमार्गे लगाडी, अनेक तीर्थों तुं रक्षण कर्युं, अनेक टंटा बखेडा पताच्या, ते महान् नरनो खाली अफसोम करी बेसी रहेबुं ए क्युं आपण माटे योग्य गणाय? निह, कदी नहिंन. त्यारे क्युं करवुं? स्मारक फंड खोलेखुं छे तेमां नाणां मोकलवां के फंड गंजावर थाय तो तेमनी यादगीरी कायम रहे. विनोदी

( 'दिगंबर जैन' वर्ष ७ अंक ११) हाय ! दुर्भाग्य !

न जाने जैन ममानका कैसा दुर्भाग्य है कि यह सदा किसी न किसी विपत्तिमें ही फंसी रहती है। इसके जीवनका एक एक पल शोक और द:लमें ही वीतना है। इसके दुर्भाग्यसे प्रथम तो इसके जीर्ण रोगक दूर करनेवाले वैद्योंका ही अमाव है, यदि दैव-योगसे मिल भी जाते हैं तो इसके तीत्र अशुभ करोंकि उद्यसे स्वयं वैद्यराज ही यम देवकी भेंट हो। जाते हैं । कितने ही महापुरुषोंने हद संकल्प किया कि हम इम जातिको शीघ दःखावस्थास निकाल-कर रोगसे मुक्त करेंगे, परंतु शोक है कि वे शीघ अकाल मृत्युकं याम बन गए । अमी हम बाबू देवकुमारजी आदि महापुरुषों-का शोक न भूठे थे और समानमें उनकी तुटि पुरी न हुई थी कि यकायक एक दूसरी आपत्ति हम पर टूट पड़ी, जि-ने सर्वत्र भारतमें-नैनसमानमें खलबली मचा दी। उत्तरसे दक्षिण तक, पूर्वसं पश्चिम तक जैन संपारमें शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो श्रीमान् दानवीर नैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्द हीराचन्दनी जे. पी. बम्बईनिवासीका यशस्वी नाम न जानता हो । नहीं २ जैन समा-जका बचा २ आपके नामसे परिचित है। आपके उदारता, द्वालुना

भादि गुणोंसे सम्पूर्ण भारतभूमि गूंन रही है।

शोक, महा शोक ! कि आज आपकी दिग्यमूर्ति इस संसा-रमें हमारे नेत्रोंसे अहश्य हो गई!! हा ! दुष्ट काल, तुझे किंचित भी द्या न आई ! क्या तुझे किंचित भी द्या न आई ! क्या तुझे अपने पापी पेटकी क्षुधा मिटानेके लिए और कोई न मिला ! क्या तुझे जैन समानको ही दु:खी करना अभीष्ट था ! निर्दर्ड, पापी, तूने १३ लाख जैनियोंके दिलोंको दुखाकर अपने वल्ल हृद्यको शांत किया ! और दुष्ट पापी ! शेठकी जैसे सरल स्ममन्वी, शांत-चित्त मनुष्न ने तेस क्या बिगाड़ा था ! वे स्वप्तमें किसीका बुरा न विचारते थे, किंतु मदा इसी चिंतामें रहते थे कि किमी तरह जैन समान जिसकी बड़ी हीन अवस्था हो रही है उन्नति करे और अन्य समानोंकी समान उच्चावस्थाको प्राप्त हो ।

उनके जीवनका एक मात्र यही उद्देश्य था। बहुत दिनोंसे व्यापारादिका काम भी छोड़ दिया था और केवल धर्मोन्नति व समाजोन्नत्तिके कार्योमें ही अपना सम्पूर्ण समय व्यय करते थे। एक प्रतिष्ठित धनाढ्य होनेपर भी आप स्वार्थ और अभिमानको तिलांजली देकर शारीरिक कर्षोको सहते हुए चहुं ओर अपण करते थे और जहां जिम चीजकी कमी देखते थे तत्काल उसे दूर कर देते थे। आज समाजमें जितनी संस्थाएं हैं, जितने आंदोलन हैं, उन सबके नेता आप ही थे। ऐपा कोई भी उन्नात्तका काम समाजमें नहीं हुआ, जिसमें आपने अग्र भाग न लिया हो और तन मन धनसे सहायता न की हो। आपने जैन समाजका जितना उपकार किया उसके प्रकट करनेके लिए हमारी लेखनीमें सामर्थ्य नहीं। हम केवल

इतना ही कह वर सतीप करते हैं कि वर्त्तपानमें आपके समान सज्जन, धर्मात्मा, निस्तार्थी, समाज हिनैषी, परोपकारी इस समाजम न कोई था और न कोई है। आपने अपना तमाम जीवन जैन समा-जके हितार्थ अर्पण कर दिया था और आपके हो प्रभावसे आपका सम्पूर्ण कुल आपके समान उदार और द्याल हो गया था । आपके आश्रयमे कितने ही निर्धन घनवान हो गए और कितन ही मूर्ख विद्वान हो गए।

अतएव जैन समानका कर्तव्य है कि आप नैसे महाप्रहपका एक स्भारक चिन्ह बनावें, जिससे सदैवके लिए उनका नाम चिरसमरणीय रहे और आपकी आपके उपकारियोंके प्रति भक्ति. प्रम, वात्सत्य और कुन्ज्ञताका प्रकाश हो। हमें आशा है कि जैन समाज शीघ्र रुपया इकत्रित करके एक स्मारक चिन्ह बनायगी म्मारक तथा होना चाहिए इसका पीछसे बिचार किया जायगा।

अन्तमें हम श्री सर्वज्ञ देवसे प्रार्थना करते हैं कि सेटनीकी पविज्ञात्माको भव २भें शांति मिले और उसके द्वारा भदा जैनधर्म और जैन समाजका कल्याण होता रहे। हम स्वर्गीय सेटजीकी धमेपतनी, पुत्री तथा अन्य कुटुम्बीजनोंसे विनयपूर्वक निवेदन करते हैं कि इस संलारकी असारता पर विचार करके शोकको त्याग करें ओर धैर्य धारण करें।

> सेटनीके वियोगसे दःसी-दयाचंद्र गोयलीय-लखनऊ । ( 'दिगम्बर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

## अब क्या करें ?

बन्धुओं ! हमारा अग्रेसर तथा जैन मात्रका सचा हितेषी धर्मबीर दानी जैन कुलभूषण तो लोगोंसे सदाके लिये मोह लोड़कर अमरपुर (स्वर्ग) को प्रस्थान कर गया ! चारोंओर करुणाननक ध्विन पुननेमें आ रही है । जैनों ही के नहीं, किन्तु उक्त महा- जुमाबसे परिचित स्वदेशी तथा विदेशी अजैनोंके भी चेहरेपर शोक चिन्ह दृष्टिगत होते हैं, सो क्यों ! इसका कारण यह है कि उक्त सेठजी (माणिकचंद हीराचंद) ने अपने सरल स्वभाव, कार्यकुशलता मिष्टभाषण, परोपकार, दान, शील, उत्साह, उद्योग, प्रेम आदि सम्दुणों द्वारा हम सब पर ऐमा प्रभाव डाल रक्ता था, जिससे कि बार बार मुलानेपर भी वह गंभीर मूर्ति हमारे नंत्रोंसे अलग नहीं होती है । यही कारण है, कि चहुं ओरसे यह ध्विन ध्विनत हो रही है—अन क्या करें ! हाय ! अन क्या करें ! इत्यादि सो ठीक है ।

शोकाकु अोर निराधार मनुष्यों के मुंहसे ही ऐसे ब त्य निकलते हैं। यथार्थमें जैन समाज इस समय बिलकु हुए होती ही निराधार हो रही है। वह शोकग्रसित है। उसे इस समय और कुछ सिवाय "अब क्या करें " के नहीं दिखता है, भला, जब रामचंद्रजी, बलदाऊ जैसे महान नरस्त भी भाईके शोकसे विह्नल हुए छःमाह तक मस्कते फिरे थे तो हमारे मस्तकका क्षत्र उनरे अभी ६ सप्ताह भी नहीं हुए हैं, सो मला विह्नल क्यों न होगें दिन परन्तु भाइयों, यह अनादिका नियम है कि प्रायः ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते हैं, त्यों त्यों जीव अपने विषय कवायों में फंसकर शोकसे शांति पाते जाते हैं। यहां तक कि स्त्री अपने सर्वस्य पितको खोकर विधवाबस्थामें भी (अधिकतर) खान पान श्रृंगार भूषणादिको नहीं त्याग सक्ती और कुछ दिन रह (रो) कूटकर 'हाय हाय हुई र' के गीत गाकर फिर अपने रागमें मस्त हो जाती हैं। आजकल कितनो तो पितको यहां तक भूल जाती हैं '' कि व फिरसे सुहागिन बन बैटती हैं '' इसी प्रकार ज्यों ज्यों दिन बीतते जांयगे, त्यों त्यों हघर एउसकी चिताओं में पहकर भाइयों, आप लोगोंको शोक तो ज्या शायद सेठजीकी याद तक भी भूल जायगी।

थोडी इस्के लिगे हम यह मान मी लें कि जिन्होंने सेठनी साहबको देखा है व जिनको परिचय है वे कराचित न मी मूलें तो मी उनकी भावी (होनहार) सन्तानको तो नाम भी सुनना एक तरह किटनमा हो जायगा। यों तो सेठ माहेबका नाम दुनि-यांके इतिहासमें चिरकाल तक स्थान पावेगा, परन्तु उससे लाम बहुत कम लोगों (खोजियोंके सिवाय) को मिलेगा। ऐसी अवस्थामें हमारा क्या कर्तन्य है कि जिससे हमारे सेठीजीका नाम और उनके गुण सदा तक हमें और हमारी परम्परा सन्तानके उत्साहोंको बर्धनार्थ चिरकाल स्मरण रहे। और हम लोग उनका अनुकरण करनेके लिये उत्साहित होते रहें। यों तो सेठजी साहेबने अपनी अवस्थितिमें ही ऐसे २ स्मारक कार्य किये हैं, कि जिससे उनका नाम कल्पांत तक अमर रहेगा, तो भी हम लोगोंपर जो उनका असीम उपकार है, उसका परिचय यद्यपि हमारा आत्मा उनके आत्माके प्रति दे रहा है, किन्तु व्यवहारापेक्षा अब प्रस्थक्ष भी कुछ (परिचय) देना

आवश्यक है। यह परिवय देना भी उनके छिये कुछ नहीं है, किन्तु हमारी वर्तमान व भावी जातिके छिये एक प्रधान गौरवकी बात होगी। यह बात आगे चलकर बतायगी, कि जैनियों में ऐसे आदर्श पुरुष हो गये हैं, कि जिनकी कीर्ति चिरकाल तक चल रही है, उनका इतिहास हम लोगोंके मुर्दे दिलों में जीवत्व शक्ति पैश कर देगा, इसलिये भाइयो, शोकको छोड़ो, अब क्या करें श अब क्या करें श हा कर करते रहो, किन्तु क्या करें का उत्तर भी मुनो—

बड़े पुरुषोंकी सन्तान अपने पूर्वजोंके मरने पर ' हाय, हाय हड़रे १ का पाठ नहीं पहती है। न जया करें क्या करें, इत्यादि कायरों जैसे शब्द मुंहसे निकालती है, किन्तु अपने पृवजोंकी कीर्ति सदा स्थिर रखके उनका स्मारक (यादगार) बताती है। उनके उत्तम गुणोंका अनुपरण करके केवल उनके। कुलकी म्याति ही नहीं फैलाती है, किन्तु अपना स्वार्थ भी साधन करती है, अर्थात् पुरुपत्व पैदा करके महत्वता प्राप्त करती है । ऐसा समझकर भाइयों ! आपका कर्तव्य है । यदि आपको सेटनीके वियोगका दुःख है, यदि आपके मनमें कुछ भी कृतज्ञताका अश है, तो स्वर्गवासी सेठ साहबके चिरस्परणार्थ उनका एक बडा भारी स्मारक बना डालो । जैसे रायचन्द्रजी आदिके नामसे "रायचन्द्र जैन शास्त्रमाछा " निकल रही है इत्यादि । इस स्मारक बनानेके लिये बम्बई व सूरतमें एक 'दानवीर सेठ माणिकचन्द्र हीराचन्द्र स्मारक फंड ' खोला गया है, और अनुमान ५-६ हजारके चंदा भी भरा गया है, परन्तु इतनेसे अभी कुछ कार्य न चलेगा। क्योंकि कोई बृहत् कार्य होना चाहिये और उसके लिये लाखों रुग्योंकी आव-इयकता है, और हमारी कृतज्ञ समानके लिये यह कुछ (चंदा करके भेनना) किटन कार्य नहीं है। सहनमें ही हो सकता है इपलिये इस दशलक्षण (पर्यूषण) पर्वमें प्रत्येक प्राप्तके माइयोंको स्वशक्ति अनुसार रुपया एकत्र करके-संगादक, "दिगम्बर जैन"—सूरतके पते पर सेठ माणिक चन्द हीराचन्द स्मारक फंडके नामसे भेनना चाहिये और सेठ साहबके गुणोंका अनुकरण करके उनके बाये हुए अंकूरोंकी सेवा करना व और भी नवीन बीज बोना चाहिये। देखें, कौन कौन सज्जन अपनी कृतज्ञता व दिली शोकका परिचय देते हैं? बस बन्धुओं, अब क्या करें? का उत्तर मिश्र, कि स्मारक बनावो, ( उसके लिये द्रव्य एकत्र करके भेनो ) और उनके गुणोंका अनुकरण करो, तथा सेटर्जाके अनुसार आप भी अपने गुणोंसे संपारका मोहिन करक स्वर्ग मोक्षका मार्ग पकड़ो। यही करो, अब यही करो, अब यही करो।

आपका कृपामिलापी-

मा० दीपचन्द परवार-नरसिंहपुर (सी० पी०) ("दिगवर जैन" वर्ष ७ अंक ११)

\* \* \* \* \* ज्ञोकोदगार

आजे आएणी आसपास ने ग्छ नि तथा शोकनी छाया प्रसरी रही छे ते शानी छे ? सर्व को ई आ दुनियाना दिगम्बर नैन नानाथी ते मोटा सुधी गळगळा कन्छे वही शके छे के आ असहा ग्छानि ते आपणा अमेद मार्ग प्रवासी, ब्रह्मनिष्ठ सुरछोक्तमां विरहनार, तत्व-विद् तथा मानवकूछमां मनुष्याकृतिथी फिरस्ताना स्थामां आवेछा

\*

दिगम्बर कोमने आखा गुजरातमां ओळखावनार अग्रगण्य दानवीर जैनकुलभूषण श्रीमान रोठ माणेकचंद्र हीराचंद्र जे. प<sup>1</sup>. ना अ**द**प्ता-नने लीधेन छे. अवसान समय व्यतीत थयो, तोपण ते विषेनो विचार करीए छिए, तो आपणुं हृदय एक:एक विदीर्ण थाय छे. सन्ध्या-काळ पछी रात्रि पडवाना समये ज्यारे एकाएक मेवयूप चहडी आव-वाथी तेनःपूंत नष्ट थाय छे अने बंधे शून्य निरव अने शमशमाकार लागे छे, तेम आजे पण जैन को उना आगंबान श्री व स्वर्गपन्य तरफ रवाना थनां जे शोके आपणा हुर्यने घरी छीत्रो छ तेथी खरेखर आनन्द ह्या तेन:पुंत आजे आपणामांथी नष्ट थयुं छे. हा! आजे ते पुण्यास्मा अने परीपकारीना गुण स्मरण धई आवनां हुं बोलवा कंड प्रयास करुं छुं के तरतज हृद्य एकाएक कम्पना लागे छे. मन जाणे के बेशुद्धिमां पद्युं न होय एम लागे छे अने कण्ड पण बाष्प कलुषित थई नाय छे. हा! आ बनावे आपणा हृदयाकाराने घेरी हुई जे आपणा मनना तरंगोमां विकृति उत्पन्न करी है, ते हुवे आपणा उद्गार रूपं कोना आगळ दोळीर्शुं हा, प्रभो ! आ हृदय स्वार्थने छीधे एटलं बधुं कठण थई गयुं छे ते फाटीने चुरा थई जतं नथी.

अहा महात्मन्! आखरे ए मधुर! ए द्यानी खाण परोपकारी जीवडो! अनन्त विश्वनी अपरिमित छीलामां जीवननुं टूंकुं प्रयाण आदरी आपज्योति रूपे सूर्य छोकना पडदा भेदी परमपुराण विमुना अलौकिक घाममां विरमो छो. प्रेमाळ सास्विक जेजथी मर्यो नयना आ फानी दुनीयामांथी हमेशने माटे उडी गयां. आ विचार हृदय-मेदक छे. हे कुलभूषण! आप आ स्थळनो स्याग करी दिव्य प्रदे- श्रमां सीधाव्या, पण आपणी पाछळ रहेला दिगंबर नैनगणनी श्री अवस्था थशे! छोडवाओनी दरकार राखनार खरो माळी चाल्यो गयो, पछीथी उद्यान शोभा केवी रीते नवपल्लम कुसुमवासित थाव! प्रजाननक आ द्याशीळ जैनोनो शो अपराध हतो के तहें छळकपट करी त्हेमना परोपकारी जीवडाने त्हारी पासे बोलावी लीधा. अरे म्नापकारिन प्रजानतक! खरेखर मनुष्योने फसाववाने तुं कंई कंई उपाय करी रह्यों छे.

अरे विधि ! तुं नाण छं के हुं तो आ जगतमां एक नातनी कीडा करुं छुं, पण " कागडानुं बेसवुं अने ताडनुं पडवुं ''ए प्रमाण खरेखर अमारुं तो आधी विपरीत थयुं छे. अरे ! आ समये जो कोई मृत्युभूमिना माणसे आवो छळकपट कर्यो होत तो अमे न्या-यमंदिन्मां जईने तेनी सामे छटत, पण हवे हे कूर विधि ! तहारी सामे अमे कया न्यायमंदिरमां जईने दावो बरीए अने त्यां अमारो पक्ष करनार कया वकीछ या बेरीस्टरने शोधवो ! अमारे नसीबे तो हमेशने माटे रोदणां रहवानां रह्यां अने अमे ते प्रमाणे रोदणां रहीशुं.

महात्मन् ! सर्व सामग्रीधी मरेला वहाणना जेवी तमारी मान-सिक समृद्धिनी स्थिति हती देथी जे बंदरे आ वहाण उतरतुं त्यां यदा दाखबतुं अने विजयी प्रकाशतुं. आपे आपनुं जीवन जीवनतत्व-नो ए गंमीर अथ करी गाळयुं हतुं. आपना हृदय—गिरिमांथी अनु-कम्पा, स्नेह, उत्साह, प्रशम, संवेग, आस्तिक्य अने औदार्यनां विभळ झरणां हमेशां वह्यां करतां हतां. जीवननी गांमीर्यताना विचारे आपना हृदय उपर एट्डी उंडी असर करी. हती के तेथी आपे जीवनेशैन्त्री कई दिशामां विशाळ अने रमणीय उच्च मृमिका आवी छे ते विषे सार्क संशोधन करी जीवनयात्राने ते पंथ स्वीका-रीज हती. अध्याज दिन प्रतिदिन उर्ध्व प्रयाण करता एमना आत्माए देहरूपी मृत्पिंडनी अवगणना करी हती.

प्रे ना स को तूटी गई, संसारनी स्वप्न वस्तु अहश्य थई! परोपकारनी अञ्चट भंडार, द्यानियान हमेशान माटे विलीप थयो! हा ! अरेरे मनो न मूर्ति....परोपकारी जीवडो अहश्य थयो! शुं हवे ते आ स्वप्न माया तरफ प्रयाण करशे! हे बोर्डिंग वत्सल! शुं तहारी ऊं। आशाओं फल्लिभून करशे!

र कोन्करन्त! न्झुं त्हारो नेता फरीथी त्हने बोळाववाने मोटा सादे हांक मार्ग्ये ! ना, ना. अवत्यना तिमिरो मेद्या, सत्यना द्वारे पेठा अने र गींच सुखो अनुभववा छाग्या. संसारने तुच्छ गण्यो, मायाथी अळगा थया अने अमरत्वमां एकाकार थई गया. काछनी चीता प्रदिस करी अने काछवत् वारीरने अग्विन ळगां प्रवेश कराज्यो। पंचवत्बो पंचमहाभूतमां मळी गया अने स्थुल सूर्ति सर्वनं माटे अहश्य थई.

आहाहा! सवनो संबंध तृथ्यो, सरिताना निर्मळ जळमां स्नान करी प्रेमनो प्रभाव, परोपकारनो अखूट भंडार हमेशने माटे तरतो मूत्रयो अने ते अंतिम मूर्तिने छेल्ला नमस्कार करी दुनियानां स्व-कार्यमां लक्ष आप्यु.

हे विमो ! अमारा आ परोपकारी जीवडाने अने सर्वे मित्रोना आत्माने शान्ति आपी सुखमय कोषमां प्रवेश कराव अने स्वप्नवत् दुनियामां विख्टा पडेला आत्माओने आश्वासन आप. हे प्रभो ! जे अनुपम गुणनियान पवित्र आत्माना प्रकाशवी दिगंबर जैन कोम अळहळी रही ते अत्यारे अमारा हत्माग्यने लीधे सदाने माट चाल्या गया छे. अनितममां हे प्रमु ! अमारी एटली विज्ञापना छे के ने पुण्यातमाने हमेशां शानित आपो.

# मनसुख कालीदास-बोरसदः

(दिगंबर जैन वर्ष ७ अंक ११)

× × × × कर्मवीर माणेकचंद।

चलं वित्तं चलं चित्तं चले मीवित यौवने ॥ चलाचलमिदं सर्वे कीर्तियस्य स जीवित ॥

भावार्थ—अन चंचळ छे, चित्त चंचळ छे, जीवित चंचळ छे, यौवन चंचळ छे, अने बधुं चळाचळ छे, तथी जेनी सारो कीर्ति छे ते पुरुषन जीवे छे.

प्रिय बांचक ! सूर्य उमे छे अने आयमे छे, नदीमां पूर आवे छे अने नाय छे, श्रावण मासे वरसादना झपाटा पढे छे अने घडीमां तरोधान थई नाय छे, बीन चमकारा करी आपणा चक्षुओने आर्थ्यमां गरकाव करी छेतरी अहश्य थई नाय छे, घडानी रेटमाळ फरी फरीने पाछी त्यांनी त्यांन आवे छे, तेमन पाणीना परपोटा जेबो बने छो आ नाशबंत देहधारी मनुष्य जनमे छे अने मरे छे, त्यारे आवा अनियमित जातनां कार्यो माटे मनुष्ये शोक अने हर्ष शामाटे धारण करवी नोईए ?

खरेखर ! जे सूर्य सदैव पोतानां किरणोद्वारा प्रकाश आपी आपणने तेजोमय बनावी रह्यो होय, जे नदी निर्ध्धितपण म्होटुं पेट

राखी आवता पुरने शान्ति आपी रही होय अथवा तृषातुर दु:खी पुरुषने रहेनी तृषाने शान्त करी आधासन आपती होय, जे बरसाद धीमे धीमे वर्षी जमीनमां पाणी पत्रावी कृषिकारोनां मन रंजन करतो होय, जेने बीनने आकर्षी पोताने स्वाधीन बनावी नगत्नी विशाळ दृष्टि समक्ष मूकी होय, जं जीवात्मा पोताना जीवनने अरूप गणी पोताना सहचारी बन्धुओ मांट, पोतानां प्रान्तनां ब ळको माटे ं के तेओनी दशा शोकजनक देखी तेओने उगारवा माटे के दुनियानी हरिफाईमां भागळ बधारवा माटे जेने अनेक संस्थाओ खोलबा खोडाववा अनहद परिश्रम डीघो होय, एवा सूर्य जेवा प्रकाशामान, सरिता जेवो समभाव रमखनारा, आस्ते आस्ते दरेक कार्यो उत्साह-धूर्वक करी बतावनारा, जैने विजळीक बळ आपी आपणने नवुं जीवन प्रप्त कराव्युं होय, ने मनुष्य पोतानुं नीवन समानना उस्कर्ष माटेन अर्पण वर्यु होय, जेओए आपण माटे हक्ष्मीनो भोग आपी अगणित प्रयासी आदुर्धी होय, तेमन आलोक अने परलोक बन्नेने सुधारनार जे सरस्वती, तेनो जेणे उद्धार कर्यो होय, तेमना गुणानु-वाद देशेदेश गवाय, तेओने माटे तंबनो समाम, आ बाहवृद्ध शोका-प्रस्त, निस्तेन अने विदीर्ण थयेलो दृष्टिगोचर थाय, तमन तेओने माटे पवित्र प्रेमीओ अनेक राग रागणीमां गुणानुवादीनां ब्युगलो फूके, पत्रकारो शोक प्रदर्शित करवा पोताना हृद्य घटरूपी पत्रोपर विरह भावनाओ रूपी काळी बोर्डरनी मर्यादा बांधी हृदयाकर्षक लखाणो लखी कोलमो मरे एटलुंज नहि, पण तेओनी लबी प्रेमीः इदयोगं कोतराई रहे एमां शुं आश्चर्य ?

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुची वाचः करणं परीपकारणं येषां केषां न ते बन्धः भावार्थ—-जेओनुं मुख प्रभन्नतानुं न वर छे, जेओनुं हृश्य द्यावं छे, जेओनी वाणी अमृत्ने वरसावनारी छे अने जेओनुं परोपकार (पारकाने माटे उपकार करवो ) एन कर्तव्य छे, तेवा पुरुषो कोने वंदन करवा योग्य नथी ? ज्यारे एम छे त्यारे तेवा सर्वे सद्गुणभूषितने नेताओनो समागम दूर धतां कयो मस्य वर्मा-चुरागी तेमना गुणाचुवाद गावानी इच्छा नहि करे ? कयो कठोर हृद्यनो पुरुष तेओना स्मारकमां नाणां भरवा इच्छा नहि करतो ? अलबत कररोज !

विशुद्ध प्रेमीओ! आबा एक कर्मवीर समाजनेता, हिंदुस्तानना एक सुप्रसिद्ध, श्रीमान, उदारचित्त धर्मात्मा अने दानवीर, बोर्डिंग हाउम अने शिक्षण मंस्थाओना पिता, दिगंबर जैन समुहना एक जळहळता को हितुर, तेमज समग्र जैन संघना स्तंभस्य गणाता अने उत्पाही अग्रेसर जैनकुलभूषण दानवीर सेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. ना अचानक स्वगंवासथी कदिएण न पूराय एवी जे भारे खोट आपणने पड़ी छे ते माटे आ लेखनी, आ हृद्यनी अवस्थाओ प्रगट करवा असमर्थ छे, तेनुं ज्यान महारे कया शब्दोमां करवुं!

अर ! हाय ! माणेक मोत लखतां, दर्दे दिलमां थाय छे; लखतां अचानक मोतने, मुज कलम भूजी जाय छे.

हे गुणियल समान ! एक वस्तत आपणे धर्मानुराग छोडी मिध्यात्वना खाडामां पड्या हता, एक वस्तत आपणा प्रत्रोने केवी केळवणी आपवी तेनी आपणने खबर पण नहोती अथवा केलवणी एटले ह्युं तेथी पण आपणे अज्ञान हता, एक वस्तत आपणी बाळा-ओने केवी केलवणी आपवी के जेथी खरी साध्वी, सन्नारी के गृहि-

णीओ उद्मवी शके विगेर अनेकानेक बाबतोथी आपणने वाकेफ करनार जो कोई होय तो एक श्रीयुत् माणक चंदन हता. तेओना अने तेमना कुटुंबीओना भेगा बळथी परन्तु वीरनर माणे श्वंदना उप-देशामृतथी आश्णा आंगणा पासे (गुजरातमां) अने एओश्रीनु अनु-करण करी आजे आएणी समानमां लाखोना दान थवा मांडयां छे, तेमज घणे भागे एमनाज प्रयास्थी समस्त भारतमां दिगंबर संप्रदायमां बोर्डिगो, श्राविकाश्रमो, पाठशाळाओ, कन्याशाळाओ, पुस्तकालयो, ओषधालयो विगेरे संस्थाओ पुर जाहोजलालीमां चालती द्रष्टिगोचर थाय छे. तेमन आपणा गुनरातमां एमणेन स्थापेली बोर्डिंगमांथी बी. ए. सुधीनी उच्च डियो संपादन करी केटलांक रतनो बहार पडचा छे अने केटलाको एवी डिग्रीओ मेलववा भागवशाली थरो एमां संशय छेज नहि, परन्तु दिल्गीरी साथे म्हारे कहेचुं पडे छे के ए बी. ए.नी डिग्री संपादन करनाराओं जाणे भी. ए. ना अभ्यासमां बीधा होय तम अथवा तो बी. ए. नो अम्बान करतां मगज कंटाळी गया होय अथवा पहोंचेला श्रमथी शान्ति लेता होय तेम गुजरातमां एक पण व्यक्ति अग्रगण्य भाग लेवा अथवा समाज हितार्थ आ पत्र द्वारा वे शब्द छखना उत्सुक यई नथी, ए केटछं शोचनीय छे ? आपणापर अगणित उपकारोमांथी ए नररत्नना एक महद् उपकारनो उल्लेख करूं तो ते अस्थाने नहि गणाय.

गुजरातना मशहूर शहेर मुरतना वस्नी रा. केशवलाल डाह्या-माई कोलेनमां अभ्यास करवा मुंबाई गया हता, ते वखते त्यां गोक-खदास तेजपाळनी एक हिन्दु बोर्डिंग हयात हती, ते बोर्डिंगनां कार्चवाहकोए जैन जाणीने रा. केशवछालने रहेवा देवा ना पाडी हती त्यारे निगरा, ठाचार अने उदासिन च्हेरे रा. केरावळाळ धर्मप्रमी रोठ माण कचंद्र पासे गया अने बोर्डिंगमां जे बीना बनी हती ते सर्व विदित करी. सांभळतां श्रीमान् सेठ माणेकचंद्नुं हृद्य अत्यंत शोक-निमम्न थयुं, परन्तु जैनधर्मना महान उपासके, स्वयमी युक्तोनी आवी आपत्ति दुर करवा, ए उद्देशने हृद्यस्य करी विद्याविज्ञासी माणेकचंदे तत्काळ मुंबाईमां बोर्डिंग खोळी हती. प्रिय गुर्नरोना वीर तन्यो ! शुं आपणा पर आ जेवो तेवो उपकार वीरना ए वीर पुत्रे आपणा माटे सर्वस्व मेळवी अ प्युं छे, परन्तु तेनो उपभोग करी बीतरागी महावीर पिनानी कोर्नि—धर्मध्वना पृथ्वी तल्पर फेळाववी एन कर्तव्य छे.

जे गुजरातीओ अने दिगंबर संपदाय जेवो के एक वखत हस्तीमांन नहोतो, जे गुजरातीओने घे घेर शास्त्र शुं छे, जैनधर्मना व्रत नियमो केवां छे, जैनधर्मना आहारविद्वार केवां छे तेनुं शिक्षण आपनार, जे जैन देहेरासरोमां के मंद्यरोमां उधारना मोग थयेलां शास्त्रो, तेनो उद्धार करी आधुनिक पद्धति पुरःमर छखावो, छपावी आपणी समक्ष मुक्तनार, जे का लोना अध्ययनथी थइ गयेला पवित्र मुनिगणोना सत्य शब्दनुं पान करी भावी मुनारवा उत्सुक बन्या लिए, विशेषमां जेने प्रताप आपणे केलवणी पाम्या लिए, अपणने तेमज आपणा दिगंबर संप्रदायने दुनियामां ओळखाल्यां छे, तेमज आपणा दिगंबर संप्रदायने दुनियामां ओळखाल्यां छे, कराव्यां छे अने तेथीन आजे बैनोना त्रणे फिरकामां दिगंबर संप्रदायने मुख्य नंबरे मुक्तवा मांग्यशाळी थया लिए, एवा श्रेष्ठ पुरुषने माटे पोतानी समाज जे करे ते थोडुंब छे. हे महावीर प्रभो! ए पवित्र

आत्माने अहोतिश शान्ति बक्ष एटली हमारी अनन्य भ वे प्रार्थना छे, तेमन आपणे "गोल्डिस्मिथ" ना शब्दोमां कहीशुं के— म्हारी रमतगमतना मित्र, प्रराण शी प्रंत, सदा सुखी रहेजे; तुज घरनी चोकी प्रतिपळ करो, स्थळी देव जे जे ते.

अ शांतिः शांतिः शांतिः

लघुम्राता-सरैया, सुरतः

('दिगंबरजैन' वर्ष ७, अंक ११)

× × × ×

अनुकरणीय पुरुषनुं अवसानः

प्रिय जैन बंधुओ, महात्मा वबीग्तुं बाह्य छे के— '' जब तुम आये जगनमें, सब इसे तुम रोय; ऐसी करणी कर चलो, तुम इसे सब रोयः ''

अर्थ-हे पुरुष ! ज्यारे तारा जन्म आ दुनियामां थयो हतो, ते वस्तते तु तो रोतो हतो, पण तारा मातापिता तथा अन्य सगां-संबंधी तारा जन्म (पुत्रप्रक्षि) ना समाचार जाणीन ह-तां हतां; हवं तुं एवी करणी करीने दुनियामांथी जजे के जेथी मस्ते समये तुं इसे ने तारा मरणथी अन्य सम्रद्धा रहे.

भावार्थ — ए छे के ज्यारे मनुष्य सुक्त करीने आ दुनियामां-थी नाय छे, त्यारे तेने एमन छागे छे के आ दुनियामां आवीने में तो मारुं कर्त्तन्य बजान्युं छे, पण तेवा माणसना वियोगथी सवळा आसजनो रुदन करे छे.

आजे आपणे तेवा एक नररत्नने आ संसारमांथी विदाय थई गएड जोईए छिए. दिगंबर जैन समाजमां एवा माग्येन कोई माणस हरों के जे दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणेकचंदजी जे० पी० ना नामथी अपरिचित हरो. ता. १९ मी जुलाईनो दिवस दिगंबर जैन समाजने माटे घणोज कमनसीब लेखारों के जे दिवसे उपरोक्त सेठ साहेब तेयना कुटुंबीओ तथा अन्य आसजनान क्लफ आखा दिगंबर जैनसमाजने शोकमागरमां छोडी हरहंमेशने माटे आ दुनियामांथी चाली गया हो.

जे महान पुरुषे निद्रामां पडेली जैन समाननं जगावी पोताना कर्तन्यतुं मान करान्युं छे एटलुंन नहीं पण खुः पंते तन, मन अने बनधी अगीरथ प्रयस्न आदरी टाम ठम सभा, सोमायटीओ, शालाओ, बं डिंग'— कूलो स्थापी छे, आवा एक महान नरने लई लेवामां दैवनं पण अम द्या नहीं आवी १ अस्पारे तेना विज्ञा सारी समाज सुनी पढ़ा छे. सामाजिक नावने भरदिये छोडी सुकानी अन्तर्गत थयो छे. हवे सदरहु नावनं कयो वं रपुरुष (सुकानी) कये किनारे लईने छ डशे तेन जोवातुं रह्युं छे.

वांचकां, मग्वुं क्याने छे, मरण कोईनं छोडनार नथी, पण जन्मत्रुं अने मग्वुं तेनुत सार्थक छे के जेणे पोतानुं जीवन परोपकार अर्थे खर्च्युं छे; तंबा माणसो मरवा छतां पण तेमनी कीर्ति तो अच-छन रहे छे. रोठ म णेक्चंद्जी आज आ दुनियामां नथी, पण तेमणे जे कृत्य कर्यों छे, तेथी तेमनुं नाम हरहमेंशने माटे अमरज रहेवानुं.

दिगम्बर जैन समाजनी अवनत दशा धवानुं मूळ कारण ने अविद्या हती तेने दूर करवाने माटे शेठ साहेबे ने ने स्तुत्य पगलां अविद्या ही तेने दूर करवाने माटे ने ने साधनो तेनणे पुरां पाड्यां छे, ते सर्वने नाहेरन छे. आनथी वीस वर्षपर गुजरातमां अंग्रेनी मणनार विद्यार्थीओने केटलुं खर्च करवुं पडतुं, तेम अमदाबाद तथा मुंबाई शहेरमां के ज्यां खावातुं मळे पण रहेशातुं न मळे तेवे स्थान रहेशामां केटली अगवडो वेटवी पडती तेनो अनुभव जेने छे ते अत्यारे शेठ साहबनो अन्तःकरणपूर्वक आभार माने छे.

पैसा कमावा तो सौ कोई जाणे छे, पण तेने सदरस्ते लगावी जाणनार थोडाज छे. पोतानी नामनाने खातर पैसा खर्चनारनी जैन समाजमां खोट नथी, पण जमानाने अनुनरी कये रस्ते पैसा खर्चवानी जरूर छे ते समजनार तो शेट माणे+चंदनाज प्रथम हता.

कोई पोताना कुर्टुम्बनाज श्रेयने खातर, तो कोई पोतानी ज्ञातिना हित खातर, तो कोई पोताना गामनी भलाईने बास्ते, तो कोई खास पोताना प्रांतमां गहेनारा माईओना भलान खातर नाणां खर्चे छे, पण मदरहु रोठ माहेबे ज्ञाति के कुळनं भेर राख्या सिवाय जैन समाजन बसुधैव कुटुंबकम् गणीने गराव वद्य थींओने जे स्हाय करी छे ते बाल जैननमान रोठ साहेबनो जेटलो आभार माने तेटलो आंखो छे; आवा एक परोपकारी नरना मरणन छीचे शु गुनरात, शुं पंनाब, शुं दक्षिण अने शुं हिंदुम्थान सारा भारतवर्षना जैन समाजे एके अवाजे दिलगिरी जाहेर करी छे.

शेठ माणेकचन्दर्जानं महात्मानी उपमा आपवामां जरा पण अतिशयोक्ति नथी; कोईपण दृष्टिथी तपासतां मालूप पडशे के एक मित्र तरीके, समाज तथा तार्थना उद्धारक तरीके, गुरु तरीके, निराभिमानी पुरुष तरीके, पैसानो सद्व्यय करनार तरीके तथा सलाहकारक तरीकेना हरेक गुण तेओनामां हता; आटला गुणो एकी बखते एक पुरुषमां होय एवो नर दिगम्बर जैन समाजमां तो हाल छेज नहीं अने भविष्यमां कोई विरलज पेदा थरो.

जे जे माणसो रोठ साहेबना समागममां आज्या हरो तेमने मालूमज हरो के तेओ केश सादा मिजाजना तेम निरामिमानी पुरुष हता; चाहे गरीब, चाहे अमीर, चाहे छोटो, चाहे बडो कोई माणम तेमनी पासे जतो तो तेओनी साथे ते घणी छुटथी वात करता हता; गरीब आदमीओने घन्धे बळगाडवानी सहाह आपवामां तथा विद्यार्थीओनो डर-ाह वधारवामां ते एक ज हता.

कहेवुं अने करवुं ए वेमां घणो तकावत छे. भूल काढवी सहेज छे. 'परोपदेशे पांडित्यम्' दर्शावनारा तो घणा मळी आवशे, पण पोते कहेवा मुजब करी बतावनारा तो घणा थोडाज हशे. तीथों उपर जैन समाजना हजारो रुपिया हरसाल जाय छे तेनो गेरव्यय थतो देखी तथा तीथेंना हकोने नुक्मान थतुं देखी शेटजीना दिल्मां जे लागणी उद्भवेली तेना परीणामें तीथेंक्षेत्र कमीटी-नी स्थापना करावी तीर्थनी उन्नति माटे शेठ साहेवे जे जे करज अदा करी छे ते आबालवृद्ध जैनथी अनाण्युं नथी अने तेनेन परिणामें आजे शेठ साहेबनुं नाम वरवर जाण तुं थयुं छे.

दीखरजीनो पहाड अपवित्र थतो अटकावामां, गोम-हस्वामी, गिरनार, पालीताणा, गजपंथा, तारंगा तथा घणां तीथोंनो वहीबट सुघारी तंन उन्नत दशाए पहोंचाडवामां कोईए पहेल करी होय तो तं ए शेठ साहेबन ले, अने तीथोंना उत्तम नमुना रूपे ने लोको शीखरजी तथा पालीताणा विगेरे स्थळे गया हशे ते लोकोए नोयुं हशे के वीस वर्ष पहेलानां ने हालना वहिबट- मां केटलो तफावत छे. यात्रीओने आराम पहोंचाड । केटली तज-वीजो करवामां आवे छे ? पैमानो केवी रीते उपयोग करवामां आवे छे तथा ते तीर्थीना हिमाब जे आन लगी अन्धारामां रहेला ते प्रगट करी तीर्थनी हालतथी समाजने केवी वाकेफ करी छे ?

हांचा टीलां टकां करीने हाथमां माळा झाहवाथीज मगतनी व्यारूपानी समाप्ति थती नथी, तेम हाथमां माळाने पेटमां हाळा, समाजने अवनत दशाये पहोंचती जेईने जेने जरा पण दया आवती नथी एवा माणसो खरा मगत नहीं मण बगभगतोज हो. खरो मक्त तो तेना हत्य परथीज जगई आवे हो. पुण्य शुं चीज हे तथा शुं कार्य के पूण्यती प्राप्ति थाय हो, ते शेउजीना तीर्थ सम्बन्धीना कार्यथीज जणाई आवे हो; हजारो माणस तरकथी मही बुरी पुणीन पण काम कर्नानो कंईपण बदहो मेळावानी आशा विना निस्वार्थरणे पोताना कर्तव्यमां मरता सुधी दक्तिक्त बहेनार पुरुषने महारमा नहीं तो बीजो शुं कहेनाय है धन्य हो तेना पुरुषने अने धन्य हो तेनी जनतीने के जेणे आवा महात्माने पोतानी कुखे अवतार आप्यो. कहां हो के—

" जननी जणजो भक्त जन, कां दाता कां शुर; नहीं तो रहेजे वांझणी, न गमावीश फोकट नूर '

महाशयो, आ एक महात्मानुं मर्ण सांमळीने एवो कोण कठिन हृद्यनो पुरुष हशे के जेनुं हृद्य पीगळ्या विना रहेशे ! निद्रामां पडेली तथा कक्त्यनुं मान मूलेली समानने जगाडवी ए बीर पुरुष सिवाय बीजो कोण करी शके ! तीर्थ प्रत्येनी खरी भक्ति समाजना दुःखे दुःखी ते एक मक्त नहीं तो बीजो शुं कहेवाय!

स्वार्थन अंगे तो सम्रळो दुनिया काम करे छे, पण निःस्वार्थ-वणे अने ते वण बीजाना श्रेयने माटे महेनत करनारज महास्माः गणाय छे. एवी कोण सभा ने सोसाय्टी, कमीटी के मिटींग हती के नेमां रोठ माणेकचंदजीए हाजरी नहीं आपी होय. निंदगीनो वणो भाग जेण परोपकार अर्थेज गाळ्यो हतो एवा महात्माने तो हालनी प्रजाए जाते निहाळ्यो छे, अने तेवो एक नर पोतानी को-ममां होवानुं जे अभिमान आवणने हतुं ते महात्मानुं नाम मविष्यनी प्रमा पण याद करे तेने माटे एक स्मारक फंड उम्रुं करी हरेक आ-दमी पोटानी शक्ति तथा भाव मुजब ते फंडमां पैसा मरी पोटाना उपर वरेना उपकारनो बद्छो फुळ नहीं अने फुळनी पांलडी रूपे वाळशे एम लेखक इच्छे छे. आवुं फंड सुरतमां खोलायलुं छे। अने तेमां रु. २५) मोकली आपुं छं अने एत मुजब बीजा वांचकोने ए फंडमां रफम' मोकळवाने आग्रह करूं छूं. आवी रीते उपकारी पुरु-षनो यत् किंचित बदलो वाळवामां ज्यारे जैनसमाज पाछी पानी करशे तो एमन समनवं के समान स्वार्थनीन सगी छे, तेम तेनी दशा सुघरवानी हजु नणीवार छे. आवा स्मारक फंडमां पण अगर कोईनुं श्रेय होय तो ते पण समाजनुंज न के मरनारनुं. फक्त होठ-जीनी यादगारी रूपमांन आ पोतानान फायदाने माटे करवातुं छे. आवा स्मारक फंडमांथी विद्यादान तथा विद्यावृद्धि के जे मरनारनोः मूळ मंत्र हतो, तेने सारु कोई संस्था स्थापी अगर जे छे तेपांथी लायक गणी तेने उन्नत दशाए पहोंचाडवामां आवरा, तो मरनारनो आत्मा स्वर्गमां रह्ये रह्ये पण संतीष पामशे के तेना चाहनाराओं तेना उद्देशनी प्रष्टि करी छे.

प्रिय बांचको, रोठ माणेक्वंदभी एक खानगी गृहस्य तरीके, कुटुंब बत्सछ पिता तरीके, जाहेरमां समान उद्धारक तरिके, सर्वना उद्धारक तरीके, उदार सुजन तरीके, क्षमा, निरमियान ने चारि-श्रनी मृतिं तरीके पोतानुं जीवत सुशासमय, आनंदमय, दृष्टान्तमय करी गया छे.

सुलिनद्रिमां शान्त हृद्ये कांईपण भंदवाड वेठ्या सिवाय एमनो आत्मा निज स्वरूपमां ममाई गयो, एन बतावी आपे छे के "आनुं नाम ते मरण. " एमना जवाथी एमना नामथी जाणनार एवा प्रत्येक जने कांई ने कांई खोयुं छे. कुटुंबीओए अनुकरणीय महात्म्य दृष्टिमांथी जतुं जोयुं छे, मित्रोए हृद्यनो विश्राम खोयो छे, छोकोए चारित्रनो नमुनो खोयो छे, प्रिय वांचक, मरनारका चारित्र परथी तने प्रहण करवा योग्य कांइपण शिक्षण मृद्युं होय अने ते प्रमाण चाली समाजनी सेवा करवामां तुं शक्त्यनुसार बहु नहीं तो थोडो पण भाग छेशे, तो सदरहु छेखनी सार्थकता गणाशे.

शेठजीना मरणथी जे शोक थाय छे ते करतां तेमनी जग्या पुरनार कोई पुरुष नगरे नहीं आववाथी विशेष शोक थाय छे.

इश्वर तेमना आत्माने शांति आपो अने तेमना कुटुंबमां तेम-नाथी पण विशेष उज्बल कीर्ति प्राप्त करनार पुरुष पेदा थाओ, एन हृदयनी प्रार्थना छे. शांति ! शांति ! ! शांति ! ! !

# डाह्याभाई शीवलाल शाह, गिरिडी.

('दिगंबर जैन' वर्ष ७ अंक ११)

imes imes imes imes ह्झारो बाळकोना पिता।

अन्य कोमोना मुकाबले आ हरीफाईनां युगमां जैन कोम घणी

पाछळ छे. भा कोमनी उन्नित माटे तेर लाख नैनोमांथी मात्र एक वे सुशक्तिं स्वन्न नरवरो सुमागें तन नमन धनथी कोमनी सेवा स्वीकारी कर्तव्यक्षेत्रमां मान—अपमाननी द्रकार विना कार्य करवा मंडी पडचा छे, जे नैन समाननी भविष्योन्नितनी आशानां चिन्हों बतावे छे. जे नैन कोमने जमानाने अनुमरती उन्नितना मध्य मागें लावी नैन कोमनी तन मन धनथी सेवा करनारों, हृद्यथी नैन कोमनी उन्नित इच्छनारों अने ते मागें भगीरथ प्रयास करनारों सुलेहनों अमलदार दानवीर नैनकुच्भूषण श्रीमान् शेठ माणका चंद हीराचंद झवेरीना पवित्र शरीरने गई ता. १६मी जुरुईए कृर काळ-हनारो विद्यार्थीना भविष्यना कल्याणनी दरकार कर्या विना-कोळीओ करी गयो छे, ए परोपकारी शरीर आ एथवी तछन्यथी अहस्य थयुं छे, एवा हृद्यवेषक अमंगळनय अशुभ समाचार भ दिगंबर नैन" मांथी बांची आ हृद्यने अकथ्य अनुश्म दिल्लीरी थई छे.

सर्व कोई कबुछ करने के-देरक समान, ज्ञाति, कोम अने देशनी मिव्यमी उन्नतिनो आधार उक्त श्रेणीना बाळको-विद्यार्थी-ओपर अवलंबी रहेलो छे.

बाळको किंवा विद्यार्थीओने वेळवायेळ अने खरा मनुष्यो बनाववाने जैन कोनमां बोर्डिंग हाउसो स्थापवानो प्रारंम करनार नरवर शुं आ पृथ्वी तलपरथी चाल्यो गयो छे ? अरे कुद्रती कूर कायदा! तारा! हृदयमांथी अनुकंषा—दयानुं बळ नष्ट थयुं छे ? सर्वने अज्ञाण्या मनुष्य होय, तोषण—निर्दोष जीवन गाळनारा बाळको

प्रति प्रेम उद्भवे छे. ओरे! कुदरती कूर कायदा! तारा इःयमांधी प्रेमतुं नाम निशान पण अहरव थई गयुं छे के शुं? जो तारामां श्रेमनी ज्योत होय, तुं द्यानुं नाम नाणतो होय, ता अमारा रंक विद्यार्थीओनुं छत्र-रत्न हरी हेशने अयोग्य वर्तन चलावी शके नहि. गृहमां शिक्षण मेळवनाराओं करतां बोर्डिंगमां रही शिक्षण मेळवना-राओ तुं वर्तन उंच बने छे, मगन उच संस्कारी बने छे, अने तेव। मनुष्यो पोते प्रुधरी पोताना कुटुम्बने-ज्ञातिने अने दंशने सुधारी इकि छे. एवा बं डिंग हाउसो आ नरवरे मुंबाई, अमदाबाद, कोल्हा-पुर. रतलाम विगेरे स्थळे पोताना खर्चथी स्थापिन कर्यो छे. बीना स्थ-पाबला अने स्थपाना बंधिंग हाउसोमां पण तेननो फाळा प्रथम जडी आवशे. सनाय अने अनाथ श्राविकाओना हितन चें मुंब्हमां स्थ-पायेळ श्राविकाश्रम तेमना कर्तव्यपरायणी, तेमना सुमार्गना अनु-करणीय विदुषी महिलारत ब्हेन सगनब्हेनना अःश्रव तळे चाले छे. केटलीक पाठशाळाओ, संस्कृत शाळाओ कने कन्याशाळ ओ तेमना पोताना खर्चयी के मुख्य फाळाथी चाले छे, ते उपरांत मंबाई सुरत—अभदाबाद अने बीजे अन्य स्थळ भैन बंधुओना सगवड अर्थे धर्मशाळाओं श्रणान साधन साथे स्थापी हो. आ बवां खातांओ स्थापी पोताना प्रवृत्तिमय धंघा चलाववानी साथे प्रांतिक कोनक-रन्यनी उत्तमोत्तम व्यवस्था राखवा साथे तेनापर घणीज बारीक देखरेख मोई कोई अक्लोकनकार आश्चर्यमां छीन थया विना रहेज नहि, जेनो एक नमुनो-हुं गई सालमां विद्याम्यास माटे मुंबाई गयो हतो त्यारे पुरतथी रवाना थती वस्तते छास्तोने सर्चे भें छोकोने उपवोगी हीराबाग धर्मज्ञाळा माटे वपराय छे, त्यां उतस्वाना प्रोप्राम

साथे रवाना थयो हतो, पण कोई कारणथी (के जे नाहेरमां न मुकी शकाय) मेनेनरे उतारो आपवा आनाकानी करी हती. आनुं खुरुद्धं कारण " दिगंबर जैन " पत्रना अधिपति श्रीयुत मुल्बंद्धा-ईन नणावता अने ते श्रीमान् रोठ साहेबना नाणवामां आवतां मने बोड़ाबी तेमणे करेड़ी तपास तेमनी एक स्थानकवासी जैन फिरकाना विद्यार्थी तरफनी सहानुभूति, प्रेम, बर्तन अने वार्तालापना समयनो विचार करतां आ बखते ते परोपकारी शेउनी मूर्ति म्हारा हृदय समक्ष खडी थाय छे. ते समयने आजे याद करतां, तेमनी अनुक-रणीय प्रवृत्ति याद् करतां थोडाक अश्रु बिंदुओ मुक्तवा सिवाय हृद्-यनुं यथेच्छ शान्त्रन थई शक्तुं नथी. तेमना सहवासमां आखां बालको तिवा बृद्धोने तेमना उच रिरिश, तेमनी मायाळ वृत्ति-निर् मिमानी स्वभःवादिमांथी र्इंक ने केईक व्युं शीखवानुं मळी आबतुं. तओश्री साधारण स्थितिगांथी लक्षाचिवति बन्या हता. नामदार सर-कारे तेमने जाटीश ओफ घी पीस बनावी तेमनी कीर्तिमां वधारी कर्यों हतो छतां तेओ वर्तनमां हुं श्रीमान् छुं के मोटो छुं एवं कशेए जणातं नहिः

आज काल निर्वन स्थितिनांथी सामान्य पैता प्राप्ति थयेली छे एवा केटलाक प्रकोना सहवासमां आव्या हशो तो जणाई आव्युं हशे के तेमनी प्रकृतिमां केटलो फरफार थाय छे? तेओ गामना नहि, पण जगत्ना स्वामी वन्या होय, तेम जगतना पुरुषोने तुच्छ के तृणवत् गणता अभिनानमां आंघळा बने छे! वीरनर माणेक! तहारी आवी उदार शक्तिने याद करतां खरेखर मगज अभित यई जाय छे.

गयो ! बीर माणेक ! गये। ! भविष्यना विद्य थींओ कोन शरणे नशे ! मविष्यनी श्राविकाओने कोण सहाय करशे? उगरूओनी साची संभक्त कोण लेशे ? प्रांतिक कोन्फरन्सनी उत्तमोत्तव व्यवस्था कोण चलावजो १ तीर्थोनी संभाळ कोण हेजो १ आ सर्वनी उपेक्षा करी आप-णने तेना मानव शरीरे देवना कार्य करी बतावी तेना सुगुणी-उच्च विचारोना यहा।गानमां अथडा । मकी ते तो स्वर्गपंथे चाहयो गयो ! आप्ला बारमामां नाम तेनो नाहा छे. The rich, the poor, the great the small are levelled death confounds them all जे खील्युं छे ते खरवा माटे, जे जन्मयु छे ते मरवा माटे, एम मानी अहनिञ्च मतकार्यो करी आ मनाना दुर्छम मनुष्य-देहनु मार्थक करवं ए तेमनुं हृद्यवेषक अवमान-मृत्यु आयणन अमू २५ हर्यां कोतरी गलवालायक अमूल्य पाठ शीलवतुं गयुं है. नग्बर माणेकचंद्नी शेठे जैन कोमनी उन्नति अर्थे लगभग दश बार हाखनी गंजावर सखावत—जनो उपयोग जेम तेम नहि करतां उत्तमोत्तम खातांओ स्थापी कर्तव्यवरायणी बनी परम पूज्य महाबीर पिताए बतावेला मोक्षना चार भागे दान-शील-तप-भावना ए चार-मांथी प्रथम मार्गे श्रुग्वीर बती आत्मश्रेय करी पोताना नरतननुं सार्थक क्युं हे. आपमा जैन मनान प्रति तेषणे जे उपकारी कर्या छे नेनी कट्र जैन कोन केटर्र इस्क्री करी शके छे, ने आपणे नो गर्न छे.

अंतमां 'गुणा: एजा स्थानं गृणियु नाच लिङ्गस् न च वय:' ए सुत्रनं अनुपर्श तेषतुं अनुकरण करनारा नरवरो जैन समाजने प्राप्त थाय अने स्वगवासी शेटनी खोट पुरी पढे ए हृदयनी शुभेच्छा साथे महुप रोठ माणे कवंद जीना पवित्र आत्माने शांति इन्छुं छुं.

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति ।

ल्युनम बीरबाळ-वाडीलाल मुळ जीभाई संघवी.

('दिगंदरजैन वर्ष ७, अंक १२)

जड देहनो त्याग अने यशःपींडतुं अवतरण।

अनादि काळथी जड देहनी क्षणभंगुरता मिद्ध थयेल छे. ए जड देह ग निकट संबंबमां रही अज्ञानितमिर पडळने दूर करवा ११ ए सिद्धांतने अनुपरवा चैतन्य अने जडनो संयोग थाय छे.

बामांसि जीणीनि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽ।राणि तथा शारीराणि विहास जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

मगवदगीता ।

जेवी रीते एक माणस जुनां छुगडां काढी नांखी बाजां नदां लगडां पहेरे छे, ते प्रमाणे 'आत्मा' जनां अंगनां तवाग करी दुई नवा अंग धारण करे छे."

वेदांतनो आ सिद्धांत जैनद्दीनने मळतो हे. ए सन्छ द्रष्टां-तथी आत्मानी प्रतीति थाय छै: अने व्यवहारिक दशामां थता शोकादि विकारोने द्वावी आत्मानुं अमरत्व मानित करे छे.

जे व्यक्तिए संसारमां रही पोताना देहने अनुभरतां कर्तव्य बजाञ्यां हे, जेणे मिरवादृष्टि टाळी स्वतः प्रकाशित दृष्टिथी व्यव-हारिक दर्तन चळाल्युं छे, नेणे कोधादी महान राज्ञओनी समीपमां रही, तेमना पासमां न पडतां तेमनी साथे अडग युद्ध चलाव्युं छे, जेण समयोचित नीतियुक्त कार्यदक्षतावडे देशी, विदेशी वंधुओनु हित करवा यावज्जीवन कपर कसी छे, जेणे हृदयनुं अपरिमित सामर्थ्य न्यवहारिक अने पारमार्थिक कार्योमां बताबी आप्युं छे, आबी रीते तन मन अने घननुं संसार यज्ञमां रहेतुं के बिट्टान आपनार 'कर्मवीर दानवीर रोठ माणेकचंद्जीना जडपींडनुं अवसान थाय, तेमां शोक रोनो ?

संसारनी विचित्र घटनाना भार तळे द्वाय्छो आत्मा योग्य समये ते बोजो आशो फॅकी दई, निरुपाधि थई स्वधाममां जई रहे एमां शोक शानो ?

अनंत चतुष्टयधारक आत्मा पोतानी मुखवीर्याद काक्तिओनो योग्य आविर्माव करी संसार समुद्रनी पार जवा मधन करे तेमां श्लोक रोनो ?

बधुओ ! व्यवहार योगीना जडदेहनुं अवसान शोककारक हैखातु नथी. कोई स्नेही संबधीने श्रम, उठाखामांथी बचेला जोईने आपणने हर्ष थाय के शोक थाय ?

कोई स्नेही संबधीने विद्यायतमां ऊंचा प्रकारनो अधिकार मळे, एथी आपणने हर्ष थाय के शोक !

वंशक, आपणी स्वार्थबुद्धिथी नहि, परन्तु निर्मेळ वात्सच्य-मावथी आपणे आपणा हंबंबीनी अधिकतर सारी स्थिति जोई आनं-दित यईए छिए कारण:—

'भले ते दरियापार, देशपार के पछी देहबहार' होय; परन्तु तेना यशःपींडना परमाणुओ आपणा वातावरणमांज प्रसरी रहे छे. ते परमाणुओना स्कंघ बने छे अने ते स्कंघो बीजा पुद्गळ रचवामां. सहायभृत थई नवीन तेजथी प्रकाशी नीकळे छे."

आ सिद्धांत सत्य हो वा असत्य हो, दूपानु एटछुं तो सत्यन

छे के -- मक्तिभावथी द्रवित थयेछां अनः करणो तो आ यशपींडनाः परमाणुओने ग्रहण करशेन करशे.

नागरदास नरोतमदास संघवी, केर शडा-(भह्रत्र.) (दिगंबर जैन वर्ष ७ अंक १२)

# कितनेक पत्रोंके अभिप्राय । सेठ मानिकचंद हीराचंद, जे॰ पी॰।

गत आष हमें एक बड़े दानी और धर्म्मनिष्ठ नैनका देहान्त बम्बईमें हो गया। इनका नाम सेठ मानकवन्द था। इनके पिता, इीरावन्द सुरतके रहते गले थे। उनके चार पुत्र हुए-मातीचन्द्र, पानाचंद, मानि धचन्द और नवलचंद्र । इन चारों भाइयोंने बम्बईमें पहले मोतीका रोज़गार शुद्ध किया; पीछेमे वे जवाहरातका रोज-गार मी करने लगे । धीरे धीर इनका रोजगार बढ़ा । लाभ भी होने लगा । मानिकवन्द पानावन्द औहरीकं नामसे ये कान करने हमें । सेर मानि हचन्दने अपने व्यवमायकी इननी उन्नति की कि कुछ ही वर्षीमें ये अमीर हो गये । ६२ वर्षकी उम्रमें इन्हीं सेठ मानिकचन्द्रने, बिना किसी बीमारीके, परलोकके लिए प्रस्थान कर दिया। रातको ११ बजे ये आरामसे लेटे। कुछ देर बाद अक-स्मात् हृद्यका स्पन्दन बन्द हो गया और इनकी इस छोक्तकी छीला समाप्त हो गई। इनकी दानशीलतासे प्रमन्न होकर गवर्नमेंटने इन्हें जे० पी० ( जस्टिस आवू दि पीस ) की पदवीसे अलंकत किया था। इन्होंने अपने जीते जी आठ नौ छाख रुपया जैन मन्दिरों, तीर्यों और प्रन्थोंके जीर्णोद्धार करने, धर्मशालायें और X

छात्रावास बनवाने, स्कूछ, औषघाछय और श्राविकाश्रम खोछने और छात्रवृत्तियां देनेमें खर्च कर दिया । इसके सिवा २॥ छाख रुपयेकी वसीयत भी कर गये हैं, निसके व्यानसे जैन-तीर्थ-रक्षा, परीक्षाछय, छात्रवृत्तियां और धम्मीग्देश आदिका काम होता रहेगा। रुपयेका सट व्यय इसे कहते हैं।

" सग्स्वती " (सितम्बर १९१४)

### × × दानवीरका देहान्त।

बड़े शोकसे लिखना पड़ता है, कि इम सताहमें जैन जातिका एक रत्न इम अमार संभरमे उठ गया। बम्बईके जैनकुलमूपण दानवीर सेठ माणिकनन्द हीराचन्द जे. पी. अब इम संमारमें नहीं हैं। सेठजीकी विद्वत्ता, धार्मिकता, दानशीलता और उदारताकी जितनी प्रशंका करें, थोड़ी है। आप सच्चे जेनी और अपनी जातिके क्य्रगण्य-अगुआ थे। मृत्यु समय आपकी अवस्था ६३ वर्षकी थी। आपके ममान दानी इस समय मारतमें विरले ही होंगे। इसीसे आप दानवीर कहे जाते थे। जैनियोंमें आपका खली स्थान मुक्किटसे पूरा किया जा सकेगा।

" वेंक्टेश्वर समाचार '' ( मुंबई ) ता० २४-७-१४.

× × × ×

# माणिकचन्द हीराचंद जीहरी।

माणिकचन्द जौहरीकी मुत्युसे जैनजाति और भारतवर्षका एक जवाहिर उठ गया। माणिकचन्द बंबईके बड़े घनी व्यापारी थे। बहुत दिनोंसे धर्मके अर्थ ही अपना जीवन उन्होंने समर्पित कर दिया था। उन्होंने बंबई, रतलाम, प्रधाम, जबलपुर आदि स्थ नोंमें बोर्डिंग हाउस विद्यार्थियोंके लिए खोले। हीराबाम घमशाला गिम्मांव, बंबईमें १। लक्ष रूपये लगाकर बनवाई। कोई ५-६ लाख रूप विद्यांके लिए अर्थदान कर चुके थे। मस्ते समय २॥ लक्ष रूप ने ने बचोंकी शिक्षाके लिए दिए। इनका जन्म सूरतमें कालिए वर्ध रहे हुआ था। सत्यु इनी श्रावण वर्ध को बंबईमें हुई। संस्कृत पर इनका प्रेन्था, धर्मनिउ जैन थे, खंधिशाके पक्षपाती थे। सुरतमें सर्वेदेशीय कम्याशाला कोली, जो तद नक जारी है।

इनकी अस्तिम उच्छा थी कि लन्दनमें एवं जैन बोर्डिझ शउस स्थापित को जिन्मे धम पूर्वक विद्यार्थी रह को । रूपं सिफे गुन्माती और हिन्दी जानते थे। जैन लोगोंने विद्यका विशेष आदर है और हिन्दी भाषाकी इस समय उनसे विशेष उन्नति हो रही है ज्यापारके तो वे स्तम्म हुई हैं।

" पाटलीपुत्र " ( बांकीपुर ) ता० ८-८-१४.

दिगम्बा कैन ने प्रेसर दानवीर सेठ माणेकवंद हीरावंद जे. पी. गई ता० १६ जुलाईए एकाएक हृदय बंब पड़बन्धी स्वर्गवासी थया छे. आ गृहस्थ आनना १४ लाख कैनोगां एक अनुकरणीय पुरुष हता. विद्यादान, अभयदान, और घदान वगेरेमां मळीन एमणे पोतानी ह्यातीमां ८—१० लाख रुपियानी सखावन वरी हती अने मृत्यु वखते पण २॥ लाखनी सखावत करता गया छे. संस्खा-बंध बोर्डिक हाउसो तेमणे स्थाप्यां छे. रु० १५०००)ना खर्चें दिगम्बर जैन डिरेक्टरी तैयार करावी छे. धर्मरक्षण अने धर्मसेवानां काम माटे तेओ मुम फरी पण बहु करता. स्वमावे सादा, सरळ, निरिममानी अने मायाळू हता. आ नरस्तनी खोट जैन वर्गमां वर्षो सुधी पुरावी मुक्के छे. आवा पुरुषोनी सद्गति माटे कांई इच्छवानं रहेतुंन नथी. एमनी पाछळ एक स्मारक फंड थयुं छे, जे संतोष हेवा जेवु छे.

" जैनहितेच्छु " (बम्बई) ओगप्ट १९१४.

# THE LATE "DANVIR" SHETH MANECKCHAND HIRACHAND

On this side of India Sheth Maneckchand was known as a great philanthropist. Born in Surat in Vikram Samvat year 1908, he died only a short time ago at the age of 62. His father Hirachand was poor and so was his grandfother Gumanji who emigrated to Sarat from Bhindar ( Udaypore ) in A. D. 1840 to trade in opium in a small way. Circumstances made the family to go to B mbay, where Maneckehand with his three brothers becan business in a humble way and learnt the profession of pearlborers and stringers. Fortune favored their honest efforts, and in a short time they began to purchase and sell land in Bombay at a great profit. Ultimately they settled down as pearl merchants; exporting pearls to Europe and making huge profits. Although a man with comparatively very little education, Maneckehand's outlook on life was very wide, and just as he was able to amass a huge fortune, so he spent generously buge sums in works of charity. His total gifts come to near ten lacs of Rupees and he

fully deserved the appelation of "Dinvir Jainkulbhusan" which was bestowed on him in these parts.

He belonged to the Digambar sect of Jains, and in all parts of India, his helping hand reached the needy and poor of his community and assisted them most liberally. He early saw the utility of Boarding Houses if education was to spread, and his long purse was always op ned to plan out and build Hostels in several towns in and out of the Bombay Presidency. In B mbay proper, he would best be remembered by the splendid pile of building, which he has creeted in that part of the town which is most thickly inhabited by Hindu, and called the Hirabag. It is used as a Dharmastala for all Hindu pilgrims, where they get accommodation of the best class and as an appariage of which is a fine beture hall, which is used as a lown Hall of the locality. A mere prusal of the list of his donations is enough to e gender feelings of a impration for a man, who in raising himself from poverty to wealth, never larget the uses to which his enormous wealth could by put, and consequently gave them a practical and enduring shape. Even on his death bed he has made a trust of Rupers two lacs and a half, all to be utilised for (sectarian) charitable purposes.

He gave away Rs. 8,000 for repairing a Jain temple at Surat, Rs. 25000 for building a Dharmashala at Surat; Rs. 21000 for repairing a Dharmashala at Palitana; Rs. 80,000 for a Jain Boarding House in Bombay; Rs. 22,000 for a Jain Boarding House at Kolhapur; Rs. 40,000 for a similar institution at Ahmedabad; Rs. 1,25,000 for a Dharmshala (Hirabag) in Bombay; Rs. 50,000 for a boarding house at Jabbalpore; Rs. 15,000 for a dispensary at Ahmedaabd.

Various small sums between 6,000 to 10,000 for charitable purposes such as founding schools for girls, scholarships, preparing Jain Directories, have not been included in the list. Government rewarded him with a justiceship of the peace.

It is no small wonder if the Digambar Jain community is mourning his loss as they would mourn the loss of a king.

"Modern Review" ('alcutta September. 1917

गाजा राणा छत्रपति हथिय-के असवार । मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार ॥ दल बल देशी देवता पात पिता,प्ररिवार । मरती दिरियां जीवको कोई न राखनहार ॥

A great soul has passed away from amongst us, to accelerate its avolation to perfection. Dana-veer, Jainkula Blin han, Shriman Seth Maneckchand Hirachand, Justice of the Leave, Bombay, was a respected and honored a nor in every Jain family throughout Tadia; and the greet caused by his parting is as general and wide-spread Jati-sewak or servant of the c manunity is a title lightly adopted by many a young and old hypocrite as a means for gaining low personal ends. But the great man, for whose loss to us we are in mettrning today, was a real benefactor and had the service of the isin community at heart. Born in 1851 is a great and famous family of jewellers, he for the last 16 or 17 years devoted the greater part of his life and for une to the service of religion and community. He did not know the English language, but in the Jain community he was the first to conceive the idea of establishing Jain Boarding Houses to afford large and special facilities to students. In 1898 at a cost of Rs. 80,000 he founded the Hirachand Gumanji Juin Bearding House in Bombay, named after his respected father He was a lover of Boarding Houses, a Boarding-Premi as some of his malevolent critics at one time nicknamed him. The Students' Boarding Houses at Ahmedabad Kolhapur, and Rut am gradually came into existence. T e first nopulso and initial support to what is now a splend d Boarding House at Jubbulpur was also given by hem. Hes benefactions were not limited to any city or province. He worked hard, and manufacted liberally wherever necesssary, tewards the establishment of suct B anding Houses 86 Agra, Ala . b.d. L. hon, Sholapare, Hubi, Sargh, Myser, Bargare, Vardha, and Akolo. His activities were not however, builted in one direction. The K shi Syairal Manare y lava, was opened by him, a d ho made subtanti I ornations to the permanent of demices funds of the institution. He was the President of its Committee of munagement.

His beloved daughter Mohilu Ratna (the j well among ladies) Shrimati Maganbai is a well-read schein of Jain Scriptures, as dher knowledge of Jain philosophy is quite adequate to place her in the front rank of Pandits. Her Shravikashram at Jubilee Bigh, Tardeo, Bombay, a splendid building which was dedicated to the Ashram by her father, is the only institution of its kind in the community. It is both a Model School for girls and a Training College for lady teachers.

He was also the President of the Tirtha Kshetra Committee, in which is vested the management of all places of pilgrimage among Jains This was an arduous task, and he performed it with a diligence, which is rare among the favoured sons of Dame Fortune.

His charities again were not limited to the Jain community alone. The Hirabagh Dharamshala is a splendid rest-house at Bombay where all persons who abstain from animal food, can stay free of charge. Special furniture and necessary articles are also supplied to those who require them at very moderate charges. The lecture Hall at Huabagh is a well-known place for public lectures at Bombay.

In his mercy for the dumb creatures, he constantly distributed free and gratis a vast literature of the Humanitarian Lague and Vegetarian Societies.

In his lat days he was maturing a scheme for the efficient protection of milch-catcle, who, when they cannot supply milk are generally sold to the butcher for their firsh and skin. His death was a sudden and painless one. He worked as usual till within an hour or two of his last breath.

His last idea which he discussed on the day he died with Mr M. H. Udani, M. A., was that there should be established a Boarding House, with a Chaityalaya (place of worship, in London for the convenience of Jam students and visitors there. And we trust that the Jain community will carry out this last wish of their great departed benefactor by establishing a Maneckchand Boarding House in London, and thus perpetuate his illustrious name for ages to come.

We offer our sincere and heartfelt condolence to the illustrious lady, Jain Mahila Ratna, Shrimati Maganbai, and to all other members of the family, in the sad bereavement, which, we seriously say, is a bereavement not theirs alone, but of the whole Jain community throughout India. The 'Digamber Jain' of Surat has brought out an obituary number giving a brief life sketch of the Philanthrophic Seth and a pathetic poem extolling his deeds and virtues and has enclosed a good portrait of the deceased.

Death has no power th' immortal soul to slay,
That, when its present body turns to clay,
Soeks a fresh home, and with unlessened might,
Inspires another frame with life and light.
Souls cannot die. They leave a former home,
And in new bodies dwell, and from them roam
Nothing can perish, all things change below,
For spirits through all forms may come and go.
Good beasts shall rise to human forms, and men,
If bad, shall buckward turn to beasts again.
Thus, through a thousand shapes, the soul shall go,
And thus fulfil its destiny below.

"Jain Gazette" (Lucknow) July 1914.

# क क क क हाय! जैनसंसारके भाग्याकाशका चमकता हुआ तारा हुट पड़ा!!!

समाचार तो केवल इतना ही है कि जैनसमाजके प्रसिद्ध दानी और मान्य श्रीयृत सेठ माणिक चन्द्रजी जे. पी. अब इस संसारमें नहीं हैं। पर हाय! कैसा भयानक, कैसा लोगहर्षण समाचार! एक महान् आत्मा बातकी बातमें चल बसा! जिसका स्वप्नमें भी मान नहीं था, वह बात आँबोंके सामने आ उपस्थित हुई! जैनसमाज वैसे ही तो दुर्बल है, उसे अभी उठने तककी भी तो शक्ति प्राप्त नहीं हुई कि उसे हाथका सहारा देकर उठना सिखानेवाला ही एकाएक गायब! जैनसमाज अभी थोड़ा भी कष्ट उठालेनेको तैयार

नहीं हुआ, कि उपवर अनावास यह आवत्तिका पहाड़ आ गिरा ! हाय ! अब कोन बेचारे दुबेछ समानकी रक्षा करेगा ? कौन उसे अपने हाथका महारा देगा ! निर्देशी काल ! तूने उसका एक मौछिक रत्न छीनकर उसे पथ पथका मिखारी बना दिया है! अन्धेके हाथकी छकडी छीनकर उसे गहरी खाईमें ढम्ल दिया है! हाय ! हम अपने इप दुःखका हाउ छिसे नाकर कहें ! कौन हमें प्यान्के साथ अपने पास बैठाकर हमारी इस मर्भवेदनाको छनेगा ? कौन हमें इन दुःखमें मान्त्वना देकर म्वयं भी शामिल होगा / हाय ! कहते हृद्य फटना है कि जो हमारी दुःख दशाका छुननेवाला था, जो बड़े प्रेमके साथ दु:खर्में सान्त्वना देकर हमें वैर्घ बँवानेवाला था-हमारे दुःखपर प्रेमके दो आमु बहानवाला था, वह अब इम भौतिक देहको छोड़कर म्वर्गमें जा बसा !

महात्मा माणिक ! आपको खोकर आज जैनसमाज बहुत दुःखी है। उसका बचा बचा आन आपके लिये आंगू वहा रहा है। उसने आपको खोकर आज सब कुछ खो दिया। वह कंगाल हुआ, भिलारी हुआ । उसके भाग्याकाशमें आज फिर अन्धेरा छाया ।

महात्मत् ! जैनयमानमें आप सच्च महात्मा थे, दानी थे, उपकारक थे, वीर थे, रतन थे, क्योंकि आप ही इस बीसबीं सदीमें सबसे पहले पहल उसके कल्याणपथ-प्रदर्शक हुए। आपहीन अपने धनका उपयोग समाजकी जरूरतोंको देखकर किया। आपहीने अज्ञानक समुद्रमें डूचने हुए समानको बिद्या-तरणिका सहारा देकर बनाया । आपहीने सबसे पहले अज्ञानरूपी भयंकर राक्षसका साम्हना कर उसे मार भगानेका साहस किया । आपहीने जैनसमाजके हृदयपर पहले शिक्षाका प्रकाश डाला। इमालिये कहते हैं कि जैनसमानने आपको खोकर अपना सर्वस्व खो दिया।

सेठ महन ! हमारे दुःखी आत्माको सान्त्वना देनेके छिये कदान चित् आप स्वर्गसं सन्देशा भेजो और कही कि "माई, एक मेरे लिये तुम इतना क्यों दुःख करते हो ! जैनसमानमें तो अभी मुझसे भी बड़ बड़े धनी मानी पुरुष हैं। य हाँ हम भी 🖫 ते हैं कि हैं, पर वह उदारता, ज्ञान्ति, परोपकार, धेम, सहन्काजिहा, निर्मिमानतः – आहि गुणोंकी पवित्र मूर्ति वहाँ १ क्या अब हमें कभी उसके दीन होंगे ? नहीं । आजके धनिक जैन्हंमान्सं न उदारता है, न शान्ति है, न सची परोपकारता है, न प्रेम है, न सहनज्ञीलता है और न निरमिषानता है। फिर हमें उसमें क्या आशःहो सकती है १ सम नको किसी कारण महायता देना दूसरी बात है और उसके छिये हार्टिक प्रेम बतलाकर अपना कर्त्तच्य पालन करना दूसरी बात है । ापम प्रेम था, आपने जो कुछ किया वह अपना कर्त्तब्य समत्तकर किया है, इसीलिये आज सारा जैनसंसार आपक लिये हृदयसे रो रहा है और इन्ताब्दियों तक रोयेगा। सेठ साहब, आप-की जगह की पृत्ति करनेवाण जैनसंसारमें इस समय तो कोई हैं नहीं, आगे होगा था नहीं ? यह भगवान् जाने, पर ऐसी आशा करनेका अभी कोई छत्रण नहीं है।

सेट साहब, आपके वियोगसे हमें जो दुःख है, उसे तो हमारा हृदय ही जानता है; पर—'' गतिर्देवी ब्रहीयसी '' इस वाक्यका स्मरण कर मन मारकर रहजाना पड़ता है । अग्तु, हमारा जैसा भाग्य है, उसे हम तो भोगेंगे ही, पर आपके पवित्र आत्माको शान्ति प्राप्त हो और अधोगत जैनसमानकी सेवाके छिये; नहीं, उद्धारके छिये आपका फिर भी भारतमें अवतार हो, यह हमारी हार्दिक कामना है।

आपके कुटुम्बके साथ भी इस भयानक आपक्तिके समय हम सम-वेदना प्रकाश करते हैं। शान्तिः शान्तिः। "सत्यवादी" (वम्बई) जुलाई १९१४

## 🕈 🌣 🛧 दानवीरका देहपात।

" अच्छा-बुरा वस नाम ही रहता सदा है स्प्रेकमें, वह धन्य है जिसके लिए हों लीन सञ्जन शोकमें॥"

--- जयद्रथवधः

यह प्रकट करते हुए हमें बड़ा ही दु:ख होता है कि ता॰ १६ जुलाईकी रातको २ बने श्रीमान् दान्बीर सेठ माणिक चन्द्र हीराचन्द्र जे. पी. का एकाएक स्वर्गवास हो गया। दो बंटे पहले जिसकी कोई कल्पना भी न थी, वह हो गया। भारतके आकाशसं एक चमकता हुआ तारा ट्रूट पड़ा, जैनियोंके हाथसे चिन्तामणि रत्न खो गया, ममाजमिन्द्रिका एक सुदृढ़ स्तंभ गिर गया। जहाँ जब जिसने यह खबर सुनी, वही मोंचकसा होकर रह गया और हाय हाय थे करने लगा। मृत्युकी वह अचिन्त्य शक्ति देखकर विचारशील काँप उठे।

सेठ माणिकचन्द्रजीसे हमारा जो कुछ परिचय रहा है, उससे हमारा हृद्य कहता है कि उनके स्वर्गवाससे जैनसमाजकी जो बड़ी भारी हानि हुई है, उसकी पूर्ति होनेका इस समय कोई भी चिह्न नहीं दिल्लाई देता है और वह पूर्ति आगे जल्दी हो नायगी इसकी

भी बहुत कर संभावना है। यद्यपि आज सारे जैनसमाजमें संटर्जी-की कीर्तिपताका फहरा रही है और सभी लोग उनकी मुक्तकण्डसे प्रशंपा कर रहे हैं. तो भी हमारा विश्वाम है कि वास्तवमें संठजी किस श्रेणीके पुरुषरत्न ये, इस बातको बहुत ही कम छोग जानते होंगे । उनके हृदयमें जैनममाजके अति को भावनायें रहती थीं. जिन निष्कपट वृत्तियोंसे वे भपानसेवामें अहर्िश तत्पर रहते थे और जिन शान्तता उदारता तथा धीरतादि गुणोंसे उन्हें प्रत्येक काममें सफलता मिलती थी, उन सबके परिचय प्राप्त करनेका निन्हें सौमाग्य प्राप्त हुआहै वे उन्हें केवल दानवीर और धनी ही न समझते थे, किन्तु एक महात्मा समझकर अतिश्वय पूज्यदृष्टिसे देखते थे। सेउजीने गत बारह वर्षीनें जो जो काम किये हैं, उन सब पर दृष्टि देनसे यदि यह वहा जान कि वे इस समयकं युगप्रवर्तक थ-उनके प्रयत्नोंने जैनसमानमें एक नया युग उपस्थित कर दिया है, तो कुछ अत्युक्ति व होगी । केवल स्थपतिष्ठाओं में और मन्दिर बनवानेमें ही लाखों रूपया प्रति वर्ष खर्च करके सन्तुष्ट हो जानेवाले केन समाजके धनियोंका चित्त विद्यामन्दिर स्थापित करनेकी ओर आकर्षित कानेका प्रवान श्रय सेठ माणिक चन्द्रजीको ही प्राप्त था। उनकी देशकापी अनन्यसाधारण कीतिने धनियों पर ब्रह प्रमाव डाला है, नो बीहों हमाचारपत्र, पचासों उपदेशक और सैकटों सभा समितिया नहीं डाल सकती हैं। यह आपहीके सभापति-पदका प्रभाव है, नो सभा सुमाइटियोंको क्वोंका खेल समझकर उनकी ओर आख न उठानेवाले बनाट्य छोग आन उन्हीं समाओंक सभापति बननेके छिए लालायित रहते हैं और अपने प्रसादहरू

पुरुषोंके द्वारा इसके छिए प्रयत्न तक कराते हैं।

सेटजी केवल दानवीर ही थे, वे कर्मशीर भी थे। धनवानों में दानवीर तो अनेक हैं और आगे और भी हो जावेंगे, परन्तु सेटजी जैसा कर्मवीर होना किटन है। उन्होंने जैनसमाजके लिए अपने पिछले जीवनमें कई वर्षों तक अग्रान्त परिश्रम किया है। यदि उनकी पिछली चार पाँच वर्षकी दिनचर्या देखी जाय, तो मालूम होगा कि जैनसमाजकी संस्थाओं के लिए उन्हें प्रतिवर्ष कमसे कम तीन महीने प्रवास—पर्यटनमें रहना पड़ा है और अपने व्यापारादिके तमाम काम छोड़कर प्रतिदिन चार प्रांच घण्टे प्रान्तिक समा, ती र्थक्षेत्रक मेटी तथा अन्यान्य संस्थाओं के लिए देना पड़े हैं! समाजके किसी कार्यके लिए उनको आल्प्य नथा। हर समय हर कामके लिए वे किटच इरहते थे। इस समय दिगम्बर जैनियों के जो डेड़ दर्जनसे अधिक बौर्डिंग स्कूल हैं, उनमें आपकी दानवीरताकी अपेक्षा कमवीरताने अधिक काम किया है।....

सेठनी न अंगरेज़ीके विद्वान् थे और न संस्कृतके; वे साधा-रण देशभाषाका पढ़ना लिखना जानते थे। परन्तु उन्होंने अपने जीवनमें जो कुछ किया है, उससे बाबू लोग और पण्डितगण दोनों ही बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञानकी अपेक्षा भाचरण अधिक भादरणीय है। उनका अनुभव बहुत बढ़ाचढ़ा था। जैनसमाजके विषयमें जितना ज्ञान उनको था, उतना बहुत थोड़े लोगोंको होगा।....

यदि संक्षेपमें पूछा जाय कि सेठनीने अपने जीवनमें नयां किया ! तो इसका उत्तर यही होगा कि जैनसपानमेंसे जो विद्याकी प्रांतष्ठा उठ गई थी, उसको उन्होंने फिरसे स्थापित कर दिया और जगह जगह उसकी उपासनाका प्रारम्भ करा दिया। सेठनीके हृद्यमें विवाक प्रति अपाधारण भक्ति थी। यद्यपि वे स्वयं विद्यान् व थे, तो भी विद्याके समान मूल्यवान् वस्तु उनकी दृष्टिमें कोई न थी।....

सेठनीके हृद्यमें यह बात अच्छी तरह नम गई थी कि अँगरेनी स्कूछों और कालेनोमें नो शिक्षा दी नाती है, वह धर्म- ज्ञानशून्य होती है। उनमेंसे बहुत कम विद्यार्थी ऐसे निकलते हैं नो धर्मात्मा और अपने धर्मका अभिमान रखनेवाले हों। अपनी नाति और समानके प्रति भी उनके हृद्यमें आद्र उत्पन्न नहीं होता है। परन्तु वर्तमान समयमें यह शिक्षा अनिवार्य है-अँगरेनी पढ़े विना अब काम नहीं चल सकता है, इसिल्ए कोई ऐपा उपाय करना चाहिए निससे इनई हृद्यमें धर्मकी बामना स्थान पा लेने। इसके लिए आपने 'नैन बं हिंग म्कूल' और उनमें स्कूल कालेनके विद्यार्थियोंको रखकर उन्हें प्रतिदिन एक घण्टा धर्म शिक्षा देना लामकारी समझा। इस ओर आपने इतना अधिक ध्यान दिया और इतना प्रयत्न किया कि इस समय दिगम्बर समानके लगभग २० बोर्डिंग स्कूल काम कर रहे हैं!

संस्कृत पाठशालाओं की ओर भी आपका ध्यान था—संस्कृत-की उन्नति आप हृदयस चाहते थे; पर तु इस ओर आपके दानका प्रवाह कुळ कम रहा है—पूर्ण बेगसे नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि एक तो कोरी संस्कृत शिक्षाको आप अच्छी न समझते थे—इस समय वह जीविकानिबीइक लिए उपयोगी नहीं और संस्कृत पाटशालाओंकी पढ़ाईका पुराना दनरा तथा उनके प्रबन्धकी कठिन इसाँ आपको इस अर प्रवृत न होने देती थीं। तो भी आप संस्कृतके लिए बहुत कुछ कर गये हैं। बनारसकी स्थाद्वाद-पाठशालाने आपके ही लगानार उद्योगसे निरस्थायिनी संस्थाका का घाणा किया है, आपके बोर्डि। स्कूलोंमें ने विद्यार्थी प्रथम स्थान पोते हैं जिनकी दूसरी भाषा संस्कृत रहती है और संस्कृतके कई विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्कालशिंपे भी मिन्नती हैं। अने पिछले दानमें वे जनपरी ताल को स्थायी बना गये हैं। उक्त दानका और भी बहुत अंश संस्कृतकी उन्नतिमें लगेगा।

संठनी बढ़ ही उदार हृदय थे। आस्नाय और सम्प्रदायों की शोचनीय संकीर्णता उनमें न थी। उन्हें अरना दिगम्बर सम्प्रदाय प्यारा था, परन्तु साथ ही श्वेताम्बर सम्प्रदायके छोगोंसे भी उन्हें कम प्रेम न था। वे यद्यपि बीसपंथी थे, पर तेरहपंथियों को अपनेसे जुदा न समझते थे। उनके बम्बईके बोर्डिंग स्कूलमें सैकड़ों श्वेताम्बर्रा और स्थानकवासी विद्यार्थीयोंने रह कर लाम उठाया है। एक स्थानकवासी दिद्यार्थीको उन्होंने विलायत जानेके लिये अच्छी सहायता दी थी। उनकी सुपसिद्ध धर्मशाला हीरावागमें निगामियभोकी हिन्दुभात्रको स्थान दिया जाता है। साम्प्रदायिक और धार्मिक लड़ाईपोंसे उन्हें बहुत घृणा थी। उनकी प्रकृति वड़ी ही शान्तिप्रय थी। पाठक पृष्टीने कि यदि ऐसा था तो वे सुकहर्मेवाजीम सिद्धहस्त रहनेवाली तीथक्षेत्रकरेटीके महमंत्री वयों थे ! इसका उत्तर यह है कि वे इस कार्यको लाचार होकर करते थे।....अपने-दाई लाखके अन्तिम दानपत्रमें वे तीथक्षेत्रकीकी रक्षाके छिए कर्

भाग दे गये हैं, परन्तु उसमें साफ शब्दों में लिख गये हैं कि इस-मेंसे एक पैसा भी मुक्तइमों में न लगाया जाय इससे सिर्फ तीर्थोका प्रकास सुधारा जाय ।

जैनग्रन्थोंके छशने और उनके प्रचार करने के लिए सेटजीने बहुत उद्योग किया था। यद्यपि रव्यं आपने बहुत कम पुस्तर्के ब्रपाई हैं; परन्तु पुस्तकपकाशकोंको आपन खुर जी खोलकर महा-यता दी है। उन दिनों में जब छपे हुए ग्रन्थों की बहुन कम विकी होती थी, तब सेटजी प्रत्येक छपी हुई पुस्तककी डेड् डेड् सौ, दो दो सौ प्रतिया एक साथ खरीड लिया करते थे जिससे प्रकाश कोंको बहुत बड़ी सहायता मिछती थी । इसके छिए आपने अपने चौता-टीके वैत्यालयमें एक पुस्तकालय खोल गनला था-उसके द्वारा आप स्वयं पुस्तकोंकी विकी करते थे और इस काममें आप अपनी किमी तरहकी बेइजाती न समझते थे। जैनप्रन्थरत्नाकर कार्यालय तो आपका बहुत ही उपकृत है। यदि आपकी सहायता न होती, तो आन वह वर्त्तमान स्वरूपको शायद ही प्राप्त कर सकता। आप अपिके प्रचारके वष्टर पक्षयाती थे; परन्तु इसके छिए लड़ाई झगड़ा खण्डन मण्डन आपको निलकुल ही पसन्द न था। जिन दिनों अ-खनारों में छापे भी चर्चा चलती थी, उन दिनों आप हमें अक्सर समझाते थे कि " भाई तुम ब्यर्थ ही क्यों छड़ते हो ? अपना काम किये जाओं-नो शक्ति छड़नेमें छगाते हो, वह इसमें छगाओ, तुम्हें सफलता प्राप्त होगी—सारा विरोध शान्त हो जायगा। "

संटनीक कार्मोको देखकर आश्चर्य होता है कि एक साधा-रण पट्टे छिखे धनिक पर नये नमानेका और उसके अनुसार काम करनेका इतना अधिक प्रमाव कैसे पड़ गया। जिन कामों में जैन-समाजका कोई भी घनिक खच करनेको तैयार नहीं हो 'कता, उस काममें सेठजीने बड़े उत्साहसे द्रव्य खर्च किया है। दिगम्बर-जैन-डिरेक्टरी जो छपकर तैयार हुई है-एक ऐसा ही काम या। इसमें सेठजीने लगभग १५ हजार रुखे लगा दिये हैं। दूमरे धनिक नहीं समझ सकते कि डिरेक्टरी क्या चीन है और उससे जैनसमाजको क्या लाभ होगा। विलायतमें एक 'जैन छा-श्रावास 'बनवानेकी और भी सेठजीका ध्यान था; परन्तु वह पूरा न हो सका।

दिगम्बर जैनसमानमें इस समय कई पक्ष या दल हो रहे हैं। जिसे देखिए वही अपने पक्षका गीत गाता है और दूमरेको नीचा दिखानेका प्रयत्न करता है; परन्तु सेठजीका पक्ष इन सबसे निराला या, उनकी दृष्टि सदा समूचे जैनसमानके कल्याणकी ओर रहती थी। किसी मा पक्षसे वे द्वेष न रखते थे। जब कभी इन पक्षों में छड़ाई झगहोंका मौका आता या और वह शान्त न होता या तब आप तटस्थवृत्ति धारण कर छेते थे। ऐसे अनेक मौके आये हैं जब अखबारों में आप पर बहुत ही अनुचित आक्रमण हुए हैं; परन्तु आपने उनमेंसे एकका भी खण्डन या परिहार करनेका प्रयत्न नहीं किया है।...

धनवैमक्का मद् या अभिमान सेडजीको छू तक न गया था। इस विषयमें आप जैनममाजमें अद्वितीय थे। गराबसे गरीब प्रामीण जैनीसे आप भी बड़ी प्रसन्नतासे मिछते थे—उससे बातचीत करते थे और उसकी तथा उसके ग्रामकी सब हाछत जान छेते थे। आप शामके दो षण्टे प्रायः इसी कार्यमें व्यतीत करते थे। सैकड़ों कोर्सोकी दूरीसे आये हुए यात्री जिस तरह आपकी कीर्तिकहा-नियाँ छुना करते थे, उसी तरह प्रस्यक्षमें भी पाकर और आपके मुँहसे चार शब्द छुनकर अपनेको कृतकृत्य समझने छगते थे।....

विलासिता और भाराम-तलबी धनिकोंके प्रधान गुण हैं।
परन्तु ये दोनों धार्ते आपम न थीं। आप बहुत ही सादगीसे रहते
थे और परिश्मां प्रेम रखते थे। अनेक नौकरों चौकरोंके होते हुए
मी आप अपने साम अपने हाथसे करते थे। इस ६३ वर्षकी उमर
तक आप सबेरेसे लेकर रातके ११ बने तक काममें लगे रहतेथे।....

संठजीकी दानवीरता प्रसिद्ध है। उसके विषयमें यहाँ पर कुछ छिप्यनेकी जरूरत नहीं। अपने जीवनमें उन्होंने छगमग पाँच छाख रूपयोंका दान किया है जो उनके जीवनचरितमें प्रकाशित हो चुका है। उसके सिवाय उनके स्वर्गवासके पश्चात मालूम हुआ कि सेटजी एक २॥ छाख रूपयेका बढ़ा भारी दान और भी कर गये हैं जिसकी बाफायदा रिजस्ट्री मी हो चुकी है। बम्बईमें इम रकमकी एक आछीशान इमारत है जिसका किराया ११००) महीना बसुछ होना है। यह द्रव्य उपदेशक्रमण्डार, परीक्षाछ्य, तीथरक्षा, छात्रवृत्तियाँ आदि उपयोगी कार्योमें छगाया जायगा। इसका छगभग आधा अर्यात पाँच सौ रूपया महीना विद्यां-धियोंको मिल्रेगा।

मेटनीके किन किन गुणोंका स्मरण किया जाय; वे गुणोंके आकर थे। उनके प्रत्येक गुणके विषयमें बहुत कुछ लिखा जा सकता है।.... "जैनहितेषी" ज्येष्ठ वीर सं० २४४०.

## ग्रन्थकर्ताका प्रयोजन।

माननीय सम्पादक, "दिगम्बर जैन," सेठ मूल्चंद किसनदासजी कापड़ियाकी प्रेरणा और सेठ साइबके वे अलाकिक गुण जो प्रन्थकर्ताने स्वयं अनुभव किये हैं और जिनका वर्णन वाचकोंको सुमार्ग पर आकर्षण करनेवाला है इन दोनोंने मुझे प्रेरित किया कि मै सेठजीकी जीवनी जो एक बहुत बड़ी इतिहासकी वार्ताओंकी माला है लिखनेका उद्यम करूँ। मेरा प्रयोजन इस जीवनके प्रकाशमें अपनी शुभ भावनासे अपना लाभ और दूसरा वाचकोंको पड़नेसे जो उनके जीवन पर असर पड़ेगा उसका अपूर्व लाभ है। जहां तक मसाला संप्रह कर सका वर्णन यथा- शक्ति यथार्थ लिखा गया है तो भी यदि कहीं अज्ञान व प्रमादवश भूल रही हो उसको विज्ञ पाठकगण सुधार छेवे तथा प्रकाशकको खबर कर जिससे आगामी आवृत्तिमें ठीक हो जावै।

प्रजा वल्सल व शिक्षाप्रचारके अप्रगामी महाराज स्याजीसवके शांतमय बढ़ींथा राज्यमें वीर सं॰ २४४२-४३ के चातुर्मासमें टहरकर व रात्रि दिन उपयोग लगाकर इस जीवनचरित्रको आजकी रात्रिमें पूर्ण किया है। यद्यपि इसका प्रारंभ बढ़ींथा आनेके पहले हो चुका था वर बहु भाग इसी शुभ स्थानमें ही लिखा गया है।

इस मंथको पढ़कर पाठकगण सेठ माणिकचंदजीके सद्गुणोका अनुकरण करके पित्रत्र जिन धर्मके प्रचारमें व जैन जातिको शिक्षित बनानेमें तन, मन, धन अर्पण करनेत्राले हों। यही भावना करता हुआ विश्राम छेता हूं और अपने द्वारा रही हुई इस अंधमें त्रिटियोंके लिये सजनोंसे समाका प्रार्थी हं।

दिगम्बर जैन मंदिर, वाड़ी-बड़ीधा। पवित्रधमं व समाजकी वृद्धि चाहनेवाला-बीर सं• २४४३ मगसर वदी १० ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद ता• २०-११-१६. सम्पादक "जैनमित्र"-सुरत।

## THE TRUST DEED OF Sheth Hirachand Gomanji Dharmshala HIRABAG:

Daily No. 7,

Presented at the Bombay Sub-Registrar office on Monday the 10th June 1907 between the hours of 2 and 3 p. m.

માનેકચંદ હીરાચંદ

### J. C. D. Almeida.

Ag Sub-Registrar.

Received fees as

follows :---

Registration

fee ... Rs. 100 0

Copying fee

Folios 38 5 15 0

TOTAL Rs. 105 15 0

## C. D. Almeida.

Ag. Sub-Registar.

STAMP Rs. 500.

MESSRS, MULJI AND
HHAMBATTA.
Stamp Rs. Five hundred
only

Assistant Superintendent of S'amps

General Stamp Office; Bombay 18th February 1907.

CERTIFIED under section 32 of Act No. 11 of 1899 that the full stamp duty Rupees (500) Five hundred only with which this instrument is chargeable has been paid.

Seal of Court.

(Signaure.)
Collector.

This Indenture made the tenth day of June one thousand nine hundred and seven BETWEEN MANEKCHAND HIRACHAND and NAVALCHAND HIRACHAND both of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants of the one part and MANEKHAND HIRA-CHAND NAVALCHAND HIRACHAND, HIRACH-AND NEMCHAND, CHOONILAL JAVERCHAND, LALOOBHAI PREMANAND, RAJA GNANCHAND, son of Raja Bahadur Musavir Jung Raja (Deen Dayal) and TARACHAND NAVALCHAND all of Bombay Digamber Jain Hindu Inhabitants hereinafter unless otherwise designated called the said trustees which trust shall unless repughant to the context or meaning thereof include the survivors or survivor of them and the heirs executors and administrators of such survivor their successor or successors and the trustees for the time being of these presents) of the other part Whereas one Panachand Hirachand, Premchand Motichand, the said Manekchand Hirachand and the said Navalchand Hirachand were carrying on business partnership as jewellers and shroffs in Bombay had with the intention of perpetuating the memory comemorating the name of Sheth Hirachand Gumanit deceased, set apart a certain sum of meney from profits of their business for the purpose of building a Dharamsala to be called "Hirabag" and for diverse other charitable purposes hereinafter mentioned for the use and benefit of the Jains in the first instance and generally for the benefit of other high caste Hindue visiting Bombay for a temporary purpose or staying in Bombay for a short period that is to say for the purposes of travel, business, trade, profession service.

pilgrimage and other like purposes and whereas the said Premchand Motichand and Panachand Hirachand died. in Bombay on or about the eleventh day of April one thousand nine hundred and three and the fifteenth day of October one thousand nine hundred and three respectively and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand out of the said sum so set apart as aforsaid purchased at a cost of Rupees fifty six thousand in the names of both of them Manekehand Hirachand and Navalchand Hirachand a piece or parcel of land or ground hereditaments and premises situate at Kavasji Patel Tank Road within the town of Bombey More particularly described in the schedule hereunder written and subsequently made certain alterations and additions in the said premises at a total cost of Rupees forty three thousand and hence the whole property is about a lac of Rupees worth. And Whereas the said manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of establishing in the said premises hereinafter unless otherwise designated referred to as the trust estate a Dharamsala for the use and benefit of the persons aforesaid. And also a charitable dispensary and are further desirous of allowing a portion to be used as a Hall for the purpose and with the object hereinafter mentioned. And of setting apart a portion of the said premises to be used as an office for the purpose of transacting such business as may be connected with the diverse charities established or that may be established hereafter by the descendant of the said Hirachand Gumanji and whereas the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand are desirous of declaring a trust thereof and of inviting some other fit and proper persons to join with

them as trustees upon the trusts and uses and fort he endsintents and purposes and with and subject to the powers,... provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter mentioned, declared and contained concerning the same. And Whereas the said Manekchand Hirachand and. Navalchand Hirachand having requested the said Hirachand Nemchand, Choonilal Javerchand, Laloobhai Premanand, Raja Gnanchand son of Raja Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand to act as trustees along with them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand they the said Hirachand Nemchand, Choonilal Javerchand, Laloo. bhai Premanand, Raja Gnanchand Bahadur Musavir Jung (Deen Dayal) and Tarachand Navalchand have consented to act as such trustees by being parties to these presents. Now this Indenture witnesseth and it is here by declared, that the lands hereditaments and premises hereinafter described were purchased out Of the said trust moneys, and this indenture further witnesseth that in pursuance and in consideration of the premises they the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand do and each of them doth by these presents grant convey and assure into the said trustees the said trust estate being all that piece or parcel of land or ground together with all buildings standing thereon situate lying and being as the said Kavasji patel Tunk Road within the Town and Island of Bombay and more particularly described in the Schedule hereunder written and delineated on the plan hereto annexed and therein surrounded by a red boundary line together with all houses, out houses buildings, yards, ways, wells, waters, water-courses,

sewers, ditches, drains, lights, liberties, easements, advantages, profits, privileges and appurtenances whatsoever to the said trust estate or any part thereof belonging of in anywise appertaining or with the same or any -part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appurtenant thereto. And all the estate, right, title interest, claim and demand whatsoever both at law and in Equity af them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand into or upon the said trust estate and every part thereof. To have and to hold the said trust estate hereby granted and assured or expressed so to be unto the said trustees to the use upon the trusts and for the ends intents and purposes and with under and subject to the powers, provisoes, charges, declarations and agreements hereinafter limited, declared and contained of and concerning the same that is to say that the said trustees shall hold and wtand possessed of the said trust estate upon trust Firstly to allow such portion of the said trust estate as is coloured yellow on the plan here to annexed to be used as a Dharamsala or resting-place for the use and benefit of Jains and other high caste Hindus visiting Bombay for the purpose of travel, business, trade, profession, service, pilgrimage and other like purposes with power to the said trustees to allot and setapart for the purposes aforesaid such further portion or portions out of the said trust estate as are hereinafter directed to be let to tenants as the trustees may from time to time deem fit and proper. Provided always and it is hereby further agreed and declared that preference shall always the given to the Hindus professing the Jain pursuasion.

Secondly to allow a portion of the said trust estate forthe purpose of opening a Dispensary replete with such drugs and chemicals as may not be repugnant to the feeling of a person Professing the Jain religion for the use and benefit of such persons and on such terms and conditions as the trustees may from time to time prescribe. Thirdly to allow a portion of the said of trust estate to be used as a Hall or meeting-place (for the use of the Jains and other Hindus generally) for the purpose of delivering sermons, or lectures on religion, ethics, science, education, or for holdings meetings for any lawful purpose or for performing Jain religious rites and ceremonies or for such other purposes of a like nature and on such terms and conditions as the said trustees may think fit or proper. Fourthly to allow a portion of the said trust estate for opening an office for the transaction and management of business aforesaid as well as of business relating to diverse charitable institutions established or to be established by the heirsand descendants of Seth Hirachand Gamanji. Fifthly to let out such portion of the trust estate as is coloured red on the plan hereto annexed to such tenants or tenant and on such rent or rents and upon such terms and conditions as the said trustees in their absolute discretion may doem fit, and the said trustees shall collect, get in and recover the rents and profits thereof and pay thereout in the first instance all rates and. taxes of what nature and kind soever payable to the Covernment of Bombay and the Municipality of Bombay. Secondly such sum or sums as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said trust estate in good order and Condition and insured against-

loss by fire or accident and lastly the costs and expenses of and incidental to the management of the said trust estate And shall out of the residue of such rents and profits thereof set apart (1) a sum equal fo thirty per cent thereof to form the nucleus of a reserved fund to be used on occasions of urgency and emergency or accident such as in making repairs of a special kind and in making additions and alterations into or upon the said trust estate or any part thereof from time to time as to the trustees may seem fit and proper (2) a sum equal to forty percent. for the purpose of establishing, equipping and maintaining the Dispensary replete with all necessary instruments and appliances and also with such drugs, powders and chemicals as may not be repugnant to the feelings of persons professing the Jain religion for the use and benefit of persons protossing the Jain religion and generally for all classes of high caste Hindoos and fer the purpose of giving free of charge medical help and advice and dispensing medicines and for defraying the expenses of keeping a proper staff that is to say Doctors, Compounders and other servants as may from time to time be found necessary. And the trustees shall out of the residue of the said rents and Profits further set apart a sum equal to ten percent thereof and shall pay the same from time to time to the Secretary of the Digamber Jain Prantic Sabha of Bombay as long as the office of the said Sabha remains in and continues to work in Bombay but if the said Sabba removes its office to any other place out of Bombay then the said payment shall discontinue and shall accumulate until the time the said Sabha again removes its office to and works in Bom-

bay when the accumulated amount should be paid over to the said Sabha and payment of the said ten percent thereafter be continued and the trustees shall out of the remaining twenty percent of the said residue pay such sum or sums of money to the poor members of the Jain Digamber Community who to the said trustees may appear deserving of support either in their business or for the purpose of maintaining them. And it is hereby further agreed and declared that the Reserved Fund to be set apart as aforesaid and all sums of moneys remaining unexpended in the hands of the said trustees shall be invested in securities authorised under the provisions of the Indian Trust Act II of 1882 Section 20 or any of them or in the purchase of an immoveable property in Bombay which investiments shall form part of the reserve fund and shall be utilised for the purposes hereinbefore mentioned in connection with the Reserve fund. And it is hereby further provided and declared that for the proper management of the said trustees shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make rules and regulations in respect of the proper tter management of the several objects of the trust as the said committee shall think fit and proper. And it is hereby further agreed and declared that it shall be lawful for the managing committee to reserve from time to time such portion or portions of the said Dharamsala for the use and benefit of Digamber Jains only as they may from time to time think fit. And that the said managing committee for the purposes said shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons as shall from

time to time be elected members of the Managing Committee of Sheth Hirachand Gumanji Jain Boarding School, And it is hereby agreed and declared at any time the said trust estate or any part thereof shall be purchased or taken possession of by the Government or the Municipality of Bombay or by the Bombay City Improvement Trust for any public purpose under any law for the time being in force relating to the acquisition of land then and in that case it shall be lawful for the trustees of these presents to apply the moneys or compensation to Le received therefor for the purpose of erecting one or more new building or buildings at such place or places in Bombay as the trustees may from time to time agree upon the purpose of the trusts of these presents. And is hereby further agreed and declared that the trustees of these presents shall at all times be not less than six and more than eight and that two male descendants from the family of the said Hirachand Gumanji shall always act as trustees of these presents but if there be no such male descendant then two persons from the nearest male relations of the said Hirachand Gumanii be found fit to act may appointed trustees of these presents. And it is hereby further agreed and declared that Shoth Manekchand Hirachand shall be the Chairman of the trustees hereby appointed and after his decease the eldest surviving male member of the family of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed to act as chairman of the trustees and if there he no such member living then in such case any of the nearest male relations of the said Hirachand Cumanji shall be appointed to act as Chairman of the ...

trustees and that such Chairman shall also be the Chairman of the Managing Committee and shall presideat every meeting of the trustees and the Managing Committee and in his absence the trustees and the Managing Committee shall have power to appoint any one of them to act as such Chairman, And it is hereby further agreed and declared that the business of the trust shall be carried on by majority of votes and the Chairman shall have in addition to his own vote a casting vote Provided always and it is lastly declared that if the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall bappen to die or continue to reside abroad for a period of more than twelve calender months or become bankrupt or take the benefit of any Act for relief of Insolvent Debtors or resign or be desirous of being discharged or disclaim neglect or refuse to act or become incapable of acting in the trusts hereinbefore declared before the same shall have been fully executed then and in every such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand during their joint lives and after the decease of any of them or the survivor of them and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees or trustee for the time being of these presents or for the executors or dministrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrument in writing from time to time to substitute or appoint within a period of three months from the happening of any of the aforesaid contingencies persons or person in the place or stead of such trustees or trustee so dying or continuing to reside abroad becoming Bankrupt or Insolvent desirous to be discharged disclaiming n eglecting or refusing to act or becoming incapable of acting as aforesaid and immediately the reupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forthwith conveyed, assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting, undetermined and capable of taking effect and every instrument expressed to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the face of it to be invalid shall although not so made. be valid and effectual for all purposes other than the exoneration of the parties to the making thereof from responsibilities and that every such new trustee or trustees either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same power and authority in all respects as if he or thay had been originally appointed a trustee or trustees by these presents Provided always and it is hereby declared that the trustee or trustees to be appointed as hereinabove mentioned shall be appointed from the trustees of Sheth Hirachand Gumanjis Jain Boarding school and that there shall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the chairman shall convene a meeting of the trustees. And that accounts and the reports shall be printed and published every year, that bills of monthly income and expenses should bear thesignature of at least two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid be responsible for the acts deeds or defaults of any co-trustee or co-trustees nor for involuntary losses nor for moneys expressed to have been received in any receipt or receipts in which they or he shall join for the sake of conformity only nor be accountable for any banker broker attorney solicitor, agent or auctioneer or any other person or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody or otherwise in execution of the aforesaid trust nor for the insufficiency or deficiency of any stock funds or securities nor for any other loss of damage that may bappen to arise to all or any part o the said trust estate monies and premises unless through the wilful neglect or default of such trustees respectively and that the present or any future trustees or trustee shall or may reimbures himself and themselves out of the monies which shall come to his or their hands by virtue of these presents all such costs damages and expenses as he or they shall mour or sustain in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Manekchaad Hirachand and Navalchand Hirachand do hereby for themselves heir heirs executors and administrators covenant with the said trustees that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Manekchand Hirachand Navalchand Hirachand or and person or persons lawfully or equitably claiming by from through under or in trust for them made, done or committed or omitted to the contrary they the said Manekchand Hirachand and Navalch and Hirachand

now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the said trust estate hereby granted and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees in manner aforesaid. And that it shall be lawful for the said trustees from time to time and at all times hereafters peaceably and quietly to enter upon possess and enjoy the said trust estate and to receive and take the rents and profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction interruption claim or demand whatsoever of from or by them the said Manekchand Hirachand and Navalchand Hirachand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by from under or in trust for them or any of them and that free from all incumbrancers whatsoever and further that they the said Manekchand flirachand, Navalchand Hirachand and their heirs executers and administrators and all and every other person or persons whoseever having or claiming any estate or interest whatsoever in the said trust estate or any of them or any part thereof from under or in trust for the said Manekchand-Hirachand and Navalchand Hirachand their heirs or any of them shall and will from time to time and at all times hereafter upon every reasonable request and at the costs of the said trustees do and execute or pause to be done and executed all such further and other lawful acts deeds and things whatsoever for the better and more perfectly conveying and assuring the said trust estate and every part thereof the unto said trustees in manner aforesaid as by the said trustees shall be reasonably repuired, in witness whereof the parties hereto have hereunto set their respective hands and seals the day and year first hereinabove written.

#### Schedule.

All that piece or parcel of Pension and Taxland being a portion of all that land or cart which is known by the name of Kapoorwady together with the messuages, tenements or buildings hereditaments and premises standing thereon lying and being in the Kandewady Lane as the corner of the Khatar Gully Lane opposite the Cawasji patel Tank out of the Fort in the Town and Island and in the Registration Sub-District of Boinpay containing by admeasurement 1706 square yards or thereabouts and bearing Collectors Old No. 17 and 140 New No- B-77 and B-1273 Old Survey No-459, 462 and New Survey No. 7521 and assessed by the assessor and Collector of Municipal rates and taxes under D. Ward No. 1266, 1267, 833, 832, 825, 827, and 830 ond street Nos. 70, 72, 74, 149, 151, 147, 135, 3 and 5 and which said premises are bounded on the North partly by the said Kandewady Street and partly by the Bhooleshwar Road joins the said Kandswady Street on the East by vacant land formerly belonging to Damodar Balaji but now belonging to Ardesir Hormusji Wadia and on the South by the strip of land belonging to the Vendors falling within the regular line of street and intended to be acquired by the Municipality of Bombay for widening Khutar Gully Lane beyond which the said Khutar Gully Lane and which said premises are now and for many years past have been the poss ssion of the said Vendor and his tenants.

Signed.



## The Trust-deed of Sheth Birachand Gumanii Jain Boarding School-

STAMP Rs. 200.

Daily No. 6 of 23rd January 1900.

Recaised fees as follows:-Registration see Rs. 40-0-0 Copying fee Rs. 6-9-0 (12 Fols.)

Bombay Sub-Registrar office on Tuesday the 23rd January 1900 at

Presented at the

Total Rs. 46-2-0 2-15 P. M.

M. W. Gadgil, Sub-Registrar. માણેકચંદ હીરાચંદ**.** M. W. Gadgil. Sub-Registrar.

This Indenture nale the 4th day of December in the Christian year one thousand eight hundre i and ninty nine betwen Panachand Hirachand, Manekchin i Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand all of Bombay Hindocs professing the Jain Digamler faith (hereinafter unlers otherwise designated called the settlors) of the one part and the said Panachand Hirachand, Manekohand Hirachand. Navalchand Hirachand, Premet and Motichand. Raja Dharamehandra, son of Raja Bahadur Nussavir Jung (Deen Dayel) and Hirachand Nemchand all of Bombay Hindoos following. the same Digamler Jain religion (hereinefter

unless otherwise designated called the trustees) f the other part. Whereas the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand are absolutely possessed of or otherwise well and sufficiently entitled to the piece or parcel of land or ground hereditaments and prenises hereinafter described (and hereinafter unless otherwise designated referred to as the trust estate) free from incumbrances. And Whereas the said settlors are desirous of establishing a Jain Boarding House for the use and tenefit of their fellow countrymen, of the Jain caste in order to perpetuate he memory of their father Hirachand Gumanji, and whereas for the charitable purposes aforesaid the said settlers are desirous of settling the said trust estate to the uses upon the trusts and for the ends. intents and purposes and with and subject to the powers, provisoes, charges, declarations, and agreements hereinafter limited, declared an i contained. Now this Indenture witnesseth that in pursuance of the said desire and in consideration of the premises they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand. Navalchand Hirachand and Premchand Motichand do by these presents grant, convey and assure unto the said Panachand Hirachand. Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand,

Premchand Motichand, Raja Dharamchandra son of Raja Bahadur Mussavir Jung (Deen Dayel) and Hitachani Manekehand and the Survivors and Survivor of them and their and his successors and assigns All that piece or parcel of land or salt balty ground with the messuage tenements and, buildings standing thereon situate on the west side of the Gilder Street outside the Fort of Bombay in the Registration Sub-District of Bombay containing by admeasurement two thousand six hundred and sixty square yards be the same little more or less and assessed by the Collector of Land Revenue New Nos. 13862, 13874, 13930, \_\_\_\_\_\_\_ under old Nos. 346, 131, and old Survey Nos. new Survey Nos. 7604 7003 7005 and by the Assessor and Collector of Municipal rates and taxes under ward No. E. 2829, 2830, 2625, 2778 (1), (2) 2779, (2), (3) 2831 to 2833, 2626, and street No. 1, 3, 474, 5 to 9,476 to 480 and bounded as follows, that is to say on or towadrs the East by the said Gilder Street, on or towards the West by the other property of the said Panachand Hirachand. Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand, on or towards the north partly by the Falkland road, partly by the Low Lever road and partly by property of Cawasiee Kharadi

and on or towards the South by the Public-Passage and which said land hereditaments and premises are now in the possession of the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand Nawalchand Hirachand, and Premchand Motichand and which said premises are particularly delineated in the ground plan thereof hereto annexed and marked with the letter A. and therein coloured by a red Loundary line and which said land hereditaments and premises are for the purpose of the Stamp Act, estimated to be of the present market value of rupees forty thousand Together with all hous s. out houses, buildings yards, ways, wells, waters, water courses, sewers, ditches, drains, lights. liberties, easements, profits, privilages and a appurtenances, whatsoever to the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises or any part thereof belonging or in any-wise appertaining or with the same or any part thereof now or at any time heretofore usually held, used, occupied or enjoyed or reputed to belong or be appertenant thereto, and all the estate, right, title, interest, claim and demand whatsoever both at Law and in Equity of them the said Panachand Hirachand. Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand into or upon the said piece or parcel of land or ground hereditaments a

premises and every part thereof. To Have and to hold the said piece or parcel of land or ground hereditaments and premises hereby granted and assured or expressed so to be unto the trustees and the survivors and survivor of them and their and his successors and assigns to the use upon the trusts and for the ends, intents and purposes and with under and subject to the powers, provises, charges, de larations and agreements, hereinafter limited, declared and contained of and concerning the saue that is to say that the said trustees or trustee for the time being of these presents shall hold and stand possessed of the said land la reditaments and premises herein before described and shall collect and get the rents and profits thereof and shall pay thereout all the rates and taxes payable to the Government of Bombay and the Municipality of Bombay and shall spend such portion thereof as shall be requisite or necessary for the purpose of keeping the said hereditaments premises in the good repair and condition and of keeping them insured and for the purposes of managing the said trust and shall out of the residue of the rents and profits set apart at least five percent of the net annual income to wards forming a reserved fund to be used on occasions of urgency, emergency or accident as the trustees may think proper and out of the

residue the trustees shall set apart a sum of Rupees twenty five per month for the purposes of the maintenance of a Dera (temple) to be hereafter erected on a position of the said land such as paying as a Poojari and lighting the temple and keeping Pooja articles such as Kesar de, and out of the residue shall pay the salary of a propers superintedent and shall appoint a proper person as superintendent to look after the boys or youngmen to be admitted to the Boarding House under or by virtue of this settlement with power to remove him and to appoint another in his stead and shall appoint a managing Committee for the management of the said Boarding House with power to remove the same or any member thereof and to appoint others, and shall have full power to make rules and from time to time to abregate, alter, and add to the same for the guidance of such managing Committee and superintendent and generally for the purpose of carrying out this settlement and the object thereof provided only that no such rule shall be against the law or in consistent with the provisions hereof. Further that the said trustees shall out of the residure of the income and rent including the general charges of carrying one tenth for payments of scholarships to poor Jains engaged in learning the Jain Shashtras in Sanskrit and another four-

tenths towards payment of scholarships to the Degamber poor Jains who are taking general education in or out of Bombay and the remaining five tenths towards the payment of the Scholarship to the students residing in the Boarding House which shall be called "Sheth Hirachand Gumenji Jain Boarding House." FURTHER that any sums remaining expended shall be invested in securities of Government of India or upon any of the public stock fund port trust Bonds or Debentures or Municipal Loans or other clisgible securities under the Law for the time being in force in this respect and form reserve funds for the purposes for which the unexpended sums are by this settlement intended. Further that the marked B on the accompanying plan shall be us d for Boarding purposes and that the premises marked C on the accompanying plan shall be used for Dharmsale and that the plate containing the inscription as to such Boarding shall be fixed upon some conspicuous part of the said Boarding House and that the said trustees shall allow the Jain boys who have passed the Matriculation Examination and who intend to prosecute their studies in some College or are studying for the District Pleader's and Sub-judge's Examinations to live in the said Exarding House free of rent provided

always that preference shall be given to the Digamber Jains who have passed their Matriculation examinations with Sanskrit as their second Language and provided further if there is any surplus accommodation in the Jain Boarding House Digambari Jain Students who have passed the fourth English standard and are studying for the higher standards or for the Matriculation examination may also be allowed to live therein free of rent Provided always that in the event and for the time there are no students living in the said Boarding House, the same may be temporarily used for such Jain religious purposes as the trustees for time being may deen meet. Provided further that Digamburi (Travellers) may be allowed to lodge in the Dharmshala free of reut. Provided further that any person of Jain religion desiring to build a Digambari Jain Dera (temple) on the premises hereby granted or intended so to be at his own cost expenses may be allowed to do so subject to such terms and conditions as to site and style of building as may be laid down by the trustees. But no such person shall have any right whatever over the said temple after it is built and completed but the same shall vest in the tru tees and only the ceremonies relating to the Jain Digamber religion shall be allowed to be performed in the temple. that, the said trustees shall be at liberty to accept and take such sum or sums of money which shall be given by any Jain towards the purposes of the said trust and such monies shall form a part of this trust estate.

that the trustees for the time being of these presents shall appoint a Managing Committee which shall from time to time make such rules and regulations in respect of the proper and better management of the said Boarding House, Dharmshala, and Temple if built as they shall think fit and proper.

That there shall be a Managing Committee for the purposes aforesaid which shall consist of the trustees for the time being of these presents and of such other persons from time to time as may be elected by such trustees out of the Jains following Digamber Jain religion.

That there shall always be two trustees out of the male descendants of the said Hirachand Gumanji and if there shall be no made descendent of the said Hirachand Gumanji, such two trustees shall be appointed from the nearest relation of the said Hirachand Gumanji. Provided always that if at any time the said land hereditaments or premises or any part thereof shall be taken by the Government for any public purpose under any Law for the time teing in force the amount of compensation that

may be given for the same or any part thereof shall be applied for the ends, intents purposes afore-said. That the number of the shall be at least six and shall not exceed eight. That Sheth Pauachand Hirachand shall be the Chairman of the first trustees and after his decease the elder living scion of Sheth Hirachand Gumanji shall be appointed the Chairman of the trustees. That the Chairman of the trust es shall also be the President of the Managing Committee unless he resigns. During the temporary absence of the Chairman the trustees may appoint any one of themselves to act as chairman for the time leing. Provided always and it is hereby lastly declared that if the trustees hereby appointed or to be appointed as hereinafter mentioned or any of them shall happen to die, continue to reside abroad for the space of more than twelve calendar months or shall become a bankrupt or take the benefit of any act for the relief of insolvant debtors or be desirous of being dischaarged from disclaim neglect refuse to act or become incapable of acting in the trust hereinbefore declared before the same shall be fully performed and then and in such case and so often as the same shall happen it shall be lawful for the said Panachand Hirachand, manek chand Hirachand, Navalchand Hirachand and

Premchand Motichand, during their joint lives and after the decease of any of them for the survivor and after the decease of such survivor for the surviving or continuing trustees of trustee of these presents for the time being or the executors administrators of the last surviving or continuing trustee by any deed or instrument in writing from time to time to substitute or appoint within three months at the most any persons or person in the stead or place of such trustees or trustee so dying continuing to reside abroad lecoming bankrupt or insolvent, desirous to be discharged, disclaimining, neglecting or refusing to act or be oming incopable of acting as aforesaid and immediately thereupon all the aforesaid trust estate and premises shall be forth-with conveyed assigned and assured so and in such manner as that the same may become legally and effectually vested in such new trustee or trustees either jointly with the surviving or continuing trustees or trustee or solely as the case may be to the uses, upon the trust and to the ends intents and purposes hereinbefore limited and declared or such of them as shall be then subsisting undetermined and capable of taking effect and every instrument express d to be made in pursuance of the aforesaid power and not appearing on the face of it to be invalid shall although not so

made be valid and effectual for all purposes other "then the exoneration of the parties to the making thereof from responsibities and that every such new trustees or trustee either before or after such conveyance assignment or assurance as aforesaid shall have the same bower and authority in all respects as if he or they had been originally appointed a trustee or trustees by these presents and that there shall be at least two meetings of the trustees in a year but if any two trustees desire a meeting of the trustees to be held the Chairman shall vene a meeting of the trustees That accounts and the reports shall be printed and published every year, that the bills of monthly incomes and expenses should bear the signatures of atleast two trustees and that no trustee or trustees hereby appointed or to be appointed as aforesaid shall be responsible for the deeds or defaults of any co-trustee or co-trustees, nor for involuntary losses nor for monies expressed to have been received in any receipt or receipts in which they shall join formity only, nor be accountable for the sufficiency of any banker, broker, attorney, tor, agent or an tioneer or any other or persons whomsoever with whom any of the trust monies may be deposited for safe custody er otherwise or who may receive the same in

execution of the aforesaid trust, nor for the insufficiency of any stock funds or securities nor for any other loss or damage that happen to arise of or to all or to any part of the said trust estate, trust monies and premises unless through the wilful default of such trustees respectively and that the present any future trustees or trustee shall and may reimburse themselves and each other out of the monies which shall come to their respective hands by virtue of these presents all such costs,. damages and expenses as they or any of them shall or may suffer, sustain expend disburse or be put into in or about the execution of the aforesaid trust or in relation thereto and the said Panachand Hirachand, Manekchand, Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand-Motichand do hereby for themselves their heirs, executors and administrators convenint with the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns, that notwithstanding any act deed or thing whatsoever by them the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premehand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming by through, under or in trust for them made, done or committed or omitted to the

contrary they the said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand, now have in themselves good right full power and absolute authority to grant and assure the hereditament and premises hereby granted released and assured or intended so to be unto and to the use of the said trustees, their successors and assigns and their heirs, executors, administrators and assigns in manner aforesaid. And that it shall be lawful for the said trustees their successors and assigns and their heirs, executors administrators and assigns from time to time and at all times hereafter peacably. quietly to enter upon, possess, and enjoy the said hereditaments and premises and to receive and take the rents and profits thereof and of every part thereof without any lawful eviction, interruption, claim or demand whatsoever of, from, or by them the said Panachand Hirachand, Manekehand Hirachand, Navalchand Hirachand, and Premchand Motichand or any person or persons lawfully or equitably claiming or to claim by, from, under or in trust for them or any of them, and that free from all incumbrances, and further that they the -said Panachand Hirachand, Manekchand Hirachand, Navalchand Hirachand and Premchand Motichand and their heirs executors and administrators and all and every other person of persons whosesoever having or claiming any esite or interest whatsoever in the same hereditaunts and premises or any of them or any part threof, from, under, or in trust for the said Pachand Hirachand, Manekchand Hirachand Nalchand Hirachand and Premchand Motichd or their heirs or any of them shall and wirom time to time and at all times heter upon every reasonable request and at thists of the said trustees, their successors. anisigns and their heirs, executors, adminietts or assigns do and execute or cause to be; and executed all such further and other lawcts deeds and things whatsoever for theer and more perfectly conveying and assi the said hereditaments and premises and part thereof unto the aid trustees the essors and assigns and their heirs. exed administrators and assigns in manner aforms by the said trustees their successors and and their heirs, executors administral assigns or their counsel in the Law shall sonably required.

have ively hereunto set their respective hand als, the day and year first above write